वस्तुनिष्ठ

TGT, PGT, UGC-NET/JRF, C-TET, UP-TET,
DSSSB, GIC & Degree College Lecturer
M.A, B.Ed & Ph.D Entrance Exam
आदि सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में उपयोगी पुस्तक

लेखक
सर्वज्ञभूषण
सचिव
संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज प्रयागराज

सम्पादक
अम्बिकेश प्रतापसिंह
उपसचिव
संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज
प्रयागराज

संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ-संस्कृत-साहित्यम् कोड – 02

ISBN : 978-93-5254-610-7

* **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा दारागञ्ज, प्रयाग

मो. नं. – 7800138404, 9839852033

* प्रथम संस्करण – अगस्त - 2013

द्वितीय संस्करण – जनवरी - 2014

तृतीय संस्करण – नवम्बर - 2014

चतुर्थ संस्करण – जनवरी - 2015

पञ्चम संस्करण – जनवरी - 2016

षष्ठ संस्करण – अगस्त - 2017

* सप्तम संशोधित संस्करण जनवरी - 2019

* **मूल्य – ` 230/-** (दो सौ तीस रु० मात्र)

* **मुख्यवितरक**

राजू पुस्तक केन्द्र

अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

मो० 9453460552

* **प्रकाशनाधिकारिणी संस्था**

संस्कृतगङ्गा शिक्षा समिति (पञ्जीकृत)

59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज

(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे,

संकटमोचन छोटे हनुमान मन्दिर के पास)

कार्यालय - 7800138404, 9839852033

email-Sanskritganga@gmail.com

बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

* पृष्ठविन्यास - **कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान**, दारागंज

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, प्रयागराज
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज - 7800138404
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़
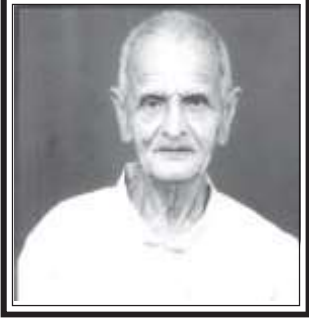
सादरं समर्पणम्

संस्कृतदिवस के शुभावसर पर

संस्कृतगङ्गा

का यह ज्ञानपुष्प समर्पित है–

- *अपने **'गुरूजी'** को, जो*
- *नाथू भैया के **'मास्टर कक्कू'** हैं*
- *द्रोणी एवं विश्वास के **'बब्बा जी'** हैं*
- *'गहनौआ' वासियों के **'शास्त्री जी'** हैं*
- *सरकारी अभिलेखों में **'गोपालप्रसाद त्रिपाठी'** हैं*
- *पैतृकवंशपरम्परा में **'अनन्त'** हैं*
- *संस्कृतजगत् की वह **महान् विभूति** हैं जिन्होंने गुमनामी के अँधेरों में गायब रहकर भी सैकड़ों प्रतिभाओं को प्रकाशित किया।*

–सर्वज्ञभूषण

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रिय संस्कृतबन्धो!

नमः संस्कृताय। संस्कृतगङ्गायां भवतां सर्वेषां हार्दं स्वागतम्।

संस्कृतगङ्गा का यह द्वितीय ज्ञानपुष्प आपके हाथों में संस्कृतदिवस के दिन आ रहा है– इससे अच्छा शुभ अवसर और भला क्या हो सकता है। मेरा मानना है कि संस्कृत का भविष्य तो संस्कृत की युवापीढ़ी है, और इनको प्रामाणिक अध्ययन-सामग्री उपलब्ध कराना हमारी नैतिक जिम्मेवारी है। यह पुस्तक ''**प्रशिक्षित-स्नातक-शिक्षक**'' **(TGT)** के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर लिखी गयी है, इसके द्वितीयसंस्करण में संस्कृतसाहित्य से सम्बद्ध **PGT** और **UGC** के पाठ्यक्रमों को भी सम्मिलित करने की योजना है। मेरा सोचना है कि संस्कृत-सेवा का इससे बड़ा अवसर और क्या होगा कि आप संस्कृतवालों की सेवा करें, संस्कृतप्रेमियों को कुछ ज्ञान का उपहार दे सकें, और इस **संस्कृत दिवस-2013** के शुभ अवसर पर संस्कृतजगत् को मेरा यह ज्ञानोपहार सादर समर्पित है।

मुझे लगता है कि 21वीं शताब्दी में प्रत्येक भारतीय को अब कुछ इस तरह से सोचना पड़ेगा–

- संस्कृत मेरी मजबूरी नहीं बल्कि मेरे लिए जरूरी है।
- संस्कृत ही मेरी पहचान है, और संस्कृत की पहचान मैं हूँ।
- संस्कृत ही मेरा जीवन, मेरी श्वास, मेरी सोच, मेरा विचार और मेरा सर्वस्व है।
- मैं संस्कृत से अलग नही, और संस्कृत भी मुझसे कभी अलग नहीं।
- संस्कृत में ही संस्कृति, समाज और संस्कार है, और इन सभी में मैं हूँ।
- संस्कृत ही मेरे देश की धड़कन है, पहचान है, स्वाभिमान और सम्मान है।
- संस्कृत को मैं प्यार करता हूँ, और संस्कृत भी मुझे प्यार करती है।

इसी सोच के साथ ''संस्कृतगङ्गा'' नाम से एक संस्था उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पञ्जीकृत करायी गयी है, जिसका संस्कृत और संस्कृति के क्षेत्र में कुछ नया करने का सङ्कल्प है, **'संस्कृतगङ्गा' का प्रधान कार्यालय दारागञ्ज, सङ्गमक्षेत्र, प्रयाग** में है, जहाँ पूरे वर्ष संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन होता है, विशेषकर प्रतियोगी परीक्षाओं से जुड़े संस्कृत छात्रों के लिए। ध्यान रहे यह संस्था कोई कोचिंग संस्थान नहीं अपितु संस्कृत, संस्कृति एवं समाज के संवर्धन और पोषण के लिए है, न कि व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिए। इस संस्था के विशिष्ट उद्देश्यों की जानकारी हेतु पीछे कवरपृष्ठ को देखा जा सकता है।

संस्कृतगङ्गा प्रयाग में उन सभी युवविद्वानों, संस्कृतप्रेमियों, संस्कृतच्छात्रों एवं संस्कृतकलाकारों का स्वागत है, जो संस्कृत को ही अपने जीवन का चरमलक्ष्य बनाकर काम करना चाहते हैं। अन्ततः सम्पूर्ण संस्कृतजगत् से एक और विनम्र निवेदन है कि आप अपने जीवन में एक बार ''**संस्कृतभारती**'' से अवश्य जुड़े और उसके द्वारा सञ्चालित कार्यक्रमों में प्रतिभाग करें।

इस पाठ्यसामग्री को तैयार करने में संस्कृतगङ्गा के कई भगीरथों ने भगीरथ प्रयत्न किये हैं, जिनमें से **स्वयंप्रकाश, करुणाशङ्कर** एवं **सुधीर तिवारी** आदि मुख्य हैं। जिनसे इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा मिली उनमें से अग्रज **डॉ. कृष्णकुमार त्रिपाठी, उपेन्द्र त्रिपाठी (रीवा म.प्र.)** जी.आई.सी. बरगढ के प्रधानाचार्य **श्री कपूरचन्द्र शुक्ल**, **विश्वदीपक 'विश्वास'** (नई दिल्ली) सदैव स्मरणीय रहेंगे। टङ्कण कार्य हेतु **जङ्गबहादुर** जी (अल्लापुर, इला.) तथा पुस्तक के शीघ्र प्रकाशन हेतु **राजू पुस्तकभण्डार, अल्लापुर** के स्वामी **राजकुमार गुप्ता (राजू)** जी को बहुत-बहुत धन्यवाद। इस पुस्तक के लेखन में सम्पूर्ण सावधानी बरती गयी है, फिर भी मानवगत कुछ मुद्रणदोष या तथ्यात्मक अशुद्धियाँ हो सकती हैं, जिन्हें क्षमा करते हुए आप अपने सुझाव हमें अवश्य दें।

संस्कृत स्वाध्यायियों के प्रेरणा स्रोत एवं संस्कृत जगत् के लिए एक आदर्शव्यक्तित्व हमारे गुरुवर, मार्गदर्शक एवं शुभचिन्तक **प्रो. ललितकुमार त्रिपाठी (गङ्गानाथ झा परिसर, इला.)** के ललित चरणारविन्दों में मेरा सादर प्रणाम जिनकी प्रेरणा से ही ''**संस्कृतकार्यं साधयेयं देहं वा पातयेयम्**'' जैसी शिवाजी की शुभ-प्रतिज्ञा हजारों संस्कृतज्ञों के हृदय में अवतरित हुई।

अन्त में अगाधस्नेहवारिधि, **पितामह श्रीगजाननप्रसाद मिश्र** तथा **पिताश्री यादवेन्द्रप्रसाद मिश्र** के श्रीचरणों में सादर प्रणाम करता हूँ, जिन्होंने मुझे केवल संस्कृत ही नहीं, अपितु संस्कृतमय जीवन जीने की कला सिखायी।

।।इति शम्।।

दिनाङ्क –**21 अगस्त 2013, संस्कृतदिवस**
दारागञ्ज, प्रयाग

सर्वज्ञभूषणः
(प्रवक्ता, संस्कृतम्)
ग्राम - शिवपुर (डोडिया), पो. बरगढ़, जिला - चित्रकूट (उ.प्र.) मो. 9839852033, E-mail : **sanskritganga@gmail.com**

षष्ठसंस्करणे संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रिय-संस्कृतमित्राणि!

नमः संस्कृताय

आज संस्कृतगङ्गा का यह संस्कृतसाहित्यम् रूपी ज्ञानपुष्प आपके हाथों में समर्पित करते हुए अत्यन्त प्रसन्न हूँ। मित्रो! 21वीं सदी ज्ञानशताब्दी के रूप में देखी जा रही है, अतः वही अग्रगण्य होगा जिसके पास ज्ञान की ताकत होगी, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ज्ञान का अक्षय भण्डार संस्कृत में है और ऐसी संस्कृतज्ञानगङ्गा के नाविक हम संस्कृतज्ञ हैं। यदि ज्ञान का अमूल्य प्रसाद विश्व को चाहिए तो उसके वितरक हम भारतवासी संस्कृतज्ञ होंगे। यह भारतीयों की धरती कपिल, कणाद, यास्क, सायण, पाणिनि, पतञ्जलि, वाल्मीकि, व्यास, भास, कालिदास, शङ्कराचार्य, विवेकानन्द जैसे ज्ञानियों की धरती है। जिन्होंने अपने ज्ञानप्रकाश से ब्रह्माण्ड को प्रकाशित किया है, आज एकबार पुनः ज्ञानालोक से सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित करने का समय आ गया, आओ! संस्कृतज्ञानसूर्य से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को आलोकित करने का सङ्कल्प लें।

इस संस्करण में UP-TGT पाठ्यक्रम में सम्मिलित सभी साहित्यिक ग्रन्थों की व्याकरणात्मक टिप्पणी के लगभग 80 पृष्ठ और जोड़े जा रहे हैं, जिसमें सन्धि, समास, कारक, क्रियापद और प्रत्ययों की चर्चा की गयी है। विश्वास है कि परिवर्धित और संशोधित संस्करण आपको अच्छा लगेगा।

मित्रों! इस षष्ठ संस्करण को संशोधित एवं परिशुद्ध करने में जिन संस्कृतगङ्गा के भगीरथों ने अपना योगदान दिया उन सभी मित्रों को सस्नेह स्मरण करते हैं, जिनमें **विकाससिंह, राजीवसिंह, मनीष शर्मा, रमाकान्त मौर्य, डॉ. गिरिराज मिश्रा, सत्यप्रकाश साहू, दीपचन्द्र चौरसिया, रवीन्द्रमिश्र, सच्चिदानन्द, अमितसिंह, सुमनसिंह** आदि मुख्य हैं।

मित्राणि! हम सभी मित्रों का यह प्रयास रहा है कि इस पुस्तक में मुद्रणदोष या तथ्यात्मक अशुद्धियाँ न हों, फिर भी कुछ न कुछ मानव प्रमादजन्य दोष अवश्य दिख सकते हैं, उनको उदार हृदय से क्षमा करते हुए हमें अवश्य सूचित करें, ताकि अगले संस्करण में हम उन्हें दूर कर सकें। सम्पर्क करें – 9839852033

दिनाङ्क : 15 अगस्त, 2017 — ***सर्वज्ञभूषण***

संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयाग (उत्तर प्रदेश)

अनुक्रमणिका

वस्तुनिष्ठ संस्कृतसाहित्यम्

क. कवि-परिचयः

1. महाकवि कालिदास

- **पत्नी** – विद्योत्तमा
- **श्वसुर** – शारदानन्द
- **मित्र** – लङ्का के राजा कुमारदास
- **समय** – ईसापूर्व प्रथम शताब्दी
- **जन्मस्थान** – उज्जयिनी (काश्मीरी/बंगाली)
- **आश्रयदाता** – चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
- **जाति/गोत्र** – ब्राह्मण
- **रचनायें कालक्रम की दृष्टि से**– 1. ऋतुसंहार (गीतिकाव्य), 2. कुमारसम्भवम् (महाकाव्य), 3. मालविकाग्निमित्रम् (नाटक), 4. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक), 5. मेघदूतम् (खण्डकाव्य), 6. रघुवंशम् (महाकाव्य), 7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटक)
- **उपासक** – शिव के
- **प्रिय छन्द** – उपजाति/अनुष्टुप्
- **प्रिय अलङ्कार** – उपमा
- **कालिदास की रीति एवं गुण** – वैदर्भी रीति एवं प्रसादगुण
- **कालिदास का प्रिय रस** – शृङ्गार रस
- **कालिदास की अन्य कृतियाँ–** (i) कालीस्तोत्र, (ii) गङ्गाष्टक, (iii) ज्योतिर्विदाभरण, (iv) राक्षसकाव्य, (v)श्रुतबोध

कालिदासीय जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- काली देवी की उपासना से विद्या की प्राप्ति।
- विद्याप्राप्ति के बाद कालिदास का कथन–
  'अनावृतकपाटं द्वारं देहि' (दरवाजा खोलो)
- इसके उत्तर में पत्नी **विद्योत्तमा** का कथन–
  'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः' (लगता है कोई विद्वान् है)
- **'अस्ति' से कुमारसम्भवम्** – ''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा....''
- **'कश्चित्' से मेघदूतम्** – ''कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा....''
- **'वाग्' से रघुवंशम्** – ''वागर्थाविव सम्पृक्तौ.....''
- **विक्रमादित्य की सभा में 9 रत्न** थे, जिसमें से एक कालिदास भी थे–

धन्वन्तरि-क्षपणकामरसिंह -शङ्कु-
वेतालभट्ट-घटकर्पर-कालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां
रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥

(ज्योतिर्विदाभरण 22-10)

- एक किंवदन्ती के अनुसार धारा के राजा भोज के प्रधानकवि कालिदास थे।
- एक किंवदन्ती के अनुसार कालिदास का अन्तिम समय लंका के महाराज कुमारदास के यहाँ बीता, वहाँ धन के लोभ में एक वेश्या ने उनकी **हत्या करा दी**।
- कालिदास ने वेद, दर्शन, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, सङ्गीतशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, छन्दःशास्त्र, काव्यशास्त्र आदि का गम्भीर अध्ययन किया था।
- बाद में राजकवियों को 'कालिदास' कहने की परम्परा चल पड़ी। **राजशेखर** ने ऐसे तीन कालिदासों का उल्लेख किया है–
  एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
  शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु॥
- **कालिदास की उपाधियाँ**–(i) दीपशिखा कालिदास (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनीविलास (v) उपमासम्राट्
- महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्र की प्रस्तावना में **''प्रथितयशसां भाससौमिल्ल.....''** के द्वारा भास, सौमिल्ल आदि अपने पूर्ववर्ती कवियों को सादर स्मरण किया है।

कालिदास की प्रशस्तियाँ

1. निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
   प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।
   – बाणभट्ट-हर्षचरित
2. साकूतमधुरकोमलविलासिनीकण्ठकूजितप्राये।
   शिक्षासमयेऽपि मुदे रतलीला-कालिदासोक्ती।।
   – गोवर्धनाचार्य-आर्यासप्तशती–35
3. कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः **– जयदेव-प्रसन्नराघवम्**
4. लिप्ता मधुद्रवेणासन् यस्य निर्विषया गिरः।
   तेनेदं वर्त्म वैदर्भं कालिदासेन शोधितम्।।
   – दण्डी-अवन्तिसुन्दरीकथा
5. अस्पृष्टदोषा नलिनीव दृष्टा, हारावलीव ग्रथिता गुणौघैः।
   प्रियाङ्कपालीव प्रकामहृद्या, न कालिदासादपरस्य वाणी।।
   – श्रीकृष्ण
6. ख्यातः कृतीसोऽपि च कालिदासः, शुद्धा सुधा स्वादुमती च यस्य।
   वाणीमिषाच्चन्द्रमरीचिगोत्रसिन्धोः परं पारमवाप कीर्तिः।।
   – सोड्ढल (उदयसुन्दरी कथा)

   अमृतेनेव संसिक्ताश्चन्दनेनैव चर्चिताः।
   चन्द्रांशुभिरिवोद्घृष्टाः कालिदासस्य सूक्तयः।।
   – जयन्त-न्यायमञ्जरी

7. एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु।।
–राजशेखर-सूक्तिमुक्तावली
8. वैदर्भी कविता स्वयं वृतवती श्रीकालिदासं वरम्। **–अज्ञात**
9. पुष्पेषु चम्पा नगरीषु काञ्ची, नदीषु गङ्गा नृवरेषु रामः।
नारीषु रम्भा पुरुषेषु विष्णुः, काव्येषु माघः कविकालिदासः।।
– घटखर्पर
10. महिषं दधि सशर्करं पयः कालिदासकविता नवं वयः।
शारदेन्दुरबला च कोमला स्वर्गशेषमुपभुञ्जते जनः।।
– आचार्य उद्भट
11. काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या 'शकुन्तला'।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम्।। **– अज्ञात**
12. Wouldst thou the young year
blossoms and the fruits of its decline
And all by which the soul is charmed
enraptured, fearted, fed.
Wouldst thou the earth and heaven
itseff in one sole name combine?
I name the, O' Shakuntala
And all atonce is said. – **(Goethe)**

(संस्कृत-अनुवाद)

13. वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद्, ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्।।
–(जर्मन कवि गेटे का अनुवाद) **वी. वी. मिराशी**
14. अस्मिन्निति विचित्रकविपरम्परावाहिनि-संसारे–
कालिदासप्रभृतयो द्वित्राः पञ्चषा वा महाकवय इति गण्यन्ते।
– आचार्य आनन्दवर्धन
15. वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते। **– अज्ञात**
16. उपमा कालिदासस्य **– उद्भट**
17. कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः यत्र याति शकुन्तला।। **– अज्ञात**
18. श्रीकालिदासकविवर्य-सरस्वतीयं
किं वर्णयाम्यतितरां रसवाहिनीति।
यत् कालिका भगवती शुचिभावयोगाद्
यस्यामहो मुहुरनुग्रहमादधाति।। **– विठोबा अण्णा**
19. पुरा कवीनां गणना-प्रसङ्गे
कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावा-
दनामिका सार्थवती बभूव।। **– मल्लिनाथ**
20. रसभार-भारोद्भिन्नां भारतीममरादृते।
श्रीमतः कालिदासस्य विज्ञातुं कः क्षमः पुमान् **– स्थिरदेव**
21. स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः।।
– एहोल शिलालेख
22. कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती।
चतुर्मुखोऽथवा साक्षाद् विदुर्नान्ये तु मादृशाः।।**– मल्लिनाथ**
23. सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता प्रवल्गति।
– क्षेमेन्द्र (सुवृत्ततिलक)
24. भासयत्यपि भासादौ कविवर्गे जगत्त्रयम्।
के न यान्ति निबन्धारः कालिदासस्य दासताम्।। **–अज्ञात**
25. ``Kalidas may be considered as the brightest star in the firmament of indian artificial poetry"
– Prof. Lassen
26. कवयः कालिदासाद्याः कवयो वयमप्यमी।
पर्वते परमाणौ च पदार्थत्वं प्रतिष्ठितम्।। **– अज्ञात**
27. वाल्मीकिमिव सभासं यशःशरीरेण सर्वदा सन्तम्।
रसवद्वचनविकासं नमत कविं कालिदासं तम्।। **– अज्ञात**
28. कविरचलः कविरभिनन्दश्च कालिदासश्च।
अन्ये कवयः कपयश्चापलमात्रं परं दधाति।। **– अज्ञात**
29. कवयः कवयः कवयोऽपि च कालिदासाद्याः।
दृषदो भवन्ति दृषदाश्चिन्तामणयोऽपि हा दृषदः।। **– अज्ञात**
30. मेघे माघे गतं वयः। **– मल्लिनाथ**
31. कालिदासादीनामिव यशः। **– मम्मट**
32. धन्वन्तरिक्षपणकाऽमरसिंहशंकु-बेतालभट्ट घटकर्परकालिदासाः।
– ज्योतिर्विदाभरण
33. महाकविकालिदासं वन्दे वाग्देवतागुरुम्।
यज्ज्ञाने विश्वमाभाति दर्पणे प्रतिबिम्बितम्।। **– हलायुध**
34. क इह रघुकारे न रमते। **– आलोचक**

2. भवभूति

- **पितामह** – भट्टगोपाल
- **पिता** – नीलकण्ठ
- **माता** – जतुकर्णी (जातुकर्णी)
- **भवभूति का मूलनाम** – श्रीकण्ठ या भट्टश्रीकण्ठ
- **गुरु** – (i) ज्ञाननिधि (ii) कुमारिलभट्ट
- **भवभूति का दार्शनिक नाम** – उदुम्बर/उम्बिकाचार्य/उम्बेक
- **जन्मस्थान** – दक्षिणभारत में पद्मपुर नगर
- **उपाधि** – (i) पदवाक्यप्रमाणज्ञ, पद = व्याकरण, वाक्य = मीमांसा, प्रमाण = न्याय
(ii) वश्यवाक्, (iii) परिणतप्रज्ञ, (iv) शिखरिणीकवि
- **वंश/गोत्र** – काश्यप
- **जाति** – कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखापाठी ब्राह्मण
- **आश्रयदाता** – कान्यकुब्जनरेश यशोवर्मा

➢ **समय**– 650 ई. से 750 ई. के बीच (सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
➢ **रचनायें** – 1. मालतीमाधवम् (प्रकरण)
2. महावीरचरितम् (नाटक)
3. उत्तररामचरितम् (नाटक)
➢ **भवभूति की रीति** – गौडी
(उत्तररामचरितम् में गौड़ी और वैदर्भी का समन्वय)
➢ **भवभूति का प्रियरस** – करुण
➢ **भवभूति के प्रियछन्द** – अनुष्टुप् और शिखरिणी
➢ **उपासक** – शिव के
➢ उत्तररामचरितम् में भवभूति अपने आपको **'परिणतप्रज्ञ'** कहते हैं।
➢ महावीरचरितम् में भवभूति अपने आपको **'वश्यवाक्'** कहते हैं।
➢ भवभूति के नाटकों में **'अभिधावृत्ति'** मुख्य है।
➢ भवभूति की कृतियों में **'ओजगुण'** अधिक है।
➢ **क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलक'** में भवभूति के शिखरिणी की प्रशंसा में उसे **'निरर्गलतरङ्गिणी'** कहा है –
भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।
रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति॥ (सु. 3.33)
➢ भवभूति के तीनों नाटकों में **विदूषक का सर्वथा अभाव** है।

महाकवि भवभूति विषयक प्रशस्तियाँ

1. कवयः कालिदासाद्याः भवभूतिर्महाकविः ।
– अज्ञात समालोचक
नाटके भवभूतिर्वा वयं वा वयमेव वा।
2. उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते। **– विक्रमार्क**
3. कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते । **– अज्ञात**
4. बभूव वाल्मीकभवः कविः पुरा ततः प्रपेदे भुवि भर्तृमेण्ठताम्।
स्थितः पुनर्योभवभूतिरेखया स वर्तते सम्प्रति राजशेखरः।।
– राजशेखर - बालरामायण
5. भवभूतेर्शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी ।
रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति।।
– क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक
6. भवभूतेः सम्बन्धाद्भूधरभूरेव भारती भाति।
एतत्कृतकारुण्ये किमन्यथा रोदिति ग्रावा।।
– गोवर्धनाचार्य - आर्यासप्तशती।
7. स्पष्टभावरसा चित्रैः पादन्यासैः प्रवर्तिता।
नाटकेषु नटस्त्रीव भारती भवभूतिना।।
– धनपाल - तिलकमञ्जरी
8. सुकविद्वितयं मन्ये निखिलेऽपि महीतले।
भवभूतिः शुकश्चायं वाल्मीकिस्त्रितयोऽनयोः ।।
– भोज - भोजप्रबन्ध
9. रत्नावली पूर्वकमन्यदास्तामसीमभोगस्य वचोमयस्य।
पयोधरस्येव हिमाद्रिजायाः परं विभूषा भवभूतिरेव।।
– जल्हण - सूक्तिमुक्तावली
10. भवभूतिमनादृत्य निर्वाणमतिना मया ।
मुरारिपदचिन्तायामिदमाधीयते मनः।।
– जल्हण - सूक्तिमुक्तावली।
11. मान्यो जगत्यां भवभूतिरार्या सारस्वते वर्त्मनि सार्थवाहः।
वाचं पताकामित्रस्य दृष्ट्वा जनः कवीनामनुपृष्ठमेति।।
– उदयसुन्दरीचम्पू
12. भवभूतिजलधिनिर्गतकाव्यामृतरसकणा इव स्फुरन्ति।
यस्य विशेषा अद्यापि विकटेषु कथानिवेशेषु।।
– गौडवहो - वाक्पतिराज
13. जडानामपि चैतन्यं भवभूतेरभूद् गिरा।
ग्रावाप्यरोदीत् पार्वत्याः हसतः स्म स्तनावपि।।
– अज्ञात
14. अन्तर्मोदं कमपि भवभूतिर्वितनुते।। **– सदुक्तिकर्णामृत**
15. भव्यां यदि विभूतित्वं तात कामयसे तदा।
भवभूतिपदे चित्तमविलम्बं निवेशय।।
– अज्ञात।
16. भवभूतेर्विच्छित्तिव्यभिचारमुचो गिरां गुम्फाः।
विधिनापि दुर्निवारं तेषां खलु भावभूतत्वम्।।
– विश्वेश्वर पाण्डेय
17. भवभूतेः कवीन्द्रस्य वाणी कामदुधामता।
ब्रह्मानन्दसहोदर्या या तनोति मुदं सदा।।
– कपिलदेव द्विवेदी
18. साऽम्बा पुनातु भवभूतिपवित्रमूर्तिः।
– भवभूति
19. भवभूतिर्नाम कविर्निसर्गसौहृदेन भरतेषु वर्तमानः।
– मालतीमाधवस्य प्रस्तावना
20. कविर्वाक्पतिराजश्रीभवभूत्यादिसेवितः।
जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणस्तुतिवन्दिताम्।।
– कल्हण राजतरङ्गिणी
21. तपस्वीं कां गतोऽवस्थामिति स्मराननाविव।
गिरिजायाः स्तनौवन्दे भवभूतिसिताननौ।।
– भवभूति

3. भर्तृहरि

➢ विक्रमसंवत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य के बड़े भाई।
➢ **पत्नी** – पिङ्गला
➢ **गुरु** – (i) गोरखनाथ (ii) वसुरात (बौद्धमत में)

- **भाई (अनुज)** – विक्रमादित्य
- **पिता** – गन्धर्वसेन (मालवदेश के राजा)
- ईत्सिंग के कथन के आधार पर **भर्तृहरि को बौद्ध** कहा जाता है।
- भर्तृहरि **वेदान्तोक्त ब्रह्म के उपासक** थे।
- **भर्तृहरि का समय** – (i) 57 ई. पू. अथवा (ii) 575 से 650 ई.
- **भर्तृहरि की शैली/रीति एवं गुण** – वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
- **मुक्तक काव्य के प्रथमकवि** – भर्तृहरि
- **भर्तृहरि के प्रिय छन्द** – शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी
- मृत्यु 650 ई. (चीनी यात्री इत्सिंग के अनुसार)
- **रचनायें– (i) वाक्यपदीयम्** (व्याकरणग्रन्थ), (ii) **नीतिशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक, (iii) **शृङ्गारशतकम्** (मुक्तककाव्य) 103 श्लोक, (iv) **वैराग्यशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक

4. बाणभट्ट

बाणभट्ट का वंशवृक्ष

वत्स
।
कुबेर
(कर्मकाण्डी श्रुतिशास्त्र सम्पन्न ब्राह्मण)
।
पाशुपत
।
अर्थपति (इनके 11 पुत्र हुए)
।
चित्रभानु
।
बाणभट्ट
।
भूषणभट्ट (पुलिन्दभट्ट, पुलिनभट्ट)
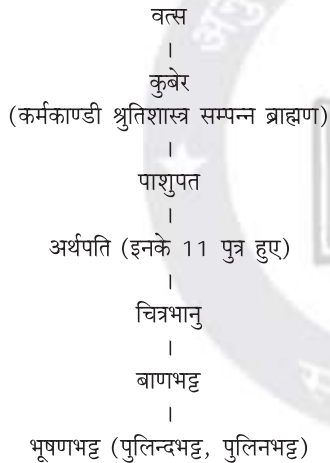
- **निवास** – शोण (सोन) नदी के पास 'प्रीतिकूट' नामक ग्राम। (वर्तमान में शाहाबाद, आरा, बिहार।)
- **राज्याश्रय** – सम्राट् हर्ष के सभापण्डित
- **पितामह** – अर्थपति
- **पिता** – चित्रभानु
- **माता** – राजदेवी
- **पत्नी** – कवि मयूरभट्ट की बहन
- **पुत्र** - भूषणभट्ट (पुलिन या पुलिन्दभट्ट)
- **बहन** – मालती
- **बाण के दो भाई** – चित्रसेन और मित्रसेन
- बाण ने स्वयं हर्षचरितम् के प्रथम तीन उच्छ्वासों तथा कादम्बरी की प्रस्तावना के पद्यों में अपना परिचय दिया है।
- **वंश/गोत्र** – वात्स्यायन / वत्स वंश (ब्राह्मण)
- **उपासक** – शिव (शैव)
- **बाण की रीति** – पाञ्चाली
- बाल्यावस्था में ही बाण की माता का स्वर्गवास।
- 14 वर्ष की आयु में बाण के पिता का भी स्वर्गवास।
- राजा हर्ष ने इन्हें "**महानयं भुजङ्गः**" (बहुत चरित्रभ्रष्ट) कहा।
- **हर्ष का राज्याभिषेक** अक्टूबर 606 ई. में हुआ, और उनकी मृत्यु 648 ई. में हुई।
- **ह्वेनसांग** ने 629 से 645 ई. तक भारत भ्रमण किया था और वह हर्ष के निकट सम्पर्क में भी आया था।
- **बाण का समय** – सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध
- **बाणभट्ट का विवाह** महाकवि मयूर भट्ट (सूर्यशतकम्) की बहन से हुआ था।
- **बाण की रचनायें**– 1. कादम्बरी (कथा), 2. हर्षचरितम् (आख्यायिका), 3. चण्डीशतकम् (मुक्तक), 4.मुकुटताडितक (नाटक), 5. पार्वतीपरिणय (नाटक)
- हर्षवर्धन के चचेरे भाई कृष्ण के निमन्त्रण पर बाणभट्ट हर्ष के राजदरबार में पहुँचे।
- **उपाधियाँ/कथन**

उपाधि/कथन		वक्ता
वश्यवाणी कविचक्रवर्ती	–	हर्षवर्धन
बाणस्तु पञ्चाननः	–	श्रीचन्द्रदेव
पञ्चबाणस्तु बाणः	–	जयदेव
कविताकामिनीकौतुक	–	जयदेव
गद्यसम्राट्	–	बलदेव उपाध्याय
वाणी बाणो बभूव	–	गोवर्धनाचार्य
कवितातरुगहनविहरणमयूरः	–	वामनभट्टबाण
कविताकाननकेसरी	–	चन्द्रदेव
तुरङ्गबाण	–	आलोचक
बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती	–	सोड्ढल
महानयं भुजङ्गः	–	हर्षवर्धन
गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति	–	आलोचक
बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्	–	समालोचक
भट्टबाणस्य भारतीम्	–	गङ्गादेवी
वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य	–	धर्मदास

- **हर्ष के दरबार में दो अन्य विद्वान्**– (i) मातङ्गदिवाकर, (ii) मयूरभट्ट

महाकवि बाणभट्ट विषयक प्रशस्तियाँ

1. युक्तं कादम्बरीं श्रुत्वा कवयो मौनमाश्रिताः।
बाणध्वनावनध्यायो भवतीति स्मृतिर्यतः।।
सोमेश्वर – कीर्तिकौमुदी
2. रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति।
सा किं तरुणी? **नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य॥**
– विदग्धमुखमण्डन - धर्मदास
3. जाता शिखण्डिनी प्राक् यथा शिखण्डी तथावगच्छामि।
प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं **वाणी बाणो बभूव** ह।।
– गोवर्धनाचार्य
4. श्लेषे केचन शब्दगुम्फविषये केचिद्रसे चापरे-
ऽलंकारे कतिचित्सदर्थविषये चान्ये कथावर्णने।
आः सर्वत्र गभीरधीरकविताविन्ध्याटवी चातुरी-
सञ्चारी कविकुम्भिकुम्भभिदुरो **बाणस्तु पञ्चाननः॥**
– चन्द्रदेव
5. **बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।** **– अज्ञात**
6. वागीश्वरं हन्त भजेऽभिनन्दमर्थेश्वरं वाक्पतिराजमीडे।
रसेश्वरं स्तौमि च कालिदासं **बाणं तु सर्वेश्वरमानतोऽस्मि॥**
– सोड्ढल (उदयसुन्दरी)
7. हृदि लग्नेन बाणेन यन्मन्दोऽपि पदक्रमः।
भवेत्कविकुरङ्गाणां चापलं तत्र कारणम्।। **– त्रिलोचन**
8. शश्वद्बाणद्वितीयेन नमदाकारधारिणा।
धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषो रञ्जितो जनः।। **– त्रिविक्रमभट्ट।**
9. यस्याश्चौरः चिकुरनिकुरः कर्णपूरो मयूरः।
भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः।।
हर्षो हर्षः हृदयवसतिः **पञ्चबाणस्तु बाणः।**
केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय।।
– जयदेव - प्रसन्नराघव
10. केवलोऽपि स्फुरन् बाणः करोति विमदान् कवीन्।
किं पुनः क्लृप्तसन्धानः पुलिन्ध्रकृतसन्निधिः।।
– धनपाल - तिलकमञ्जरी
11. वाणीपाणिपरामृष्टवीणानिक्वाणहारिणीम्।
भावयन्ति कथं वान्ये भट्टबाणस्य भारतीम्।। **– गङ्गादेवी**
12. सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराज इति त्रयः।
वक्रोक्तिमार्गनिपुणाश्चतुर्थो विद्यते न वा।।
– कविराज - राघवपाण्डवीय
13. दण्डिन्युपस्थिते सद्यः कवीनां कम्पितं मनः।
प्रविष्टे त्वन्तरे बाणे कण्ठे वागेव रुध्यते।। **– हरिहर**
14. कादम्बरीसहोदर्या सुधया वै बुधे हृदि।
हर्षाख्यायिकया ख्यातिं बाणोऽब्धिरिव लब्धवान्।।
– धनपाल (तिलकमञ्जरी)
15. शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरुच्यते।
शिलाभट्टारिका वाचि बाणोक्तिषु च सा यदि।।
– भोज - सरस्वतीकण्ठाभरण
16. प्रतिकविभेदनबाणः **कवितातरुगहनविहरणमयूरः।**
सहृदयलोकसुबन्धुर्जयति श्रीभट्टबाणकविराजः**– वामनभट्टबाण**
17. बाणस्य हर्षचरिते निशितामुदीक्ष्य।
शक्तिं न केऽत्र कवितास्त्रमदं त्यजन्ति।। **– सोड्ढल**
18. सहर्षचरितारब्धाददद्भुतकादम्बरी कथा।
बाणस्य गण्यनार्येव स्वच्छन्दा भ्रमति क्षितौ।। **– राजशेखर**
19. परिशीलितैव सरसं कविराजैर्बहुभिरत्र वाग्देवी।
बाणेन तु वैजात्यात्कथयति नामैव वाणीति।।
– विश्वेश्वर पाण्डेय
20. कादम्बरीरसभरेण समस्त एव।
मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।। **– भूषणभट्ट**
21. कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते। **– अज्ञात**
22. नृत्यति यद्रसनायां वेधोन्मुखलासिका वाणी।
– पार्वतीपरिणय
23. द्विजेन तेनाक्षतकण्ठकौण्ठ्यया महामनोमोहमलीमसान्धया।
अलब्धवैदग्ध्यविलासमुग्धया धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा।।
– कादम्बरी कथामुख
24. ''यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धेऽपि तादृशः'' **– भोजराज**

5. अम्बिकादत्तव्यास

- **पितामह** – पं राजाराम
- **पिता** – दुर्गादत्त
- **चाचा/दादा** – देवीदत्त
- **पुत्र** – पं. राधाकुमारव्यास
- **गोत्र** – पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी/त्रिप्रवर/भीडावंश
- **जन्मस्थान** – राज्य - राजस्थान, जिला - जयपुर, ग्राम - रावत जी का धूला, मुहल्ला - सिलावटी
- **जन्मसमय** – चैत्र शुक्लपक्ष अष्टमी सं. 1915 (1858 ई.)
- **मृत्यु** – मार्ग शीर्ष (अगहन) कृष्णपक्ष त्रयोदशी सोमवार सं. 1957 (सन् 1900 ई.)
- **कर्मस्थली** – काशी में अध्ययन - अध्यापन
- **कुल रचनाएं** – लगभग 78
- **संस्कृत रचनायें**– शिवराजविजयम् (उपन्यास) सामवतम् (नाटक) (22 वर्ष की अवस्था में) रत्नाष्टक, कथाकुसुमम्
- **हिन्दी रचनाएं**– बिहारी-विहार (कुण्डलिनी छन्द में)
- **पत्रिका**–'पीयूष-प्रवाह' का सम्पादन
- **उपाधियाँ**– 1. सुकवि (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, काशी कविताविर्धिनी सभा)
  2. घटिकाशतक (ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा)
  3. शतावधान
  4. भारतरत्न (काशी की 'महासभा')

5. अभिनवबाण/आधुनिकबाण

6. भारतभूषण

7. महाकवि

- प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता अम्बिकादत्तव्यास।
- 'बिहारी-विहार' में व्यास जी ने अपना संक्षिप्त जीवन-परिचय लिखा है।
- लगभग 12 वर्ष की अवस्था में व्यास जी ने धर्मसभा की परीक्षा में पुरस्कार प्राप्त किया था।
- बिहार में **'संस्कृत-सञ्जीवनी-समाज'** की स्थापना।
- व्यास जी ने 10 वर्ष की अवस्था से ही काव्य रचना आरम्भ कर दी थी।
- व्यास जी ने **'शिवराज-विजयम्'** 1870 ई. में लिखा जो काशी से 1901 ई. में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ।
- गवर्नमेण्ट संस्कृत-कॉलेज पटना में प्राध्यापक।
- वक्ता और साहित्यस्रष्टा के साथ ही चित्रकारिता, अश्वारोहण संगीत और शतरंज में भी व्यास जी विशेष रुचि रखते थे।
- सितार, हारमोनियम, जलतरङ्ग और मृदङ्ग इनके प्रिय वाद्य थे।
- व्यास जी हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और बंगला भाषा के ज्ञाता थे।
- न्याय, व्याकरण, वेदान्त और दर्शन में इनकी अच्छी गति थी।
- एक घड़ी (24 मिनट) में 100 श्लोकों की रचना करने से व्यास जी को **'घटिकाशतक'** की उपाधि दी गयी थी।
- सौ प्रश्नों को एक साथ ही सुनकर उन सभी प्रश्नों का उत्तर उसी क्रम में देने की अद्भुतक्षमता होने से उन्हें **'शतावधान'** की उपाधि दी गयी थी।
- **बयालीस वर्ष की अवस्था** में ही व्यास जी संवत् 1957 (1900 ई.) में अपने पीछे एक नववर्षीयपुत्र, एक कन्या और विधवा पत्नी को असहाय छोड़कर पञ्चतत्व को प्राप्त हो गये।

6. भारवि

- **पिता** – (i) श्रीधर, (ii) नारायणस्वामी (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार)
- **माता** – सुशीला
- **पत्नी** – रसिकवती या रसिका
- **पुत्र** – मनोरथ
- **मूल नाम** – दामोदर
- **गोत्र** – कुशिक
- **जन्म स्थान** – (i) दक्षिण भारत में नासिक प्रदेश के **'अचलपुर'** (एलिचपुर), (ii) धारानगरी (अवन्तिसुन्दरी कथा के अनुसार)
- **समय** – छठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध/सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

भारवि का वंशवृक्ष

भारवि
|
मनोरथ (पुत्र)
|
वीरदत्त - गौरी (पौत्र)
|
दण्डी (प्रपौत्र)

- **सम्प्रदाय** – शैव
- **उपाधि** – 'आतपत्र भारवि'
- **आधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मीम्'' (किरात. 5.39)** इस श्लोक में **'कनकमय आतपत्र'** (सोने का छाता) की उपमा को अति सुन्दर मानकर आलोचकों ने कवि का नाम ही **'आतपत्र भारवि'** रख दिया।
- **आश्रयदाता** – 1. विष्णुवर्द्धन (पुलकेशिन द्वितीय के अनुज), 2. सिंहविष्णु (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार), 3. दुर्विनीत, 4. महेन्द्रविक्रम (सिंहविष्णु का पुत्र)
- राजा दुर्विनीत ने 'किरातार्जुनीयम्' के 15वें सर्ग पर संस्कृतटीका लिखी।
- 'भारवि' **दण्डी के प्रपितामह** हैं।
- भारवि की वाणी को **'प्रकृतिमधुरा'** कहा जाता है।
- भारवि महाकाव्यों में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** या **'रीतिशैली' के जन्मदाता हैं।** इनके काव्यमार्ग को **विचित्रमार्ग** कहते हैं।
- श्री एन. सी. चटर्जी भारवि को **'ट्रावनकोर' का निवासी** सिद्ध करते हैं।
- एक किंवदन्ती के अनुसार पिता द्वारा अपमानित भारवि उनके वध के लिए उद्यत हो गये, परन्तु पिता द्वारा उनके हित के लिए डाँटा गया, यह जानकर उन्हें बहुत पश्चात्ताप हुआ, और पिता ने छः माह तक ससुराल में सेवा करने का आदेश दिया।
- भारवि का जन्म 560 ई. के लगभग तथा रचनाकाल 580 ई. के लगभग अधिकांश आलोचकों ने माना है।
- भारवि **'अर्थगौरव'** के लिए प्रसिद्ध हैं।
- आचार्य मल्लिनाथ ने भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' पर **'घण्टापथ'** नाम की टीका लिखी है।
- भारवि राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित हैं।
- मल्लिनाथ, भारवि की कविता की उपमा **'नारिकेलफल'** से करते हैं– **'नारिकेलफलसम्मितं वचः'**
- दक्षिण के **'एहोल शिलालेख'** में भारवि का नाम उल्लिखित है।

➢ भारवि के किरातार्जुनीयम् को '**लक्ष्म्यन्त**' महाकाव्य, माघ के शिशुपालवधम् को '**श्र्यन्त**' महाकाव्य तथा श्रीहर्ष के नैषधीय चरितम् को '**आनन्दान्त**' महाकाव्य कहते हैं।

महाकवि 'भारवि' विषयक प्रशस्तियाँ

1. भारवेरर्थगौरवम् । **– उद्भट**
2. वृत्तच्छत्रस्य सा कापि वंशस्थस्य विचित्रता ।
   प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता ।।
   – क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक
3. नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते ।
   स्वादयन्तु रसगर्भनिर्भरं सारमस्य रसिका यथेप्सितम् ।।
   – मल्लिनाथ
4. प्रदेशवृत्यापि महान्तमर्थं प्रदर्शयन्ती रसमादधाना ।
   सा भारवेः सत्पथदीपिकेव एषा कृतिः कैरिव नोपजीव्या ।।
   – कृष्णकवि
5. तादात्म्यं रसभावयोः भारविः स्पष्टमूचिवान् ।।
   – शारदातनय
6. "प्रकृतिमधुरा भारविगिरः।" **– श्रीधरदास (सदुक्तिकर्णामृत)**
7. वंशस्थवृत्तेन धृतातपत्रो वृत्तेन संदर्शितराजवृत्तिः ।
   अर्थप्रकर्षाहृतराजलक्ष्मीर्नृपायते भारविरात्तकीर्तिः ।।
   – आचार्य कपिलदेव द्विवेदी
8. There is no doubt of the power of Bharvi in describption, his style at its best has a calm dignity which is certainly attractive, while he excels also in the observation and record of the beauties of nature and of maidens.
   हिन्दी अनुवाद – भारवि की वर्णन-शक्ति के विषय में सन्देह को अवसर नहीं है। उनकी शैली उत्कृष्टरूप में शान्त गौरवमयी है जो निश्चय ही आकर्षक है। वे प्रकृति और प्रमदाओं के सौन्दर्य, निरीक्षण और उन्हें चित्रित करने में सर्वश्रेष्ठ हैं।
   – प्रो. ए. बी. कीथ, संस्कृत साहित्य का इतिहास
9. स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम् ।
   अनुसाध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने ।।
   – ऐहोल शिलालेख - रविकीर्ति ।
10. अर्थदीधितिसंवीता, सन्नीरजसुहासिनी ।
    अज्ञोलूकनिरानन्दा, भा रवेरिव भारवेः ।।
    – आचार्य कपिलदेव द्विवेदी

ख. ग्रन्थपरिचयः

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – नाटक
- **अङ्क** – 7 (सात)
- **प्रधानरस** – शृङ्गार (सम्भोगशृङ्गार)
- **कथानक** – राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला का परस्पर प्रेम, विरह एवं मिलन का वर्णन है।
- **प्रमुखपात्र** – दुष्यन्त (नायक), शकुन्तला (नायिका) कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, माढव्य (विदूषक), गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत, हंसपदिका, वसुमती, मातलि, सानुमती, सर्वदमन (भरत), मारीच ऋषि, अदिति (दाक्षायणी), दुर्वासा, मेनका
- शाकुन्तलम् का उपजीव्य/आधारग्रन्थ है – **1. महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (68-74 अध्यायों में), 2. पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा मिलती है।**
- अभि0 शाकुन्तलम् नाटक की रीति – **वैदर्भी रीति**
- वैदर्भीरीतिसन्दर्भे विशिष्यते – **कालिदासः**
- कालिदास के काव्यों में किस वृत्ति का विशेष प्रयोग है– **कैशिकी**
- कालिदास का प्रिय अलङ्कार – **उपमा** (उपमा कालिदासस्य)।
- अभि0शाकु0 के प्रथम अङ्क का नाम – **आश्रम प्रवेश**
- द्वितीय अङ्क का नाम – **आश्रम निवेश**
- तृतीय अङ्क का नाम – **मिलन अङ्क**
- चतुर्थ अङ्क का नाम – **विदा अङ्क**
- पञ्चम अङ्क का नाम – **प्रत्याख्यान अङ्क**
- षष्ठ अङ्क का नाम – **पश्चात्ताप अङ्क।**
- सप्तम अङ्क का नाम – **पुनर्मिलन अङ्क।**
- शाकुन्तलम् के **चतुर्थ अङ्क** में करुणरस का प्रयोग है।
- शकुन्तला का हस्तिनापुर (पतिगृह) गमन **चतुर्थ अङ्क में** वर्णित है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक – **दुष्यन्त**
- दुष्यन्त **धीरोदात्त** कोटि का नायक है।
- राजा दुष्यन्त कहाँ का राजा है – **हस्तिनापुर**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका – **शकुन्तला**
- शकुन्तला किस कोटि की नायिका है – **मुग्धा**
- शकुन्तला है – **शकुन्तभिः पक्षिभिः लालिता पालिता इति शकुन्तला**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण है – **आशीर्वादात्मक**
- अभि0 शाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में छन्द है – **स्रग्धरा**
- ''या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....." इत्यादि श्लोक कहाँ का है – **अभि0शाकु0 नाटक का मङ्गलाचरण**
- अभि0शाकु0 के मङ्गलाचरण में किसकी स्तुति की गयी है – **अष्टमूर्ति शिव की**
- **''तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः''** से सम्बन्धित नाटक – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- **''तत्र श्लोकश्चतुष्टयम्''** किससे सम्बन्धित है – **अभि0 शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से**
- ''काव्येषु नाटकं रम्यम्'' इस वाक्य में किस नाटक का संकेत है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का**
- दुष्यन्त का विनोदप्रिय मित्र – **माढव्य**
- अभि0 शाकुन्तलम् का विदूषक – **माढव्य**
- शकुन्तला की दोनों सखियाँ – **1. अनसूया. 2. प्रियंवदा।**
- शकुन्तला के माता और पिता– **मेनका और ऋषि विश्वामित्र**
- शकुन्तला के पालक (धर्मपिता) पिता – **महर्षि कण्व**
- महर्षि कण्व के दो प्रमुख शिष्य – **शार्ङ्गरव और शारद्वत**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह हुआ – **गान्धर्व विवाह**
- शकुन्तला को किसने शाप दिया – **ऋषि दुर्वासा ने**
- शकुन्तला को शाप का कारण – **अतिथि रूप में पधारे दुर्वासा ऋषि का तिरस्कार**
- शकुन्तला के शाप को जानने वाली – **प्रियंवदा और अनसूया**
- शकुन्तला को शाप मिला– **अभि0शाकु0 के चतुर्थ अङ्क में**
- अभि0शा0 में शाप की कल्पना का कारण – **प्रेम के आदर्शस्वरूप की स्थापना**
- शाप का प्रभाव किस अङ्क में दिखायी पड़ता है – **अभि0शा0 के पञ्चम अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त के पश्चात्ताप का वर्णन – **षष्ठ अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है – **अभि0शा0 के सप्तम अङ्क में**

➤ हेमकूट पर्वत में आश्रम है – **महर्षि मारीच का।**
➤ दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन – **हेमकूट पर्वत के मारीच आश्रम में।**
➤ शकुन्तला की मुद्रिका प्राप्त होती है– **धीवर मीनपालक को**
➤ दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम– **सर्वदमन (भरत)**
➤ अभि० शा० का प्रारम्भ होता है – **नान्दीपाठ से (या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या)**
➤ अभि०शा० का समापन होता है – **भरत वाक्य से (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....)।**
➤ कालिदास का सर्वस्वभूतग्रन्थ है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्। ''कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।''**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विषय में **पाश्चात्त्य विद्वान् गेटे** का कथन – Wouldst thou the young year's blossoms and the fruits of its decline, and all by which the soul is charmed, enraptured adapted, fed wouldst thou the earth and heaven it self in one name combined? I name the o shakuntala? And all at once is said.

संस्कृतरूपान्तरण

वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्,
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः,
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्।।

➤ कालिदास का विश्वप्रसिद्ध नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्।**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवादक– **विलियम जोन्स**
➤ विलियम जोन्स ने **The last things** की भूमिका में कालिदास को '**भारत का शेक्सपियर**' कहा।
➤ **महाकवि गेटे** ने अपने सुप्रसिद्ध नाट्यकाव्य '**फाउस्ट**' में कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् और नायिका शकुन्तला की भूरि भूरि प्रशंसा की।
➤ कालिदास द्वारा विरचित तीन नाटक हैं – **1. मालविकाऽग्निमित्रम्** (प्रथमनाटक), **2. विक्रमोर्वशीयम्** (द्वितीय नाटक), **3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ नाटक)
➤ कण्व द्वारा पोषित, मेनका और विश्वामित्र की पुत्री – **शकुन्तला**
➤ कालिदास के सभी नाटक हैं – **सुखान्त।**
➤ कालिदास की नाट्यकला का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् कथाविन्यास, चरित्र-चित्रण, संवाद योजना, भाषा – शैली, अलंकार–योजना, रसयोजना, प्रकृतिचित्रण, सभी दृष्टियों से **सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **196 पद्य** हैं।
➤ महाकवि कालिदास **रसमयी शैली** के आचार्य हैं।
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण तीन विशेषताओं – **त्याग, तपस्या, और तपोवन** का अच्छा चित्रण किया गया है।
➤ भरतमुनि के अनुसार नाटक का लक्षण – **''त्रैलोकस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम्।''**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है – **विष्कम्भक से।**
➤ अनसूया और प्रियंवदा के पुष्पावचयन से प्रारम्भ होता है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अङ्क।**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में वर्णन है – **शकुन्तला की विदाई का।**
➤ अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया गया है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में।**
➤ दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रणयगाथा वर्णित है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में।**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **180 उपमाओं का प्रयोग** किया गया है।
➤ शकुन्तला **हेमकूट पर्वत पर महर्षि मारीच के आश्रम में** अपनी माता मेनका के साथ वियोग के दिन गुजारती है।
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रेम, वियोग और पुनर्मिलन का वर्णन है।
➤ इस नाटक की कथावस्तु राजा दुष्यन्त के द्वारा शकुन्तला को दिये गये अभिज्ञान (अँगूठी) के आस पास चक्कर लगाती है।
➤ राजा दुष्यन्त मृग का पीछा करते हुए किस आश्रम में प्रवेश करता है – **महर्षि कण्व के।**
➤ तीर्थयात्रा पर गए हुए कण्व ऋषि की अनुपस्थिति में ही राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का गान्धर्व विवाह आश्रम में ही सम्पन्न हो जाता है।
➤ शकुन्तला को महर्षि कण्व किसके साथ पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं – **शार्ङ्गरव, शारद्वत, और गौतमी।**
➤ हस्तिनापुर जाते समय शकुन्तला की अगूँठी कहाँ गिर जाती है – **शचीतीर्थ में।**

- दुष्यन्त, शकुन्तला को पहचानने से क्यों इंकार कर देता है – **दुर्वासा के शापवशात्।**
- शकुन्तला कण्व ऋषि के आश्रम के बाद किस आश्रम में निवास करती है – **ऋषि मारीच के आश्रम में।**
- बालक सर्वदमन (भरत) और शकुन्तला से दुष्यन्त की भेंट कहाँ होती है – **हेमकूटपर्वत स्थित ऋषि मारीच के आश्रम में।**
- महर्षि कण्व का आश्रम था – **मालिनी नदी के तट पर।**
- दुष्यन्त ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब महर्षि कण्व कहाँ गए हुए थे – **सोमतीर्थ।**
- शकुन्तला को शाप देने वाले ऋषि थे – **दुर्वासा**
- मारीच ऋषि रहते थे – **हेमकूट पर स्थित आश्रम में**
- दुष्यन्त की कौन रानी संगीत का अभ्यास कर रही है – **हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त की दो रानियाँ – **वसुमती और हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त किस रानी को अधिक प्यार करता है– **वसुमती**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किस गुण की प्रधानता है – **प्रसाद गुण**
- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य विषय है – **प्रसाद गुण**
- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य रस है – **शृङ्गार**
- नाट्यशास्त्र में नान्दी का अर्थ है – **मङ्गलाचरण**
- नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है – **अन्त में**
- शकुन्तला का पालन पोषण हुआ था– **कण्व के आश्रम में**
- शकुन्तला पति के चिन्तन में कहाँ बैठी थी– **कुटिया में**
- राजा की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था– **सानुमती**
- जर्मनविद्वान् गेटे द्वारा प्रशंसित नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- शापनिवृत्ति के लिए ऋषि दुर्वासा से अनुनय विनय करने वाली सखी है– **प्रियंवदा**
- शकुन्तला की अमङ्गलशान्ति के लिए कण्व कहाँ गए थे – **सोमतीर्थ**
- शकुन्तला ने किस तीर्थ में जलवन्दना की थी – **शचीतीर्थ**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सर्वश्रेष्ठ अङ्क है – **चतुर्थ**
- वह महिला तपस्विनी जिसके साथ शकुन्तला हस्तिनापुर जाती है – **गौतमी**
- अग्निगर्भा शमी के समान है – **शकुन्तला**
- दुष्यन्त शकुन्तला की वैवाहिक विधि है – **गान्धर्व**
- हस्तिनापुर से शकुन्तला को मारीच आश्रम ले जाने वाली है – **एक दिव्य ज्योति (मेनका)**
- दुष्यन्त को देवासुर संग्राम की सूचना देने वाला है – **इन्द्र का सारथि मातलि**
- वह स्थान जहाँ स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त रुकता है – **मारीच ऋषि का आश्रम**
- **'अपराजिता रक्षाकरण्डक'** से सम्बद्ध है – **सर्वदमन (भरत)**
- कालिदास के तीनों नाटकों में प्रधानता है – **शृङ्गार रस की।**
- शाकुन्तलम् का प्रारम्भ तथा अन्त होता है – **सम्भोग शृङ्गार से**
- **'राजन् आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः'** किसने कहा – **तपस्वी वैखानस ने**
- भ्रमर से भयभीत शकुन्तला की रक्षा कौन करता है – **राजा दुष्यन्त**
- 'शकुन्तला ऋषि विश्वामित्र एवं मेनका की कन्या हैं' – यह बात राजा दुष्यन्त को किसने बताया – **अनसूया ने**
- हस्तिनापुर से महारानी का संदेश लेकर कण्व के आश्रम राजा दुष्यन्त के पास कौन जाता है – **करभक नाम का एक सेवक**
- शाकुन्तलम् के किस अङ्क में राजा दुष्यन्त विदूषक माढव्य को आश्रम से हस्तिनापुर वापस भेज देता है– **द्वितीय अङ्क में**
- शकुन्तला को राजा दुष्यन्त के लिए एक प्रेमपत्र लिखने की सलाह कौन देती है – **प्रियंवदा**
- शकुन्तला, सखियों के आग्रह से नलिनी पत्र पर नाखूनों से राजा को प्रेमपत्र लिखती है।

तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवाऽपि रात्रावपि।
निर्घृण तपति बलीयस्त्वयि वृत्तमनोरथाया अङ्गानि॥

अभि0शा0 3-13।

- शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार पाकर शान्तिजल लिए हुए कौन आती है – **आर्या गौतमी**
- नाटक में दुर्वासा ऋषि का आगमन किस अङ्क में होता है – **चतुर्थ अङ्क में**
- ऋषि कण्व को आकाशवाणी द्वारा मालूम होता है कि शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विवाह हो गया है, तथा वह आपन्नसत्त्वा (गर्भिणी) है।

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन् अग्निगर्भां शमीमिव॥

अभि0शा0 4/4

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मार्मिक प्रसङ्ग

प्रथम अङ्क – भ्रमर वृत्तान्त और शकुन्तला की सखियों से राजा का वार्तालाप।
द्वितीय अङ्क – शकुन्तला के सौन्दर्य का वर्णन।
तृतीय अङ्क – दुष्यन्त और शकुन्तला के विरह दुःख का वर्णन और दोनों के मिलन का वर्णन।
चतुर्थ अङ्क – शकुन्तला की विदाई।
पंचम अङ्क – राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद।
षष्ठ अङ्क – राजा के शोक का वर्णन।
सप्तम अङ्क – पुत्र सर्वदमन का दर्शन और शकुन्तला से मिलन का वर्णन।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नाटकीय पात्रों का परिचय

पुरुष पात्र

क्र.	नाम	परिचय
1.	सूत्रधार	नाटक का आरम्भ करने वाला प्रधान नट और रंगमच का अध्यक्ष।
2.	दुष्यन्त	नाटक का नायक, हस्तिनापुर का राजा।
3.	सूत	दुष्यन्त का सारथि।
4.	सेनापति भद्रसेन	दुष्यन्त का सेनापति।
5.	विदूषक माढव्य	दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र और हास्यकारी।
6.	महर्षिकण्व (काश्यप)	आश्रम के कुलपति, शकुन्तला के पालक और धर्मपिता।
7.	मारीच (कश्यप)	एक महर्षि, देवों और राक्षसों के पिता, एक प्रजापति।
8.	भरत (सर्वदमन)	राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुत्र।
9.	सोमरात	दुष्यन्त का पुरोहित।
10.	मातलि	इन्द्र का सारथि।
11.	वैखानस, हारीत, नारद, गौतम, शार्ङ्गरव, शारद्वत, शिष्य	सभी कण्व के शिष्य, आश्रम के तपस्वी।
12.	रैवतक (दौवारिक)	राजा का भृत्य, द्वारपाल।
13.	करभक	राजा के पास राजमाता का संदेश पहुँचाने वाला सेवक।
14.	कञ्चुकी (वातायन)	रनिवास की देखभाल करने वाला एक वृद्ध ब्राह्मण।
15.	वैतालिक	स्तुतिपाठक (भाट, चारण)।
16.	श्याल	राजा का साला, नगर रक्षाधिकारी (कोतवाल)।
17.	धीवर (मीनपालक)	मछली पकड़ने वाला।
18.	सूचक	पुलिस के दो सिपाही।
19.	जानुक	
20.	गालव	ऋषि मारीच का शिष्य।
21.	पिशुन	दुष्यन्त का मन्त्री
		स्त्रीपात्र
21.	नटी	सूत्रधार की पत्नी।
22.	शकुन्तला	नाटक की नायिका, कण्व की धर्मपुत्री, दुष्यन्त की पत्नी, मेनका और विश्वामित्र से उत्पन्न एक क्षत्रिय कन्या।
23.	अनसूया	शकुन्तला की अत्यन्त प्रिय और अन्तरङ्ग सखी।
24.	प्रियंवदा	

25.	गौतमी	कण्व के आश्रम की अध्यक्षा, एक वृद्धा तापसी।
26.	अदिति (दाक्षायणी)	महर्षि मारीच की पत्नी।
27.	सानुमती	मेनका की सखी, एक अप्सरा।
28.	परभृतिका	राजा की सेविका, उद्यानपालिका।
29.	मधुकरिका	
30.	चतुरिका	राजा की सेविका।
31.	वेत्रवती (प्रतीहारी)	राजा की द्वारपालिका।
32.	यवनी	राजा की एक सेविका।
33.	तापसी (सुव्रता)	मारीच के आश्रम की एक तपस्विनी।

अन्य पात्र

- **मघवा (इन्द्र)** – देवताओं के राजा, दुष्यन्त के मित्र।
- **इन्द्राणी** – इन्द्र की पत्नी।
- **जयन्त** – इन्द्र का पुत्र।
- **कौशिक (विश्वामित्र)** – शकुन्तला के जन्मदाता पिता।
- **मेनका** – शकुन्तला की माता, एक अप्सरा।
- **दुर्वासा** – एक ऋषि, शकुन्तला को शाप देने वाले।

नोट – नाटक में इन पात्रों का केवल नामोल्लेख मात्र हुआ है।

- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) राजा दुष्यन्त तथा विश्वामित्र और मेनका की पुत्री शकुन्तला का प्रेम, वियोग, पुनर्मिलन वर्णित है।
- शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व तथा पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में वर्णित है।
- शाकुन्तलम् का **नायक 'दुष्यन्त'** 'हस्तिनापुर' का राजा है और धीरोदात्त नायक के गुणों से युक्त है।
- 'शाकुन्तलम्' की **नायिका शकुन्तला** महर्षि कण्व (काश्यप) के आश्रम में पली है। 'मुग्धा' नायिका है।
- 'शाकुन्तलम्' का **प्रमुख 'रस' शृङ्गार है।** चतुर्थ अङ्क में **करुण** रस है।
- शाकुन्तल में **24 छन्दों** का प्रयोग हुआ है। सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द आर्या (39) है। तत्पश्चात् वसन्ततिलका (30) है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कुल **196 श्लोक** है। सर्वाधिक (35) श्लोक सप्तम अङ्क में हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में **वैदर्भी रीति** और **माधुर्य गुण** प्रयुक्त है।
- शाकुन्तलम् में साधारणतया **गद्य के लिए शौरसेनी** और पद्यों के लिए **महाराष्ट्री प्राकृत** का प्रयोग हुआ है।
- षष्ठ अङ्क में दोनों सिपाही और धीवर मागधी बोलते हैं।
- शाकुन्तलम् में सर्वाधिक उपमा और 'अर्थान्तरन्यास' अलङ्कारों का प्रयोग है।
- दुष्यन्त की शकुन्तला से पूर्व अन्य दो रानियाँ हंसपदिका और वसुमती हैं।
- शकुन्तला की अनसूया और प्रियंवदा नामक दो सखियाँ हैं।
- दुष्यन्त और शकुन्तला का **पुत्र सर्वदमन (भरत)** है।
- शाकुन्तलम् का **विदूषक 'माढव्य'** दुष्यन्त का मित्र है। पहली बार द्वितीय अङ्क में मंच पर आता है।
- दुष्यन्त का **सेनापति 'भद्रसेन'** और **पुरोहित 'सोमरात'** है।
- इन्द्र का सारथी **'मातलि'** और दुष्यन्त का सारथी **'सूत'** है।
- **'करभक'** नामक दूत द्वितीय अङ्क में दुष्यन्त की माता का सन्देश लेकर आता है।
- शकुन्तला, परित्याग के बाद देवों और राक्षसों के पिता, प्रजापति **'मारीच' (कश्यप)** के आश्रम में रहती है।
- वैखानस, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतम, नारद, हारीत आदि महर्षि कण्व के शिष्य हैं।
- ऋषि मारीच का एकमात्र शिष्य जो शकुन्तला-दुष्यन्त के मिलन की सूचना कण्व को देने हेतु सातवें अङ्क में भेजा जाता है उसका नाम **'गालव'** है।
- षष्ठ अङ्क में धीवर को पकड़ने वाले **दो सिपाही सूचक व जानुक** हैं और राजा का साला एवं नगर रक्षाधिकारी **श्याल** है।
- राजा का **कञ्चुकी 'वातायन'** है वह षष्ठ अङ्क में 'वसन्तोत्सव' की तैयारी में लगी दो उद्यानपालिकाओं **'परभृतिका'** व **'मधुकरिका'** को ऐसा करने से रोकता है।
- **वेत्रवती** राजा की द्वारपालिका है। यवनी है, एक अन्य सेविका है।
- **अदिति** (दाक्षायणी) मारीच की पत्नी तथा **गौतमी** कण्व के आश्रम की 'एक वृद्धा तापसी' है। गौतमी भी शार्ङ्गरव और शारद्वत के साथ शकुन्तला को छोड़ने हस्तिनापुर जाती है।
- मारीच के आश्रम में सर्वदमन (भरत) के साथ रहने वाली तापसी **'सुव्रता'** थी।
- **'सानुमती'** शकुन्तला की माता मेनका की सखी है जो षष्ठ अङ्क में राजा और विदूषक की बात अदृश्य रूप से सुनती है।
- इन्द्र का पुत्र **जयन्त** तथा पत्नी **इन्द्राणी** (पौलोमी/शची) है।

- सुलभकोप ऋषि दुर्वासा, अत्रि और अनसूया के पुत्र हैं वे चतुर्थ अङ्क के आरम्भ में शकुन्तला को शाप देते हैं।
- महर्षि कण्व का आश्रम **'मालिनी नदी'** के तट पर विश्वामित्र का आश्रम गौतमी नदी के तट पर तथा 'मारीच' का आश्रम **'हेमकूट पर्वत'** पर था।
- दुर्वासा के शाप का असर पञ्चम अङ्क में दिखाई पड़ता है। यह नाटकीयता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अङ्क है।
- शकुन्तला ने **'शचीतीर्थ'** जो गङ्गा के तट पर स्थित है, में जलवन्दना की, जहाँ उसकी अँगूठी गिरती है।
- तृतीय अङ्क में 'प्रियंवदा' कमल-पत्र पर 'नाखून' से प्रेम-पत्र लिखने की सलाह शकुन्तला को देती है जिसे वह फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा के पास पहुँचाने को कहती है।
- नाटक का आरम्भ **'ग्रीष्म ऋतु'** वर्णन तथा राजा दुष्यन्त द्वारा आश्रम मृग का पीछा करते हुए होता है।
- राजा पञ्चम अङ्क में हंसपदिका के सङ्गीत की प्रशंसा करता है तथा षष्ठ अङ्क में शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है।
- दुष्यन्त षष्ठ अङ्क में **'धनमित्र'** नामक व्यापारी की मृत्यु पर उसकी सारी सम्पत्ति उसके गर्भस्थ पुत्र को दे देता है।
- दुष्यन्त के लिए इन्द्र अपना आधा सिंहासन छोड़ देते हैं तथा **राजा को मन्दारमाला** पहनाते हैं।
- राजा द्वारा तिरस्कृत शकुन्तला को प्रसव तक अपने घर में रखने को **'सोमरात'** तैयार होते हैं।
- अष्टमूर्ति शिव की उपासना शाकुन्तलम् के नान्दी में की गई है, यह **मङ्गलाचरण आशीर्वादात्मक** है।
- शाकुन्तल के मङ्गलाचरण में **स्रग्धरा छन्द** है, जिसके प्रत्येक चरण में **21 वर्ण** होते हैं। यह **पत्रावली नान्दी** है।
- जब तक विद्वान् सन्तुष्ट न हो जाय सूत्रधार अभिनय-कौशल को सफल नहीं समझता। वह ग्रीष्म ऋतु पर नटी से गीत सुनाने को कहता है।
- सूत्रधार आरम्भ में एक छन्द गाता है –> **(सुभगसलिल...)** दूसरा उद्गाथा छन्द में नटी गीत गाती है –> **(ईषदीषच्चुम्बितानि....)**
- सूत प्रथम अङ्क के आरम्भ में धनुष पर बाण चढ़ाये राजा की उपमा 'शिव' से देता है।
- प्रथम अङ्क में वैखानस राजा को चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद देता है।
- समिधा लाने जाता हुआ 'वैखानस' राजा को बताता है कि शकुन्तला के 'प्रतिकूल भाग्य की शान्ति' के लिए कण्व शकुन्तला पर अतिथि सत्कार का भार सौंप कर **'सोमतीर्थ'** गये हुए हैं।
- आश्रम से सरोवर का मार्ग वल्कलों के अग्रभाग से टपकते जल से रेखांकित है।
- राजा आश्रम में प्रवेश से पूर्व अपने आभूषण और धनुष सारथि (सूत) को देकर सादे वेष में प्रवेश करता है।
- आश्रम-प्रवेश के समय राजा की **'दाहिनी' भुजा फड़कती** है जो सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का सूचक है।
- आश्रम-प्रवेश पर राजा वाटिका की दाहिनी ओर वृक्षों का सेंचन कर रही (प्रियंवदा आदि) बालिकाओं को देखता है।
- प्रियंवदा कहती है कि शकुन्तला के समीप रहने पर 'बकुल' (मौलश्री) का वृक्ष लता से युक्त लगता है।
- नवमालिका लता आम के वृक्ष से लिपटी है जिसका **'वनज्योत्स्ना'** नाम शकुन्तला ने रखा है।
- प्रियंवदा 'सप्तपर्ण वृक्ष' की वेदी पर राजा को बैठने हेतु कहती है।
- अनसूया द्वारा परिचय पूँछने पर राजा अपने को पुरुवंशी राजा द्वारा नियुक्त धर्माधिकारी बताता है।
- शकुन्तला के जन्म का वृत्तान्त अनसूया राजा को बताती है।
- कौशिक (विश्वामित्र) गौतमी नदी के किनारे तपस्या कर रहे थे।
- प्रियंवदा दो वृक्षों के सेंचन का ऋण बताकर शकुन्तला को रोकती है राजा अपनी अँगूठी देकर शकुन्तला को ऋण मुक्त करना चाहता है।
- द्वितीय अङ्क का आरम्भ खिन्न विदूषक के प्रवेश के साथ होता है जो राजा के 'मृगया' के व्यसन से दुःखी है।
- द्वितीय अङ्क में सेनापति और विदूषक 'मृगया' (शिकार) के गुण-दोष की चर्चा करते हैं।
- दुष्यन्त, शकुन्तला के प्रति अपने प्रेम को विदूषक से कहता है और कहीं यह अन्तःपुर में न बता दे इसलिए उस बात को हँसी में कही 'बात' कहता है।
- करभक सन्देश लाता है कि चौथे दिन महारानी (दुष्यन्त की माता) के व्रत (जीवित्पुत्रिका/जिउतियाव्रत) का 'पारण' है।
- राजा अपने स्थान पर 'विदूषक' को भेज देता है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'शिष्य' के प्रवेश से होती है जो शकुन्तला के अस्वस्थ होने की खबर प्रियंवदा से प्राप्त होने का अभिनय करता है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'विष्कम्भक' से होता है।
- तृतीय अङ्क में दुष्यन्त के शकुन्तला के समीप उपस्थित होने पर दोनों सखियाँ मृग-शावक को उसकी माँ से मिलाने के बहाने से हट जाती हैं।

- दुष्यन्त तृतीय अङ्क में **शकुन्तला से गान्धर्व विवाह** करता है। यह विवाह केवल क्षत्रियों के लिए ही स्वीकृत था।
- गौतमी दोनों सखियों के साथ शकुन्तला का स्वास्थ्य जानने आती है।
- चतुर्थ अङ्क का आरम्भ पुष्प चुनती हुई दो सखियों (प्रियंवदा, अनसूया) के प्रवेश के साथ होता है।
- अनसूया, शकुन्तला के 'भाग्यदेवता' के पूजन के लिए अधिक फूल तोड़ने को कहती है।
- शाप देकर जाते हुए **दुर्वासा को मनाने प्रियंवदा** जाती है।
- शकुन्तला कुटिया के द्वार पर बाएँ हाथ पर मुँह रखे चित्रलिखित सी बैठी है।
- शाप का वृत्तान्त केवल अनसूया और प्रियंवदा को ज्ञात रहता है।
- चौथे अङ्क का आरम्भ भी **शुद्ध विष्कम्भक** के साथ होता है।
- विष्कम्भक के पश्चात् सोकर उठे 'शिष्य' का प्रवेश मंच पर होता है। जो काश्यप के आदेशानुसार 'कितनी रात शेष है' यह जानने के लिए बाहर आता है।
- 'शकुन्तला सुखपूर्वक सोई कि नहीं' यह जानने के लिए गयी हुई प्रियंवदा यह समाचार लाती है कि 'कण्व' ने शकुन्तला के विवाह को अनुमति दे दी है।
- शकुन्तला 'गर्भिणी' है यह समाचार कण्व को **'अशरीरधारी छन्दोमयी'** वाणी ने यज्ञशाला में प्रविष्ट होने पर दिया।
- इस घटना को प्रियंवदा, अनसूया से बताती है।
- अनसूया शकुन्तला की विदाई हेतु नारियल के डिब्बे में बकुल (मौलश्री) की माला, केसर आदि आम की डाल पर लटका कर रखती है।
- अनसूया शकुन्तला की विदाई के अवसर पर गोरोचन, तीर्थों की मिट्टी, दूब के अग्रभाग आदि वस्तुएँ इकट्ठा करती है।
- स्वस्तिवाचन के समय तीन तापसियाँ शकुन्तला को आशीर्वाद देती हैं।
- पहली तापसी **'महादेवी'** शब्द प्राप्त करने, दूसरी **'वीर पुत्र'** को प्राप्त करने का और तीसरी **'पति से अधिक सम्मान'** प्राप्त करने का आशीर्वाद देती है।
- दो ऋषि कुमार जिनके नाम **नारद** व **गौतम** हैं, वे वृक्षों द्वारा प्रदत्त वस्त्र-आभूषण आदि शकुन्तला के लिए लाते हैं।
- दोनों सखियाँ चित्रकारी से प्राप्त ज्ञान के आधार पर शकुन्तला का शृङ्गार करती हैं।
- पूरे नाटक में **महर्षि कण्व केवल चौथे अङ्क** में दिखाई पड़ते हैं। वे स्नान के उपरान्त **'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति'**...... श्लोक के साथ मंच पर प्रविष्ट होते हैं।
- चतुर्थ अङ्क के **22 श्लोकों में 14 श्लोक महर्षि कण्व** ने कहे हैं। चौथे अङ्क के प्रसिद्ध चार श्लोक भी महर्षि कण्व द्वारा कहे गये हैं।
- **ययाति** चंद्रवंश के संस्थापक राजाओं में थे जिनकी **देवयानी** और **शर्मिष्ठा** नाम की दो पत्नियाँ थीं।
- **देवयानी** दानवों के गुरु **शुक्राचार्य की पुत्री** और ययाति की विवाहिता पत्नी थी।
- दानवों के राजा **'वृषपर्वा' की पुत्री शर्मिष्ठा** देवयानी की सेविका के रूप में आयी थी। ययाति ने उससे गान्धर्व विवाह कर लिया।
- ययाति के 5 पुत्रों में **शर्मिष्ठा का पुत्र 'पुरु'** भी था जिसने शुक्राचार्य के शाप से वृद्ध हुए ययाति की वृद्धावस्था अपने ऊपर ले लिया था।
- अग्निवेदी की परिक्रमा करते हुए कण्व ने ऋग्वैदिक छन्द 'त्रिष्टुप्' में शकुन्तला को आशीर्वाद दिया।
- 'त्रिष्टुप्' के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं, 4 या 5 वर्ण पर यति होती है।
- वृक्षों के प्रथम 'पुष्पोद्गम' के समय शकुन्तला आश्रम में उत्सव मनाया करती थी।
- 'वृक्षों से' कण्व द्वारा शकुन्तला के जाने हेतु आज्ञा माँगने पर वे 'कोयल' की आवाज में आज्ञा प्रदान करते हैं।
- वृक्षों ने शकुन्तला को कोयल की आवाज में जाने की आज्ञा दे दी है। इस बात की कण्व अपरवक्त्र छन्द में पुष्टि करते हैं।
- आकाशवाणी के द्वारा शकुन्तला यात्रा की जो मङ्गल कामना की गई है वह **शाकुन्तलम् का 'मध्यनान्दी'** है।
- जाती हुई शकुन्तला अपनी **लता-बहिन 'वनज्योत्सना'** से गले मिलकर विदाई लेती है। जो 'आम्रवृक्ष' से लिपटी है। और इसे धरोहर के रूप में सखियों के हाथ में देती है।
- शकुन्तला कण्व से गर्भ के कारण शिथिल हरिणी के कुशलपूर्वक सन्तानोत्पत्ति का समाचार अपने पास भेजने को कहती है।
- कुशाग्रों से विंधे मुखवाले जिस मृग के मुख पर शकुन्तला ने इंगुदी (हिंगोट) का तेल लगाया था तथा साँवा के चावल से पाला था वह शकुन्तला के जाते समय उसका वस्त्र खींचता है। वह उसे पिता कण्व को सौंपती है।
- शकुन्तला के साथ सरोवर के तट तक आये कण्व क्षीरवृक्ष (पीपल) के नीचे बैठ कर दुष्यन्त को भेजने हेतु संदेश देते हैं।
- कमल के पत्ते की ओट में बैठे सहचर (चकवा) को न देख पाने के कारण चकवी रोती (चिल्लाती) है।
- शकुन्तला द्वारा पहले पूजा के रूप में डाले गये 'नीवार' अब कुटी के द्वार पर उगे हैं जो कण्व को उसकी याद दिलायेंगे।

- **''अपराजिता रक्षाकरण्डक''** सिंह शावक के साथ खेलते सर्वदमन के हाथ पर बंधा है जो बालक के माता-पिता के अतिरिक्त अन्य के छूने पर सर्प बनकर डस लेता है।
- षष्ठ अङ्क में इन्द्र-सारथि मातलि राजा में क्रोध या वीरता को जगाने के लिए विदूषक पर आक्रमण करता है।
- मातलि विदूषक पर आक्रमण करके उसे **'मेघप्रतिच्छन्द'** नामक महल के ऊपरी मंजिल पर ले जाता है।
- राजा उस पर आक्रमण हेतु 'यवनी' नामक परिचारिका से धनुष माँगता है।
- मातलि राजा के समक्ष प्रकट होकर राजा को देवासुर संग्राम में इन्द्र के सहायतार्थ चलने हेतु निवेदन करता है।
- **कालनेमि का वंशज 'दुर्जेय'** ने इन्द्र पर आक्रमण किया जिसे केवल दुष्यन्त मार सकता है।
- राजा दुष्यन्त के **मंत्री 'पिशुन'** हैं जिन पर वह देवासुर संग्राम में जाते हुए राज्यभार सौंपता है। विदूषक से यह बात उन्हें बताने के लिए कहता है।
- **हेमकूट किन्नरों का पर्वत** है जहाँ प्रजापति 'मारीच' रहते हैं।
- जब मातलि 'राजा' के आगमन की सूचना (मारीच को) देने जाता है तब राजा अशोक के वृक्ष के नीचे बैठता है।
- 'जातकर्म' 16 संस्कारों में चौथा है। जिस अवसर पर सर्वदमन के हाथ पर **'अपराजिता'** नामक रक्षासूत्र बाँधा गया था।
- मारीच **'वत्स, चिरंजीव। पृथिवीं पालय'** आशीर्वाद राजा को देते हैं तथा दुर्वासा - शाप का वृत्तान्त दोनों को बताते हैं।
- अदृश्य तेजोमयी मूर्ति के रूप में मेनका 'अप्सरास्तीर्थ' से शकुन्तला को लेकर दाक्षायणी (मारीच-पत्नी) के पास गयी।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का भरतवाक्य (अन्तिम श्लोक) (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय) **'रुचिरा' छन्द** में है। जिसके प्रत्येक चरण में 13 वर्ण, 4, 9 पर यति होती है।
- जीवों को बलात् वश में कर लेने के कारण भरत का नाम 'सर्वदमन' था।
- पञ्चम अङ्क में अँगूठी के शचीतीर्थ में जलतर्पण के समय गिरने की बात का पता सर्वप्रथम 'गौतमी' के मुख से पता चलता है।

उत्तररामचरितम्

- **लेखक** – भवभूति
- **विधा** – नाटक
- **अङ्क** – 7 (सात)
- **प्रधानरस** – करुण
- **उपजीव्य** (i) वाल्मीकीयरामायण उत्तरकाण्ड (सर्ग 42-97 तक) (ii) पद्मपुराण (पातालखण्ड 1-68 तक)
- **विशेषतायें**– (1) सप्तम अङ्क में **गर्भनाटक** की योजना
  (2) प्रथम अङ्क में **चित्रवीथी** की योजना
  (3) **विदूषक रहित** नाटक
  (4) तृतीय अङ्क में **छायाङ्क** की योजना
- **प्रमुखपात्र** – राम (नायक), सीता (नायिका), गोदावरी, भागीरथी, तमसा, मुरला, वासन्ती (वनदेवता), पृथ्वी, आत्रेयी, वशिष्ठ, कौशल्या, मुनिबालक सौधातकि, गुप्तचरदुर्मुख, लव, कुश, चन्द्रकेतु, वाल्मीकि, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, अष्टावक्र, दण्डायन, सुमन्त्र, अरुन्धती, जनक, कञ्चुकी आदि।
- अनुष्टुप् (84 श्लोक), शिखरिणी (30) वसन्ततिलका (26) शार्दूलविक्रीडित (25) आदि।
- उत्तररामचरितम् में भवभूति ने **38 अलङ्कारों का प्रयोग** किया है; और प्रयोग की दृष्टि से उन्हें–उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक, अर्थान्तरन्यास अत्यन्त **प्रिय अलङ्कार** माने जाते हैं।
- इसमें **7 (सात) अङ्कों में** रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है।
- राम के वन-प्रत्यागमन के बाद राजगद्दी पाने से लेकर सीता-मिलन तक की सम्पूर्ण कथाएँ कुछ कल्पना-प्रसूत घटनाओं के साथ दिखाई गई हैं। यह **भवभूति का सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
- सप्तम अंक में **'गर्भाङ्क' की कल्पना** है।
- पद्मपुराण में वर्णित रामकथा से उत्तररामचरित की कथा का अधिक साम्य है।
- उत्तररामचरित में **कुल पात्रों की संख्या 30** है। इनके अतिरिक्त 6 पात्रों का उल्लेख मात्र है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में **19 छन्दों का प्रयोग** किया है।
- उत्तररामचरित में **कुल श्लोकों की संख्या 256** है।
- **अनुष्टुप् के पश्चात् शिखरिणी छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। मङ्गलाचरण में अनुष्टुप् छन्द है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में केवल **'शौरसेनी प्राकृत'** का प्रयोग किया है।
- नाटक का आरम्भ **'चित्रदर्शन'** से होता है।
- प्रथम अङ्क में राम के राज्याभिषेक से उत्पन्न प्रतिक्रिया का निरीक्षण करके **'दुर्मुख'** आता है।
- मङ्गलाचरण में प्राचीन कवियों वाल्मीकि आदि को लक्ष्य करके प्रार्थना की गई है।
- 'उत्तररामचरितम्' में **'नमस्कारात्मक' मङ्गलाचरण** किया गया है।

- महाराज **दशरथ की पुत्री शान्ता** के पति ऋष्यशृङ्ग ने बारह वर्ष चलने वाला यज्ञ प्रारम्भ किया है इसकी सूचना प्रथम अङ्क में प्राप्त होती है।
- महर्षि वशिष्ठ का संदेश लेकर **अष्टावक्र** आते हैं। वे 'कहोड़' के पुत्र हैं।
- लक्ष्मण द्वारा सीता के मनोविनोदार्थ लाये गये चित्रवीथी में सीता के अग्निशुद्धि तक की कथा चित्रित है।
- लक्ष्मण की पत्नी का नाम **'उर्मिला'** है।
- चित्रवीथी बनाने वाले **चित्रकार का नाम अर्जुन** है।
- **सौधातकि** और **दण्डायन** वाल्मीकि के दो शिष्य हैं।
- लक्ष्मण के पुत्र का नाम **'चन्द्रकेतु'** है।
- **शम्बूक** एक शूद्र तपस्वी है।
- चन्द्रकेतु के वृद्ध सारथि **'सुमन्त्र'** हैं।
- **वासन्ती** वनदेवता है और सीता की प्रियसखी है।
- **आत्रेयी** एक तपस्विनी ब्रह्मचारिणी है।
- **तमसा** और **मुरला** दो नदी अधिष्ठात्री देवियाँ हैं।
- महर्षि **वशिष्ठ की पत्नी 'अरुन्धती'** हैं तथा **महर्षि अगस्त्य की पत्नी 'लोपामुद्रा'** हैं।
- द्वितीय अङ्क में राम 'शम्बूक वध' करते हैं।
- पञ्चवटी के पास स्थित गोदावरी नदी से राम के जीवन के प्रति सावधान रहने की प्रार्थना 'लोपामुद्रा' द्वारा 'मुरला' के माध्यम से की गई है।
- प्रसवपीड़ा से पीड़ित होकर सीता ने स्वयं को गङ्गा के प्रवाह में डाल दिया और वहीं उनके दोनों पुत्र उत्पन्न हुए।
- देवी गङ्गा ने दोनों बालकों को महर्षि वाल्मीकि को समर्पित किए।
- तृतीय अङ्क में कुश और लव के `12वीं वर्षगाँठ' की चर्चा है।
- 'गङ्गा' ने सीता को आदेश दिया कि वे अपने हाथों से तोड़े गये पुष्पों से अपने पुराण आदिश्वसुर सूर्य की पूजा करें।
- 'गङ्गा' के प्रभाव से सीता को वन देवता भी नहीं देख पाते।
- तृतीय अङ्क के आरम्भ में सीता 'गोदावरी' के जल से निकलती हैं।
- गोदावरी से निकलती सीता करुणा की मूर्ति एवं शरीरधारिणी विरहव्यथा सी प्रतीत होती हैं।
- अदृश्य सीता के साथ तमसा रहती है और वह सीता को देख सकती है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ **'विष्कम्भक'** से होता है।
- 'वासन्ती' सीता-त्याग के लिए राम की भर्त्सना करती है।
- राम तृतीय अङ्क में 'अश्वमेघ' यज्ञ की सूचना देते हैं और सीता की स्वर्णमूर्ति प्रतिमा को उन्होंने पत्नी के स्थान पर रखा है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ तमसा-मुरला नामक दो नदियों के वार्तालाप से होता है।
- उत्तररामचरित में **`38 अलङ्कारों'** का प्रयोग है सर्वाधिक प्रयोग **'उपमा' (74 बार)** का है।
- चतुर्थ अङ्क का आरम्भ दाण्डायन और सौधातकि के वार्तालाप से होता है।
- तृतीय अङ्क में श्लोकों की संख्या **`48'** है।
- चतुर्थ अङ्क में कौशल्या के पूछने पर 'लव' अपने को वाल्मीकि का पुत्र बताता है।
- 'रामकथा' के अभिनय के लिए वाल्मीकि ने इस कथा को कुश के संरक्षण में भरतमुनि के पास भेजा।
- चतुर्थ अङ्क में लव यज्ञ का घोड़ा पकड़ता है।
- पञ्चम अङ्क में लव **'जृम्भक अस्त्र'** का प्रयोग करता है।
- लव राम के शौर्य को कुछ नहीं समझता और उन पर आक्षेप करता है।
- षष्ठ अङ्क में **लव और चन्द्रकेतु में** दिव्य अस्त्रों से **घोर युद्ध** होता है।
- चन्द्रकेतु के 'आग्नेय अस्त्र' की प्रतिकार स्वरूप लव 'वारुण' अस्त्र छोड़ता है।
- सप्तम अङ्क में वाल्मीकि की कृति का 'अप्सराओं' द्वारा अभिनय किया गया है।
- 'उत्तररामचरितम्' का **भरतवाक्य शार्दूलविक्रीडित छन्द** में है।
- उत्तररामचरित में **करुणरस प्रधान** है। उसमें वैदर्भी एवं गौडीरीति का प्रयोग है।
- 'उत्तररामचरितम्' सुखान्त नाटक है।
- तृतीय अङ्क में सीता द्वारा पाले गये हाथी, मयूर और कदम्ब की चर्चा आती है।
- मयूर 'कदम्ब' के वृक्ष पर बैठकर मधुर स्वर करता है।
- प्रथम अङ्क में राम ने लोकानुरञ्जन के लिए सीता तक को त्याग देने की बात कही है।

  ''स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
  आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।''
- प्रथम अङ्क में राम अष्टावक्र से यह प्रसिद्ध श्लोक कहते हैं।

  ''लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
  ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।।''
- तृतीय अङ्क का आरम्भ राम के करुण रस के उद्घोष के साथ होता है। जिसे मुरला कहती है–

  अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
  पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।।

- तृतीय अङ्क में सर्वाधिक **अनुष्टुप् (11) छन्द** का प्रयोग हुआ है। **7 'वसन्ततिलका'** वृत्त प्रयुक्त है।
- तृतीय अङ्क का अन्त भी करुण रस के उद्घोष से होता है जिसे तमसा कहती है – **'एकोरसः करुण एव निमित्तभेदाद्। (वसन्ततिलका)**
- लवणासुर के वध के लिए **'शत्रुघ्न'** जाते हैं।
- मूल कथा में अश्वमेधीय अश्व का रक्षक **भरतपुत्र 'पुष्कल'** है, उत्तररामचरित में **लक्ष्मण पुत्र चन्द्रकेतु** है।
- सप्तम अङ्क में गङ्गा और पृथ्वी द्वारा प्रशंसित सीता के चरित्र की पवित्रता की घोषणा वशिष्ठ पत्नी अरुन्धती करती हैं।
- कवियों ने **'कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते'** कहकर भवभूति का यशोगान किया है।
- भवभूति ने चौथे अङ्क में समांस या अमांस मधुपर्क का प्रसंग उठाया है।
- पञ्चवटी में राम का **'शयन-शिलातल'** कदली वन के मध्य में विद्यमान था।
- वासन्ती केवल लक्ष्मण का कुशलक्षेम पूछती है।
- वासन्ती राम को जटायु द्वारा तोड़ा गया काले लोहे का बना रावण का रथ दिखाती है।

किरातार्जुनीयम्

- **लेखक** – भारवि
- **विधा** – महाकाव्य
- **सर्ग** – 18
- **प्रधानरस** – वीर
- **उपजीव्य** – महाभारत का वनपर्व
- **कथानक** – अर्जुन द्वारा भगवान् शिव की तपस्या से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।
- **प्रमुखपात्र** – अर्जुन, द्रौपदी, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, श्रीकृष्ण, वनेचर, सुयोधन (दुर्योधन), इन्द्र, किरातवेशधारी शिव, व्यास, यक्ष आदि
- भारवि का प्रामाणिक जीवनवृत्त सर्वथा अप्राप्त है, कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं।
- महाकवि दण्डी विरचित 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि का जीवनवृत्त निम्नलिखित है।
- भारवि चालुक्यवंशी सम्राट् पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (615 ई0) के मित्र/सभापण्डित/राजकवि थे।

स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।
अनुरुध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने॥

- भारवि का वास्तविक नाम – **दामोदर**
- माता का नाम – **सुशीला**
- पिता का नाम – **नारायण स्वामी (श्रीधर)**
- पत्नी का नाम – **रसिकवती या रसिका**
- उपाधि/उपनाम – **आतपत्र भारवि**
- महाकवि दण्डी के प्रपितामह – **भारवि**
- भारवि **कुशिक/कौशिक गोत्रीय** ब्राह्मण थे।

भारवि की वंशपरम्परा

नारायणस्वामी (श्रीधर) – (भारवि के पिता)
↓
भारवि – (दण्डी के प्रपितामह)
↓
मनोरथ – (दण्डी के पितामह)
↓
वीरदत्त-गौरी – (दण्डी के पिता-माता)
↓
दण्डी – (भारवि के प्रपौत्र)

- दण्डी की रचना – **दशकुमारचरितम्।**
- भारवि का सम्बन्ध कोङ्कण के गङ्गवंशी नरेश दुर्विनीत और काञ्ची के पल्लववंशी नरेश सिंहविष्णु तथा उनके पुत्र महेन्द्रविक्रम के साथ भी था।
- सिंहविष्णु से मिलते समय कवि की अवस्था थी – **बीस वर्ष।**
- किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग की संस्कृत टीका लिखी थी – **विद्वान् नरेश दुर्विनीत ने।**
- एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार भारवि धारानगरी के निवासी थे।

भारवि के समय निर्धारण में प्रमुख स्त्रोत

- पुलकेशिन द्वितीय का एहोल शिलालेख।
- वामन और जयादित्य की काशिकावृत्ति।
- गुम्मरेड्डीपुर का पत्रलेख।
- महाकवि दण्डी की अवन्तिसुन्दरीकथा और उस पर आधारित 'अवन्तिसुन्दरीकथासार'।
- विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु तथा दुर्विनीत की ऐतिहासिकता।
- भारवि का जन्मसमय – **560 ई0 के लगभग।**
- भारवि का रचनाकाल – **615 ई0 के लगभग।**
- भारवि का समय – **600 ई0 के आसपास (555 ई0 से 625 ई0 के मध्य) (छठी शती के उत्तरार्ध से सातवीं शती के पूर्वार्द्ध तक)**

- श्री एन0सी0 चटर्जी ने उन्हें **ट्रावनकोर** का निवासी बताया है।
- विद्वानों का मानना है कि महाकवि भारवि विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु, महेन्द्रविक्रम एवं दुर्विनीत के आश्रय में रहने वाले एक **दाक्षिणात्य कवि** थे।
- महाकवि भारवि का जन्म– **नासिक के समीपवर्ती बरारप्रान्त के 'अचलपुर' (एलिचपुर) नामक ग्राम में।**
- भारवि **शैवदर्शन** के अनुयायी थे, उन्होंने किरातार्जुनीयम् के 18वें सर्ग में शिवस्तुति की है।
- भारवि किस कवि से प्रभावित थे – **कालिदास से**
- भारवि से कौन प्रभावित था – **महाकवि माघ**
- राजशेखर के अनुसार कालिदास एवं भर्तृमेण्ठ की भाँति भारवि की भी परीक्षा उज्जयिनी में ली गयी थी – **''श्रूयते चोज्जयिन्यां काव्यकारपरीक्षा''**
- **उत्फुल्लस्थलनलिनीवनादमुष्मात्.......कनकमयातपत्रलक्ष्मीम् (5/39)** 'किरातार्जुनीयम्' के इस श्लोक की उपमा के कारण ही उन्हें **'आतपत्रभारवि'** की उपाधि मिली।

भारवि की रचना

- भारवि की रचना/कृति – **''किरातार्जुनीयमहाकाव्यम्' (एकमात्र कृति)**
- सर्ग – **18 (अठारह)**
- श्लोक – **1040 (कुछ विद्वानों के अनुसार-1030)**
- उपजीव्यग्रन्थ – **महाभारत का वनपर्व**
- नायक – **मध्यमपाण्डव अर्जुन (धीरोदात्त)**
- प्रतिनायक – **किरातवेशधारी शिव**
- नायक की प्रकृति – **धीरोदात्त**
- नायिका – **द्रौपदी**
- मुख्य/अङ्गी/प्रधानरस – **वीररस**
- गौण/अङ्गरस – **शृङ्गार आदि**
- रीति एवं गुण – **पाञ्चाली रीति एवं ओजगुण**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में वैदर्भी रीति
- अलङ्कार – **3 शब्दालङ्कार, 60 अर्थालङ्कार, 7 चित्राक्षर**
- भारवि की शैली – **पाण्डित्यप्रधान अलङ्कृतशैली**
- बृहत्त्रयी में प्रथमस्थान पर परिगणित महाकाव्य –
  1. भारवि का किरातार्जुनीयम् (सर्ग 18),
  2. माघ का शिशुपालवधम् (सर्ग 20),
  3. श्रीहर्ष का नैषधीयचरितम् (सर्ग 22)
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ – **'श्री'** – शब्द से तथा प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में **'लक्ष्मी'** पद का प्रयोग हुआ है।
- भारवि के काव्य को कहा जाता है – **''लक्ष्मीपदाङ्क''**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में श्लोक/पद्य हैं – **46**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में छन्द – **वंशस्थ** (1-44 श्लोकों तक)
- 45वें श्लोक में (न समयपरिरक्षणं क्षमं ते....) – **पुष्पिताग्रा छन्द**
- अन्तिम 46वें श्लोक में (विधिसमयनियोगाद् दीप्तिसंहारजिह्मम्) – **मालिनी छन्द**
- अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं – **भारवि** (भारवेरर्थगौरवम्)
- नायक अर्जुन और प्रतिनायक किरात (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम पड़ा – **'किरातार्जुनीयम्'**
- श्रीकृष्णमाचारियर ने किरातार्जुनीयम् की कितनी टीकाओं का उल्लेख किया है – **34**
- किरातार्जुनीयम् की सर्वाधिक प्रसिद्ध, प्रामाणिक एवं सारवती टीका का नाम – **'घण्टापथ' – मल्लिनाथ**
- ''घण्टापथ'' का शाब्दिक अर्थ है – **राजमार्ग**
- किरात की अन्य टीकाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय टीका है – **'शब्दार्थदीपिका' – श्री चित्रभानु** (केवल प्रथम तीन सर्गो पर)
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम तीन सर्गों को कहा जाता है – **'पाषाणत्रय'**
- भारवि के आश्रयदाता दुर्विनीत ने संस्कृत टीका लिखी – **किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर।**
- 'शब्दावतार' नाम से बृहत्कथा का संस्कृत रूपान्तरण किसने किया – **दुर्विनीत ने**
- किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग प्रसिद्ध है – **चित्रकाव्य के लिए**
- भारवि का एकाक्षर श्लोक – (केवल नकार का प्रयोग)
  न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।
  नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत्॥
  (किरात0 – 15/14)
- अर्थगौरव का क्या अर्थ है – अल्पशब्दों में प्रभूत अर्थ का सन्निवेश अर्थात् 'गागर में सागर भरना।'
- **''नारिकेलफलसम्मितं वचः''** मल्लिनाथ का यह कथन किसके लिए है – भारवि के लिए।

➢ **''प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् से

➢ **''स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् (2/27)

➢ किरातार्जुनीयम् का मुख्य कथानक है – अर्जुन द्वारा किरातवेशधारी भगवान शङ्कर से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।

➢ अर्जुन पाशुपत अस्त्र के लिए भगवान शङ्कर को प्रसन्न करने के लिए हिमालय (इन्द्रकील) पर्वत की यात्रा व्यास के कहने पर करते हैं।

➢ किरातार्जुनीयम् में 'किरात' से तात्पर्य है–**किरातवेषधारी शिव**

➢ 'किरातार्जुनीयम्' का मङ्गलाचरण है – **वस्तुनिर्देशात्मक**

➢ किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का फल है – **नायक अर्जुन को किरातवेशधारी शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।**

➢ युधिष्ठिर बारह वर्षों के वनवास के काल में अपने अनुजों और द्रौपदी के साथ कहाँ रहते थे – **द्वैतवन में।**

किरातार्जुनीयम् का नामकरण

➢ किरातश्च अर्जुनश्च किरातार्जुनौ **(द्वन्द्वसमास)** तौ अधिकृत्य कृतं काव्यम् इति किरातार्जुनीयम्।

➢ **किरातार्जुन + 'छ'** ('अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' के अर्थ में ''छ'' प्रत्यय)

➢ **'शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः'** 'सूत्र से ''छ'' प्रत्यय।

➢ किरातार्जुन + छ (ईय) = किरातार्जुनीय। (**''आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्''** से 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश हो गया)

➢ ग्रन्थवाची शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं, अतः – 'किरातार्जुनीयम्' पद बना।

➢ इस प्रकार नायक अर्जुन और प्रतिनायक (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम **'किरातार्जुनीयम्'** पड़ा।

किरातार्जुनीयमहाकाव्य के पात्र

➢ अर्जुन **(नायक)**, द्रौपदी **(नायिका)**, किरातवेशधारी शिव **(प्रतिनायक)**, श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, वनेचर, दुर्योधन, कर्ण, भीष्म, परशुराम, यक्ष, द्रोण, इन्द्र, व्यास, मूक (शूकर) आदि प्रमुख पात्र हैं।

किरातार्जुनीयमहाकाव्य के टीकाकार आचार्य मल्लिनाथसूरि का जीवनचरित्र

➢ काश्यपगोत्रीय तेलगू ब्राह्मण – **मल्लिनाथ सूरि**

➢ मल्लिनाथ के पिता – **कार्दिन**

➢ मल्लिनाथ के दो पुत्र – **पेड्डुभट्ट तथा कुमारस्वामी**

➢ कुमारस्वामी की रचना– **प्रतापरुद्रयशोभूषण** (काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ)

➢ मल्लिनाथ की आनुवांशिक उपाधि – **कोलाचल**

➢ मल्लिनाथ की व्यक्तिगत उपाधि – **महामहोपाध्याय**

➢ मल्लिनाथ का समय – **14वीं शताब्दी का उत्तरार्ध**

मल्लिनाथ की सुप्रसिद्ध संस्कृत टीकायें

1. रघुवंशमहाकाव्यम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
2. कुमारसम्भवम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
3. मेघदूतम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
4. किरातार्जुनीयम् (भारवि) – **घण्टापथ टीका**
5. शिशुपालवधम् (माघ) – **सर्वङ्कषा टीका**
6. रावणवध (भट्टि) – **जीवातु टीका**
7. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष) – **जीवातु टीका**

➢ इसके अतिरिक्त तार्किकरक्षा, नलोदयकाव्य, प्रशस्तपादभाष्य, और लघुशब्देन्दुशेखर पर भी मल्लिनाथ ने टीका लिखी है।

➢ इनका पूरा नाम– **महामहोपाध्याय कोलाचल मल्लिनाथसूरि**

➢ किरातार्जुनीयम् के दूसरे प्रसिद्ध टीकाकार – **चित्रभानु – ''शब्दार्थदीपिका'' (त्रिसागरिका)** (प्रारम्भ के केवल तीन सर्गों पर)

किरातार्जुनीयम् की संक्षिप्त कथा

➢ किरातार्जुनीयम् में कौरवों पर विजय प्राप्ति के लिए अर्जुन का हिमालयपर्वत पर जाकर तपस्या करना, किरातवेशधारी शिव से युद्ध और प्रसन्न हुए भगवान् शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का वर्णन है।

➢ **सर्ग – 1.** हस्तिनापुर भेजे गये वनेचर का द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर से मिलना, दुर्योधन के शासन प्रबन्ध का वर्णन तथा युधिष्ठिर के लिए/द्रौपदी का उत्तेजनापूर्ण कथन।

➢ **सर्ग – 2.** युधिष्ठिर–भीम का संवाद, व्यास का आगमन।

➢ **सर्ग – 3.** युधिष्ठिर – व्यास संवाद, व्यास द्वारा अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए हिमालय पर जाकर तपस्या करने का आदेश, अर्जुन का प्रस्थान।

➢ **सर्ग – 4.** शरद् ऋतु का वर्णन।

➢ **सर्ग – 5.** हिमालय पर्वत का वर्णन।

➢ **सर्ग – 6.** हिमालय पर अर्जुन की तपस्या, तपोविघ्न के लिए इन्द्र द्वारा अप्सराओं को भेजना।

➢ **सर्ग – 7.** इन्द्र द्वारा प्रेषित गन्धर्वों और अप्सराओं के आने और उनके विलासों का वर्णन

➤ **सर्ग – 8.** गन्धर्वों और अप्सराओं का उद्यानविहार और जलक्रीडा।

➤ **सर्ग – 9.** सायंकाल और चन्द्रोदयवर्णन, सुरतवर्णन तथा प्रभातवर्णन।

➤ **सर्ग – 10.** वर्षा आदि का वर्णन, अप्सराओं का चेष्टावर्णन तथा उनका प्रयत्न वैफल्य।

➤ **सर्ग – 11.** मुनिरूप में इन्द्र का आगमन, इन्द्र अर्जुन संवाद, इन्द्र का पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए अर्जुन को शिवाराधना करने का उपदेश।

➤ **सर्ग – 12.** अर्जुन की तपस्या, शूकर के रूप में मूक नामक दानव का अर्जुन वध के लिए आगमन, तथा किरातवेशधारी शिव का भी आगमन।

➤ **सर्ग – 13.** शूकररूपधारी मूकदानव पर शिव और अर्जुन के बाणों का प्रहार, उस वराह की मृत्यु, बाण के विषय में शिव के अनुचर और अर्जुन का विवाद।

➤ **सर्ग – 14.** सेना सहित शिव का आगमन और सेना के साथ अर्जुन का युद्ध।

➤ **सर्ग – 15.** चित्रयुद्ध वर्णन, (चित्रकाव्य)।

➤ **सर्ग – 16.** शिव और अर्जुन का अस्त्रयुद्ध।

➤ **सर्ग – 17.** शिव की सेना के साथ अर्जुन का युद्ध, शिव और अर्जुन का युद्ध।

➤ **सर्ग – 18.** शिव और अर्जुन का बाहुयुद्ध, शिव का वास्तविक रूप में प्रकट होना, इन्द्रादि का आगमन, अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति, इन्द्रादि का अर्जुन को विविध अस्त्र देना, सफल मनोरथ अर्जुन का युधिष्ठिर के समीप पहुँचना।

➤ सम्भोग शृङ्गार का सुन्दर वर्णन है – **सर्ग 8 और 9 में।**

➤ युद्ध वर्णन में वीररस का वर्णन है – **सर्ग 13 से 17 तक।**

➤ उपमा अलङ्कार का सुन्दर प्रयोग है – **सर्ग 13 से 17 में।**

➤ प्रमुख वर्णनवैचित्र्य – सर्ग 4 में **शरद् वर्णन।**
– सर्ग 5 में **हिमालय वर्णन।**
– सर्ग 8 में **जलक्रीडा वर्णन।**
– सर्ग 9 में **सन्ध्या, चन्द्रोदय और सुरत वर्णन।**
– सर्ग 12 से 18 तक – **युद्ध वर्णन।**

➤ अर्थगौरव या अर्थगाम्भीर्य के लिए प्रशंसा की जाती है – **महाकवि भारवि की।**

➤ भारवि को कौन सा रस सर्वाधिक प्रिय है – **वीर और शृङ्गार रस**

➤ महाकाव्यों में रीतिशैली के जन्मदाता कवि हैं – **भारवि।**

➤ ग्रन्थ के आरम्भ में **'श्री'** शब्द तथा सर्गान्त श्लोकों में **'लक्ष्मी'** शब्द का प्रयोग किया गया है – **किरातार्जुनीयम् में।**

➤ किस कवि का काव्यसौन्दर्य 'नारिकेलफलसम्मितम्' माना गया है – **भारवि का।**

➤ भारवि की प्रशंसा में कही गयी सूक्तियाँ हैं –
(1) ''भारवेरर्थगौरवम्''
(2) ''भा रवेरिव भारवेः''
(3) ''प्रकृतिमधुरा भारविगिरः''
(4) ''नारिकेलफलसम्मितं वचः''
(5) ''स्फुटता न पदैरपाकृता''

➤ केवल 'न' कार को लेकर सर्वप्रथम एकाक्षरी श्लोक लिखने वाले कवि हैं – **भारवि।**

➤ अपने काव्य में सर्वप्रथम चित्रालङ्कारों का प्रयोग करने वाले कवि हैं – **भारवि** (किरातार्जुनीयम्, सर्ग-15)

➤ भारवि ने विभिन्न सर्गों में 11 छन्दों का प्रयोग किया हैं और सर्गान्त श्लोकों में मालिनी और वसन्ततिलका प्रमुख हैं।

➤ भारवि द्वारा प्रयुक्त मुख्य छन्दो की संख्या है – **13**

➤ भारवि का अत्यन्त प्रिय छन्द है – **वंशस्थ तथा उपजाति।**

➤ क्षेमेन्द्र ने वंशस्थ छन्द के लिए प्रशंसा की है – **भारवि की।**

➤ संस्कृतसाहित्य में रीतिकाव्यपरम्परा के जन्मदाता है – **भारवि।**

➤ किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन को किस नाम से वर्णित किया गया है – **सुयोधन।**

➤ 'राजनीतिपरक महाकाव्य' कहा गया है – किरातार्जुनीयम् को

➤ शिव और अर्जुन पर आधारित महाकाव्य है – **किरातार्जुनीयम्**

➤ किरातार्जुनीयम् में एकाक्षर श्लोकों की संख्या है – **7 (सप्त)**

➤ महाकवि भारवि की मित्रता थी – **चालुक्यवंशी राजा विष्णुवर्धन से**

➤ भारवि के तीन पुत्र थे, इनके मध्यम पुत्र मनोरथ के चार पुत्र थे, जिनमें एक पुत्र वीरदत्त था इन्हीं वीरदत्त और गौरी के पुत्र दण्डी हुए।

➤ महाकवि भारवि, दण्डी के प्रपितामह और दण्डी, भारवि के प्रपौत्र थे।

➤ भारवि **शैव** थे, जबकि **माघ वैष्णव** थे।

➤ दक्षिण के एहोल शिलालेख में कालिदास और भारवि का नामोल्लेख हुआ। इस शिलालेख का समय 634 ई० है – **''कविताश्रित-कालिदास-भारवि-कीर्तिः''।**

- गुम्मरेड्डीपुर के शिलालेखों से हमें पता चलता है कि राजा दुर्विनीत ने किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर टीका लिखी थी। दुर्विनीत का समय 580 ई0 के आसपास माना जाता है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का उद्धरण जयादित्य की 'काशिकावृत्ति' में उपलब्ध होता है। मैक्समूलर 'काशिका' का समय 660 ई0 मानते हैं।
- बाणभट्ट (सप्तम शताब्दी) अपने ''हर्षचरित'' में पूर्ववर्ती सभी कवियों का उल्लेख करते हैं, किन्तु उसमें भारवि का नामोल्लेख नहीं है।
- कीथमहोदय भारवि का समय 550 ई0 मानते हैं।
- जैकोबी, मैक्डानल, बलदेव उपाध्याय, चन्द्रशेखर पाण्डेय इत्यादि विद्वानों ने भारवि का समय 600 ई0 के लगभग मानते हैं।
- शिवजी अर्जुन की तपस्या की परीक्षा के लिए 'किरात' का वेश धारण करते हैं।
- किरातार्जुनीयम् में **मूक दानव** अर्जुन को मारने के लिए मायावी वाराह का रूप धारण करता है।
- महाकाव्यकारों में **कालिदास** और **अश्वघोष** के बाद **भारवि** का नाम लिया जाता है।
- भारवि व्याकरण, वेदान्त, न्याय, धर्म, राजनीति, कामशास्त्र, पुराण, इतिहास आदि के मूर्धन्य विद्वान थे।
- उदात्त एवं सजीव वर्णन, कमनीय कल्पनाओं, अर्थगौरव, हृदयग्राही शब्दयोजना, कोमलकान्त पदावली, हृदयस्पर्शी एवं रोचक संवाद, अलङ्कारों का चमत्कारिक प्रयोग, कलात्मक काव्यशैली, मनोहर प्रकृतिचित्रण, रसपेशलता, सजीव चरित्रचित्रण इत्यादि महनीय गुणों ने भारवि को महाकवियों में अत्यन्त उच्चस्थान पर प्रतिष्ठित किया है।
- भारवि राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वनेचर की स्वामिभक्ति, सत्यवादिता, निश्छलता, विनम्रता, साहस, स्पष्टवादिता आदि गुणों का चित्रण है।
- द्रौपदी की मानसिकपीड़ा, व्याकुलता, प्रतिकार की तीव्रभावना का वर्णन है।
- अर्जुन की वीरता, भ्रातृभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा का वर्णन है।
- भीम की वीरता, नीतिज्ञता, असहिष्णुता का वर्णन है।
- युधिष्ठिर की नीतिज्ञता, शान्तिप्रियता, धर्मपरायणता इत्यादि का वर्णन है।
- किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग के प्रारम्भ में वनेचर की उक्तियों का तथा उत्तरार्ध में द्रौपदी की उक्तियों का चित्रण है।
- सम्पूर्ण प्रथमसर्ग युधिष्ठिर को सम्बोधित करके लिखा गया है।
- भारवि का संस्कृतसाहित्य में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** तथा **'विचित्रमार्ग के जनक'** के रूप में विशिष्ट स्थान है।
- विचित्रमार्ग की विशेषता यह है कि इसमें कथानक बहुत कम होता है और वर्णन अधिक।
- भारवि की अलंकृतकाव्यशैली में पाण्डित्यप्रदर्शन और अलङ्कार सन्निवेश को प्रधानता दी गयी है, इसमें कलापक्ष की प्रधानता तथा भावपक्ष (हृदयपक्ष) की अप्रधानता का वर्णन है।
- कालिदास के प्रमुख छन्द 6 हैं, भारवि के 13 और माघ के 16 माने गये हैं।
- भारवि ने **वंशस्थ छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग किया है, इसके अतिरिक्त इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित, प्रमिताक्षरा, प्रहर्षिणी, स्वागता, पुष्पिताग्रा, आदि का प्रयोग मिलता है।
- भारवि **वीररस** के सिद्धहस्त कवि हैं।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर के मुख से किसी उक्ति (कथन) को नहीं कहलाया गया है।
- महाकवि भारवि की **एकमात्र रचना 'किरातार्जुनीय'** का उपजीव्य महाभारत के वनपर्व की एक घटना है।
- किरातश्च अर्जुनश्च (द्वन्द्व) = किरातार्जुन + 'छ' प्रत्यय लगकर 'किरातार्जुनीय' शब्द बना है। ग्रन्थवाची होने पर नपुंसकलिङ्ग में 'किरातार्जुनीयम्' बना।
- इसमें अर्जुन का हिमालय पर्वत पर जाकर तपस्या करने व किरातवेषधारी भगवान शिव से युद्ध करके उन्हें प्रसन्न कर **'पाशुपत अस्त्र'** प्राप्त करने की कथा है।
- 'किरात' में कुल **18 सर्ग और 1040 श्लोक** हैं।
- 'किरातार्जुनीय' में **कुल 25 छन्दों और मुख्यतः 13 छन्दों का** प्रयोग हुआ है।
- भारवि का **अत्यन्त प्रिय छन्द वंशस्थ** है। तत्पश्चात् उन्होंने **उपजाति** का ज्यादा प्रयोग किया है। 4 सर्गों में वंशस्थ, 3 सर्गों में उपजाति प्रयुक्त है।
- भारवि ने 3 शब्दालंकार, 60 अर्थालंकार और 7 चित्राक्षर अलंकारों का प्रयोग किया है। सर्वाधिक उपमा अलंकार प्रयुक्त है।
- भारवि ने 'किरात' के **15वें सर्ग में** युद्ध प्रसङ्ग में **चित्रालंकारों** का प्रयोग किया है।
- किरातार्जुनीय में **'वीर रस' मुख्य रस** है तथा 'शृंगार' गौण रस है।

- किरात में **'पाञ्चाली रीति'** और 'प्रसाद गुण' है, किन्तु वैदर्भीरीति का भी प्रयोग बाहुल्य है।
- किरात का **नायक 'अर्जुन'** (कहीं-कहीं युधिष्ठिर प्राप्त होता है), **प्रतिनायक किरातवेषधारी 'शिव'** तथा **नायिका द्रौपदी** है।
- 'किरात' के 18वें सर्ग में शिव की अत्यन्त भावुक स्तुति की गई है।
- भारवि का प्रसिद्ध **एकाक्षर श्लोक** (न नोननुन्नो....) 15वें सर्ग में मिलता है।
- भारवि ने मङ्गलाचरण में **'श्री' शब्द** तथा सर्गान्त श्लोकों में **'लक्ष्मी'** शब्द का प्रयोग किया है।
- क्षेमेन्द्र ने भारवि के वंशस्थ वृत्त की प्रशंसा की है और वंशस्थ को राजनीतिक चर्चा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना है।
- काव्य का आरम्भ **'द्वैतवन'** से होता है जहाँ महाराज युधिष्ठिर द्यूतक्रीड़ा में दुर्योधन से हारकर **'तेरह वर्ष'** का वनवास काट रहे होते हैं।
- युधिष्ठिर द्वारा नियुक्त ब्रह्मचारी वेष वाला गुप्तचर वनेचर लौटकर आता है और दुर्योधन के राज्य की शासन प्रणाली का वर्णन करता है।
- द्रौपदी इस समाचार से अत्यधिक क्रुद्ध हुयी और युधिष्ठिर को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करती है।
- द्वितीय सर्ग में महर्षि व्यास आते हैं और अर्जुन को पाशुपत अस्त्र प्राप्त करने की सलाह देते हैं।
- अर्जुन तपस्या हेतु **इन्द्रकील** (हिमालय) पर जाते हैं।
- किरातार्जुनीय के प्रारम्भिक तीन सर्ग विशेष कठिन हैं अतः उन्हें **'पाषाण-त्रय'** के नाम से जाना जाता है।
- अर्जुन को **18वें सर्ग में पाशुपत अस्त्र प्राप्त** होता है।
- प्रथमसर्ग के अन्तिम दो श्लोकों में क्रमशः पुष्पिताग्रा और 'मालिनी' छन्दों का प्रयोग हुआ है। प्रथमसर्ग का अन्तिम श्लोक **'विधिसमयनियोगात् ....'** है।
- **'प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती'** भारवि की भाषा तथा शैली का द्योतक महनीय मन्त्र है।
- भारवि के किरात के **'प्रथमसर्ग' में कुल 46 श्लोक** हैं।

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)

- 'किरातार्जुनीयम्' में **'वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण'** किया गया है।
- दुर्योधन के प्रजाविषयक व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने वनेचर को नियुक्त किया था।
- युधिष्ठिर को प्रणाम करके उसने शत्रु द्वारा जीती गयी पृथ्वी का वर्णन किया। ऐसा करते हुए किरात का मन खिन्न नहीं हुआ।
- शत्रुओं के नाश के लिए यत्न करने वाले युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर वह एकान्त में अपनी बात कहता है।
- वनेचर कहता है कि सेवकों द्वारा गुप्तचर रूपी नेत्र वाले 'स्वामी' को धोखा नहीं दिया जाना चाहिए।
- जो स्वामी को उचित सलाह न दे वह बुरा मित्र है और जो स्वामी हितैषी मित्र की न सुने वह बुरा स्वामी है।
- राजाओं का चरित्र स्वभाव से ही कठिनाई से जानने योग्य होता है। वनेचर जो कुछ जान पाया वह युधिष्ठिर का प्रभाव है।
- दुर्योधन अब 'जुएँ' में जीती गई पृथ्वी को 'नीति' से जीतना चाहता है।
- युधिष्ठिर को जीतने के लिए दुर्योधन अपने गुणों से यश का विस्तार करता है।
- दुर्योधन अपने छः शत्रुओं - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य पर विजय प्राप्त कर लिया।
- दुर्योधन सेवकों से मित्र जैसा, मित्रों से भाइयों जैसा और भाई-बन्धुओं को शासक मानकर व्यवहार करता है।
- दुर्योधन का मधुर वचन दान के बिना नहीं होता, दान आदर-सत्कार को छोड़कर नहीं होता और विशेष आदर गुणों के अनुराग के बिना नहीं होता।
- जितेन्द्रिय दुर्योधन 'अपना कर्तव्य मानकर धर्म-विप्लव' को दण्ड से रोकता है अन्य कारण से नहीं।
- राजाओं के उपहारस्वरूप प्राप्त हाथियों के मदजल से दुर्योधन का आँगन गीलेपन को प्राप्त है।
- कुरुदेश के निवासी कृषि के लिए वर्षा जल पर निर्भर नहीं रहते। कुरुप्रदेश की कृषि अदेवमातृक है।
- दुर्योधन के 'कुबेर' सदृश गुणों से द्रवित पृथ्वी स्वयं धनरूपी दुग्ध देती है।
- दुर्योधन के धनुर्धर लोग मानरूपी धन वाले, धन से सम्मानित और युद्ध में यश पाने वाले हैं।
- महीपाल लोग दुर्योधन के गुणों में अनुराग के कारण उसके आदेश को 'माला' की भाँति शिरोधार्य करते हैं।
- दुर्योधन ने दुःशासन को 'युवराज' नियुक्त किया है।
- वनेचर प्रथमसर्ग के 25वें श्लोक तक का वक्ता है और उसके चले जाने पर युधिष्ठिर द्रौपदी के आवास में प्रवेश करते हैं।
- 'बुरी मनोव्यथाएँ' द्रौपदी को बोलने के लिए उद्यत करती है।
- द्रौपदी कहती है युधिष्ठिर ने मदस्रावी हाथी के समान पृथ्वी को माला की तरह अपने हाथ से त्याग दिया।
- सफल क्रोध वालों के वश में प्राणी स्वयं हो जाता है।
- **वृकोदर (भीम)** धूलधूसरित होकर पैदल ही पर्वतों में घूमता है।
- इन्द्र के समान पराक्रमी अर्जुन ने 'उत्तरकुरुदेश' को जीतकर प्रचुर धन युधिष्ठिर को दिया था, वह अब **'वल्कल वस्त्र'** संग्रह करता है।

- नकुल और सहदेव का शरीर वन में सोने के कारण कठोर हो गया है और दोनों जुड़वे हाथियों के समान हैं।
- युधिष्ठिर कुशवाली भूमि पर सोकर श्रृगाली (सियारिनियों) के शब्दों से निद्रा का परित्याग करते हैं।

कादम्बरी

- **लेखक** – बाणभट्ट
- **काव्यविधा** – कथा
- **दो खण्ड** – (i) पूर्वार्द्ध (ii) उत्तरार्द्ध
- **प्रधानरस** – शृङ्गाररस
- **उपजीव्य** – गुणाढ्य की 'बृहत्कथा'
- **नायक** – चन्द्रापीड (शूद्रक)
- **नायिका** – कादम्बरी
- **सहनायक** – वैशम्पायन (पुण्डरीक)
- **सहनायिका** – महाश्वेता
- **वैशिष्ट्य** – तीन जन्मों की कथा
- **प्रमुखपात्र** – चन्द्रापीड, कादम्बरी, पुण्डरीक, महाश्वेता, शूद्रक, तारापीड, विलासवती, शुकनास, मनोरमा, वैशम्पायन, इन्द्रायुध (घोड़ा) पत्रलेखा (दासी) जाबालि, हारीत, चाण्डालकन्या, शबर, कपिञ्जल, शुक, हंस, चित्ररथ
- कादम्बरी उत्तरार्ध की रचना बाण के पुत्र **भूषणभट्ट** (भूषणबाण/पुलिन्द/पुलिनभट्ट/पुलिन्ध्र) ने की।
- **कादम्बरी की रीति** – पाञ्चाली
- **कादम्बरी में अलङ्कार** – विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा।
- **कादम्बरी के प्रमुखवर्णन–**
  शूद्रकवर्णन, शुकवर्णन, चाण्डालकन्यावर्णन, विन्ध्याटवीवर्णन, शबरसैन्यवर्णन, शाल्मलीवृक्षवर्णन जाबाल्याश्रमवर्णन, जाबालिवर्णन, उज्जयिनीवर्णन, तारापीडवर्णन, इन्द्रायुधवर्णन, अच्छोदसरोवरवर्णन, महाश्वेतावर्णन, कादम्बरीवर्णन आदि।
- **कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा–**

	चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	चाण्डालकन्या
प्रथमजन्म	1. चन्द्रमा	पुण्डरीक	रोहिणी	कपिञ्जल	लक्ष्मी
द्वितीयजन्म	2. चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	–
तृतीयजन्म	3. शूद्रक	शुक	–	कपिञ्जल	चाण्डालकन्या

- कादम्बरी की कथा एक जन्म से सम्बद्ध न होकर चन्द्रापीड और पुण्डरीक के तीन जन्मों से सम्बन्ध रखती है।
- कादम्बरी के दो भाग हैं– पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध।
- 'कादम्बरी' का नायक चन्द्रापीड धीरोदात्त नायक है।
- 'कादम्बरी' की नायिका कादम्बरी विवाह से पूर्व **'परकीया मुग्धा नायिका'** है, किन्तु विवाह के बाद **'स्वकीया मध्या नायिका'** है।
- कादम्बरी का प्रमुख रस **'शृङ्गार'** तथा गुण **'माधुर्य'** है।
- कादम्बरी में **पाञ्चाली रीति** की बहुलता है। **'शब्दार्थयोः समोगुम्फः पाञ्चाली रीतिरुच्यते॥'**
- 'बृहत्कथासरित्सागर' के 'उनसठवें तरङ्ग' मकरन्दिका-वृत्तान्त का अवलम्बन लेकर बाण ने कादम्बरी-कथा की रचना की।
- कादम्बरी का शाब्दिक अर्थ **'मदिरा'** है।
- कादम्बरी के उत्तरार्द्ध में भूषणभट्ट ने कहा – **कादम्बरी रसभरेण समस्त एव, मत्तो न किञ्चिदपि चेतयतो जनोऽयम्॥**
- कादम्बरी के मङ्गलाचरण में त्रिगुण-स्वरूप अजन्मा परमब्रह्म को नमस्कार किया गया है।
- यह ब्रह्म प्राणियों के प्रादुर्भाव में रजोगुण युक्त, स्थितिकाल में सात्विक गुणवाला तथा प्रलयकाल में तमोगुण वाला होता है।
- कादम्बरी का मङ्गलाचरण **नमस्कारात्मक** है।
- कादम्बरी के मङ्गलाचरण में **वंशस्थ छन्द** है।
- कादम्बरी के द्वितीय श्लोक में भगवान् शिव की चरण धूलियों की स्तुति की गयी है।
- चतुर्थ श्लोक में बाण ने अपने गुरु **भर्वु (भत्सु)** के चरणों की वन्दना की।
- बाण ने दो श्लोकों (8, 9) में कादम्बरी कथा की प्रशंसा की है।
- कादम्बरी की रचना में बाण को गुणाढ्य की **बृहत्कथा** तथा सुबन्धु की **वासवदत्ता** से प्रेरणा मिली है, और इन्हें पीछे छोड़ना बाण का लक्ष्य रहा है। इसीलिए बाणभट्ट ने कादम्बरी को **अतिद्वयी** (अर्थात् वासवदत्ता और बृहत्कथा का अतिक्रमण करने वाली) कथा कहा है।
- कादम्बरी कथा का आरम्भ राजा शूद्रक के प्रभाव और उनकी **राजधानी 'विदिशा'** के वैभव वर्णन से होता है।
- शूद्रक के दरबार में एक 'चाण्डालकन्या' 'वैशम्पायन' नामक शुक को लेकर आती है।
- यह तोता मनुष्य की बोली बोलता है और राजा की प्रशंसा में एक आर्या छन्द (दाहिना पैर उठाकर) पढ़ता है –
  स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
  चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥
- यही शुक राजा शूद्रक के सामने अपने जन्म 'हारीत' के द्वारा महर्षि जाबालि के आश्रम में पहुँचने का वृत्तान्त बताता है।
- मुनि जाबालि उज्जयिनी नरेश तारापीड के पुत्र चन्द्रापीड तथा उसके मित्र मन्त्री शुकनास के पुत्र वैशम्पायन की कथा का वर्णन करते हैं।
- शुक का जन्म 'विन्ध्याटवी' में एक विशाल शाल्मली के वृक्ष पर हुआ था।
- उज्जयिनी मालवा की राजधानी है।
- तारापीड की पत्नी **'विलासवती'** और शुकनास की पत्नी का नाम **'मनोरमा'** है।
- चन्द्रापीड के तीन जन्म क्रमशः **चन्द्रमा, चन्द्रापीड और शूद्रक** हैं।
- पुण्डरीक के तीन जन्म क्रमशः **पुण्डरीक, वैशम्पायन और शुक हैं।**

- चन्द्रापीड की सेविका (ताम्बूलवाहिनी) पत्रलेखा पूर्व जन्म में रोहिणी रहती है।
- चन्द्रापीड का घोड़ा इन्द्रायुध पूर्व जन्म में पुण्डरीक का मित्र 'कपिञ्जल' रहता है।
- चाण्डालकन्या पूर्व जन्म में पुण्डरीक की माता लक्ष्मी रहती है।
- दिग्विजय के लिए निकले चन्द्रापीड किन्नर मिथुन का पीछा करते **'अच्छोद सरोवर'** पहुँच जाता है।
- अच्छोद सरोवर पर तप करती हुई **'महाश्वेता' गन्धर्वराज हंस और गौरी की पुत्री** है।
- पुण्डरीक के कान पर लगी पारिजात की कुसुम-मञ्जरी से महाश्वेता आकर्षित होती है।
- तरलिका महाश्वेता की सहचरी है।
- गन्धर्वराज **चित्ररथ और मदिरा की पुत्री कादम्बरी** है।
- केयूरक कादम्बरी का अनुचर (वीणावाहक) है।
- **पुण्डरीक महर्षि श्वेतकेतु और लक्ष्मी का पुत्र** है।
- पुण्डरीक ने चन्द्रमा को वियोगाग्नि में तड़पने और चन्द्रमा पुण्डरीक को साथ-साथ दुःख भोगने का शाप दिया था।
- पत्रलेखा कुलूताधिपति की पुत्री है।
- कादम्बरी की सहचरी मदलेखा है।
- इन्द्रायुध अश्व का सजीव वर्णन करने के कारण बाण को **'तुरङ्गबाण'** कहा जाता है।

कादम्बरी (शुकनासोपदेश)

- चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के अवसर पर तारापीड का मंत्री 'शुकनास' चन्द्रापीड को उपदेश देता है।
- शुकनास चन्द्रापीड के लिए 'तात' सम्बोधन प्रयुक्त करते हैं।
- शुकनास के अनुसार युवावस्था के प्रभाव से उत्पन्न अन्धकार सूर्य से भेदा नहीं जा सकता तथा मणियों एवं दीपक के प्रकाश से दूर नहीं किया जा सकता।
- लक्ष्मी से उत्पन्न मद दारुण होता है तथा वृद्धावस्था में भी शान्त नहीं होता।
- ऐश्वर्य रूपी 'तिमिर' रोग अञ्जन की शलाका से भी ठीक नहीं होता।
- दर्प (अभिमान) की दाहज्वर शीतल उपचारों से ठीक नहीं किया जा सकता।
- राग (अनुराग) का मल स्नान एवं शौच आदि कार्यों से भी दूर नहीं होता।
- राज्य-सुख की निद्रा रात बीत जाने पर भी नहीं टूटती।
- (i) जन्म से प्राप्त ऐश्वर्य, (ii) नयी युवावस्था (iii) अनुपम सौन्दर्य तथा (iv) अलौकिक शक्ति 'चारों' अनर्थ की परम्पराएं हैं।
- 'युवावस्था' के आरम्भ में शास्त्रजल के प्रक्षालन के पश्चात् भी 'बुद्धि' कलुषता को प्राप्त करती है।
- श्वेतता (स्वच्छता) को त्यागे बिना भी युवकों की दृष्टि लालिमा (राग) से युक्त रहती है।
- जिस प्रकार वात्या (बवंडर) सूखे पत्ते को उसी प्रकार रजोगुण से उत्पन्न भ्रान्ति पुरुष को अपनी इच्छा से घुमाती है।
- उपभोगमृगतृष्णा इन्द्रिय-हरिणो को नष्ट कर देती है।
- जिस प्रकार जल के कारण कसैले पदार्थ मीठा स्वाद देते हैं उसी प्रकार युवावस्था के कारण विषय में अनुरक्ति मधुर प्रतीत होती है।
- विषयों में आसक्ति दिग्भ्रमित व्यक्ति की तरह पुरुष को नष्ट करती है।
- चन्द्रापीड जैसे व्यक्ति ही उपदेश के योग्य होते हैं।
- जिस प्रकार स्फटिक मणि में चन्द्रमा की किरणें उसी प्रकार निर्मल हृदय में उपदेश सरलता से प्रविष्ट होता है।
- जिस प्रकार थोड़ा सा पवित्र जल भी कान में पड़ने पर पीड़ा पहुँचाता है उसी प्रकार गुरु का पवित्र उपदेश भी अशिष्ट को कष्ट पहुँचाते हैं।
- शिष्ट व्यक्ति की शोभा को गुरूपदेश हाथी के शंखाभूषण की तरह बढ़ा देते हैं।
- प्रदोष के चन्द्रमा की तरह गुरु-वचन दोषरूपी अन्धकार को दूर करता है।
- काम के बाणों से जर्जर हृदय में उपदेश जल की तरह चू जाता है।
- गुरु का उपदेश 'जलविहीन' स्नान है।
- भय से लोग प्रतिध्वनि की तरह राजा के वचन का अनुसरण करते हैं।
- अभिमानरूपी सूजन से बन्द कान में गुरूपदेश नहीं सुनाई पड़ता।
- शुकनास सर्वप्रथम लक्ष्मी के विषय में चन्द्रापीड को उपदिष्ट करता है।

शुकनासोपदेश में 'लक्ष्मी' हेतु प्रयुक्त प्रमुख विशेषण और संज्ञापद

1. इन्द्रियहरिणहारिणी
2. खड्गमण्डलोत्पलवनविभ्रमभ्रमरी
3. अपरिचिता
4. अनार्या
5. अप्रत्ययबहुला
6. वसुजननी

7. तरङ्गबुद्बुद्चञ्चला
8. तमोबहुला
9. भीमसाहसैकहार्यहृदया
10. अचिरद्युतिकारिणी
11. तोयराशिसम्भवा
12. ईश्वरतामादधाना
13. अमृतसहोदरा, कटुविपाका
14. विग्रहवती, अप्रत्यक्षदर्शना
15. पुरुषोत्तमरता
16. खलजनप्रिया
17. चपला
18. व्याधगीतिः
19. परामर्शधूमलेखा
20. निवासजीर्णवलभी
21. तिमिरोद्गतिः, पुरःपताका
22. उत्पत्तिनिम्नगा, आपानभूमिः
23. सङ्गीतशाला, आवासदरी
24. उत्सारणवेत्रलता, अकालप्रावृड्
25. कपटनाटकस्य प्रस्तावना
26. राहुजिह्वा
27. आलेख्यगता, पुस्तमयी
28. उत्कीर्णा, श्रुता
29. दुराचारा

शुकनासोपदेश में वर्णित लक्ष्मी के गुण/अवगुण

1. रागम् (पारिजातपल्लवेभ्यः)
2. एकान्तवक्रताम् (इन्दुशकलात्)
3. चञ्चलताम् (उच्चैःश्रवसः)
4. मोहनशक्तिम् (कालकूटात्)
5. मदम् (वारुणीमदिरायाः)
6. नैष्ठुर्यम् (कौस्तुभमणेः)
7. न परिचयं रक्षति।
8. नाभिजनमीक्षते।
9. न रूपमालोकयते।
10. न कुलक्रममनुवर्तते।
11. न शीलं पश्यति।
12. न वैदग्ध्यं गणयति।
13. न श्रुतम् आकर्णयति।
14. न धर्ममनुरुध्यते।
15. न त्यागमाद्रियते।
16. न विशेषज्ञतां विचारयति।
17. नाचारं पालयति।
18. न सत्यमनुबुध्यते।
19. न लक्षणं प्रमाणीकरोति।
20. तृष्णां संवर्धयति।
21. अशिवप्रकृतित्वमातनोति।
22. बलोपचयमाहरन्ती।

लक्ष्मी के लिए प्रयुक्त उपमाएँ

1. गन्धर्वनगरलेखेव
2. आरूढमन्दरपरिवर्तावर्तभ्रान्तिजनितसंस्कारेव।
3. कमलिनीसञ्चरणव्यतिकरलग्ननलिननालकण्टकेव।
4. विविधगन्धगजगण्डमधुपानमत्तेव।
5. लतेव, गङ्गेव।
6. पातालगुहेव।
7. हिडिम्बेव।
8. प्रावृडिव।
9. दुष्टपिशाचीव।
10. अनिमित्तमिव।
11. रेणुमयीव।
12. दीपशिखेव।
13. वात्येव।

शिवराजविजय–ऐतिहासिक उपन्यास

- **लेखक** – अम्बिकादत्तव्यास
- **विधा** – ऐतिहासिक उपन्यास
- **विभाजन –** तीन विराम, 12 निःश्वास।
- **प्रधानरस** – वीर
- **उपजीव्य** – इतिहासप्रसिद्ध
- **नायक** – शिवाजी
- **कथानक** – शिवाजी का जीवनचरित।
- **प्रमुखपात्र** – शिवाजी, गौरसिंह, श्यामसिंह, ब्रह्मचारी गुरु, योगिराज, अफजलखान, शाइस्ताखान, रघुवीरसिंह, यवनयुवक यशवन्तसिंह, औरंगजेब, रसनारी (रोशनआरा)
- 'शिवराजविजय' **1870 ई०** में लिखा गया था, जो काशी से **1901 ई. में प्रकाशित** हुआ।
- संस्कृतवाङ्मय का **प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास 'शिवराजविजय' है।**
- शिवराजविजय की सम्पूर्ण कथा 3 विरामों और 12 निःश्वासों में विभक्त है।
- शिवराजविजय में दो समान्तर धाराएँ स्वतन्त्र रूप से प्रवाहित होती हैं – एक के नायक शिवाजी हैं तो दूसरी के नायक रघुवीर सिंह हैं।
- शिवराजविजय **'वीर रस' प्रधान काव्य** है। **'विरोधाभास'** व्यास जी का प्रिय अलङ्कार है। शिवराजविजय में पाञ्चालीरीति प्रयुक्त है।
- व्यासजी ने 'शिवराजविजय' में मुगलकालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया है।

कथानक एवं पात्र-चित्रण

- शिवाजी के काल में दो-दो कोस पर आश्रम बने हुए थे, जो मुसलमानों की गतिविधियों पर नजर रखते थे।
- बीजापुर-दरबार ने शिवाजी से युद्ध के लिए अफजल खाँ को भेजा। उस समय शिवाजी 'प्रतापदुर्ग' में थे।
- अफजल खाँ ने 'भीमा नदी' के तट पर शिविर डाल दिया।
- बीजापुर के शासक 'सन्धि' के धोखे से शिवाजी को पकड़ना चाहते थे।
- एक यवन गुप्तचर जो बीजापुर दरबार का पत्र ले जा रहा था, उसने मार्ग में एक ब्राह्मण कन्या का अपहरण किया।
- एक भालू के आ जाने से वह यवन युवक उस कन्या को छोड़कर 'शाल्मली' वृक्ष पर चढ़ गया।
- ब्रह्मचारी गुरु के शिष्य 'गौरसिंह' और श्यामसिंह द्वारा वह कन्या बचा ली गई।

- यवन गुप्तचर 'गौर सिंह' द्वारा मारा गया तथा बीजापुर का गुप्त संदेश उसके वस्त्रों में से गौरसिंह को प्राप्त हुआ।
- गुप्त संदेश को जानकर शिवाजी ने स्वयं अफजल खाँ को छलने की योजना बनायी।
- बीजापुर से सन्धि प्रस्ताव लेकर भेजे गये 'पं. गोपीनाथ' द्वारा प्रतापदुर्ग की तलहटी में अफजल खाँ से मिलने का शिवाजी ने प्रबन्ध किया।
- गौर सिंह 'गायक' के वेश में अफजल खाँ के शिविर में जाकर सम्पूर्ण भेद निकाल लाया।
- शिवाजी कपड़ों के अन्दर कवच और हाथों में 'बाघनख' नामक हथियार पहन कर अफजल खाँ से मिलने गये।
- आलिंगन के समय शिवाजी ने अफजल खाँ के कन्धों और गर्दन को फाड़कर मार डाला।
- गौर सिंह द्वारा जिस ब्राह्मण कन्या की रक्षा की गयी थी, उसके संरक्षक एक वृद्ध ब्राह्मण थे।
- वह कन्या गौर सिंह और श्याम सिंह की **बहन सौवर्णी** है और वृद्ध ब्राह्मण उनके **पुरोहित 'देवशर्मा'** हैं।
- ब्रह्मचारी गुरु के अनुरोध पर गौर सिंह ने अपना वृत्तान्त सुनाया।
- वे तीनों (गौर सिंह, श्याम सिंह, सौवर्णी) उदयपुर के जागीरदार **'खड़गसिंह'** के पुत्र-पुत्री थे।
- माता-पिता की मृत्यु के बाद तीनों बहिन भाई पुरोहित की संरक्षता में रहते थे।
- शिकार पर गये हुए वे लुटेरों द्वारा पकड़े गये वहाँ से वे भाग कर हनुमान मंदिर अध्यक्ष की सहायता से भीमा नदी के किनारे शिवाजी से मिले और ब्रह्मचारी गुरु के आश्रम में रहने लगे।
- 'शाइस्ता खाँ' पूना पर अधिकार करके शिवाजी के महल में रहने लगता है।
- शिवाजी ने 'सिंह दुर्ग' से अपना एक संदेश 'रघुवीर सिंह' द्वारा 'तोरण दुर्ग' के अध्यक्ष के पास भेजा।
- रघुवीर सिंह तोरण दुर्ग के अध्यक्ष की आज्ञा से 'हनुमान मंदिर' में ठहरा।
- देवशर्मा 'सौवर्णी' को लेकर उसी हनुमान मन्दिर में रहने लगे थे। जहाँ वाटिका में रघुवीर सिंह सौवर्णी को देखता है।
- शिवाजी के आदेश पर रघुवीर सिंह शाइस्ता खाँ के साथ होने वाले युद्ध का भविष्य पूछने के लिए देवशर्मा के पास गया।
- देवशर्मा ने सौवर्णी द्वारा उसे एक मोदक खिलाकर गले में एक 'माला' डलवाई।
- देवशर्मा ने यवनों के साथ युद्ध में विजय तथा आर्यों के साथ पराजय यह भविष्य बताया।
- शिवाजी ने पंडित के वेश में 'माल्यश्रीक' के साथ शाइस्ता खाँ के निवास पूना जाकर निरीक्षण किया।
- सन्देह होने पर चाँद खाँ ने उनका पीछा किया शिवाजी ने उसका वध कर दिया।
- शिवाजी ने यशवन्त सिंह को पूना से दूर रहने की प्रार्थना कर 'बारात' के बहाने पूना में प्रवेश किया।
- चाँद खाँ और शाइस्ता खाँ के पुत्र रघुवीर सिंह द्वारा मारे गये।
- शाइस्ता खाँ घायल उंगली के साथ भाग गया।
- रघुवीर सिंह ने औरंगजेब की पुत्री 'रोशन आरा' को गिरफ्तार कर लिया।
- ब्रह्मचारी गुरु ने गौरसिंह से अपने पुत्र 'वीरेन्द्र सिंह' का वृत्तान्त बताया।
- सौवर्णी ने क्रूरसिंह द्वारा किये जाने वाले अपमान की बात रघुवीर सिंह से बतायी।
- रोशनआरा शिवाजी के प्रति अपना प्रेम प्रकट करती है। शिवाजी ने पिता द्वारा उसे दिये जाने पर ही स्वीकार करने की बात कही।
- 'जयसिंह' के आक्रमण करने पर शिवाजी मुगलों की कुछ शर्तें मानकर सन्धि करने पर विवश हुए। और उन्हें रोशनआरा और मुअज्जम को वापस करना पड़ा।
- बीजापुर किले पर आक्रमण करके रघुवीर सिंह की सहायता से शिवाजी ने विजय प्राप्त की। और रहमत खाँ को पकड़ लिया गया।
- रहमत खाँ और क्रूरसिंह द्वारा राजद्रोही बताये जाने पर शिवाजी ने रघुवीर सिंह को निष्कासित कर दिया।
- रघुवीर सिंह **'राधास्वामी'** का वेश धारण कर शिवाजी का उपकार करता रहा।
- सौवर्णी का अपहरण की इच्छा रखने वाले क्रूरसिंह का रघुवीर सिंह (राधास्वामी) ने वध कर दिया।
- जयसिंह की सन्धि के अनुसार शिवाजी औरंगजेब के राजदरबार दिल्ली में उपस्थित हुए।
- मार्ग में राधास्वामी (राघवस्वामी, रघुवीर सिंह) के रोकने पर भी वे नहीं माने।
- औरंगजेब ने शिवाजी को नजरबंद करवा दिया। परन्तु 'रघुवीर सिंह' के सहायता से वे भागने में सफल हो गये।
- रघुवीर सिंह को 'मण्डलेश्वर' पद प्रदान किया गया तथा 'सौवर्णी' के साथ उसका विवाह हो गया।

➢ शिवाजी **सतारा नगर को राजधानी** बनाकर रहने लगे और धीरे-धीरे पूरे महाराष्ट्र पर अधिकार कर लिया।

➢ औरंगजेब द्वारा प्रेषित सेनापति 'मोहम्मद खाँ' भगा दिया गया।

शिवराजविजय का प्रथमनिःश्वास

➢ शिवराजविजय का मङ्गलाचरण **''विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्''** से होता है जो 'भागवतपुराण' के दशम स्कन्ध से लिया गया है।

➢ मङ्गलाचरण में विष्णु की माया को ऐश्वर्यशालिनी बताया गया है, जिसने सम्पूर्ण जगत् को मोह में डाल रखा है।

➢ दूसरी पंक्ति में कहा गया है कि दुष्ट हिंसक अपने पाप से मारा गया और सज्जन समत्व भाव के कारण बच गये।

➢ शिवराजविजय का आरम्भ प्रातःकाल एवं सूर्य भगवान के वर्णन से होता है।

➢ देर से सोकर उठे गौरसिंह को पुष्प चुनने से 'श्यामबटु' रोकता है और बताता है कि उसने गुरु (ब्रह्मचारी) के सन्ध्योपासना की समस्त सामग्री पहुँचा दी है।

➢ 'शिवराजविजय' का मंगलाचरण **'नमस्कारात्मक'** और **वस्तु निर्देशात्मक** है।

➢ गौर सिंह केले के पत्ते को तिनकों से जोड़कर उसी में पुष्प तोड़ना आरम्भ करता है।

➢ गौरबटु लगभग सोलह वर्ष का है उसका साथी (भाई) श्यामबटु भी उसी का समवयस्क है।

➢ उनकी कुटिया केले के वन से घिरे होने के कारण कुञ्ज के जैसी प्रतीत होती है।

➢ कुटीर के **चारों ओर पुष्पवाटिका** थी तथा **पूर्व दिशा** में एक तालाब है।

➢ कुटिया के **'दक्षिण' में झरनों तथा सुंदर कन्दराओं से** युक्त एक **पर्वतखण्ड** विद्यमान है।

➢ **सात वर्षीय कन्या** को सांत्वना प्रदान करते हुए गौरबटु ने रात्रि के तीन पहर व्यतीत कर दिये जिसे उसने यवन युवक से बचाया था।

➢ कुटिया के दक्षिण में स्थित पर्वत की कन्दरा में एक महामुनि समाधिरत थे जिनकी ग्राम-प्रधान और ग्रामीण पूजा किया करते थे।

➢ उन महामुनि को कोई **कपिल** कोई **लोमश** और कोई **जैगीषव्य** और कोई **मार्कण्डेय** समझता था।

➢ उन महामुनि (योगिराज) को सर्वप्रथम उन दो ब्राह्मण बालकों (गौर, श्याम) के द्वारा शिखर से नीचे उतरते देखा गया।

➢ योगिराज आश्रम में आकर काष्ठासन पर उदयाचल पर सूर्य के समान आसीन हुए।

➢ ब्रह्मचारी गुरु ने जैसे ही कुछ बोलना चाहा तभी उस बालिका का करुण क्रन्दन सुनाई पड़ा।

➢ योगिराज के उस कन्या के सम्बन्ध में पूछने पर 'श्यामबटु' को उसे शान्त करने का आदेश देकर ब्रह्मचारी गुरु ने बोलना आरम्भ किया।

➢ सर्वप्रथम उस कन्या का करुण क्रन्दन सुनकर 'ब्रह्मचारी' ने पता लगाने हेतु अपने शिष्यों को भेजा था।

➢ यवन युवक उस कन्या को माता के हाथ से छीनकर भागा था, उसने बालिका को 'छूरा' दिखाकर शान्त करना चाहा।

➢ अचानक भालू के आ जाने से यवन युवक शाल्मली वृक्ष पर चढ़ गया और कन्या घुणाक्षरन्याय से पलाश वृक्षों के झुरमुट में प्रवेश कर आश्रम की तरफ आयी।

➢ योगिराज के 'विक्रमराज्य' में ऐसा उपद्रव कहने पर ब्रह्मचारी गुरु ने बताया कि विक्रमादित्य के राज्य को बीते तो **'सत्रह सौ वर्ष'** हो गये।

➢ ब्रह्मचारी गुरु ने बताया कि आज वेद फाड़कर मार्गों में बिखेरे जाते हैं, 'धर्मशास्त्रों' को उछालकर 'आग' में झोंका जाता है। पुराणों को पीस कर पानी में फेंका जाता है, भाष्य नष्ट करके भाड में झोंके जाते हैं।

➢ योगिराज विक्रमादित्य द्वारा 'शकों' को जीते जाने को कल की ही बात बताते हैं।

➢ ब्रह्मचारी गुरु योगिराज से बताते हैं कि 'भगवन्' आपने जिन पुरुषों को देखा था अब उनकी 'पचासवीं' पीढ़ी के पुरुष भी दिखाई नहीं पड़ते।

➢ योगिराज बताते हैं कि वे **'युधिष्ठिर' के समय समाधि** लगाकर 'विक्रमादित्य' के समय में तथा विक्रमादित्य के समय समाधि लगाकर इस दुराचारमय समय में उठे।

➢ ब्रह्मचारी गुरु ने बताया कि 'महमूद गजनवी' ने भारत को बारह **(12) बार लूटा** और सैकड़ों ऊँटों पर रत्नों को लाद कर अपने देश ले गया।

➢ उसने गुजरात देश में स्थित 'सोमनाथ' को भी धूल में मिला दिया।

➢ सोमनाथ की किवाड़ें वैदूर्य (मूंगा), पद्मराग हीरे, मोतियों से बनी थी।

- सोमनाथ में लटकने वाला महाघण्टा **दो सौ मन सोने की जंजीर** में लटकता था।
- महादेव की मूर्ति पर गदा उठाने पर पुजारियों ने उसे 'दो करोड़ स्वर्ण मुद्राएं' देकर छुड़ाना चाहा परन्तु उसने यह कह कर कि **'वह मूर्ति बेचता नहीं किन्तु तोड़ता है।'** उसने मूर्ति को तोड़ दिया।
- गदा के प्रहार से अनेक 'अरब पद्म मुद्रा' के मूल्य के रत्न बिखरे, उनको लेकर ऊंटों की पीठ पर लाद कर 'सिन्धु' नदी उतर कर महमूद गजनवी 'गजनी' वापस चला गया।
- सं. 1087 में **'गोर देश' निवासी 'शहाबुद्दीन'** नामक यवन पहले गजनी देश पर फिर भारत पर आक्रमण किया। और 1250 में दिल्ली को अश्वारोहियों से घेर लिया।
- उसने वाराणसी में भी हड्डियों के अनेक पहाड़ बना दिये। वाराणसी तक उसने अकण्टक राज्य किया।
- **शहाबुद्दीन (गोरी)** ने ही मुख्यतः **भारत में यवन-शासन का बीजारोपण** किया और उसी ने **'कुतुबुद्दीन'** नामक गुलाम को **दिल्ली का प्रथम सम्राट** बनाया।
- केवल अकबर यद्यपि भारतवर्ष का गूढ शत्रु था तथापि वह शान्तप्रिय और विद्वानों का आदर करने वाला था।
- औरंगजेब ने **'आलमगीर'** उपाधि धारण किया।
- औरंगजेब ने 'शाइस्ता खाँ' को दक्षिण के शासक के रूप में भेजा।
- शिवाजी पूना नगर के निकट **'सिंहदुर्ग'** में रह रहे थे। (विजयपुर = बीजापुर)
- **'या कार्य सिद्ध होगा या शरीर नष्ट होगा'** यह शिवाजी की प्रतिज्ञा थी।
- योगिराज ने **'वीर शिवाजी' विजयी हों और आप के मनोरथ सिद्ध हों'** आशीर्वाद दिया।
- दूसरे प्रश्न के रूप में 'कब देखूँगा उसे पूछने पर' योगिराज ने विवाह के समय देखोगे' ऐसा उत्तर दिया।
- गौरसिंह 'अफजल' के तीन घोड़ों और घुडसवारों को मारकर पाँच ब्राह्मणों को छुड़ाकर ले आया।
- गौरसिंह ने देखा कि गृहवाटिका के केलों के झुरमुट में दो या तीन पेड़ अधिक काँप रहे थे।
- गौर सिंह ने कुटीर की 'बल्ली' में तलवार छिपा रखी थी।
- छिपा हुआ यवनयुवक सिर पर नीले वस्त्र, हरित वर्ण का कञ्चुक और श्याम (नीले) वस्त्र कटितट तक बाँधे था।
- उस यवन युवक की **उम्र लगभग 20 वर्ष** थी।
- श्यामबटु' तलवार लेकर उसी कुटी के द्वार पर 'कन्या' के रक्षणार्थ खड़ा हुआ जिसमें वह थी।
- गौरसिंह ने यवन युवक को मारकर उसके कपड़ों में से एक पत्र निकालकर गणों सहित कुटिया में प्रवेश किया।

मेघदूतम् (खण्डकाव्य/गीतिकाव्य)

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – खण्डकाव्य/गीतिकाव्य
- **दो भागों में**–(i) पूर्वमेघ (ii) उत्तरमेघ
- **प्रधानरस** – विप्रलम्भशृङ्गार
- **छन्द** – मन्दाक्रान्ता
- **मेघदूतम् की रीति** – वैदर्भी रीति
- **उपजीव्य** – कथानक ब्रह्मवैवर्तपुराण से एवं दूत की कल्पना वाल्मीकीयरामायण से
- **नायक** – यक्ष (हेममाली) ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार
- **नायिका** – यक्षिणी (विशालाक्षी)
- **कथानक** – दूतकाव्य के रूप में एक 'गीतिकाव्य' है, जिसमें एक यक्ष का विरह वर्णित है।
- 50 से अधिक संस्कृत टीकायें।
- जर्मन विद्वान् **मैक्समूलर ने मेघदूतम् का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद** और **श्वेट्ज ने जर्मनभाषा में गद्यानुवाद** किया है।
- **आर्थर राइडर और एच. जी रूक** ने अंग्रेजी में मेघदूतम् का पद्यानुवाद किया है।
- हिन्दीभाषा में मेघदूतम् के **6 पद्यानुवाद** हो चुके हैं।
- क्षेमेन्द्र ने कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की– **'सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता विराजते' –सुवृत्ततिलक**
- मेघदूत में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलङ्कारों का सुन्दर प्रयोग है।
- डॉ. कीथ ने मेघदूत को **Elegy (शोकगीत)** कहा है।
- भारतीय मत में मेघदूत शोकगीत या करुणगीत न होकर **विरहगीत** या **विप्रलम्भगीत** है।
- **प्रमुखपात्र**–यक्ष (हेममाली) यक्षिणी (विशालाक्षी) मेघ (बादल) कुबेर (यक्षाधिपति)
- संस्कृत के गीतिकाव्यों का आदिमग्रन्थ महाकवि कालिदास का मेघदूत है।
- दक्षिणावर्तनाथ और मल्लिनाथ ने मेघदूत लिखने में रामायण से प्रेरणा मानी है।

- यक्ष को अलकाधीश्वर कुबेर ने जो शाप दिया उसका आधार पद्मपुराण है।
- वहाँ के योगिनी नामक आषाढ़-कृष्ण-एकादशी-महात्म्य-प्रसंग में यह कथा संक्षेप में है।
- 'ब्रह्मवैवर्तपुराण' को भी मेघदूत का उपजीव्य माना जाता है।
- मेघदूत में 115 पद्य हैं। यह दो भागों पूर्वमेघ और उत्तरमेघ में विभक्त है।
- पूर्वमेघ में 63 और उत्तरमेघ में 52 पद्य हैं।
- मल्लिनाथ ने 121 पद्य स्वीकार किए हैं किन्तु 6 श्लोकों को प्रक्षिप्त माना है।
- मेघदूत का **मुख्य रस विप्रलम्भ शृङ्गार** है।
- पूरे मेघदूत में **मन्दाक्रान्ता छन्द** प्रयुक्त है।
- यक्षों के अधिपति कुबेर हैं। उन्होंने अपने कार्य में प्रमाद करने के कारण किसी अपने अनुचर 'यक्ष' को शाप दे दिया।
- यद्यपि कालिदास ने मेघदूत में कहीं भी इस यक्ष का नाम नहीं लिया परन्तु ब्रह्मवैवर्तपुराण में इस **यक्ष का नाम हेममाली तथा यक्षिणी का नाम विशालाक्षी** मिलता है।
- यक्ष अपनी पत्नी में आसक्ति के कारण अपने कार्य में प्रमाद करता है इसलिए कुबेर ने एक वर्ष तक अपनी पत्नी से वियुक्त रहने का शाप दिया।
- शाप के कारण नष्ट महिमा वाला **यक्ष रामगिरि में** रहता है।
- मेघदूत के आरम्भ में यक्ष अपने शापावधि के 8 माह काट चुका है और चार माह शेष हैं।
- मेघदूत का नायक **यक्ष धीरललित नायक** है। **यक्षिणी स्वकीया एवं पद्मिनी नायिका** है।
- मेघदूत में **प्रसाद एवं माधुर्य गुण** की प्रधानता है और **वैदर्भीरीति** प्रयुक्त है।
- **मेघः एव दूतः यस्मिन् काव्ये तत् 'मेघदूतम्'।**
  इस प्रकार 'मेघदूतम्' पद में बहुव्रीहि समास प्राप्त है।
- यक्षों के अधिपति **कुबेर की राजधानी 'अलका'** है। इसकी स्थिति हिमालय पर्वत शृंखला के कैलाश नामक शिखर पर बतलायी गयी है।
- **रामगिरि पर्वत** की स्थिति मल्लिनाथ तथा वल्लभ ने **चित्रकूट** मानी है जो बुन्देलखण्ड में है।
- प्रो. विल्सन ने नागपुर से कुछ दूरी पर स्थित रामटेक का प्राचीन नाम रामगिरि माना है।
- रामगिरि सीताजी के स्नान से पवित्र जल वाला तथा घने छायादार वृक्षों से युक्त है।
- आषाढ़ के पहले ही दिन यक्ष पर्वतों से क्रीड़ा करने वाले गजों के तुल्य 'मेघ' को देखता है।
- कश्चित् पद ब्रह्म का वाचक (कः = ब्रह्म, चित् = ब्रह्म) है इस प्रकार दो बार श्रवण होने से मङ्गलाचरण हो जाता है।
- मेघदूत का मङ्गलाचरण **वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।**
- प्रिया के वियोग के कारण दुर्बल यक्ष की कलाई से स्वर्णनिर्मित कङ्गन के गिरने से वह रिक्त कलाई वाला हो गया है।
- अपनी कुशलवार्ता अपनी प्रिया तक पहुँचाने के लिए, अपने निवेदन से पूर्व यक्ष कुटज (गिरिमल्लिका) के पुष्पों से मेघ को अर्घ्य देता है।
- धुआँ, अग्नि, जल एवं वायु से बने जड़ मेघ से भी वह कामार्तता के कारण सन्देश ले जाने का निवेदन करता है।
- यक्ष, मेघ को विश्वविदित **पुष्कर और आवर्तक वंश** में उत्पन्न बताता है।
- यक्ष, मेघ को **इन्द्र का प्रमुख व्यक्ति** और स्वेच्छानुसार आकृति धारण करने में समर्थ बताता है।
- मेघ को सन्तप्तों का एकमात्र शरण बताता है और उसे सन्देश लेकर अलका भेजना चाहता है। अलका के बाहरी उद्यान में स्थित भगवान् शिव के मस्तक पर सुशोभित चन्द्र की चाँदनी से वहाँ के महल धवल हैं।
- चातक (पपीहा) मेघ के बायीं ओर शब्द कर रहा है।
- गर्भाधान उत्सवकाल के परिचय से आकाश में बगुलियाँ पंक्तिबद्ध होकर मेघ का सेवन करती हैं।
- यक्ष को विश्वास है कि वियोग के दिनों की गणना में एकाग्रचित्त यक्षिणी को मेघ अवश्य देखेगा।
- यक्ष मेघ की भाभी (भ्रातृजाया) 'यक्षिणी' को कहता है।
- मानसरोवर जाने को उत्सुक तथा मार्ग में भूख मिटाने के लिए चोंच में मृणाल लिए हुए राजहंस मेघ के साथी होंगे।
- श्रीरामचन्द्र के चरणचिन्हों से युक्त रामगिरि से मेघ विदाई लेता है।
- मेघ 'उत्तरदिशा' की ओर मुख करके अपनी यात्रा का आरम्भ करता है।
- दिङ्नागाचार्य वसुबन्धु के शिष्य थे।
- मल्लिनाथ ने 'दिङ्नाग' को कालिदास का प्रतिद्वन्द्वी माना है। जिन पर कालिदास ने व्यङ्ग्य किया है।
- रामगिरि आश्रम 'गीले स्थल बेतों' से युक्त है।
- इन्द्रधनुष से युक्त श्यामल मेघ की उपमा गोपवेषधारी भगवान् श्रीकृष्ण से की गयी है।
- मेघ की यात्रा में सर्वप्रथम माल प्रदेश पड़ता है।

- थोड़ा पश्चिम में पड़ने वाले माल प्रदेश में वर्षा कर वहाँ की भूमि को सुगन्धित करता हुआ मेघ पुनः उत्तर की ओर चल देता है।
- मेघ ने आम्रकूट पर्वत की दावाग्नि पहले बुझाई थी इसलिए मित्रता के कारण आम्रकूट मेघ को सिर पर (चोटी)धारण करेगा।
- मेघ की यात्रा का **पहला पर्वत आम्रकूट** है। प्रो. विल्सन आधुनिक अमरकण्टक, जो नर्मदा का उद्गम है उसको ही आम्रकूट मानते है।
- आम्रकूट पके हुए आम्र से युक्त आम्र वृक्षों वाला पर्वत है।
- मेघ द्वारा चोटी पर आसीन हो जाने के कारण आम्रकूट पर्वत पृथ्वी के स्तन के समान शोभा प्राप्त करता है। जो देव-दम्पत्तियों द्वारा दर्शनीय है।
- आम्रकूट पर्वत के कुञ्ज वनवासियों की स्त्रियों द्वारा उपभुक्त हैं।
- मेघ के मार्ग में **पहली नदी रेवा (नर्मदा)** मिलती है जो विन्ध्य पर्वत की तलहटी में हाथी के शरीर पर बने चित्र के समान फैली है।
- नर्मदा का जल हाथियों के मदों से सुगन्धित तथा जामुन के कुञ्जों से अवरुद्ध है।
- सिद्ध जनों की स्त्रियाँ मेघ के कम्पन से भयभीत होकर अपने प्रेमियों का आलिङ्गन करेगी।
- रेवा को पार कर मेघ दशार्ण देश पहुँचता है जिसे विल्सन ने आधुनिक छत्तीसगढ़ माना है। यह एक प्राचीन जनपद है। इसकी राजधानी 'विदिशा' थी।
- दशार्ण को **'दशदुर्गों का प्रदेश'** कहा जाता है।
- विदिशा वेत्रवती नदी के तट पर स्थित है।
- वेत्रवती नदी की उपमा भ्रूभङ्गयुक्त नायिका से की गई है।
- आजकल भोपाल से 26 मील पर स्थित मालवा के 'भिलसा' नामक स्थान को ही विदिशा माना जाता है।
- विदिशा में मेघ 'नीचैः' नामक पर्वत पर ठहरता है। यह पर्वत वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त सुगन्धित पदार्थों से युक्त गुफाओं वाला है।
- मेघ का मार्ग उज्जयिनी जाते हुए कुछ टेढ़ा होगा परन्तु तब भी यक्ष उसे वहाँ जाने का निवेदन करता है।
- यक्ष का मानना है कि यदि उज्जयिनी की स्त्रियों की चञ्चल कटाक्षों के साथ मेघ ने क्रीड़ा नहीं किया तो वह ठगा गया।
- उज्जयिनी जाते हुए मेघ मार्ग में निर्विन्ध्या नदी से मिलता है जो पक्षियों की पंक्ति रूपी करधनी वाली है।
- निर्विन्ध्या अपनी भँवर रूपी नाभि दिखाती है और उसके द्वारा दिखाया गया विभ्रम ही प्रथम प्रणयवचन है।
- यक्ष कहता है निर्विन्ध्या को पार कर मेघ सिन्धु नदी के समीप पहुँचेगा जो मेघ के विरह में कृश हो गयी है और मेघ को वह उपाय करना चाहिए जिससे वह दुर्बलता त्याग दे।
- 'अवन्ती' में वृद्धजन वत्सराज उदयन की कथा कहा करते हैं।
- उज्जयिनी को **देदीप्यमान स्वर्ग का टुकड़ा** कहा गया है। उज्जयिनी को विशाला भी कहा जाता है।
- वायु को 'शिप्रा नदी' के चाटुकार प्रेमी के रूप में चित्रित किया गया है। इसी नदी के तट पर उज्जयिनी है।
- उज्जयिनी के बाजार को अत्यन्त वैभवशाली बताया गया है।
- उज्जयिनी में उदयन ने **महाराज 'प्रद्योत' की पुत्री वासवदत्ता** का अपहरण किया था।
- उज्जयिनी में प्रद्योत का स्वर्णमय ताल वृक्षों का वन था जिसे प्रद्योत के ही इन्द्र प्रदत्त **'नलगिरि' नामक हाथी** ने नष्ट कर दिया था।
- अलकापुरी के घोड़े पत्तों के समान श्याम वर्ण के हैं और वहाँ के योद्धागण रावण के तलवार से किये गये घावों के निशान को ही आभूषण मानते हैं।
- महाकाल के उद्यान गन्धवती नदी की वायु से कम्पित होते हैं।
- यक्ष महाकाल मंदिर पहुँचे मेघ को शाम के समय तक रुक कर शिव की सन्ध्या पूजन के समय नगाड़े का कार्य करने के लिए कहता है।
- मेघ के सायंकालीन जपाकुसुम के समान लाल रंग की कान्ति से ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसने भगवान् शिव की गजासुर के गीले चर्म को धारण करने की इच्छा पूरी कर दी।
- मेघ उज्जयिनी के महल की छतों पर रात्रि व्यतीत करता है।
- उज्जयिनी के पश्चात् मेघ के मार्ग में गम्भीरा नदी आती है।
- **ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः**। प्रसिद्ध सूक्ति गम्भीरा नदी के वर्णन में आती है।
- यक्ष जल को 'गम्भीरा' का वस्त्र, किनारों को नितम्ब तथा बेंत की शाखाओं को उसका हाथ बताता है।
- जङ्गल के गूलरों को पकाने वाली वायु देवगिरि के मार्ग में बहती है।
- **देवगिरि** में निवास करने वाले **स्वामी कार्तिकेय** हैं। जिनका वाहन मयूर है। इनको **स्कन्द भगवान्** भी कहा जाता है।

- महाराजरन्तिदेव का यशरूप **चर्मण्वती (चम्बल)** नदी है।
- चर्मण्वती नदी पार करके मेघ 'दशपुर' की स्त्रियों के उत्सुकता का विषय बनेगा।
- दशपुर से बढ़ते हुए मेघ ब्रह्मवर्त प्रदेश होता हुआ महाभारत की युद्धभूमि कुरुक्षेत्र पहुँचेगा।
- बलराम महाभारत के युद्ध से विमुख रहे। उनकी पत्नी रेवती के आँखों की उपमा सरस्वती नदी से की गयी है। लाङ्गली बलराम का नाम है।
- सरस्वती नदी के जल का सेवन करके अंदर से पवित्र मेघ वर्ण मात्र से श्याम रह जायेगा। बलराम ने भी इसका जलपान किया था।
- कुरुक्षेत्र के आगे कनखल पर्वत के समीप पार्वती जी का उपहास करती सी गङ्गा नदी बहती है।
- गङ्गा का नाम 'जह्नुकन्या' प्रयुक्त है।
- कनखल हरिद्वार का समीपवर्ती माना जाता है।
- कनखल में मेघ की छाया गङ्गा में पड़ने पर प्रयाग के अतिरिक्त वहाँ भी सङ्गम (गङ्गा + यमुना) प्रतीत होगा।
- हिमालय पर मेघ शिव जी के बैल द्वारा उछाले गये कीचड़ की तुल्य शोभा को प्राप्त करेगा।
- हिमालय पर मेघ 'शरभों' को ओलों की वृष्टि से नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।
- हिमालय के किसी शिलातल पर भगवान शिव के चरणों की सिद्ध जन पूजा करते हैं मेघ भी उनकी परिक्रमा करता है।
- हिमालय पर मेघ के मृदङ्ग जैसी आवाज से शिव का सङ्गीत पूर्ण हो जायेगा।
- हिमालय पर्वत पर क्रौञ्चरन्ध्र भगवान परशुराम के पराक्रम का प्रमाण है।
- इसी रन्ध्र से हंस मानसरोवर जाते हैं।
- क्रौञ्चरन्ध्र से गुजरता हुआ मेघ राजा बलि को बाँधने के लिए उठाये गये विष्णु के पैर की तरह प्रतीत होगा।
- क्रौञ्चरन्ध्र का दूसरा नाम हंसद्वार है।
- क्रौञ्चरन्ध्र पार करके मेघ हिमालय का अतिथि बनेगा।
- हिमालय पर भ्रमण करती हुई पार्वती जी के लिए मेघ सीढ़ी का कार्य करता है।
- कैलाश पर देवस्त्रियाँ कङ्कणों के अग्रभाग से मेघ को फौव्वारा बना डालेंगी।
- हिमालय पर चीड़ वृक्षों के तनों की रगड़ से लगी आग को मेघ बुझाता है।

उत्तरमेघ

- उत्तरमेघ के प्रथम श्लोक में अलकानगरी की तुलना मेघ के साथ की गयी है।
- मेघ की बिजली की तुलना अलकापुर की स्त्रियों से, इन्द्रधनुष की तुलना सुंदर चित्रों से, मेघ के गर्जन की तुलना अलका में बजाये जाने वाले मृदङ्गों से, जलधारण की मणिजटित फर्शों से तथा मेघ की ऊँचाई की तुलना गगनचुम्बी शिखरों से की गयी है।
- अलका में सदैव छः ऋतुएँ वर्तमान रहती हैं।
- अलका की स्त्रियाँ क्रीड़ा के लिए हाथों में कमल लिए रहती है, बालों में कुन्दपुष्प का तथा मुख पर लोध्रपुष्प का रज लगाये रहती हैं।
- वे जूड़ों में कुरबक का तथा कानों में सुन्दर शिरीष पुष्प लगाकर और माँग में कदम्ब पुष्प सजाती हैं।
- अलका में नित्य फूल खिलते हैं और रात्रियाँ सदैव चाँदनीयुक्त रहती हैं।
- अलका में यक्ष सदैव ही युवावस्था को प्राप्त रहते हैं वहाँ अन्य अवस्थाएँ नहीं हैं।
- कुबेर को रावण का भाई माना जाता है इन्हीं का पुष्पक विमान रावण के पास था।
- कल्पवृक्ष से रतिफल नामक मद्य प्राप्त होता है जिसका सेवन 'यक्षगण' मृदङ्ग आदि के ध्वनि के साथ करते हैं।
- आकाशगङ्गा (मन्दाकिनी) के जल से शीतल तथा किनारे पर मन्दार के वृक्षों से प्राप्त छाया में यक्ष कन्यायें स्वर्णिम बालुका में मणि छिपाने का खेल खेलती है।
- चन्द्रमा की किरणों से पिघलाई गयी झालरों में लटकी चन्द्रकान्त मणि स्त्रियों के सुरतजन्य थकावट को दूर करती है।
- अलका के बाह्य उद्यान का नाम **'वैभ्राज'** है।
- कामदेव भगवान शङ्कर के डर से अपने भौरों की डोरी वाले धनुष का प्रयोग नहीं करता। स्त्रियों के चितवन से काम चलाता है।
- अलका में अलंकरण की समस्त सामग्री एकमात्र कल्पवृक्ष प्रदान करता है।
- यक्ष का घर **कुबेर के घर से उत्तर दिशा में** स्थित है।
- यक्ष के घर में इन्द्रधनुष के सदृश रंग-बिरंगा फाटक लगा है।
- यक्ष के घर के समीप उसकी पत्नी द्वारा दत्तक पुत्र की तरह पाला गया पुष्पगुच्छ से युक्त मन्दारवृक्ष है।

- रावण की तलवार का नाम 'चन्द्रहास' है।
- यक्ष के घर में मरकतमणि की शिलाओं से निर्मित सीढ़ी वाली बावली है।
- यहाँ के हंस वर्षाकाल में भी मानसरोवर नहीं जाते।
- उस बावली के किनारे पर नीलम नामक मणियों से बने शिखरवाला क्रीड़ाशैल है। इस पर सुन्दर केले की बाड़ है।
- क्रीडाशैल पर रक्त अशोक और मौलसिरी (वकुल) नाम के दो वृक्ष हैं।
- क्रीडा शैल पर माधवीलता का कुंज है।
- अशोक यक्षिणी के 'बायें पैर' और बकुल 'मुख की मदिरा' के अभिलाषी हैं।
- दोनों वृक्षों के मध्य में मरकत मणि की वेदी है।
- शैल पर ही स्फटिक के पटरे वाली सोने की वासयष्टि (अड्डा) है जहाँ मोर सायंकाल में बैठता है।
- यह मयूर यक्षिणी की तालियों और कंकणों द्वारा नचाया गया है।
- यक्ष के द्वार के दोनों तरफ **शंख और पद्म का चित्र** बना है।
- 'मेघ' अलकापुरी में यक्ष के घर में बने क्रीड़ा शैल पर बैठता है और जुगनुओं की पंक्ति की सदृश मन्द प्रकाश यक्ष के घर में डालता है।
- यक्ष 'यक्षिणी' को युवतियों की रचना के विषय में ब्रह्मा की प्रथम कृति बताता है।
- यक्ष के घर पर पिंजड़े में **मैना** पाली गयी है।
- यक्ष मेघ से कहता है वह यक्षिणी को देवपूजा करते अथवा यक्ष का चित्र बनाते या मैना से बात करते देखेगा।
- यक्षिणी वीणा बजाते हुए गीत गाने का प्रयत्न करती है।
- यक्षिणी देहली के पुष्पों को भूमि पर रखकर विरह के दिनों की गणना करती है।
- यक्षिणी विरह के दिनों में भूमि पर ही सोती है।
- यक्ष मेघ से खिड़की पर बैठकर यक्षिणी को देखने के लिए कहता है।
- मेघ के पहुँचने पर यक्षिणी की बायीं आँख फड़कती है।
- मेघ अपने जल बिन्दुओं से शीतल बने वायु से यक्षिणी को जगाता है।
- यक्ष के शाप का अंत हरिबोधिनी या देवोत्थान एकादशी के दिन होता है।
- उसी दिन भगवान विष्णु अपनी शेष शय्या से उठेंगे।
- यक्ष मेघ को पहचान चिह्न के रूप में यक्षिणी के साथ घटित एक घटना को बताता है।
- अंतिम श्लोक में यक्ष मेघ के लिये यह कामना करता है कि उसका उसकी पत्नी 'बिजली' के साथ कभी वियोग न हो।
- मेघदूत पर 50 से अधिक टीकाएं लिखी जा चुकी हैं।

नीतिशतकम्

- **लेखक** – भर्तृहरि
- **विधा** – मुक्तककाव्य
- **कुलश्लोक** – 111
- **कुलपद्धतियाँ** – 11 (मङ्गलाचरण सहित)
  1. अज्ञपद्धति (मूर्खनिन्दापद्धति)
  2. विद्वत्पद्धति
  3. मानशौर्यपद्धति
  4. अर्थपद्धति
  5. दुर्जनपद्धति
  6. सुजनपद्धति
  7. परोपकारपद्धति
  8. धैर्यपद्धति
  9. दैवपद्धति
  10. कर्मपद्धति
- मुक्तक का लक्षण–**''पूर्वापरनिरपेक्षेणापि हि येन रसचर्वणा क्रियते तदेव मुक्तकम्''**
  इसप्रकार अर्थप्रकाशन के लिए एक दूसरे की अपेक्षा न रखने वाले स्वतन्त्र पद्य (श्लोक) मुक्तक कहे जाते हैं।
- नीतिशतक में वर्ण्य विषय को ग्यारह पद्धतियों में समाहित किया गया है।
- भर्तृहरि ने नीतिशतक में ब्रह्म की स्तुति के पश्चात् 'मूर्ख-निन्दा' से ग्रन्थ का आरम्भ किया है।
- नीतिशतक में भर्तृहरि की शैली प्रसादगुण से युक्त और मुहावरेदार है।
- नीतिशतक के मङ्गलाचरण में अनन्त, ज्ञानमय स्वानुभवमात्र से जानने योग्य, ज्योतिस्वरूप **ब्रह्म को नमस्कार** किया गया है।
- नीतिशतक का **मङ्गलाचरण नमस्कारात्मक** है।
- मङ्गलाचरण (**दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये**) में **अनुष्टुप्** छन्द प्रयुक्त है।
- विद्वानों के ईर्ष्याग्रस्त होने तथा राजाओं के राजमद से चूर होने के कारण और शेष लोगों के अज्ञानता के कारण भर्तृहरि का ज्ञान उनके शरीर में ही जीर्ण हो गया।
- अज्ञानी को प्रसन्न किया जा सकता है, विद्वान को आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, परन्तु अल्पज्ञानी को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकते।
- घड़ियाल के मुख से मणि निकाली जा सकती है, समुद्र पार किया जा सकता है, सर्प को पुष्प सदृश सिर पे धारण किया जा सकता है परन्तु दुराग्रही मूर्ख को नहीं समझाया जा सकता।

- बालू से तेल, मृगतृष्णा से जल, खरगोश के सिर पर सींग प्राप्त हो सकती है, परन्तु दुराग्रही मूर्ख को प्रसन्न नहीं किया जा सकता।
- विधाता ने मूर्खों के लिए एकमात्र 'मौन' को ही आभूषण बनाया है।
- पंडितों के सम्पर्क में आने पर अल्पज्ञ का दुराभिमान दूर हो जाता है।
- मनुष्य की घृणास्पद हड्डी को चबाता हुआ कुत्ता सामने खड़े देवराज से हड्डी छीने जाने का संदेह करता है।
- गङ्गा स्वर्ग से शिव के मस्तक को, शिव के सिर से हिमालय को, हिमालय से पृथ्वी को और पृथ्वी से समुद्र को प्राप्त हुई।
- इस प्रकार विवेकभ्रष्ट व्यक्ति का पतन सैकड़ों प्रकार से होता है।
- अग्नि जल से, सूर्यताप छाते से, हाथी अंकुश से, बैल व गधे दण्ड से नियन्त्रित किये जा सकते हैं।
- मूर्खता की कोई औषधि (उपाय) नहीं है।
- साहित्य, सङ्गीत एवं कला से विहीन व्यक्ति साक्षात् पशु के समान है।
- विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील, गुण और धर्म से विहीन व्यक्ति पृथ्वी के भार स्वरूप हैं और मनुष्य रूप में पशु हैं।
- मूर्खों के साथ इन्द्र के भवन में रहने की अपेक्षा वनचरों के साथ वन में रहना श्रेष्ठ है।
- सत्कवियों के अवमानना से राजा की मूर्खता प्रकट होती है।
- विद्यारूपीधन वाले विद्वान् की तुलना कभी राजा के साथ नहीं हो सकती।
- ब्रह्मा हंस के कमलवन में निवास के सुख को नष्ट कर सकता है, परन्तु उसके नीर-क्षीर विवेक को नष्ट नहीं कर सकता।
- 'वाणी (विद्या)' रूपी आभूषण कभी नष्ट नहीं होता और यही सर्वश्रेष्ठ आभूषण है।
- विद्या ही परदेश गमन पर सर्वश्रेष्ठ धन सिद्ध होती है। यह गुरुओं की भी 'गुरु' है।
- राजागण विद्या की पूजा करते हैं धन की नहीं।
- क्षमा के होने पर कवच की, क्रोध के रहते शत्रु की, बन्धुजनों के रहते अग्नि की, अच्छे मित्र के रहते औषधि की, विद्या के रहते धन की, लज्जा के रहते आभूषण की तथा कवित्व रहने पर राज्य की कोई आवश्यकता नहीं होती।
- बुद्धि की जड़ता को सत्संगति हरती है।
- सत्सङ्गति कीर्ति को सभी दिशाओं में फैलाती है।
- सत्सङ्गति मनुष्य का सब प्रकार से हित करती है।
- तेजहीन होने पर भी आत्मसम्मानी सिंह सूखी घास नहीं खाता।
- कुत्ता अपने स्वामी के सामने भोजन के लिए दीनता प्रकट करता है परन्तु गजराज सैकड़ों अनुनय पर खाता है।
- उसका जन्म धन्य है जिसके जन्म से वंश का अभ्युदय हो।
- आयु निश्चय ही तेजस्विता का हेतु नहीं है।
- 'धन' के समक्ष सभी गुण तिनके के समान हो जाते हैं।
- धनवान् ही सभी गुणों वाला माना जाता है क्योंकि सभी गुण धन में ही शोभा पाते हैं।
- धन की तीन गतियाँ मानी गयी हैं – (i) दान (ii) भोग, और (iii) नाश। जो न दान देता है ओर न ही उपभोग करता है उसके धन का नाश होता है।
- वेश्या की भाँति 'राजनीति' नाना रूपों वाली है।
- राजा को पृथ्वी रूपी गाय को दुहने के लिए प्रजारूपी बछड़े का पालन करना चाहिए। तभी पृथ्वी कल्पतरु की भाँति फलती है।
- दुर्जन व्यक्ति 'विद्या' से युक्त होने पर भी भयंकर होता है।
- 'अपकीर्ति' के रहते मृत्यु की आवश्यकता नहीं होती।
- सेवा धर्म परम कठिन है और यह योगियों के लिए भी दुर्बोध है।
- सज्जनों की मैत्री दिन के उत्तरार्द्ध की तरह और दुर्जनों की पूर्वार्द्ध की तरह होती है।
- शिकारी मृग का, मछुआरा मछली का, दुर्जन सत्पुरुषों के अकारण शत्रु होते हैं।
- विपत्ति में धैर्य, समृद्धि में क्षमा, युद्ध में पराक्रम, सभा में वाक्पटुता तथा कीर्ति और वेदशास्त्र में रुचि आदि गुण महापुरुषों में स्वाभाविक होते हैं।
- सज्जनों के लिए तलवार की धार पर चलने जैसे कठिन सेवा व्रत स्वाभाविक होते हैं।
- अच्छे आचरण वाला पुत्र, पति का हित चाहने वाली पत्नी, विपत्ति तथा सुख में समान व्यवहार करने वाला मित्र पुण्यवानों को प्राप्त होते है।
- सच्चा मित्र दूसरे मित्र को पाप कर्म से दूर करता है हितकारी कार्यों में लगाता है तथा छिपाने योग्य बातों को छिपाता है।
- मनुष्य की तीन कोटियाँ हैं – नीच, मध्यम तथा उत्तम।
- नीच विघ्न के भय से कार्य आरम्भ नहीं करते, मध्यम आरम्भ करते हैं परन्तु विघ्न आने पर छोड़ देते हैं परन्तु उत्तम व्यक्ति विघ्नों के आने पर भी कार्य को पूरा करते हैं।
- मनस्वी कार्यार्थी सुख-दुःख की परवाह नहीं करते।
- 'धैर्यवान् पुरुष' न्यायोचित मार्ग से एक कदम भी विचलित नहीं होते।
- धैर्यशाली पुरुष इस सम्पूर्ण त्रिलोक को जीत लेता है।
- सभी आभूषणों का कारण शील (सदाचार) है और यही सर्वोत्कृष्ट आभूषण है।
- भाग्य ही एकमात्र आश्रय है, पौरुष को धिक्कार है।
- 'भाग्य' ही सबसे बलवान है।
- अत्यंत शीघ्रता में किये गये कार्यों का परिणाम मृत्युपर्यन्त शूल की भाँति हृदय को जलाने वाला होता है।
- पहले की गई तपस्या से संचित भाग्य ही निश्चित ही यथोचित समय पर फल देते हैं। रूप, कुल, शील, विद्या सेवा आदि नहीं।

ग. पात्रों का चरित्र-चित्रण

राजा दुष्यन्त

परिचयः –

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का धीरोदात्त नायक
  महासत्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
  स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥
  (दशरूपक – द्वितीयप्रकाश)
  अर्थात् वह (राजा दुष्यन्त) स्थिर स्वभाववाला, क्षमाशील, अतिगम्भीर, महाबली, अहङ्कारशून्य, दृढनिश्चयी, स्वयं प्रशंसा न करने वाला, मधुरभाषी, एवं ललित कलाओं का मर्मज्ञ है।
- शकुन्तला का प्रेमी/पति।
- पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) एक क्षत्रिय राजा (राजर्षि)।
- हस्तिनापुर के सम्राट्।
- विदूषक (माधव्य) के मित्र।
- हंसपदिका और वसुमती नामक रानियों के आदर्शपति।
- सर्वदमन (भरत) के पिता।

चारित्रिक विशेषतायें

- आदर्श प्रेमी।
- सुन्दर एवं गम्भीर आकृति।
- आदर्श राजा/उत्तम शासक
- विनयशील नैतिक एवं धर्मपरायण।
- आखेट (मृगया) प्रेमी।
- कलाप्रेमी/कुशलचित्रकार/संगीतप्रेमी
- आकर्षक व्यक्तित्व एवं सौन्दर्यशाली।
- वीरयोद्धा/पराक्रमी/शूरवीर।
- वात्सल्यप्रेमी एवं गुणग्राही।
- मधुरभाषी एवं उदार।
- सहृदय तथा संयमी।
- आदर्श पिता।
- मातृभक्त तथा आज्ञाकारीपुत्र।
- चरित्रवान् नायक।
- लोकोत्तर आदर्शचरित्र

दुष्यन्त के महत्वपूर्ण गुण एवं कार्य

- दानवों के वधार्थ इन्द्र उसे स्वर्ग में बुलाता है। **(अङ्क-6)**
- उसके शारीरिक गठन एवं सौन्दर्य से सभी प्रभावित होते हैं, वह सुन्दर एवं युवा है।
- धनुष की टंकार से ही यज्ञ में विघ्न करने वाले राक्षसों को भगा देता है।
- प्रियंवदा उसके मधुरभाषण की प्रशंसा करती है। **(अङ्क-1)**
- जब तक यह निश्चित नहीं हो जाता है कि शकुन्तला क्षत्रिय कन्या है, तब तक वह अपने विवाह का विचार प्रकट नहीं करता है।
- शकुन्तला की प्रेमावस्था देखकर वह उसके पाणिग्रहण और रक्षा की स्वीकृति देता है। **(अङ्क-3)**
- वह रुग्ण शकुन्तला को धूप में जाने से रोकता है, और उसकी सेवा-शुश्रूषा करता है।
- माता की आज्ञा पाते ही ऋषियों के यज्ञरक्षा रूपी कार्य की विवशता के कारण मित्र विदूषक को तत्काल माता के पास भेजता है। **(अङ्क-2)**
- रानी हंसपदिका के संगीत को सुनकर मन्त्रमुग्ध हो जाता है। **(अङ्क-5)**
- शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है। **(अङ्क-6)**
- ऋषियों के प्रति बहुत आदरभाव है, उनके कहने से वह मृग पर बाण नही चलाता है।
- विनीत वेष में आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
- यज्ञरक्षा हेतु ऋषियों की प्रार्थना सादर स्वीकार करता है।
- शार्ङ्गरव के आक्षेपों का उत्तर शान्तिपूर्वक देता है। **(अङ्क-5)**
- मारीच ऋषि के दर्शनार्थ उनके आश्रम जाता है। **(अङ्क-7)**
- वह धनमित्र नामक व्यापारी की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है। उसके गर्भस्थ पुत्र को उसका धन दिलाता है। **(अङ्क-6)**
- प्रजा की रक्षा को परमधर्म समझता है।
- दुःखियों का दुःख दूर करने को सदा उद्यत रहता है।

➤ परस्त्री की ओर देखना पाप समझता है – **''अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्''** **(अङ्क-5)**
➤ संतानहीनता का उसे बहुत दुःख है।
➤ प्रजा के लिए घोषणा करता है कि बन्धुहीनों का वह बन्धु है। **''येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना''**
➤ शाप के कारण शकुन्तला को न पहचानने पर वह अपने पूर्णसंयम का परिचय देता है। **(अङ्क-5)**
➤ सर्वदमन (भरत) को देखकर वात्सल्य का भाव जाग उठता है। **(अङ्क-7)**
➤ वह शिकार खेलता हुआ कण्व ऋषि के आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
➤ राजा, मृगया को व्यसन नही अपितु शारीरिक स्वास्थ्य एवं मनोविनोद का साधन मानता है, इससे शरीर हल्का फुल्का एवं फुर्तीला रहता है। **(अङ्क-2)**
➤ राजाद्वारा निर्मित शकुन्तलाके चित्रको देखकर विदूषक और सानुमती मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। **(अङ्क 6)**
➤ राजा दुष्यन्त के सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व से सखियों सहित शकुन्तला प्रभावित होती है।
➤ दाक्षायणी (अदिति) भी दुष्यन्त के व्यक्तित्व की प्रशंसा करती हैं। **(अङ्क-7)**
➤ दुष्यन्त की वीरता से प्रभावित होकर इन्द्र अपना आधा इन्द्रासन छोड़ देते हैं, तथा उन्हें मन्दारमाला पहनाते हैं।
➤ इस प्रकार राजादुष्यन्त कर्त्तव्यपरायण, प्रजाप्रेमी, पराक्रमी, विनीत और अविकत्थन है।

शकुन्तला

परिचय –

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका।
➤ विश्वामित्र और अप्सरा मेनका की पुत्री।
➤ महर्षिकण्व की धर्मपुत्री, (पालिता पुत्री)।
➤ नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से मुग्धा नायिका।
➤ **''शकुन्तैः परिवारिता परिपालिता वा।''** पक्षियों से आवृत या कुछ समय तक पक्षियों द्वारा परिपालित होने के कारण 'शकुन्तला' यह सार्थक नाम पड़ा।
➤ मालिनी नदी के तट पर स्थित कण्वाश्रम में निवास।
➤ राजा द्वारा परित्यक्ता होने के बाद मारीच आश्रम में निवास।
➤ राजादुष्यन्त की प्रेमिका/तृतीयपत्नी।
➤ सर्वदमन (भरत) की माँ।
➤ अनसूया एवं प्रियंवदा की प्रियसखी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. अपूर्वसुन्दरी	7. स्वाभिमानिनी
2. प्रकृतिप्रिया	8. कार्यकुशला
3. आदर्शप्रेमिका	9. आदर्शपुत्री
4. आश्रमप्रेमी	10. मधुरभाषिणी
5. पतिव्रता पत्नी/आदर्शनारी	11. सच्ची सखी
6. सुशीला एवं लज्जावती	12. अन्तर्मन की सहजता

शकुन्तला के चारित्रिक गुण एवं कार्य

➤ शकुन्तला नैसर्गिक सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है –
- **इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः......** **(1-18)**
- **इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी....** **(1-17)**
- **सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्....** **(1-20)**
- **अधरः किसलयरागः......** **(1-21)**
- **मानुषीषु कथं वा स्यात्......** **(1-26)**
- **अनाघ्रातं पुष्पं.........** **(2-10)**
- **चित्रे निवेश्य......** **(2-9)**

➤ शकुन्तला का पालन पोषण कण्व आश्रम में हुआ है, अतः उसमें स्वाभाविक सरलता, सुशीलता एवं मुग्धता है।
➤ राजा दुष्यन्त को देखते ही उसके हृदय में कामभाव जागृत होता है, परन्तु वह उसे व्यक्त नहीं करती – **किं नु खलु इमं जनं प्रेक्ष्य....। (अङ्क-1)**
➤ जब राजा दुष्यन्त उसकी प्रशंसा करता है, तो वह लज्जा से सिर नीचा कर लेती है। **'शकुन्तला अधोमुखी तिष्ठति'**। (अङ्क-1)
➤ प्रकृति से घनिष्ट प्रेम है। वह वृक्षों, वनस्पतियों और मृगादि से सहोदरों जैसा स्नेह करती है – **''अस्ति मे सोदरस्नेहोऽयेतेषु'' (अङ्क-1)**
➤ आश्रम के वृक्षों को जल देकर ही वह जलपान करती है, प्रियमण्डना होने पर भी वृक्षों के फूल, पत्ते नहीं तोड़ती – **''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्.....।'' (अङ्क-4/9)**
➤ वह पतिव्रता है, विवाहोपरान्त पति के चिन्तन में ही व्याकुल और अन्यमनस्क है – **विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा।**
➤ आश्रम से विदाई के समय वृक्षों और मृगादि से भी विदा लेती है। वनज्योत्स्ना से गले मिलती है, आश्रमीय मृगों को स्नेह करती है। **''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।''**

(अङ्क-4/9)।

➤ राम द्वारा परित्यक्त सीता यथा वाल्मीकि आश्रम में निवास करती हैं, वैसे ही राजा दुष्यन्त द्वारा परित्याग कर दिये जाने पर मारीच ऋषि के आश्रम में वह तपस्विनी के समान जीवन यापन करती रही, वह अपने आपको ही दोष देती है, राजा को नही।

➤ अपने पूज्यजनों का विशेष आदर करती है, राजा से अपने पैर नही दबवाती है। **(अङ्क-3)**

➤ शार्ङ्गरव के डॉटने पर उसे प्रत्युत्तर नही देती है। **(अङ्क-5)**

➤ ऋषि कण्व एवं आश्रमीय ऋषियों के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा है, सखियों के प्रति उसका **निश्छल प्रेम है।**

➤ राजा के प्रति आसक्ति के कारण उसकी मनःस्थिति उद्विग्न हो जाती है, परन्तु अपनी मुँहबोली-सखियों से भी बताने में उसे **संकोच** होता है।

➤ वह अपनी सखियों के कहने पर राजा को एक प्रेमपत्र लिखती है – **तव न जाने हृदयं**......... **(अङ्क-3/13)**

➤ आश्रम के बाहर जाने पर कण्व शकुन्तला के ऊपर ही **अतिथिसत्कार का भार** सौंपते हैं।

➤ आश्रम से उसका विशेष लगाव है, आश्रमीय चोटिल मृग को वह इङ्गुदी का तेल लगाती है, उसे श्यामॉक चावल की मुट्ठियाँ भर-भर कर खिलाती है।

यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्.......**(अङ्क 4-14)**

➤ शकुन्तला गर्भमन्थरा मृगवधू के सुखप्रसव का समाचार भेजने के लिए पिता कण्व से कहती है। **(अङ्क-4)।**

महर्षि कण्व

परिचय –

➤ आश्रम के कुलपति।

➤ शार्ङ्गरव, शारद्वत, नारद, हारीत, वैखानस आदि के गुरु।

➤ शकुन्तला के पालक पिता।

➤ 'काश्यप' नाम से नाटक में वर्णित।

➤ श्रौतविधि से अग्निहोत्र करने वाले एक ऋषि/साधक/तपस्वी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. त्रिकालज्ञ नैष्ठिक ब्रह्मचारी।

2. तपस्वी एवं साधक

3. अत्यन्त दयालु, स्नेही एवं धार्मिक।

4. लौकिकव्यवहार में निपुण/लोकाचारज्ञाता/लौकिकज्ञ।

5. आध्यात्मिक प्रभावशाली व्यक्तित्व/सिद्धपुरुष।

6. वात्सल्यपूर्ण आदर्श पिता।

7. भविष्यवक्ता।

8. सहृदयता।

महर्षिकण्व के चारित्रिक गुण एवं कार्य

➤ कण्व का तपोबल असाधारण है, वे वर्तमान, भूत और भविष्य को जानने वाले हैं। **''तपःप्रभावात् प्रत्यक्षं सर्वमेव तत्रभवतः'' (अङ्क-7)**

➤ कण्व को ज्ञात है कि शकुन्तला पर विपत्ति आएगी, अतः उसके निवारणार्थ वे सोमतीर्थ जाते हैं। **''दैवमस्या प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः'' (अङ्क-1)**

➤ आकाशवाणी द्वारा कण्व को ज्ञात होता है कि दुष्यन्त का तेज (वीर्य) शकुन्तला के गर्भ में पल रहा है, वे इन दोनों के इस गान्धर्वविवाह से सहर्ष सहमत होते हैं। **''दुष्यन्तेनाहितं तेजो......'' (अङ्क-4/4)**

➤ उनके तपःप्रभाव के कारण शकुन्तला की विदाई के समय वृक्ष आभूषण और रेशमी वस्त्र आदि देते हैं – **''क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा....।'' (अङ्क-4/5)**

➤ शकुन्तला के प्रति उनका प्रेम निःस्वार्थ है, उसकी विदाई के समय वे सगे माता-पिता के समान व्याकुल होते हैं – **''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं......।'' (अङ्क 4/6)** **''शममेष्यति मम शोकः......।'' (अङ्क 4-21)**

➤ ऋषि होते हुए भी लौकिकव्यवहार को अच्छी तरह जानते हैं। **''वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्।''** (अङ्क-4)

➤ ससुराल जाती हुई पुत्री शकुन्तला को सुन्दर उपदेश देते हैं– **''शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने।'' (अङ्क 4-18)**

➤ कण्व द्वारा शार्ङ्गरव के माध्यम से राजा दुष्यन्त को दिया गया सन्देश उनके लौकिकज्ञान की पराकाष्ठा को सूचित करता है – **''अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्।'' (अङ्क 4-17)**

➤ वे शकुन्तला के साथ अनसूया और प्रियंवदा को हस्तिनापुर नही भेजते, क्योंकि उन दोनों का भी विवाह करना है। विवाहिता के साथ कुमारी कन्याओं को भेजना अनुचित समझते हैं।

➢ कण्व शकुन्तला से कहते हैं कि राजा दुष्यन्त के पास पहुँचने पर वहाँ के कार्यों में व्यस्त होकर तुम मेरे विरह दुःख को भूल जाओगी – **''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि''** **(अङ्क 4-19)**

➢ वे कन्या को विदा करके तनावमुक्त जीवन का अनुभव करते हैं – **''अर्थो हि कन्या परकीय एव।'' (अङ्क 4-22)**

➢ कण्व अपने धर्म, तपस्या, यज्ञ, आदि के अनुष्ठान में लगे रहते हैं, और विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रा करते हैं।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में ही कण्व का प्रवेश होता है, किन्तु सम्पूर्ण नाटक में उनका प्रभाव परिलक्षित होता है।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के कुल 22 श्लोकों में से 14 प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व (काश्यप) के द्वारा कहे गए हैं –

- यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं.............. **(4-6)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव...... **(4-7)**
- अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः। **(4-8)**
- पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्। **(4-9)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- अनुमतगमना शकुन्तला। **(4-10)**
- सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे। **(4-13)**
- यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्। **(4-14)**
- उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धवृत्तिम्। **(4-15)**
- अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्। **(4-17)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं....। **(4-18)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे। **(4-19)**
- भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी। **(4-20)**
- शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से.....। **(4-21)**
- अर्थो हि कन्या परकीय एव। **(4-22)**

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के **प्रसिद्ध चारों श्लोक महर्षि कण्व** (काश्यप) द्वारा कहे गये हैं।

➢ अनसूया, प्रियंवदा एवं शकुन्तला तीनों कण्व को **तात** (पिता) कहकर पुकारती हैं।

अनसूया एवं प्रियंवदा

परिचय –

➢ अनसूया और प्रियंवदा दोनों शकुन्तला की प्रिय सखियाँ।

➢ कण्वाश्रम में शकुन्तला के साथ निवास।

दोनों सखियों की चारित्रिक विशेषतायें

- सुन्दररूप एवं समान आयु।
- तपोवन-निवासिनी।
- सामान्य व्यवहारज्ञान से परिचित।
- कामशास्त्र से परिचित।
- आदर्श–सखियाँ।
- शकुन्तला की हितैषिणी।
- सौन्दर्यशालिनी।
- लोकव्यवहारज्ञाता।
- अतिथिसत्कार-निपुणा।
- परिहास/विनोदप्रिया।
- तर्कशीला।
- प्रकृतिप्रेमिका।
- आश्रमप्रिया।
- पारस्परिक स्नेह एवं आत्मीयता।

चारित्रिक गुण एवं कार्य

➢ दोनों सखियाँ शकुन्तला की समवयस्का हैं, और सौन्दर्य में लगभग उसके समान ही हैं – **''अहो समवयोरूपरमणीयं भवतीनां सौहार्दम्।''** (अङ्क-1)

➢ राजा दुष्यन्त तीनों सखियों के परस्पर सौहार्दभाव, समान अवस्था एवं सौन्दर्य की प्रशंसा करता है – **''अहो मधुरमासां दर्शनम्''** (अङ्क-1)

➢ दोनों सखियाँ शकुन्तला के व्यक्तित्व की प्रतिच्छाया सी प्रतीत होती हैं, इनको पृथक् कर शकुन्तला के अस्तित्व एवं व्यक्तित्व की कल्पना कठिन है।

➢ यदि शकुन्तला आश्रमाकाश की चन्द्रलेखा है, तो सखीद्वय तदनुगामी विशाखानक्षत्र **''किमत्र चित्रं यदि विशाखे शशाङ्करेखामनुवर्तेते।''** (अङ्क-3)

➢ प्रथम अङ्क से लेकर चतुर्थ अङ्क तक शकुन्तला के साथ दोनों सखियाँ उपस्थित रहती हैं।

➢ अनसूया एवं प्रियंवदा – ये दोनों पात्र महाकविकालिदास की नाट्यप्रतिभा की निजी कल्पना से प्रादुर्भूत हैं।

➢ सौन्दर्य में शकुन्तला सबसे अधिक सुन्दर है, परन्तु आयु में अनसूया सबसे बड़ी ज्ञात होती है।

➢ सखियों में परस्पर घनिष्ट प्रेम है, तीनों ही एक दूसरे को सदा सुखी देखना चाहती हैं।

- दोनों सखियों का नाम सार्थक है। अनसूया **(न असूया इति अनसूया)** सभी के प्रति ईर्ष्या द्वेषादि से सर्वथा रहित है, तथा प्रियंवदा **(प्रियं वदति इति प्रियंवदा)** सदा प्रिय मधुर बोलने वाली है।
- सुख दुःख–दोनों में सदा शकुन्तला के साथ रहती हैं, और सर्वदा उसका हितचिन्तन करती हैं।
- तृतीय अङ्क में शकुन्तला को अस्वस्थ देखकर राजा दुष्यन्त से मिलाने का प्रयास करती हैं।
- दोनों सखियाँ कर्मठ, कार्यदक्ष और बुद्धिमती हैं, दोनों आश्रम के वृक्षों को उत्साहपूर्वक सींचती हैं।
- चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के समय दोनों उसका शृङ्गार करती हैं।
- तृतीय अङ्क में अपनी बुद्धिमत्ता से राजा दुष्यन्त से यह वचन लेती हैं कि वह शकुन्तला को सदा सुखी रखेगा – **''परिग्रहबहुत्वेऽपि......सखी च युवयोरियम्।''** (अङ्क 3/17)
- दोनों सखियाँ शिष्ट, विनीत, मधुरभाषिणी और वाक्चतुर हैं, प्रथम अङ्क में राजा से मिलने पर अनसूया उनका परिचय पूछती है – **''कतम आर्येण राजर्षिवंशोऽलंक्रियते।''** (अङ्क-1)
- शकुन्तला के प्रति दुर्वासा के भीषण शाप को सुनकर दोनों का ह्रदय विदीर्ण हो जाता है, शापनिवृत्ति के लिए पूरा प्रयास करती हैं, तथा अपनी प्रियसखी शकुन्तला को कुछ भी नही बताती हैं।
- दोनों सखियाँ शकुन्तला से निःस्वार्थ प्रेम करती हैं, उसे सब प्रकार से सुखी और प्रसन्न रखना चाहती हैं। शकुन्तला जब कामज्वर से ग्रस्त होती है, तब कमलनाल, कमलपत्र और चन्दनादि के लेप से उसका उपचार करतीं हैं।
- दोनों सखियों के लिए शकुन्तला का संयोग जितना मधुर है, उतना ही वियोग दुःखदायी।
- राजा दुष्यन्त उनके आतिथ्यसत्कार, लोकव्यवहार, एवं मधुरभाषण से प्रसन्न होता है – **''भवतीनां सुनृतयैव गिरा कृतमातिथ्यम्।''** (अङ्क-1)
- अनसूया स्वभाव से वाग्विदग्ध, व्यवहारकुशल एवं प्रौढ है, राजा दुष्यन्त जब आश्रम में प्रवेश करता है, तो अनसूया ही उससे वार्तालाप प्रारम्भ करती है – **''आर्य, न खलु किमप्यत्याहितम् इयं नौ प्रियसखी मधुकरेणाभिभूयमाना कातरीभूता।''** (अङ्क-1)
- अनसूया राजा दुष्यन्त से उनका परिचय पूछती है, और अपनी सखी शकुन्तला के जन्म एवं माता पिता के विषय में राजा से बताती है। – **''श्रृणोत्वार्य अस्ति कोऽपि कौशिक इति गोत्रनामधेयो महाप्रभावो राजर्षिः।''** (अङ्क-1)
- प्रियंवदा, अनसूया की अपेक्षा अधिक विनोदप्रिया एवं चपल है। शकुन्तला जब अनसूया से अपने वल्कलों को ढीला करने को कहती है तो प्रियंवदा परिहास करती है कि मुझे उलाहना न देकर पयोधरविस्तारी अपने यौवन को उलाहना दो – **''अत्र पयोधरविस्तारयितृ आत्मनो यौवनमुपालभस्व।''** (अङ्क-1)
- शकुन्तला द्वारा वनज्योत्सना और आम्रवृक्ष की युगलजोड़ी को स्नेहदृष्टि से देखने पर प्रियंवदा मजाक करती है कि तुम भी इसी तरह अपने अनुकूल वर को प्राप्त करने की सोच रही हो – **''यथा वनज्योत्स्नाऽनुरूपेण पादपेन सङ्गता..... अहमप्यात्मनोऽनुरूपं वरं लभेयेति।''** (अङ्क-1)
- अनसूया में प्रियंवदा की अपेक्षा धैर्य तथा गाम्भीर्य अधिक है। दुर्वासा के शाप को सुनकर जब प्रियंवदा सहसा घबड़ा जाती है – **''हा धिक्, हा धिक् अप्रियमेव संवृत्तम्''** किन्तु अनसूया उसे धैर्यपूर्वक दुर्वासा को मनाने के लिए कहती है – **''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्।''** (अङ्क-4)
- प्रियंवदा चपलतावश इस दारुण शापवृत्तान्त को शकुन्तला से कहीं बता न दें इसके लिए अनसूया उसको मना करती है – **''प्रियंवदे! द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु''**।
- प्रियंवदा के मन में यह शंका उठती है कि पिता कण्व गान्धर्वविवाह के वृत्तान्त को सुनकर न जाने क्या सोचेगें – **''तात इदानीमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यत इति''** (अङ्क-4) तो अनसूया अपने विवेक बुद्धि का परिचय देती हुई कहती है कि – **''यथाऽहं पश्यामि तथा तस्यानुमतं भवेत्। गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया इत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।''**
- अनसूया शकुन्तला के भविष्य के प्रति चिन्तित रहती है, वह किसी भी विषय पर सम्यक् उहापोह और विचार-विमर्श करती है। वह चिन्तित है कि राजा दुष्यन्त अपने नगर हस्तिनापुर पहुँचने के बाद शकुन्तला के साथ किये गये गान्धर्व विवाह को स्मरण करेगा या नहीं – **''अद्य स राजर्षिः इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।''** (अङ्क-4)
- प्रियंवदा निःशङ्क और निश्चिन्त स्वभाव वाली है। उसे पूरा विश्वास है कि सुन्दर आकृति वाला दुष्यन्त गुणरहित नही हो सकता – **''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति''** (अङ्क-4)

- अनसूया भविष्य के प्रति सचेष्ट और व्यावहारिक बुद्धिवाली है। तृतीय अङ्क में वह राजा से यह वचन लेती है कि अनेक रानियों के बीच शकुन्तला की उपेक्षा न करें। **''वयस्य बहुवल्लभाः राजानः श्रूयन्ते''।** राजा उनकी प्रियसखी शकुन्तला को गौरवपूर्ण स्थान देने का आश्वासन देता है।
- शकुन्तला की विदाई के अवसर पर उसे सजाने के लिए अनसूया आम की डाल पर नारियल के डिब्बे में केसरमालिका को रखे रहती है।
- अनसूया, प्रियंवदा की अपेक्षा तात कण्व के अधिक निकट है, वह पिता के स्वभाव तथा विचारों को ठीक से जानती है, तात कण्व भी शकुन्तला की विदाई के अवसर पर अनसूया को ही बारम्बार सम्बोधित करते हैं।
- प्रियंवदा प्रणयव्यापार के स्वरूप को अच्छी प्रकार जानती है। शकुन्तला और दुष्यन्त के प्रेम में वह सूत्रधार का कार्य करती है। तृतीय अङ्क में शकुन्तला की अस्वस्थता के मूल कारण को प्रियंवदा ठीक से समझती है और उसके उपाय के रूप में शकुन्तला को मदनलेख (प्रेमपत्र) लिखने की प्रेरणा भी प्रियंवदा देती है, और उस प्रेमपत्र को फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा तक पहुँचाने का कार्य भी उसी के द्वारा सम्पन्न होता है।
- अनसूया अतिथि सत्कार करने में निपुण है, राजा दुष्यन्त के आश्रम आने पर वह शकुन्तला से कहती है – **''हला शकुन्तले, गच्छोटजम्। फलमिश्रमर्घमुपहर।''**
- श्राप को सुनकर प्रियंवदा दुर्वासा के समीप जाकर शकुन्तला की मङ्गलकामना हेतु क्षमायाचना करती है। (अङ्क-4)
- अनसूया विचारशील और मितभाषिणी है, वह हँसी, मजाक की बातों में विशेष भाग नहीं लेती। वह सशङ्कवृत्ति की है, सहसा किसी बात पर विश्वास नहीं करती। जबकि प्रियंवदा शीघ्र विश्वास करने वाली, परिहासप्रिया एवं वाक्पटु है।
- अनसूया भविष्य के सुख की विशेष चिन्ता करती है, प्रियंवदा वर्तमान को विशेष महत्त्व देती है।
- अनसूया अधिक व्यवहारिक, धीर और परिपक्व बुद्धि की है जबकि प्रियंवदा भावुक एवं चञ्चल है।

विदूषक (माधव्य)

परिचय –

- राजा दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र।
- हास्यरस का एक पात्र।
- 'माधव्य' नामक एक ब्राह्मण।

चारित्रिक विशेषतायें

- भोजनपटु।
- डरपोक एवं अकर्मण्य।
- राजा का परमप्रिय मित्र एवं परामर्शदाता।
- भीरु एवं सरल स्वभाव।

विदूषक का लक्षण

कुसुमवसन्ताद्यभिधः कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः।
हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः।

विदूषक स्वामिभक्त, मनोविनोद में निपुण, कुपित नायिकाओं को मनाने वाला, एवं सच्चरित्र होता है। वह अपने ऊँटपटाँग कार्यों, विकृत अङ्गों तथा वेषभूषादि के द्वारा हास्य का वातावरण प्रस्तुत करता है। वह नायक का विश्वासपात्र तथा उसके प्रणय सम्बन्धी क्रियाकलापों में सहायता पहुँचाता है।

विदूषक (माधव्य) के गुण एवं कार्य

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विदूषक (माढव्य) का सर्वप्रथम दर्शन द्वितीय अङ्क में होता है।
- विदूषक माधव्य भोजनप्रिय एवं पेटू है। राजा दुष्यन्त शकुन्तला के प्रणयव्यापार में उनसे सहायता करने के लिए कहता है तो वह **''किं मोदकखण्डिकायाम्''** कहकर अपनी पेटपूजा पटुता का परिचय देता है।
- इसी प्रकार षष्ठ अङ्क में राजादुष्यन्त शकुन्तला के वियोग में अँगूठी से उपालम्भ देते हैं किन्तु विदूषक को वहाँ भी बुभुक्षा पीड़ित करती है – **''कथं बुभुक्षया खादितव्योऽस्मि''** (अङ्क-6)
- वह स्वभाव से अत्यन्त भीरु एवं डरपोक है। शकुन्तला के दर्शन हेतु वह भी उत्सुक था, पर जब वह राक्षसों का वृत्तान्त सुनता है, तब डर जाता है। (अङ्क-2)
- राजा के मृगयाव्यसन के कारण उसको विश्राम का तनिक भी अवसर प्राप्त नहीं होता है, इससे वह अत्यन्त दुःखी है– **'एतस्य मृगयाशीलस्य राज्ञो वयस्यभावेन निर्विण्णोऽस्मि।''** (अङ्क-2)
- विदूषक अपने प्रत्येक क्रियाकलाप एवं भावभङ्गिमा से सभी को हँसाता है। जब राजा दुष्यन्त के सामने एक ही साथ ऋषियों की यज्ञरक्षा तथा माता की आज्ञा से राजधानी लौटने के दो कार्य उपस्थित होते हैं, तो विदूषक राजा से कहता है कि – **''त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ।''** (अङ्क-2)
- विदूषक यत्र तत्र अपनी मन्दबुद्धिता का भी परिचय देता है,

परन्तु वैसे बहुत चतुर है। षष्ठ अङ्क में राजा के द्वारा आम्रमञ्जरी को मदनबाण कहने पर वह काष्ठदण्ड लेकर मारने दौड़ता है। उसकी मूर्खता पर खिन्न राजा भी हँस पड़ता है।

- विदूषक सरलहृदय का व्यक्ति है, राजा को सन्देह हुआ कि यह राजधानी में जाकर कहीं हमारे प्रणयप्रसङ्ग की चर्चा हमारी रानियों से न कर दे, अतः राजा दुष्यन्त ने उससे कहा कि वे सब मजाक की बातें हैं।

''परिहासविजल्पितं सखे न परमार्थेन गृह्यतां वचः'' (अङ्क-2)

- विदूषक राजा की इस बात को सच मान लेता है और रानियों से इसकी कोई चर्चा नहीं करता है।
- रानी वसुमती के आने पर वह शकुन्तला का चित्र लेकर भाग जाता है, और राजा को वसुमती के क्रोध से बचाता है।
- पञ्चम अङ्क के प्रारम्भ में रूठी रानी हंसपदिका को मनाने के लिए राजा विदूषक को ही भेजता है।
- षष्ठ अङ्क में इन्द्र का सारथि मातलि विदूषक को पीटता है जिससे राजा का क्रोध प्रस्फुटित होता है। तभी राजा दानवों के वधार्थ स्वर्ग को जाता है।
- वह राजा को समय-समय पर सान्त्वना देता है, उसका मनोरञ्जन करता है, और उचित परामर्श भी देता है। (अङ्क-6)

गौतमी

- **परिचय** – ऋषि कण्व की धर्मभगिनी
- कण्वाश्रम की सर्वाधिक वृद्धा तपस्विनी/वरिष्ठ महिला
- आश्रम की व्यवस्थापिका/अध्यक्षा

चारित्रिक विशेषताएँ –

- सम्मानित महिला
- वरिष्ठ तपस्विनी
- बुद्धिमती
- व्यवहारकुशल एवं लोकव्यवहार की ज्ञाता
- अभिभाविका
- अतीव सरल एवं निच्छल व्यक्तित्व
- ममतामयी एवं वात्सल्य की प्रतिमूर्ति

चारित्रिक गुण एवं कार्य

- महर्षि कण्व का गौतमी के प्रति सम्मानभाव है, इसीलिए शकुन्तला के साथ उसे हस्तिनापुर तक भेजा जाता है।
- गौतमी में अवस्थानुरूप गाम्भीर्य, सहिष्णुता एवं विवेकशीलता दृष्टिगोचर होती है, राजदरबार में दुष्यन्त जब शकुन्तला के साथ अपने सम्बन्ध को अस्वीकार कर देता है, तब वह शकुन्तला का घूँघट हटाकर स्वयं उसे अपने सम्बन्ध को प्रमाणित करने का आदेश देती है।
- गुरुजनों तथा बन्धु-बान्धवों से पूछे बिना दुष्यन्त एवं शकुन्तला के प्रेम सम्बन्धों को वह अनुचित मानती है।
- शकुन्तला के प्रति उसका हृदय माँ की वात्सल्यमयी ममता से ओतप्रोत है। वह उसे पुत्रीवत् स्नेह करती है। राजा दुष्यन्त द्वारा अस्वीकार कर दिये जाने पर शकुन्तला जब शार्ङ्गरव आदि के पीछे-पीछे आने लगती है तो उस समय गौतमी का वात्सल्यभाव जाग उठता है – **वत्स शार्ङ्गरव, अनुगच्छतीयं खलु नः करुणपरिदेविनी शकुन्तला........किं वा मे पुत्रिका करोतु।'' (अङ्क 5)**
- कण्व के आश्रम में गौतमी अभिभावक की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, तापसकन्याओं की देखरेख का उत्तरदायित्व उसी का है।
- प्रथम अङ्क में प्रियंवदा के परिहास से परेशान हुई शकुन्तला गौतमी से शिकायत करने को कहती है –

इयम् असम्बद्धप्रलापिनी....गौतम्यै निवेदयिष्यामि (अङ्क-1)

- शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार सुनकर गौतमी शान्तिजल लेकर उसके ऊपर छिड़कती है और वात्सल्यभाव से पूछती है–

'जाते, लघुसन्तापानि तेऽङ्गानि' (अङ्क-3)

- शकुन्तला की विदाई में विलम्ब होता देख गौतमी महर्षिकण्व से भी वापस लौट जाने का निवेदन करती है –

जाते, परिहीयते गमनवेला....निवर्ततां भवान्। (अङ्क-4)

- कण्व द्वारा शकुन्तला को उपदेश दिये जाने पर गौतमी उसे ठीक से स्मरण करने को कहती है –

जाते, एतत् खलु सर्वमवधारय। (अङ्क-4)

- गौतमी शकुन्तला को सर्वदा, **'वत्से'**, **'जाते'**, **'पुत्रि'** आदि यही सम्बोधन करती है इससे शकुन्तला के प्रति उसका अगाध स्नेह स्वयं व्यक्त होता है।
- शकुन्तला को छोटी-छोटी व्यवहार और शिष्टाचार की बातें भी गौतमी बताती हैं, विदाई के समय कण्व ऋषि के आने पर शकुन्तला को प्रणाम करने को कहती है।

''आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व'' (अङ्क-4)

- कण्व द्वारा पुत्री शकुन्तला के लिए चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद सुनकर गौतमी अत्यन्त प्रसन्न होकर कहती है – यह तो केवल आशीर्वाद नहीं, अपितु वरदान है।

भगवन्, वरः खल्वेषः, नाशीः (अङ्क-4)

- आश्रम की संरक्षिका, व्यवस्थापिका, अध्यक्षा या वरिष्ठ तपस्विनी

के रूप में गौतमी का सम्मान सभी आश्रमवासी करते हैं। शकुन्तला को हस्तिनापुर ले जाने के लिए शार्ङ्गरव आदि को गौतमी ही आदेश देती है –

'गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय' (अङ्क-4)

शार्ङ्गरव और शारद्वत

- **परिचय** – शार्ङ्गरव और शारद्वत दोनों कण्व ऋषि के शिष्य।

चारित्रिक गुण एवं कार्य

- कण्व ऋषि इनके नाम के साथ आदरसूचक 'मिश्र' शब्द का प्रयोग करते हैं –
  'आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः' (अङ्क-4)
  'क्व ते शार्ङ्गरवमिश्राः (अङ्क-4)
- दोनों परिपक्व आयु वाले तथा विद्यानिष्णात हैं
- गुरु कण्व का इन दोनों के ऊपर अटूट विश्वास है, तभी तो उनकी देखरेख में शकुन्तला को पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं।
- राजा दुष्यन्त इन दोनों के गरिमामय व्यक्तित्व को देखकर उन्हें गुरुसमान कहता है –
  ''गुरुशिष्ये गुरुसमे'' – (अङ्क-6)
- शास्त्रज्ञान के साथ ही साथ इन दोनों ऋषियों में लौकिकज्ञान भी विद्यमान है।
- शकुन्तला की विदाई के समय मार्ग में सरोवर को देखकर शार्ङ्गरव महर्षि कण्व से लौट जाने को कहता है –
  ''भगवन् ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्.......।'' (अङ्क-4)
- दोनों ऋषियों को आश्रम के जीवन से प्रेम है और नगर जीवन से घृणा।
- हस्तिनापुर नगर में प्रवेश करते समय एक ओर जहाँ शार्ङ्गरव राजभवन को अग्नि की लपटों से घिरा हुआ समझता है –
  जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव' (अङ्क-5)
- वहीं दूसरी ओर शारद्वत नगर के भोगासक्त लोगों को उसी प्रकार समझता है, जिस प्रकार स्नात व्यक्ति तैलासिक्त को, पवित्र व्यक्ति अपवित्र को, प्रबुद्ध व्यक्ति सोये हुए को, और स्वच्छन्दचारी व्यक्ति बन्धनयुक्त को समझता है –
  ''अभ्यक्तमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव'' (अङ्क-5/11)
- इन दोनों में शार्ङ्गरव अधिक आयु का है, ऋषि कण्व को उस पर अधिक विश्वास है, अतः राजा दुष्यन्त के लिए **(अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्----अङ्क-4.17)** रूपी संदेश उसी को देते हैं। शार्ङ्गरव ही शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर जाने वाले दल का नेता है, जबकि ऋषि शारद्वत उससे छोटा और शान्तस्वभाव का है।
- शार्ङ्गरव, शारद्वत की अपेक्षा अधिक वाक्पटु एवं लौकिक व्यवहार का ज्ञाता है, जबकि शारद्वत मितभाषी है। उसके विचार दार्शनिक हैं, उसमें दूसरों के प्रति सहानुभूति है।
- शार्ङ्गरव बहुत बोलने वाला, क्रोधी, असहिष्णु, कठोर और अशान्त प्रकृति का है। वह अपने नाम को चरितार्थ करता है, क्योंकि 'शार्ङ्गरव का शाब्दिक अर्थ है – **'धनुष के समान शब्द करने वाला।'** राजा दुष्यन्त जब शकुन्तला को नहीं पहचानता और विवाह को अस्वीकार कर देता है, तो वह उसे शठ, अधार्मिक और ऐश्वर्योन्मत्त आदि कहकर फटकारता है –
  ''मूर्च्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यप्रमत्तेषु। (अङ्क-5/18)
- शार्ङ्गरव अत्यन्त निर्भय एवं स्पष्टवादी है। दुष्यन्त जब अपने आपको शकुन्तला का पति नहीं मानता, तो शार्ङ्गरव उसे चोर तक कहता है – **''पात्रीकृतो दस्युरिवासि येन'' अङ्क-5/20**
- शारद्वत मितभाषी, अक्रोधी, सहिष्णु तथा शान्त प्रकृति का है, जब राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद उग्र रूप धारण करता है, तब वही उसे शान्त करता है –
  ''शार्ङ्गरव, विरम त्वमिदानीम्'' (अङ्क-5)
- शारद्वत राजा दुष्यन्त से अन्ततः कहता है कि शकुन्तला तुम्हारी पत्नी है, तुम इसे रखो या छोड़ो, हम लोग जाते हैं –
  ''तदेषा भवतः कान्ता, त्यज वैनां गृहाण वा'' (अङ्क-5)
- शार्ङ्गरव व्यवहारकुशल नहीं है, वह राजा से झगड़े को बढ़ाता है, जबकि शारद्वत अत्यन्त व्यवहारिक है वह झगड़े को निपटाता है। शारद्वत के कारण ही विवाद शान्त हुआ।
- दुष्यन्त के अपमानजनक व्यवहार से दुखी शकुन्तला जब रोने लगती है, तब शार्ङ्गरव उसे डाँटता है –
  ''अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः'' (अङ्क-5/24)
- जब दरबार में शकुन्तला को छोड़कर गौतमी सहित दोनों शिष्य आश्रम लौटने लगते हैं, तब शकुन्तला भी उनके पीछे-पीछे लौटने लगती है, तभी शार्ङ्गरव पुनः शकुन्तला को कठोर शब्दों में डाँटता है– **''किं पुरोभागे, स्वातन्त्र्यमवलम्बसे'' (अङ्क-5)**

किरातार्जुनीयम् के पात्रों का चरित्र-चित्रण

युधिष्ठिर

- सत्य का पालन करने वाले।
- धर्म पर दृढ़ रहने वाले।
- सहनशील और राजनीतिकुशल।
- द्रौपदी और भीम द्वारा उलाहना दिये जाने पर भी उनके मन में विकार उत्पन्न नहीं होता।
- प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर एक भी वाक्य नहीं बोलते हैं, केवल श्रोता के रूप में उनका वर्णन है।

➢ जुयें में हारकर वन में निवास करते हुए भी युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजा दुर्योधन के विचारों, उद्देश्यों और कार्यों को जानने के लिए वनेचर को गुप्तचर के रूप में भेजते हैं।
➢ किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में भारवि ने भले ही युधिष्ठिर के मुख से कोई बात नहीं कहलवायी हो, फिर भी वनेचर एवं द्रौपदी के कथनों द्वारा उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं।
➢ भारवि ने पाँचों पाण्डवों के ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर को एक कुशल राजनीतिज्ञ, प्रतिज्ञापालक, संयमी एवं धैर्यशाली, सत्यप्रिय, शान्तिप्रिय, धर्मात्मा एवं शास्त्रज्ञ के रूप में चित्रित किया है।

वनेचर

➢ गुप्तचरों के लिए चार प्रकार के गुण बताये गये हैं – अमूढ़ता, अशैथिल्य, सत्यपरता और ठीक प्रकार से अनुमान कर सकने की क्षमता। युधिष्ठिर द्वारा गुप्तचर बनाकर भेजे गए वनेचर में ये सभी गुण विद्यमान थे।
➢ वनेचर ब्रह्मचारी के वेश में हस्तिनापुर जाकर सुयोधन (दुर्योधन) के सभी विचारों, योजनाओं, कार्यों और उद्देश्यों को ठीक प्रकार से समझता है, और द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर को सम्पूर्ण वृत्तान्त बताता है।
➢ यद्यपि वनेचर द्वारा लाये गये समाचार युधिष्ठिर के लिए अप्रिय थे, तथापि वह उनको कहने में हिचकिचाया नहीं।
➢ वनेचर कार्यदक्ष था, उसने दुर्योधन की दुरभिसन्धियों, दुःश्चिंतन और युद्ध की पूर्ण तैयारियों को ठीक प्रकार से जान लिया और राजा युधिष्ठिर से सुस्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से वहाँ के सभी गूढ़ रहस्यों को व्यक्त किया।
➢ वनेचर की वाणी, सौष्ठव और औदार्य गुणों से युक्त थी, और उसके कथन, प्रमाण और तर्कों से पूर्ण निश्चित अर्थों को व्यक्त करने वाले होते थे –
''स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे।'' किरात0 1/3
➢ वह राजा युधिष्ठिर का सच्चा हितैषी था, और अप्रिय लगने वाले भी हितकारी वचनों को कहने में कोई संकोच नहीं करता–
''न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'' किरात0 1/2
➢ वनेचर अतिविनम्र था और अपनी सफलता के लिए अपने स्वामी युधिष्ठिर की कृपा को ही श्रेय देता है –
''तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया, निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्'' किरात0 1/6
➢ इसप्रकार सम्पूर्ण प्रथमसर्ग में वनेचर को एक कुशल गुप्तचर, सच्चा हितैषी, शिष्टाचारी एवं निरहंकारी, स्वामिभक्त, सत्यवादी, वाक्पटु, निरालस्य, निश्छल, कर्त्तव्यनिष्ठ, विनम्र, निर्भीक, साहसी, स्पष्टवादी, गुणी, कार्यकुशल एवं अत्यन्त बुद्धिमान् के रूप में चित्रित किया गया है।

सुयोधन (दुर्योधन)

➢ महाकवि भारवि ने दुर्योधनको सुयोधन नाम से अभिहित किया है, जो कुरु प्रदेश का राजा है–**''श्रियः कुरूणामधिपस्य'' किरात. 1/1**
➢ क्योंकि उसको सुखपूर्वक जीता जा सकता था अथवा उसकी नीतियाँ प्रजा को सुख पहुँचाने वाली थीं।
➢ किरातार्जुनीयम् का 'सुयोधन' कामक्रोधादि रिपुओं को जीतने वाला, प्रजावत्सल एवं आदर्श राजा बनने का दिखावा करता है। – **''स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः'' किरात0 1/10**
➢ दुर्योधन के राज्य की स्थिरता और सुख प्रजा और सेवकों की अनुरक्ति पर निर्भर है।
➢ सुयोधन अपने राष्ट्र को धन-धान्य से समृद्ध बनाने के लिए कृषि की उन्नति हेतु कृत्रिम सिंचाई के साधन उपलब्ध कराता है।
''सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैः'' किरात0 1/17
➢ सुयोधन अहंकार से शून्य होकर सेवकों के साथ मित्रों के समान तथा मित्रों के साथ बन्धु-बान्धव की तरह व्यवहार करता था –
''सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः'' – किरात0 1/10
➢ दुर्योधन पराक्रमी शूरवीरों को अपने आस-पास एकत्र किए रहता था जो उसके उत्तम व्यवहार से प्रभावित होकर अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी उसका हित करना चाहते थे –
''महौजसो मानधनाः धनार्चिताः....प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्।'' किरात0 1/19
➢ यद्यपि दुर्योधन कुटिल स्वभाव वाला है किन्तु आपको जीतने की इच्छा से वह अपने शुभ्र यश एवं पुरुषार्थ को फैला रहा है और प्रजा को यह दिखलाने का प्रयास करता है कि वह निरहंकारी, निरालस्य तथा युधिष्ठिर से कहीं अधिक गुणवान्, दयावान्, क्षमावान्, सत्यवादी तथा धर्मज्ञ है –
''तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।'' किरात0 1/8
➢ राजाओं द्वारा भय के कारण नहीं, अपितु श्रद्धा और प्रेम के कारण दुर्योधन के आदेशों का पालन किया जाता था –
''गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते'' किरात0 1/21
➢ दुर्योधन को कभी क्रोध करने अथवा शस्त्रों को उठाने की आवश्यकता नहीं होती थी –

''कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्'' (किरात0 1/21)

- राजनीति के छः अंगों – सन्धि, विग्रह, यान, आसन, संशय और द्वैधीभाव का प्रयोग करने में सुयोधन (दुर्योधन) कुशल था।
- साम, दान, दण्ड, भेद– इन चारों उपायों का सुयोधन सफलतापूर्वक प्रयोग करता था –

''निरत्ययं साम न दानवर्जितम्'' (किरात0 1/12)

- न्याय करने में दुर्योधन कभी पक्षपात नहीं करता था –

''गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्'' (किरात0 1/13)

- इसप्रकार सुयोधन नीतिज्ञ एवं कुशल प्रशासक, प्रजावत्सल, कुशल राजनीतिज्ञ, राजाओं के प्रति उदार, कूटनीतिज्ञ, उदारवादी राजा के रूप में किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में चित्रित है।

द्रौपदी

- किरातार्जुनीयम् की सबसे महत्त्वपूर्ण नारीपात्र द्रौपदी है, जो इस **महाकाव्य की नायिका** है।
- प्रथमसर्ग में द्रौपदी की मानसिक पीड़ा एवं अपमानजन्य वेदना अभिव्यक्त होती है।
- वनेचर द्वारा बतायी गयी दुर्योधन की कार्यप्रणालियों एवं सफलता को युधिष्ठिर से सुनकर द्रौपदी का क्रोध उद्दीप्त हो उठता है।
- युधिष्ठिर की नीतियाँ, सत्यप्रतिज्ञा के पालन और शान्तस्वभाव के कारण सबसे अधिक कष्ट द्रौपदी को झेलने पड़ते हैं।
- दुर्योधन से प्रतिशोध लेने की आकांक्षा सबसे अधिक द्रौपदी को है।
- द्रौपदी ओजस्विनी वाणी द्वारा युधिष्ठिर के क्रोध को उद्दीप्त करने का प्रयत्न करती है –

''उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः'' (किरात0 1/27)

- द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि तुम जैसा और कौन होगा, जो स्वयं ही अपनी राजलक्ष्मी और कुलवधू को शत्रुओं द्वारा अपहरण करा दे –

''परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेत्.......'' (किरात0 1/31)

- वह युधिष्ठिर को क्षत्रियों तथा राजाओं के समान आचरण करने का उपदेश करती है, और उसकी सत्यप्रतिज्ञा को ढोंग कहती है।
- द्रौपदी पहले भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव के वन में प्राप्त होने वाले कष्टों का वर्णन करती है और उसके बाद स्वयं युधिष्ठिर को होने वाले दुःखों और अपमानों को बताती है –

''पुराधिरूढः शयनं महाधनम्'' (किरात0 1/38)

- द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि जो मनुष्य क्रोध नहीं कर सकता, शत्रु उससे भय नहीं करते और मित्र उसका आदर नहीं करते – **''न जातहार्देन न विद्विषादरः''** (किरात0 1/33)
- वह युधिष्ठिर से कहती है कि वह किसी बहाने से सन्धि को तोड़ दे और समय की प्रतीक्षा न करके अपने पराक्रम से शत्रुओं को जीत ले– **''न समयपरिरक्षणं क्षमं ते''.......।** (किरात0 1/45)
- शान्ति और क्षमा मुनियों के लिए ही उचित है, राजाओं के लिए नहीं, यदि शान्ति और क्षमा का पालन नही करना है तो उसको राजाओं के चिह्न धनुष को छोड़कर जटाओं को धारण करके अग्नि में आहुति देते रहना ही उचित है। यह बात द्रौपदी युधिष्ठिर से कह रही है– **''जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्''** (किरात0 1/44)
- इसप्रकार द्रौपदी को एक वीरक्षत्राणी, कुशल राजनीतिज्ञा, स्वाभिमानिनी, कूटनीतिज्ञा, अपमान से दुखी, सहृदया एवं क्रोधोद्दीपन में दक्ष नारी के रूप में चित्रित किया गया है।

घ. प्रमुख ग्रन्थों का शब्दार्थ

उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क) के प्रमुख शब्दार्थ

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
सम्भ्रान्तः	घबड़ाना	**क्षामम्**	दुर्बल
पुटपाकप्रतीकाशः	पुटपाक के समान	**केतकी**	केतकी फूल
अनिर्भिन्नः	अव्यक्त	**दारुणः**	कठोर
प्रतिनिवर्तमानम्	लौटे हुये	**लोलः**	चञ्चल
शीकरक्षोद	जल कण	**सल्लकी**	सल्लकी लता
पद्म	कमल	**करिकलभकः**	हाथी का बच्चा
किञ्जल्क	पराग (केसर)	**द्विरदपतिः**	बड़ा हाथी
वीची	तरङ्ग	**उद्दामः**	घमण्ड (मतवाला)
मोह	मूर्छा	**पयः**	जल
स्वैरं-स्वैरम्	धीरे-धीरे	**ससाध्वसम्**	भय के साथ
दाक्षिण्यम्	उदारता	**उल्लासम्**	हर्ष के साथ
दारकद्वयम्	दो पुत्र	**भरित**	परिपूर्ण
संवेगः	वेग	**मन्थर**	मन्द
प्राचेतः	वाल्मीकि	**स्तनित**	गर्जन
विपाकः	परिणाम	**मांसल**	जोरदार
उपकरणीभावम्	सहायता को	**भारती**	वाणी
सुष्ठु	ठीक	**निर्घोषः**	ध्वनि
व्यापृतः	व्यग्र (व्यस्त)	**स्तनयित्नुः**	मेघ
अभ्युदयः	कल्याणकारी	**अपरिस्फुटः**	अस्पष्ट
अव्यग्रः	व्यस्त न होना	**निक्वाणम्**	शब्द (ध्वनि)
प्रसवितारम्	प्रवर्तक	**व्याहृतम्**	कहना
सविता	सूर्य	**भणति**	बोलना
अवनि	पृथ्वी	**दिष्ट्या**	सौभाग्य से
वर्तिनी	विद्यमान	**द्रुमः**	वृक्ष
ह्रदः	सरोवर (जलाशय)	**गिरिः**	पर्वत
पाण्डुः	पीला	**कन्दरम्**	गुफा
कपोलम्	गाल	**निर्झरम्**	झरना
विलोलम्	चञ्चल	**अन्तर्लीनः**	अन्तःकरण में छिपी
कबरीकम्	केशसमूह	**उद्दामम्**	अधिक
विप्रलूनम्	टूटे हुये	**धरणीपृष्ठः**	भूमि
शरदिजः	शरद् ऋतु से उत्पन्न	**विपर्यस्तः**	गिरना
घर्मः	घाम (धूप)		

संस्कृतशब्दः	अर्थः
पाणिः	हाथ
निरतः	अनुरक्त
हृदि	हृदय में
सेकः	सींचना
निष्पीडितः	निचोड़ना
इन्दुकरः	चन्द्रकिरण
कन्दलजः	नवाङ्कुर
आतप्त	सन्तापयुक्त
तर्पणः	तृप्त करना
प्रसक्तः	सींचना
सपदि	शीघ्र
प्रेक्ष्य	देखकर
सनिर्वेदम्	दुःख के साथ
तटस्थम्	उदासीन
घटनात्	मिलन से
विप्रियवशाद्	अप्रिय कार्य से
स्तम्भितम्	निश्चेष्ट
दयितः	प्रिय
सौजन्यात्	सुजनता
उल्लापाः	विलाप
प्रत्ययेन	विश्वास से
शल्यः	कांटा (कील)
मन्दाकिन्याः	गङ्गा (भागीरथी)
अनुक्रोशः	दयालु
निरनुक्रोशः	निर्दय
प्रसाद	अनुग्रह
उद्गच्छत्	निकले हुये
बिस	मृणाल
किसलय	पल्लव
स्निग्ध	कोमल
लवली	लवलीलता
वारणानाम्	हाथियों को
भाजनम्	पात्र
वयसि	युवावस्था में
लीला	अनायास
उत्खात	उखाड़ना
मृणालकाण्ड	मृणालदण्ड
कवल	ग्रास (कौर)
पुष्यत्	खिले हुये

संस्कृतशब्दः	अर्थः
पुष्कर	कमल
वासित	सुगन्धित
गण्डूष	कुल्ला
संक्रान्तयः	फेंकना (छोड़ना)
शीकर	जल की बूँद
करेण	सूँड़ से
अनरालनाल	सीधा दण्ड
ईषत्	थोड़ा
कुड्मल	कली
पुण्डरीक	श्वेतकमल
काकली	तोतली
अपत्यम्	सन्तान
बर्हम्	पङ्ख
शिखण्डी	मयूर
नदति	बोलना
उच्छिखः	ऊपर उठी हुई
पुटान्तः	नेत्र कोश
चटुलः	चञ्चल
ताण्डवैः	नृत्यों से
करकिसलयः	पल्लव सदृश हाथों से
वत्सलेन	स्नेह से
तिर्यञ्चः	पशु-पक्षी
नीरन्ध्रः	घना
बाल	सुकुमार
कदली	केला
वर्ति	स्थित
हरिणकैः	हरिणों से
नवकुवलयः	नवीन नील कमल
शुचा	शोक से
दृशः	नेत्रों को
विकलकरणः	व्याकुल इन्द्रियों वाले
अतिपूरैः	अत्यधिक प्रवाहों से
विलुलितम्	फैले हुए
पक्ष्मलः	पलक
उत्तानः	ऊपर उठी हुई
कुल्या	नहर
हृदयेशम्	राम (हृदय के स्वामी)

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
वनानिलाः	वन की हवा	**रयः**	वेग
रज्यत्कण्ठाः	अनुराग युक्त कण्ठ वाले	**ओघः**	राशि/समूह
कलम्	मधुर	**सैकतम्**	बालू
क्वणन्तु	ध्वनि करें	**कातर्यात्**	कातरता से
अम्बु	जल	**अरविन्द**	कमल
नीवारः	नीवार धान	**कुड्मलः**	कली
शष्पैः	घास से	**ध्वंसते**	शिथिल होना
तरुः	वृक्ष	**स्फुटितः**	विदीर्ण होना
कुरङ्गः	मृग	**देहबन्धः**	शरीर के जोड़
शकुनि	पक्षी	**विष्वक्**	चारो ओर से
मैथिली	सीता	**सीदन्**	दुःखी होता हुआ
कौमुदी	चाँदनी	**तमसि**	अन्धकार में
विपिने	वन में	**विधुरः**	प्रिया रहित (राम)
त्रस्त	भयभीत	**जीवितेश्वरः**	राम
एकहायन	एक वर्ष	**अपरम्**	दूसरा
क्रव्यादि्भः	हिंसक जीव	**परिणयविधौ**	विवाह के समय
अङ्गलतिका	लता के समान अङ्गों वाली	**पादैः**	किरणों से/चरणों से
तटाकः	तालाब	**सुधासूतेः**	चन्द्रमा के
परीवाहः	जल का बाहर निकलना	**लवली**	लवली लता
प्रतिक्रिया	उपाय	**ललितः**	सुन्दर
विलपनम्	विलाप	**कन्दलः**	अङ्कुर
उच्छ्वासः	प्राण (श्वास)	**निमीलितः**	बन्द करना
अन्तर्दाहः	हृदय का सन्ताप	**करपल्लवः**	पल्लव के समान हाथ
विधिः	भाग्य	**परिकम्पिनः**	काँपता हुआ
कायः	शरीर	**स्विद्यतः**	पसीने से युक्त
प्रणष्टम्	नष्ट होना	**मरुत्**	वायु
परिवत्सरः	वर्ष	**अम्भः**	जल
वाचः	वाणी	**स्फुट**	खिली हुई
सविषाः	विषयुक्त	**कोरका**	कली
अलातशल्यम्	जलता हुआ कील	**यष्टिः**	डाली/छडी
सोढः	सहना	**स्वेदः**	पसीना
वेला	मर्यादा/समय	**कम्पिताङ्गी**	कम्पित अङ्गों से युक्त
उल्लोल	लाँघना	**प्रसीद-प्रसीद**	प्रसन्न होइए-प्रसन्न होइए
क्षुभित	स्तब्ध	**विप्रलब्धः**	ठगना
तोय	जल	**पौलस्त्यः**	रावण
अप्रतिहतः	न रोके जाने योग्य	**कार्ष्णायसः**	लौह निर्मित

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
कङ्काल	हड्डी (अस्थि)	**कपीन्द्रः**	सुग्रीव
पिशाचः	राक्षस	**हरीणाम्**	वानरों का
खड्गः	तलवार	**प्रज्ञा**	बुद्धि
पक्षतिः	पंखों को	**विश्वकर्मतनयः**	नल-नील
अरिः	शत्रु	**पत्रिणाम्**	बाणों के
अम्बुदः	मेघ	**सौमित्रः**	लक्ष्मण
द्याम्	आकाश में	**हिरण्यमयी**	स्वर्णनिर्मित
खरः	गधा	**सन्निकर्षः**	सम्बन्ध/निकट
मन्युः	क्रोध	**आवर्त**	भँवर
अविरल	निरन्तर	**सलिलम्**	जल
तूष्णीम्	चुपचाप	**अमरसिन्धुः**	गङ्गा
प्रविलयः	वियोग	**भद्रम्**	कल्याण
		अवनिः	पृथ्वी

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रमुख शब्दार्थ

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
इष्टिः	यज्ञ	**उष्ण+उदकम्**	गर्म जल
उटज	कुटिया	**नवमालिका**	चमेली
प्रमत्तः	उन्मत्त (पागल)	**भर्ता**	पति (स्वामी)
दुर्वारया	रोका न जाना	**अनुक्रोशः**	दयालुता
हुतवह्	अग्नि	**रजनी**	रात्रि
दग्धम्	जलाना	**परिक्रम्य**	घूमकर
स्खलितम्	लड़खड़ाना	**औषधिपतिः**	चन्द्रमा
निरूप्य	अभिनय करना	**अर्कः**	सूर्य
भाजनम्	पात्र	**लोकः**	जगत् (संसार)
प्रभ्रष्टम्	गिरना	**व्यसनोदयाभ्याम्**	अस्त और उदय
प्रकृतिवक्रः	स्वभाव से टेढ़ा	**वेला**	समय
सस्मितम्	मुस्कुराना	**उपलक्षणार्थम्**	जानने के लिए
दुहिता	पुत्री	**शशिः**	चन्द्रमा
मर्षयितव्यः	माफ करना	**कुमुद्वती**	कुमुदिनी
अभिज्ञान	पहचान	**अबलाजनः**	स्त्री जन
आभरणम्	आभूषण	**दृष्टिम्**	नेत्रों को
अङ्गुलीयकम्	अँगूठी	**अनार्यमाचरणम्**	अशिष्ट व्यवहार
पिनद्धम्	पहनाया	**विषयपराङ्मुखः**	सांसारिक विषयों को न जानना
देवकार्यम्	पूजन कार्य	**प्रतिबुद्धा**	जागकर
पेलवा	कोमल	**निजकरणीयेषु**	दैनिक कार्यों में (करने योग्य कार्य)

संस्कृतशब्दः	अर्थः
असत्यसन्धः	मिथ्याप्रतिज्ञा करने वाला
लेखमात्रम्	पत्र (लेटर)
आपन्नसत्वा	गर्भिणी
परिणीता	विवाहिता
सहर्षम्	हर्ष के साथ
सकाशम्	पास में
पावक	अग्नि
अग्निशरणम्	यज्ञशाला
तनया	पुत्री
भूः/कुः	पृथ्वी
भूतये	कल्याण के लिए
आहितम्	स्थापित
चूत	आम्र
शाखा	डाली
अवलम्बितः	लटकना
नारिकेलः	नारियल
समुद्गकः	दोना (पुटक)
कालान्तरक्षमा	लम्बे समय से
सुमनसः	फूलों को
शिखामज्जिता	पूर्ण स्नान
मज्जनम्	स्नान
मण्डनम्	अलङ्करण
इन्दु + पाण्डु	चन्द्रमा के समान सफेद
माङ्गल्यम्	माङ्गलिक
क्षौमम्	रेशमी वस्त्र
लाक्षारसः	महावर
निष्ठ्यूतः	टपकाया
आपर्वभाग	कलाई तक
प्रतिद्वन्द्विभिः	प्रतिस्पर्धा करने वाले
उद्भेद	नवीन
अरण्य	वन
वैक्लव्यम्	विकलता (दुख)
सम्राजम्	सम्राट्
ययाति	राजा ययाति
क्लृप्तधिष्ण्या	प्रतिष्ठित
समिद्वन्तः	समिधाओं से युक्त
वैतानाः	यज्ञ की
वह्निः	अग्नि

संस्कृतशब्दः	अर्थः
हव्यः	हवि
दुरितम्	पापों को
प्रान्त	किनारा
संस्तीर्णः	बिछे हुये
भगिनी	बहिन
कुसुमप्रसूति	पुष्पोद्भव
प्रतिवचनम्	प्रत्युत्तर
परभृत	कोयल
विरुतम्	आवाज (ध्वनि)
सरोभिः	तालाबों से
छायाद्रुमैः	घनी छाया वाले वृक्षों से
मयूखतापः	किरणों का ताप
कुशेशयः	कमल
मृदुरेणुः	कोमल धूलि
शिवः	कल्याणकारी
ज्ञातिजन	बन्धुजन
पुरतः	आगे
विरह	वियोग
कातरः	दुःखी
आत्मसदृशम्	अपने अनुरूप
चूतेन	आम से
वीतचिन्तः	चिन्तामुक्त
निक्षेप	सौंपना/धरोहर/न्यास
स्थिरीकर्तव्या	धैर्य बँधाना
मन्थरः	अलसाना
अनघप्रसवा	सकुशल प्रसव
व्रणः	घाव
विरोपण	भरना

शिवराजविजयम् के प्रमुख शब्दार्थ

संस्कृतशब्दः	अर्थः
पुटकम्	दोना
कदलीदलम्	केले के पत्ते
तृणशकलैः	तृण के टुकड़े
सन्धानम्	जोड़कर
कम्बुकण्ठः	शंख के समान गर्दन
आयतः	चौड़ा
ललाटः	मस्तक
सुबाहुः	सुन्दर भुजाएँ
समन्तात्	चारों ओर

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
पानीयम्	जल वाला	**ग्रामाः**	समूह
पतत्रि	पक्षी	**शिखर**	चोटी
पूरितम्	भरा हुआ	**प्रबुद्धः**	जागना
सरः	तालाब	**निखिल**	सम्पूर्ण
निर्झर	झरना	**काष्ठपीठम्**	चौकी
ध्वनितम्	शब्दायमान	**कर्णपरम्परया**	कानों कान से
दिगन्तरः	दिशाएँ	**सुघटितम्**	सुगठित
चपलितचञ्चुः	चञ्चल चोंच	**सान्द्र**	घनी
पतङ्गः	पक्षी/सूर्य	**ईहितम्**	चेष्टा करना
कुल	समूह	**पृच्छापरवशः**	जिज्ञासा के अधीन
विनत	झुकी हुई	**समीरः**	वायु
शाख	शाखाएँ	**यामिनी**	रात्रि
शाखि	वृक्ष	**कामिनी**	नायिका
कन्दरः	गुफा	**चन्दनबिन्दौ**	चन्दन बिन्दु
अलि	भौंरा	**इन्दु**	चन्द्रमा
पुञ्जः	समूह	**कैरवविकाश**	कुमुदों का खिलना
कोरकाः	कलियाँ	**व्याघ्रः**	सिंह
सतीर्थ्यः	सहपाठी	**आघ्राता**	सूंघी हुई
कस्तूरिका	कस्तूरी	**अङ्के**	गोद में
रेणुः	चूर्ण	**सवेपथुः**	कांपती हुई
रूषितः	व्याप्त	**अन्वेषणः**	खोजना
सुगन्धपटलः	सौरभ समूह	**नवनीतः**	मक्खन
मन्थरः	अलसाना	**मृणालगौरीम्**	कमल नाल के समान गोरी
मिलिन्द	भौंरा	**क्रोड**	गोद
वृन्दानि	समूह	**वाक्पाटव**	बोलने में चतुर
क्षिप्रम्	शीघ्र	**वचनविन्यास**	टूटे हुये शब्द
तडागतटः	सरोवर तट	**नेदीयसि**	समीप में
यावनत्रासेन	यवन के भय से	**आच्छिद्य**	छीनकर
निःशब्दम्	शब्दरहित	**अध्वानः**	मार्ग
मरन्दमधुरः	पुष्प रस	**असिधेनुकाम्**	छूरी को
अपः	जल को	**विभीषिका**	भय
त्रियामा	रात्रि	**शमयितुम्**	शान्त करने के लिए
यामत्रयम्	तीन प्रहर को	**भल्लूकः**	भालू
इयेष	इच्छा करना	**शाल्मलितरुम्**	सेमल वृक्ष
उभय	दोनों	**पलाश पलाशि**	पलाश वृक्ष (किंशुक)
ग्रामणी	ग्राम के प्रधान	**श्रेणी**	पंक्ति
ग्रामीणः	ग्रामवासी		

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
घुणाक्षरन्याय	संयोग वश	गोष्ठमयः	गोशालाओं से युक्त
सप्तदशशतकानि	1700 वर्ष	यायजूकः	याज्ञिक
वीथीषु	गलियों में	तपांसि	तपस्यायें
पिष्ट्वा	पीसकर	मन्दुरी	घुड़साल
धूमध्वजेषु	अग्नि में	सत्यः	पतिव्रतायें
भ्राष्ट्रेषु	भाड़ों में	विधुरयसि	छोड़ना
तुलसीवनानि	तुलसी के वनों को	तूष्णीम्	मौन
रुधिरधारा	खून की धारा	अवतस्थे	हो गया
पटहः	नगाड़ा	सौख्येन	सुख से
गोमुखः	तुरही	सममेव	साथ ही
कर्णशष्कुली	कर्णछिद्र	भामिनी	कामिनी
जगाद	बोले	भ्रूभङ्ग	कटाक्ष
वाष्पानविगणय्य	आँसुओं की परवाह न करके	भूरि	अत्यधिक
प्रमृज्य	पोंछकर	वितान	फैलाना
उष्णं निःश्वस्य	गरम साँस लेकर	पराभूतः	आधीन
कातरः	दीनता	भटः	वीर
उपक्रमम्	भूमिका को	अमात्यः	मन्त्री
विमनायमानम्	उदास दुःखी	बुधजनः	विद्वान् जन
हरिद्राद्रवः	हल्दी के रस	महामदः	महामदशाली
क्षालितम्	रंगे हुये	ससेनः	सेना सहित
अञ्चितः	रोमाञ्चित	प्राविशत्	प्रवेश किया
अधरः	होंठ	उष्ट्रः	ऊँट
खिद्यते	दुःखी होना	अनैषीत्	ले गया
सकल	सम्पूर्ण	पौनः पुन्येन	बार-बार
कलापः	कलासमूह	द्वादशवारम्	बारह बार
कलनः	रचयिता	गुर्जरदेशः	गुजरात प्रदेश
सकलकालनः	सभी को नष्ट करने वाले	लोकोत्तरम्	अलौकिक
करालः	भीषण	कपाटानि	किवाड़ो को
कालः	महाकाल	स्तम्भान्	स्तम्भों को
पयःपूर	जलप्रवाह	वलभी	छज्जा
पूरितानि	परिपूर्ण	शतद्वयमणः	दो सौ मन
अकूपारतलानि	समुद्र को	सुवर्णशृङ्खला	सोने की जंजीर
गण्डः	गैंड़ा	ग्रहावग्रहणीः	घर की देहलियों के
फेरुः	सियार (शृगाल)	भित्तीः	दीवारों को
शशः	खरगोश	गदाम्	गदा को
प्रासादहर्म्यः	राजमहल	देवमूर्ति	महादेव की मूर्ति
शृङ्गाटकः	चौराहा	आमलम्	स्वच्छ
		मज्जय	डुबाना

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
कर्तय	काटना	मगधप्रान्तः	दक्षिणबिहार
सुवर्णकोटिद्वयम्	दो करोड़ स्वर्ण मुद्रायें	अङ्गप्रान्तः	पूर्वीबिहार (भागलपुर)
स्प्राक्षीः	स्पर्श करना	बङ्ग	बङ्गालप्रान्त
साम्रेडम्	पुनः पुनः	कलिङ्गः	उड़ीसा
कलकलम्	हा-हाकार की ध्वनि	हस्तयितुम्	अधीन करना
दग्धमुखः	मुँहजला	कृपाणः	तलवार
क्रमेलकः	ऊँट	सीमन्तिनी	नायिका
पृष्ठेषुः	पीठों पर	सीमन्तः	माँग
कालक्रमेण	समय की गति से	दोर्दण्डः	भुजाओं वाले
सप्ताशीत्युत्तरसहस्रतम–	1087	पारावारः	सागर
वैक्रमाब्देः	विक्रमसम्वत्	ग्रहिलः	दृढ़तर
महामदकुलम्	महमूद के वंश को	धृतावतारः	अवतार को धारण करना
धर्मराजलोकः	यमलोक	विजयपुराधीश्वरः	बीजापुर का राजा
अध्वनि	मार्ग का	साम्प्रतम्	इससमय
अध्वनीनम्	पथिक	साधेयम्	सिद्ध करना
अनीकिनी	सेना	सारगर्भितम्	महत्वपूर्ण
शीतलशोणितः	ठण्डा रक्त	त्रैवर्णिकः	ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य
पञ्चाशदुत्तरद्वादशशतम्	पचास उत्तर में	आशासन्तानः	आशासमूह
	1200+50=1250 विक्रमसंवत्	वितानः	विस्तार
अब्देः	विक्रमसम्वत्	गोप्यतम्	गुप्त
कान्यकुब्जेश्वरः	कन्नौज का स्वामी	वृत्तान्तम्	सूचना
अकण्टकः	निष्कण्टक	भासुरः	प्रकाशमान
अकीटकिट्टम्	मलरहित	वदनः	मुख
अस्थिगिरयः	हड्डी का पहाड़	व्याजेन	बहाने से
रिङ्ग	चञ्चल	व्रती	प्रतिज्ञा (सङ्कल्प)
तरङ्ग	लहरें	बद्धकरसम्पुटः	हाथ जोड़ना
भङ्गा	व्याप्त	जटिलमुनौ	जटाधारी मुनि
शोणितः	रक्त	सखिसाहाय्येन	मित्रों की सहायता से
शोणा	लाल	समभाणीत्	कहा
शोणीकृता	सोन नदी कर दिया	उदीर्य	कहकर
क्रीतदासः	गुलाम	ऊरीकृतम्	स्वीकार
प्रपौत्रः	नाती का पुत्र	गण्डशैलान्	पर्वत की शिलाओं
वल्लभताम्	शासन को	शनैः-शनैः	धीरे-धीरे
केकयदेशः	पंजाबप्रान्त	निर्मक्षिकम्	निर्जन (एकान्त)
मत्स्यदेशः	राजस्थान	पादचारध्वनिम्	पैरों के चलने की ध्वनि

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
मार्जारः	बिडाल	**शृङ्गः**	सींग
राजपुत्रदेशीय	राजपूत देश	**लाङ्गूल**	पूँछ
पादक्षेपः	पैरों का शब्द	**सत्वः**	प्राणी
शिलापीठम्	शिलाखण्ड	**दावदहने**	दावानल
आक्षेप	आहट	**ह्यः**	बीता हुआ कल
एकतानेन	एकाग्रचित्त से	**भुजङ्गिनी**	सर्पिणी
द्वित्राः	दो या तीन	**दंष्टाः**	डँसे गये
गोपयित्वा	छिपाकर	**कलकलम्**	कोलाहल
चक्षुश्चुम्बिनः	नयनों को स्पर्श करना	**बलीकात्**	छप्पर की ओरी से
कुटिलकचः	टेढ़े केश	**विकट**	भयङ्कर
वामकराङ्गुलिभिः	बायें हाथ की अँगुलियों से	**त्सरौ**	मूँठ को
अपसारयन्	दूर हटाना	**कवोष्ण**	कुछ-कुछ गरम
नीलवस्त्रखण्डः	नीले वस्त्र का टुकड़ा	**शोणिततृषित**	खून की प्यासी
वेष्टितमूर्द्धानम्	ढके हुए सिर	**चन्द्रहासः**	तलवार (रावण की)
हरितकञ्चुकम्	हरे रंग का कुर्ता	**उत्फालम्**	उछालना
श्यामवसनानद्धः	काले कपड़े को	**परश्शतान्**	सैकड़ों
कटितटः	कमर तट	**दिनकरकर**	सूर्य की किरणों
कर्बुराधोवसनम्	चितकबरे रंग का अधोवस्त्र	**चतुर्गुणी**	चौगुना
काक+आसनेन	काक आसन से	**चाकचक्यैः**	तलवार के चमत्कार से
रम्भालवालः	केले के थाल पर	**स्वेदजालम्**	पसीने की बूँदों से व्याप्त
लग्नाधोमुखः	नीचे मुखवाली	**कलितक्लेदः**	परिश्रम
हस्तयुगलम्	दोनों हाथ	**दाडिमः**	अनार
विपर्यस्तः	उल्टा	**तरणाच्छन्न**	चादर के ढँकी
श्मश्रुश्रेणि	मूँछ की पंक्ति	**चितायाम्**	चिता में
छलेन	ब्याज से	**शयानम्**	सोते हुये
पङ्क	कीचड़	**ताम्रचूडः**	मुर्गा
विंशतिवर्षकल्पम्	लगभग 20 वर्ष की उम्र	**ताम्रीकृतम्**	रक्तवर्ण को प्राप्त
कोशात्	म्यान से	**छिन्नकन्धरम्**	कटे हुए सिर वाले
आलापाः	बातचीत	**मृतककञ्चुकम्**	मृतक के कुर्ते से
कन्दरि	पहाड़	**उष्णीष**	पगड़ी
		भृत्येन	सेवक से

किरातार्जुनीयम् के प्रमुख शब्दार्थ

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
श्रियः	लक्ष्मी	**मही**	पृथ्वी
वृत्तिम्	व्यवहार	**महीभुज्**	राजा
वर्णिलिङ्गी	ब्रह्मचारी	**सपत्नी**	सौत
द्वैतवनम्	एक वन का नाम	**मृषा**	झूठ

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
द्विषाम्	शत्रुओं के	**त्रिगणः**	धर्म, अर्थ, काम
विघात	मारना	**ईयिवान्**	प्राप्त होना
रहसि	एकान्त में	**निरत्ययम्**	बाधारहित (निर्बाध)
भूभृत्	राजा	**अत्यय**	नाश (अतिक्रमण)
औदार्यम्	उदारता	**साम**	मधुरवचन
सौष्ठवम्	सुन्दरता	**भूरि**	अत्यधिक
अनुजीवी	सेवक	**वसु**	धन
क्षन्तुम्	क्षमा करना	**मन्युना**	क्रोध से
अमात्य	मन्त्री	**धर्मविप्लवम्**	धर्म का अतिक्रमण
रतिम्	प्रेम	**परेतरान्**	शत्रुओं से इतर (मित्र)
अधिपः	राजा	**क्रियापवर्गेषु**	कार्य समाप्त होने पर
निसर्गः	स्वभाव	**शङ्कितः**	शङ्कायुक्त
दुर्बोधः	बहुत कठिनाई	**उपायाः**	उपाय
विक्लव	क्षीणता	**परिबृंहितायतीः**	उन्नतियुक्त भविष्य वाली
निगूढम्	गुप्त	**विनियोगसत्क्रिया**	प्रयोग रूपी सत्कार से युक्त
नयवर्त्म	नीतिमार्ग	**उपायन**	उपहार
अवेदि	जाना	**अयुग्मच्छद**	सप्तपर्ण
दुरोदरः	जुँआ	**अजिरम्**	आँगन
छद्म	छल	**आस्थान**	सभाभवन
सुयोधनः	दुर्योधन	**अश्व**	घोड़ा
जगतीम्	पृथ्वी को	**सङ्कुलम्**	व्याप्त
जिह्मः	कुटिल	**भृशम्**	अत्यधिक
भूतिम्	ऐश्वर्य	**दन्ती**	हाथी
वरम्	श्रेष्ठ	**कृषीवलैः**	किसानों के द्वारा
शुभ्रम्	निर्मल	**अकृष्टपच्या**	बिना परिश्रम के फसल का पकना
अरिः	शत्रु	**अदेवमातृकाः**	वर्षा के जल के सहारे न रहना (नदी, नहर की सिंचाई)
षड्वर्ग	छः वर्ग	**क्षेमम्**	कल्याण को
नक्तम्	रात्रि	**वसूनि**	धनों को
तन्द्रा	आलस्य	**मेदिनी**	पृथ्वी
पौरुषम्	पुरुषार्थ	**संयति**	युद्ध में
पदवीम्	मार्ग को	**न संहताः**	इकट्ठा न होना
गतस्मयः	अहंकार का चला जाना	**नभिन्नवृत्तयः**	एक दूसरे से भिन्न व्यवहार न होना
सन्ततम्	निरन्तर	**असुभिः**	प्राणों से
सुहृद्	मित्र	**चरैः**	गुप्तचरों से
भक्त्या	अनुराग से	**निःशेषम्**	पूर्णरूप से
विभज्य	बाँटकर	**धाता**	ब्रह्मा
असक्तम्	अनासक्त भाव से	**ईहितम्**	मन्तव्य

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
सज्यम्	डोरी	**परिभ्रमन्**	भ्रमण करता हुआ
जिह्मः	कुटिल	**अन्तर्गिरिः**	पर्वतीय प्रदेश
शासनम्	आज्ञा	**वृकोदरः**	भीम
धनुः	धनुष	**प्राज्यम्**	अत्यधिक
प्रलीन	आधीन	**धनञ्जयः**	अर्जुन
आवारिधिः	समुद्रपर्यन्त	**वसु**	धन
एष्यतीः	आने वाली	**अकुप्य**	बहुमूल्य धन
भियः	विपत्तियाँ	**वासव**	इन्द्र
दुरन्ता	दुःखदायी	**वासवोपमः**	अर्जुन
इनः	श्रेष्ठ	**उत्तरान् कुरुन्**	उत्तरकुरु नामक देश
उदाहृतात्	उच्चारित किये गये	**वल्कवासांसि**	वृक्षों की छाल के वस्त्रों को
आखण्डलसूनुः	अर्जुन	**विष्वक्**	सब ओर से
विधेयम्	योग्य	**कचाचितौ**	बालों से व्याप्त
आशु	शीघ्र	**अग**	पर्वत
परप्रणीतानि	दूसरों के द्वारा कही गयी	**गज**	हाथी
ईरयित्वा	कहकर	**कठिनी**	कठोर
कृष्णा	द्रौपदी	**तावकीम्**	तुम्हारी
सदनम्	घर	**प्रसभम्**	बलपूर्वक
अपाकृती	अपमान	**आधिः**	मानसिक व्यथा
विनियन्तुम्	सहन करने में	**धियम्**	बुद्धि को
द्रुपदात्मजा	द्रौपदी	**महाधनम्**	बहुमूल्य
उदाजहार	बोली	**अदभ्रदर्भाम्**	कुशों से व्याप्त
प्रमदा	नारी	**शिवारुतैः**	शृगालियों (सियारिन) की ध्वनि
अधिक्षेपः	अपमान	**अशिवः**	अमङ्गल
दुराधयः	दुष्ट मानसिक व्यथाएँ	**अन्धसा**	अन्न से
अखण्ड	सम्पूर्ण	**उपनीतम्**	प्राप्त होना
धामभिः	तेज से	**वपुः**	शरीर
मतङ्गः	उन्मत्त हाथी	**कार्श्यम्**	कृशता
स्त्रक्	माला	**द्विजातिशेषेण**	ब्राह्मणों के भोजन करने से बचा हुआ
अपवर्जिता	खो देना	**आलूनशिखेषु**	शिखाओं के तोड़ने वाले
निशित	तीक्ष्ण	**बर्हिषाम्**	कुशों से
इषुः	बाण	**स्त्रजाम्**	मालाओं के
कुलजाम्	कुल परम्परा से प्राप्त	**द्विषन्निमित्ता**	शत्रुओं के कारण
उच्छिखः	ऊपर उठी हुई लपटें	**अपर्य्यासित**	अविनष्ट (जो नष्ट न हो)
अबन्ध्यः	जो बाँझ न हो	**धाम**	तेज
अमर्षशून्यः	क्रोधरहित	**प्रसीद**	प्रसन्न होना
विद्विषः	शत्रु	**सन्धेहि**	धारण करना
		निःस्पृहाः	जिसकी ईर्ष्या निकल गयी (निष्काम)

संस्कृतशब्दः	अर्थः
अवधूय	जीत करके
धामवताम्	तेजस्वियों में
पुरःसराः	अग्रणी
सुदुःसहम्	असहनीय
निकारम्	अपमान
क्षामम्	शान्ति
पर्येषि	मानना
कार्मुकम्	धनुष
लक्ष्मीपतिलक्ष्म	राजचिन्ह से युक्त
निकृतिः	अपमान
भूरिधाम्नः	परमपराक्रमी
समयपरिरक्षणम्	प्रतिज्ञा का पालन करना
क्षितीशाः	राजा लोग
सोपधि	छलपूर्वक
सन्धिदूषणानि	किये गये समझौते को भङ्गकर देना
नियोगः	नियोजित
मग्नम्	डूबना
दिनादौ	प्रभातकाल में
रिपुतिमिरम्	शत्रुसदृश अन्धकार को
उदीयमानम्	उगते हुए

मेघदूतम् का शब्दार्थ

संस्कृतशब्दः	अर्थः
जनकतनया	सीता
प्रमत्तः	असावधान
कान्ता	प्रिया
अस्तङ्गमितमहिमा	नष्ट महिमा
स्वाधिकारात्	अपने कार्य से
अद्रौ	पर्वत पर
अबला	प्रिया
विप्रयुक्तः	अलग (वियुक्त)
कनकवलयः	स्वर्णकङ्गन
भ्रंशरिक्तः	गिरने से रिक्त
प्रकोष्ठः	कलाई
आश्लिष्टः	सटा हुआ
सानुम्	चोटी
वप्रकीडापरिणतः	वप्रकीडा में तिरछा प्रहार करना
राजराजः	कुबेर
कौतुकाधानः	उत्कण्ठा से उत्पन्न
अन्यथावृत्तिः	दूसरे प्रकार का व्यवहार
दूरसंस्थे	दूर स्थित होने पर
नभसि	श्रावण मास के
प्रत्यासन्ने	निकट आने पर
दयिता	पत्नी
जीमूतेन	बादल
प्रत्यग्रैः	तत्काल तोड़े गये
कुटज	कुटजपुष्प
व्याजहार	बोलना
धूमज्योतिः	धूम, अग्नि
सलिलमरुतम्	जल, वायु
सन्निपातः	मिश्रण
पटुकरणैः	समर्थ इन्द्रियों वाले
औत्सुक्यम्	उत्कण्ठा
गुह्यकः	यक्ष
कामार्ताः	काम-पीड़ित
चेतनः	चेतन
अचेतनः	जड़
'वैभ्राज'	'वैभ्राज' नामक उद्यान को गन्धर्वों के राजा 'चित्ररथ' ने बनाया था।
प्रकृतिकृपणाः	स्वभाव से दीन
पुष्करावर्तकानाम्	पुष्कर+आवर्तक नाम के वंश
मघोनः	इन्द्र
प्रकृतिपुरुषम्	प्रधानपुरुष
जातम्	उत्पन्न
मोघा	निष्फल
कामरूपम्	इच्छानुसार रूप धारण करने वाले(मेघ)
पयोदः	मेघ
धौतहर्म्या	उज्ज्वल महलों
पवनपदवीम्	वायु मार्ग से (आकाश में)
वनिता	स्त्री
प्रत्ययात्	विश्वास से
आश्वसत्यः	आश्वस्त होकर
अलकम्	बाल
सन्नद्धे	उमड़ने पर
विरहविधुराम्	विरह से व्याकुल

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
जाया	पत्नी	**वन्द्यैः**	वन्दनीय
एकपत्नीम्	पतिव्रता	**रघुपदपदैः**	रामजी के चरण चिन्हों से
भ्रातृजाया	भाभी	**मेखलासु**	मध्य भाग में
अङ्गनानाम्	स्त्रियों के	**एत्य**	प्राप्त कर
अव्यापन्नाम्	जीवित	**उष्णं बाष्पम्**	गर्म भाप
आशाबन्धः	आशा रूपी तन्तु	**चिर विरहजम्**	बहुत समय का वियोग
सद्यः	शीघ्र	**वल्मीकाग्रात्**	बाँवी के अग्रभाग से
विप्रयोगः	वियोग (विरह)	**श्यामं वपुः**	श्याम रंग का शरीर
नुदति	प्रेरित होना	**स्फुरितरुचिना**	चमकती हुई प्रभा वाले
सगन्धः	गर्व से भरा होना	**बर्हेण**	मोर के पंख
आबद्धमालाः	पंक्तिबद्ध	**अतितराम्**	अत्यधिक
बलाकाः	बगुलियाँ	**आयत्तम्**	अधीन
खे	आकाश में	**कृषिफलम्**	खेती का फल
नदति	बोल रहा है	**जनपदवधूः**	ग्राम-रमणियों के
वामः	बायीं ओर	**मालक्षेत्रम्**	माल नामक क्षेत्र को
शिलीन्ध्र	कुकुरमुत्ता	**सीरोत्कषणः**	हल चलाने के कारण
अबन्ध्याम्	उपजाऊ	**लघुगतिः**	शीघ्र गमन करके
मानसोत्काः	मानसरोवर के लिए उत्सुक	**व्रज**	जाना
बिसकिसलयच्छेद	कमल नाल के अग्र भाग के टुकड़े	**सानुमान्**	पर्वत
पाथेय	मार्ग का भोजन	**प्रशमित**	घोर वर्षा
नभसि	आकाश में	**वनोपप्लवम्**	दावानल (वन की आग)
प्रयाणानुरूपम्	यात्रा के अनुकूल	**अध्वश्रमपरिगतम्**	मार्ग के परिश्रम की थकान
पदं न्यस्य	पैर रखकर	**मूर्ध्ना**	चोटी
स्त्रोतसाम्	नदियों के	**सुकृतापेक्षया**	उपकार को मानते हुए
परिलघु	हल्के	**अमरमिथुनः**	देवताओं का जोड़ा
उपभुज्य	उपभोग कर	**भुवःस्तन इव**	पृथ्वी के स्तन के समान
शृङ्गम्	चोटी	**स्निग्धवेणीसवर्णे**	चिकनी बालों की चोटी के समान रंग वाले
किंस्वित्	क्या?	**मुहूर्तम्**	कुछ समय
उन्मुखीभिः	ऊपर की ओर मुख करके	**तोयोत्सर्गः**	जल बरसाना
मुग्धः	भोली-भाली	**द्रुततरगतिः**	शीघ्र गमन करना
सिद्धाङ्गनाभिः	सिद्धों की स्त्रियों द्वारा	**उपलविषमे**	पत्थर से ऊंचे नीचे
दिङ्नागः	दिग्गज	**विशीर्णाम्**	बिखरी हुई
स्थूल	मोटी	**रेवाम्**	नर्मदा नदी
हस्तावलेपान्	सूड़ों के प्रहार को	**वान्तवृष्टिः**	वर्षा करने के बाद
सरसनिचुलात्	सरस वेतों के	**वनगजमदैः**	जंगली हाथियों के मद से
उदङ्मुखः	उत्तर की ओर मुख करके	**वासितम्**	सुगन्धित
तुङ्गम्	उन्नत	**जम्बूकुञ्ज**	जामुन का बागीचा

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
प्रतिहतरयः	जिसका वेग रोका न जा सके (निर्बाधगति)	सभ्रूभङ्गम्	भ्रकुटि विकासयुक्त
		नीचैराख्यम्	नीचैः नामक
अनिलः	वायु	गिरिम्	पर्वत
रिक्तःसर्वः	सभी रिक्त पदार्थ	पण्यस्त्री	वेश्या
नीपम्	कदम्ब का फूल	शिलावेश्मभिः	पत्थर गुफाओं के द्वारा
हरितम्	हरा	नागराणाम्	नागरिकों के
कपिशम्	काले-लाल	वननदीतीरजातानि	पहाड़ी नदियों के किनारे उत्पन्न
सारङ्गाः	भौंरे/मृग/हाथी	उद्यानानाम्	बगीचों के
आघ्राय	सूँघकर	यूथिका	जूही (समूह)
जललवमुचः	पानी की बूँदों की वर्षा करने वाले	गण्डस्वेदाऽपनयन	कपोलों से पसीने को पोंछने से
उर्वी	पृथ्वी	रुजाक्लान्त	पीड़ा से मुरझाये
जग्ध्वा	खाकर	प्रस्थितस्य	प्रस्थान करके
अम्भोबिन्दुः	वर्षा का जल	वक्रः	टेढ़ा
श्रेणीभूताः	पंक्तिबद्ध	सौधोत्सङ्गः	ऊँचे महल
परिगणनया	गिनकर	प्रणयविमुखः	अनुराग से विमुख
सिद्धाः	सिद्ध लोग	पौराङ्गनानाम्	नागरिक स्त्रियों के
स्तनित	गर्जन	लोलापाङ्गै	चञ्चल कटाक्षों वाले
आसाद्य	प्राप्तकर	उत्तराशाम्	उत्तर दिशा में
द्रुतम्	शीघ्र	वीचिक्षोभः	तरङ्गों की हलचल
ककुभसुरभौ	कुटज पुष्पों से सुगन्धित	स्तनितविहगः	कूजते हुए पक्षी
कालक्षेपम्	समय के विलम्ब	श्रेणिकाञ्चीगुणायाः	पंक्तिरूपी करधनी
शुक्लापाङ्गैः	मयूर	स्खलित	लड़खड़ाती
केका	बोली	तटरुहः	नदी के किनारे उगे हुए
व्यवस्येत्	प्रयत्न करना	जीर्णशीर्णः	पुराने पत्ते
आसन्ने	समीप आने पर	अतीत	बहुत दिन
दशार्णाः	दशार्ण देश	कार्श्यम्	कृशता
केतकैः	केतकीपुष्पों से	उपपाद्यः	उपाय करना
गृहबलिभुजाम्	कौए	कोविदः	जानकार
नीडारम्भैः	घोसले बनाने से	अवन्तीम्	अवन्ती प्रदेश
आकुलः	व्याप्त	सुचरितफलैः	पुण्यफलों के
ग्रामचैत्याः	गाँवों के **चौराहों के वृक्ष**	स्वल्पीभूतः	क्षीण होना
परिणतफल	पके फल	गां गतानाम्	भूमि पर आये
कतिपयदिनम्	कुछ ही दिन	दिवःखण्डम्	स्वर्ग का टुकड़ा
प्रथित	विख्यात	श्रीविशाला	सम्पत्तिशाली
सद्यः	तत्काल	विशालापुरीम्	उज्जयिनी
कामुकत्वस्य	कामुकता का	ऊषेषु	उषाकाल में (प्रातःकाल)
अविकलम्	सम्पूर्ण		
चलोर्मिः	चञ्चल तरङ्ग		
तीरोपान्तः	किनारे के समीप		

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
पटुः	कुशल	कुवलय	कमल
मदकलः	मीठी ध्वनि	गन्धवत्याः	गन्धवती
सारसानाम्	सारस पक्षियों के	त्रिभुवनगुरुः	शिव
मैत्री	सम्पर्क (मिलन)	चण्डीश्वरः	शिव
शिप्रावातः	क्षिप्रा नदी की वायु	पुण्यं धाम	महाकाल धाम
सुरतग्लानिम्	रतिक्रीड़ाजन्य थकान	जलधर!	बादल
कोटिशः	करोड़ो	आसाद्य	प्राप्त करके
विपणिरचितान्	बाजारों में सजाकर	अविकल	सम्पूर्ण
तारान्	शुद्ध	नयनविषयम्	देखना
हारान्	हारों को	अत्येति	छिपना (ओझल)
शंखशुक्तीः	शंख और सीपियों	श्लाघनीय	प्रशंसनीय
शष्पश्यामान्	घास के समान हरी	शूलिनः	शिव जी के
उन्मयूखः	ऊपर की ओर उठी किरणें	बलिपटहताम्	पूजन के समय का बाजा
प्ररोहान्	अंकुर	आमन्द्राणाम्	गम्भीर
विद्रुमाणाम्	मूँगे	पादन्यासैः	पैरों की गति
भङ्गाः	टुकड़े	लीला	विलासपूर्वक
सलिलनिधयः	समुद्र	अवधूतः	हिलाना
वत्सराजः	उदयन	क्वणितरशनाः	शब्द करती करधनी
हैमम्	स्वर्णमय	खचितवलिभिः	चमकते दण्ड से
तालद्रुमवनम्	ताड़ के वृक्षों का वन	चामरः	चँवर
नलगिरिः	हाथी का नाम	क्लान्तः	थकावट
उत्पाट्य	उखाड़कर	मधुकरश्रेणि	भौरों की पंक्ति
आगन्तून्	दूसरे देश से आये हुये	भवानी	भवानी (पार्वती)
वाहाः	घोड़े	पशुपतेः	शिवजी के
पत्रश्यामाः	हरे रंग के	सौदामिनी	बिजली
हयः	घोड़ा	पारावत	कबूतर
संयुगे	युद्ध में	करुधिः	किरणरूपी हाथ
तस्थिवांसः	खड़े रहना	असूया	दोष (गुणों में दोष निकालना)
चन्द्रहासः	चन्द्रहास तलवार	अनल्पः	अत्यधिक
व्रणाङ्कः	घाव का चिन्ह	चटुलः	चञ्चल
जालः	झरोखा (खिड़की)	शफरः	मछली
उपचितवपुः	बढ़े हुये शरीर वाला	उद्वर्तन	उछलना
भवनशिखिभिः	गृहमयूरों से	मोघः	विफल
ललितवनिता	सुन्दरियों के	वानीरशाखा	बेंत की शाखा
पादरागाङ्कितेषु	चरणों से लगे लाक्षारस से चिह्नित	सलिलवसनम्	जलरूपी वस्त्र
अध्वखेदम्	मार्ग की थकान	उदुम्बरः	गूलर
नयेथाः	दूर करना	देवपूर्वगिरिम्	देवगिरि
		स्कन्दः	कार्तिकेय

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
व्योमगङ्गा	आकाशगङ्गा	**करका**	ओले
पुष्पासारैः	फूलों की तीव्र वर्षा से	**दृषदि**	शिलापट
स्नपयतु	नहलाना	**अर्धेन्दुमौलिः**	शङ्कर
नवशशिभृत्	शिव	**करणविगमः**	शरीरान्त
वासवीनां चमूनाम्	इन्द्र की सेना	**अनिलैः**	वायु से
हुतवहः	अग्नि	**अनलः**	अग्नि
बर्हम्	पंख	**कीचकाः**	बाँस
शशिरुचा	चन्द्रमा की चाँदनी	**निर्ह्रादः**	गर्जन
नर्तयेथाः	नचाना	**मुरजः**	मृदङ्ग (बाजा)
शरवणभवः	कार्तिकेय	**प्रालेयाद्रिः**	हिमालय पर्वत
सिद्धद्वन्द्वैः	सिद्ध दम्पत्तियों	**भृगुपतिः**	परशुराम
शार्ङ्गिणः	श्रीकृष्ण	**उदीची**	उत्तर दिशा
पृथुम्	मोटी/मोटा	**दशमुखः**	रावण
इन्द्रनीलम्	इन्द्रनीलमणि	**त्रिदशः**	देवता
समरः	युद्ध	**त्रिदशवनिता**	देवताओं की स्त्रियाँ
लाङ्गलीशः	बलराम	**राशीभूतः**	एकत्रित हुए
अभिमतरसाम्	इच्छित स्वाद वाली	**त्र्यम्बकः**	शिव
रेवती	बलराम की पत्नी	**द्विरददशनः**	हाथी के दाँत
हाला	मदिरा	**मेचकः**	काला/नीला
शैलराजः	हिमालय	**हलभृतः**	बलराम
जह्नोःकन्या	जह्नु की कन्या (गङ्गा)	**भुजगवलयः**	सर्प रूपी कङ्कण
सुरगजः	ऐरावत हाथी	**गौरी**	पार्वती
तुषारः	बर्फ	**जलौघः**	जल का प्रवाह
निषण्णः	बैठे हुये	**सोपानत्वम्**	सीढ़ी
त्रिनयनः	शिवजी	**यन्त्रधारा**	फव्वारा
पङ्कः	कीचड़	**हेमाम्भोजः**	सुवर्ण कमल
स्कन्धः	तना	**कल्पद्रुमः**	कल्पवृक्ष (देववृक्ष)
उल्काक्षयति	चिनगारियाँ	**धुन्वन्**	हिलाते हुये
दावाग्निः	जङ्गल की आग	**अंशुकानि**	सूक्ष्म वस्त्रों के
आपन्नः	कष्ट	**नगेन्द्रः**	पर्वतराज
प्रशमनः	दूर करना	**अभ्रवृन्दम्**	बादलों का समूह
शरभाः	शरभ (आठ पैरों वाले जन्तु)		

शब्द	अर्थ	पुस्तक
वाराङ्गना	वेश्या	नीतिशतकम्
उपसृष्टा	वेश्या	शुकनासोपदेश
वारमुख्या/पण्यस्त्री	वेश्या	मेघदूतम्
गणिका	वेश्या	मृच्छकटिकम्

कादम्बरी (शुकनासोपदेश) का शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
अतिक्रामत्सु	– बीत जाने पर
केषुचित्	– कुछ
सम्भारः	– समूह
विनीततरम्	– अपेक्षाकृत अधिक विनम्र
विदितवेदितव्यस्य	– ज्ञातव्य विषय को जानने वाले
निसर्गतः	– स्वभाव से
अभानुभेद्यम्	– सूर्य द्वारा भेदन करने योग्य नहीं
अरत्नालोकोच्छेद्यम्	– रत्नों के प्रकाश से भी जो छेदन करने योग्य नहीं है।
अतिगहनम्	– अत्यन्त गम्भीर
दारुणः	– दुष्कर/कठोर/भयानक
लक्ष्मीमदः	– धन का घमण्ड
अञ्जनवर्तिसाध्यम्	– काजल लगाने की सलाई।
अशिशिरोपचारहार्यः	– शीतल उपचारों से भी दूर नहीं होने वाला
दर्पदाहज्वरोष्मा	– घमण्ड रूपी तेज बुखार की गर्मी
रागमलावलेपः	– आसक्तिरूपी मल का लेपन
अजस्त्रम्	– निरन्तर
क्षपा	– रात्रि
इत्यतः	– इसलिए
अभिधीयसे	– कहा जा रहा है
अभिनवयौवनत्वम्	– नयी युवावस्था होना
सर्वाविनयानाम्	– सब उद्दण्डताओं की या सब बुराइयों की
आयतनम्	– निवासस्थान
समवायः	– समूह
कालुष्यम्	– कलुषता अर्थात् दोषयुक्त
उपयाति	– प्राप्त हो जाती है।
यूनाम्	– युवकों को
वात्या	– आँधी
दुरन्ता	– दुष्परिणाम वाली।
मधुरतराणि	– अतिशय मृदु
अपगतमले	– नष्ट हो गए हैं मल या दोष जिसके ऐसे।

शब्द	अर्थ
विशन्ति	– प्रवेश करते हैं
श्रवणस्थितम्	– कानों में विद्यमान
करिणः	– हाथी
आननम्	– मुख
प्रशमहेतुः	– शान्ति का कारण या उपाय
अमलीकुर्वन्	– स्वच्छ करते हुए।
अनलः	– अग्नि
अन्वयः	– वंश या कुल
श्रुतम्	– शास्त्रीय ज्ञान
कुसुमशर	– कामदेव
क्षमम्	– समर्थ
अनारोपितमेदोदोषम्	– नहीं धारण किया है चर्बी के दोष अर्थात् मोटेपन को
अग्राम्यम्	– गवाँरूपन से रहित
अतीतज्योतिः	– आभाशून्य
आलोकः	– प्रकाश
प्रजागरः	– निरन्तर जागते रहना
प्रतिशब्दकः	– प्रतिध्वनि
श्वयथुः	– सूजन (शोध)
पृथुः	– विस्तृत (फैलावदार)
स्थगितः	– रुक गये
विवराः	– छिद्र
गजनिमीलितेन	– हाथी के समान आँख मूँदकर
अवधीरयन्तः	– तिरस्कार करते हुए।
विह्वला	– व्याकुल
अलीकम्	– मिथ्या
तन्द्रा	– आलस्य
अभिनिवेशः	– प्रवृत्ति (लगन)
सुभटः	– वीरयोद्धा
खड्गमण्डलम्	– तलवार समूह
उत्पलवन	– कमलवन
विभ्रमभ्रमरी	– विलास करने वाली भ्रमरी (भौंरी)
पारिजातपल्लवेभ्यः	– मन्दार के पत्तों से
इन्दुशकलात्	– चन्द्रमा के टुकड़े से
मदम्	– नशे को

शब्द	अर्थ
अतिनैष्ठुर्यम्	– अत्यन्त निष्ठुरता
उद्गता	– उत्पन्न हुई
अनार्या	– दुष्टा
लतापञ्जरविधृता	– लताओं के पिंजरे में रखी गयी।
अपक्रामति	– भाग जाती है।
प्रपलायते	– पलायन कर जाती है।
कुलक्रमम्	– वंश परम्परा को
वैदग्ध्यम्	– वाक्पटुता
गन्धर्वनगरलेखा	– मायानगरी की आकृति
विधृता	– धारण की गई
विविधगन्धगजगण्डमधु-पानमत्ता	– अनेक हाथियों के कपोलों के मद का पान करने में मस्त
पारुष्यम्	– कठोरता
अप्रत्ययः	– अविश्वसनीय
भूभुजम्	– राजा को
विटपकान्	– वृक्षशाखाओं को
अध्यारोहति	– अपना आश्रय बनाती है।
संक्रमणम्	– संसर्ग
पातालगुहा	– पातालरूपी गुफा
तमोबहुला	– अत्यधिक अन्धकार वाली
प्रावृड्	– वर्षाऋतु
अभिजातम्	– कुलीन
अहिमिव	– सर्प की भाँति।
परिहरति	– त्याग देती है।
पातकिनमिव	– पापी मनुष्य के समान
उपसर्पति	– पास जाती है।
मनस्विनम्	– महापुरुष को
इन्द्रजालम्	– जादू
ऊष्माणम्	– गर्मी को
आदधानापि	– धारण करने वाली भी
बलोपचयम्	– शक्ति की वृद्धि को
लघिमानम्	– निर्बलता को
दीपशिखा	– दीपक की लौ।
उद्वमति	– उगलती है।
संवर्धनवारिधारा	– पुष्टि हेतु जल की धारा

शब्द	अर्थ
तृष्णाविषवल्लीनाम्	– सांसारिक महत्वाकांक्षी रूपी विषलताओं की
व्याधगीतिः	– शिकारी का गीत
परामर्शधूमलेखा	– मिटाने के लिए धुएँ की रेखा
विभ्रमशय्या	– विलास हेतु स्थापित की गई सेज
निवासजीर्णवलभी	– रहने के लिए अटारी।
तिमिरोद्गतिः	– रतौंधी का प्राकट्य
निम्नगा	– नदी
ग्राहाः	– मगरमच्छ
आपानभूमिः	– मधुशाला
आवासदरी	– निवासार्थ गुफा
आशीविषाः	– विषैले नाग।
उत्सारणवेत्रलता	– हटाने के लिए बेंत की छड़ी
अकालप्रावृट्	– असमय बरसात
विसर्पणभूमिः	– पीड़ास्थली या फैलने की जगह।
विस्फोटकानाम्	– फोड़े-फुंसियों की।
कामकरिणः	– कामदेवरूपी हाथी के लिए।
वध्यशाला	– हत्यागृह
अपरिज्ञातया	– अनजान होने वाली
उपगूढः	– आलिंगित किया गया
विप्रलब्धः	– ठगा गया
प्रस्तावना	– आमुख
कदलिका	– केले का बगीचा
पुस्तमयी अपि	– (मिट्टी या लकड़ी की) गुडिया बने रहने पर भी
इन्द्रजालम्	– जादू
अभिसन्धत्ते	– छल करती है
वञ्चयति	– ठगती है
सम्मार्जनी	– झाड़ू
क्षान्तिः	– क्षमा
उष्णीषः	– पगड़ी
अवच्छाद्यते इव	– मानो ढँक दी जाती है
आतपत्रम्	– छाता
चामरपवनैः	– चँवर की हवा से
उपह्रियते इव	– मानो दूर कर दी जाती है

शब्द	अर्थ
वेत्रदण्डैः	– बेंत की छड़ी से
उत्सार्यन्ते इव	– मानो दूर हटा दिये जाते हैं।
ध्वजपल्लवैः	– ध्वजदण्ड के वस्त्र के पल्ले से
परामृश्यते इव	– मानो पोंछ दी जाती है
शकुनिः	– पक्षी
खद्योतः	– जुगनूँ
दुष्टासृजेव	– दूषित रुधिर के समान
सत्त्वैः	– हिंसक जन्तुओं से
अवष्टभ्यन्ते इव	– मानो हठात् पकड़ लिये जाते हैं
मदनशरैः	– कामदेव के बाणों से
मर्माहताः	– बुरी तरह घायल हुए
धनोष्मणा	– ऐश्वर्य की गर्मी से
कुलीराः	– केकड़ा
तिर्यक्	– टेढ़े
पङ्गवः इव	– लँगड़ों के समान
मृषावादः	– मिथ्याभाषण
जल्पन्ति	– बोलते हैं
सप्तच्छदतरव इव	– 'सप्तपर्ण' के वृक्षों के समान
शिरःशूलम्	– सिरदर्द
आसन्नमृत्यव इव	– नजदीक मृत्यु वाले लोगों के समान
कालदंष्टा इव	– भयङ्कर साँपों से डँसे हुए लोगों के समान
जातुषाभरणानि इव	– लाह से बने गहनों के समान
दुष्टवारणा इव	– मदोन्मत्त हाथियों के समान
कनकमयम्	– स्वर्णमय
इषवः	– बाण
शातयन्ति	– नष्ट कर देते हैं
अकालकुसुमप्रसवा इव	– पुष्पों के असामयिक विकास के समान
तैमिरिका इव	– नेत्र-रोगियों के समान
उपसृष्टा इव	– वेश्या के समान
क्षुद्राधिष्ठितभवनाः	– नीचपुरुषों से युक्त राजप्रसाद वाले
प्रेतपटहा इव	– मृतकों के समीप बजाये जाने वाले बाजे की भाँति
महापातकाध्यवसाया इव	– ब्रह्महत्या आदि महापातकों के प्रयास के समान

शब्द	अर्थ
अनुदिवसम्	– प्रतिदिन
आध्मातमूर्तयः भवन्ति इव	– मानों फूल जाते हैं (तोंद निकल आती हैं)
वल्मीकिः	– बॉबी
द्यूतम्	– जुआ
प्रमत्तता	– उन्मत्तता
अजितभृत्यता	– भृत्याधीनता अर्थात् गलती करने पर भी नौकरों पर शासन नहीं करना।
पिशितम्	– मांस
आस्थाननलिनीबकैः	– राजपरिषद् रूपी कमलिनीकानन में रहने वाले बँगुले की भाँति
प्रतारणकुशलैः	– ठगने में निपुण
धूर्तैः	– लम्पटों के द्वारा
अलीकाभिमानाः	– झूठे अभिमान
अनुग्रहम्	– अनुकम्पा
मिथ्या	– झूठ
द्विजातीन्	– ब्राह्मणों को
अर्चनीयान्	– पूजनीय लोगों को
अनर्थकायासान्	– व्यर्थ परिश्रम
जरा	– वृद्धावस्था
पार्श्वे	– बगल में
अहर्निशम्	– दिन-रात
अनवरतम्	– निरन्तर
उपरचिताञ्जलिः	– हाथ जोड़कर
अतिनृशम्	– अत्यन्त निष्ठुर
अभिचारक्रिया	– मारण क्रिया
विटैः	– लम्पट कामी पुरुषों के द्वारा
भुजङ्गैः	– लम्पटों के द्वारा
सेवकवृकैः	– सेवकरूपी भेड़ियों के द्वारा
वनिताभिः	– रमणीजनों के
मदनेन	– कामदेव के द्वारा
प्रकृत्या एव	– स्वभाव से ही
धीरम् अपि	– गम्भीर को भी
उपशशाम	– चुप हो गये

नीतिशतकम् का शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
दिक्	दिशा	**छेत्तुम्**	काटने का
अनवच्छिन्न	न ढका हुआ या न आवृत किया जाने वाला	**सन्नह्यते**	प्रयास करता है।
		क्षाराम्बुधेः	समुद्र का लवण
चिन्मात्र	ज्ञानस्वरूप	**ईहते**	चाहता है।
तेजसे	ज्योति स्वरूप को	**विधात्रा**	ब्रह्मा जी ने
शान्ताय	विकाररहित/कल्याणकारक को	**स्वायत्तम्**	स्वाधीन
बोद्धारः	जानने वाला (विद्व्ज्जन)	**एकान्तगुणम्**	अत्यन्त गुणकारी
प्रभवः	स्वामी (समर्थलोग)	**सर्वविदाम्**	विद्वानों के
स्मयदूषिताः	अहंकार में चूर हैं।	**किञ्चिज्ज्ञः**	अल्पज्ञ
अबोधोपहताः	अज्ञान से विनष्ट	**द्विपः**	हाथी
अज्ञः	मूर्खजन	**अवलिप्तम्**	गर्व से प्रयुक्त
विशेषज्ञः	विशेष जानने वाला	**बुधजनसकाशात्**	विद्वानों के संसर्ग से
ज्ञानलवदुर्विदग्धम्	अल्पज्ञान से गर्वित	**व्यपगतः**	दूर हो गया
न रञ्जयति	प्रसन्न नहीं कर सकता	**श्वा**	कुत्ता
दंष्ट्रान्तरात्	दाढों के बीच से	**कृमिकुलचितम्**	कीड़ों का समूह
प्रसह्य	बलपूर्वक	**लालाक्लिन्नम्**	मुख की लार से गीले
उद्धरेत्	निकाल ले	**विगन्धि**	दुर्गन्धपूर्ण
प्रचलदूर्मिमालाकुलम्	चंचल तरंगों की पंक्तियों से व्याप्त	**जुगुप्सितम्**	घिनौने
सन्तरेत्	पार कर ले	**निरामिषम्**	मांसरहित
प्रतिनिविष्टः	हठी	**निरुपमरसप्रीत्या**	अत्यन्त स्वादयुक्त की भाँति।
पीडयन्	दबाता हुआ	**पार्श्वस्थम्**	समीपवर्ती
सिकतासु	बालुओं में	**सुरपतिम्**	इन्द्र को
लभेत	पा ले	**विशङ्कते**	शङ्का करने लगता है।
पिपासार्दितः	प्यास से सताया हुआ	**परिग्रहफल्गुताम्**	स्वीकृत वस्तुओं की निस्सारता को
मृगतृष्णिकासु	मृगमरीचिकाओं में	**न गणयति**	विचार नहीं करता।
पर्यटन्	घूमता हुआ	**शार्वम्**	शिवजी के
शशविषाणम्	खरगोश की सींग को	**पशुपतिशिरस्तः**	शिवजी के शिर से
आसादयेत्	प्राप्त कर ले	**क्षितिधरम्**	(हिमालय) पर्वत पर
प्रतिनिविष्टः	दुराग्रही	**उत्तुङ्गात्**	ऊँचे
सुधास्यन्दिभिः	अमृत बरसाने वाली	**महीध्रात्**	पर्वत से (हिमालय से)
सूक्तैः	सुन्दर उक्तियों द्वारा	**अवनिम्**	पृथ्वी से
असौ	वह व्यक्ति	**अधोऽधः**	नीचे-नीचे
बालमृणालतन्तुभिः	कमल के कोमल रेसों से	**स्तोकम्**	कम (थोड़ा)
व्यालम्	बिगड़े हाथी	**उपगता**	पहुँचकर
रोद्धुम्	रोकने को	**विनिपातः**	पतन
समुज्जृम्भते	अभ्यास करता है।	**हुतभुक्**	आग
शिरीषकुसुमप्रान्तेन	कोमल शिरीष फूल की नोंक से	**समदः**	उन्मत्त

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
निशिताः	तीक्ष्ण	**विष्टपः**	संसार
गोगर्दभौ	सांड और गधे को	**सूनुः**	पुत्र
भेषजसङ्ग्रहैः	औषधि के समूह से।	**स्निग्धम्**	स्नेहशील
शास्त्रविहितम्	शास्त्रोक्त	**निष्क्लेशलेशम्**	जिसमें किसी प्रकार का क्लेश नहीं
पुच्छविषाणहीनः	पूँछ और सींग से रहित	**विभवः**	सम्पत्ति
भागधेयम्	सौभाग्य की बात है।	**तृष्णा**	प्यास
भुवि	पृथ्वी पर	**अनुपहतविधिः**	निर्विवाद रूप से कहा हुआ
भारभूताः	भार के रूप में	**श्रेयसाम्**	कल्याणों का
चरति	विचरण करते हैं।	**प्रतिहन्यमानाः**	पीड़ित होने पर भी।
पर्वतदुर्गेषु	पहाड़ों के दुर्गम स्थानों में।	**अभ्यर्थ्याः**	प्रार्थनीय
भ्रान्तम्	घूमना	**न याच्यः**	माँगने योग्य नहीं।
उपस्कृतः	परिष्कृत	**न्याय्या**	उचित
प्रदेयम्	देने योग्य	**असुकरम्**	कठिन है
आगमाः	शास्त्रों के रहस्य वाले	**अनुविधेयम्**	अनुसरण किया जाय
जाड्यम्	मूर्खता	**असिधाराव्रतम्**	तलवार की धार जैसा तीक्ष्ण व्रत
कुपरीक्षकाः	अनुचित परीक्षण करने वाले।	**क्षुत्क्षामः**	भूख से सताया हुआ
कुत्स्याः	निन्दनीय	**शिथिलप्राणाः**	बलहीन
अर्घ्यतः	मूल्य से	**आपन्नः**	प्राप्त करने पर
शम्	आनन्द	**इभेन्द्रः**	हाथी
पराम्	अत्यन्त	**कुम्भः**	गण्डस्थल
उज्झत	छोड़ दो	**ग्रासः**	खाने में
अन्तर्धनम्	गुप्तधन	**मानमहताम्**	अभिमान से उन्नत व्यक्तियों में
बिसतन्तुः	कमल का रेशा	**वसा**	चर्बी
अभिनव	नई-नई	**निर्मांसम्**	मांसरहित
मदलेखा	मदपंक्ति से	**अस्थिकम्**	हड्डी के टुकड़े
वारणानाम्	हाथियों का	**जम्बुकम्**	सियार
अम्भोजिनी	कमलिनी	**कृच्छ्रगतः**	विपत्तियों में पड़े हुए।
वैदग्ध्यकीर्तिम्	चतुरता के यश को	**पिण्डदस्य**	खिलाने वाले व्यक्ति के
मूर्धजाः	बाल	**लाङ्गूलम्**	पूँछ
प्रच्छन्नगुप्तम्	अन्दर छिपा हुआ।	**गजपुङ्गवः**	गजश्रेष्ठ
क्षान्तिः	क्षमा	**चाटुशतैः**	सैकड़ों बार पुकारने पर
ज्ञातिः	बन्धु-बान्धव	**समुन्नतिः**	उन्नति को
अनवद्या	प्रशंसनीय/निष्कलंक	**कुसुमस्तबकस्य**	फूल के गुच्छे की
व्रीडा	लज्जा	**शीर्यते**	क्षीण हो जाता है।
शाठ्यम्	कुटिलता	**शीर्षावशेषाकृतिः**	सिर मात्र बची है, आकृति जिसकी
आर्जवम्	सरलता	**भासुरौ**	चमकते हुए
मानोन्नतिम्	सम्मान की वृद्धि को	**पर्वणि**	अमावस्या और पूर्णिमा
		भुवनश्रेणिम्	भू आदि लोकों की पङ्क्ति को

शब्द	अर्थ
कमठपतिना	कच्छप राजा के द्वारा
पयोधिः	समुद्र
क्रोडाधीनं कुरुते	अपनी गोद में ले लेता है।
अहह !	आश्चर्य
निःसीमानः	असीम होती है।
तुषाराद्रेः	हिमालय के
उद्गच्छद्वहल-	ऊपर निकलती हुई प्रचण्ड अग्नि-
दहनोद्गारगुरुभिः	की ज्वालाओं से भयंकर।
मघवा	इन्द्र
कुलिशः	वज्र
पक्षच्छेदः	पंखों का कट जाना
क्लेशविवशे	दुःखों से भरे होने पर।
इनकान्तः	सूर्यकान्तमणि
निकृतिम्	अपमान
कपोलभित्तिषु	गण्डस्थलों में
तेजसः	तेजस्विता का
गुणगणः	गुणों का समूह
शैलतटात्	पहाड़ की चोटी से
अभिजनः	कुलीनता
सन्दह्यताम्	जल जावे
तृणलवप्रायाः	तिनके टुकड़े जैसे निरर्थक
अविकलानि	बिना किसी न्यूनता की
अप्रतिहता	अप्रतिहत
अर्थोष्मणा	धन के गर्व से
कुलीनः	ऊँचे कुल का
काञ्चनम्	सुवर्ण को
दौर्मन्त्र्यात्	बुरी मन्त्रणा से
यतिः	संन्यासी
लालनात्	लाड़ प्यार से
खलोपासनात्	दुष्टों की सेवा से
प्रवासाश्रयात्	दूर देश में रहने से
प्रमादात्	अनवधानात्/असावधानी से
शाणः	सान पर
उल्लीढः	रगड़ा गया
हेतिदलितः	शस्त्रों से घायल
श्यानपुलिनाः	सूखे तटों वाली नदियाँ

शब्द	अर्थ
सुरतमृदिता	रति से शिथिल शरीर वाली स्त्री
गलितविभवाः	नष्ट सम्पत्ति वाले
तनिम्ना	कृशता से भी
परिक्षीणः	निर्धन
कलयति	मानता है।
अनैकान्त्यात्	अनियतता होने से
क्षितिधेनुम्	गोतुल्य पृथ्वी को।
पुषाण	पुष्ट करो
अनिशम्	निरन्तर
अनृता	अयथार्थ
परुषा	कठोर
वदान्या	उदार
वाराङ्गना	वेश्या
पार्थिवोपाश्रयेण	राजाओं का आश्रय लेने से
निजभालपट्टलिखितम्	अपने भाग्य में लिखित
महत्	अधिक
मेरौ	मेरु पर्वत पर
वित्तवत्सु	धनिकों के समान
मा कृथा	मत करो।
अम्भोदाः!	हे श्रेष्ठ मेघ
गोचरः	ज्ञात
कार्पण्योक्तिम्	दीनवचन
अकारणविग्रहः	बिना कारण के लड़ना-झगड़ना
स्पृहा	इच्छा करना
असहिष्णुता	असहनशीलता
प्रकृतिसिद्धम्	स्वभावसिद्ध
परिहर्तव्यः	त्याज्य है।
ह्रीमति	लज्जा
जाड्यम्	मूढ़ता
कैतवम्	धूर्तता
निर्घृणता	क्रूरता
विमतिता	बुद्धिहीनता
मुखरता	वाचाल
न अङ्कितः	कलङ्कित नहीं होता
चेत् (तर्हि)	तो
पिशुनता	चुगलखोरी
सौजन्यम्	सज्जनता

शब्द	अर्थ
दिवसधूसरः	दिन में मलिन
गलितयौवना	क्षीण यौवन
विगतवारिजम्	कमलहीन
नृपाङ्गणगतः	राजा की सभा में समागत
शल्यानि	कण्टक (काँटे)
चण्डकोपानाम्	अति क्रोधी
भूभुजाम्	राजाओं का
पावकः	अग्नि
जुह्वानम्	यज्ञकर्ता
होतारम्	होतृ नामक ऋत्विज् को
मूकः	गूँगा
प्रवचनपटुः	बोलने में चतुर
वातुलः	बातूनी
अप्रगल्भः	प्रतिभाहीन है।
भीरुः	डरपोक
अभिजातः	उच्चकुल में उत्पन्न
अवाप्तविभवस्य	सम्पत्ति को प्राप्त किये गये।
पूर्वार्द्धपरार्धभिन्ना	पूर्वाह्न और अपराह्न से भिन्न रूपवाली
आरम्भगुर्वी	प्रारम्भ में बड़ी
क्षयिणी	क्षय होने वाली।
लघ्वी	छोटी
लुब्धकधीवरपिशुनाः	व्याध मल्लाह और दुर्जन (चुगुलखोर)
वाञ्छा	इच्छा
व्यसनम्	आसक्ति
स्वयोषिति	अपनी स्त्री में
शूली	शिवजी
अभ्युदये	सम्पत्तिकाल में
सदसि	सभा में
प्रच्छन्नम्	गुप्त रखना
गृहमुपगमे	घर आने पर (अतिथि)
सम्भ्रमविधिः	तत्परता से सत्कार करना
अनुत्सेकः	गर्व न होना
निरभिभवसाराः	सर्वथा तिरस्कार रहित वर्ण न करना
असिधाराव्रतम्	तलवार की धार जैसा कठोर व्रत
श्लाघ्यः	प्रशंसनीय
अतुलम्	असीम

शब्द	अर्थ
स्वच्छ	निर्मल
वृत्तिः	भावना (व्यवहार)
अधिगतम्	ज्ञात
मण्डनम्	आभूषणम्
उत्पलकोमलम्	कमल के समान कोमल
आपत्सु	विपत्ति में
कर्कशम्	कठोर
सन्तप्तायसि	अग्नि से सन्तप्त लोहे पर
मुक्ताकारतया	मोती के आकार की भाँति।
भर्तुः	पति का
कलत्रम्	पत्नी
आपदि	आपत्ति में
समक्रियम्	समान व्यवहार वाला हो।
यति	संन्यासी
पत्तने	नगर में
दरी	गुफा (कन्दरा)
नम्रत्वेन	विनयशीलता से
उन्नमन्तः	उन्नति करने वाले
ख्यापयन्तः	प्रख्यात करने वाले,
फलोद्गमैः	फलों के आने से
नवाम्बुभिः	नवीन जल से।
दूरविलम्बिनः	दूर तक लटके
अनुद्धताः	विनीत
विभाति	शोभित
पाणिः	हाथ
कायः	शरीर
निवारयति	रोकता है।
निगूहति	छिपाता है।
अभ्यर्थितः	बिना किसी के प्रार्थना किये हुए।
विकचीकरोति	विकसित करता है।
कैरवम्	कुमुद
जलधरः	मेघ
कृताभियोगाः	प्रयत्न करने वाले
परार्थघटकाः	दूसरों का कार्य साधन करते हैं।
उद्यमभृतः	उद्योग करते हैं।
निघ्नन्ति	नष्ट करते हैं।
अवेक्ष्य	देखकर

शब्द	अर्थ
कृशानौ	अग्नि में
मित्रापदम्	मित्र की आपत्ति को।
स्वपिति	सो रहे हैं।
संवर्तकैः	संवर्तकादि मेघों के
वडवानलः	वडवाग्नि
विततम्	विस्तृत
भरसहम्	भारसहने में समर्थ
छिन्धि	काटो
कृथाः	मत करो
मानय	सम्मान करो
अनुनय	अनुकूल रखा
प्रश्रयम्	नम्रता/विनम्रता
पीयूषम्	अमृत
उपकारश्रेणिभिः	उपकार परम्पराओं के द्वारा।
प्रीणयन्तः	प्रसन्न करने वाले
रजताद्रिणा	रजत पर्वत कैलाश से।
कङ्कोलनिम्बकुटजाः	कङ्कोल (दाल चीनी) नीम और कुटज।
महार्हैः	बहुमूल्य
तुतुषः	सन्तुष्ट
भीमविषेण	भयंकर विष से
न भेजिरे	प्राप्त नहीं हुए।
कार्यार्थी	कार्यसिद्धि चाहने वाला
पर्यङ्कशयनः	पलङ्ग पर सोता है।
शाकाहारः	साक-पात ही खाकर रहता है।
कन्थाधारी	पुराना वस्त्र धारण करने वाला।
दिव्याम्बरधरः	बहुमूल्य वस्त्रों को धारण करने वाला।
वाक्संयमः	वाणी पर संयम
उपशमः	शान्ति
निर्व्याजता	निष्कपटता
स्तुवतु	प्रशंसा करें।
यथेष्टम्	इच्छानुसार
न्याय्यात्	न्याययुक्त
आखुः	चूहा
करण्ड	पिटारी
म्लानेन्द्रियस्य	अशक्त इन्द्रियों वाले।
पिशितम्	मांस

शब्द	अर्थ
नक्तम्	रात
रिपुः	शत्रु
उद्यमसमः	उद्योग के समान
रोहति	फिर उग जाता है।
उपचीयते	फिर बढ़ता है।
विमृशन्तः	ऐसा विचारते हुए।
प्रहरणम्	अस्त्र
दुर्गमः	किला (कठिन मार्ग)
वारणः	हाथी
बलभिद्	इन्द्र
वृथा	व्यर्थ
कर्मायत्तम्	कर्मके आधीन्
भाव्यम्	होना चाहिए।
खल्वाटः	केशरहित शिरवाला (गंजा)
सन्तापितः	आहत
दैवहतकः	भाग्य का मारा हुआ
अनातपम्	धूपविहीन
विधिवशात्	संयोग से
तालस्य	ताल वृक्ष के
आपदः	विपत्तियाँ
गजः	हाथी
भुजङ्गः	साँप
विहङ्गः	पक्षी
गुणाकरम्	गुणों की खान
भुवः	पृथ्वी का
करीरविटपे	करीर के वृक्ष पर
तन्मार्जितुम्	उसे मिटाने के लिए
क्षमः	समर्थ
नमस्यामः	नमस्कार करते हुए
हतविधेः	दुष्ट विधाता के
वशगाः	नियन्त्रण में
वन्द्याः	वन्दना करनी चाहिए।
भाण्डोदरे	पात्र के उदर में
कुलालवत्	कुम्हार की भाँति
क्षिप्तः	डाल दिया
भिक्षाटनं कारितः	भिक्षा के लिए प्रेरित किया
रणे	युद्ध में

शब्द	अर्थ
शत्रुजलाग्निमध्ये	शत्रु जल या अग्नि के बीच में
महार्णवे	विशाल सागर में
प्रमत्तम्	असावधान
खलान्	दुष्टों को
द्वेषिणः	शत्रुओं को
परोक्षः	अतीन्द्रिय विषय/अप्रत्यक्ष
हालाहलम्	विष को
व्यसनैः	दुःखों से
विपुलेषु	अनेक गुणों में
आस्थाम्	प्रयत्न को
अवधार्या	विचार करके समझ लेना चाहिए।
अतिरभसकृतानाम्	अत्यन्त शीघ्रता से किये गये
शल्यतुल्यः	काँटे के समान
विपाकः	परिणाम
आविपत्तेः	मृत्युपर्यन्त
स्थाल्याम्	बटलोई में
इन्धनौघैः	लकड़ियों से
तिलकणान्	तिल के दानों से
अर्कमूलस्य	मदार की जड़ खोदने के लिए
लाङ्गलाग्रैः	हल की फाल से
वसुधा	पृथ्वी
विलिखति	जोतता है
कोद्रवाणाम्	कोदों के कणों से
समन्तात्	चारों ओर
वृत्ति	बाड़ (घेरा)
अम्भसि	जल में
मज्जतु	गोता लगाये
आहवे	युद्ध में
विपुलम्	विस्तृत
अभाव्यम्	अनहोनी
भाव्यस्य	होनी का
उपयाति	हो जाते हैं।
कृत्स्ना	सम्पूर्ण
सन्निधिरत्नपूर्णा	उत्तम निधियों और रत्नों से पूर्ण
प्राज्ञेतरैः	मूर्खों से (बुद्धिमानों से इतर)
समयच्युतिः	व्यर्थ समय बिताना
रतिः	अनुराग
अनुव्रता	अनुकूल आचरण करने वाली
अप्रवासगमनम्	परदेश न जाना।
अप्रियवचनदरिद्रैः	कटुवचन न बोलने वाले
प्रियवचनाढ्यैः	मधुर वचनों के धनी (सदामृदुभाषी)
स्वदारपरितुष्टैः	अपनी पत्नी में संतुष्ट रहने वाले
परपरिवादनिवृत्तैः	दूसरों की निन्दा न करने वाले
मण्डिता	सुशोभित होती है।
कदर्थितस्य	सताया हुआ होने पर
प्रमार्ष्टुम्	मिटाना
वह्नेः शिखा	अग्नि की ज्वाला
विशिखा	बाण
लुनन्ति	विदीर्ण करते हैं।
कृशानुः	अग्नि
भूरिविषया	अनेक विषय
कृत्स्नम्	सम्पूर्ण
स्फारस्फुरिततेजसा	अतिशय प्रदीप्त प्रकाश से युक्त
पादाक्रान्तम्	पददलित
समुन्मीलति	शोभायमान है।
वह्निः	आग
कुल्या	नहर
कुरङ्गाः	मृग
माल्यगुणायते	माला की डोरी के समान आचरण करने लगता है।
पीयूष	अमृत
सत्यव्रतव्यसनिनः	सत्यवत पालन में निरत
असून्	प्राणों को
लज्जागुणौघजननीम्	लज्जा, क्षमा आदि गुण समूह को उत्पन्न करने वाली।
अनुवर्तमानाम्	अनुकूल व्यवहार करने वाली।
स्वाम्	अपनी
सन्त्यजन्ति	छोड़ते हैं।

ङ. व्याकरणात्मक टिप्पणियाँ

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
1.	**कुसुमावचयम्**	फूलों का चुनना।	कुसुमानाम् अवचयम्। कुसुम+अवचयम् **(दीर्घसन्धि)**
2.	**निर्वृत्तकल्याणा**	जिसका विवाह रूपी मङ्गलकार्य हो गया है।	निर्वृत्तं सम्पन्नं कल्याणं विवाहमङ्गलं यस्याः सा, **(बहु.)**। कल्याण = विवाह
3.	**निवृत्तम्**	सन्तुष्ट, प्रसन्न।	निर् + वृ + क्त
4.	**इष्टिः**	यज्ञ	यज् + क्तिन् (स्त्री)
5.	**आकृतिविशेषाः**	विशेष सुन्दर आकृति वाले।	आकृतीनां विशेषाः **(तत्पु.)**
6.	**गुणविरोधिनः**	1. गुणों से विरोध करने वाले 2. गुणों से विरोध रखने वाले	1. गुणान् विरुन्धन्ति इति, (ताच्छील्य अर्थे ''णिनि'')। 2. गुणैः विरोधिनः। विरोधः अस्ति येषाम् इति विरोधिनः, (मत्वर्थे ''इनि'')
7.	**अनन्यमानसा** (4-1)	केवल एक ओर मन लगाये हुए	न अन्यत् अवलम्बनं यस्य तत् अनन्यम्। अनन्यं मानसं यस्याः सा, **(बहु.)**
8.	**पूजार्हेऽपराद्धा**	पूजनीय व्यक्ति के प्रति अपराध किया है।	पूजाम् अर्हति इति पूजार्हः। पूजा+अर्ह्+अच्। **अपराद्धा**=अप+राध्+क्त+टाप्।
9.	**वेगबलोत्फुल्लया**	अतितीव्र।	वेगस्य बलं तेन उत्फुल्ला, तया। **(तत्पु.)** वेगबल+उत्फुल्लया **(गुण सन्धि)।**
10.	**अर्घोदकम्**	अर्घ और जल। अर्घ+उदकम् **(गुण)**	अर्घश्च उदकं च तयोः समाहारः। **(द्वन्द्व)**
11.	**अग्रहस्तात्**	हाथ से।	अग्रश्चासौ हस्तश्च अग्रहस्तः **(कर्मधा.)**
12.	**प्रकृतिवक्रः**	स्वभाव से कुटिल।	प्रकृत्या वक्रः। **(तत्पु.)**
13.	**सानुक्रोशः**	दयायुक्त।	अनुक्रोशेन दयया सह **(बहु.)** अनुक्रोश=अनु+क्रुश्+घञ्।
14.	**अन्तर्हितः**	अन्तर्धान हो गए।	अन्तर+धा+क्त। **'धा' को 'दधातेर्हिः' सूत्र से 'हि' हो गया।**
15.	**संप्रस्थितेन**	प्रस्थान करते समय।	सम्+प्र+स्था+क्त। (तृतीया, एक.)
16.	**पिनद्धम्**	पहनाया।	अपि+नह्+क्त। अपि के अकार का भागुरि के मतानुसार लोप।
17.	**वामहस्तोपहितवदना**	जिसने बाँए हाथ पर मुँह रखा हुआ है।	वामहस्ते उपहितं वदनं यस्याः सा, **(बहु.)**। वामहस्त+उपहितवदना **(गुण)**

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
18.	**ओषधीनां पतिः** (4-2)	चन्द्रमा (चन्द्रमा की किरणों से वनस्पतियाँ बढ़ती हैं, अतः चन्द्रमा को 'ओषधीश' कहते हैं)	ओषधिः ओषः पाकः दीप्तिर्वा धीयते अस्याम् इति। ओष+धा+कि (इ)।
19.	**अरुणपुरःसरः** (4-2)	अरुण जिसके आगे चल रहा है। अरुण=सूर्य का सारथि	अरुणः पुरःसरः यस्य सः, **(बहु.)**
20.	**युगपद् व्यसनोदयाभ्याम्** (4-2)	एक साथ ही अस्त और उदय होने से। व्यसन+उदयाभ्याम् **(गुण)**	व्यसनं च उदयः च व्यसनोदयौ **(द्वन्द्व)** युगपद् व्यसनोदयौ, ताभ्याम्, **(कर्मधा.)**
21.	**आत्मदशान्तरेषु** (4-2)	अपने दशा विशेषों में नियन्त्रित है।	आत्मनः दशानाम् अन्तराणि, तेषु। **(तत्पु.)** आत्मदशा+अन्तरेषु। **(दीर्घ)**।
22.	**संस्मरणीयशोभा** (4-3)	कुमुदिनी की शोभा अब केवल स्मरण की चीज हो गयी है।	संस्मरणीया शोभा यस्याः सा, **(बहु.)**
23.	**अतिमात्रसुदुःसहानि** (4-3)	अत्यधिक असह्य।	अतिमात्रं सुदुःसहानि। **(कर्मधा.)**
24.	**आपन्नसत्त्वाम्**	गर्भिणी।	सत्त्वम् आपन्ना। **(तत्पु.)**
25.	**सुखशयितप्रच्छिका**	'सुखपूर्वक सोना हुआ या नहीं– यह पूछना।	सुखेन शयितं सुखशयितम्, **(सुप्सुपा)** तत् पृच्छति इति। सुखशयित+प्रच्छ+ण्वुल्। **(स्त्री)**
26.	**लज्जावनतमुखीम्**	लज्जा के कारण नीचे मुँह की हुई।	लज्जया अवनतमुखीम्, **(तत्पु)** लज्जा+अवनतमुखीम्। **(दीर्घ)**
27.	**धूमाकुलितदृष्टेः**	धुएँ से व्याकुल दृष्टि वाले।	धूमेन आकुलिता दृष्टिः यस्य तस्य। **(बहु.)** धूम+आकुलितम् **(दीर्घ)**
28	**अवेहि**	जानो।	अव+आ+इ, लोट्, म0पु0, एक., अव+एहि = अवेहि। ''ओमाङोश्च'' से पररूप।
29.	**नारिकेलसमुद्गके**	नारियल के डिब्बे में। **समुद्गक**=डिब्बा, दोना। (नारियल के ऊपर का थोड़ा हिस्सा काटने से साधारण डिब्बा सा बन जाता है)	समुद्गक=समुद्गच्छति इति। सम्+उद्+गम्+ड। 'ड' के कारण 'अम्' का लोप। स्वार्थ में ''कन्'' प्रत्यय
30.	**शार्ङ्गरवमिश्राः**	(क) शार्ङ्गरव आदि (मिश्र, शब्द मिश्रित या इत्यादि अर्थ में है)	शार्ङ्गरवेण मिश्राः **(तत्पु.)**
		(ख) शाङ्र्गरव जिनमें मुख्य हैं। (मिश्र शब्द पूज्य अर्थ में भी आता है।)	शार्ङ्गरवः प्रधानं पूज्यो वा येषां ते शाङ्र्गरवमिश्राः। (नित्यसमास)
31.	**शब्दायन्ते**	पुकारे जा रहे हैं।	शब्दं करोति शब्दायते।

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
			शब्दाय+णिच्+लट् प्र. पु. बहु.
32.	**वीरप्रसविनी**	वीर पुत्र को जन्म देने वाली।	वीरं प्रसूते इति। वीर+प्र+सू+इनि।
33.	**विप्रकार्यते**	विकृत किया जा रहा है। बिगाड़ा जा रहा है।	वि+प्र+कृ कर्मणि, लट्, प्र.पु. एक. (णिच्)।
34.	**क्षौमम् (4.5)**	रेशमी वस्त्र	क्षुमायाः विकारः क्षौमम्।
35	**माङ्गल्यम्** (4.5)	मंगल=शुभ अवसर पर पहनने के योग्य।	मङ्गलमेव माङ्गलम्, स्वार्थे 'अण्' माङ्गले साधु माङ्गल्यम्। माङ्गल+यत्, साधु अर्थ में 'यत्' प्रत्यय।
36.	**चरणोपरागसुभगः** (4-5)	पैरों को रँगने के योग्य।	चरणयोः उपरागे सुभगः, **(तत्पु)** चरण+उपराग **(गुण)**
37.	**आपर्वभागोत्थितैः** (4-5)	कलाई तक उठे हुए।	पर्वभागं यावत् आपर्वभागम् **(अव्ययी)** आपर्वभागम् उत्थितैः **(सुप्सुपा)** आपर्वभाग+उत्थितैः **(गुण)**
38.	**किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः** (4-5)	कोपलों के समान सुन्दर।	किसलयानाम् उद्भेदाः, तेषां प्रतिद्वन्द्विभिः। **(तत्पु.)**
39	**अभिषेकोत्तीर्णाय**	स्नान करके निकले हुए।	**अभिषेक**=अभि+सिच्+घञ्। **उत्तीर्ण**=उद्+तृ+क्त। अभिषेक+उत्तीर्णाय **(गुण)**
40.	**संस्पृष्टम्** (4-6)	व्याप्त है।	सम्+स्पृश्+क्त।
41.	**स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषः** (4-6)	अश्रुप्रवाह के रोकने से भरा हुआ।	स्तम्भिता बाष्पवृत्तिः, **(कर्मधा)** तया कलुषः। **(तत्पु.)**
42.	**चिन्ताजडम्** (4-6)	चिन्ता से दृष्टि निश्चेष्ट हो गयी है।	चिन्तया जडम्। **(तत्पु.)**
43.	**अरण्यौकसः** (4-6)	जंगल ही है घर जिसका। वनवासी।	अरण्यम् ओकः गृहं यस्य तस्य। **(बहु.)**
44.	**तनयाविश्लेषदुःखैः** (4-6)	पुत्रीवियोग के दुःख से।	तनयानां विश्लेषाद् दुःखं तैः। **(तत्पु.)**
45	**आनन्दपरिवाहिणा**	आनन्द के आँसुओं को बहाता हुआ।	आनन्दं परितः वाहयति इति। आनन्द+परि+वाहि+णिनि+तृतीया।
46.	**प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः** (4-8)	जिनके आस-पास कुश बिछाये गए हैं।	प्रान्तेषु संस्तीर्णाः दर्भाः येषां ते। **(बहु.)**
47.	**क्लृप्तधिष्ण्याः** (4-8)	जिनको यथास्थान स्थापित किया गया है।	क्लृप्तानि धिष्ण्यानि येषां ते। **(बहु.)**
48.	**समिद्वन्तः** (4-8)	समिधाओं से युक्त।	समिध्+मतुप्।
49.	**युष्मास्वपीतेषु** (4-9)	तुम लोगों को बिना जल पिलाये।	''यस्य च भावेन भावलक्षणम्'' से सप्तमी। न पीताः अपीताः, तेषु **(नञ्)**
50.	**प्रियमण्डना** (4-9)	प्रिय है अलङ्कार जिसको	प्रियं मण्डनं यस्याः सा। **(बहु.)**

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
		ऐसी, आभूषणप्रिया।	
51.	**कुसुमप्रसूतिसमये** (4-9)	फूलों के निकलने के समय।	कुसुमानां प्रसूतेः समये। **(तत्पु.)**
52.	**अनुमतगमना** (4-10)	जाने के लिए प्राप्त अनुमति वाली।	अनुमतं गमनं यस्याः सा, **(बहु.)**
53.	**वनवासबन्धुभिः** (4-10)	तपोवन के बन्धुबान्धव या साथी।	वनवासस्य बन्धुभिः। **(तत्पु.)**
54.	**परभृतविरुतम्** (4-10)	कोयल की कूक को।	परभृतः विरुतम्। **(तत्पु.)**
55.	**प्रतिवचनीकृतम्** (4-10)	प्रत्युत्तर बनाया गया है।	प्रति+वचन+च्वि+कृ+क्त।
56.	**कमलिनीहरितैः** (4-11)	कमल लताओं से हरे भरे।	कमलिनीभिः हरितैः। **(तत्पु.)**
57.	**रम्यान्तरः** (4-11)	रमणीय मध्यभाग वाला।	रम्यम् अन्तरं यस्य सः। **(बहु.)**
58.	**छायाद्रुमैः** (4-11)	छायादार वृक्षों से।	छायाप्रधानाः द्रुमाः छायाद्रुमाः, तैः **(शाकपार्थिवादिवत् तत्पु.)**
59.	**नियमितार्कमयूखतापः** (4-11)	नियन्त्रित सूर्यकिरणों के ताप वाला।	नियमितः अर्कस्य मयूखानां तापः यस्मिन् सः। **(बहु.)**
60.	**कुशेशयरजोमृदुरेणुः** (4-11)	कमलों के पराग से कोमल धूलि वाला।	कुशेशयानां रजोभिः मृदवः रेणवः यस्मिन् सः। **(बहु.)**
61.	**शान्तानुकूलपवनः** (4-11)	शान्त और अनुकूल वायु वाला।	शान्तः अनुकूलः पवनः यस्मिन् सः। **(बहु.)**
62.	**अनुज्ञातगमना**	जाने की स्वीकृति मिल गयी है।	अनुज्ञातं गमनं यस्याः सा। **(बहु.)**
63.	**उद्गलितदर्भकवलाः** (4-12)	जिन्होंने कुशाओं का कौर उगल दिया है।	उद्गलितः दर्भाणां कवलः याभिः ताः। **(बहु.)**
64.	**परित्यक्तनर्तनाः** (4-12)	जिन्होंने नाचना छोड़ दिया है।	परित्यक्तं नर्तनं यैः। **(बहु.)**
65.	**अपसृतपाण्डुपत्राः** (4-12)	जिनसे पीले पत्ते गिर रहे हैं।	अपसृतानि पाण्डूनि पत्राणि याभ्यः ताः। **(बहु.)**
66.	**आत्मसदृशम्** (4-13)	अपने अनुरुप। या अपने योग्य।	आत्मनः सदृशम्। **(तत्पु.)**
67.	**वीतचिन्तः** (4-13)	चिन्तारहित, निश्चिन्त।	वीता चिन्ता यस्य सः। **(बहु.)**
68.	**अनघप्रसवा**	जब बिना कष्ट के सकुशल बच्चा हो जाय।	अनघः विपत्तिरहितः प्रसवः यस्याः सा। **(बहु.)**
69.	**व्रणविरोपणम्** (4-14)	घावों को भरने वाला।	व्रणानां विरोपणम्। **(तत्पु.)** **विरोपणम्**=वि+रुह्+णिच्+ल्युट्
70.	**न्यषिच्यत** (4-14)	लगाया।	नि+सिच् कर्मणि, लङ्, प्र.पु., एक. नि+अषिच्यत=न्यषिच्यत **(यण्)**
71.	**कुशसूचिविद्धे** (4-14)	कुशों के अग्रभाग से बिंधे हुए।	कुशानां सूचिभिः विद्धे **(तत्पु.)** विद्ध=व्यध्=क्त। 'य' को सम्प्रसारण 'इ'।

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
72.	**श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितकः** (4-14)	सावाँ की मुट्ठियों (ग्रासों) से बड़ा किया गया।	श्यामाकानां मुष्टिभिः परिवर्धितकः। **(तत्पु.)**
73.	**सहवासपरित्यागिनीम्**	साथ छोड़ने वाली।	सहवासं परित्यजति इति। सहवास+परि+त्यज्+घिनुण् (इन्), ताम्।
74.	**अचिरप्रसूतया**	जन्म देने के बाद शीघ्र	अचिरं प्रसूता तया, **(कर्मधा.)**
75.	**उत्पक्ष्मणोः** (4-15)	ऊपर की ओर उठी हुई बरौनियों वाले।	उद्गतानि पक्ष्माणि ययोः तयोः। **(बहु.)**
76.	**उपरुद्धवृत्तिम्** (4-15)	नेत्रों की दर्शनशक्ति को रोकने वाले।	उपरुद्धा वृत्तिः येन तम् **(बहु.)** वृत्ति=व्यापार, दर्शनव्यापार या दर्शनशक्ति।
77.	**विरतानुबन्धम्** (4-15)	जिसका प्रवाह रुक गया है, ऐसा। रुके हुए प्रवाह वाला।	विरतः अनुबन्धः यस्य, तम्। **(बहु.)** विरत-वि+रम्+क्त।
78.	**अलक्षितनतोन्नतभूमिभागे** (4-15)	जिसके ऊँचे नीचे भूमिभाग नहीं दिखलाई पड़ रहे हैं, ऐसे मार्ग में।	अलक्षितः नतः उन्नतः भूम्याः भागः यस्मिन् तस्मिन्। **(बहु.)**
79.	**ओदकान्तम्**	जल के किनारे तक।	उदकस्य अन्तः उदकान्तः, आ उदकान्तात्, ओदकान्तम्। यहाँ पर 'आङ् मर्यादाभिविध्योः' से **अव्ययीभावसमास।**
80.	**युक्तरूपम्**	अत्यन्तसुन्दर।	अतिशयेन युक्तम्। **(अव्ययी.)**
81.	**विषाददीर्घतराम्** (4-16)	दुःख के कारण लम्बी।	विषादेन दीर्घतराम्। **(तत्पु.)**
82.	**आशाबन्धः** (4-16)	आशा का बन्धन। आशा के कारण व्यक्ति कठोर से कठोर कष्ट भी सह लेता है।	आशायाः बन्धः। **(तत्पु.)**
83.	**विरहदुःखम्** (4-16)	वियोग के दुःख को।	विरहस्य दुःखम्। **(तत्पु.)।**
84.	**संयमधनान्** (4-17)	संयम ही है धन जिनका, ऐसे संयम रूपी धन वाले।	संयम एव धनं येषां तान्। **(बहु.)** संयम=सम्+यम्+अप्।
85.	**अबान्धवकृताम्** (4-17)	बन्धुओं/सम्बन्धियों के द्वारा न कराये गये।	न बान्धवैः कृताम्। **(तत्पु.)**
86.	**स्नेहप्रवृत्तिम्** (4-17)	प्रेम व्यापार को।	स्नेहस्य प्रवृत्तिम्, ताम्। **(तत्पु.)**
87.	**सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकम्** (4-17)	समान गौरव। आदर के साथ। (सामान्यतया पत्नी के साथ जैसा सद्व्यवहार करना चाहिए, उतना अवश्य करना)	सामान्या प्रतिपत्तिः सामान्यप्रतिपत्तिः, सामान्यप्रतिपत्तिः पूर्वा यस्मिन् तत्। **(बहु.)**
88.	**भाग्यायत्तम्** (4-17)	भाग्य के अधीन है।	भाग्ये आयत्तम्। **(तत्पु.)** आयत्त=आ+यत्+क्त।
89.	**लौकिकज्ञाः**	लौकिक बातों को जानने वाले।	लोके भवं लौकिकम्। लोक+ठञ् **(इक)**, लौकिकं जानन्ति इति लौकिकज्ञाः लौकिक+ज्ञा+क (अ)।
90.	**शुश्रूषस्व** (4-18)	सेवा करना।	श्रु+सन्+लोट्, म.पु., एक.।

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
			'श्रु' धातु से 'सन्' प्रत्यय होने पर **''ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः''** सूत्र से धातु आत्मनेपदी हो जाती है।
91.	**प्रियसखीवृत्तिम्** (4-18)	प्रियसखी जैसा व्यवहार।	प्रियायाः सख्याः वृत्तिम्। **(तत्पु.)**
92.	**सपत्नीजने** (4-18)	सौतों के साथ।	सपत्नी=समानः पतिः यस्याः सा, सपत्नी।
93.	**विप्रकृताऽपि** (4-18)	अपमानित होने पर भी।	वि+प्र+कृ+क्त+टाप्। विप्रकृता+अपि **(दीर्घ)**।
94.	**रोषणतया** (4-18)	क्रोध के कारण।	रुष्+युच्। (शील अर्थ में) रोषण+ता (भाव अर्थ में)
95.	**प्रतीपम्** (4-18)	प्रतिकूल, विपरीत।	प्रतिकूलम् अपाम्। प्रति+अप्+अ।
96.	**मास्म गमः** (4-18)	मत जाना आचरण मत करना।	यहाँ 'मा' के कारण 'अगमः' में 'अ' नहीं हुआ। **''न माङ्योगे''** सूत्र से अडागम का अभाव।
97.	**भूयिष्ठम्** (4-18)	अत्यधिक।	**भूयिष्ठ**=बहु+इष्ठन्। 'इष्ठस्य यिट् च' सूत्र से 'बहु' के स्थान पर 'भू' तथा 'इ' के स्थान पर 'यि' आदेश।
98.	**युवतयः** (4-18)	तरुण स्त्रियाँ।	युवति='युवन्' शब्द से ''यूनस्ति' सूत्र से 'ति' प्रत्यय। 'युवा' का स्त्रीलिङ्ग 'युवती' है, युवत+ङीष्=युवती, **(पतिवाली)**
99.	**वामाः** (4-18)	विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियाँ।	वमति स्नेहं इति वामा। वम्+अण् (अ) = वाम, टाप्।
100.	**आधयः** (4-18)	मानसिक दुःख और विपत्ति का कारण।	अधीयते दुःखम् अनेन इति आधिः। आङ्+धा+कि **''उपसर्गे घोः किः''** सूत्रेण 'कि' प्रत्यय
101.	**गृहिणीपदम्** (4-18)	गृहिणी, गृहस्वामिनी।	गृहिण्याः पदम्। **(तत्पु.)**।
102.	**अभिजनवतः** (4-19)	उच्च कुल वाले, अतिकुलीन, अभिजनकुल।	प्रशस्तः अभिजनः=अभिजनवान्, तस्य। प्रशंसा अर्थ में 'मतुप्' प्रत्यय।
103.	**विभवगुरुभिः** (4-19)	ऐश्वर्य के कारण महान्।	विभवेन गुरुभिः। **(तत्पु.)**
104.	**सविता**	सूर्य जो लोगों को कर्म में प्रवृत्त करता है।	सुवति कर्मणि प्रेरयति। सू+तृच्।
105.	**दौष्यन्तिम्** (4-20)	दुष्यन्त के पुत्र को।	दुष्यन्तस्य पुत्रः दौष्यन्तिः, तम् दुष्यन्त+इञ्। **''अत इञ्''** सूत्रेण पुत्रार्थे 'इञ्' प्रत्यय।
106.	**अप्रतिरथम्** (4-20)	जिसका प्रतिद्वन्द्वी योद्धा	न विद्यते प्रतिरथः प्रतिद्वन्द्वी

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
		कोई नही है।	यस्य सः, तम्। **(बहु.)**
107.	**निवेश्य** (4-20)	बिठाकर।	नि+विश्+णिच्+ल्यप्।
108.	**तदर्पितकुटुम्बभरेण** (4-20)	जिसके द्वारा उस पुत्र पर कुटुम्ब का भार सौंप दिया गया है, ऐसे।	तस्मिन् अर्पितः कुटुम्बस्य भारः येन, तेन। **(बहु.)**
109.	**परिहीयते**	छोड़ रही है। या बीत रही है।	परि+हा+कर्मणि, लट् प्र.पु. एक.।
110.	**उटजद्वारविरूढम्** (4-21)	कुटी के द्वार पर उगे हुए।	उटजस्य द्वारे विरूढम्, तत्पु.।
111.	**अन्तर्हिता**	ओझल हो गयी है।	अन्तर+धा+क्त+टाप्। 'धा' को 'हि' आदेश होता है – **''दधातेर्हिः''** सूत्र से।
112.	**सहचारिणी**	सखी, साथ रहने वाली।	सह चरति इति। सह+चर् + णिनि। (स्त्री) (ताच्छील्यार्थे णिनिः)।
113.	**निगृह्य**	रोककर।	नि+ग्रह+ल्यप्।
114.	**प्रत्यर्पितन्यासः** (4-22)	जिसने धरोहर लौटा दी है।	प्रत्यर्पितः न्यासः येन **(बहु.)**।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रयुक्त छन्द एवं अलङ्कार

क्र.	श्लोक (वक्ता)	छन्दः	अलङ्कारः
1.	**विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा.......।** (ऋषि दुर्वासा) (4-1) नेपथ्य से	**वंशस्थ** (प्रत्येक चरण में 12 वर्ण)	● काव्यलिङ्ग, उपमा, और श्लेष अलङ्कार।
2.	**यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्.......। (4-2)** (कण्व का शिष्य)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति, तुल्ययोगिता, यथासंख्य और उत्प्रेक्षा अलंकार।
3.	**अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे।** (4-3) (कण्व का शिष्य)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति काव्यलिङ्ग, और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार ● नाटक में ये तीसरा **पताकास्थानक** है।
	कर्कन्धूनामुपरि तुहिनं रञ्जयत्यग्रसन्ध्या.......। (बँगला संस्करण में प्राप्त प्रक्षिप्त श्लोक)	**मन्दाक्रान्ता** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● स्वभावोक्ति अलङ्कार।
	पादन्यासं क्षितिधरगुरोर्मूर्ध्नि कृत्वा सुमेरोः......। (बँगला संस्करण में प्राप्त प्रक्षिप्त श्लोक)	**मन्दाक्रान्ता** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● समासोक्ति, अर्थान्तरन्यास और श्लेष अलङ्कार।
4.	**दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये**	**अनुष्टुप् या श्लोकवृत्त**	● उपमा अलंकार

क्र.	श्लोक (वक्ता)	छन्दः	अलङ्कारः
	भुवः.....। (4-4) (छन्दोमयी आकाशवाणी)	(प्रत्येक पाद में 8 वर्ण)	● इस श्लोक में मार्ग नामक गर्भसन्धि का अङ्ग है।
5.	**क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम्......।** (4-5) (कण्व का शिष्य)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	उपमालङ्कार।
6.	**यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया......।** (4-6) (महर्षि कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● व्यतिरेक अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
7.	**ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।** (4-7) (महर्षि कण्व)	**अनुष्टुप्** (प्रत्येक पाद में 8 वर्ण)	● उपमा अलङ्कार। ● इस श्लोक में क्रम नामक गर्भसन्धि का अङ्ग तथा आशीः नामक नाटकीय अलङ्कार है।
8.	**अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः।** (4-8) (महर्षि कण्व)	**त्रिष्टुप् (वैदिक छन्द)** (प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)	● परिकर अलङ्कार।
9.	**पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या......। (4-9)** (महर्षि कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● समासोक्ति, और काव्यलिङ्ग अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
10.	**अनुमतगमना शकुन्तला......।** (4-10) (महर्षि कण्व)	**अपरवक्त्रछन्दः** (प्रथम और तृतीय चरण में 11 वर्ण द्वितीय और चतुर्थचरण में 12 वर्ण)	● परिणाम अलङ्कार।
11.	**रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः।** (4-11) (देवताओं की आकाशवाणी)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● परिकर, तुल्योगिता, काव्यलिङ्ग और हेतु अलङ्कार।
12.	**उद्गलितदर्भकवला मृग्यः......।** (प्रियंवदा) (4-12)	**आर्या** (प्रथम पाद में 12 वर्ण)	● उत्प्रेक्षा और समासोक्ति अलङ्कार।
13.	**सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे....।** (4-13) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति, तुल्ययोगिता सम और काव्यलिङ्ग, अलङ्कार।
14.	**यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्** (4-14) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● स्वभावोक्ति अलङ्कार।
15.	**उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धवृत्तिम्....।** (4-15) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका।** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● काव्यलिङ्ग अलङ्कार।

क्र.	श्लोक (वक्ता)	छन्दः	अलङ्कारः
16.	**एषापि प्रियेण विना गमयति....।** (4-16) **(अनसूया)**	**आर्या** (प्रथम पाद में 12 वर्ण)	● अर्थान्तरन्यास अलङ्कार।
17.	**अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः....।** (4-17) (काश्यप/कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
18.	**शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने....।** (4-18) (काश्यप/कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्।** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● रूपक, हेतु, और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार। ● इस श्लोकों में 'उपदिष्ट' नामक नाटकीय लक्षण है। **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
19.	**अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे......।** (4-19) (काश्यप/कण्व)	**हरिणी** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● उपमा, समुच्चय और काव्यलिङ्ग अलङ्कार। ● कुछ लोग ''अस्मान् साधु...." के स्थान पर इसे प्रसिद्ध चार श्लोकों में गिनते हैं।
20.	**भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी।** (4-20) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● मालादीपक अलङ्कार। ● कुछ लोग ''पातुं न प्रथमं....." के स्थान पर इसे भी चार प्रसिद्ध श्लोकों में गिनते हैं।
21.	**शममेष्यति मम शोकः कथं नु.....।** (4-21) (काश्यप/कण्व)	**आर्या जातिः**	काव्यलिङ्ग अलङ्कार।
22.	**अर्थो हि कन्या परकीय एव....।** (4-22) (काश्यप/कण्व)	**इन्द्रवज्रा** (प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)	उत्प्रेक्षा अलङ्कार।

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चारों प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व ने कहे हैं।

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में कुल 22 श्लोक हैं, जिसमें 14 श्लोक महर्षि कण्व के द्वारा बोले गए हैं।

➤ चतुर्थ अङ्क में **''उद्गलितदर्भकवला मृग्यः''** (4.12) इस श्लोक को प्रियंवदा तथा **''एषापि प्रियेण विना गमयति रजनी''** (4.16) इस एक श्लोक को अनसूया बोलती है।

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के केवल चतुर्थ अङ्क में महर्षि कण्व का दर्शन होता है।

➤ चतुर्थ अङ्क के बाद अनसूया और प्रियंवदा का वर्णन नहीं मिलता है।

'उत्तररामचरितम्' (तृतीय अङ्क) की महत्त्वपूर्ण व्याकरणात्मक टिप्पणियाँ

- **नदीद्वयम्** – नदीनां द्वयम् – तत्पुरुष समास।
- **सम्भ्रान्ता** – सम् + √भ्रम् + क्त + टाप्।
- **प्रेषिता** – प्र + √इष् + णिच् + क्त + टाप्।
- **सरिद्वराम्** – सरित्सु वराम् (तत्पुरुष समास)।
- **अनिर्भिन्नः** – न निर्भिन्नः। निर्भिन्नः – निर् + √भिद् + क्त।
- **विनिपातः** – वि + नि + √पत् + घञ्।
- ● सन्तान में 'तनु' तथा 'क्षीणः' में 'क्षि' धातु।
- **अवलोक्य** – अव + √लोक् + णिच् + ल्यप्।
- **आकर्षद्भिः** – आङ् + √कृष् + शतृ + तृतीया बहुवचन।
- **तर्पय** – √तृप् + णिच् + लोट् म. पु. एकवचन
- **दाक्षिण्यम्** – दक्षिण + ष्यञ्।
- **संनिहितः** – सम् + नि + √धा + क्त (''दधातेर्हिः'' से धा को हि आदेश)।
- **अभ्युपपन्ना** – अभि + उप + √पद् + क्त + टाप्।
- **निक्षिप्तवती** – नि + √क्षिप् + क्तवतु + ङीप्।
- **प्रसूता** – प्र + √सूङ् + क्त + टाप्।
- **व्यापृतस्य** – वि + आङ् + √पृ + क्त + षष्ठी विभक्ति।
- **'प्रसवितारम्'** – प्र + √सूङ् + तृच् + द्वितीया एकवचन।
- **उपतिष्ठस्व** – उप + √'स्था' + लोट् म. पु. एक.।
- **यथादिष्टम्** – आदिष्टम् अनतिक्रम्य (अव्ययीभाव समास।)
- **विप्रलूनम्** – वि + प्र + √लू + क्त
- **ग्लपयति** – √ग्लै (ग्ला) + णिच् + लट् प्र.पु.एक.।
- **क्षामम्** – √क्षै (क्षा) + क्त ('क्षायो' मः से त को म आदेश)।
- **शरदिजः** – शरदि जायते इति शरदिजः (उपपदसमास)।
- **आकर्णयन्ती** – आङ् + √कर्ण् + णिच् + शतृ + ङीप्।
- **व्याहरति** – वि + आङ् + √'हृ' लट् प्र. पु. एकवचन।
- **विहरन्** – वि + √हृ + शतृ + प्रथमा एक.
- **परित्रायस्व** – परि + √त्रै + लोट् म. पु. एक.
- **अनुबध्नन्ति** – अनु + √बन्ध् + लट् प्र. पु. बहु.
- **समाश्वसिहि** – सम् + आङ् + √श्वस् + लोट् म. पु. एकवचन
- **तपस्यतः** – तपस् + क्यङ् + शतृ + षष्ठी एक.
- **अध्यवात्सम्** – अधि + √वस् + लुङ् उ. पु. एक.
- **परिसरः** – परि + √सृ + घञ्
- **ज्वलिष्यतः** – √ज्वल् + शतृ + षष्ठी एक.।
- **आवृणोति** – आङ् + √वृ + लट् प्र. पु. एक.।
- **जीवय** – √जीव् + णिच् + लोट म. पु. एक.।
- **संजीवय** – सम् + √जीव् + णिच् + लोट् म. पु. एक.।
- **ससंभ्रमम्** – संभ्रमेण सहितं यथा स्यात् तथा अव्ययीभाव।
- **परितर्पणः** – परि + √तृप् + ल्यु (अन)।
- ● प्रसक्त में √सञ्ज तथा सेकः में √सिच् धातु।
- **सन्तापजाम्** – सन्तापात् जाताम् उपपद तत्पुरुष। सन्ताप + √जन् + ड (अ) + टाप् + द्वितीया एक.।
- **मार्गिष्यते** – √मार्ग् + लृट् प्र. पु. एक.।
- **अपसराव** – अप + √सृ + लोट् उ. पु. द्विवचन।
- **अनभ्यनुज्ञातेन**–नञ् + अभि + अनु + √ज्ञा + क्त + तृतीया एक.।
- **संनिधानम्** – सम् + नि + √धा + ल्युट्।
- **कोपिष्यति** – √कुप् + लृट् + प्र. पु. एक.।
- **सौजन्यम्** – सुजन + ष्यञ्।
- **अभियुज्यते** – अभि + √युज् + लट् कर्मवाच्य में।
- **वधूद्वितीयम्** – वधू द्वितीया यस्य सः तम्, (बहु.)
- **सम्भावयतु** – सम + √भू + णिच् + लोट् प्र. पु. एक.।
- **कथोद्घाताः** – कथानाम् उद्घाताः (तत्पु.)।
- **हृदयमर्मच्छिदः** – हृदयमर्मन् + √छिद् + क्विप्।
- **विजेता** – वि + √जि + तृच् प्रथमा एक.।
- **अनुवृत्ति** – अनु + √वृत् + क्तिन्।
- **लीलोत्खातः** – लीलया उत्खातः (तृतीया तत्पुरुष)।
- **उज्ज्वलः** – उत् + √ज्वल् + अच्।
- **नित्योज्ज्वलम्** – नित्यमेव उज्ज्वलम् (सप्सुपा समास)।
- **दम्पती** – जाया च पतिः च - (द्वन्द्वसमास)।
- **अवर्धयत्** – √वृध् + णिच् + लङ् प्र. पु. एकवचन।
- **वर्धामहे** – √वृध् + लट् उ. पु. बहु.।
- **नर्त्यमानम्** – √नृत् + णिच् + शानच् + द्वितीया एक.।
- **मण्डयन्त्या** – मण्ड + स्वार्थ में णिच् + शतृ + ङीप् तृतीया एक.।
- **तिर्यञ्चः** – तिरस् + √अञ्च प्रथमा बहु.।
- **परिष्वज्य** – परि + √स्वञ्ज् + ल्यप्।
- **विलुलितम्** – वि + √लुल् + क्त।
- **अवसृजन्ती** – अव + √सृज् + शतृ + ङीप्।
- **अनुरुन्धन्ते** – अनु + √रुध् + लट् प्र. पु. बहु.।
- **नयनोत्सवम्** – नयनयोः उत्सवम् (षष्ठी तत्पु.)।
- **शुचा** – शुच् + क्विप् प्रत्यय। (तृतीया, एक.)
- **प्रवान्तु** – प्र + √वा + लोट् प्र. पु. बहु.।
- **क्वणन्तु** – √क्वण् + लोट् प्र. पु. बहु.।
- **ददतु** – √दा + लोट् प्र. पु. बहु.।
- **एहि** – आ + √इ + लोट् म. पु. एक.।
- **स्थीयताम्** – √स्था + लोट् प्र. पु. एक. भाववाच्य।

- **अपुष्यत्** – √पुष् + लङ् प्र. पु. एक.।
- **प्रलपन्तम्** – प्र + √लप् + शतृ + द्वितीया एक.।
- **प्रलापयसि** – प्र + √लप् + णिच् + लट् म. पु. एक.।
- **दुःखितः** – दुःख + इतच्।
- **सुलभः** – सु + √लभ् + खल् (अ)।
- **पाल्यम्** – √पाल् + णिच् + ण्यत्।
- **भिद्यते** – √भिद् + लट् प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **ज्वलयति** – √ज्वल् + णिच् + लट् प्र. पु. एक.।
- **अन्तर्दाहः** – अन्तः दाह, (सुप्सुपा समास।)
- **प्रनष्टम्** – प्र + √नश् + क्त।
- **अवलम्ब्यताम्** – अव + √लम्ब् + लोट् प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **समाधीयते** – सम् + आङ् + √धा + लट् प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)।
- **अप्रतिहतरयः** – अप्रतिहतः रयः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **उज्जृम्भण** – उत् + जृम्भ् + ल्युट्।
- **तन्मार्गदत्तेक्षणः** – तस्याः मार्गे दत्ते ईक्षणे येन सः, (बहुव्रीहि)
- **कृतकौतुका** – कृतं कौतुकं यया सा। (बहुव्रीहि)
- **आयान्त्या** – आङ् + √या + शतृ (अत्) + ङीप् (ई) = आयन्ती + तृतीया एक.।
- **परिदुर्मनायितम्** – परि + दुर् + मनस् + क्यङ्।
- **विष्वक्**– विषु + √अञ्च् + क्विन् = विष्वञ्च् प्रथमा।
- **मज्जति** – √मस्ज् + लट् प्र. पु. एक.।
- **अविरलज्वालम्** – अविरलाः ज्वालाः यस्मिन् तत् यथा स्यात्तथा (बहुव्रीहि)
- **संस्पर्शः** – शोभनः स्पर्शः संस्पर्शः (कर्मधारय)।
- **जीवयन्** – √जीव् + णिच् + शतृ प्र. पु. एक.।
- **निमीलिताक्षः** – निमीलिते अक्षिणी यस्य सः निमीलिताक्षि + षच् (अ) (बहुव्रीहि)
- **उल्लाघयता** – उत् + लघु + शतृ तृतीया एक.।
- **पर्यस्तव्यापारः** – पर्यस्तः व्यापारः यस्य सः (बहुव्रीहि)।
- **परिणयः** – परि + √नी + अच् (अ)।
- **सुधासूतेः** – सुधायाः सूतिः यस्मात् तस्य (बहुव्रीहि)।
- **औपम्यम्** – उपमायाः भावः, उपमा + ष्यञ्
- **स्फुटकोरका** – स्फुटाः कोरकाः यस्याः सा। (बहुव्रीहि)।
- **संस्तम्भय** – सम् + √स्तम्भ् + णिच् + लोट् म. पु. एक.।
- **लोकोत्तरेण** – लोकाद् उत्तरेण (तत्पुरुष)।
- **कार्ष्णायसः** – कृष्ण + अयस् + टच्। कृष्णायसस्य विकारः– विकार अर्थ में अण् प्रत्यय।
- **अभ्युदस्थात्** – अभि + उत् + √स्था + लुङ् प्र. पु. एक.।
- **पिशाचः** – पिशित (कच्चा मांस) + अश् + अण्।
- **निरवधिः** – निर्गतः अवधिः यस्य सः (बहुव्रीहि)।
- **मुग्धाक्ष्याः** – मुग्धे अक्षिणी यस्याः सा मुग्धाक्षी (बहु.)। मुग्ध + अक्षि + षच् (अ) ङीष् (ई) (षिद्गौरादिभ्यश्च से ङीष्)।
- **अवधिः** – अव् + √धा + कि (इ)।
- **प्रविलयः** – प्र + वि + √ली + अच् (अ)।
- **सौमित्रिः** – सुमित्रायाः अपत्यम्, सुमित्रा + इञ्।
- **रोदयिष्यामि** – √रुद् + णिच् + लृट् उ. पु. एक.।
- **अनुजानीहि** – अनु + √ज्ञा + लोट् उ. पु. एक.।
- **संविधानकम्** – सम् + वि + √धा + ल्युट् (अन) स्वार्थ में 'कन्' (क) प्रत्यय।
- **प्रयोक्ता** – प्र + √युज् + तृच्, प्रथमा एक.।

कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में क्रियापद

चिकीर्षुः = √कृ + सन् + उ
आदिदेश = आङ् + √दिश् + लिट्, प्रथमपुरुष, एक0
उवाच = √वच् + लिट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
उपयाति = उप + √या + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
अपहरति = अप + √हृ + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
आपतन्ति = आङ् + √पत् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
नाशयति = √नश् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
विशन्ति = √विश् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
उपजनयति = उप + √जन् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष एक0
हरति = √हृ + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
परिणमयति = परि + √नम् + णिच् लट् प्रथमपुरुष एक0
गलति = √गल् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
भवति = √भू + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
दहति = √दह् + लट्, प्रथमपुरुष, एक0
अनुगच्छति = अनु + √गम् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
अभिधीयसे = अभि + √धा + लट् मध्यमपुरुष एकवचन
शृण्वन्ति = √श्रु + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
खेदयन्ति = √खिद् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
परिपाल्यते = परि + √पाल् + यक् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
नश्यति = √नश् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
आलोकयतु = आङ् + √लोक् + लोट् + प्रथमपुरुष एकवचन
अपक्रामति = अप + √क्रम् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
प्रपलायते = प्र + परा + √अय् + लट् प्रथमपुरुष एक0 (आत्मने0)
रक्षति = √रक्ष् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
ईक्षते = √ईक्ष् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन (आत्मनेपदी)
आलोकते = आङ् + √लोक् + लट् + प्रथमपुरुष एक0 (आत्मने0)
अनुवर्तते = अनु + √वृत् + लट् + प्रथमपुरुष एक0 (आत्मने0)
पश्यति = √दृश् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
अनुरुध्यते = अनु + √रुध् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन (दिवादि0)
आद्रियते = आङ् + √दृ + लट् प्रथमपुरुष एकवचन (तुदादि0)
अनुबुध्यते = अनु + √बुध् + यक् + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
करोति = √कृ + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
परिभ्रमति = परि + √भ्रम् + लट्, प्रथमपुरुष एकवचन
परिस्खलति = परि + √स्खल् + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
निवसति = नि + √वस् + लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
मुञ्चति = √मुच् + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
अध्यारोहति = अधि + आङ् + √रुह् + लट् प्रथमपुरुष एक.
आलिङ्गति = आङ् + √लिङ्ग् + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
स्मरति = √स्मृ + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
परिहरति = परि + √हृ + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
उपसर्पति = उप + √सृप् + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
उपजनयति = उप + √जन् + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
संवर्धयति = सम् + √वृध् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
आतनोति = आङ् + √तन् + लट् प्रथमपुरुष, एकवचन
आपादयति = आङ् + √पद् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष, एकवचन
दीप्यते = √दीप् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन (आत्मनेपदी)
उद्वमति = उत् + √वम् + प्रथमपुरुष एकवचन
चलति = √चल् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
आचरति = आङ् + √चर् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
वञ्चयति = √वञ्च् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
अभिसन्धत्ते = अभि + सम् + √धा लट् प्रथमपुरुष एक0 (आत्मने0)
विप्रलभते = वि + प्र + √लभ् + लट् प्रथमपुरुष एक0 (आत्मने0)
भवन्ति = √भू + लट् + प्रथमपुरुष बहुवचन
गच्छन्ति = √गम् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
प्रक्षाल्यते = प्र + √क्षाल् + लट् प्रथमपुरुष एक0 (कर्मवाच्य)
क्रियते = √कृ + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन (कर्मवाच्य)
आच्छाद्यते = आङ् + √छद् + णिच् + लट् प्र0पु0 एक0 (कर्मवाच्य)
अपसार्यते = अप + √सृ + णिच् + लट् + प्र0पु0 एक0 (कर्मवाच्य)
अपह्रियते = अप् + √हृ + लट् प्रथमपुरुष एक0 (कर्मवाच्य)
उत्सार्यन्ते = उत् + √सृ + णिच् + लट् + प्र0पु0 बहु0 (कर्मवाच्य)
परामृश्यते = परा + √मृश् + यक् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
उपयान्ति = उप + √या + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
गृह्यन्ते = √ग्रह् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (कर्मवाच्य)
अभिभूयन्ते = अभि + √भू + लट् प्रथमपुरुष बहु0 (वाच्य)
आवेश्यन्ते = आङ् + √विश् + कर्मणि + लट् प्रथमपुरुष बहु0
अवष्टभ्यन्ते = अव + √स्तम्भ् + कर्मणि + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन

विडम्ब्यन्ते = वि + √डम्ब् + लट् प्रथमपुरुष बहु० (कर्मणि)
ग्रस्यन्ते = √ग्रस् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (कर्मणि)
विचेष्टन्ते = वि + √चेष्ट् + लट् प्रथमपुरुष, बहुवचन
सञ्चार्यन्ते = सम् + √चर् + णिच् + लट् प्र०पु० बहु० कर्मणि
जल्पन्ति = √जल्प् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
उत्पादयन्ति = उत् + √पद् + णिच् लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अभिजानन्ति + अभि + √ज्ञा लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
ईक्षन्ते = √ईक्ष् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (आत्मनेपदी)
प्रतिबुध्यन्ते = √बुध् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (कर्मणि)
सहन्ते = √सह + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (आत्मने०)
गृह्णन्ति = √ग्रह + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
शातयन्ति = √शद्लृ + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
उद्वेजयन्ति = उत् + √विज् + लट् + णिच्, + प्र०पु० बहु०
उपजनयन्ति = उप + √जन् + णिच् लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अवगच्छन्ति = अव + √गम् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
उपयान्ति = उप + √या + पुक् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अभिनन्दन्ति = अभि + √नन्द् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
सम्भावयन्ति = सम् + √भू + णिच् लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
आशङ्कन्ते = आङ् + √शङ्क्, लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (आत्मने०)
गणयन्ति = √गण + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
स्थापयन्ति = √स्था + पुक् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
कुर्वन्ति = √कृ + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
मन्यन्ते = √मन्, लट् प्रथमपुरुष बहुवचन आत्मने०
आकलयन्ति = आङ् + √कल् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहु०
पूजयन्ति = √पूज् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
मानयन्ति = √मान् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अर्चयन्ति = √अर्च् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अभिवादयन्ति = अभि + वद् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहु०
अभ्युत्तिष्ठन्ति = अभि + उत् + √स्था + लट् प्रथमपुरुष बहु०
उपहसन्ति = उप + √हस् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
कुप्यन्ति = √कुप् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अभिनन्दन्ति = अभि + √नन्द् लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
आलपन्ति = आङ् √लप् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन

संवर्धयन्ति = सम् + √वृध् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अवतिष्ठन्ते = अव + √स्था + लट् प्रथमपुरुष बहु० (आत्मने०)
ददति = √दा + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
उपजनयन्ति = उप + √जन् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहु०
मन्यन्ते = √मन् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (आत्मने०)
उद्भावयति = उद् + √भू + णिच् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
प्रयतेथाः = प्र + √यत्, विधिलिङ् मध्यमपुरुष एकवचन (आत्मने०)
उपहस्यसे = उप + √हस् + यक् + लट् मध्यमपुरुष एकवचन
निन्द्यसे = √निन्द् + यक् + कर्मणि + लट् + मध्यमपुरुष एकवचन
धिक्क्रियसे = धिक् + √ कृ + यक् कर्मणि + लट् + म०पु० एक०
उपालभ्यसे = उप + आङ् + √लभ् + लट् म०पु० एक० कर्मणि
शोच्यसे = √शुच् + यक् + कर्मणि लट् मध्यमपुरुष एकवचन
प्रकाश्यसे = प्र + √काश् + यक् + कर्मणि + लट् म०पु० एक०
प्रतार्यसे = प्र + √तृ + यक् + लट् मध्यमपुरुष एकवचन
आस्वाद्यसे = आङ् + √स्वद् + यक् + कर्मणि + लट् म०पु० एक०
अवलुप्यसे = अव + √लुप् + यक् + कर्मणि + म०पु० एक०
वञ्चसे = √वञ्च् + यक् + कर्मणि + लट् + मध्यमपुरुष एकवचन
प्रलोभ्यसे = √प्र + √लुभ् + यक् + कर्मणि + लट् म०पु० एक०
विडम्ब्यसे = वि √डम्ब् + कर्मणि लट् मध्यमपुरुष एकवचन
नर्त्यसे = √नृत् + यक् + कर्मणि लट् मध्यमपुरुष एकवचन
क्रियसे = √कृ + यक् + कर्मणि + लट् मध्यमपुरुष एकवचन
आक्षिप्यसे = आङ् + √क्षिप् + यक् + कर्मणि लट् म०पु० एक०
अवकृष्यसे = अव + √ कृष् + यक् + कर्मणि लट् म०पु० एक०
मदयन्ति = √मद् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अभिधीयसे = अभि + √ धा + कर्मणि आत्मने० लट् म०पु० एक०
उपशशाम = उप + √शम् + लिट् प्रथमपुरुष एकवचन
अनुभवतु = अनु √भू + लोट् प्रथमपुरुष एकवचन
उद्वह = उत् + √वह् + लोट् मध्यमपुरुष एकवचन
उन्नमय = उत् + √नम् + लोट् मध्यमपुरुष एकवचन
पुनर्विजयस्व = पुनः + वि + √जि + लोट् + म०पु० एक०
आजगाम = आङ् + √गम् + लिट् प्रथमपुरुष एकवचन
अवनमय = अव + √नम् + लोट् मध्यमपुरुष एकवचन

कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में कृदन्त

समतिक्रामत्सु = सम् + अति + √क्रम् + शप् + शतृ सप्तमी, बहु0
समुपस्थितः = सम् + उप + √स्था + क्त
आगतम् = आङ् + √गम् + क्त
आरूढः = आङ् + √रुह् + क्त
कर्तुम् = √कृ + तुमुन्
इच्छन् = √इष् + शतृ
विदितम् = √विद् + क्त
वेदितव्यम् = √विद् + तव्यत्
अधीतम् = अधि + √इङ् + क्त
उपदेष्टव्यम् = उप + √दिश् + तव्यत्
भेद्यम् = √भिद् + ण्यत्
उच्छेद्यम् = उत् + √छिद् + यत्
उपनेयम् = उप + √नी + यत्
साध्यम् = √सिध् > सेध् > साध् + णिच् + यत्
हार्यः = √हृ + ण्यत्
गम्यः = √गम् + यत्
वध्यः = √ हन् (वध्) + ण्यत्
प्रबोधः = प्र + √बुध् + घञ्
सन्निपातः = सम् + नि + √पत् + घञ्
समुद्भूता = सम् + उत् + √भू + क्त + टाप्
आस्वाद्यमानानि = आङ् + √स्वद् + यक् + मुक् + शानच्
प्रवर्तकः = प्र + √वृत् + ण्वुल्
अत्यासङ्गः = अति + आङ् + √सञ्ज् + घञ्
अपगतम् = अप + √गम् + क्त
भव्यः = √भू + यत्
स्थितम् = √स्था + क्त
जातम् = √जन् + क्त
अमलीकुर्वन् = अमल + च्वि + √कृ + शतृ
आस्वादितः = आङ् + √स्वद् + णिच् + क्त
उपदिष्टम् = उप + √दिश् + इट् क्त
उपजातम् = उप + √जन् + क्त
करणम् = √कृ + ल्युट्
अतीतम् = अति + √इण् + क्त
उपदेष्टारः = उप + √दिश् + तृच् (प्रथमा बहुवचन)
उपदिश्यमानम् = उप + √दिश् + यक् + मुक् + शानच्
शृण्वन्तः = √श्रु + शतृ प्रथमा, बहुवचन
निमीलितम् = नि + √मील् + क्त
अवधीरयन्तः = अव + √धीर् + णिच् + शतृ
अभिनिवेशः = अभि + नि + √विश् + घञ्
गृहीत्वा = √ग्रह + क्त्वा
उद्गता = उद् + √गम् + क्त + टाप्
लब्धः = √लभ् + क्त
उल्लासिता = उत् + √लस् + णिच् + क्त + टाप्
विधृता = वि + √धृ + क्त + टाप्
परिपालिता = परि + √पाल् + इट् + क्त + टाप्
पश्यतः = √दृश् + शतृ + षष्ठी विभक्ति, एक0
विधृता + वि + √धृ + क्त + टाप्
मत्ता = √मद् + क्त + टाप्
उपशिक्षितुम् = उप + √शिक्ष् + तुमुन्
आश्रिता = आङ् + √श्रि + क्त + टाप्
ग्रहीतुम् = √ग्रह् + तुमुन्
समुपचितानि = सम् + उप + √चि + क्त प्रथमा, बहु0
गतिः = √गम् + क्तिन्
प्रकटिता = प्र + √कट् + क्त + टाप्
हार्यम् + √हृ + ण्यत्
दुष्टा = √दुष् + क्त + टाप्
दर्शितः = √दृश् + णिच् + क्त
उच्छ्रायः = उत् + √श्रि + घञ्
उन्मत्तः = उत् + √मद् + क्त
परिगृहीतुम् = परि + √ग्रह् + तुमुन्
अभिजातम् = अभि + √जन् + क्त
दातारम् = √दा + तृच् द्वितीया, एकवचन
विनीतम् = वि + √नी + क्त
दर्शयन्ती = √दृश् + णिच् + शतृ + ङीप्
उपजनयन्ती = उप + √जन् + णिच् + शतृ + ङीप्
उन्नतिम् = उत् + √नम् + क्तिन्, द्वितीया, एक0
आदधाना = आङ् + √धा + शानच् + टाप्

दधाना = √धा + शानच् + टाप्
आहरन्ती = आङ् + √हृ + शतृ + ङीप्
गीतिः = √गै + क्तिन्
उद्गतिः = उद् + √गम् + क्तिन्
उत्सारणम् = उत् + √सृ + णिच् + ल्युट्
प्रस्तावना = प्र + √स्तु + णिच् + युच् (अन) + टाप्
वध्यः = √हन् (वध् आदेश) + यत्
परिचितया = परि + √चि + क्त + टाप्, तृतीया, एक०
उपगूढः = उप + √गूह् + क्त
विप्रलब्धः = वि + प्र + √लभ् + क्त
नियतम् = नि + √यम् + क्त
आलेख्यम् = आङ् + √लिख् + ण्यत्
उत्कीर्णा = उत् + √कृ + क्त + टाप्
श्रुता = √श्रु + क्त + टाप्
चिन्तिता = √चिन्त् + इट् + क्त + टाप्
परिगृहीता = परि + √ग्रह् + क्त + टाप्
विक्लवाः = वि + √क्लु + अच् प्रथमा, बहुवचन
अधिष्ठानम् = अधि + √स्था + ल्युट्
क्षान्तिः = √क्षम् + क्तिन्
वादाः = √वद् + घञ् + प्रथमा, बहु०
प्रलोभ्यमानाः = प्र + √लुभ् + णिच् + यक् + शानच्
बाध्यमानाः = √बाध् + यक् + शानच्
आयास्यमानाः = आङ् + √यस् + णिच् + यक् + शानच्
लब्धः = √लभ् + क्त
प्रसरः = प्र + √सृ + अप्
क्रियमाणाः = √कृ + यक् + शानच्
आहताः = आङ् + √हन् + क्त
पच्यमाना = √पच् + यक् + शानच्
भग्ना = √भञ्ज् + क्त + टाप्
आसन्नः = आङ् + √सद् + क्त
दंष्ट्राः = √दंश् + क्त, प्रथमा, बहुवचन
कृताः = कृ + क्त प्रथमा बहुवचन
मूर्च्छिताः = √मूर्च्छ् + क्त प्रथमा, बहुवचन
वर्धितम् = √वृध् + क्त
प्रेरिताः = प्र + √ईर् + णिच् + क्त, प्रथमा बहुवचन
स्थितानि = √स्था + क्त, प्रथमा, बहुवचन
प्रसवाः = प्र + √सू + अप् प्रथमा बहुवचन
दूरदर्शिनः = दूर + √दृश् + णिनि प्रथमा, बहुवचन
उपसृष्टाः = उप + √सृज् + क्त प्रथमा बहुवचन
अधिष्ठितानि = अधि + √स्था + क्त प्रथमा, बहुवचन
प्रेतानां = प्र + √इण् + क्त, षष्ठी बहुवचन
श्रूयमाणाः = √श्रु + यक् + शानच्, प्रथमा बहुवचन
अध्यवसायः = अधि + अव + √सो + घञ्
चिन्त्यमानाः = √चिन्त् + यक् + शानच्
आपूर्वमाणाः = आङ् + √पुर्व् + यक् + शानच्
आध्माताः = आङ् + √ध्मा + क्त + टाप्
उपगताः = उप + √गम् + क्त प्रथमा बहुवचन
अवस्थिताः = अव + √स्था + क्त प्रथमा बहुवचन
पतितम् = √पत् + क्त
निष्पादनम् = निस् + √पद् + ल्युट्
आस्थानम् + आङ् + √स्था + ल्युट्
अभिगमनम् = अभि + √गम् + ल्युट्
प्रमत्तताम् = प्र + √मद् + क्त + तल् + टाप् द्वितीया, एकवचन
व्यसनम् = वि + √अस् + ल्युट्
अवधीरणम् = अव + √धीर् + ल्युट्
प्रणेय = प्र + √नी + यत्
उपसेव्यः = उप + √सेव् + ण्यत्
अभिसक्तिम् = अभि + √सञ्ज् +क्तिन्, द्वितीया, एकवचन
अवकर्णनम् = अव + √कर्ण् + णिच् + ल्युट्
अनुभावः = अनु + √भू + घञ्
पराभवसहः = परा + भव + √सह् + अच्
अवमाननम् = अव + √मान् + ल्युट्
ख्यातिम् = √ख्या + क्तिन् द्वितीया, एकवचन
उत्साहः = उत् + √सह् + घञ्
ज्ञः = √ज्ञा + क
विहसद्भिः = वि + √हस् + शतृ तृतीया बहुवचन
प्रतारणे = प्र + √तॄ + णिच् + ल्युट्, सप्तमी, एकवचन।
प्रतार्यमाणाः = प्र + √तॄ + णिच् + यक् + शानच्
आरोपितः = आङ् + √रुह् + णिच् + क्त

अभिमानः = अभि + √मन् + घञ्
दिव्याः = √दिव् + यत् + प्रथमा, बहु0
अवतीर्णम् = अव + √तॄ + क्त
उत्प्रेक्षमाणः = उत् + प्र + √ईक्ष् + शानच्
प्रारब्धा = प्र + आङ् + √ रभ् + क्त + टाप्
उपहास्यः = उप + √हस् + ण्यत्
क्रियमाणा = √कृ + यक् + शानच् + टाप्
अध्यारोपणम् = अधि + आङ् + √रुह् + णिच्, ल्युट्
विप्रतारणा = वि + प्र + √तॄ + णिच् + युच् (अन) + टाप्
सम्भूता = सम् + √भू + क्त + टाप्
सम्भावना = सम् + भू + णिच् + युच् (अन) + टाप्
उपहताः = उप + √हन् + क्त, प्रथमा, बहुवचन
प्रविष्टम् = प्र + √विश् + क्त
दर्शनस्य + √दृश् + ल्युट्, षष्ठी एकवचन
प्रदानम् = प्र + √दा + ल्युट्
दृष्टिपातः = दृष्टि + √पत् + घञ्
सम्भाषणम् = सम् + √भाष् + ल्युट्
संविभागस्य = सम् + वि + √भज् + घञ्, षष्ठी, एक0
स्पर्शम् = √स्पृश् + घञ्, द्वितीया, एकवचन
पावनम् = √पूञ् + णिच् + ल्युट्
जातिः = √जन् + क्तिन्
अर्चनीयान् = √अर्च् + अनीयर्
अभिवादनार्हः = अभिवादन + √अर्ह् + अच्
प्रलपितम् = प्र + √लप् + क्त
परिभवः = परि + √भू + अप्
हितवादी = हित + √वद् + णिनि
आप्तता = √आप् + क्त + तल् + टाप्
उपरचितः = उप + √रच् + क्त
विगतम् = वि + √गम् + क्त
कर्त्तव्यम् = √कृ + तव्यत्
अभिचारस्य = अभि + √चर् + घञ्, षष्ठी, एक0
अभिसन्धाने = अभि + सम् + √धा + ल्युट्, सप्तमी, एक0
उपदेष्टारः = उप + √दिश् + तृच्, प्रथमा, बहु0
भुक्ता = √भुज् + क्त + टाप्
आसक्तिः = आङ् + √सञ्ज् + क्तिन्
मारणम् = √मृ + णिच् + ल्युट्
अभियोगः = अभि + √युज् + घञ्
अनुरक्ताः = अनु + √रञ्ज् + क्त, प्रथमा, बहुवचन
उच्छेद्याः = उत् + √छिद् + ण्यत् प्रथमा, बहुवचन
समारोपिताः = सम् + आङ् + √रुह् + णिच् + क्त
कृतवान् = कृ + क्तवतु
अभिजातम् = अभि + √जन् + क्त
दुर्विनीता = दुर् + वि + √नी + क्त + टाप्
क्रियमाणम् = √कृ + यक् + शानच्, द्वितीया, एकवचन
अभिषेकः = अभि + √सिच् + घञ्
आगतम् = आङ् + √गम् + क्त
ऊढाम् = √वह् + क्त = टाप् द्वितीया, एकवचन
प्रारब्धम् = प्र + आङ् + √रभ् + क्त
परिभ्रमन् = परि + √भ्रम् + शतृ
विजिताम् = वि + √जि + क्त + टाप्, द्वितीया, एक0
प्रतापम् = प्र + √तप् + घञ्, द्वितीया, एक0
आरोपयितुम् = आङ् + √रुह् + णिच् + तुमुन्
आरुढः = आङ् + √रुह् + क्त
प्रतापः = प्र + √तप् + घञ्
त्रैलोक्यदर्शी = त्रैलोक्य + √दृश् + णिनि
सिद्धः = √सिध् + क्त
आदेशः = आङ् + √दिश् + घञ्
अभिधाय = अभि + √धा + ल्यप्
प्रक्षालितः = प्र + √क्षल् + णिच् + क्त
उन्मीलितः = उद् + √मील् + णिच् + क्त
स्वच्छीकृतः = स्वच्छ = च्वि + √कृ + क्त
निर्मृष्टः = निर् + √मृज् + क्त
अभिषिक्तः = अभि + √सिच् + क्त
अभिलिप्तः = अभि + √ लिप् + क्त
अलङ्कृतम् = अलम् + √कृ + क्त
कृतः = √कृ + क्त
उद्भाषितः = उद् + √भास् + णिच् +क्त
स्थित्वा = √स्था + क्त्वा

कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में तद्धित

यौवराज्यम् = युवराज + ष्यञ्
निसर्गतः = निसर्ग + तसिल्
ऐश्वर्यम् = ईश्वर + ष्यञ्
अन्धत्वम् = अन्ध + त्व
ईश्वरत्वम् = ईश्वर + त्व
शक्तित्वम् = शक्ति + त्व
कालुष्यम् = कलुष + ष्यञ्
कषायितम् = कषाय + इतच्
अधिकतरम् = अधिक + तरप्
मलिनम् = मल + इनच्
अमलीकुर्वन् = अमल + च्वि + √कृ + शतृ
वैरूप्यम् = विरूप + ष्यञ्
वृद्धत्वम् = वृद्ध + त्व
ग्राम्यः = ग्राम + यत्
प्रचण्डतरीभवति = प्रचण्ड + तरप् + च्वि + √भू + तिप् (लट्)।
चञ्चलताम् = चञ्चल + तल् + द्वितीया, एक0।
नैष्ठुर्यम् = निष्ठुर + ष्यञ् + द्वितीया, एक0।
वैदग्ध्यम् = विदग्ध + ष्यञ् + द्वितीया, एक0।
विशेषज्ञताम् = विशेषज्ञ + तल् + टाप् + द्वितीया, एक0।
प्रमाणीकरोति = प्रमाण + च्वि + √कृ + तिप् + लट्।
पारुष्यम् = परुष + ष्यञ्
विश्वरूपत्वम् = विश्वरूप + त्व
उन्मत्तीकरोति = उन्मत्त + च्वि + √कृ + तिप् (लट्)
सरस्वती = सरस् + मतुप् + ङीप्
गुणवन्तम् = गुण + मतुप् + द्वितीया, एक0
पातकिनम् = पातक + इनि + द्वितीया, एक0
मनस्विनम् = मनस् + विनि, द्वितीया, एक0
जाड्यम् = जड + ष्यञ्
स्वभावताम् = स्वभाव + तल् + द्वितीया, एक0
ईश्वरताम् = ईश्वर + तल् + द्वितीया, एक0
प्रकृतित्वम् = प्रकृति + त्व
लघिमानम् = लघु + इमनिच्, द्वितीया, एक0
विग्रहवती = विग्रह + मतुप् + ङीप्
रेणुमयी = रेणु + मयट् + ङीप्
कलुषीकरोति = कलुष + च्वि + √कृ + तिप् (लट्)
मलिनम् = मल + इनच् + द्वितीया, एक0
करिणः = कर + इनि + षष्ठी, एक0।
पुस्तमयी = पुस्त + मयट् + ङीप्
दाक्षिण्यम् = दक्षिण + ष्यञ्
मलिनीक्रियते = मलिन + च्वि + √कृ + यक् + त (लट्)
मनस्विन् = मनस् + विनि
चञ्चलतया = चञ्चल + तल् + तृतीया, एक0
सहस्रताम् = सहस्र + तल् + द्वितीया, एक0
विह्वलताम् = विह्वल + तल् + द्वितीया, एक0
तेजस्विनः = तेजस् + विनि + प्रथमा, बहु0
निश्चलीकृताः = निश्चल + च्वि + √कृ + क्त, प्रथमा, बहु0
कनकमयम् = कनक + मयट् + द्वितीया, एक0।
तैक्ष्ण्यम् = तीक्ष्ण + ष्यञ्
तैमिरिकाः = तिमिर + ठक् + प्रथमा, बहु0।
शरव्यताम् = शरव्य + तल् + द्वितीया, एक0।
वैदग्ध्यम् = विदग्ध + ष्यञ्
प्रमत्तताम् = प्रमत्त + तल् + टाप् + द्वितीया, एकवचन
शौर्यम् = शूर + ष्यञ्
भृत्यताम् = भृत्य + तल् + टाप् + द्वितीया, एक0।
रसिकता = रसिक + तल् + टाप्
महानुभावता = महानुभाव + तल् + टाप्
स्वच्छन्दताम् = स्वच्छन्द + तल् + टाप् + द्वितीया, एक0।
प्रभुत्वम् = प्रभु + त्व
महासत्त्वता = महासत्त्व + तल् + टाप्
देवता = देव + तल् + टाप्
अन्तरितः = अन्तर + इतच्
वैक्लव्यम् = विक्लव + ष्यञ्
मित्रताम् = मित्र + तल् + टाप् + द्वितीया, एक0
कौटिल्यम् = कुटिल + ष्यञ्
मुखरीकृतवान् = मुखर + च्वि + कृ + क्तवतु
स्वच्छीकृतः = स्वच्छ + च्वि + कृ + क्त

कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में सन्धि

- **यौवराज्य + अभिषेकम्** = यौवराज्याभिषेकम् (दीर्घसन्धि)
- **वेदितव्यस्य + अधीतम्** = वेदितव्यस्याधीतम् (दीर्घसन्धि)
- **न + अल्पम्** = नाल्पम् (दीर्घसन्धि)
- **अपि + उपदेष्टव्यम्** = अप्युपदेष्टव्यम् (यण्सन्धि)
- **एव + अभानुभेद्यम्** = एवाभानुभेद्यम् (दीर्घसन्धि)
- **रत्न + आलोकः** = रत्नालोकः (दीर्घसन्धि)
- **आलोक + उच्छेद्यम्** = आलोकोच्छेद्यम् (गुणसन्धि)
- **प्रभा + अपनेयम्** = प्रभापनेयम् (दीर्घसन्धि)
- **अपरिणाम + उपशमः** = अपरिणामोपशमः (गुणसन्धि)
- **तिमिर + अन्धत्वम्** = तिमिरान्धत्वम् (दीर्घसन्धि)
- **अशिशिर + उपचारहार्यः** = अशिशिरोपचारहार्यः (गुणसन्धि)
- **उपचारहार्यः + अतितीव्रः** = उपचारहार्योऽतितीव्रः (विसर्ग + पूर्वरूपसन्धि)
- **ज्वर + ऊष्मा** = ज्वरोष्मा (गुणसन्धि)
- **विष + आस्वादः** = विषास्वादः (दीर्घसन्धि)
- **अक्षपा + अवसानप्रबोधा** = अक्षपावसानप्रबोधा (दीर्घसन्धि)
- **भवति + इति** = भवतीति (दीर्घसन्धि)
- **विस्तरेण + अभिधीयसे** = विस्तरेणाभिधीयसे (दीर्घसन्धि)
- **च + इति** = चेति (गुणसन्धि)
- **महती + इयम्** = महतीयम् (दीर्घसन्धि)
- **खलु + अनर्थम्** = खल्वनर्थम् (यण्सन्धि)
- **सर्व + अविनयानाम्** = सर्वाविनयानाम् (दीर्घसन्धि)
- **एक + एकम्** = एकैकम् (वृद्धिसन्धि)
- **यौवन + आरम्भे** = यौवनारम्भे (दीर्घसन्धि)
- **निर्मला + अपि** = निर्मलापि (दीर्घसन्धि)
- **धवलता + अपि** = धवलतापि (दीर्घसन्धि)
- **सरागा + इव** = सरागेव (गुणसन्धि)
- **वात्या + इव** = वात्येव (गुणसन्धि)
- **दुरन्ता + इयम्** = दुरन्तेयम् (गुणसन्धि)
- **कषायित + आत्मनः** = कषायितात्मनः (दीर्घसन्धि)
- **आत्मनस् + च** = आत्मनश्च (व्यञ्जनसन्धि)
- **सलिलानि + इव** = सलिलानीव (दीर्घसन्धि)
- **तानि + एव** = तान्येव (यण्सन्धि)
- **विषयस्वरूपाणि + आस्वाद्यमानानि** = विषयस्वरूपाण्या-स्वाद्यमानानि (यण्सन्धि)
- **मधुरतराणि + आपतन्ति** = मधुरतराण्यापतन्ति (यण्सन्धि)
- **इव + उन्मार्गः** = इवोन्मार्गः (गुणसन्धि)
- **अति + आसङ्गः** = अत्यासङ्गः (यण्सन्धि)
- **भवादृशाः + एव** = भवादृशा एव (विसर्गसन्धि)
- **भाजनानि + उपदेशानाम्** = भाजनान्युपदेशानाम् (यण्सन्धि)
- **स्फटिकमणौ + इव** = स्फटिकमणाविव (अयादिसन्धि)
- **सुखेन + उपदेशगुणाः** = सुखेनोपदेशगुणाः (गुणसन्धि)
- **शङ्ख + आभरणम्** = शङ्खाभरणम् (दीर्घसन्धि)
- **अपि + अन्धकारम्** = अप्यन्धकारम् (यण्सन्धि)
- **निशाकरः + इव** = निशाकर इव (विसर्गसन्धि)
- **गुरु + उपदेशः** = गुरूपदेशः (दीर्घसन्धि)
- **परिणामः + इव** = परिणाम इव (विसर्गसन्धि)
- **च + अनास्वादितम्** = चानास्वादितम् (दीर्घसन्धि)
- **गलति + उपदिष्टम्** = गलत्युपदिष्टम् (यण्सन्धि)
- **दुष्प्रकृतेः + अन्वयः** = दुष्प्रकृतेरन्वयः (विसर्गसन्धि)
- **वा + अविनयस्य** = वाविनयस्य (दीर्घसन्धि)
- **प्रशमहेतुना + अपि** = प्रशमहेतुनापि (दीर्घसन्धि)
- **वडवा + अनलः** = वडवानलः (दीघसन्धि)
- **गुरूपदेशः (स्) + च** = गुरूपदेशश्च (व्यञ्जनसन्धि)
- **न + उद्वेगकरः** = नोद्वेगकरः (गुणसन्धि)
- **प्रतिशब्दः + इव** = प्रतिशब्द इव (विसर्गसन्धि)
- **जनः + भयात्** = जनो भयात् (उत्वसन्धि, विसर्गसन्धि)
- **श्रवणविवराः (स्) + च** = श्रवणविवराश्च (श्चुत्वसन्धि)
- **च + उपदिश्यमानम्** = चोपदिश्यमानम् (गुणसन्धि)
- **हित + उपदेशदायिनः** = हितोपदेशदायिनः (गुणसन्धि)
- **मूर्च्छा + अन्धकारिता** = मूर्च्छान्धकारिता (दीर्घसन्धि)
- **अलीक + अभिमानम्** = अलीकाभिमानम् (दीर्घसन्धि)
- **अभिमान + उन्मादः** = अभिमानोन्मादः (गुणसन्धि)
- **कल्याण + अभिनिवेशीम्** = कल्याणाभिनिवेशीम् (दीर्घसन्धि)
- **मण्डल + उत्प्लवनम्** = मण्डलोत्प्लवनम् (गुणसन्धि)
- **कौस्तुभमणेः + अतिनैष्ठुर्यम्** = कौस्तुभमणेरतिनैष्ठुर्यम् (विसर्गसन्धि)
- **इति + एतानि** = इत्येतानि (यण्सन्धि)

- **गृहीत्वा + एव** = गृहीत्वैव (वृद्धि)
- **एव + उद्गता** = एवोद्गता (गुण)
- **हि + एवम्** = ह्येवम् (यण्)
- **यथा + इयम्** = यथेयम् (गुण)
- **लब्धा + अपि** = लब्धापि (दीर्घ)
- **कृता + अपि** = कृतापि (दीर्घ)
- **सहस्र + उल्लासितम्** = सहस्रोल्लासितम् (गुण)
- **विधृता + अपि** = विधृतापि (दीर्घ)
- **विधृतापि + अपक्रामति** = विधृताप्यपक्रामति (यण्)
- **दुर्दिन + अन्धकारः** = दुर्दिनान्धकारः (दीर्घ)
- **परिपालिता + अपि** = परिपालितापि (दीर्घ)
- **न + अभिजनम्** = नाभिजनम् (दीर्घ)
- **न + आचारम्** = नाचारम् (दीर्घ)
- **गन्धर्वनगरलेखा + इव** = गन्धर्वनगरलेखेव (गुण)
- **पश्यतः + एव** = पश्यत एव (विसर्ग)
- **अद्य + अपि** = अद्यापि (दीर्घ)
- **अद्यापि + आरूढम्** = अद्याप्यारूढम् (यण्)
- **परिवर्त + आवर्तः** = परिवर्तावर्तः (दीर्घ)
- **कण्टकक्षता + इव** = कण्टकक्षतेव (गुण)
- **विधृता + अपि** = विधृतापि (दीर्घ)
- **परम + ईश्वरः** = परमेश्वरः (गुण)
- **मधुपानमत्ता + इव** = मधुपानमत्तेव (गुण)
- **इव + उपशिक्षितुम्** = इवोपशिक्षितुम् (गुण)
- **दिवस + अन्तम्** = दिवसान्तम् (दीर्घ)
- **लता + इव** = लतेव (गुण)
- **गङ्गा + इव** = गङ्गेव (गुण)
- **वसुजननी + अपि** = वसुजनन्यपि (यण्)
- **दिवसकरगतिः + इव** = दिवसकरगतिरिव (विसर्ग)
- **पातालगुहा + इव** = पातालगुहेव (गुण)
- **हिडिम्बा + इव** = हिडिम्बेव (गुण)
- **साहस + एकहार्यम्** = साहसैकहार्यम् (वृद्धि)
- **प्रावृट् + इव** = प्रावृडिव (व्यञ्जनसन्धि)
- **इव + अचिरद्युतिकारिणी** = इवाचिरद्युतिकारिणी (दीर्घ)
- **पिशाची + इव** = पिशाचीव (दीर्घ)
- **दर्शित + अनेक** = दर्शितानेक (दीर्घ)
- **पुरुष + उच्छ्राया** = पुरुषोच्छ्राया (गुण)
- **ईर्ष्यया + इव** = ईर्ष्ययेव (गुण)
- **न + आलिङ्गति** = नालिङ्गति (दीर्घ)
- **न + उपसर्पति** = नोपसर्पति (गुण)
- **इव + उपहसति** = इवोपहसति (गुण)
- **च + इन्द्रजालम्** = चेन्द्रजालम् (गुण)
- **आरोपयन्ती + अपि** = आरोपयन्त्यपि (यण्)
- **आदधाना + अपि** = आदधानापि (दीर्घ)
- **सम्भवा + अपि** = सम्भवापि (दीर्घ)
- **दधाना + अपि** = दधानापि (दीर्घ)
- **अपि + अशिवः** = अप्यशिवः (यण्)
- **बल + उपचयम्** = बलोपचयम् (गुण)
- **आहरन्ती + अपि** = आहरन्त्यपि (यण्)
- **सहोदरा + अपि** = सहोदरापि (दीर्घ)
- **विग्रहवती + अपि** = विग्रहवत्यपि (यण्)
- **पुरुषोत्तमरता + अपि** = पुरुषोत्तमरतापि (दीर्घ)
- **रेणुमयी + इव** = रेणुमयीव (दीर्घ)
- **च + इयम्** = चेयम् (गुण)
- **दीपशिखा + इव** = दीपशिखेव (गुण)
- **तिमिर + उद्गतिः** = तिमिरोद्गतिः (गुण)
- **सर्व + अविनयानाम्** = सर्वाविनयानाम् (दीर्घ)
- **हि + अपरिचितया** = ह्यपरिचितया (यण्)
- **गता + अपि** = गतापि (दीर्घ)
- **पुस्तमयी + अपि** = पुस्तमय्यपि (यण्)
- **अपि + इन्द्रजालम्** = अपीन्द्रजालम् (दीर्घ)
- **उत्कीर्णा + अपि** = उत्कीर्णापि (दीर्घ)
- **श्रुतापि + अभिसन्धत्ते** = श्रुताप्यभिसन्धत्ते (यण्)
- **चिन्तिता + अपि** = चिन्तितापि (दीर्घ)
- **एवंविधया + अपि** = एवंविधयापि (दीर्घ)
- **च + अनया** = चानया (दीर्घ)
- **एव + एषाम्** = एवैषाम् (वृद्धि)
- **धूमेन + इव** = धूमेनेव (गुण)
- **इव + अपह्रियते** = इवापह्रियते (दीर्घ)
- **इव + आच्छाद्यते** = इवाच्छाद्यते (दीर्घ)
- **मण्डलेन + इव** = मण्डलेनेव (गुण)

- **इव + अपसार्यते** = इवापसार्यते (दीर्घ)
- **पवनैः + इव** = पवनैरिव (विसर्ग)
- **इव + अपह्रियते** = इवापह्रियते (दीर्घ)
- **वेत्रदण्डैः + इव** = वेत्रदण्डैरिव (विसर्ग)
- **इव + उत्सार्यन्ते** = इवोत्सार्यन्ते (गुण)
- **कलकलैः + इव** = कलकलैरिव (विसर्ग)
- **पल्लवैः + इव** = पल्लवैरिव (विसर्ग)
- **खद्योत + उन्मेषः** = खद्योतोन्मेषः (गुण)
- **पञ्चभिः + अपि** = पञ्चभिरपि (विसर्ग)
- **अपि + अनेकाः** = अप्यनेकाः (यण्)
- **संख्यैः + इव** = संख्यैरिव (विसर्ग)
- **इव + इन्द्रियैः** = इवेन्द्रियैः (गुण)
- **इन्द्रियैः + आयास्यमानाः** = इन्द्रियैरायास्यमानाः (विसर्ग)
- **प्रसरेण + एकेन** = प्रसरेणैकेन (वृद्धि)
- **एकेन + अपि** = एकेनापि (दीर्घ)
- **इव + उपगतेन** = इवोपगतेन (गुण)
- **मनसा + आकुलीक्रियमाणा** = मनसाकुलीक्रियमाणा (दीर्घ)
- **ग्रहैः + इव** = ग्रहैरिव (विसर्ग)
- **भूतैः + इव** = भूतैरिव (विसर्ग)
- **इव + अभिभूयन्ते** = इवाभिभूयन्ते (दीर्घ)
- **मन्त्रैः + इव** = मन्त्रैरिव (विसर्ग)
- **इव + आवेश्यन्ते** = इवावेश्यन्ते (दीर्घ)
- **सत्त्वैः + इव** = सत्त्वैरिव (विसर्ग)
- **इव + अवष्टभ्यन्ते** = इवावष्टभ्यन्ते (दीर्घ)
- **वायुना + इव** = वायुनेव (गुण)
- **पिशाचैः + इव** = पिशाचैरिव (विसर्ग)
- **मदनशरैः + मर्माहताः** = मदनशरैर्मर्माहताः (विसर्ग)
- **धन + ऊष्मणा** = धनोष्मणा (गुण)
- **पच्यमानाः + इव** = पच्यमाना इव (विसर्ग)
- **इव + अङ्गानि** = इवाङ्गानि (दीर्घ)
- **कुलीराः + इव** = कुलीरा इव (विसर्ग)
- **पङ्गवः + इव** = पङ्गव इव (विसर्ग)
- **इव + अतिकृच्छ्रेण** = इवातिकृच्छ्रेण (दीर्घ)
- **सप्तच्छदतरवः + इव** = सप्तच्छदतरव इव (विसर्ग)
- **आसन्नमृत्यवः + इव** = आसन्नमृत्यव इव (विसर्ग)
- **न + अभिजानन्ति** = नाभिजानन्ति (दीर्घ)
- **उत्कुपितलोचनाः + इव** = उत्कुपितलोचना इव (विसर्ग)
- **न + ईक्षन्ते** = नेक्षन्ते (गुण)
- **कालदष्टाः + इव** = कालदष्टा इव (विसर्ग)
- **महामन्त्रैः + अपि** = महामन्त्रैरपि (विसर्ग)
- **आभरणानि + इव** = आभरणानीव (दीर्घ)
- **दुष्टवारणाः + इव** = दुष्टवारणा इव (विसर्ग)
- **गृह्णन्ति + उपदेशम्** = गृह्णन्त्युपदेशम् (यण्)
- **इषवः + इव** = इषव इव (विसर्ग)
- **दूरस्थितानि + अपि** = दूरस्थितान्यपि (यण्)
- **फलानि + इव** = फलानीव (दीर्घ)
- **मनोहर + आकृतयः** = मनोहराकृतयः (दीर्घ)
- **आकृतयो + अपि** = आकृतयोऽपि (पूर्वरूप)
- **श्मशान + अग्नयः** = श्मशानाग्नयः (दीर्घ)
- **इव + अतिरौद्रभूतयः** = इवातिरौद्रभूतयः (दीर्घ)
- **इव + अदूरदर्शिनः** = इवादूरदर्शिनः (दीर्घ)
- **क्षुद्र + अधिष्ठितभवनाः** = क्षुद्राधिष्ठितभवनाः (दीर्घ)
- **श्रूयमाणाः + अपि** = श्रूयमाणा अपि (विसर्ग)
- **इव + उद्वेजयन्ति** = इवोद्वेजयन्ति (गुण)
- **इव + उपद्रवम्** = इवोपद्रवम् (गुण)
- **पापेन + इव** = पापेनेव (गुण)
- **अवस्थास् + च** = अवस्थाश्च (श्चुत्वसन्धि)
- **अपि + आत्मानम्** = अप्यात्मानम् (यण्)
- **न + अवगच्छन्ति** = नावगच्छन्ति (दीर्घ)
- **विनोदः + इति** = विनोद इति (विसर्ग)
- **परदारा + अभिगमनम्** = परदाराभिगमनम् (दीर्घ)
- **श्रमः + इति** = श्रम इति (विसर्ग)
- **विलासः + इति** = विलास इति (विसर्ग)
- **अव्यसनिता + इति** = अव्यसनितेति (गुण)
- **सुख + उपसेव्यत्वम्** = सुखोपसेव्यत्वम् (गुण)
- **वेश्या + अभिसक्तिः** = वेश्याभिसक्तिः (दीर्घ)
- **रसिकता + इति** = रसिकतेति (गुण)
- **महानुभावता + इति** = महानुभावतेति (गुण)
- **क्षमा + इति** = क्षमेति (गुण)
- **देव + अवमाननम्** = देवावमाननम् (दीर्घ)

- **महासत्त्वता + इति** = महासत्त्वतेति (गुण)
- **तरलता + उत्साहः** = तरलतोत्साहः (गुण)
- **तथा + एव** = तथैव (वृद्धि)
- **इति + आत्मनि** = इत्यात्मनि (यण्)
- **आत्मनि + आरोपिताः** = आत्मन्यारोपिताः (यण्)
- **आरोपित + अलीकाः** = आरोपितालीकाः (दीर्घ)
- **अलीक + अभिमानाः** = अलीकाभिमानाः (दीर्घ)
- **मर्त्यधर्माणो + अपि** = मर्त्यधर्माणोऽपि (पूर्वरूप)
- **अंश + अवतीर्णम्** = अंशावतीर्णम् (दीर्घ)
- **दिव्य + उचितम्** = दिव्योचितम् (गुण)
- **जनस्य + उपहास्यताम्** = जनस्योपहास्यताम् (गुण)
- **च + अनुजीविनाः** = चानुजीविनाः (दीर्घ)
- **सम्भावना + उपहताः** = सम्भावनोपहताः (गुण)
- **उपहताः (स्) + च** = उपहताश्च (श्चुत्वसन्धि)
- **इव + आत्मा** = इवात्मा (दीर्घ)
- **त्वक् + अन्तरितम्** = त्वगन्तरितम् (व्यञ्जन)
- **अपि + अनुग्रहम्** = अप्यनुग्रहम् (यण्)
- **अपि + उपकारपक्षे** = अप्युपकारपक्षे (यण्)
- **गर्वनिर्भराः (स्) + च** = गर्वनिर्भराश्च (व्यञ्जन)
- **न + अर्चयन्ति** = नार्चयन्ति (दीर्घ)
- **नार्चयन्ति + अर्चनीयान्** = नार्चयन्त्यर्चनीयान् (यण्)
- **न + अभिवादयन्ति** = नाभिवादयन्ति (दीर्घ)
- **अभिवादयन्ति + अभिवादनार्हान्** = अभिवादयन्त्य-भिवादनार्हान् (यण्)
- **वृद्धजन + उपदेशम्** =वृद्धजनोपदेशम् (गुण)
- **इति + असूयन्ति** = इत्यसूयन्ति (यण्)
- **न + अभ्युत्तिष्ठन्ति** = नाभ्युत्तिष्ठन्ति (दीर्घ)
- **अभि + उत्तिष्ठन्ति** = अभ्युत्तिष्ठन्ति (यण्)
- **विषय + उपभोगम्** = विषयोपभोगम् (गुण)
- **इति + उपहसन्ति** = इत्युपहसन्ति (यण्)
- **विद्वत् + जनम्** = विद्वज्जनम् (व्यञ्जन सन्धि)
- **इति + असूयन्ति** = इत्यसूयन्ति (यण्)
- **सचिव + उपदेशाय** = सचिवोपदेशाय (गुण)
- **यो + अहर्निशम्** = योऽहर्निशम् (पूर्वरूप)
- **शास्त्रेषु + अभियोगः** = शास्त्रेष्वभियोगः (यण्)
- **न + उपलभ्यसे** = नोपलभ्यसे (गुण)
- **न + आस्वाद्यसे** = नास्वाद्यसे (दीर्घ)
- **न + अवलुप्यसे** = नावलुप्यसे (दीर्घ)
- **न + उन्मत्तीक्रियसे** = नोन्मत्तीक्रियसे (गुण)
- **न + आक्षिप्यसे** = नाक्षिप्यसे (दीर्घ)
- **न + अपह्रियसे** = नापह्रियसे (दीर्घ)
- **प्रकृत्या + एव** = प्रकृत्यैव (वृद्धि)
- **तथा + अपि** = तथापि (दीर्घ)
- **अभिषेक + अनन्तरम्** = अभिषेकानन्तरम् (दीर्घ)
- **त्रैलोक्यदर्शी + इव** = त्रैलोक्यदर्शीव (दीर्घ)
- **भवति + इति** = भवतीति (दीर्घ)
- **भवतीति + एतावद्** = भवतीत्येतावद् (यण्)
- **अभिधाय + उपशशाम** = अभिधायोपशशाम (गुण)

कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में समास

यौवराज्याभिषेकम् = यौवराज्याय अभिषेकः तम् (तत्पुरुष)

उपकरण-सम्भार-संग्रहार्थम् = उपकरणानां सम्भारः तस्य संग्रहः तदर्थम् (षष्ठी तत्पु०)

आरूढविनयम् = आरूढः विनयः येन तम् (बहुव्रीहि)

विदितवेदितव्यस्य = विदितं वेदितव्यं तेन तस्य (बहुव्रीहि)

अधीतसर्वशास्त्रस्य = अधीतानि सर्वाणि शास्त्राणि येन तस्य (बहुव्रीहि)

अभानुभेद्यम् = न भानुना भेद्यः तम् (नञ् तत्पुरुष)

अरत्नालोकोच्छेद्यम् = न रत्नानाम् आलोकेन उच्छेद्यः तम् (नञ् तत्पुरुष)

अप्रदीपप्रभापनेयम् = न प्रदीपस्य प्रभया अपनेयः तम् (नञ् तत्पुरुष)

अतिगहनम् = गहनानि अतिक्रान्तः (अव्ययीभाव)

यौवनप्रभवम् = यौवनात् प्रभवम् (पञ्चमी तत्पु०)

अपरिणामोपशमः = न परिणामेन उपशमः यस्य (नञ् बहुव्रीहि)

लक्ष्मीमदः = लक्ष्म्याः मदः (षष्ठी तत्पुरुष)

अनञ्जनवर्त्तिसाध्यम् = न अञ्जनवर्तिना साध्यः तम् (नञ् तत्पुरुष)

ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम् = ऐश्वर्यमेव तिमिरः तेन अन्धः तस्य भावः (कर्मधारयमूलक तत्पु०)

अशिशिरोपचारहार्यः = न शिशिरैः उपचारैः हार्यः (नञ् तत्पुरुष)

अतितीव्रः = तीव्रम् अतिक्रान्तः (अव्ययीभाव)

दर्पदाहज्वरोष्मा = दर्पेण दाहः तस्मात् ज्वरः तस्य ऊष्मा (तत्पुरुष)

अमूलमन्त्रगम्यः = न मूलमन्त्रेण गम्यः (नञ् तत्पुरुष)

विषयविषास्वादमोहः = विषयाः एव विषः तस्य आस्वादः तेन मोहः (कर्मधारयमूलक तत्पुरुष)

अक्षपावसानप्रबोधा = न क्षपायाः अवसाने प्रबोधः यस्याः सा (नञ्बहुव्रीहि)

राज्यसुखसन्निपातनिद्रा = राज्यसुखमेव सन्निपातः तस्मात् निद्रा (कर्मधारयमूलक-पञ्चमी-तत्पुरुष)

गर्भेश्वरत्वम् = गर्भतः एव ईश्वरत्वम् (तत्पुरुष)

अभिनवयौवनत्वम् = अभिनवश्चासौ यौवनः तस्य भावः (कर्मधा०)

अप्रतिमरूपत्वम् = अप्रतिमः रूपः तस्य भावः (कर्मधा०)

अमानुषशक्तित्वम् = अमानुषी शक्तिः तस्य भावः (कर्मधारय) अथवा न मानुषस्य शक्तिरिति अमानुषशक्तिः, तस्याः भावः (नञ् तत्पुरुष)

अनर्थपरम्परा = अनर्थाणां परम्परा (षष्ठी तत्पुरुष)

सर्वाविनयानां = सर्वे अविनयाः तेषाम् (कर्मधारय)

यौवनारम्भे = यौवनस्य आरम्भः तस्मिन् (षष्ठी तत्पुरुष)

शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मला = शास्त्राणि जलानि इव तैः प्रक्षालनं तेन निर्मला (कर्मधारयमूलक-तृतीया तत्पु०)

अनुज्झितधवलता = अनुज्झिता धवलता यस्याः सा (बहुव्रीहि)

शुष्कपत्रम् = शुष्कं च तत्पत्रम् (कर्मधारय)

समुद्भूतरजोभ्रान्तिः = समुद्भूता रजोभ्रान्तिः यस्यां सा (बहु०)

आत्मेच्छया = आत्मनः इच्छा तया (षष्ठी तत्पु०)

यौवनसमये = यौवनस्य समयः तस्मिन् (षष्ठी तत्पु०)

इन्द्रियहरिणहारिणी = इन्द्रियाणि एव हरिणाः तान् हरन्तीति सा इन्द्रियहरिणहारिणी (कर्मधारयमूलक उपपद तत्पु०)

अतिदुरन्ता = दुरन्तान् अतिक्रम्य वर्तते या सा (अव्ययीभाव)

उपभोगमृगतृष्णिका = उपभोग एव मृगतृष्णिका। (कर्मधारय)

नवयौवनकषायितात्मनः = नवयौवनेन कषायितः आत्मा येषां ते (बहुव्रीहि)

विषयस्वरूपाणि = विषयाणां स्वरूपाणि (षष्ठी तत्पु०)

दिङ्मोहः = दिशां मोहः (षष्ठी तत्पु०)

उन्मार्गप्रवर्त्तकः = उन्मार्गस्य प्रवर्त्तकः (षष्ठी तत्पुरुष)

अत्यासङ्गः = आसङ्गमतिक्रान्तः (अव्ययीभाव)

भवादृशाः = भवतः सदृशाः ये ते (बहुव्रीहि)

अपगतमले = अपगतः मलः यस्य तस्मिन् (बहुव्रीहि)

स्फटिकमणौ = स्फटिक एव मणिः तस्याम् (कर्मधा०) अथवा = स्फटिकाख्या मणिः तस्याम् (मध्यमपदलोपी समास)

रजनिकरगभस्तयः = रजनिकरस्य गभस्तयः इत्येते (उपमित कर्म०)

उपदेशगुणाः = उपदेशस्य गुणाः (षष्ठी तत्पु०)

गुरुवचनम् = गुरूणां वचनम् (षष्ठी तत्पु०)

शङ्खाभरणम् = शङ्खानाम् आभरणम् यस्य तम् (बहुव्रीहि)

आननशोभासमुदयम् = आनने शोभायाः समुदयः तम् (तत्पु०)

अतिमलिनम् = मलिनानि अतिक्रम्य वर्तते यः तम् (अव्ययीभाव)

प्रदोषसमयनिशाकरः = प्रदोषसमये निशाकरः (सुप्सुपा)

प्रशमहेतुः = प्रशमस्य हेतुः (षष्ठी तत्पु०)

वयःपरिणामः = वयसः परिणामः (षष्ठी तत्पु०)

शिरसिजजालम् = शिरसि जायन्ते इति शिरसिजाः तेषां जालम् (उपपदमूलक - षष्ठी तत्पु०)

गुणरूपेण = गुण एव रूपं तेन (कर्मधारय)

अनास्वादितविषयरसस्य = न आस्वादितः विषयरसः येन तस्य (बहुव्रीहि)

कुसुमशरप्रहारजर्जरिते = कुसुमशरस्य प्रहारः तेन जर्जरिते (षष्ठी तत्प, तृतीया तत्पु०)

अकारणम् = न कारणमिति (नञ्)

दुष्प्रकृतेः = दुष्टा प्रकृतिर्यस्य सः, तस्य (बहुव्रीहि)

चन्दनप्रभवः = चन्दनः तत्प्रभवो यस्य सः (बहुव्रीहि)

प्रशमहेतुना = प्रशमस्य हेतुः, तेन (षष्ठी तत्पु०)

गुरूपदेशः = गुरूणाम् उपदेशः (षष्ठी तत्पु०)

अखिलमलप्रक्षालनक्षमम् = अखिलानां मलानां प्रक्षालने क्षमः तम् (तत्पु०)

अजलं = न जलं यस्मिन् तत् (नञ्बहुव्रीहि)

अनुपजातपलितादिवैरूप्यम् = न उपजातं पलितादेः वैरूप्यम् यस्मिन् तत् (नञ्बहुव्रीहि)

अनारोपितमेदोदोषम् = न आरोपितः मेदो दोषो यस्मिन् तत् (नञ्बहुव्रीहि)

असुवर्णविरचनम् = न सुवर्णेन विरचनं यस्य तत् (नञ्बहुव्रीहि)

अग्राम्यम् = न ग्राम्यः यः तम् (नञ्बहुव्रीहि)

कर्णाभरणम् = कर्णयोः आभरणम् (षष्ठी तत्पु०)

अतीतज्योतिः = अतीतं ज्योतिर्यस्य सः (बहुव्रीहिः)

अनास्वादितविषयरसस्य = न आस्वादितः विषयरसः येन तस्य (बहुव्रीहि)

अकारणं = न कारणमिति (नञ् समास)

चन्दनप्रभवः = चन्दनात् प्रभवो यस्य सः (बहुव्रीहि)

प्रशमहेतुना = प्रशमस्य हेतुः यः तेन (षष्ठी तत्पु०)

वडवानलः = वडवाख्यः अनलः (मध्यमपदलोपी समास)

अहङ्कारदाहज्वरमूर्च्छान्धकारिता = अहङ्कारः दाहज्वर इव तेन या मूर्च्छा तया अन्धकारिता (कर्मधारयमूलक तृतीया तत्पुरुष)

राजप्रकृतिः = राज्ञां प्रकृतिः (षष्ठी तत्पु०)

अलीकाभिमानोन्मादकारीणि = अलीकश्चासौ अभिमानः तेन उन्मादः तत्कुर्वन्तीति तानि (कर्मधारयमूलक, उपपद समास)

राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा = राज्यम् एव विषः तस्य विकारः राज्यविषविकारः तेन तन्द्रा तां प्रददातीति (कर्मधारय-तत्पुरुषमूलक उपपद समास)

राजलक्ष्मीः = राज्ञः लक्ष्मीः (षष्ठी तत्पु०)

कल्याणाभिनिवेशीम् = कल्याणस्य अभिनिवेशः यस्याः ताम्।

सुभटखड्गमण्डलोत्प्लवनविभ्रमभ्रमरी = सुभटानां खड्गमण्डलानि एव उत्प्लवनानि तेषु विभ्रमः यस्याः सा चासौ भ्रमरी (तत्पुरुषमूलक कर्मधारय)

पारिजातपल्लवेभ्यः = पारिजातस्य पल्लवानि तेभ्यः (षष्ठी तत्पु०)

इन्दुशकलात् = इन्दोः शकलं तस्मात् (षष्ठी तत्पु०)

एकान्तवक्रताम् = एकान्ता चासौ वक्रता ताम् (कर्मधारय)

मोहनशक्तिम् = मोहनाय शक्तिः ताम् (चतुर्थी तत्पु०)

कौस्तुभमणेः = कौस्तुभाख्या मणिः तस्याः (मध्यमपदलोपी समास)

अतिनैष्ठुर्यम् = नैष्ठुर्यम् अतिक्रम्य (अव्ययीभाव)

सहवासपरिचयवशात् = सहवासेन परिचयः तद्वशात् (तत्पु०)

विरहविनोदचिह्नानि = विरहस्य विनोदाय चिह्नानि (तत्पु०)

गन्धर्वनगरलेखा = गन्धर्वनगरस्य लेखा (षष्ठी तत्पु०)

आरूढमन्दरपरिवर्त्तावर्तभ्रान्तिजनितसंस्कारा = आरूढेन मन्दरेण यः परिवर्त्तः तस्य आवर्त्तेन या भ्रान्तिः तज्जनिताः संस्काराः यस्याः सा (बहुव्रीहि)

कमलिनीसञ्चरणव्यतिकरलग्ननलिननालकण्टकक्षता = कमलिनीसु सञ्चरणस्य व्यतिकरेण लग्नानां नलिननालानां कण्टकैः क्षता (तत्पुरुष)

अतिप्रयत्नविधृता = अतिप्रयत्नेन विधृता (तृतीया तत्पु०)

परमेश्वरगृहेषु = परमेश्वरस्य गृहं तेषु (षष्ठी तत्पु०)

विविधगन्धगजगण्डमधुपानमत्ता = विविधानां गन्धगजानां गण्डेभ्यः मधुपानेन मत्ता (तत्पु०)

असिधारासु = असीनां धाराः तासु (षष्ठी तत्पु०)

नारायणमूर्तिम् = नारायणस्य मूर्तिः ताम् (षष्ठी तत्पु०)

अप्रत्ययबहुला = न प्रत्ययः बहुलः यस्याः सा (नञ्बहुव्रीहि)

दिवसान्तकमलम् = दिवसान्ते कमलं (सुप्सुपा)

समुपचितमूलदण्डकोशमण्डलम् = समुपचितानि मूलदण्डकोशमण्डलानि यस्य तम् (बहुव्रीहि)

भूभुजम् = भुवं भुनक्ति इति तम् (उपपद०)

वसुजननी = वसूनां जननी (षष्ठी तत्पु०)

तरङ्गबुद्बुदचञ्चला = तरङ्गाणां बुद्बुदैः चञ्चला (तत्पु०)

दिवसकरगतिः = दिवसं करोति इति दिवसकरः तस्य गतिः (उपपदमूलक षष्ठी तत्पुरुषसमास)

प्रकटितविविधसंक्रान्तिः = प्रकटिताः विविधाः संक्रान्तयः यया सा (बहुव्रीहि)

पातालगुहा = पाताले गुहा (सुप्सुपा) अथवा पातालं गुहा इव (कर्मधारय)

तमोबहुला = तमः बहुलः यस्यां सा (बहुव्रीहि)

भीमसाहसैकहार्यहृदया = भीमसाहसैः एकहार्यं हृदयं यस्याः सा (बहुव्रीहि)

अचिरद्युतिकारिणी = अचिरं द्युतिं करोतीति (उपपद तत्पुरुष समास)

दुष्टपिशाची = दुष्टा च सा पिशाची (कर्मधारय)

दर्शितानेकपुरुषोच्छ्राया = दर्शितः अनेकपुरुषाणाम् उच्छ्रायः यया सा (बहुव्रीहि)

स्वल्पसत्वम् = स्वल्पं सत्त्वं यस्य तम् (बहुव्रीहि)

सरस्वतीपरिगृहीतम् = सरस्वत्या परिगृहीतम् (तृतीया तत्पु०)

अपवित्रम् - न पवित्रमिति (नञ्तत्पु०)

उदारसत्त्वम् = उदारं सत्त्वं यस्य तम् (बहुव्रीहि)

अमङ्गलम् = न मङ्गलमिति (नञ्तत्पु०)

सुजनं = शोभनश्चासौ जनः सुजनः तम् (कर्मधारय)

अनिमित्तम् = न निमित्तमिति (नञ्तत्पुरुष)

दुःस्वप्नम् = दुष्टश्चासौ स्वप्नः तम् (कर्मधारय)

पातकिनम् = पातकम् अस्य अस्ति इति तम् (उपपद समास)

परस्परविरुद्धम् = परस्परं विरुद्धमिति (कर्मधारय)

निजचरित्रम् = निजं च तच्चरित्रम् (कर्मधारय)

नीचस्वभावताम् = नीचश्चासौ स्वभावः तस्य भावः ताम् (कर्मधारयमूलक तत्पु० समास)

तोयराशिसम्भवा = तोयराशेः सम्भवः यस्याः सा (बहुव्रीहि)
अशिवप्रकृतित्वम् = न शिवा प्रकृतिः तस्य भावः (नञ्तत्पुरुष)
बलोपचयम् = बलस्य उपचयः तम् (षष्ठी तत्पु०)
अमृतसहोदरा = अमृतं सहोदरः यस्याः सा (बहुव्रीहि)
कटुविपाका = कटुः विपाकः यस्याः सा (बहुव्रीहि)
अप्रत्यक्षदर्शना = न प्रत्यक्षं दर्शनं यस्याः सा (नञ्बहुव्रीहि)
पुरुषोत्तमरता = पुरुषोत्तमे रता (सुप्सुपा)
खलजनप्रिया = खलाश्च ते जनाः (कर्मधारय) तेषां प्रिया (षष्ठी तत्पु०)
दीपशिखा = दीपस्य शिखा (षष्ठी तत्पु०)
कज्जलमलिनम् = कज्जलमिव मलिनम् (उपमितसमास)
संवर्धनवारिधारा = संवर्धनाय वारिणां धारा (तत्पु०)
तृष्णाविषवल्लीनाम् = तृष्णाः विषवल्लयः इव तासाम् (कर्मधा०)
व्याधगीतिः = व्याधस्य गीतिः (षष्ठी तत्पु०)
इन्द्रियमृगाणाम् = इन्द्रियाणि मृगा इव तेषाम् (कर्मधारय)
परामर्शधूमलेखा = परामर्शाय धूमस्य लेखा (तत्पु०)
सच्चरितचित्राणाम् = सच्चरितानि चित्राणि इव तेषाम् (कर्मधारय)
विभ्रमशय्या = विभ्रमः शय्या इव (कर्मधारय)
मोहदीर्घनिद्राणाम् = मोहः दीर्घनिद्रा इव तासाम् (कर्मधारय)
निवासजीर्णवलभी = निवासाय जीर्णा च सा वलभी या (तत्पु० मूलक कर्मधारय)
धनमदपिशाचिकानाम् = धनमदानि एव पिशाचिकाः तासाम् (कर्मधारय)
तिमिरोद्गतिः = तिमिरस्य उद्गतिः (षष्ठीतत्पु०)
शास्त्रदृष्टीनाम् = शास्त्राणि एव दृष्टयः तासाम् (कर्मधा०)
पुरःपताका = पुरः स्थिता पताका (मध्यमपदलोपी समास)
सर्वाविनयानाम् = सर्वे च ते अविनयाः तेषाम् (कर्मधारय)
उत्पत्तिनिम्नगा = उत्पत्त्येः निम्नगा (चतुर्थी तत्पु०)
क्रोधावेगग्राहाणाम् = क्रोधावेगाः ग्राहाः इव तेषाम् (कर्मधारय)
आपानभूमिः = आपानाय भूमिः (चतुर्थी तत्पु०)
विषयमधूनाम् = विषया मधूनि इव तेषाम् (कर्मधारय)
आवासदरी = आवासाय दरी (चतुर्थी तत्पु०)
दोषाशीविषाणाम् = दोषा आशीविषाः इव तेषाम् (कर्मधा०)
उत्सारणवेत्रलता = उत्सारणाय वेत्रस्य लता (तत्पुरुष)
अकालप्रावृट् = अकाले प्रावृट् (सुप्सुपा)
विसर्पणभूमिः = विसर्पणाय भूमिः (चतुर्थी तत्पु०)
कपटनाटकस्य - कपटं नाटकम् इव तस्य (कर्मधारय)
कामकरिणः = कामः करी इव तस्य (कर्मधारय)
राहुजिह्वा = राहोः जिह्वा (षष्ठी तत्पु०)
धर्मेन्दुमण्डलस्य = धर्मः इन्दुमण्डलम् इव तस्य (कर्मधारय)
आलेख्यगता = आलेख्ये गता (सप्तमी तत्पुरुष)
दुराचारया = दुष्टानि आचारानि यस्याः तया (बहुव्रीहि)
सर्वाविनयाधिष्ठानताम् = सर्वेषाम् अविनयानाम् अधिष्ठानं तस्य भावः सर्वाविनयाधिष्ठानता, ताम् (षष्ठी तत्पु०)
अभिषेकसमये = अभिषेकस्य समयः तस्मिन् (षष्ठी तत्पु०)
मङ्गलकलशजलैः = मङ्गलाय कलशाः तेषां जलैः (तत्पुरुष)
अग्निकार्यधूमेन = अग्निकार्यस्य धूमः तेन (षष्ठी तत्पु०)
पुरोहितकुशाग्रसम्मार्जनीभिः = पुरोहितानां कुशाग्रसम्मार्जन्यः ताभिः (षष्ठी तत्पु०)
उष्णीषपट्टबन्धेन = उष्णीषपट्टस्य बन्धः तेन (षष्ठी तत्पुरुष)
जरागमनस्मरणम् = जरायाः आगमनं तस्य स्मरणम् (षष्ठी तत्पुरुष)
आतपत्रमण्डलेन = आतपत्रस्य मण्डलं तेन (षष्ठी तत्पु०)
परलोकदर्शनम् = परलोकस्य दर्शनम् (षष्ठी तत्पु०)
वेत्रदण्डैः = वेत्रस्य दण्डानि तैः (षष्ठी तत्पु०)
जयशब्दकलैः = जयशब्दानां कलानि तैः (षष्ठी तत्पु०)
साधुवादाः = साधु उच्यते इति (उपपद समास)
ध्वजपटपल्लवैः = ध्वजपटानां पल्लवानि तैः (षष्ठी तत्पु०)
अनेकदोषोपचितेन = अनेकैः दोषैः उपचितः तेन (तृतीयातत्पुरुष)
दुष्टासृजा = दुष्टम् असृक् तेन (कर्मधारय)
रागावेशेन = रागस्य आवेशः तेन (षष्ठी तत्पु०)
विविधविषयग्रासलालसैः = विविधानां विषयाणां ग्रासाय लालसैः (तत्पु०)
अनेकसहस्रसंख्यैः = अनेके सहस्रसङ्ख्यैः (कर्मधारय)
प्रकृतिचञ्चलतया = प्रकृत्या चञ्चलता तया (तृतीया तत्पु०)
मदनशरैः = मदनस्य शरः तैः (षष्ठी तत्पु०)
मर्माहताः = मर्माणि आहतानि एषां ते (बहुव्रीहि)
मुखभङ्गसहस्राणि = मुखभङ्गानां सहस्राणि (षष्ठी तत्पु०)
धनोष्मणा = धनस्य ऊष्मणा (षष्ठी तत्पु०)
गाढप्रहाराहताः = गाढप्रहारैः आहताः (तृतीया तत्पु०)
अधर्मभग्नगतयः = अधर्मेण भग्नगतिः येषां ते (बहुव्रीहि)
अतिकृच्छ्रेण = कृच्छ्रमतिक्रम्य तेन (अव्ययीभाव)
आसन्नवर्तिनां = आसन्नं वर्तते ये तेषाम् (उपपद तत्पु०)
शिरःशूलम् = शिरसि शूलम् (उपपद समास)

बन्धुजनम् = बन्धुश्चासौ जनः तम् (कर्मधारय)
उत्कुपितलोचनाः = उत्कुपितानि लोचनानि येषां ते (बहुव्रीहि)
कालदंष्ट्राः = कालेन दंष्ट्राः (तृतीया तत्पु०)
सोष्माणम् = ऊष्मणा सह वर्तते यः तम् (प्रादितत्पुरुष)
दुष्टवारणाः = दुष्टाश्च ते वारणाः (कर्मधारय)
दूरस्थितानि = दूरे स्थितानि (सुप्सुपा)
महाकुलानि = महन्ति च तानि कुलानि (कर्मधारय)
अकालकुसुमप्रसवाः = अकाले कुसुमानां प्रसवाः (तत्पु०)
मनोहराकृतयः = मनोहरा आकृतिः येषां ते (बहुव्रीहि)
प्रेतपटहाः = प्रेताय पटहाः (चतुर्थी तत्पु०)
अनुदिवसम् = दिवसम् अनु (अव्ययीभाव)
आध्मातमूर्त्तयः = आध्माता मूर्त्तयः येषां ते (बहुव्रीहि)
जलबिन्दवः = जलानां बिन्दवः (षष्ठी तत्पु०)
स्वार्थनिष्पादनपरैः = स्वार्थस्य निष्पादने पराः तैः (तत्पु०)
परदाराभिगमनम् = पराश्च ते दाराः इति परदाराः (कर्मधारय) तेषु अभिगमनम्
देवावमाननम् = देवानाम् अवमाननम् (षष्ठी तत्पु०)
अविशेषज्ञता = न विशेषज्ञः तस्य भावः (नञ्तत्पु०)
दिव्यांशावतीर्णम् = दिव्यैः अंशैः अवतीर्णम् (तृतीया तत्पु०)
आत्मविडम्बनाम् = आत्मनः विडम्बना ताम् (षष्ठी तत्पु०)
स्वललाटम् = स्वस्य ललाटः तम् (बहुव्रीहि)
दर्शनप्रदानम् = दर्शनस्य प्रदानम् (षष्ठी तत्पु०)
द्विजातीनम् = द्वे जाती येषां तान् (बहुव्रीहि)
अभिवादनार्हानम् = अभिवादनाय अर्हाः तान् (चतुर्थी तत्पु०)
विद्वज्जनम् = विद्वांसश्चासौ जनः तम् (कर्मधारय)
हितवादिने = हितं वदन्ति इति तस्मै (उपपदसमास)
अहर्निशम् = अहश्च निशा च इति तत् (द्वन्द्वसमास)
अधिदैवतम् = दैवतम् अधिकृत्य (अव्ययीभाव)
उपरचिताञ्जलिः = उपरचितः अञ्जलिः येन सः (बहुव्रीहि)
विगतकर्त्तव्यः = विगतानि कर्त्तव्यानि यस्य सः (बहुव्रीहि)
कौटिल्यशास्त्रं = कौटिल्यकृतं शास्त्रं (मध्यमपदलोपी समास)
सुहृद्भिः = शोभनं हृद् येषां ते सुहृदः, तैः (बहुव्रीहि)
महामोहान्धकारिणि = महान् चासौ मोहः तेन अन्धः तं करोतीति तस्मिन् (कर्मधारयमूलक तत्पुरुष)
सेवकवृकैः = सेवकाः वृकाः इव तैः (कर्मधारय)
तरलहृदयम् = तरलं हृदयं यस्य तम् (बहुव्रीहि)
अप्रतिबुद्धम् = न प्रतिबुद्धः तम् (नञ्तत्पुरुष)
भवद्गुणसन्तोषः = भवतां गुणेषु सन्तोषः (तत्पु०)
कुलक्रमागता = कुलक्रमेण आगतम् (तृतीया तत्पु०)
पूर्वपुरुषैः = पूर्वं च ते पुरुषाः तैः (कर्मधारय)
अभिषेकानन्तरं = अभिषेकस्य अनन्तरम् (षष्ठी तत्पुरुष)
प्रारब्धदिग्विजयः = प्रारब्धः दिग्विजयः येन सः (बहुव्रीहि)
वसुन्धराम् = वसूनि धरतीति ताम् (उपपद समास)
आरूढप्रतापः = आरूढः प्रतापो यस्य सः (बहुव्रीहि)
सिद्धादेशः = सिद्धः आदेशो यस्य सः (बहुव्रीहि)
उपशान्तवचसि = उपशान्तानि वचांसि यस्य (बहुव्रीहि)
अमलाभिः = न मलं यासु ताभिः (नञ्बहुव्रीहि)
प्रीतहृदयः = प्रीतं हृदयं यस्य सः (बहुव्रीहि)
स्वभवनम् = स्वस्य भवनम् (षष्ठी तत्पु०)

शिवराजविजय (प्रथमनिःश्वास) में क्रियापद

लट्लकार

जनयति – √जन् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष एक0
विभनक्ति – वि + √भञ्ज् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
चर्कर्ति – √कृ + यङ् (लुक्) + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
बर्भर्ति – √भृञ् + यङ् + (लुक्) + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
जर्हर्ति – √हृञ् + यङ् + (लुक्) + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
गायति – √गै + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
उपतिष्ठन्ते – उप + √स्था + लट् + प्रथमपुरुष बहुवचन
अवचिनोमि – अव + √चिञ् + लट् + उत्तमपुरुष एकवचन
अवचिनोति – अव + √चिञ् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
उपासते – उप + √आस् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन (आत्मनेपद)
वेत्ति – √विद् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
ध्मायन्ते – √ध्मा (शब्दाग्निसंयोगयोः) + लट्भावे
भर्ज्यन्ते – √भृज् (भर्जने) + यक् + लट् (भावे)
भिद्यन्ते – √भिद् + यक् + लट् (भावे)
समुद्धूयन्ते – सम् + उद् + √धूञ् + लट् (आत्मनेपद)
जिग्लापयिषामि – √ग्लै (हर्षक्षये) + पुक् + णिच् + सन् + लट् + उत्तमपुरुष एकवचन
हन्यन्ते – √हन् + यक् + लट् + प्रथमपुरुष बहुवचन
विदीर्यन्ते – वि + √दृ + यक् + लट् + प्रथमपुरुष बहुवचन
शुश्रूषते – √श्रु + सन् + प्रथमपुरुष एकवचन (आत्मनेपद)
स्मर्यते – √स्मृ + यक् + लट् + प्र.पु. एक. (आत्मने.) कर्मवाच्य में
चिकीर्षसि – √कृ + सन् + लट् + मध्यमपुरुष एकवचन
पिपृच्छिषामि – √प्रच्छ् + सन् + लट् + उत्तमपुरुष एकवचन

लिट्लकार

निश्चक्राम – निर् + √क्रमु (पादविक्षेपे) – लिट्
आरेभे – आ + √रम्भ् + लिट् – प्रथमपुरुष एक0
इयेष – √इष् + लिट् + तिप् – प्रथमपुरुष एक0
निपपात – नि + √पत् + लिट् + प्रथमपुरुष एक0
अपससार – अप् + √सृ + लिट् + प्रथमपुरुष एक0
उपाजगाम – उप + आङ् + √गम् + लिट् + प्रथमपुरुष एक0
आरुरोह – आ + √रुह् + लिट् + प्रथमपुरुष एक0
जगाद – √गद् + लिट् + प्रथमपुरुष एक0
अवतस्थे – अव + √स्था + लिट् – प्रथमपुरुष एक0 (आत्मनेपदी)
धूलीचकार – धूलि + च्वि + √कृ + लिट्
अश्वयाम्बभूव – अश्व + णिच् + आम् + √भू + लिट् + प्रथमपुरुष एक0

लुङ्लकार

अवादीत् – √वद् + लुङ् + प्रथमपुरुष एक0
अजागरीः – √जागृ + लुङ् + मध्यमपुरुष एक0
अनैषीः – √नी + लुङ् + मध्यमपुरुष एक0
अदर्शि – √दृश् + लुङ् + प्रथमपुरुष एक0
भैषीः – √भी + लुङ् + मध्यमपुरुष एक0
कार्षीः – √कृ + लुङ् + मध्यमपुरुष एक0
अरोदीः – √रुद् + लुङ् + मध्यमपुरुष एक0
उदस्थाम् – उत् + √स्था + लुङ् + उत्तमपुरुष एक0
व्ययाजिषत् – वि + √यज् + कर्मणि + लुङ् + प्रथमपुरुष बहु0
अतापिषत – √तप् + लुङ् + प्रथमपुरुष बहु0
अनैषीत् – √णीञ् –(प्रापणे) + लुङ् प्रथमपुरुष एक0
अलुलुण्ठत् – √लुठि स्तेये, चुरादि + णिजन्तात् – लुङ् प्र. पु. एक.
मा स्प्राक्षीः – √स्पृश् + लुङ् मध्यमपुरुष एक0 माङ् के योग में अट् का आगम नहीं हुआ।
अतुत्रुटत् – √त्रुट् छेदने + चुरादि णिजन्तात् + लुङ् प्रथमपुरुष एक0
अकार्षुः – √कृ + लुङ् + प्रथमपुरुष बहु0
अदीदलन् – √दल् (विदारणे) + लुङ् + प्रथमपुरुष बहु0
व्याहार्षीत् – वि + आङ् + √हृ + लुङ् + प्रथमपुरुष एक0
समभाणीत् – सम् + √भण् + लुङ् + प्रथमपुरुष एक0
न्यवेदीत् – नि + √विद् + लुङ् + प्रथमपुरुष एक0
उदतीतरत् – उद् + √तृ + णिच् + लुङ् प्रथमपुरुष एक0
उदतूतुलत् – उत् + अतुतुलत् + √तुल् + लुङ् + प्र0पु0 एक0
अश्रौषम् –√श्रु + लुङ् + उत्तमपुरुष एकवचन

लङ्लकार

आरभत – आङ् + √रभ् + लङ् + प्रथमपुरुष एक0
अवागच्छत् – अव + √गम् + लङ् + प्रथमपुरुष एक0
प्राविशत् – प्र + √विश् + लङ् + प्रथमपुरुष एक0
समतिष्ठत – सम् + √स्था + लङ् + प्रथमपुरुष एक0

शिवराजविजय (प्रथमनिःश्वास) में प्रत्यय

ल्यप्-प्रत्यय

आश्रित्य – आङ् + √श्रि + ल्यप्
आकुञ्च्य – आङ् + √कुञ्च् + ल्यप्
सन्धाय – सम् + √धा + ल्यप्
उद्धूय – उद् + √धूञ् + ल्यप्
समुपसृत्य – सम् + उप + √सृज् + ल्यप्
उद्बुद्ध्य – उद् + √बुध + ल्यप्
संश्रुत्य – सम् + √श्रु + ल्यप्
अभिगम्य – अभि + √गम् + ल्यप्
निःश्वस्य – निः + √श्वस् + ल्यप्
आगत्य – आ + √गम् + ल्यप्
सम्पूज्य – सम् + पूज् + ल्यप्
आदिश्य – आङ् + √दिश् + ल्यप्
निधाय – नि + √धा + ल्यप्
आच्छिद्य – आङ् + √छिद् + ल्यप्
उपवेश्य – उप + √विश् + णिच् + ल्यप्
आकलय्य – आङ् + √कल् + ल्यप्
अतिक्रम्य – अति + √क्रम् + ल्यप्
सन्दर्श्य – सम् + √दृश् + णिच् + ल्यप्
प्रविश्य – प्र + √विश् + ल्यप्
विरहय्य – वि + √रह् + ल्यप्
विच्छिद्य – वि + √छिद् + ल्यप्
उद्धूय – उद् + √धूञ् + ल्यप्
आकर्ण्य – आङ् + √कर्ण् + ल्यप्
विनिर्जित्य – वि + निर् + √जि + ल्यप्
संस्पृश्य – सम् + √स्पृश् + ल्यप्
अविगण्य्य – अ (न) वि + √गण् + णिच् + ल्यप्
अवलोक्य – अव + √लोक् + ल्यप्
संक्षिप्य – सम् + √क्षिप् + ल्यप्
संश्रुत्य – सम् + √श्रु + ल्यप्
प्रमृज्य – प्र + √मृज् + ल्यप्
निःश्वस्य – निर् + √श्वस् + ल्यप्
संस्मृत्य – सम् + √स्मृ + ल्यप्
विचिन्त्य – वि + √चिन्त् + ल्यप्
विलुण्ठ्य – वि + √लुण्ठ् + ल्यप्
निपात्य – नि + √पत् + णिच् + ल्यप्
विभिद्य – वि + √भिद् + ल्यप्
आरोप्य – आङ् + √रोप् + ल्यप्
निर्मथ्य – निर् + √मथ् + ल्यप्
प्रसह्य – प्र + √सह् + ल्यप्
उत्तीर्य – उत् + √तॄ + ल्यप्
आश्लिष्य – आङ् + √श्लिष् + ल्यप्
आक्रम्य – आङ् + √क्रम् + ल्यप्
निर्माय – निर् + √मा + ल्यप्
विशस्य – वि + √शस् + ल्यप्
अभिधाय – अभि + √धा + ल्यप्
निरीक्ष्य – निर् + √ईक्ष् + ल्यप्
अवधार्य – अव + √धृ + णिच् + ल्यप्
समुत्थाय – सम् + उद् + √स्था + ल्यप्
पर्य्यट्य – परि + √अट् + ल्यप्
व्याहृत्य – वि + आङ् + √हृ + ल्यप्
अवलोक्य – अव + √लोक् + ल्यप्
विरम्य – वि + √रम् + ल्यप्
निर्दिश्य – निर् + √दिश् + ल्यप्
आकृष्य – आङ् + √कृष् + ल्यप्
उत्प्लुत्य – उत् + √प्लुङ् + ल्यप्

शतृ प्रत्यय

प्रणमन् – प्र + √णम्, (नम्) + शतृ
चिन्तयन् – √चिन्त् + शतृ
उन्निद्रयन् – उद् + √निह् + णिच् + शतृ
निवारयन् – नि + √वृ + णिच् + शतृ
पाययन् – √पा + णिच् + शतृ
रुदतीम् – √रुद् + शतृ (ङीप्)
भोजयन् – √भुज् + णिच् + शतृ
वदत्सु – √वद् + शतृ + (सप्तमी बहु०)
वर्णयन्तः – √वर्ण + णिच् + शतृ
आकलयत्सु – आङ् + √कल् + णिच् + शतृ (सप्तमी बहु०)
वसतः – √वस् + शतृ (षष्ठी एकवचन)
क्रन्दन्तीम् – √क्रन्द् + शतृ + ङीप् (द्वि० एकवचन)
निर्जीवीभवत् – निर् + √जीव + च्वि + √भू + शतृ
कथयत्सु – √कथ् + शतृ (सप्तमी बहु०)
असयन् – √असि + णिच् + शतृ
अपसारयन् – अप् + √सृ + णिच् + शतृ
रुदती – √रुद् + शतृ + (ङीप्)
रक्षन् – √रक्ष् + शतृ
अवतरन् – अव + √तॄ + शतृ

उद्गिरन्तम् – उद् + √गिर् + शतृ, द्वितीया, एक0

शानच् प्रत्यय

पूज्यमाने – √पूज् + यक् + शानच्, सप्तमी, एक0
समासीनेषु – सम् + √आस् + शानच् + सप्तमी बहु0
विमनायमानम् – वि + √मन् + क्यच् + शानच्
कम्पमानम् – √कम्प् + शानच्
भज्यमानम् – √भज् + यक् + शानच्
रोरुध्यमानैः – √रुध् + यङ् + शानच् + तृतीया, बहु0
निरीक्षमाणेन – निर् + √ईक्ष् + शानच् + तृतीया, एक0
अनुगम्यमानः – अनु + √गम् + णिच् + शानच्
शयानम् – √शीङ् + शानच्
वियुज्यमानम् – वि + √युज् + शानच्

क्त प्रत्यय

सम्मोहितम् – सम् + √मुह् + क्त
विहिंसितः – वि + √हिंस् + क्त
सुप्तः – √स्वप् + क्त
कुञ्जायितम् – √कुञ्ज + क्यङ् + क्त
विनत – वि + √नम् + क्त
अवचितानि – अव + √चि + क्त, प्रथमा, बहु0
उत्थापितः – उत् + √स्था + पुक् + णिच् + क्त
संस्थापिता – सम् + √स्था + णिच् + पुक् + क्त + टाप् (स्त्री0)
समापिता – सम् + √आप् + णिच् + क्त + (टाप्)
समायाते – सम् + आङ् + √या + क्त (सप्तमी एक0)
प्रस्तुताषु – प्र + √स्तु + क्त + टाप् + सप्तमी बहुवचन
उत्थितः – उत् + √स्था + क्त
आच्छन्नः – आ + √ छद् + क्त
आयातः – आ + √या + क्त
सञ्जातः – सम् + √जन् + क्त
ईहितम् – √ईह् + क्त
सम्पादितम् – सम् + √पद् + णिच् + क्त
अधिष्ठिते – अधि + √स्था + क्त, सप्तमी, एक0
विसृष्टेषु – वि + √सृज् + क्त, सप्तमी, बहु0
भीता – √भी + क्त + टाप्
स्नाता – √स्ना + क्त + टाप्
समानीता – सम् + आङ् + √नी + क्त + टाप्
प्राप्तः – प्र + √आप् + क्त
अवलीढम् – अव + √लिह् + क्त
समायाता – सम् + आङ् + √या + क्त + टाप्
आनीता – आङ् + √नी + क्त + टाप्
गतस्य – √गम् + क्त + षष्ठी, एकवचन
व्यतीतानि – वि + √अत् + क्त प्रथमा बहु0
निरुद्धः – नि + √रुध् + क्त
सम्पन्नम् – सम् + √पद् + क्त
उत्थितः – उद् + √ स्था + इट् + क्त
चूडायितम् – √चूडा + क्यङ् + क्त
गृहीतम् – √ग्रह् + क्त
सञ्चितम् – सम् + √चि + क्त
बन्दीकृताः – बन्द् + √च्वि + कृ + क्त
प्रचिताः – प्र + √चि + क्त
सञ्जातः – सम् + √जन् + क्त
संवृत्तः – सम् + √वृत् + क्त
अवगतम् – अव + √गम् + क्त
उद्गतैः – उद् + √गम् + क्त (तृतीया बहुवचन)
निर्यातेषु – निर् + √या + क्त (सप्तमी बहुवचन)
संवृत्ते – सम् + √वृत् + क्त (सप्तमी एकवचन)
प्रस्थितस्य – प्र + √स्था + क्त (षष्ठी एकवचन)
दृष्टम् – √दृश् + क्त
आनद्ध – आङ् + √नध् + क्त
पतङ्गायितः – पतङ्ग + क्यङ् + क्त
दंष्टा – √दंश् + क्त
पर्याप्तः – परि + √आप् + क्त
अध्युषित – अधि + √वस् (व = उ सम्प्रसारण) + क्त
कलित – √कल् + क्त

क्तवतु प्रत्यय

पीतवती – √पा + क्तवतु + ङीप्
आरब्धवती – आङ् + √रभ् + क्तवतु + ङीप्
आनीतवान् – आङ् + √नी + क्त + क्तवतु
कृतवान् – √कृ + क्तवतु
त्यक्तवति – √त्यज् + क्तवतु (सप्तमी एकवचन)

क्त्वा

नीत्वा – √नी + क्त्वा
त्यक्त्वा – √त्यज् + क्त्वा
पिष्ट्वा – √पिष् + क्त्वा
भित्त्वा – √भिद् + क्त्वा
स्मित्वा – √ष्मिङ् + क्त्वा
गत्वा – √गम् + क्त्वा

मोचयित्वा – √मुच् + णिच् + क्त्वा
गोपयित्वा – √गुप् + णिच् + क्त्वा

तुमुन् प्रत्यय

वक्तुम् – √वच् + तुमुन्
सान्त्वयितुम् – √सान्त्व + णिच् + तुमुन्
निरोद्धुम् – नि + √रुध् + तुमुन्
शमयितुम् – √शम् + णिच् + तुमुन्
रोदितुम् – √रुद् + इट् + तुमुन्
प्रवक्तुम् – प्र + √ वच् + तुमुन्
योद्धुम् – √युध् + तुमुन्
प्रष्टुम् – √प्रच्छ् + तुमुन्
उपन्यस्तुम् – उप + नि + √अस् + तुमुन्
हन्तुम् – √हन् + तुमुन्
द्रष्टुम् – √दृश् + तुमुन्

ल्युट् प्रत्यय

रोदनम् – √रुद् + भावे ल्युट्
क्रन्दनम् – √क्रदि + भावे ल्युट्
अन्वेषण – अनु + √इष् + ल्युट्
उदीरण – उद् + √इर् + ल्युट् + अन्
कलनः – √कल् + ल्युट्
कालनः – √कल् + णिच् + ल्युट्
उत्फालनम् – उद् + √फाल् + ल्युट्

मेघदूतम् में क्रियापद

लट्लकार

रुणद्धि	√रुध् + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
नुदति	√नुद् + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
नदति	√नद् + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
प्रभवति	प्र √भू + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
उत्पश्यामि	उत् √दृश् + लट् उ0 पु0 एक0 (परस्मै0)
अत्येति	अति √इण् + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
अर्हसि	√अर्ह् + लट् म0 पु0 एक0 (परस्मै0)
वहति	√वह् + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
कथयत्	√कथ् + णिच् + लट् + शतृ
प्रथयति	√प्रथ् + णिच् + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
संलक्ष्यन्ते	√सम् √लक्ष् + णिच् लट् प्र0 पु0 बहु0 (आत्मने0)
रमयति	√रम् + णिच् + लट् प्र0 पु0 एक0
गीयते	√गै + लट् प्र0 पु0 एक0 (कर्मणि)
आसेवन्ते	आङ् + √सेव् + लट् प्र0 पु0 बहु0 (आत्मने0)
सेव्यमानाः	√सेव् + लट् + शानच् (कर्मणि)
सङ्क्रीडन्ते	सम् √क्रीड् + लट् प्र0 पु0 बहु0
निष्पतन्ति	निस् √पत् + लट् प्र0 पु0 बहु0
व्यालुम्पन्ति	वि + आङ् √लुप् लट् प्र0 पु0 बहु0
सूच्यते	√सूच् + णिच् + लट् प्र0 पु0 एक0 (कर्मणि)
सूते	√सू + लट् प्र0 पु0 एक0 (आत्मने0)
काङ्क्षति	√काङ्क्ष् + लट् प्र0 पु0 एक0
अध्यास्ते	अधि √आस् लट् प्र0 पु0 एक0
पुष्यति	√पुष् लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
मन्ये	√मन् + लट् उ0 पु0 एक0 (आत्मने0)
स्मरसि	√स्मृ + लट् म0 पु0 एक0 (परस्मै0)
विस्मरन्ती	वि √स्मृ + शतृ + लट् + ङीप् प्र0पु0 बहु0
आस्वादयन्ती	आङ् √स्वद् + णिच् + शतृ + ङीप्
शङ्के	√शङ्क् + लट् उ0 पु0 एक0 (आत्मने0)
तर्कयामि	√तर्क + णिच् + लट् + उ0 पु0 एक0
त्वरयति	√त्वर् + णिच् + लट् + प्र0 पु0 एक0
आह	√ब्रू + लट् + प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
आलुप्यते	आङ् √लुप् लट् + प्र0 पु0 एक (कर्म0)
सहते	√सह् + लट् + प्र0 पु0 एक0 (आत्मने0)
आलिङ्ग्यन्ते	आङ् √लिङ्ग् + लट् + प्र0 पु0 बहु0 (कर्म0)
रुदती	√रुद् + लट् + शतृ + ङीप्
पृच्छतः	√प्रच्छ् + लट् + शतृ + षष्ठी एक0
प्रेमराशीभवन्ति	प्रेमराशि + च्वि √भू + लट् प्र0 पु0 बहु0 (परस्मै0)
कल्पयामि	√क्लृप् + लट् + उ0 पु0 एक0 (परस्मै0)
निर्विशन्ति	निर् √विश् लट् प्र0 पु0 बहु0 (परस्मै0)
जानामि	√ज्ञा + लट् + उ0 पु0 + एक0 (परस्मै0)
अवलम्बे	अव √लम्ब् + लट् उ0पु0 एक0 (आत्मने0)

लोट्लकार

हर	√हृ + लोट् म0पु0 एक0
आपृच्छस्व	आङ् √प्रच्छ् + लोट् म0 पु0 एक0 (परस्मै0)
व्रज	√व्रज् + लोट् म0 पु0 एक0
भव	√भू + लोट् म0 पु0 एक0 (परस्मै0)

अनुसर	अनु + √सृ + लोट् + म0 पु0 एक0 (परस्मै0)
हर	√हृ + लोट् म0 पु0 एक0 (परस्मै0)
दर्शय	√दृश् + णिच् + लोट्, म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
कुरु	√कृ + लोट् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
पश्य	√दृश् + लोट्, म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
सहस्व	√सह् + लोट्, म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
विद्धि	√विद् + लोट्, म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
उत्पत	उत्+√पत्+लोट्, म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
स्नपयतु	√स्ना + णिच् + लोट्, म0 पु0, एक0 (परस्मै0)

लिट्लकार

चक्रे	√कृ + लिट्, प्र0 पु0, एक0, आत्मने0
ददर्श	√दृश् + लिट्, प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
दध्यौ	√ध्यै + लिट्, प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
व्याजहार	वि + आङ् √हृ + लिट्, प्र0 पु0, एक0 आत्मने0
जह्रे	√हृ + लिट्, उ0 पु0, एक0 (आत्मने0)
सिषेवे	√सेव् + लिट्, प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
ययाचे	√याच् + लिट्, प्र0 पु0, एक0 आत्मने0

विधिलिङ्

गच्छेः	√गम् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
व्यवस्येत्	वि + अव + √सो + प्र0पु0, एक0 (परस्मै0)
अधिवसेः	अधि + √वस् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
नयेथाः	√नी + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
यायाः	√या + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
वाहयेत्	√वह् + णिच् प्र0पु0, एक0 (परस्मै0)
नर्तयेथाः	√नृत् + णिच् म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
व्यालम्बेथाः	वि+आङ् + √लम्ब् म0पु0, एक0 (आत्मने0)
भजेथाः	√भज् + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
तर्कयेः	√तर्क् + णिच् म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
बाधेत	√बाध् + प्र0 पु0, एक0 आत्मने0
कुर्वीथाः	√कृ + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
लङ्घयेयुः	√लङ्घ् + प्र0 पु0, बहु0 (परस्मै0)
स्युः	√अस् + प्र0 पु0, बहु0 (परस्मै0)
परीयाः	परि + √इण् म0 पु0, एक0
स्याः	√अस् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
उपेक्षेत	उप + √ईक्ष् + विधिलिङ्, प्रथमपुरुष एकवचन
विचरेत	वि + √चर् + प्र0 पु0, एक0 (आत्मने0)
निर्विशेः	निर् + √विश् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
लक्षयेथाः	√लक्ष् + णिच् + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
स्यात्	√अस् + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
जानीथाः	√ज्ञा + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
उपनमेत्	उप + √नम् + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
प्रक्रमेथाः	प्र + √क्रम् + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
ब्रूयाः	√ब्रू + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
संक्षिप्येत	सम + √क्षिप् + प्र0 पु0, एक0 (आत्मने0)
धारयेथाः	√धृ + णिच् + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
अनुसरेः	अनु √सृ + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
भाययेः	√भी + णिच् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
भवेत्	√भू + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)

लृट्लकार

प्रेक्षिष्यन्ते	प्र+√ईक्ष् + लृट् + प्र0 पु0, बहु0 (आत्मने0)
द्रक्ष्यसि	√दृश् + लृट् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
सेविष्यन्ते	√सेव् + लृट् + प्र0 पु0, बहु0 (आत्मने0)
सम्पत्स्यन्ते	सम् + √पद् + लृट् प्र0 पु0, बहु0 (आत्मने0)
श्रोष्यसि	√श्रु + लृट् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
आपत्स्यते	आ + √पद् + लृट् + प्र0 पु0 (आत्मने0)
वक्ष्यति	√वह् + लृट् + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
यास्यति	√या + लृट् + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
शक्ष्यति	√शक् + लृट् + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
सूचयिष्यन्ति	√सूच् + णिच् लृट् प्र0 पु0, बहु0 (परस्मै0)
मानयिष्यन्ति	√मान् + लृट् + प्र0 पु0, बहु0 (परस्मै0)
लप्स्यसे	√लभ् + लृट् + म0 पु0, एक0 आत्मने0
आमोक्ष्यन्ते	आङ् √मुच् + लृट् प्र0 पु0, बहु0 आत्मने0
वास्यति	√वा + लृट् प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
प्रेक्षिष्यन्ते	प्र √ईक्ष् + लृट् + प्र0 पु0, बहु0 (आत्मने0)
वक्ष्यसि	√वह् + लृट् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
कल्पिष्यन्ते	√क्लृप् + लृट् + प्र0 पु0, बहु0 (आत्मने0)
नेष्यन्ति	√नी + लृट् + प्र0 पु0, बहु0 (परस्मै0)
ज्ञास्यसे	√ज्ञा + लृट् + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
आध्यास्यन्ति	आङ्+√ध्यै + लृट् + प्र0पु0, बहु0 (परस्मै0)
मोचयिष्यति	√मुच् + णिच्+लृट्+प्र0पु0, एक0 (परस्मै0)
एष्यति	√इण् + लृट् + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
निर्वेक्ष्यावः	निर् √विश् + लृट् + उ0पु0, द्विव0 (परस्मै0)

लङ्लकार

अभ्यवर्षत् अभि √वृष् लङ् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
अकरोत् √कृ + लङ् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)

लुट्लकार

भविता भू + लुट् प्र0 पु0 एक0

लुङ्लकार

मा गमः √गम् + लुङ् +म0 पु0 एक0 (परस्मै0)
अभूत् √भू + लुङ् + प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)

मेघदूतम् में प्रत्यय

'इमनिच्' प्रत्यय

महिमा महत् + इमनिच्

'मनिन्' प्रत्यय

छदमन् छद् + मनिन्

'मयट्' प्रत्यय

स्वकुशलमयीम् स्वकुशल + मयट् (स्त्रियाम्)
नवजलमयम् नवजल + मयट्

'ढक्' प्रत्यय

पाथेयः पथिन् + ढक्

'ण्यत्' प्रत्यय

वन्द्यैः √वन्द् + ण्यत्
प्रेक्ष्यम् प्र √ईक्ष् + ण्यत्
भेद्य √भिद् + ण्यत्
प्राप्य प्र √आप् + ण्यत्
आभाष्यम् आङ् √भाष् + ण्यत्
उपपाद्यः उप √पद् + णिच् + ण्यत्

'यत्'-प्रत्यय

पेयम् √पा + यत्
नेयम् √नी + यत्
उपमेयम् उप √मा + यत्
रम्यम् √रम् + यत्
अक्षय्यम् नञ् (अ) + √क्षि + यत्
लक्ष्यम् √लक्ष् + णिच् + यत्
आद्या आदि + यत् + टाप्
गेयम् √गै + यत्
आद्यम् आदि + यत्
आख्येयम् आङ् √ख्या + यत्
साध्यम् साध् + यत्

'अच्' प्रत्यय

वाहः √वह् + णिच् + अच्
विक्लवा वि √क्लु + अच् + टाप्
देवम् √दिव् + अच्
अपायः अप √इण् + अच् (भावे)

'अप्'-प्रत्यय

प्रभवम् प्र √भू + अप्
परिभवः परि √भू + अप्
विगमः वि √गम् + अप्
सङ्गमः सम् + गम् + अप्
उपप्लवः उप √प्लु + अप्
अपाम् अप् शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग, षष्ठी, बहु0
अभिगमः अभि √गम् + अप्

'क्यप्' प्रत्यय

कृत्या = √कृ + क्यप् + टाप्
मन्दायन्ते √मन्द + क्यष् + लट् + प्रथमपुरुष बहु0
दृश्यः √दृश् + क्यप्

'ल्यु' प्रत्यय

रमणः √रम् + णिच् + ल्यु

'इनि' प्रत्यय

दन्तिन् दन्त + इनि
प्रसविन् प्र + √सू + इनि
कामिनी काम + इनि + ङीप्
मानिनीम् मान + इनि + ङीप्
वैरिण वैर + इनि
नलिनी नल + इनि + ङीप्
गेहिनी गेहे + इनि + ङीप्
शिखरिन् शिखर + इनि
प्रणयिनी प्रणय + इनि
प्राणिनाम् प्राण + इनि + षष्ठी बहुवचन
कुशलिनम् कुशल + इनि

'क' प्रत्यय

रुहः √रुह् + क
अभिज्ञः अभि + √ज्ञा + क
प्रस्थः प्र + √स्था + क
पादपः पाद + √पा + क
आनन्दोत्थम् आनन्द + उद् + √स्था + क

करुहाः कर + √रुह् + क
जलदः जल + √दा + क
स्थः √स्था + क

ट प्रत्यय

सहचरः सह + √चर् + ट
दिनकरः दिन + √कृ + ट

मतुप् प्रत्यय

भास्वत् भास् + मतुप्
आयुष्मत् आयुस् + मतुप्
सानुमान् सानु + मतुप्
विद्युत्वत् विद्युत् + मतुप्
वेत्रवत्याः वेत्र + मतुप् + ङीप्, षष्ठी, एक0
कान्तिमत् कान्ति + मतुप्

खल् प्रत्यय

सुलभा सु √लभ् + खल् + टाप्

कि प्रत्यय

आधिः आङ् √धा + कि
व्याधिः वि + आङ् + √धा + कि

ष्यञ् प्रत्यय

सादृश्यम् सदृश् + ष्यञ्
दैन्यम् दीन + ष्यञ्

खश् प्रत्यय

अभ्रंलिह् अभ्र (बादल) मुम् + √लिह् + खश्

अण्, प्रत्यय

चाटुकारः चाटु + √कृ + अण्
वासवी वासव + अण् + ङीप्
कौरव कुरु + अण्
मैत्री मित्र + अण् + ङीप्
सलिलोद्गारम् सलिल + उद् √गृ + अण्
अम्बुवाहः अम्बु + √वह् + अण्
मैथिली मिथिला + अण् + ङीप्
हैमैः हेमन् + अण्
सौधम् सुधा + अण्

इतच् प्रत्यय

पुलकितः पुलक + इतच्
सुरभिता सुरभि + इतच् + टाप्

क्विप् प्रत्यय

विद्युत् वि √द्युत् + क्विप्
अग्रणी अग्र + नी + क्विप्
प्राप्ति प्र + √आप् + क्विप्
मुषः √मुष् + क्विप्
हलभृत् हल √भृ + क्विप्
जलमुच् जल √मुच् + क्विप्

शतृ प्रत्यय

मानयिष्यन् √मान् + णिच् + शतृ
पात्रीकुर्वन् पात्र + च्वि + √कृ + शतृ
उदगायन् उद् √गै + शतृ
यापयन्तीम् √या + णिच् + शतृ + ङीप् (द्वितीया एक0)
छादयन्तीम् √छिद् + णिच् + शतृ + ङीप् (द्वितीया एक0)
विक्षिपन्तीम् वि + √क्षिप् + शतृ + ङीप् (द्वितीया एक0)
आकाङ्क्षन्तीम् आङ् √काङ्क्ष् + शतृ + ङीप् (द्वितीया एक0)
सारयन्तीम् √सृ + णिच् + शतृ + ङीप् (द्वितीया एक0)
धारयन्ती √धृ + णिच् + शतृ + ङीप्
श्राम्यताम् √श्रम + शतृ षष्ठी बहु0
पश्यन्तीनाम् √दृश् + शतृ + ङीप् षष्ठी बहु0
विगणयन् वि √गण् + णिच् + लट् + शतृ
रमयन् √रम् + णिच् + लट् + शतृ
रुदती √रुद् + लट् + शतृ + ङीप्
कथयतः √कथ् +णिच् + लट् + शतृ + षष्ठी एक0
पृच्छतः √प्रच्छ् + लट् + शतृ + षष्ठी एक0

शानच् प्रत्यय

वीक्ष्यमाणः वि √ईक्ष् + शानच्
सेव्यमानाः √सेव + लट् + शानच् (कर्मणि)
दधानः √धा + शानच्
पीयमानः √पा + शानच्
आसीनानाम् √आस् + शानच्, षष्ठी, बहु0
पूर्यमाणाः √पुर् + णिच् + शानच्
मुच्यमानः √मुच् + शानच्
गाहमानः √गाह् + शानच्
आददानः आ √दा + शानच्

णिनि प्रत्यय

पश्चार्धलम्बी पश्चार्ध + √लम्ब् + णिनि
भावि √भू + णिनि
कामिनः √कम् + णिनि + प्रथमा बहुवचन
अभिलाषी अभि √लष् + णिनि

उच्छ्वासि उत् + √श्वस् + णिनि
ध्वंसिनः √ध्वंस् + णिनि प्रथमा बहुवचन

ड प्रत्यय

अनुग अनु √गम् + ड
अम्भोज अम्भस् √जन् + ड
त्वदुपगमजम् त्वदुपगम + √जन् + ड

र प्रत्यय

नम्रा √नम् + र + टाप्
मुखर मुख + र

आलच् प्रत्यय

वाचाल वाच् + आलच्

क्तिन् प्रत्यय

वृत्तिः √वृत् + क्तिन्
उपपत्तिः उप + √पद् + क्तिन्
ग्लानिः √ग्लै (थकना) + क्तिन्
दृष्टिः √दृश् + क्तिन्
कान्तिः √कम् + क्तिन्
प्रकृतिः प्र + √कृ + क्तिन्
आर्तिः आङ् √ऋ + क्तिन्
अनुकृतिः अनु + √कृ + क्तिन्
सृष्टिः √सृज् + क्तिन्
स्तुतिः √स्तु + क्तिन्

तृच् प्रत्यय

परिणमयिता परि + √नम् + णिच् + तृच्
भवित्रीम् √भू + तृच् + ङीप् + द्वितीया एक0
नेत्रा √नी + तृच् + तृतीया एक0
धातुः √धा + तृच् + षष्ठी एक0
भविता √भू + तृच्
आगन्तून् आङ् √गम् + तृच् + द्वितीया बहुवचन

तव्यत् प्रत्यय

स्थाव्यतम् √स्था + तव्यत्
अन्वेष्टव्य अनु √इष् + तव्यत्

अण् प्रत्यय

विश्रामः वि + √श्रम + अण् (स्वार्थ में)
चाटुकारः चाटु √कृ + अण्
हैमम् हेमन् + अण्
सान्ध्यः सन्ध्या + अण्
सौदामनी सुदामन् + अण् + ङीप्
वासवीनाम् वासव + अण् + ङीप् षष्ठी बहुवचन
कौरवः कुरु + अण्
नैशः निशा + अण्
अम्बुवाहः अम्बु √वह् + अण्
मैथिली मिथिला + अण् + ङीप्
नागरः नगर + अण्
पुष्पलावी पुष्प √लू + अण् + ङीप्

तुमुन् प्रत्यय

कर्तुम् √कृ + तुमुन्
तुलयितुम् √तुल् + णिच् + तुमुन्
हन्तुम् √हन् + तुमुन्
विहातुम् वि + √हा + तुमुन्
आदातुम् आङ् + √दा + तुमुन्
पातुम् √पा + तुमुन्
शमयितुम् √शम् + णिच् + तुमुन्
सुखयितुम् √सुख + णिच् + तुमुन्
वक्तुम् √वच् + तुमुन्
उपकर्तुम् उप + √कृ + तुमुन्
कथयितुम् √कथ् + तुमुन्
मोघीकर्तुम् मोघ + च्वि √कृ + तुमुन्

ल्युट् प्रत्यय

विलसन् वि √ लस् + ल्युट्
उद्वर्तनम् उद् √ वृत् + ल्युट्
विनयनम् वि √ नी + ल्युट्
प्रशमनम् प्र + √शम् + ल्युट्
नियमनम् नि √यम् + ल्युट्
उद्घट्टनम् उद् √ घट्ट + ल्युट्
मण्डनम् √मण्ड् + ल्युट्
लक्षणम् √लक्ष् + ल्युट्
अनुसरणम् अनु √सृ + ल्युट्
अञ्जनम् √अञ्ज् + ल्युट्
संवाहनम् सम् + √वह् + णिच् + ल्युट्
लोचनम् √लुच् + ल्युट्
प्रेक्षणम् प्र √ईक्ष् + ल्युट्
अभिज्ञानम् अभि + √ज्ञा + ल्युट्

'क्त्वा' प्रत्यय

स्थित्वा	√स्था + क्त्वा
जग्ध्वा	√अद् + क्त्वा
गत्वा	√गम् + क्त्वा
दृष्ट्वा	√दृश् + क्त्वा
नीत्वा	√नी + क्त्वा
हृत्वा	√हृ + क्त्वा
हित्वा	√हा + क्त्वा
कृत्वा	√कृ + क्त्वा
मत्वा	√मन् + क्त्वा
भित्त्वा	√भिद् + क्त्वा
सारयित्वा	√सृ + णिच् + क्त्वा
मीलयित्वा	√मील् + णिच् + क्त्वा

'ल्यप्' प्रत्यय

एत्य	आङ् + √इण् + ल्यप्
न्यस्य	नि + √अस् + ल्यप्
उपभुज्य	उप + √भुज् + ल्यप्
आरुह्य	आङ् + √रुह् + ल्यप्
आदाय	आङ् + √दा + ल्यप्
आघ्राय	आङ् + √घ्रा + ल्यप्
सन्निपत्य	सम् + नि + √पत् + ल्यप्
उत्पात्य	उत् + पत् + णिच् + ल्यप्
आसाद्य	आङ् + √सद् + णिच् + ल्यप्
आराध्य	आङ् + √राध् + ल्यप्
आवर्ज्यः	आङ् + √वृज् + णिच् + ल्यप्
विहस्य	वि + √हस् + ल्यप्
अतिक्रम्य	अति + √क्रम् + ल्यप्
वितव्य	वि + √तन् + ल्यप्
प्रेक्ष्य	प्र + √ईक्ष् + ल्यप्
निक्षिप्य	नि + √क्षिप् + ल्यप्
उत्थाप्य	उत् + √स्था + णिच् + ल्यप्
वीक्ष्य	वि + √ईक्ष् + ल्यप्
स्वागतीकृत्य	स्वागत + च्वि + √कृ + ल्यप्

अनीयर् प्रत्यय

प्रेक्षणीयम्	प्र + √ईक्ष् + अनीयर्
प्रापणीयाः	प्र √आप् + णिच् + अनीयर्
प्रेक्षणीया	प्र + √ईक्ष् + अनीयर + टाप्
श्लाघनीयम्	√श्लाघ् + अनीयर्

घञ् प्रत्यय

अधिकारः	अधि √कृ + घञ्
शापः	√शप् + घञ्
मोक्षः	√मुच् + घञ्
भ्रंशः	√भ्रंश् + घञ्
कामः	√कम् + घञ्
आलोकः	आङ् √लोक् + घञ्
सन्निपातः	सम् + नि + √पत् + घञ्
संदेशः	सम् + √दिश् + घञ्
बन्धः	√बन्ध + घञ्
विप्रयोगः	वि + प्र + √युज् + घञ्
उत्सर्गः	उद् + √सृज् + घञ्
विश्रामः	वि + √श्रम् + घञ्
रागः	√रञ्ज् + घञ्
खेदः	√खिद् + घञ्
न्यासः	नि √अस् + घञ्
प्रवेशः	प्र √विश् + घञ्
क्षेपः	√क्षिप् + घञ्
अभिरामा	अभि + √रम् + घञ् + टाप्
संरम्भः	सम् √रभ् + घञ्
आरम्भः	आङ् + √रभ् + घञ्
निर्ह्लादः	निर् + √ह्लाद् + घञ्
हासः	√हस् + घञ्
चारः	√चर् + घञ्
उत्सङ्गः	उद् + √सञ्ज् + घञ्
संयोगः	सम् + √युज् + घञ्
निक्षेपः	नि + √क्षिप् + घञ्
उद्गारः	उद् + √गॄ + घञ्
संरोधः	सम् + √रुध् + घञ्
आलापः	आङ् + √लप् + घञ्
आदेशः	आङ् + √दिश् + घञ्
उद्भेदः	उत् + √भिद् + घञ्
वासः	√वस् + घञ्
उन्मेषः	उद् + √मिष् + घञ्
निःश्वासः	निर् √श्वस् + घञ्
सङ्गः	सञ्ज् + घञ्
वियोगः	वि + √युज् + घञ्
व्यापारः	वि + आङ् + √पॄ + घञ्
विनोदः	वि + √नुद् + घञ्

उत्पीडः उत् √पीड् + घञ्
अवकाशः अव √काश् + घञ्
स्नेहः √स्निह् + घञ्
विलासः वि √लस् + घञ्
क्षोभः क्षुभ् + घञ्
सम्भोगः सम् √भुज् + घञ्
उच्छ्वासः उद् √श्वस् + घञ्
स्पर्शः √स्पृश् + घञ्
लोभः √लुभ् + घञ्
पातः पत् + घञ्
आश्लेषः आङ् √श्लिष् + घञ्
प्रत्यादेशः प्रति + आङ् √दिश् + घञ्
अनुक्रोशः अनु √क्रुश् + घञ्
शेषः शिष् + घञ्

'क्त' प्रत्यय

प्रमत्तः प्र + √मद् + क्त
विप्रयुक्तः वि + प्र + √युज् + क्त
आश्लिष्टः आङ् + √श्लिष् + क्त
प्रत्यासन्नः प्रति + आङ् √सद् + क्त
प्रीतः √प्रीञ् + क्त
सन्तप्तः सम् + √तप् + क्त
विश्लेषितः वि + √श्लिष् + णिच् + क्त
आरूढः आङ् + √रुह् + क्त
सन्नद्धः सम् + √नह् + क्त
व्यापन्नः वि आङ् √पद् + क्त
स्फुरिताः √स्फुर् + क्त + टाप्, प्रथम, बहु०
आयत्तम् आङ् √यत् + क्त
स्निग्धः √स्निह् + क्त
प्रशमितम् प्र + √शम् + णिच् + क्त
परिणतः परि + √नम् + क्त
छन्नः √छद् + क्त
स्निग्धा √स्निह् + क्त + टाप्
भुक्तः √भुज् + क्त
तीर्णः √तॄ + क्त
विशीर्णा वि √शॄ + क्त + टाप्
विरचिता वि √रच् + णिच् + क्त + टाप्
वान्ता √वम् + क्त + टाप्
रूढः √ रुह् + क्त
प्रत्युद्यातः प्रति + उद् + √या + क्त
भिन्नम् +भिद् + क्त
विश्रान्तः वि √श्रम् + क्त
क्लान्तः √क्लम् + क्त
प्रस्थितः प्र + √स्था + क्त
स्फुरितः √स्फुर् + क्त
चकितः √चक् + क्त
वेणीभूतः वेणी + च्वि + √भू + क्त
जीर्णः √जॄ + क्त
गतः √गम् + क्त
हृतः √हृ + क्त
उद्दिष्टा उद् √दिश् + क्त + टाप्
कुजितः √कूज् + क्त
स्फुटः √स्फुट् + क्त
उद्भ्रान्तः उद् + √भ्रम् + क्त
प्रत्यादिष्टः प्रति + आङ् √दिश् + क्त
उद्गीर्णः उद् + √गॄ + क्त
उपचितः उप + √चि + क्त
क्वणितः √क्वण् + क्त
अभिलीनः अभि √ली + क्त
खिन्नः √खिद् + क्त
सुप्तः √स्वप् + क्त
अभ्युपेता अभि + उप + √इण् + क्त + टाप्
प्रत्यावृत्तः प्रति + आङ् √वृत् + क्त
प्रसन्नः प्र + √सद् + क्त
प्रेक्षितः प्र + ईक्ष् + क्त
उच्छ्वसितः उत् √श्वस् + क्त
पुष्पमेघीकृतः पुष्पमेघ + च्वि + √कृ + क्त
सम्भृतम् सम् √भृ + क्त
गलितम् √गल् + क्त
गर्जितः √गर्ज् + क्त
उल्लङ्घितः उद् + √लङ्घ् + क्त
अवनतः अव + √नम् + क्त
अवतीर्णः अव + √तॄ + क्त
निषण्णः नि + √सद् + क्त
उत्खातः उद् + √खन् + क्त
क्षपितः √क्षै + णिच् + क्त
आपन्नः आङ् + √पद् + क्त
मुक्तः √मुच् + क्त
अवकीर्णः अव + √कॄ + क्त
व्यक्तम् वि + √अञ्ज् + क्त
उपचितः उप + √चि + क्त
उद्धूतः उत् + √धूञ् + क्त

संरक्ता	सम् + √रञ्ज् + क्त + टाप्
अभ्युद्यतः	अभि + उद् + √यम् + क्त
उच्छ्वासितः	उद् + √श्वस् + णिच् + क्त
राशीभूतः	राशि + च्वि + √भू + क्त
स्थितः	√स्था + क्त
भिन्नः	√भिद् + क्त
कृतः	√कृ + क्त
न्यस्तः	नि + √अस् + क्त
स्तम्भितः	√स्तम्भ् + क्त
विरचितः	वि √रच् + णिच् + क्त
लब्धः	√लभ् + क्त
नीता	नी + क्त (कर्मणि) + टाप्
अनुविद्धः	अनु + √व्यध् + क्त
उन्मत्तः	उद् + √मद् + क्त
प्रतिहतः	प्रति + √हन् + क्त
इष्टः	√इष् + क्त
आहतः	आङ् + √हन् + क्त
प्रसूतः	प्र + √सू + क्त
प्रार्थितः	प्र + √अर्थ् + णिच् + क्त (कर्मणि)
गुढः	गुह् + क्त
निभृतः	नि + √भृ + क्त
आलिङ्गितः	आङ् + √लिङ्ग् + क्त
जनितः	√जन् + णिच् + क्त
रक्तः	√रञ्ज् + क्त
सिद्धः	√सिध् + क्त
वर्धितः	√वृध् + इट् + क्त
नमितः	√नम् + इट् + क्त
छन्ना	√छद् + णिच् + क्त (कर्मणि)
सन्निकृष्टः	सम् + नि √कृष + क्त
प्रत्यासन्नः	प्रति + आङ् + √सद् + क्त (कर्तरि)
कान्तः	√कम् + क्त
बद्धा	√बन्ध् + क्त (कर्तरि) + टाप्
नर्तितः	√नृत् + णिच् + क्त
निहितः	नि + √धा + क्त
क्षामा	√क्षै + क्त + टाप्
विलसितम्	वि + √लस् + क्त
दूरीभूतेः	दूर + च्वि + √भू + क्त, सप्तमी, एक०
परिमिता	परि + √मा + क्त + टाप्
मथिता	√मन्थ् + क्त + टाप्
जाता	√जन् + क्त + टाप्
रुदितः	√रुद् + क्त
उच्छूनः	उद् + √श्वि + क्त
क्लिष्टा	√क्लिश् + क्त + टाप्
स्थापितः	√स्था + णिच् + क्त
सन्निषण्णः	सम् + नि + √सद् + क्त
गतम्	गम् + क्त
प्रबुद्धा	प्र + √बुध् + क्त + टाप्
रुद्धः	√रुध् + क्त
बद्धा	√बन्ध् + क्त + टाप्
सम्भृतः	सम् + √भृ + क्त
आसन्नः	आङ् √सद् + क्त
परिचितः	परि + √चि + क्त
त्याजितः	त्यज् + णिच् + क्त
समुचितः	सम् + √उच् + क्त
गाढः	√गाह् + क्त
प्रत्याश्वस्ताम्	प्रति + आङ् + √श्वस् + क्त + टाप्
आगतम्	आङ् + √गम् + क्त
आख्यातम्	आङ् + √ख्या + क्त
अवहितः	अव + √धा + क्त
उपनतः	उप + √नम् + क्त
वियुक्तः	वि + √युज् + क्त
अव्यापन्नः	नञ् (अ) वि + आङ् + √पद् + क्त
तप्तः	√तप् + क्त
उत्कण्ठितः	उद् + √कण्ठ् + क्त
द्रुतः	√द्रु + क्त
चकिता	√चक्र + क्त + टाप्
कुपिता	√कुप् + क्त + टाप्
लब्धा	√लभ् + क्त + टाप्
प्रवृत्ताः	प्र + √वृत् + क्त प्रथमा, बहुवचन, पुंलिङ्ग
स्पृष्टः	√स्पृश् + क्त
उत्थितः	उद् + √स्था + क्त
लग्ना	√लग् + क्त + टाप्
विप्रबुद्धा	वि + प्र + √बुध् + क्त + टाप्
उपचितः	उप + √चि + क्त
उत्खातः	उत् √खन् + क्त
प्रहितम्	प्र + √धा + क्त
व्यवसितम्	वि + अव + √सो + क्त
याचितः	√याच् + क्त
ईप्सितः	√आप् + सन् + क्त
प्रत्युक्तम्	प्रति √वच् + क्त
सम्भृता	सम् √भृ + क्त + टाप्

नीतिशतकम् में क्रियापद

लट्लकार

- **रञ्जयति** = √रञ्ज् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **आराध्यते** = आङ् + √राध् + लट् + कर्मवाच्य + प्र. पु. एक.
- **इच्छति** = √इष् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **समुज्जृम्भते** = सम् + उत् + √जृम्भ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **ईहते** = √ईह् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **सन्नह्यते** = सम् + √नह् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **भवति** = √भू + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **अस्मि** = √अस् + लट् + उ. पु. एक. (परस्मै.)
- **गणयति** = √गण् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **विशङ्कते** = वि + √शङ्क् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **अस्ति** = √अस् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मैपद)
- **चरन्ति** = √चर् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **वसन्ति** = √वस् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मैपदी)
- **याति** = √या + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **पुष्णाति** = √पुष् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **प्राप्नोति** = प्र √आप् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **स्पर्धते** = √स्पर्ध् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **संरुणद्धि** = सम् + √रुधिर् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **हन्ति** = √हन् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **भूषयन्ति** = √भूष् + णिच् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **क्षीयन्ते** = क्षि + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने)
- **समलङ्करोति** = सम् + अलम् + कृ + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **पूज्यते** = √पूज् + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मणि)
- **हरति** = √हृञ् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **सिञ्चति** = √सिञ्च् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **दिशति** = √दिश् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **अपाकरोति** = अपा + कृ + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **प्रसादयति** = प्र + √सद् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **तनोति** = √तनु + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **करोति** = √कृ + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **जयन्ति** = √जि + लट् + प्र. पु. बहु.
- **सम्प्राप्यते** = सम् + प्र + √आप् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने) कर्मवाच्य
- **प्रारभ्यते** = प्र + आ + √रभ् + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **विरमन्ति** = वि + √रम् + लट् + प्र. पु. बहु.
- **परित्यजन्ति** = परि + √त्यज् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **अत्ति** = √अद् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **एति** = √इण् (गतौ) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **निहन्ति** = नि + √हन् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **वाञ्छति** = √वाञ्छ् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **कुरुते** = √कृ + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **विलोकयति** = वि + √लोक् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **भुङ्क्ते** = √भुज् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **जायते** = √जन् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **शीर्यते** = √शॄ + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मणि)
- **सन्ति** = √अस् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **वैरायते** = √वैर् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **ग्रसते** = √ग्रस् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **वहति** = √वह् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **धार्यते** = √धृञ् + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **प्रज्वलति** = प्र + √ज्वल् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **सहते** = √सह् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **निपतति** = नि + √पत् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **आश्रयन्ति** = आङ् + √श्रिञ् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **विनश्यति** = वि + √नश् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **ददाति** = √दा + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **शोभन्ते** = √शोभ् + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने.)
- **स्पृहयति** = √स्पृह् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **कलयति** = √कल् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **प्रथयति** = √प्रथ् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **सङ्कोचयति** = सम् + √कुच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **दुधुक्षसि** = √दुह् + सन् + लट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **प्राप्नोति** = प्र + √आप् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **गृह्णाति** = ग्रह् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **असि** = √अस् + लट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **प्रतीक्षसे** = प्रति + √ईक्ष् + लट् + म. पु. एक. (आत्मने.)
- **पश्यसि** = √दृश् + लट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **आर्द्रयन्ति** = √आर्द्र + णिच् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **गर्जन्ति** = √गर्ज् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **गण्यते** = √गण् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **दहति** = √दह् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **वसति** = √वस् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)

- **सहते** = √सह् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **आप्यते** = √आप् + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मणि.)
- **ज्ञायते** = √ज्ञा + यक् + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मणि.)
- **जायते** = √जन् + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मणि.)
- **विभाति** = वि + √भा + लट् + प्र. पु. एक.(परस्मै.)
- **निवारयति** = नि + √वृ + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **जहाति** = √हा + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **ददाति** = √दा + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **योजयते** = √युज् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **निगूहति** = नि + √गुह् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **निघ्नन्ति** = नि + √हन् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **जानीमहे** = √ज्ञा, + लट् + उ. पु. बहु. (आत्मने.)
- **शाम्यति** = √शम् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **स्वपिति** = √स्वप् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **शेरते** = √शीङ् + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने.)
- **विरमन्ति** = वि + √रम् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **गणयति** = √गण् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **सृजति** = √सृज् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **अवलोकते** = अव + √लोक् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **पतन्ति** = √पत् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **फलति** = √फल् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **रक्षन्ति** = √रक्ष् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **कुर्वन्ति** = √कृ + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **चरति** = √चर् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **विलिखति** = वि + √लिख् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **उपयाति** = उप + √या + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **लुनन्ति** = √लूञ् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **जयति** = √जि + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **क्रियते** = √कृ + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **जलायते** = √जल + क्यङ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **स्वल्पशिलायते** = स्वल्पशिला + क्यङ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **कुरङ्गायते** = कुरङ्ग + क्यङ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **माल्यगुणायते** = माल्यगुण + क्यङ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **पीयूषवर्षायते** = पीयूषवर्षा + क्यङ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **समुज्जृम्भते** = सम् + उत् + √जृम्भ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)

विधिलिङ्

- **उद्धरेत्** = उत् + √हृ + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **सन्तरेत्** = सम् + √तृ + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **धारयेत्** = √धृ + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **आराधयेत्** = आ + √राध् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **लभेत** = √लभ् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **पिबेत्** = √पा + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **आसादयेत्** = आङ् + √साद् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)

लोट्लकार

- **कथय** = √कथ् + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **पश्य** = √दृश् + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **यातु** = √या + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **पततु** = √पत् + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **निपततु** = नि + √पत् + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **अस्तु** = √अस् + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **भव** = √भू + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **ब्रूहि** = √ब्रू + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **जहि** = √हन् + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै)
- **जयतु** = √जि + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)

लङ्लकार

- **अभवत्** = √भू + लङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)

लुङ्लकार

- **माकृथाः** = √कृञ् + लुङ् + म. पु. एक. (आत्मने.)

नीतिशतकम् में प्रत्यय

क्तिन् प्रत्यय

- **मूर्तिः** = √मूर्त् + क्तिन्
- **अनुभूतिः** = अनु + √भू + क्तिन्
- **प्रीतिः** = √प्रीङ् (प्री) + क्तिन्
- **वृद्धिम्** = √वृध् + क्तिन्
- **क्षान्तिः** = √क्षम् + क्तिन्
- **ज्ञातिः** = √ज्ञा + क्तिन्
- **स्थितिः** = √स्था + क्तिन्
- **उन्नतिः** = उद् + √नम् + क्तिन्

- **कीर्तिः** = √कृत् + क्तिन्
- **सङ्गतिः** = सम् + √गम् + क्तिन्
- **निवृत्तिः** = नि + √वृत् + क्तिन्
- **शक्तिः** = √शक् + क्तिन्
- **दीधितिः** = √दीधीङ् + क्तिन्
- **वृत्तिः** = √वृत् + क्तिन्
- **समुन्नतिः** = सम् + उत् + √नम् + क्तिन्
- **आकृतिः** = आङ् + √कृ + क्तिन्
- **विभूतिः** = वि + √भू + क्तिन्
- **निकृतिः** = नि + √कृ + क्तिन्
- **प्रकृतिः** = प्र + √कृ + क्तिन्
- **भित्तिः** = √भिद् + क्तिन्
- **जातिः** = √जन् + क्तिन्
- **यतिः** = √यम् + क्तिन्
- **गतिः** = √गम् + क्तिन्
- **प्रसृतिः** = प्र + √सृ + क्तिन्
- **नीतिः** = √नी + क्तिन्
- **उक्तिः** = √वच् + क्तिन्
- **वृष्टिः** = √वृष् + क्तिन्
- **शान्तिः** = √शम् + क्तिन्
- **मुक्तिः** = √मुच् + क्तिन्
- **उपकृतिः** = उप + √कृ + क्तिन्
- **समृद्धिः** = सम् + √ऋध् + क्तिन्

ल्युट्प्रत्यय

- **छादनम्** = √छाद् + ल्युट्
- **विभूषणम्** = वि + √भूष् + ल्युट्
- **दानम्** = √दा + ल्युट्
- **ज्ञानम्** = √ज्ञा + ल्युट्
- **मानम्** = √मान् + ल्युट्
- **वारणम्** = √वारि + ल्युट्
- **स्नानम्** = √स्ना + ल्युट्
- **विलेपनम्** = वि + √लिप् + ल्युट्
- **भूषणम्** = √भूष् + ल्युट्
- **गमनम्** = √गम् + ल्युट्
- **हरणम्** = √हृ + ल्युट्
- **प्रदानम्** = प्र + √दा + ल्युट्
- **दर्शनम्** = √दृश् + ल्युट्
- **चालनम्** = √चाल् + ल्युट्
- **दहनम्** = √दह् + ल्युट्
- **अचेतनः** = अ + √चित् + ल्यु
- **वचनम्** = √वच् + ल्युट्
- **अध्ययनम्** = अधि + √इङ् + ल्युट्
- **उपासनम्** = उप् + √अस् + ल्युट्
- **अन्वेक्षणम्** = अनु + अव + √ईक्ष् + ल्युट्
- **पालनम्** = √पाल् + ल्युट्
- **संरक्षणम्** = सम् + √रक्ष् + ल्युट्
- **व्यसनम्** = वि + √अस् + ल्युट्
- **शयनम्** = √शी + ल्युट्
- **गमनम्** = गम् + ल्युट्

क्त प्रत्यय

- **शान्तः** = √शम् + क्त
- **दग्धः** = √दह् + क्त
- **कोपितम्** = √कुप् + क्त
- **विनिर्मितम्** = वि + निर् + √मा + क्त
- **स्वायत्तम्** = सु + आङ् + √यत् + क्त
- **अवलिप्तम्** = अव + √लिप् + क्त
- **अवगतम्** = अव + √गम् + क्त
- **चितम्** = √चि + क्त
- **क्लिन्नम्** = √क्लिद् + क्त
- **जुगुप्सितम्** = जु + √गुप् + क्त
- **उपगतः** = उप + √गम् + क्त
- **भ्रष्टः** = √भ्रस्ज् + क्त
- **विनिपातः** = वि + नि + √पत् + घञ्
- **विहितम्** = वि + √धा + क्त ('धा' को 'हि' आदेश)
- **भूतः** = √भू + क्त
- **गुप्तम्** = √गुप् + क्त
- **प्रच्छन्नम्** = प्र + √छद् + क्त
- **विख्यातः** = वि + √ख्या + क्त
- **पतितः** = √पत् + क्त
- **कुपितः** = √कुप् + क्त
- **प्रसिद्धः** = प्र + √सिध् + क्त
- **अलङ्कृतः** = अलम् + √कृ + क्त
- **संस्कृतम्** = सम् + √कृ + क्त ('सुट्' का आगम)
- **विहीनः** = वि + √हा (ओहाक् त्यागे) + क्त
- **सिद्धाः** = √सिध् + क्त
- **तुष्टः** = √तुष् + क्त
- **सच्चरितः** = सत् + √चर् + क्त

- **स्निग्धम्** = √स्निह् + क्त
- **अवदातम्** = अव + √दा + क्त
- **उपहतः** = उप + √हन् + क्त
- **उद्दिष्टम्** = उत् + √दिश् + क्त
- **क्षामः** = √क्षै + क्त
- **आपन्नः** = आङ् + √पद् + क्त
- **विपन्नः** = वि + √पद् + क्त
- **मत्तः** = √मद् + क्त
- **विभिन्नः** = वि + √भिद् + क्त
- **बद्धः** = √बध् + क्त
- **जीर्णः** = √जॄ + क्त
- **आगतम्** = आ + √गम् + क्त
- **गतः** = √गम् + क्त
- **अवपातम्** = अव + √पा + क्त
- **स्थितः** = √स्था + क्त
- **मुक्तः** = √मुच् + क्त
- **स्पृष्टः** = √स्पृश् + क्त
- **कान्तः** = √कम् + क्त
- **कृतः** = √कृ + क्त
- **अप्रतिहतः** = अ + प्रति + √हन् + क्त
- **विरहितः** = वि + √रह् + क्त
- **वित्तम्** = √विद् + क्त
- **उल्लीढः** = उद् + √लिह् + क्त
- **दलितः** = √दल् + क्त
- **सुरतः** = सु + √रम् + क्त
- **मृदिता** = √मृद् + क्त + टाप्
- **गलितः** = √गल् + क्त
- **सम्पूर्णः** = सम् + √पुर् + क्त
- **अनृता** = अन् + √नृ + क्त + टाप्
- **लिखितम्** = √लिख् + क्त
- **सिद्धम्** = √सिध् + क्त
- **विहितः** = वि + √धा + क्त
- **विततः** = वि + √तन् + क्त
- **श्रुतम्** = √श्रु + क्त
- **गूढः** = √गुह् + क्त
- **हुतः** = √हु + क्त
- **युक्तम्** = √युज् + क्त
- **इष्टम्** = √इष् + क्त
- **म्लानः** = √म्लै + क्त
- **छिन्नः** = √छिद् + क्त
- **क्षीणः** = √क्षि + क्त
- **विप्लुतः** = वि + √प्लु + क्त
- **नियमितः** = नि + √यम् + क्त
- **कदर्थितः** = कदर्थ + णिच् + क्त

शतृ प्रत्यय

- **पीडयन्** = √पीड् + णिच् + शतृ
- **पर्यटन्** = परि + √अट् + शतृ
- **खादन्** = √खाद् + शतृ
- **नश्यत्** = √नश् + शतृ
- **उद्गच्छत्** = उद् + √गम् + शतृ
- **ख्यापयन्तः** = √ख्या + णिच् + पुक् + शतृ
- **सन्तः** = √अस् + + शतृ प्रथमा, बहु0

घञ् प्रत्यय

- **विहारः** = वि + √हृ + घञ्
- **विलासः** = वि + √लस् + घञ्
- **क्रोधः** = √क्रुध् + घञ्
- **आकारः** = आङ् + √कृ + घञ्
- **प्रसादः** = प्र + √सद् + घञ्
- **भाव** = √भू + घञ्
- **अवशेष** = अव + √शिष् + घञ्
- **परितोषम्** = परि + √तुष् + घञ्
- **संसारः** = सम् + √सृ + घञ्
- **प्रहारः** = प्र + √हृञ् + घञ्
- **उद्गार** = उत् + √गॄ + घञ्
- **सम्पातः** = सम् + √पत् + घञ्
- **भोगः** = √भुज् + घञ्
- **नाशः** = √नश् + घञ्
- **सर्पः** = √सृप् + घञ्
- **दम्भः** = √दम्भ् + घञ्
- **संसर्ग** = सम् + √सृज् + घञ्
- **त्यागः** = √त्यज् + घञ्
- **संघात** = सम् + √हन् + घञ्
- **आक्षेप** = आङ् + √क्षिप् + घञ्
- **अभियोग** = अभि + √युज् + घञ्
- **उत्तापः** = उद् + तप् + घञ्
- **विराम** = वि + √रम् + घञ्

- **उपशमः** = उप + √शम् + घञ्
- **विपाकः** = वि + √पच् + घञ्
- **लाभः** = √लभ् + घञ्

अन्य प्रत्यय

- **अर्चनीयः** = √अर्च् + अनीयर्
- **पावकः** = √पूञ् + ण्वुल्
- **वाचकः** = √वच् + ण्वुल्
- **जल्पकः** = √जल्प् + ण्वुल् अथवा जल्पति इति जल्प, जल्प् + अच् (पचादित्वात्)
- **भीरूः** = √भी + क्रुक् (''भियः क्रुक्लुकनौ'' सूत्र से बना)
- **अभिभवः** = अभि + √भू + अप्
- **पुत्रः** = पुत् + √त्रै + क
- **त्रयम्** = त्रि + तयप्
- **सारः** = √सृ + घञ्
- **मैत्री** = मित्र + अण् + ङीप्
- **श्लाघ्यः** = √श्लाघ् + ण्यत्
- **प्रणयिन्** = प्रणय + इनि = प्रणयिन् + तल् + टाप् = ''प्रणयिता''
- **विजयि** = वि + √जि + णिनि
- **ऐश्वर्यम्** = ईश्वर + ष्यञ्
- **ईश्वरः** = √ईश् + वरच्
- **वितत पृथुतरारम्भयत्नाः** = वि + √तन् + क्त = विततः + पृथु + तरप् = पृथुतरः + आङ + √रम् + घञ् = आरम्भ + यत् + न = यत्नः
- **चिन्मात्रम्** = √चिद् + मात्रच्
- **बोद्धारः** = √बुध् + तृच्
- **अज्ञः** = √ज्ञा + क
- **आराध्यः** = आङ् + √राध् + ण्यत्
- **विशेषज्ञः** = विशेष + √ज्ञा + क
- **नरम्** = √नृ + अच्
- **ब्रह्मा** = √बृह् + मनिन् = ब्रह्मन्
- **पुष्पवत्** = √पुष्प + वति
- **यत्नतः** = यत्न + तसिल्
- **माधुर्यम्** = मधुर + ष्यञ्
- **सर्वविदाम्** = सर्व + विद् + क्विप्
- **तनिमानम्** = √तनु + इमनिच्
- **विभवः** = वि + √भू + अच्
- **गुरुलघुता** = गुरु + लघु + तल् + टाप्
- **धरित्री** = √धृ + तृच् + ङीप्
- **परिपोष्यमाण्** = परि + √पुष् + शानच्
- **प्रियवादिनी** = प्रिय + √वद् + णिनि + ङीप्
- **हिंस्रा** = √हिंस् + र + टाप्
- **व्यया** = वि + √इण् + अच् + टाप्
- **आगमा** = आङ् + √गम् + अच् + टाप्
- **सत्या** = √सत् + यत् + टाप्
- **दयालुता** = दया + आलुच् + तल् + टाप्
- **अनृता** = अनृत + अच् + टाप्
- **परुषा** = √पृ + उषन् + टाप्
- **विधाता** = वि + √धा + तृच्
- **विशेषतः** = विशेष + तसिल्
- **मौनम्** = मुनि + अण्
- **किञ्चिज्ज्ञः** = किञ्चित् √ज्ञा + क
- **द्विपः** = द्वि + √पा + क
- **सर्वज्ञः** = सर्व + √ज्ञा + क
- **पार्श्वस्थम्** = पार्श्व + √स्था + क
- **विलोक्य** = वि + √लुक् + ल्यप्
- **शक्यः** = √शक् + यत्
- **व्याधि** = वि + आङ् + √धा + कि
- **जीवमानः** = √जीव् + शानच्
- **साहित्यम्** = सहित + ष्यञ्
- **उपस्कृत** = उप + सुट् + √कृ + क्त
- **कुत्स्याः** = √कुत्स् + ण्यत्
- **प्रतिपाद्यमानम्** = प्रति + पद् + शानच्
- **सर्वदा** (अव्यय) = सर्व + दाच्
- **गोचर** = गो + √चर् + घ
- **विधि** = वि + √धा + कि
- **दैवतम्** = देवता + अण्
- **भोगकरी** = भोग + √कृ + ट + ङीप्
- **विद्या** = √विद् + क्यप् + टाप्
- **देहिनाम्** = देह + इनि + (षष्ठी, बहुवचन)
- **औषधम्** = औषध + अण्
- **नय** = √नी + अच्
- **दाक्षिण्यम्** = दक्षिण + ष्यञ्
- **शाठ्यम्** = शठ + ष्यञ्
- **शौर्य** = शूर + ष्यञ्
- **आर्जवम्** = ऋजु + अण्
- **जाड्यम्** = जड + ष्यञ्

- **ईश्वरः** = √ईश् + वरच्
- **भयम्** = √भी + अच्
- **सुकृतिनः** = सुकृत + इनि (इन्)
- **वञ्चकः** = √वञ्च् + ण्वुल्
- **विष्टपहारिणि** = विष्टप + √हृ + णिनि
- **संयमः** = सम् + √यम् + अप्
- **अनुकम्पा** = अनु + √कम्प् + अच् + टाप्
- **विधि** = वि + √धा + कि
- **विभङ्ग** = वि + √भञ्ज् + क
- **विनयः** = वि + √नी + अच्
- **प्रारभ्य** = प्र + आङ् + √रभ् + ल्यप्
- **हन्यमानः** = √हन् + शानच्
- **अभ्यर्थ्यः** = अभि + अर्थ् + यत्
- **याच्यः** = √याच् + यत्
- **स्थेयम्** = √स्था + यत्
- **उद्गमः** = उद् + √गम् + अप्
- **घनः** = √हन् + अप्
- **उपकरिणः** = उप + √कृ + णिनि
- **विधेयम्** = वि + √धा + यत्
- **सुकरम्** = सु + √कृ + अच्
- **त्यक्त्वा** = √त्यज् + क्त्वा
- **द्विपः** = द्वि + √पा + क
- **लब्ध्वा** = √लभ् + क्त्वा
- **निपत्य** = नि + √पत् + ल्यप्
- **पिण्डदः** = पिण्ड + √दा + क
- **परिवर्ती** = परि + √वृत् + णिनि
- **पयोधिः** = पयः + √धा + कि
- **छेदः** = √छिद् + घञ्
- **स्पृहः** = √स्पृह् + अच्
- **कृशः** = √कृश् + क्त
- **विवशः** = वि + √वश् + अच्
- **श्रोत्रम्** = √श्रु + ष्ट्रन्
- **दिनकर** = दिन + √कृ + ट
- **तेजस्वी** = तेजस् + विनि
- **सत्त्ववान** = सत्त्व + मतुप्
- **शौर्यम्** = शूर + ष्यञ्
- **गुणज्ञः** = गुण + ज्ञा + क
- **वक्ता** = √वच् + तृच्
- **दर्शनीयः** = √दृश् + अनीयर्
- **कुलीनः** = कुल + खञ् (ईन)
- **पण्डितः** = पण्डा + इतच्
- **श्रुतवान्** = श्रुत + मतुप्
- **मद्यम्** = मद् + यत्
- **दौर्मन्त्र्यम्** = दुर्मन्त्र + ष्यञ्
- **मैत्री** = मित्र + अण् + ङीप्
- **वदान्या** = √वद् + आन्य + टाप्
- **नित्यधनागम** = नित्य + धन + आङ् + √गम् + घञ् + टाप्
- **वाराङ्गना** = वार + अङ्ग + न + टाप्
- **आज्ञा** = आङ् + √ज्ञा + अङ् + टाप्
- **उपाश्रयः** = उप + आङ् + √श्रि + अच्
- **धात्रा** = √धा + तृच्
- **मरुः** = √मृ + उ
- **अम्भोदाः** = अम्भस् + √दा + क
- **आधारः** = आ + √धृ + घञ्
- **कार्पण्यम्** = कृपण + ष्यञ्
- **पुरतः** = पुरा + तस्
- **विग्रहः** = वि + √ग्रह् + अप्
- **स्पृहा** = √स्पृह् + अङ् + टाप्
- **होता** = √हु + तृच्
- **असहिष्णुता** = असहिष्णु + तल + टाप्
- **परिहर्तव्यः** = परि + √हृ + तव्यत्
- **भयङ्करः** = भय + √कृ + खश्
- **निर्घृणता** = निर्घृण + तल् + टाप्
- **मुनिः** = √मन् + इनि
- **मुखरता** = मुख + र + तल् + टाप्
- **शशी** = शश् + इनि
- **कामिनी** = काम + इनि = ङीप्
- **वारिजम्** = वारि + जन् + ड
- **यौवन** = युवन् + अण्
- **भूभुजाम्** = √भू + भुज् + क्विप् (ष. वि.)
- **जुह्वान्** = √हु + शानच्
- **रोद्धुम्** = √रुध् + तुमुन्
- **छेत्तुम्** = √छिद् + तुमुन्
- **रचयितुम्** = √रच् + तुमुन्
- **नेतुम्** = नी + तुमुन्
- **वारयितुम्** = वारि + तुमुन्
- **जलधरः** = जल + √धृ + अच्

- **उद्यमः** = उद् + यम + अप्
- **तदीयम्** = तत् + छ (ईय)
- **केशवः** = केश + व (केशाद्वोऽन्यतस्याम् से 'व' प्रत्यय)
- **सहम्** = सह् + अच्
- **लक्ष्मीः** = √लक्ष् + ई (लक्षेर्मुट च, से मुट् का आगम)
- **धीरः** = √धी + ईर् + अच्
- **न्यायः** = नि + √इ + घञ्
- **विष्णुः** = √विश् + नु (उणादि)
- **अवतारः** = अव + तॄ + घञ्
- **अवतरः** = अव + √तॄ + अप्
- **रुद्रः** = √रुद् + र (उणादि)
- **सेवा** = √सेव् + अङ् + टाप्
- **पिण्डिता** = पिण्ड् + इतच् + टाप्
- **म्लान** = √म्लै + क्त
- **इन्द्रिय** = इन्द्र + घ
- **भोगी** = भोग + इनि
- **आखुः** = आ + √खन् + कु
- **आलस्यम्** = अलस् + ष्यञ्
- **शरीरस्थः** = शरीर + √स्था + क
- **तरुः** = तॄ + उ
- **ग्रहः** = √ग्रह् + अच्
- **क्षणभङ्गि** = क्षण + √भञ्ज् + घिनुण्
- **मार्जितुम्** = √मृज् + तुमुन्
- **नमस्यामः** = नमस् + क्यच्
- **वशगाः** = वश + √गम् + ड
- **यत्नतः** = √यत् + नङ् = यत्न + तसिल्
- **वैदूर्यमयी** = वैदूर्य + मयट् + ङीप्
- **चान्दनैः** = चन्दन + अण् तृतीया बहुवचन
- **आह्वः** = आ + √ह्वे + अप्
- **कृषिः** = √कृष् + इनि
- **भाज्यम्** = √भू + ण्यत्
- **धैर्य** = धीर + ष्यञ्
- **भास्करः** = भा + √कृ + ट
- **वल्लभतमम्** = वल्लभ + तमप्

नीतिशतकम् में सन्धि

- **दिक्कालादि** = दिक्काल + आदि (दीर्घसन्धि)
- **अनवच्छिन्नानन्त** = अनवच्छिन्न + अनन्त (दीर्घसन्धि)
- **दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्त** = दिक्कालादि + अनवच्छिन्नानन्त (यण्सन्धि)
- **चिन्मात्रः** = चित् + मात्रम् (अनुनासिक सन्धि)
- **स्वानुभूतिः** = स्व + अनुभूतिः (दीर्घसन्धि)
- **अनुभूत्यैकमानाय** = अनुभूति + एकमानाय (यण्सन्धि)
- **अबोधोपहताः** = अबोध + उपहताः (गुणसन्धि)
- **चान्ये** = च + अन्ये (दीर्घसन्धि)
- **ब्रह्मापि** = ब्रह्मा + अपि (दीर्घसन्धि)
- **ऊर्मिमालाकुलम्** = ऊर्मिमाला + आकुलम् (दीर्घसन्धि)
- **पुष्पवद्धारयेत्** = पुष्पवत् + धारयेत् (जश्त्वसन्धि)
- **पिबेच्च** = पिबेत् + च (श्चुत्वसन्धि)
- **पिपासार्दितः** = पिपासा + आर्दितः (दीर्घसन्धि)
- **पर्यटञ्छशविषाणम्** = पर्यटन् + शशविषाणम् (श्चुत्व-छत्व सन्धि)
- **तन्तुभिरसौ** = तन्तुभिः + असौ (विसर्गसन्धि)
- **क्षाराम्बुधेरीहते** = क्षारा + अम्बुधेः + ईहते (दीर्घ सन्धि) विसर्गसन्धि
- **मदान्धः** = मद + अन्धः (दीर्घसन्धि)
- **सर्वज्ञोऽस्मि** = सर्वज्ञो + अस्मि (पूर्वरूपसन्धि)
- **ज्वर इव** = ज्वरः + इव (विसर्गसन्धि)
- **नरास्थि** = नर + अस्थि (दीर्घसन्धि)
- **महीध्रादुत्तुङ्गात्** = महीध्रात् + उत्तुङ्गात् (जश्त्वसन्धि)
- **उत्तुङ्गादवनिम्** = उत्तुङ्गात् + अवनिम् (जश्त्वसन्धि)
- **अवनेश्च** = अवनेः + च (अवनेस् + च) (विसर्गसन्धि श्चुत्वसन्धिः)
- **चापि** = च + अपि (दीर्घसन्धि)
- **अधोऽधः** = अधो + अधः (पूर्वरूपसन्धि)
- **गङ्गेयम्** = गङ्गा + इयम् (गुणसन्धि)
- **सूर्यातपः** = सूर्य + आतपः (दीर्घसन्धि)
- **नागेन्द्रः** = नाग + इन्द्रः (गुणसन्धि)
- **निशिताङ्कुशेन** = निशित + अङ्कुशेन (दीर्घसन्धि)
- **व्याधिर्भेषजसङ्ग्रहैः** = व्याधिः + भेषजसङ्ग्रहैः (विसर्गसन्धि)
- **सङ्ग्रहैश्च** = सङ्ग्रहैः + च (श्चुत्वसन्धि)
- **विविधैर्मन्त्रप्रयोगैः** = विविधैः + मन्त्रप्रयोगैः (विसर्गसन्धि)
- **प्रयोगैर्विषम्** = प्रयोगैः + विषम् (विसर्गसन्धि)
- **सर्वस्यौषधम्** = सर्वस्य + औषधम् (वृद्धिसन्धि)

- **नास्त्यौषधम्** = नास्ति + औषधम् (यण्सन्धि)
- **जीवमानस्तत्** = जीवमानः + तत् (विसर्गसन्धि)
- **मृगाश्चरन्ति** = मृगास् + चरन्ति (श्चुत्वसन्धि)
- **सुरेन्द्रभवनेष्वपि** = सुरेन्द्रभवनेषु + अपि (यण्सन्धि)
- **हर्तुर्याति** = हर्तुः + याति (विसर्गसन्धि)
- **सर्वदापि** = सर्वदा + अपि (दीर्घसन्धि)
- **अप्यर्थिभ्यः** = अपि + अर्थिभ्यः (यण्सन्धि)
- **कल्पान्तेष्वपि** = कल्पान्तेषु + अपि (यण्सन्धि)
- **विद्याख्यम्** = विद्या + आख्यम् (दीर्घसन्धि)
- **कस्तैः** = कः + तैः (विसर्गसन्धि)
- **मावमंस्थाः** = मा + अवमंस्थाः (दीर्घसन्धि)
- **अवमंस्थास्तृणम्** = अवमंस्थाः + तृणम् (विसर्गसन्धि)
- **लक्ष्मीर्न** = लक्ष्मीः + न (विसर्गसन्धि)
- **नैव** = न + एव (वृद्धिसन्धि)
- **तन्तुर्वारणम्** = तन्तुः + वारणम् (विसर्गसन्धि)
- **त्वस्य** = तु + अस्य (यण्सन्धि)
- **चन्द्रोज्ज्वलाः** = चन्द्र + उज्ज्वलाः (गुणसन्धि)
- **नालङ्कृताः** = न + अलङ्कृताः (दीर्घसन्धि)
- **वाण्येका** = वाणी + एका (यण्सन्धि)
- **वाग्भूषणम्** = वाक् + भूषणम् (जश्त्वसन्धि)
- **शान्तिश्चेत्** = शान्तिः + चेत् (श्चुत्वसन्धि)
- **क्रोधोऽस्ति** = क्रोधो + अस्ति (पूर्वरूपसन्धि)
- **चेद्देहिनाम्** = चेत् + देहिनाम् (जश्त्वसन्धि)
- **ज्ञातिश्चेत्** = ज्ञातिस् + चेत् (श्चुत्वसन्धि)
- **चेदनलेन** = चेत् + अनलेन (जश्त्वसन्धि)
- **सुहृद्दिव्य** = सुहृत् + दिव्य (जश्त्वसन्धि)
- **सर्पैर्यदि** = सर्पैः + यदि (विसर्गसन्धि)
- **धनैर्विद्या** = धनैः + विद्या (विसर्गसन्धि)
- **विद्यानवद्या** = विद्या + अनवद्या (दीर्घसन्धि)
- **विद्वज्जने** = विद्वत् + जने (जश्त्वसन्धि)
- **चार्जवम्** = च + आर्जवम् (दीर्घसन्धि)
- **चैवं** = च + एवम् (वृद्धिसन्धि)
- **कुशलास्तेषु** = कुशलाः + तेषु (विसर्गसन्धि)
- **तेष्वेव** = तेषु + एव (यण्सन्धि)
- **मानोन्नतिः** = मान + उन्नतिः (गुणसन्धि)
- **कवीश्वराः** = कवि + ईश्वराः (दीर्घसन्धि)
- **नास्ति** = न + अस्ति (दीर्घसन्धि)
- **सच्चरितः** = सत् + चरितः (श्चुत्वसन्धि)
- **प्रसादोन्मुखः** = प्रसाद + उन्मुखः (गुणसन्धि)
- **स्थिरश्च** = स्थिरः + च (श्चुत्वसन्धि)
- **विद्यावदातम्** = विद्या + अवदातम् (दीर्घसन्धि)
- **प्राणाघातान्निवृत्तिः** = प्राणाघातात् + निवृत्तिः (अनुनासिक सन्धि)
- **शास्त्रेष्वनुपहतविधिः** = शास्त्रेषु + अनुपहतविधिः (यण्सन्धि)
- **पुनरपि** = पुनः + अपि (विसर्गसन्धि)
- **नाऽभ्यर्थ्याः** = न + अभ्यर्थ्याः (दीर्घसन्धि)
- **सुहृदपि** = सुहृत् + अपि (जश्त्वसन्धि)
- **वृत्तिर्मलिनमसुभङ्गेऽप्यसुकरम्** = वृत्तिः + मलिनम् (विसर्ग सन्धि) असुभङ्गे + अपि + सुकरम् (पूर्वरूपसन्धि, यण्सन्धि)
- **विपद्युच्चैः** = विपदि + उच्चैः (यण्सन्धिः)
- **केनोद्दिष्टम्** = केन + उद्दिष्टम् (गुणसन्धिः)
- **क्षुत्क्षामोऽपि** = क्षुत्क्षामः + अपि (विसर्गसन्धिः, पूर्वरूप सन्धिः)
- **जराकृशोऽपि** = जराकृशो + अपि (पूर्वरूपसन्धि)
- **नश्यत्स्वपि** = नश्यत्सु + अपि (यण्सन्धि)
- **ग्रासैक** = ग्रास + एक (वृद्धिसन्धि)
- **वसावसेकः** = वसा + अवसेकः (दीर्घसन्धि)
- **अप्यस्थिकम्** = अपि + अस्थिकम् (यण्सन्धि)
- **कृच्छ्रगतोऽपि** = कृच्छ्रगतो + अपि (पूर्वरूपसन्धि)
- **सत्त्वानुरूपम्** = सत्त्व + अनुरूपम् (दीर्घसन्धि)
- **अधश्चरणः** = अधस् + चरणः (श्चुत्वसन्धि)
- **वदनोदर** = वदन + उदर (गुणसन्धि)
- **गजपुङ्गवस्तु** = गजपुङ्गवः + तु (विसर्गसन्धि)
- **चाटुशतैश्च** = चाटुशतैस् + च (श्चुत्वसन्धि)
- **को वा** = कः + वा (विसर्गसन्धि)
- **जातो येन** = जातः + येन (विसर्गसन्धि)
- **कुसुमस्तबकस्येव** = कुसुमस्तबकस्य + इव (गुणसन्धि)
- **वृत्तिर्मनस्विनाः** = वृत्तिः + मनस्विनः (विसर्गसन्धि)
- **सन्त्यन्ये** = सन्ति + अन्ये (यण्सन्धि)
- **अन्येऽपि** = अन्ये + अपि (पूर्वरूपसन्धि)
- **पञ्चषास्तान्** = पञ्चषाः + तान् (विसर्गसन्धि)
- **प्रत्येषः** = प्रति + एषः (यण्सन्धि)

- **राहुर्न** = राहुः + न (विसर्गसन्धि)
- **द्वावेव** = द्वौ + एव (अयादिसन्धि)
- **शीर्षावशेषाकृतिः** = शीर्ष + अवशेष + आकृतिः (दीर्घसन्धि)
- **पयोधिरनादरात्** = पयोधिः + अनादरात् (विसर्गसन्धि)
- **निःसीमानश्चरित्रविभूतयः** = निःसीमानस् + चरित्रविभूतयः (श्चुत्वसन्धि)
- **प्रहारैरुद्गच्छत्** = प्रहारैः + उद्गच्छत् (विसर्गसन्धि)
- **दहनोद्गार** = दहन + उद्गार (गुणसन्धि)
- **तुषाराद्रेः** = तुषार + अद्रेः (दीर्घसन्धि)
- **सूनोरहह** = सूनोः + अहह (विसर्गसन्धि)
- **चासौ** = च + असौ (दीर्घसन्धि)
- **पत्युरुचितः** = पत्युः + उचितः (विसर्गसन्धि)
- **यदचेतनः** = यत् + अचेतनः (जश्त्वसन्धि)
- **अचेतनोऽपि** = अचेतनो + अपि (पूर्वरूपसन्धि)
- **सवितुरिनकान्तः** = सवितुः + इनकान्तः (विसर्गसन्धि)
- **शिशुरपि** = शिशुः + अपि (विसर्गसन्धि)
- **प्रकृतिरियम्** = प्रकृतिः + इयम् (विसर्गसन्धि)
- **वयस्तेजसः** = वयः + तेजसः (विसर्गसन्धि)
- **अप्यधः** = अपि + अधः (यण्सन्धि)
- **गच्छताच्छीलम्** = गच्छतात् + शीलम् (श्चुत्वसन्धि)
- **पतत्वभिजनः** = पततु + अभिजनः (यण्सन्धि)
- **निपतत्वर्थः** = निपततु + अर्थः (यण्सन्धि)
- **येनैकेन** = येन + एकेन (वृद्धिसन्धि)
- **गुणास्तृणलवप्रायाः** = गुणाः + तृणलवप्रायाः (विसर्गसन्धि)
- **तानीन्द्रियाणि** = तानि + इन्द्रियाणि (दीर्घसन्धि)
- **तदेव** = तत् + एव (जश्त्वसन्धि)
- **बुद्धिरप्रतिहता** = बुद्धिः + अप्रतिहता (विसर्गसन्धि)
- **अर्थोष्मणा** = अर्थ + ऊष्मणा (गुणसन्धि)
- **स एव** = सः + एव (विसर्गसन्धि) विसर्गलोप
- **त्वन्यः** = तु + अन्यः (यण्सन्धि)
- **भवतीति** = भवति + इति (दीर्घसन्धि)
- **यस्यास्ति** = यस्य + अस्ति (दीर्घसन्धि)
- **स नरः** = सः + नरः (विसर्गसन्धि) विसर्गलोप
- **स च** = सः + च (विसर्गसन्धि) विसर्गलोप
- **कुतनयाच्छीलम्** = कुतनयात् + शीलम् (श्चुत्वसन्धि)
- **खलोपासनात्** = खल + उपासनात् (गुणसन्धि)
- **ह्रीर्मद्यात्** = ह्रीः + मद्यात् (विसर्गसन्धि)
- **प्रमादाद्धनम्** = प्रमादात् + धनम् (जश्त्वसन्धि)
- **प्रवासाश्रयान्मैत्री** = प्रवासाश्रयात् + मैत्री (अनुनासिकसन्धि)
- **नाशास्तिस्रः** = नाशः + तिस्रः (विसर्गसन्धि)
- **गतयो भवन्ति** = गतयः + भवन्ति (विसर्गसन्धि)
- **शाणोल्लीढः** = शाण + उल्लीढः (गुणसन्धि)
- **शेषश्चन्द्रः** = शेषस् + चन्द्रः (श्चुत्वसन्धि)
- **विभवाश्च** = विभवास् + च (श्चुत्वसन्धि)
- **अतश्च** = अतः स + च (श्चुत्वसन्धि)
- **चानैकान्त्यात्** = च + अनैकान्त्यात् (दीर्घसन्धि)
- **गुरुलघुतयार्थेषु** = गुरुलघुतया + अर्थेषु (दीर्घसन्धि)
- **तस्मिंश्च** = तस्मिन् + च (व्यञ्जनसन्धि)
- **कल्पलतेव** = कल्पलता + इव (गुणसन्धि)
- **सत्यानृता** = सत्या + अनृता (दीर्घसन्धि)
- **दयालुरपि** = दयालुः + अपि (विसर्गसन्धि)
- **चार्थपरा** = च + अर्थपरा (दीर्घसन्धि)
- **वाराङ्गनेव** = वाराङ्गना + इव (गुणसन्धि)
- **नृपनीतिरनेकरूपा** = नृपनीतिः + अनेकरूपा (विसर्गसन्धि)
- **कोऽर्थः** = कः + अर्थः (विसर्गसन्धिः) को + अर्थः (पूर्वरूपसन्धि)
- **पार्थिवोपाश्रयेण** = पार्थिव + उपाश्रयेण (गुणसन्धि)
- **यद्यस्ति** = यदि + अस्ति (यण्सन्धि)
- **अप्यगम्यः** = अपि + अगम्यः (यण्सन्धि)
- **येष्वेते** = येषु + एते (यण्सन्धि)
- **चाप्युपकृतेः** = चापि + उपकृतेः (यण्सन्धि)
- **भवत्युत्पलकोमलम्** = भवति + उत्पलकोमलम् (यण्सन्धि)
- **मध्यमोत्तमगुणः** = मध्यम + उत्तमगुणः (गुणसन्धि)
- **क्वचिच्छाकाहारः** = क्वचित् + शाकाहारः (श्चुत्वसन्धि)
- **ज्ञानस्योपशमः** = ज्ञानस्य + उपशमः (गुणसन्धि)
- **यथेष्टम्** = यथा + इष्टम् (गुणसन्धि)
- **अद्यैव** = अद्य + एव (वृद्धिसन्धि)
- **यस्यास्ति** = यस्य + अस्ति (दीर्घसन्धि)
- **नास्त्युद्यमसमः** = नास्ति + उद्यमसमः (यण्सन्धि)

नीतिशतकम् में समास

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये = दिक् च कालः च, दिक्कालौ (द्वन्द्वः)
दिक्कालौ आदी येषां ते, दिक्कालादयः (बहुव्रीहि)
दिक्कालादिभिः अनवच्छिन्नं, दिक्कालाद्यनवच्छिन्नम् (तृतीया तत्पु.)

- दिक्कालाद्यनवच्छिन्नम् अनन्तं चित् मूर्तिः यस्य सः दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तिः (बहुव्रीहि) तस्मै
- **स्वानुभूत्येकमानाय**–स्वस्य अनुभूतिः, स्वानुभूतिः (षष्ठी तत्पु.) स्वानुभूतिः एव एकं मानं यस्य तत् स्वानुभूत्यैकमानम् (बहुव्रीहि) तस्मै
- **मत्सरग्रस्ताः** = मत्सरेण ग्रस्ताः (तृतीया तत्पु.)
- **स्मयदूषिताः** = स्मयेन दूषिताः (तृतीया तत्पु.)
- **अबोधः** = न बोधः (नञ् तत्पु.)
- **अबोधोपहताः** = अबोधेन उपहताः (तृतीया तत्पु.)
- **अज्ञः** = न ज्ञः अज्ञः (नञ् तत्पु.)
- **विशेषज्ञः** = विशेषं जानाति इति (उपपद तत्पु.)
- **ज्ञानलवदुर्विदग्धं** = ज्ञानस्य लवः ज्ञानलवः (षष्ठी तत्पु.) ज्ञानलवेन दुर्विदग्धं (तृतीया तत्पु.)
- **मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात्** = मकरस्य वक्त्रं, मकरवक्त्रं (षष्ठी तत्पु.) तस्मिन् दंष्ट्राः (सुप्सुपा समास)
- **प्रचलदूर्मिमालाकुलम्** = प्रचलन्तः ऊर्मयः प्रचलदूर्मयः (कर्मधारयः) प्रचलदूर्मीनां मालाः प्रचलदूर्मिमालाः (षष्ठी तत्पु.) ताभिः मालाभिः आकुलम् (तृतीया तत्पु.)
- **प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम्** = प्रतिनिविष्टः च असौ मूर्ख जनः, प्रतिनिविष्टमूर्खजनः (कर्मधारय) प्रतिनिविष्टमूर्खजनस्य चित्तम् (षष्ठी तत्पु.)
- **मृगतृष्णिकासु** = मृगाणां तृष्णा मृगतृष्णा (षष्ठी तत्पु.) तासु
- **शशविषाणम्** = शशस्य विषाणम् (षष्ठी तत्पु.)
- **पिपासार्दितः** = पिपासया अर्दितः (तृतीया तत्पु.)
- **सुधास्यन्दिभिः** = सुधां स्यन्दन्ते तच्छीलानि सुधास्यन्दीनि, तैः (उपपद तत्पुरुष)
- **शिरीषकुसुमप्रान्तेन** = शिरीषकुसुमस्य प्रान्तः शिरीषकुसुम प्रान्तः तेन (तृतीया तत्पु.)
- **मधुबिन्दुना** = मधोः बिन्दुः मधुबिन्दुः तेन (षष्ठी तत्पु.)
- **क्षाराम्बुधेः** = क्षारश्चासौ अम्बुधिश्च क्षाराम्बुधिः (कर्मधारय) तस्य
- **अपण्डितानाम्** = न पण्डिताः अपण्डिताः (नञ् तत्पु.) तेषाम्
- **सर्वविदाम्** = सर्वं विदन्तीति सर्वविदः (नित्यसमास) तेषाम्
- **किञ्चिज्ज्ञः** = किञ्चित् जानाति इति किञ्चिज्ज्ञः (नित्यसमास)
- **सर्वज्ञः** = सर्वं जानाति इति सर्वज्ञः (नित्यसमास)
- **कृमिकुलेन** = कृमीनां कुलं कृमिकुलं (षष्ठी तत्पु.) तेन
- **निरामिषम्** = निर्गतम् आमिषं यस्मात् (बहुव्रीहि) तत्
- **नरास्थि** = नरस्य अस्थि (षष्ठी तत्पु.)
- **निरुपमरसप्रीत्या** = निरुपमो रसः यस्य सः निरुपमरसः (बहुव्रीहि) तस्मिन् निरुपमरसे, निरुपमरसे या प्रीतिः निरुपमरस प्रीतिः (सप्तमी तत्पु.) तया
- **सुरपतिम्** = सुराणां पतिः सुरपतिः (षष्ठी तत्पु.) तम्
- **परिग्रहफल्गुताम्** = परिग्रहस्य फल्गुता परिग्रहफल्गुता (षष्ठी तत्पु.) ताम्
- **शास्त्रविहितम्** = शास्त्रेषु विहितम् (सप्तमी तत्पु.)
- **फल्गुता** = फलं गतं यस्मात् सः फल्गुः, तस्य भावः (षष्ठी तत्पु.)
- **शार्वम्** = शर्वस्य इदम् (षष्ठी तत्पु.)
- **पशुपतिशिरस्तः** = पशूनां पतिः पशुपतिः (षष्ठी तत्पु.) पशुपतेः शिरः पशुपतिशिरः (षष्ठी तत्पु.) तस्मात्
- **क्षितिधरम्** = "धरतीति धरः" क्षितेः धरः क्षितिधरः (षष्ठी तत्पु.) तम्
- **विवेकभ्रष्टानां** = विवेकात् भ्रष्टाः विवेकभ्रष्टाः (पञ्चमी तत्पु.) तेषाम्
- **शतमुखः** = शतं मुखानि यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **हुतभुक्** = हुतं भुनक्तीति (कर्मधारय)
- **सूर्यातपः** = सूर्यस्य आतपः (षष्ठी तत्पु.)
- **नागेन्द्रः** = नागानाम् इन्द्रः (षष्ठी तत्पु.)
- **निशिताङ्कुशेन** = निशितः अङ्कुशः निशिताङ्कुशः (कर्मधारय) तेन
- **गोगर्दभौ** = गौश्च गर्दभश्च (द्वन्द्वः)
- **भेषजसंग्रहैः** = भेषजानां संग्रहः भेषजसंग्रहः (षष्ठी तत्पु.) तैः
- **साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः** = साहित्यसङ्गीतयोः कलाः साहित्यसङ्गीतकलाः (षष्ठी तत्पु.) साहित्यसङ्गीतकलाभिः विहीनः (तृतीया तत्पु.)
- **पुच्छविषाणहीनः** = पुच्छश्च विषाणौ च पुच्छविषाणाः (द्वन्द्व) तैः हीनः (तृतीया तत्पु.)
- **मर्त्यलोके** = मर्त्यानां लोकः मर्त्यलोकः (षष्ठी तत्पु.) तस्मिन्
- **मनुष्यरूपेण** = मनुष्याणां रूपं मनुष्यरूपम् (षष्ठी तत्पु.) तेन
- **पर्वतदुर्गेषु** = पर्वताः दुर्गाणि च पर्वतदुर्गाणि (द्वन्द्व) तेषु
- **वनचरैः** = वने चरन्तीति वनचराः (सप्तमी तत्पु.) तैः
- **मूर्खजनसम्पर्कः** = मूर्खः च असौ जनः मूर्खजनः (कर्मधारय) मूर्खजनानां सम्पर्कः (षष्ठी तत्पु.)

- **सुरेन्द्रभवनेषु** = सुराणाम् इन्द्रः सुरेन्द्रः (षष्ठी तत्पु.) सुरेन्द्रस्य भवनानि (षष्ठी तत्पु.) तेषु
- **शास्त्रोपस्कृतशब्दसुन्दरगिरः** = शास्त्रैः उपस्कृताः शास्त्रोपस्कृताः (तृतीया तत्पु.) शास्त्रोपस्कृतैः शब्दैः सुन्दरा गिरः येषां ते (बहुव्रीहि)
- **निर्धनाः** = निर्गतं धनं येभ्यः ते (बहुव्रीहि)
- **वसुधाधिपस्य** = वसुधायाः अधिपः वसुधाधिपः तस्य (षष्ठी तत्पु.)
- **कुपरीक्षकाः** = कुत्सिताः परीक्षकाः (कर्मधारय)
- **कल्पान्तेषु** = कल्पानाम् अन्तः कल्पान्तः तेषु (षष्ठी तत्पु.)
- **विद्याख्यम्** = विद्या आख्या यस्य तत् (बहुव्रीहि)
- **अधिगतपरमार्थान्** = अधिगतः परमार्थः यैः ते अधिगतपरमार्थाः तान् (बहुव्रीहि)
- **बिसतन्तुः** = बिसस्य तन्तुः (षष्ठी तत्पु.)
- **अभिनवमदलेखाश्यामगण्डस्थलानाम्** = अभिनवा चैव मदलेखा अभिनवमदलेखा (कर्मधारय) अभिनवमदलेखाश्यामानि (तृतीया तत्पु.) अभिनवमदलेखा श्यामानि गण्डस्थलानि येषां ते अभिनवमदलेखाश्यामगण्डस्थलाः, (बहुव्रीहि) तेषाम्
- **अम्भोजिनीवनविहारविलासम्** = अम्भोजिनीनांवनम् (षष्ठी तत्पु.) अम्भोजिनीवनम्, अम्भोजिनीवने विहारः अम्भोजिनीवन विहारस्य विलासः (षष्ठी तत्पु.) तम्
- **दुग्धजलभेदविधौ** = दुग्धं च जलं च दुग्धजले (द्वन्द्वः) दुग्धजलयोः भेदः दुग्धजलभेदः (षष्ठी तत्पु.) दुग्धजलभेदस्य विधिः दुग्धजलभेदविधिः (षष्ठी तत्पु.) तस्मिन्
- **वैदग्ध्यकीर्तिम्**=वैदग्ध्येन कीर्तिः वैदग्ध्यकीर्तिः (तृतीया तत्पु.) ताम्
- **चन्द्रोज्ज्वलाः** = चन्द्रवत् उज्ज्वलाः (कर्मधारय)
- **वाग्भूषणम्** = वाक् एव भूषणम् (कर्मधारय)
- **प्रच्छन्नगुप्तम्** = प्रच्छन्नं च तत् गुप्तं च (कर्मधारय)
- **भोगकरी** = भोगं करोति इति भोगकरी (नित्यसमासः)
- **यशःसुखकरी** = यशः च सुखं च इति यशसुखे, यशः सुखं करोतीति यशःसुखकरी (नित्यसमासः)
- **विदेशगमने** = विदेशेषु गमनं विदेशगमनं (सप्तमी तत्पु.) तस्मिन्
- **बन्धुजनः** = बन्धुः च असौ जनः इति बन्धुजनः (कर्मधारय)
- **विद्याविहीनः** = विद्यया विहीनः, (तृतीया तत्पु.)
- **दिव्यौषधैः** = दिव्यानि च तानि औषधानि, दिव्यौषधानि (वि. पू. कर्मधारय) तैः
- **अनवद्या** = न वद्या अवद्या, न अवद्या अनवद्या (नञ् तत्पु.)
- **सुकविता** = शोभना कविता (अव्ययीभावसमासः)
- **नृपजने** = नृपः च असौ जनः नृपजनः (कर्मधारय) तस्मिन्
- **विद्वज्जने** = विद्वान् च असौ जनः विद्वज्जनः (कर्मधारय) तस्मिन्
- **गुरुजने** = गुरुः च असौ जनः गुरुजनः (कर्मधारय) तस्मिन्
- **नारीजने** = नारी च असौ जनः नारीजनः (कर्मधारय) तस्मिन्
- **लोकस्थितिः** = लोकस्य स्थितिः लोकस्थितिः (षष्ठी तत्पु.)
- **मानोन्नतिम्** = मानस्य उन्नतिः मानोन्नतिः (षष्ठी तत्पु.) ताम्
- **सत्सङ्गतिः** = सतां सङ्गतिः सत्सङ्गतिः (षष्ठी तत्पु.)
- **रससिद्धाः** = रसेषु सिद्धाः रससिद्धाः (सप्तमी तत्पु.) रसैः सिद्धाः, रससिद्धाः (तृतीया तत्पु.)
- **कवीश्वराः** = कवयश्च ते ईश्वराश्च कवीश्वराः (कर्मधारय)
- **यशःकाये** = यशः एव कायः यशःकायः तस्मिन् (कर्मधारय)
- **जरामरणजम्** = जरा च मरणं च जरामरणे (द्वन्द्व) जरामरणाभ्यां जायते इति जरामरणजम् (तृतीया तत्पु.)
- **विष्टपकष्टहारिणि** = विष्टपस्य कष्टं विष्टपकष्टम् (षष्ठी तत्पु.) विष्टपकष्टं हरतीति, विष्टपकष्टहारी (नित्यसमास) तस्मिन्
- **प्रसादोन्मुखः** = प्रसादे उन्मुखः प्रसादोन्मुखः (सप्तमी तत्पु.)
- **निष्क्लेशलेशम्** = क्लेशस्य लेशः, क्लेशलेशः (षष्ठी तत्पु.) निर्गतः क्लेशलेशः यः ताम् (बहुव्रीहि) तत्
- **विद्यावदातम्** = विद्यया अवदातम् (तृतीया तत्पु.)
- **प्राणाघातात्** = प्राणानाम् आघातः प्राणाघातः (षष्ठी तत्पु.) तस्मात्
- **परधनहरणे** = परेषां धनानि परधनानि (षष्ठी तत्पु.) परधनानां हरणं परधनहरणम् (षष्ठी तत्पु.) तस्मिन्
- **सत्यवाक्यम्** = सत्यं च तत् वाक्यं च (कर्मधारय)
- **युवतिजनकथामूकभावः** = युवतिजनानां कथाः युवतिजन–कथाः (षष्ठी तत्पु.), युवतिजनकथासु मूकभावः (सप्तमी तत्पु.)
- **तृष्णास्त्रोतोविभङ्गः** = तृष्णायाः स्त्रोतांसि तृष्णास्त्रोतांसि (षष्ठी तत्पु.) तृष्णास्त्रोतसां विभङ्गः (षष्ठी तत्पु.)
- **सर्वभूतानुकम्पा** = सर्वेषु भूतेषु अनुकम्पा (सप्तमी तत्पु.)
- **सर्वशास्त्रेषु** = सर्वाणि च तानि शास्त्राणि सर्वशास्त्राणि (कर्मधारय) तेषु
- **अनुपहतविधिः** = अनुपहतः विधिः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **विघ्नभयेन** = विघ्नेभ्यः भयं, विघ्नभयम् (पञ्चमी तत्पु.) तेन
- **विघ्नविहताः** = विघ्नैः विहताः (तृतीया तत्पु.)

- **उत्तमजनाः** = उत्तमाः च ते जनाः उत्तमजनाः (कर्मधारय)
- **असन्तः** = न सन्तः (नञ् तत्पुरुष)
- **कृशधनः** = कृशं धनं यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **असुभङ्गे** = असूनां भङ्गः असुभङ्गः (षष्ठी तत्पु.) तस्मिन्
- **असुकरम्** = न सुकरम् (नञ् तत्पु.)
- **असिधाराव्रतम्** = असेः धारा असिधारा (षष्ठी तत्पु.) असिधारा इव व्रतम् (कर्मधारय)
- **क्षुत्क्षामः** = क्षुधया क्षामः क्षुत्क्षामः (तृतीया तत्पु.)
- **जराकृशः** = जरया कृशः जराकृशः (तृतीया तत्पु.)
- **शिथिलप्राणः** = शिथिलाः प्राणाः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **विपन्नदीधितिः** = विपन्ना दीधितिः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवलग्रासैकबद्धस्पृहः** = मत्ताः इभेन्द्राः मत्तेभेन्द्राः (कर्मधारय)
  मत्तेभेन्द्राणां विभिन्नाः (षष्ठी तत्पु.) विभिन्नाः च ते कुम्भाः च विभिन्नकुम्भाः (कर्मधारय) मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भानां कवलम् = मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवलम् (षष्ठी तत्पु.) मत्तेभेन्द्रविभिन्न कुम्भकवलस्य ग्रासः = मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवलग्रासः (षष्ठी तत्पु.)
  मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवलग्रासे एकबद्धस्पृहः = मत्तेभेन्द्रविभिन्न-कुम्भकवलग्रासैकबद्धस्पृहः (सप्तमी तत्पु.)
- **मानमहताम्** = मानेन महान्तः मानमहान्तः (तृतीया तत्पु.) तेषां
- **अग्रेसरः** = अग्रेसरतीति, अग्रेसरः (अलुक् समास)
- **स्वल्पस्नायुवसावशेषमलिनम्** = स्नायु च वसा च स्नायुवसे (द्वन्द्व) स्नायुवसयोः अवशेषः, स्नायुवसावशेषः (षष्ठी तत्पु.) स्वल्पश्च असौ स्नायुवसावशेषश्च स्वल्पस्नायुवसावशेषः (कर्मधारय)
  स्वल्पस्नायुवसावशेषेण मलिनम् (तृतीया तत्पु.)
- **निर्मांसम्** = मांसेन रहितम् (अव्ययपूर्वपद – अव्ययीभाव)
- **क्षुधाशान्तये** = क्षुधायाः शान्तिः क्षुधाशान्तिः (षष्ठी तत्पु.) तस्यै
- **सत्त्वानुरूपम्** = सत्त्वस्य अनुरूपम् (षष्ठी तत्पु.)
- **पिण्डदस्य** = पिण्डं ददाति इति पिण्डदः (नित्य समासः) तस्य
- **लाङ्गूलचालनम्** = लाङ्गूलस्य चालनम् (षष्ठी तत्पु.)
- **चरणावपातम्** = चरणयोः अवपातम् (षष्ठी तत्पु.)
- **वदनोदरदर्शनम्** = वदनं च उदरं च वदनोदरे (द्वन्द्वः) तयोः वदनोदरयोः दर्शनम् (षष्ठी तत्पु.)
- **गजपुङ्गवः** = गजानां पुङ्गवः (षष्ठी तत्पु.) अथवा गजेषु पुङ्गवः (सप्तमी तत्पु.)
- **चाटुशतैः** = चाटूनां शतानि, चाटुशतानि (षष्ठी तत्पु.) तैः
- **कुसुमस्तबकस्य** = कुसुमानां स्तबकः कुसुमस्तबकः (षष्ठी तत्पु.) तस्य
- **सर्वलोकस्य** = सर्वः च असौ लोकः सर्वलोकः (कर्मधारय) तस्य
- **विशेषविक्रमरुचिः** = विशेषे विक्रमे रुचिः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **शीर्षावशेषाकृतिः** = शीर्षम् एव अवशेषः यस्याः, तादृशी आकृतिः यस्य असौ (बहुव्रीहि)
- **दानवपतिः** = दानवानां पतिः (षष्ठी तत्पुरुष)
- **दिवाकरनिशाप्राणेश्वरौ** = दिवाकरः च निशाप्राणेश्वरः च (द्वन्द्वसमास)
- **फणाफलकस्थिताम्** = फणा एव फलकम् फणाफलकम् (कर्मधारय) तेषु स्थिता (सप्तमी तत्पुरुष) ताम्
- **भुवनश्रेणिम्** = भुवनानां श्रेणिः भुवनश्रेणिः (षष्ठी तत्पु.) ताम्
- **कमठपतिना** = कमठानां पतिः (षष्ठी तत्पु.) तेन
- **मध्येपृष्ठम्** = पृष्ठस्य मध्ये (अव्ययीभाव)
- **क्रोडाधीनम्** = क्रोडे अधीनम् (सप्तमी तत्पु.)
- **चरित्रविभूतयः** = चरित्रस्य विभूतयः (षष्ठी तत्पु.)
- **तुषाराद्रेः** = तुषारस्य अद्रिः तुषाराद्रिः (षष्ठी तत्पु.) तस्य
- **उद्गच्छद्वहुलदहनोद्गारगुरुभिः** = वहुलश्चासौ दहनश्च वहुलदहनः (वि. पू. कर्म.) वहुलदहनस्य उदगाराः वहुलदहनोदगाराः (षष्ठी तत्पु.) उद्गच्छन्तः ये वहलदहुनोदगाराः उद्गच्छद्वहल-दहनोद्गाराः (वि. पू. कर्म.)उद्गच्छद्वहलदहनोद्गारैः गुरवः, उद्गच्छद्वहलदहनोद्गारागुरवः (तृतीया तत्पु.) तैः
- **समदमघवन्मुक्तकुलिशप्रहारैः** = मदेन सह वर्तमानः इति समदः (बहुव्रीहि) समदः च असौ मघवा च समदमघवा, (वि. पू. कर्म.) समदमघवन्मुक्तं यत् कुशिलम् समदमघवन्मुक्तकुलिशम् समदमघवन्मुक्तकुलिशस्य प्रहाराः समदमघवन्मुक्तकुलिशप्रहाराः (षष्ठी तत्पु.) तैः।
- **पक्षच्छेदः** = पक्षाणां छेदः (षष्ठी तत्पु.)
- **क्लेश विवशे** = क्लेशेन विवशः क्लेश विवशः (तृतीया तत्पु.) तस्मिन्
- **अचेतनः** = नास्ति चैतन्यं यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **इनकान्तः** = इनस्य कान्तः इनकान्तः (षष्ठी तत्पु.)
- **परकृतनिकृतिम्** = परैः कृता (तृतीया तत्पु.) परकृता निकृतिः च परकृतनिकृतिः, (वि. पू. कर्म.)ताम्
- **मदमलिनकपोलभित्तिषु** = मदेन मलिनाः मदमलिनाः (तृतीया

तत्पु.) मदमलिनाः कपोलाः भित्तयः येषां ते, मदमलिनकपोलभित्तयः (बहुव्रीहि) एषु
- **गुणगणः** = गुणानां गणः (षष्ठी तत्पु.)
- **शैलतटात्** = शैलस्य तटः शैलतटः (षष्ठी तत्पु.) तस्मात्
- **तृणलवः** = तृणस्य लवः (षष्ठी तत्पु.)
- **अविकलानि** = न विकलानि (नञ् तत्पु.)
- **अप्रतिहता** = न प्रतिहता (नञ् तत्पु.)
- **अर्थोष्मणा** = अर्थस्य ऊष्मा अर्थोष्मा (षष्ठी तत्पु.) तेन
- **दौर्मन्त्र्यात्** = दुष्टो मन्त्रः यस्य सः दुर्मन्त्रः (प्रादि बहुव्रीहि) (दुर्मन्त्रस्य भावः दौर्मन्त्र्यम्) तस्मात्
- **खलोपासनात्** = खलानाम् उपासनं खलोपासनम् (षष्ठी तत्पु.) तस्मात्
- **अनध्ययनात्** = न अध्ययनम् अनध्ययनम् (नञ् तत्पु.) तस्मात्
- **अनवेक्षणात्** = न अवेक्षणम् अनवेक्षणम् (नञ् तत्पु.)
- **प्रवासाश्रयात्** = प्रवासस्य आश्रयः प्रवासाश्रयः (षष्ठी तत्पु.) तस्मात्
- **अप्रणयात्** = न प्रणयः अप्रणयः (नञ् तत्पु.) तस्मात्
- **अनयात्** = न नयः अनयः, (नञ् तत्पु.) तस्मात्
- **नृपतिः** = नृणां पतिः (षष्ठी तत्पु.)
- **शाणोल्लीढः** = शाणे उल्लीढः, शाणोल्लीढः (सप्तमी तत्पु.)
- **समरविजयी** = समरे विजयी, समरविजयी (सप्तमी तत्पु.)
- **हेतिदलितः** = हेतिभिः दलितः, हेतिदलितः (तृतीया तत्पु.)
- **मदक्षीणः** = मदेन क्षीणः, मदक्षीणः (तृतीया तत्पु.)
- **श्यानपुलिनाः** = श्यानानि पुलिनानि यासां ताः (बहुव्रीहि)
- **कलाशेषः** = कला एव शेषः, कलाशेषः (कर्म.)
- **सुरतमृदिता** = सुरते मृदिता, सुरतमृदिता (सप्तमी तत्पु.)
- **बालवनिता** = बाला चासौ वनिता (कर्मधारय)
- **गलितविभवाः** = गलितः विभवः येषां ते (बहुव्रीहि)
- **तृणसमाम्** = तृणेन समा, तृणसमा (तृतीया तत्पु.) ताम्
- **अनैकान्त्यम्** = न ऐकान्त्यम्, अनैकान्त्यम् (नञ् तत्पु.)
- **गुरुलघुतया** = गुरुः च लघुः च गुरुलघूः (द्वन्द्व) गुरुलघ्वोः भावः गुरुलघुता, तया
- **क्षितिधेनुम्** = क्षितिः धेनुः इव क्षितिधेनुः (उप. पू. कर्म) ताम्
- **नित्यव्यया** = नित्यं व्ययः यस्याः सा (बहुव्रीहि)
- **प्रचुरनित्यधनागमा** = प्रचुरः नित्यं धनागमः यस्याः सा (बहुव्रीहि)
- **नृपनीतिः** = नृपाणां नीतिः (षष्ठी तत्पु.)
- **अनेकरूपा** = अनेकानि रूपाणि यस्याः सा (बहुव्रीहि)
- **मित्रसंरक्षणम्** = मित्राणां संरक्षणम् (षष्ठी तत्पु.)
- **पार्थिवोपाश्रयः** = पार्थिवानाम् उपाश्रयः (षष्ठी तत्पु.)
- **निजभालपट्टलिखितम्** = निजं भालपट्टं, निजभालपट्टं (वि. पू. कर्म.) निजभालपट्टे लिखितम् (सप्तमी तत्पु.)
- **पयोनिधौ** = पयसां निधिः, पयोनिधिः (षष्ठी तत्पु.) तस्मिन्
- **अम्भोदः** = अम्भः ददाति इति अम्भोदः (नित्यसमास)
- **चातकाधारः** = चातकानाम् आधारः चातकाधारः (षष्ठी तत्पु.)
- **कार्पण्योक्तिम्** = कार्पण्या च सा उक्तिः = कार्पण्योक्तिः (वि. पू. कर्म.) ताम्
- **सावधानमनसा** = सावधानं च मनः, तेन (कर्मधारय समास)
- **अकारणविग्रहः** = अविद्यमानं कारणं यस्य सः अकारणः (बहुव्रीहि) अकारणः असौ विग्रहः (कर्मधारय)
- **परधने** = परेषां धनं तस्मिन् (षष्ठी तत्पु.)
- **सुजनबन्धुजनेषु** = सुजनाश्च बन्धुजनाश्च येषु (द्वन्द्व)
- **असहिष्णुता** = न सहिष्णुता इति (नञ्)
- **भयङ्करः** = भयं करोति इति (द्वितीया तत्पु.)
- **दुर्जनः** = दुष्टः जनः इति (प्रादितत्पुरुषसमास)
- **ह्रीमति** = ह्रीः विद्यते अस्य तस्मिन् (सप्तमी तत्पु.)
- **व्रतरुचौ** = व्रतेषु रुचिः यस्यासौ सः व्रतरुचिः तस्मिन् (बहुव्रीहि)
- **कैतवम्** = कितवस्य भावः (षष्ठी तत्पु.)
- **निर्घृणता** = निर्गता घृणा अस्य भावः (प्रादिबहुव्रीहि)
- **अगुणेन** = न गुणः अगुणः तेन (नञ् तत्पु.)
- **पिशुनता** = पिशुनस्य भावः (षष्ठी तत्पु.)
- **दिवसधूसरः** = दिवसे धूसरः (सप्तमी तत्पु.)
- **गलितयौवनाः** = गलितं यौवनं यस्याः सा (बहुव्रीहि)
- **विगतवारिजम्** = विगतानि वारिजानि यस्मिन् तत् (बहुव्रीहि)
- **स्वाकृते** = सुष्ठु आकृतिः यस्य, तस्य (बहुव्रीहि)
- **चण्डकोपानाम्** = चण्डः कोपः येषां तेषाम् (बहुव्रीहि)
- **प्रवचनपटुः** = प्रवचने पटुः (सप्तमी तत्पु.)
- **अप्रगल्भः** = न प्रगल्भः इति (नञ्तत्पुरुष)
- **अगम्यः** = न गम्यः इति (नञ् तत्पुरुष)
- **सेवाधर्मः** = सेवा एव धर्मः (कर्मधारय)
- **उद्भासिताऽखिलखलस्य** = उद्भासिताः अखिलाः खलाः येन सः तस्य (बहुव्रीहि)
- **प्राग्जातविस्तृतनिजाधमकर्मवृत्तेः** = प्राग्जातेषु विस्तृतेषु निजेषु अधमेषु कर्मसु वृत्तिः यस्य स, तत् (बहुव्रीहि)
- **आरम्भगुर्वी** = आरम्भे गुर्वी इति (सप्तमी तत्पु.)
- **वृद्धिमती** = वृद्धि अस्ति अस्यां इति (सप्तमी तत्पु.)
- **पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना** = पूर्वार्द्धं च परार्द्धं च ताभ्यां, भिन्नाः (द्वन्द्व)
- **लुब्धकधीवरपिशुनाः** = लुब्धकाश्च धीवराश्च पिशुनाश्चेति, ते (द्वन्द्व)

- **तृणजलसन्तोषविहितवृत्तीनाम्** = तृणैः जलैः सन्तोषेण च विहिता वृत्तिः येषां ते, तेषां (बहुव्रीहि)
- **मृगमीनसज्जनानाम्** = मृगाश्च मीनाश्च सज्जनाश्च तेषाम् (द्वन्द्व)
- **सज्जनसङ्गमे** = सज्जनानां सङ्गमे (षष्ठी तत्पु.)
- **परगुणे** = परेषां गुणः, तस्मिन् (षष्ठी तत्पु.)
- **लोकापवादात्** = लोके अपवादः, तस्मात् (षष्ठी तत्पु.)
- **आत्मदमने** = आत्मनः दमने (षष्ठी तत्पु.)
- **संसर्गमुक्तिः** = संसर्गस्य मुक्तिः (षष्ठी तत्पु.)
- **वाक्पटुता** = वाचः पटुता इति (षष्ठी तत्पु.)
- **महात्मनाम्** = महान् आत्मा येषां ते (बहुव्रीहि)
- **खलसज्जनानाम्** =खलाश्च सज्जनाश्च तेषाम् (द्वन्द्व)
- **प्रकृतिसिद्धम्** = प्रकृत्या सिद्धम् इति (तृतीया तत्पु.)
- **सम्भ्रमविधिः** = सम्भ्रमस्य विधिः इति (षष्ठी तत्पु.)
- **अनुत्सेकः** = न उत्सेकः इति (नञ् तत्पु.)
- **परकथाः** = परस्य कथाः इति (षष्ठी तत्पु.)
- **निरभिभवसाराः** = निरभिभवः सारः यासाम् ताः (बहुव्रीहि)
- **प्रकृतिमहताम्** = प्रकृत्या महान्तः, येषाम् (तृतीया तत्पु.)
- **अतुलम्** = न अस्ति तुला यस्य तत् (नञ् तत्पु.)
- **गुरुपादप्रणयिता** = गुरुपादयोः प्रणयिता (सप्तमी तत्पु.)
- **उत्पलकोमलम्** = उत्पलमिव कोमलम् (उपमिति समास)
- **महाशैलशिलासंघातकर्कशम्** = महाश्चासौ शैलः, तस्य शिलानां संघाततत्त्वम् कर्कशम् (उपमितसमास)
- **नलिनीपत्रम्** = नलिन्याः पत्रम् इति (षष्ठी तत्पु.)
- **सागरशुक्तिमध्यपतितम्** = सागरस्य शुक्तिः तस्य मध्ये पतितम् (सप्तमी तत्पु.)
- **अधममध्यमोत्तमगुणाः** = अधमाश्च, मध्यमाश्च उत्तमाश्च ते गुणाः यस्य (बहुव्रीहि)
- **सुचरितैः** = शोभनानि चरितानि, तैः (कर्मधारय)
- **समक्रियम्** = समा क्रिया यस्य तत् (बहुव्रीहि)
- **परगुणकथनैः** = परेषां गुणाः तेषां कथनानि, तैः (षष्ठी तत्पु.)
- **स्वार्थान्** = स्वस्य अर्थाः, तान् (षष्ठी तत्पु.)
- **परार्थे** = परेषां अर्थः, तस्मिन् (षष्ठी तत्पु.)
- **बहुमताः** = बहूनां मताः, इति (षष्ठी तत्पु.)
- **फलोद्गमैः** = फलानां उद्गमाः, तैः (षष्ठी तत्पु.)
- **नवाम्बुभिः** = नवानि अम्बूनिः, तैः (कर्मधारय)
- **दूरविलम्बिनः** = दूरं विलम्बिते तच्छीलाः (उपपदसमास)
- **परोपकारैः** = परेषाम् उपकारः, तैः (षष्ठी तत्पु.)
- **करुणापराणाम्** = करुणानां पराः तेषाम् (षष्ठी तत्पु.)
- **सन्मित्रम्** = सत् च तन्मित्रम् इति (कर्मधारय)
- **आपद्गतम्** = आपदं गतः तम् (कर्मधारय)
- **नाभ्यर्थितः** = न अभ्यर्थितः इति (सुप्सुपा)
- **दिनकरः** = दिनं करोति इति (उपपद तत्पु.)
- **पद्माकरम्** = पद्मानाम् आकरः, तम् (षष्ठी तत्पु.)
- **कैरवचक्रवालम्** = कैरवाणां चक्रवालम् (षष्ठी तत्पु.)
- **परार्थाः** = परेषाम् अर्थाः, तेषां (षष्ठी तत्पु.)
- **सत्पुरुषाः** = सन्तः ते पुरुषाः (कर्मधारय)
- **अविरोधः** = न विरोधः, इति (नञ्, तत्पु.)
- **आत्मगतोदकाय** = आत्मनि गतम् च तद् उदकञ्च, तस्मै (द्वितीया तत्पु.)
- **स्वात्मा** = स्वस्य आत्मा इति (षष्ठी तत्पु.)
- **क्षीरोत्तापम्** = क्षीरस्य उत्तापम्, तम् (षष्ठी तत्पु.)
- **मित्रापदम्** = मित्रस्य आपदम् (षष्ठी तत्पु.)
- **तदीयद्विषः** = तदीयाश्च ते द्विषश्च, तेषाम् (कर्मधारय)
- **शरणार्थिनाम्** = शरणमर्थयन्ते तत् शीलाः तेषाम् (उपपदसमास)
- **शिखरिणाम्** = शिखराणि सन्ति एषां ते, तेषाम् (कर्मधारय)
- **भरसहम्** = भरस्य सहम् इति (षष्ठी तत्पु.)
- **साधुपदवीम्** = साधूनां पदवी, ताम् (षष्ठी तत्पु.)
- **विद्वज्जनम्** = विद्वान् एव जनः (मयूरव्यंसकादिसमास)
- **परगुणपरमाणून्** = परमश्चासौ ते अणवः परमाणवः, परेषां गुणाः परगुणाः (षष्ठी तत्पु.)
- **त्रिभुवनम्** = त्रयाणां भुवनानां समाहारः (द्विगु)
- **उपकारश्रेणिभिः** = उपकारस्य श्रेणयः ताभिः (षष्ठी तत्पु.)
- **हेमगिरिणा** = हेम्नोः गिरिणा (षष्ठी तत्पु.)
- **रजताद्रिणा** = रजतस्य अद्रिणा (षष्ठी तत्पु.)
- **कङ्कोलनिम्बुकुटजाः** = कङ्कोलाश्च निम्बश्च कुटजाश्च, ते (द्वन्द्व)
- **महार्हैः** = महान् अर्हः येषां तानि महार्हाणि, तैः (बहुव्रीहि)
- **भीमविषेण** = भीमं विषं, तेन (कर्मधारय)
- **निश्चयार्थात्** = निश्चितः अर्थः, तस्मात् (कर्मधारय)
- **पृथ्वीशय्यः** = पृथ्वीशय्या यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **पर्यङ्कशयनः** = पर्यङ्के शयनं यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **दिव्याम्बरधरः** = दिव्याम्बरस्य धरतीति (षष्ठी तत्पु.)
- **कार्यार्थी** = कार्यम् अर्थी इति (सुप्सुपा)
- **सुजनः** = शोभनः जनः इति (प्रादिसमास)
- **शौर्यम्** = शूरस्य भावः इति (षष्ठी तत्पु.)

- **वाक्संयमः** = वाचि संयमः इति (षष्ठी तत्पु.)
- **अक्रोधः** = न क्रोधः, इति (नञ् तत्पु.)
- **नीतिनिपुणाः** = नीतौ निपुणाः इति (सप्तमी तत्पु.)
- **भग्नाशस्य** = भग्नाः आशाः यस्य, तस्य (बहुव्रीहि)
- **म्लानेन्द्रियस्य** = म्लानि इन्द्रियाणि यस्य, तस्य (बहुव्रीहि)
- **करण्डपिण्डिततनोः** = करण्डे पिण्डिता तनुः यस्य, तस्य (सप्तमी तत्पु.)
- **तत्पिशितेन** = तस्य पिशितं, तेन (षष्ठी तत्पु.)
- **शरीरस्थम्** = शरीरं तिष्ठति, इति (उपपद समास)
- **उद्यमसमः** = उद्यमेन समः, इति (तृतीया तत्पु.)
- **बृहस्पतिः** = बृहतां वाचां पतिः, इति (षष्ठी तत्पु.)
- **आश्चर्यबलान्वितः** = आश्चर्यं बलम्, तेन अन्वितः (तृतीया तत्पु.)
- **दिवसेश्वरस्य** = दिवसस्य ईश्वरः, तस्य (षष्ठी तत्पु.)
- **अनातपः** = न आतपः यत्र तम् (नञ् तत्पु.)
- **विधिवशात्** = विधेः वशः, तस्मात् (षष्ठी तत्पु.)
- **भाग्यरहितः** = भाग्येन रहितः (तृतीया तत्पु.)
- **शशिदिवाकरयोः** = शशिश्च दिवाकरश्च शशिदिवाकरौ, तयोः (द्वन्द्व)
- **ग्रहपीडनम्** = ग्रहेण पीडनम्, इति (तृतीया तत्पु.)
- **गजभुजङ्गयोः** = गजश्च भुजङ्गश्च तयोः (द्वन्द्व)
- **अशेषगुणाकारम्** = अशेषाणां गुणानां आकारम् (षष्ठी तत्पु.)
- **पुरुषरत्नम्** = पुरुषेषु रत्नम् इति (सप्तमी तत्पु.)
- **तत्क्षणभङ्गि** = तत्क्षणेन भङ्गि इति (तृतीया तत्पु.)
- **करीरविटपे** = करीरस्य विटपे (षष्ठी तत्पु.)
- **चातकमुखे** = चातकस्य मुखे (षष्ठी तत्पु.)
- **ललाटलिखितम्** = ललाटे लिखितम्, इति (सप्तमी तत्पु.)
- **हतविधेः** = हतश्चासौ विधिः तस्य (कर्मधारय)
- **प्रतिनियतकर्मैकफलदः** = प्रति नियतानि कर्माणि, तेषामेव एकं फलं ददातीति (अव्यय)
- **कर्मायत्तम्** = कर्मणः आयत्तम् (षष्ठी तत्पु.)
- **ब्रह्माण्डभाण्डोदरे** = ब्रह्माण्डं एव भाण्डम्, तस्य उदरे (षष्ठी तत्पु.)
- **भिक्षाटनम्** = भिक्षायै अटनम् (चतुर्थी तत्पु.)
- **दशावतारगहने** = दशभिः अवतारैः गहनं, तस्मिन् (तृतीया तत्पु.)
- **यत्नकृता** = यत्नेन कृता (तृतीया तत्पु.)
- **पूर्वतपसा** = पूर्वं तपः, तेन (कर्मधारय)
- **शत्रुजलाग्निमध्ये** = शत्रवश्च जलञ्च अग्निश्च, तेषां मध्ये (द्वन्द्व)
- **महार्णवे** = महान् अर्णवः, तस्मिन् (कर्मधारय)
- **पर्वतमस्तके** = पर्वतानां मस्तके (षष्ठी तत्पु.)
- **प्रत्यक्षम्** = अक्ष्णोः परमिति इति (अव्ययीभाव)
- **सत्क्रियाम्** = सती क्रिया, ताम् (कर्मधारय)
- **गुणवत्** = गुणाः सन्ति अस्मिन् इति (षष्ठी तत्पु.)
- **अगुणवत्** = न गुणवत् इति (नञ् तत्पु.)
- **कार्यजातम्** = कार्याणां जातम् इति (षष्ठी तत्पु.)
- **अतिरभसकृतानाम्** = अतिरभसेन कृतानि तेषां, इति (तृतीया तत्पु.)
- **मन्दभाग्यः** = मन्दं भाग्यं यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **इन्धनौघैः** = इन्धनानाम् ओघाः, इन्धनौघास्तैः (षष्ठी तत्पु.)
- **मेरुशिखरम्** = मेरोः शिखरं येषां ते (षष्ठी तत्पु.)
- **वाणिज्यम्** = वणिजोः भावः कर्म (षष्ठी तत्पु.)
- **कृषिसेवने** = कृषिश्च सेवनं च इति (द्वन्द्व) तस्मिन्
- **सन्निधिरत्नपूर्णा** = निधयश्च रत्नानि च इति निधिरत्नानि (द्वन्द्व) शोभनानि च तानि निधिरत्नानि इति सन्निधिरत्नानि (कर्मधारय) तैः परिपूर्णा (तृतीया तत्पु.)
- **स्वजनताम्** = स्वस्य जनाः तेषां भावः ताम् (प्रादिसमास)
- **गुणसङ्गमः** = गुणिनां सङ्गमः इति (षष्ठी तत्पु.)
- **धर्मतत्त्वे** = धर्मस्य तत्त्वं तस्मिन् (षष्ठी तत्पु.)
- **प्रवासगमनम्** = प्रवासे गमनम् (सप्तमी तत्पु.)
- **धैर्यवृत्तेः** = धैर्येण वृत्तिः तस्य (तृतीया तत्पु.)
- **धैर्यगुणः** = धैर्य एव गुणः (मयूरव्यंसकादिसमास)
- **अधोमुखस्य** = अधः मुखं यस्य तस्य (बहुव्रीहि)
- **कान्ताकटाक्षविशिखाः** = कान्तायाः कटाक्षा एव विशिखाः ते (षष्ठी तत्पु.)
- **लोकत्रयम्** = स्वर्गमर्त्यपातालानां त्रयम् (षष्ठी तत्पु.)
- **भूरिविषयः** = भूरयः विषयाः (कर्मधारय)
- **स्फारस्फुरिततेजसा** = स्फारं यथा स्यात् तथा स्फुरितं तेजो यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **भास्करः** = भाः करोति इति (षष्ठी तत्पु.)
- **पादाक्रान्तम्** = पादैः आक्रान्तम् (तृतीया तत्पु.)
- **अखिललोकवल्लभतमम्** = अखिलानां लोकानां वल्लभतमम् (षष्ठी तत्पु.)
- **जलायते** = जलं इव आचरति इति (कर्मधारय)
- **जलनिधिम्** = जलानां निधिः (षष्ठी तत्पु.) तम्
- **मृगपतिः** = मृगाणाम् पतिः (षष्ठी तत्पु.)
- **लज्जागुणौघजननीम्** = लज्जागुणानां ओघः तस्य जननीं ताम् (षष्ठी तत्पु.)

नीतिशतकम् में अलङ्कार एवं छन्द

(1) दिक्काला .... शान्ताय तेजसे ॥
छन्द = अनुष्टुप् अलङ्कार = स्वभावोक्ति

(2) बोद्धारो .... सुभाषितम् ॥
छन्द = अनुष्टुप् अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(3) अज्ञः सुखम्....................................... न रञ्जयति ॥
छन्द = आर्या अलङ्कार = अतिशयोक्ति

(4) प्रसह्यमणिम्....................................... आराधयेत् ॥
छन्द = पृथ्वी अलङ्कार = अर्थान्तरन्यासः, अतिश्योक्ति

(5) लभेत सिकतासु .... चित्तमाराधयेत् ॥
छन्द = पृथ्वी अलङ्कार = अतिशयोक्ति

(6) व्यालं .... सुधास्यन्दिभिः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित अलङ्कार = निदर्शना

(7) स्वायत्तमेकान्तगुणं .... मौनमपण्डितानाम् ॥
छन्द = उपजाति अलङ्कार = रूपक निदर्शना

(8) यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहं .... मेव्यपगतः ॥
छन्द = शिखरिणी अलङ्कार = उपमा

(9) कृमिकुलचितं .... परिग्रहफल्गुताम् ॥
छन्द = हरिणी अलङ्कार = अर्थान्तरन्यासः

(10) शिरः शार्वं .... शतमुखः ॥
छन्द = शिखरिणी अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(11) शक्यो वारयितुं .... नास्त्यौषधम् ॥
छन्द=शार्दूलविक्रीडितम् अलङ्कार=व्यतिरेक अर्थान्तरन्यास

(12) साहित्यसङ्गीत ....परमं पशूनाम् ॥
छन्द = उपजाति अलङ्कार = रूपकालङ्कार

(13) येषां न विद्या .... मृगाश्चरन्ति ॥
छन्द = उपजाति अलङ्कार = रूपकालङ्कार

(14) वरं पर्वतदुर्गेषु .... सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥
छन्द = अनुष्टुप् अलङ्कार = काव्यलिङ्गम्

(15) शास्त्रोपस्कृतशब्दसुन्दरगिरः .... पातिताः॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित अलङ्कार = विरोधाभास काव्यलिङ्ग

(16) हर्तुर्याति न .... सहस्पर्धते ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित अलङ्कार = व्यतिरेक

(17) अधिगतपरमार्थान् .... वारणानाम्
छन्द = मालिनी अलङ्कार = उपमा, दृष्टान्त

(18) अम्भोजिनीवन .... समर्थः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = अप्रस्तुतप्रशंसा

(19) केयूराणि न भूषयन्ति .... वाग्भूषणं भूषणम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित अलङ्कार = व्यतिरेक

(20) विद्यानामनरस्य .... विद्या विहीनः पशुः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलंकार = अनुप्रास

(21) क्षान्तिश्चेत्कवचेन .... राज्येन किम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = प्रतीय रूपक

(22) दाक्षिण्यं स्वजने .... लोकस्थितिः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(23) जाड्यं धियो .... करोतिपुंसाम् ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = समुच्चय

(24) जयन्ति ते .... जरामरणजं भयम् ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = काव्यलिङ्गम्

(25) सूनुः सच्चरितः .... देहिना ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = अनुप्रास

(26) प्राणाघातान्निवृत्तिः .... श्रेयसामेष पन्थाः ॥
छन्द = स्रग्धरा अलङ्कार = समुच्चय

(27) प्रारभ्यते न खलु .... परित्यजन्ति ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = अनुप्रास

(28) असन्तो .... व्रतमिदम् ॥
छन्द = शिखरिणी, अलङ्कार = रूपकोपमा

(29) क्षुत्क्षामोऽपि .... केसरी ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = अप्रस्तुतप्रशंसा

(30) स्वल्पस्नायु .... सत्वानुरूपं फलम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(31) लाङ्गूलचालनम् .... भुङ्क्ते ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = अन्योक्ति स्वभावोक्ति

(32) परिवर्तिनि संसारे .... समुन्नतिम् ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(33) कुसुमस्तबकस्येव .... वन एव वा ॥
छन्द = अनुष्टुप् अलङ्कार = उपमा

(34) सन्त्यन्येऽपि .... शीर्षावशेषाकृतिः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित अलङ्कार = अप्रस्तुतप्रशंसा

(35) वहति भुवन .... चरित्रविभूतयः ॥
छन्द = हरिणी, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(36) वरं पक्षच्छेदः .... पत्युरुचितः ॥
छन्द = शिखरिणी अलङ्कार = अप्रस्तुत प्रशंसा

(37) यदचेतनोऽपि पादैः .... कथं सहते ॥
छन्द = आर्या अलङ्कार = दृष्टान्त

(38) सिहः शिशुरपि .... वयस्तेजसो हेतुः ॥
छन्द = आर्या, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(39) जातिर्यातु रसातलं .... समस्ता इमे ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्गउपमा

(40) तानीन्द्रियाण्यविकलानि .... विचित्रमेतत् ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(41) यस्यास्ति वित्तं .... काञ्चनमाश्रयन्ति ॥
छन्द = उपजाति अलङ्कार = काव्यलिङ्ग अर्थान्तरन्यास

(42) दौर्मन्त्रयान्नृपतिर्विनश्यति .... प्रमादाद् धनम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग, तुल्ययोगिता

(43) दानं भोगो .... गतिर्भवति ॥
छन्द = आर्या

(44) मणिःशाणोल्लीढः .... चार्थिषु नराः ॥
छन्द = शिखरिणी, अलङ्कार = दीपक

(45) परिक्षीणः .... सङ्कोचयति च ॥
छन्द = शिखरिणी, अलङ्कार = दीपक, काव्यलिङ्ग

(46) राजन्! दुधुक्षसि .... भूमिः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = उपमा

(47) सत्यानृता.. अनेकरूपा ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = उपमा

(48) आज्ञा कीर्तिः .... पार्थिवोपाश्रयेण ॥
छन्द = शालिनी, अलङ्कार = अर्थापत्तिः

(49) यद् धात्रा .... तुल्यं जलम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग, दृष्टान्त

(50) त्वमेव चातकाधारो .... प्रतीक्षसे॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = अर्थापत्ति, अप्रस्तुतप्रशंसा

(51) रे रे चातक .... मा ब्रूहि दीनं वचः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = अप्रस्तुतप्रशंसा

(52) अकरुणत्वम् .... दुरात्मनाम् ॥
छन्द = द्रुतविलम्बित, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(53) दुर्जनः .... भयङ्करः ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = दृष्टान्त

(54) जाड्यं ह्रीमति .... दुर्जनैर्नाङ्कितः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = समुच्चय

(55) लोभश्चेदगुणेन .... किं मृत्युना ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = प्रतीप

(56) शशीदिवसधूसरो .... सप्तशल्यानि मे ॥
छन्द = पृथ्वी, अलङ्कार = दीपक

(57) न कश्चिच्चण्ड .... पावकः ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = दृष्टान्त

(58) मौनान्मूकः .... योगिनामप्यगम्यः ॥
छन्द = मन्दाक्रान्ता, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(59) उद्भासिताऽखिल .... सुखमाप्यते कैः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(60) आरम्भगुर्वी .... खलसज्जनानाम् ॥
छन्द = उपजाति, अलङ्कार = यथासंख्य, उपमा

(61) मृगमीनसज्जनानां .... जगति ॥
छन्द = आर्या, अलङ्कार = यथासंख्य

(62) वाञ्छासज्जन .... नरेभ्यो नमः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(63) विपदि .... महात्मनाम् ॥
छन्द = द्रुतविलम्बित, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(64) प्रदानं प्रच्छन्नं .... धाराव्रतमिदम् ॥
छन्द = शिखरिणी, अलङ्कार = समुच्चय

(65) करे श्लाघ्यस्त्यागः .... मण्डनमिदम् ॥
छन्द = शिखरिणी, अलङ्कार = विभावना

(66) सम्पत्सु महतां .... संघातकर्कशम् ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = उपमा

(67) सन्तप्तायसि .... संसर्गतो जायते॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = समुच्चयः

(68) यः प्रीणयेत् .... लभन्ते ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = समुच्चय

(69) एको देवः .... दरी वा
छन्द = शालिनी, अलङ्कार = अनुप्रास

(70) नम्रत्वेनोन्नमन्तः .... नाभ्यर्चनीयाः ॥
छन्द = स्रग्धरा, अलङ्कार = समुच्चयोदात्त

(71) भवन्ति .... परोपकारिणाम् ॥
छन्द = वंशस्थ, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(72) श्रोत्रं श्रुतेनैव .... चन्दनेन ॥
छन्द = उपजातिः, अलङ्कार = दीपक, परिसंख्या

(73) पापान्निवारयति .... प्रवदन्ति सन्तः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = समुच्चय

(74) पद्माकरं दिनकरो .... कृताभियोगाः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(75) एके सत्पुरुषाः .... न जानीमहे ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(76) क्षीरेणात्मगतोदकाय .... मैत्रीपुनस्त्वीदृशी ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडितम्, अलङ्कार = संकर उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास

(77) इतः स्वपिति .... च सिन्धोर्वपुः ॥
छन्द = पृथ्वी, अलङ्कार = अप्रस्तुतप्रशंसा, अर्थान्तरन्यास

(78) तृष्णां छिन्धि .... दयामेतत्सतां लक्षणम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = दीपकः

(79) मनसि वचसि .... सन्तः कियन्तः ॥
छन्द = मालिनी, अलङ्कार = अर्थापत्ति, अनुप्रास

(80) किं तेन .... चन्दना स्युः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = अनुप्रास, काव्यलिंग

(81) क्वचिद् भूमौ .... न च सुखम् ॥
छन्द = शिखरिणी, अलङ्कार = समुच्चय

(82) रत्नैर्महार्हैः .... धीराः ॥
छन्द = उपजाति, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(83) ऐश्वर्यस्य .... शीलं परं भूषणम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = अनुप्रास, समुच्चयः

(84) निन्दन्तु .... पदं न धीराः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = उदात्त

(85) भग्नाशस्य .... क्षये कारणम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(86) आलस्यं हि .... नावसीदति ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = रूपक

(87) छिन्नोऽपि .... न लोकेषु।
छन्द = आर्यावृत्तम्, अलङ्कार = दृष्टान्त

(88) नेता यस्य .... धिग्धिग्वृथा पौरुषम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यासः, अनुप्रास

(89) कर्मायत्तं फलं .... कुर्वता ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = परिकर

(90) खल्वाटो .... यान्त्यापदः॥
छन्द– शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–अर्थान्तरन्यास

(91) रविनिशाकर .... बलवानिति मे मतिः॥
छन्द–द्रुतविलम्बित अलङ्कार–अर्थान्तरन्यास, काव्यलिङ्ग

(92) सृजति .... पण्डितता विधेः॥
छन्द–द्रुतविलम्बित, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(93) पत्रंनैव...कः क्षमः॥
छन्द–शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–अर्थान्तरन्यास

(94) नमस्यामो .... प्रभवति॥
छन्द–शिखरिणी अलङ्कार–मालादीपक

(95) ब्रह्मा येन...नमः कर्मणे
छन्द–शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–रूपक, उपमा

(96) नैवाऽऽकृतिः...................................यथैव वृक्षाः॥
छन्द–वसन्ततिलका, अलङ्कार–दीपक एवं उपमा

(97) वने रणे................................पुण्यानि पुराकृतानि ॥
छन्द–उपजाति, अलङ्कार–दीपकः

(98) या साधूंश्च.................................वृथा मा कृथाः ॥
छन्द–शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(99) गुणवदगुणवद्वा.......................................विपाकः॥
छन्द–मालिनी, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(100) स्थाल्यां...मन्दभाग्यः॥
छन्द स्रग्धरा, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(101) मज्जत्वम्भसि..............................नाशः कुतः॥
छन्द–शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–अनुप्रास, यमक, दीपक

(102) भीमं वनं .... विपुलं नरस्य॥
छन्द–वसन्ततिलका, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(103) को लाभो..................................किमाज्ञाफलम्॥
छन्द–शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–परिसंख्या

(104) अप्रियवचनदरिद्रैः..................................वसुधा॥
छन्द–आर्या, अलङ्कार–अनुप्रासः

(105) कदर्थितस्यापि.......................याति कदाचिदेव॥
छन्द–उपजाति, अलङ्कार–दृष्टान्त

(106) कान्ताकटाक्षविशिखा .... कृत्स्नमिदं स धीरः॥
छन्द–वसन्ततिलका, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(107) एकेनापि हि...........................स्फारस्फुरित तेजसा॥
छन्द–अनुष्टुप्, अलङ्कार–उपमा

(108) वह्निस्तस्य जलायते .... शीलं समुन्मीलति।
छन्द–शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(109) लज्जा गुणौघजननी .... न पुनः प्रतिज्ञाम्॥
छन्द–वसन्ततिलका, अलङ्कार–उपमा

किरातार्जुनीयम् में क्रियापद

लट्लकार

- **इच्छन्ति** = √इष् (इच्छायाम्) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **अर्हसि** = √अर्ह् (पूजायाम्) + लट् + म. पु. एक. (परस्मै0)
- **शास्ति** = √शास् (शिक्षा देना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **संशृणुते** = सम् + √श्रु + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **कुर्वते** = √कृ (करना) + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने0)
- **समीहते** = सम् + √ईह् (चेष्टा करना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **तनोति** = √तन् (विस्तार करना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **वितन्यते** = वि + √तन् (विस्तार करना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मनेपदी) यहाँ कर्मणि 'त' प्रत्यय हुआ है।
- **दर्शयते** = √दृश् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **बाधते** = √बाध् (पीड़ा देना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **प्रवर्तते** = प्र + √वृत् (होना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **निहन्ति** = नि + √हन् (मारना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **उपैति** = उप + √इण् (जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **वदन्ति** = √वद् (बोलना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **फलन्ति** = √फल् (फलना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **नयति** = √नी (ले जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **चकासति** = √चकासृ + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)

नोट – यहाँ अदादिगण पठित ''चकासृ'' (दीप्तौ) शोभार्थक धातु से लट्लकार प्र. पु. बहु. में प्राप्त झि प्रत्यय को **''जक्षित्यादयः षट्''** सूत्र से 'चकासृ' के अभ्यस्त होने के कारण **''अति''** आदेश होकर **''चकासति''** रूप निष्पन्न होता है।

लट्लकार में इसका रूप इस प्रकार चलेगा–

चकास्ति	**चकास्तः**	**चकासति**
चकास्सि	**चकास्थः**	**चकास्थ**
चकास्मि	**चकास्वः**	**चकास्मः**

- **प्रदुग्धे** = प्र + √दुह् (दुहना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **वाञ्छन्ति** = √वाञ्छ् (चाहना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **प्रतीयते** = प्रति + √इण् (जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **वेद** = √विद् (जानना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

विशेष – अदादिगण की **''विद् ज्ञाने''** धातु से लट्लकार में **''विदो लटो वा''** (3.4.83) सूत्र से, णलादि (णल्, अतुस्, उस्) आदेश होकर **''वेद, विदतुः, विदुः रूप** निष्पन्न होता है, एवं पक्ष में, **'वेत्ति, वित्तः, विदन्ति'** इत्यादि। (णलादि आदेश विकल्प से होते हैं)

- **उह्यते** = √वह् (ढोना) + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **धिनोति** = √धिवि + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **चिन्तयति** = √चिन्त् (सोचना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **व्यथते** = √व्यथ् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **भवति** = √भू (होना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **व्यवसाययन्ति** = वि + अव + √षो + लट् प्र. पु. बहु0 (परस्मै0)
- **व्रजन्ति** = √व्रज् (जाना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **भवन्ति** = √भू (होना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **घ्नन्ति** = √हन् (मारना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **ज्वलयति** = √ज्वल् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **दुनोति** = √दु (पीड़ा) लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **करोति** = √कृ (करना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **उत्सहसे** = उद् + √सह् + लट् + म. पु. एक. (आत्मने0)
- **रुजन्ति** = √रुज् (हिंसा) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **विबोध्यसे** = वि + √बुध् + णिच् म. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **जहासि** = √ओहाक् (हा) + लट् + म. पु. एक. (परस्मै0)
- **परैति** = परा + √इण् (जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **निषीदतः** = नि + √सद् + लट् + प्र. पु. द्विव. (परस्मै0)
- **उन्मूलयति** = उद् + √मूल् + णिच् + लट् प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **अधिकुर्वते** = अधि + √कृ + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने0)
- **पर्येषि** = परि + √इण् (जाना) + लट् + म. पु. एकवचन

लङ्लकार

- **अयुङ्क्त** = √युज् + लङ् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **अरञ्जयत्** = √रञ्ज् + णिच् + लङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **अयच्छत्** = √दाण् (यच्छ, आदेश) + लङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

लिट्लकार

- **समाययौ** = सम् + आङ् + √या + लिट् प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **विव्यथे** = √व्यथ् (दुःखित होना) + लिट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **आददे** = आङ् + √दा (देना) + लिट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **आचचक्षे** = आङ् + √चक्ष् + लिट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)

लोट्लकार

- **विधीयताम्** = वि + √धा + लोट् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **सन्धेहि** = सम् + √धा + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै0)
- **प्रसीद** = प्र + √सद् + (बैठना) लोट् + म. पु. एक. (परस्मै0)
- **समभ्येतु** = सम् + अभि + √इण् + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

लुङ् लकार

अवेदि = √विद् (ज्ञानार्थक) + लुङ् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)

विधिलिङ्

अपहारयेत् = अप + √हृ + णिच् + विधिलिङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

किरातार्जुनीयम् में प्रत्यय

क्विप्-प्रत्यय

- **श्रियः** = श्रयति पुरुषम् अर्थ में श्री + क्विप् = श्री, ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र से 'श्री' शब्द में कर्म अर्थ में षष्ठी एक.
- **महीभुजे** = महीं भुनक्ति अर्थ में मही + भुज् + क्विप् = (चतुर्थी एक.)
- **द्विषाम्** = द्विषन्ति इस अर्थ में √द्विष् + क्विप् ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर बहुवचन में 'द्विषाम्' निष्पन्न हुआ।
- **भूभृतः** = भुवं बिभर्ति अर्थ में भू + √भृ + क्विप् (षष्ठी एक.)
- **सम्पदः** = सम् + √पद् + क्विप्, (प्रथमा बहु.)
- **विद्विषाम्** = द्वेष्टि अर्थ में वि + √द्विष् + क्विप्, (षष्ठी बहु.)
- **प्रीतियुजः** = प्रीत्या युज्यन्ते अर्थ में प्रीति + √युज् + क्विप् = प्रीतियुज् (द्वितीया बहु.)
- **धनुर्भृतः** = धनु + √भृ + क्विप् (प्रथमा बहु.)
- **संयति** = सम् + √यम् + क्विप् = संयत् (सप्तमी एक.)
- **महीभृताम्** = मही + √भृ + क्विप् (षष्ठी बहु.)
- **भियः** = √भी + क्विप् = प्रथमा बहु.
- **मादृशः** = अस्मद् + √दृश् + क्विन्
- **मदच्युता** = मद + √च्यु + क्विप् (तृतीया एक.)
- **आपदाम्** = आङ् + √पद् + क्विप् (षष्ठी बहु.)
- **विद्विषा** = वि + √द्विष् + क्विप् (तृतीया एक.)
- **धियम्** = √ध्यै + क्विप् (द्वितीया एक.)
- **आपदम्** = आङ् + √पद् + क्विप् (द्वितीया एक0)
- **दिनकृतम्** = दिनं करोति अर्थ में, दिन + √कृ + क्विप् (द्वितीया एक.)

क–प्रत्यय

- **अधिपस्य** = ''अधि पाति रक्षति'' इस अर्थ में अधि + √पा + क = अधिप, षष्ठी एकवचन
- **नृपासनस्थः** = नृपस्य आसनं नृपासनं सिंहासनम्, तस्मिन् स्थितः अर्थ में नृप + आसन + √स्था + क
- **कृतज्ञताम्** = कृत + √ज्ञा + क = कृतज्ञ + तल् + टाप् द्वितीया, एकवचन
- **सङ्कुलम्** = सम् + कुल + क
- **भवादृशः** = भवत् + √दृश् + कञ्

युच् प्रत्यय

- **सुयोधनः** = सु + √युध् + युच् (अन)
- **दुःशासनम्** = दुर् + √शास् + युच् (अन) दुःशासन (द्वितीया एक.)

ल्युट्-प्रत्यय

- **पालनीम्** = पाल् + ल्युट् + ङीप्, द्वितीया एक.
- **दानम्** = दा + ल्युट् (अन)
- **कारणः** = √कृ + णिच् + ल्युट् (अन)
- **आस्थानम्** = आङ् + √स्था + ल्युट् (अन)
- **निकेतनम्** = नि + √कित् + ल्युट् (अन)
- **उपायनम्** = उप + √इण् + ल्युट् (अन)
- **उपमानम्** = उप + √मा + ल्युट् (अन)
- **आननम्** = आङ् + √अन् + ल्युट् (अन)
- **शासनम्** = √शास् + ल्युट् (अन)
- **अभिधानम्** = अभि + √धा + ल्युट् (अन)
- **सदनम्** = √सद् + ल्युट् (अन)
- **अनुशासनम्** = अनु + √शास् + ल्युट् (अन)
- **साधनम्** = √साध् + ल्युट्
- **चन्दनम्** = √चन्द् + ल्युट् (अन)
- **शयनम्** = √शीङ् + ल्युट् (अन), द्वितीया एक.
- **परिरक्षणम्** = परि + √रक्ष् + ल्युट् (अन)
- **दूषणम्** = √दुष् + णिच् + ल्युट् (अन)

टाप् – प्रत्यय

- **लब्धा** = √लभ् + क्त + टाप्
- **विरोधिता** = विरोधिन् + तल् + टाप्
- **सत्क्रिया** = सत् + √कृ + श + (रिङ् आदेश) + टाप्
- **कृष्णा** = √कृष् + नक् + अच् + टाप्
- **ततस्त्याः** = तद् + तसिल् = ततस्, ''अव्ययात्त्यप्'' सूत्र से त्यप् प्रत्यय, ततस् + त्यप् + टाप् = ततस्त्या, (द्वितीया बहु.)
- **क्षमा** = क्षम् + अङ् + टाप्
- **आत्मजा** = आत्मन् + √जन् + ड + टाप्
- **प्रमदा** = प्र + √मद् + अच् + टाप्
- **अपवर्जिता** = अप + √वृज् + णिच् + क्त + टाप्
- **अनुरक्ता** = अनु + √रञ्ज् + क्त + टाप्
- **कुलजा** = कुल + √जन् + ड + टाप्
- **मनोरमा** = मनस् + √रम् + अच् + टाप्
- **कठिनीकृता** = कठिन + च्वि + कृता। कृ + क्त + टाप् = कृता
- **शय्या** = √शीङ् + क्यप् + टाप्
- **हता** = √हन् + क्त + टाप्
- **स्पृहा** = स्पृह् + अङ् + टाप्
- **मनस्विता** = मनस्विन् + तल् + टाप्
- **प्रजासु** = प्र + √जन् + ड + टाप् (सप्तमी बहु.)
- **जिताम्** = √जि + क्त + टाप् (द्वितीया एक.)
- **अनुज्ञाम्** = अनु + √ज्ञा + अङ् + टाप् (द्वितीया. एक.)
- **जिगीषया** = √जि + सन् + अ + टाप् (तृतीया एक.)

- **उपस्नुता** = उप + √स्नु + क्त + टाप्
- **अगम्यरूपाम्** = अगम्य + √रूपप् + टाप् (द्वितीया एक.)
- **आर्द्रता** = आर्द्र + तल् + टाप्।
- **बन्धुताम्** = बन्धु + तल् + टाप् (द्वितीया एक.)
- **सत्क्रिया** = सत् + √कृ + श + रिङ् + इयङ् + टाप्
- **प्रशान्ताः** = प्र + √शम् + क्त + टाप् (द्वितीया बहु0)
- **अभिरक्षया** = अभि + √रक्ष् + अ + टाप् (तृतीया एक.)

क्तिन् – प्रत्यय

- **वृत्तिम्** = √वृत् + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **रतिम्** = √रम् + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **भूतिम्** = √भू + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **भक्तिम्** = √भज् + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **आयतिः** = आङ् + √यम् + क्तिन्
- **कीर्तिम्** = √कृ + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **प्रवृत्तिः** = प्र + √वृत् + क्तिन्
- **सिद्धिम्** = √सिध् + क्तिन्
- **आकृतिः** = आङ् + √कृ + क्तिन्
- **धृतिः** = √धृ + क्तिन्
- **स्तुतिः** = √स्तु + क्तिन्
- **शान्तिः** = √शम् + क्तिन्
- **गीतिः** = √गै + क्तिन्
- **निकृतिः** = नि + √कृ + क्तिन्
- **क्षितिः** = √क्षि + क्तिन्
- **दीप्तिः** = √दीप् + क्तिन्
- **द्विजातिः** = द्वि + √जन् + क्तिन्

तुमुन्-प्रत्यय

- **वेदितुम्** = √विद् + तुमुन्
- **प्रवक्तुम्** = प्र + √वच् + तुमुन्
- **विधातुम्** = वि + √धा + तुमुन्
- **जेतुम्** = √जि + तुमुन्
- **समीहितुम्** = सम् + √ईह् + तुमुन्
- **कर्तुम्** = √कृ + तुमुन्
- **विनियन्तुम्** = वि + नि + √यम् + तुमुन्
- **बाधितुम्** = √बाध् + तुमुन्

सर्वनाम–रूप

- **यम्** = 'यत्' सर्वनाम से पुंलिङ्ग में द्वितीया एक.
- **तत्र** = तद् सर्वनाम शब्द से सप्तमी के अर्थ में त्रल् प्रत्यय तद् + त्रल् = तत्र
- **ततः** = तद् सर्वनाम शब्द से, पञ्चमी के अर्थ में तसिल् प्रत्यय तद् + तसिल्

इनि-प्रत्यय

- **वर्णिलिङ्गी** = 'वर्णः प्रशस्तः अस्य' अस्ति इस अर्थ में वर्ण + इनि = वर्णिन् । वर्णिनः लिङ्गं चिह्नम् अस्य अस्ति सः वर्णिन् + लिङ्ग + इनि = वर्णिलिङ्गी
- **दन्तिन्** = √दन्त् + इनि
- **वशी** = वश् + इनि = वशिन् (प्रथमा एक.)
- **देहिनः** = देहि + इनि = देहिन् (प्रथमा बहु.)

क्त-प्रत्यय

- **विदितः** = √विद् + क्त (भावे नपुंसके) = विदितम् (वेदनम्) अस्य अस्ति इति विदितः, अर्शादिगण में आने वाले शब्दों के समान होने के कारण 'विदितम्' शब्द से 'अर्शादिभ्योऽच्' से मत्वर्थीय 'अच्' प्रत्यय होकर विदितः शब्द निष्पन्न हुआ।
- **रुतः** = रु + क्त
- **कृतः** = √कृ + क्त
- **निश्चित** = √निस् + चि + क्त
- **युक्तैः** = √युज् + क्त (तृतीया बहु.)
- **हितम्** = √धा + क्त। (नपुंसक लिङ्ग भावे क्त प्रत्यय)
- **उपनीतम्** = उप + √नी + क्त
- **चरितम्** = √चर् + क्त
- **निगूढः** = नि + √गुह् + क्त
- **अस्तम्** = √अस् + क्त
- **सन्ततम्** = सम् + √तन् + क्त
- **सक्तः** = √सञ्ज् + क्त
- **वर्जितम्** = √वृज् + क्त
- **उपदिष्टम्** = उप + √दिश् + क्त
- **निवृत्तम्** = नि + √वृत् + क्त
- **अनारतम्** = नञ् + आङ् + √रम् + क्त
- **लम्भिताः** = √लभ् + णिच् + क्त (प्रथमा बहु.)
- **परिबृंहितः** = परि + √बृह् + णिच् + क्त
- **कृष्टः** = √कृष् + क्त
- **अर्चितः** = √अर्च् + णिच् + क्त, अथवा अर्चा अस्य अस्ति अर्थ में अर्चा + इतच्
- **संहताः** = सम् + √हन् + क्त
- **भिन्नः** = √भिद् + क्त
- **रूषितः** = √रुष् + क्त
- **आलूनः** = आ + √लू + क्त

- **सच्चरितैः** = सत् + √चर् + क्त (तृतीया बहु.)
- **शेषितः** = शेष + णिच् + क्त
- **ईहितम्** = √ईह् + क्त
- **उद्यतम्** = उद् + √यम् + क्त (द्वितीया एक.)
- **उद्धतम्** = उद् + √हन् + क्त
- **इद्धम्** = √इन्ध् + क्त ।
- **खिन्नः** = √खिद् + क्त ।
- **अनुमतः** = अनु + √मन् + क्त
- **अनुस्मृतः** = अनु + √स्मृ + क्त
- **आत्तः** = आङ् + √दा + क्त
- **गते** = √गम् + क्त (सप्तमी एक.)
- **उदितः** = √वद् + क्त
- **निरस्तः** = निर् + √अस् + क्त
- **मूढः** = √मुह् + क्त
- **संवृतः** = सम् + √वृ + क्त
- **निशिताः** = नि + √शो + क्त (प्रथमा बहु.)
- **उदीरितः** = उद् + √ईर् + णिच् + क्त
- **शुष्कम्** = √शुष् + क्त (''शुषः कः'' सूत्र से 'क्त' को 'क' आदेश) (द्वितीया एक0)
- **जातः** = √जन् + क्त
- **आचितम्** = आङ् + √चि + क्त
- **अधिरूढः** = अधि + √रुह् + क्त
- **मग्नम्** = √मस्ज् + क्त

घञ् प्रत्यय

- **प्रणामः** = प्र + √नम् + घञ्
- **सारः** = √सृ + घञ्
- **विघाताय** = वि + √हन् + घञ् = विघात यहाँ ''भाववचनाच्च'' सूत्र द्वारा 'घञ्' प्रत्यय लगकर बने विघातः पद में ''तुमर्थाच्च भाववचनात्'' सूत्र से चतुर्थी वि. एक. ''विघाताय'' निष्पन्न हुआ।
- **निसर्गः** = नि + √सृज् + घञ्
- **बोधः** = √बुध + घञ् (प्रथमा एक.)
- **शेषः** = √शिष् + घञ्
- **अनुभावः** = अनुभूयते अर्थ में अनु + √भू + घञ्
- **अनुबन्धः** = अनु + √बन्ध् + घञ्
- **मानः** = √मन् + घञ्
- **गुणानुरागात्** = गुण + अनु + √रञ्ज् + घञ् (पञ्चमी एक.)
- **अनुरोधः** = अनु + √रुध् + घञ्
- **आकारः** = आङ् + √कृ + घञ्
- **अपवर्गः** = अप + √वृज् + घञ्
- **विनियोगः** = वि + नि + √युज् + घञ्
- **उपायाः** = उप + √अय् + घञ् (प्रथमा बहु.)
- **संघर्षः** = सम् + √घृष् + घञ्
- **उदारः** = उत् + √ऋ + घञ्
- **कोपः** = √कुप् + घञ्
- **प्रसङ्गः** = प्र + √सञ्ज् + घञ्
- **अधिक्षेपः** = अधि + √क्षिप् + घञ्
- **अभिमानः** = अभि + √मन् + घञ्
- **मर्षः** = √मृष् + घञ्
- **निकारम्** = नि + √कृ + घञ् (द्वितीया, एक.)
- **नियोगः** = नि + √युज् + घञ्
- **संहारः** = सम् + √हृ + घञ्
- **गाधः** = √गाध् + घञ्

शतृ-प्रत्यय

- **निवेदयिष्यतः** = नि + √विद् + णिच् + शतृ लृट् लकार के अर्थ में = निवेदयिष्यन् (षष्ठी एक.)
- **इच्छतः** = √इष् + शतृ (षष्ठी एक.)
- **भवतः** = √भू + शतृ (पञ्चमी एक.)
- **समुन्नयन्** = सम् + उत् + √नी + शतृ (प्रथमा एक.)
- **आराधयतः** = आङ् + √राध् + शतृ (षष्ठी एक.)
- **दधतः** = √धा + शतृ (प्रथमा बहु.)
- **वाञ्छन्** = वाञ्छ् + शतृ (प्रथमा एक.)
- **वितन्वति** = वि + √तन् + शतृ (सप्तमी एक.)
- **प्रशासत्** = प्र + √शास् + शतृ
- **चिन्वताम्** = √चि + शतृ (षष्ठी बहु.)
- **परिभ्रमन्** = परि + √भ्रम् + शतृ (प्रथमा एक.)
- **आहरन्** = आङ् + √हृ + शतृ (प्रथमा एक.)
- **विलोकयन्** = वि + √लोक् + शतृ
- **द्विषत्** = √द्विष् + शतृ

णिनि प्रत्यय

- **हितैषिणः** = हितम् इच्छन्ति इस अर्थ में हित + √इष् + णिनि "सुप्यजातौ णिनिः ताच्छील्ये" सूत्र से 'णिनि' प्रत्यय लगकर प्रथमा बहु. में "हितैषिणः" बनता है।
- **अनुजीविभिः** = अनु जीवितुं शीलं येषां ते अर्थ में अनु + जीव् + णिनि। तृतीया बहुवचन।
- **मनोहारि** = मनः हर्तुं शीलं यस्य तत् अर्थ में, मनस् + √हृ + णिनि, नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा एकवचन
- **वनाधिवासिनः** = 'वनम् अधिवसति इति तस्मात्' अर्थ में वन + अधि + √वस् + णिनि, पञ्चमी एकवचन
- **विरोधिनः** = वि + √रुध् + णिनि (प्रथमा, बहु.)
- **वनसन्निवासिनाम्** = वन + सम् + नि + √वस् + णिनि (षष्ठी बहु.)
- **वन्यफलाशिनः** = वन्यफल + √अश् + णिनि (षष्ठी एक.)
- **मणिपीठशायिनौ** = मणिपीठ + √शी + णिनि (द्वितीया, द्वि०)

ल्यप्-प्रत्यय

- **अधिगम्य** = अधि + √गम् + ल्यप्
- **विभज्य** = वि + √भज् + ल्यप्
- **विरहय्य** = वि + √रह् + णिच् + ल्यप्
- **विधाय** = वि + √धा + ल्यप्
- **उपेत्य** = उप + √इण् + ल्यप्
- **निधाय** = नि + √धा + ल्यप्
- **प्रविश्य** = प्र + √विश् + ल्यप्
- **निशम्य** = नि + √शम् + ल्यप्
- **विजित्य** = वि + √जि + ल्यप्
- **अधिशय्य** = अधि + √शी + ल्यप्
- **विहाय** = वि + √हा + ल्यप्
- **अवधूय** = अव + √धू + ल्यप्
- **प्राप्य** = प्र + √आप् + ल्यप्
- **उदस्य** = उत् + √अस् + ल्यप्
- **ईरयित्वा** = √ईर् + णिच् + क्त्वा

ङीप्-प्रत्यय

- **सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्** = सौष्ठव + औदार्य + विशेष + शाल् + णिनि + ङीप् (द्वितीया एकवचन)
- **मानवीम्** = मनु + अण् + ङीप् (द्वितीया एक.)
- **विशेषशालिनी** = विशेष + √शाल् + णिनि + ङीप्
- **त्वदेष्यतीः** = √इण् (जाना) धातु से भविष्यत् काल में शतृ प्रत्यय होकर, इ + स्य + शतृ + ङीप् = एष्यतीः (द्वितीया, बहु.)
- **दीपिनी** = √दीप् + णिनि + ङीप् + (द्वितीया बहु०)
- **तावकीम्** = तव इयम् अर्थ में, युष्मद् + अण् + ङीप् युष्मद् शब्द को तवक आदेश होता है।
- **विचिन्तयन्ती** = वि + √चिन्त् + शतृ + ङीप्
- **स्थलीम्** = √स्थल् + अच् + ङीप् (द्वितीया एक.)

अण्

- **सौष्ठव** = सुष्ठु + अण्
- **कुरूणाम्** = कुरूणां निवासाः जनपदाः कुरवः। कुरु जाति के निवास स्थान जनपद कुरु कहलाते हैं, यहाँ जनपद अर्थ में "तस्य निवासः" सूत्र से अण् प्रत्यय होकर "जनपदे लुप्" सूत्र से उसका लोप हो जाता है। जनपद वाची शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। अतः षष्ठी बहुवचन में 'कुरूणाम्"
- **समान** = सम् + अन् + अण्
- **चिराय** = चिर् + अय् + अण्
- **यौवन** = युवन् + अण्
- **हार्दः** = हृदय + अण् (हृदय को हृद आदेश होकर) = हार्द
- **मानसः** = मनस् + अण्

ष्यञ्

- **औदार्यम्** = उदार + ष्यञ्
- **माल्यम्** = माला + ष्यञ्
- **यौवराज्ये** = युवराज + ष्यञ् = यौवराज्य, (सप्तमी एक.)

ण्यत्

- **आर्य** = √ऋ + ण्यत्
- **प्राज्यम्** = प्र + √अज् + ण्यत्

अनीयर् प्रत्यय

- **वञ्चनीयाः** = √वञ्च् + अनीयर् (प्रथमा बहु.)
- **रामणीयकम्** = √रम् + अनीयर्
'रमणीयस्य भावः' अर्थ में, रमणीय + वुञ् (अक) रामणीयकम्

अन्य प्रत्यय

- **अतः** = एतस्माद् अर्थ में एतत् + तसिल्
- **दुर्लभम्** = दुर् + √लभ् + खल्
- **साधु** = साध् + उण्
- **अमात्येषु** = अमा बुद्धिः तया सह वसनि अर्थ में अमा + त्यप् = अमात्य (सप्तमी बहु.)
- **दुर्बोधम्** = दुर् + √बुध् + खल् (कर्मणि)
- **विक्लवः** = वि + √क्लु + अच्
- **नयः** = नी + अच्
- **विशङ्कमानः** = वि + शङ्क + शानच्
- **पराभवम्** = परा + √भू + अप् (द्वितीया, एक.)
- **सङ्गमः** = सम + गम् + अप्
- **जयः** = √जि + अच्
- **सुखम्** = सुख + अच्
- **पदवीम्** = पद + √अवि + ङीष् = पदवी (द्वितीया एक.)
- **प्रपित्सुना** = प्र + √पद् + सन् + उ = प्रपित्सुः (तृतीया एक.)
- **तन्द्रिः** = तन्द् + क्रिन्
- **सखीन्** = सह समानं ख्यायते अर्थ में सह + ख्या + डिन् = सखि (द्वितीया बहुवचन)
- **बन्धुभिः** = बन्ध् + उ = बन्धु (तृतीया बहु.)
- **स्मयः** = स्मि + अच्
- **सख्यम्** = 'सख्युर्भावः' अर्थ में 'सख्युर्यः'' सूत्र से 'य' प्रत्यय होकर सखि + य
- **ईयिवान्** = √इण् धातु से लिट्लकार में 'क्वसु' प्रत्यय होकर निपातन से ईयिवान् रूप बना।
- **निरत्ययम्** = निर् + अति + इ + अच् (द्वितीया एक.)
- **वसूनि** = √वस् + उ (प्रथमा बहु.)
- **मन्युना** = मन् + युच् (तृतीया एक.)
- **गुरु** = गृ + कु, उत्वम्
- **दण्डः** = दण्ड् + अच्
- **विप्लवः** = वि + प्लु + अप्
- **रक्षान्** = √रक्ष् + अच् (द्वितीया बहु.)
- **परितः** = परि + तस्
- **शङ्कितः** = शङ्का + इतच्
- **राजन्य** = राजन् + यत्
- **अश्वः** = अश्व + क्वन्
- **रथः** = √रम् + क्यन्
- **तदीया** = तद् + छ (ईय)
- **वचांसि** = वचस् शब्द नपुंसकलिङ्ग (द्वितीया बहु.)
- **अजिर** = √अज् + किरन्
- **मदः** = मद + अप्
- **लभ्यः** = √लभ् + यत्
- **कृषीवलैः** = कृषि + वलच् (तृतीया, बहु0)
- **सस्य** = √सस् + क्यप्
- **उदयम्** = उत् + √इ + अच् (द्वितीया, एक0)
- **दयावतः** = दया + मतुप् (षष्ठी एक.)
- **प्रतीय** = प्रति + √इण् + यक्
- **धातुः** = √धा + तृच् (षष्ठी एक.)
- **नरः** = √नृ + अच् ।
- **मखेषु** = मख + घ (सप्तमी बहु.)
- **पुरोधसा** = पुरस् + √धा + असि (तृतीया एक.)
- **भूपालः** = भू + √पाल् + अच्
- **स्थिरः** = √स्था + किरच्
- **आयतिः** = आङ् + √या + इति
- **बलवद्** = बल + मतुप्
- **आखण्डलः** = आङ् + खण्ड् + डलच्
- **सूनुः** = सू + नुक्
- **विक्रमः** = वि + √क्रम + अच्
- **उरगः** = उरस् + √गम् + ड
- **जिह्मः** = 'हा' धातु + मन, औणादिक मन् प्रत्यय का लोप तथा ''ह्'' को जिह् आदेश होकर प्रथमा एक. में जिह्मः पद निष्पन्न होता है।
- **विधेयम्** = वि + √धा + यत्।
- **उत्तरम्** = उद् + √तृ + अप्
- **अनुजः** = अनु + √जन् + ड
- **सन्निधिः** = सम् + नि + √धा + कि
- **वचः** = √वच् + असुन्
- **तथा** = तद् + थाल्
- **नारी** = √नृ + अच् = नर + ङीन्
- **दुराधयः** = √दुर् + आङ् + धा + कि (प्रथमा बहु.)
- **तुल्यम्** = तुला + यत्
- **धामन्** = √धा + मनिन्
- **स्ववंशजः** = स्ववंश + √जन + ड
- **मही** = मह् + अच् + ङीष्
- **मतङ्गजः** = मतङ्ग + √जन + ड
- **मानिनाम्** =मान + इनि (षष्ठी बहु0)

- **स्त्रक्** = √सृज् + क्विन्
- **पराभवम्** = परा + √भू + अप्
- **मायाविषु** = माया + विनि ''अस्मायामेधास्रजो विनिः'' (5.2.121) सूत्र से विनि प्रत्यय = मायाविन्, (सप्तमी बहु.)
- **मायिनः** = माया + इनि ''माया'' शब्द से ''व्रीह्यादिभ्यश्च'' सूत्र से मत्वर्थीय 'इनि' प्रत्यय (प्रथमा बहु.)
- **इषवः** = √इष् + उ = इषु (प्रथमा बहु.)
- **एतर्हि** = 'अस्मिन् काले' अर्थ में इदम् शब्द से ''इदमोर्हिल्'' (5.3.16) सूत्र से र्हिल् प्रत्यय होकर इदम् + र्हिल् = यहाँ इदम् शब्द को एत आदेश होता है।
- **भवन्तम्** = √भा + डवतु = भवत् (द्वितीया एक.)
- **गर्हितः** = √गर्ह + क्त
- **विवर्तमानम्** = वि + वृत् + शानच्
- **वर्त्मनि** = वृत् + मनिन् = वर्त्मन्, (सप्तमी एक.)
- **मन्युः** = मन् + युच्
- **अग्निः** = अङ्ग + नि
- **बन्ध्यः** = बन्ध् + ण्यत्
- **विहन्तुः** = वि + √हन् + तृच् षष्ठी एक.
- **वश्याः** = वश् + यत्, प्रथमा बहु.
- **शून्यम्** = शूना + यत्
- **आदरः** = आङ् + दृ + अप् = आदर
- **जन्तुः** = √जन् + तुन्
- **लोहितः** = √रुह् + इतन् 'र' को 'ल' आदेश
- **पदातिः** = पाद + अत् + इण्
- **रेणुः** = री + नु
- **सत्यम्** = सत् + यत्
- **अकुप्यम्** = गुप् + क्यप् (ग को क आदेश होकर) कुप्य
- **वासांसि** = वस्यते आच्छाद्यते अनेन अर्थ में वस् + असुन् = वासम्, नपुंसकलिङ्ग में द्वितीया एक. = वासांसि
- **धनञ्जयः** = धनं जयति अर्थ में–धन + जि + खच् (मुम् का आगम)
- **कचः** = √कच् + अच्
- **अगजः** = अग + √जन् + ड
- **अगः** = न + √गम् + ड
- **गजः** = गज् + अच्
- **संयमः** = सम् + यम् + अप्
- **विचित्ररूपः** = विचित्र + रूपप्
- **आश्रयः** = आङ् + √श्रि + अच्
- **आधयः** = आङ् + √धा + कि, प्रथमा बहु.
- **अन्धसा** = अद् + असुन्, नुम् और ध होकर तृतीया एक. अन्धसा
- **कार्श्यम्** = कृष् + ष्यञ्
- **द्विजः** = द्वि + √जन् + ड
- **उत्सवः** = उत् + √सू + अप्
- **धामन्** = धा + मनिन् नपुंसकलिङ्ग - प्रथमा एक
- **शत्रुम्** = शद् + त्रुन् द्वितीया एक.
- **मुनिः** = मन् + इन् (अ को उ आदेश)
- **पुरस्** = पूर्व + असि
- **सरः** = सृ + अच्
- **धामवताम्** = धाम + मतुप् = धामवत्, षष्ठी का बहु.
- **दुस्सहः** = दुर् + सह् + खल्
- **आश्रयः** = आङ् + √श्रि + अच्
- **मनस्विन्** = मनस् + विनि
- **पतिः** = √पा + डति
- **लक्ष्मन्** = √लक्ष् + मनिन्
- **कार्मुकः** = कर्मन् + उकञ्
- **जटाधरः** = जटा + √धृ + अच्
- **पावकम्** = √पू + ण्वुल् (अक) द्वितीया एक.
- **समयः** = सम् + √इ + अच्
- **क्षमः** = क्षम् + अच्
- **अरिषु** = ऋ + इन् सप्तमी बहु.
- **विजयः** = वि + √जि + अच् = विजय
- **अर्थिनः** = अर्थ + इनि प्रथमा बहु.
- **उपधिः** = उप + √धा + कि
- **सन्धिः** = सम् + √धा + कि
- **विधिः** = वि + √धा + कि
- **पयोधिः** = पयस् + √धा + कि
- **रिपुः** = अनिष्टं रपति अर्थ में रप् + कु (अ को इ होकर)
- **तिमिरः** = तिम् + किरच्
- **उदीयमानम्** = उत् + √ईङ् + शानच् = उदीयमान, द्वितीया एक. (उदीयमानम्)
- **लक्ष्मीः** = लक्ष् + ई (मुट् का आगम)
- **भूयः** = बहु + ईयसुन् (बहु को भू आदेश और ईयसुन् को ईकार का लोप होकर) भू + यस्

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) में सन्धि

- **प्रभवोऽनुजीविभिः** = प्रभवस् + अनुजीविभिः विसर्गसन्धि एवं ''एङः पदान्तादति'' से पूर्वरूपसन्धि।
- **अतोऽर्हसि** = अतस् + अर्हसि, विसर्गसन्धि एवं ''एङःपदान्तादति'' से पूर्वरूपसन्धि।
- **सदानुकूलेषु** = सदा + अनुकूलेषु = दीर्घसन्धि
- **नृपेष्वमात्येषु** = नृपेषु + अमात्येषु = यण्सन्धि (इको यणचि)
- **तवानुभावः** = तव + अनुभावः = दीर्घसन्धि
- **तवानुभावोऽयमवेदि** = तवानुभावस् + अयमवेदि (विसर्ग सन्धि एवं पूर्वरूपसन्धि)
- **व्याख्या** – यहाँ पर ''ससजुषो रुः'' सूत्र से अनुभावस् के अन्त्य सकार को 'रु' आदेश होकर उपदेशेऽजनुनासिक इत् से ''उकार'' की इत्संज्ञा और ''तस्य लोपः'' से लोप, ''र्'' को ''अतो रोरप्लुतादप्लुते'' सूत्र से उकार आदेश, तवानुभाव + उ + अयमवेदि ''आद्गुणः'' से गुण होकर, तवानुभावो + अयमवेदि, पुनः ''एङः पदान्तादति'' सूत्र से पूर्वरूप सन्धि होकर, यहाँ सन्धिकार्य निष्पन्न हुआ अन्यस्थलों पर भी अध्येतागण ऐसा ही समझे।
- **नृपासनस्थोऽपि** = नृपासनस्थस् + अपि, विसर्गसन्धि एवं पूर्वरूपसन्धि।
- **भवज्जिगीषया** = भवत् + जिगीषया, ''झलां जशोऽन्ते'' सूत्र से ''जश्त्वसन्धि'' भवद् + जिगीषया पुनः ''स्तोः श्चुना श्चुः''. से श्चुत्व सन्धि।
- **कृतारिः** = कृत + अरिः (दीर्घसन्धि)
- **कृताधिपत्याम्** = कृत + आधिपत्याम् = (दीर्घसन्धि)
- **असक्तमाराधयतो यथायथम्** = असक्तमाराधयतः + यथायथम्, ''विसर्गसन्धि'' (''हशि च'' से उत्व ''आद्गुणः'' से गुण)
- **गुरूपदिष्टेन** = गुरु + उपदिष्टेन, (दीर्घसन्धिः)
- **क्रियापवर्गेष्वनुजीवि** = क्रियापवर्गेषु + अनुजीवि (यण्सन्धि)
- **फलन्त्युपायाः** = फलन्ति + उपायाः (यण्सन्धि)
- **नयत्ययुग्मः** = नयति + अयुग्मः (यण्सन्धि)
- **कुरवश्चकासति** = कुरवस् + चकासति ''स्तोः श्चुना श्चुः'' (श्चुत्वसन्धि)
- **इत्येव** = इति + एव (यण्सन्धि)
- **वाञ्छन्त्यसुभिः** = वाञ्छन्ति + असुभिः (यण्सन्धि)
- **धातुरिवेहितम्** = धातुरिव + ईहितम् (गुणसन्धि)
- **मखेष्वखिन्नः** = मखेषु + अखिन्नः (यण्सन्धि)
- **चिन्तयत्येव** = चिन्तयति + एव (यण्सन्धि)
- **इवानुशासनम्** = इव + अनुशासनम् (दीर्घसन्धि)
- **त्वयात्महस्तेन** = त्वया + आत्महस्तेन (दीर्घसन्धि)
- **स्रगिवापवर्जिता** = स्रगिव + अपवर्जिता (दीर्घसन्धि)
- **शठास्तथाविधान्** = शठाः + तथाविधान् (विसर्गसन्धि)
- **इवेषवः** = इव + इषवः = गुणसन्धिः (आद् गुणः)
- **परैस्त्वदन्यः** = परैः + त्वदन्यः (विसर्गसन्धिः)
- **परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः** = परिभ्रमन् + लोहित - चन्दनोचितः, ''तोर्लि'' सूत्र से परसवर्णसन्धि (हल्सन्धि)
- **तवाधुनाहरन्** = तव + अधुना + आहरन्, (दीर्घसन्धि)
- **विष्वगिवागजौ** = विष्वगिव + अगजौ (दीर्घसन्धि)
- **उन्मूलयतीव** = उन्मूलयति + इव (दीर्घसन्धि)
- **भावादृशाश्चेत्** = भवादृशास् + चेत् ''स्तोः श्चुना श्चुः'' (श्चुत्वसन्धि)
- **उदस्योदीयमानम्** = उदस्य + उदीयमानम् (गुणसन्धि)
- **लक्ष्मीस्त्वाम्** = लक्ष्मीस् + त्वाम् (विसर्गसन्धि)

किरातार्जुनीयम् में समास

- **पालनीम्** = पाल्यतेऽनया इति पालनी, ताम् पालनीम्। (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **वर्णिलिङ्गी** = वर्णः अस्य अस्ति वर्णी, तस्य लिङ्गम् अस्यास्तीति वर्णिलिङ्गी।
- **वनेचरः** = वने चरति इति वनेचरः। (सप्तमी अलुक् तत्पुरुषसमास)
- **युधिष्ठिरम्** = युधि स्थिरः तम् युधिष्ठिरम् । (सप्तमी अलुक् तत्पुरुषसमास)
- **कृतप्रणामस्य** = कृतः प्रणामः येन तस्य कृतप्रणामस्य। (बहुव्रीहि समास)
- **सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्** = ''सौष्ठवं च औदार्यं च इति सौष्ठवौदार्ये तयोः विशेषः तेन शालते इति सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनी ताम्, सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्। (इतरेतरद्वन्द्व एवं षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **चारचक्षुषः** = चरन्ति इति चराः त एव चाराः, चाराः चक्षूंषि येषां ते चारचक्षुषः। (बहुव्रीहि समास)
- **किंसखा** = कुत्सितः सखा इति किंसखा (कर्मधारयसमास)
- **किंप्रभुः** = कुत्सितः प्रभुः (कर्मधारयसमास)
- **सर्वसम्पदः** = सर्वाः सम्पदः सर्वसम्पदः (कर्मधारयसमास)
- **अमात्येषु** = अमा सह भवाः अमात्याः तेषु
- **अनुकूलेषु** = कूलम् अनुगताः इत्यनुकूलाः तेषु (प्रादितत्पु. समास)
- **अबोधविक्लवाः** = अबोधेन विक्लवाः (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **नयवर्त्म** = नयस्य वर्त्म, नयवर्त्म (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **अनुभावः** = अनुगतो भावः इति (प्रादितत्पुरुष समास)
- **वनाधिवासिनः** = वनम् अधिवसति इति वनाधिवासी तस्मात् वनाधिवासिनः (उपपदतत्पुरुषसमास)

- **दुर्लभम्** = दुःखेन लभ्यते इति दुर्लभम्, (उपपद तत्पु. समास)
- **सुयोधनः** = सुखेन युद्ध्यते इति, सुयोधनः (उपपदतत्पुरुष समास)
- **दुरोदरच्छद्मजिताम्** = दुष्टम् उदरं यस्य तत् दुरोदरम्, तस्य छद्मना जितां तां "दुरोदरच्छद्मजिताम्"। बहुव्रीहि एवं तृतीया तत्पुरुष समास
- **भवजिगीषया** = भवन्तं जेतुम् इच्छया, (द्वितीयातत्पुरुष समास) अथवा "भवतः जिगीषा इति" (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **गुणसम्पदा** = गुणानां सम्पत् तया, गुणसम्पदा। (षष्ठीतत्पुरुष समास)
- **षड्वर्गः** = षण्णां वर्गः, षड्वर्गः। अरीणां षड्वर्गः, अरिषड्वर्गः तस्य जयः अरिषड्वर्गजयः, कृतः अरिषड्वर्गजयः येन तेन कृतारिषड्वर्गजयेन।
(षष्ठी तत्पुरुष एवं बहुव्रीहि समास)
- **मानवीम्** = इयम् इति मानवी ताम्, मानवीम्, (षष्ठी तत्पु० समास)
- **अस्ततन्द्रिणा** = अस्ता तन्द्रिः आलस्यं यस्य तेन (बहुव्रीहि समास)
- **गतस्मयः** = गतः स्मयः यस्य सः गतस्मयः। (बहुव्रीहि समास)
- **बन्धुताम्** = बन्धूनां समूहः बन्धुता ताम्, बन्धुताम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **सुहृदः** = शोभनं हृदयं येषां ते, तान् सुहृदः (बहुव्रीहि समास)
- **कृताधिपत्याम्** = कृतम् आधिपत्यं यस्याः तां कृताधिपत्याम् (बहुव्रीहि समास)
- **समपक्षपातया** = पक्षे पातः पक्षपातः, समः पक्षपातः यस्यां तया, समपक्षपातया। (सुप्सुपासमास)
- **निरत्ययम्** = निर्गतः अत्ययः यस्मात् तम् निरत्ययम् (बहुव्रीहि समास)
- **निवृत्तकारणः** = निवृत्तं कारणं यस्मात् सः - निवृत्तकारणः। (बहुव्रीहि समास)
- **गुरूपदिष्टेन** = गुरुभिः उपदिष्टः तेन – गुरूपदिष्टेन (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **अगम्यरूपाम्** = अगम्यं रूपं यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि समास)
- **धर्मविप्लवम्** = धर्मस्य विप्लवः धर्मविप्लवः तम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **कृतज्ञताम्** = कृतं जानाति इति कृतज्ञः, तस्य भावः कृतज्ञता, ताम् कृतज्ञताम् (षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **विनियोगसत्क्रियाः** = विनियोग एव सत्क्रिया येषां ते विनियोगसत्क्रियाः। (बहुव्रीहि समास)
- **अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलम्** = अनेकेषां राजन्यानां रथाश्वेन सङ्कुलम्, अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **आस्थाननिकेतनाजिरम्** = आस्थानस्य निकेतनम्, आस्थान निकेतनं तस्य अजिरम् = आस्थाननिकेतनाजिरम्। (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **नृपोपायनदन्तिनाम्** = नृपाणाम् उपायनानि ये दन्तिनः तेषाम्। (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **अकृष्टपच्याः** = अकृष्टेन पच्यन्त इति अकृष्टपच्याः। (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **अदेवमातृकाः** = देवः पर्जन्यः माता येषां ते देवमातृकाः, ते न भवन्ति इति अदेवमातृकाः। (बहुव्रीहि समास)
- **उदारकीर्तेः** = उदारा कीर्तिः यस्य स उदारकीर्तिः तस्य, उदारकीर्तेः, (बहुव्रीहि समास)
- **महौजसः** = महान्ति ओजांसि येषां ते महौजसः। (बहुव्रीहि समास)
- **मानधनाः** = मान एव धनं येषां ते मानधनाः, (बहुव्रीहि समास)
- **धनार्चिताः** = धनैः अर्चिताः धनार्चिताः। (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **लब्धकीर्त्तयः** = लब्धा कीर्तिः यैः ते = लब्धकीर्तयः, बहुव्रीहि समास
- **अशेषितक्रियः** = अशेषिताः क्रियाः येन सः अशेषितक्रियः। (बहुव्रीहि समास)
- **हितानुबन्धिभिः** = हितम् अनुबध्नन्ति इति हितानुबन्धीनि तैः हितानुबन्धिभिः। (उपपदतत्पुरुष समास)
- **सज्यम्** = सह ज्यया इति सज्यम् (बहुव्रीहि समास)
तृतीयान्त शब्द के साथ तुल्ययोग होने पर "सह" शब्द के साथ बहुव्रीहि समास होता है।
- **कोपविजिह्मम्** = कोपेन विजिह्मं, कोपविजिह्म (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **नराधिपैः** = नराणाम् अधिपाः तैः, नराधिपैः, (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **नवयौवनोद्धतम्** = नवेन यौवनेन उद्धतः, नवयौवनोद्धतः तम्, = नवयौवनोद्धतम् (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **दुःशासनम्** = दुःखेन शास्यते इति दुःशासनः तम् (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **इद्धशासनः** = इद्धं शासनं यस्य स इद्धशासनः (बहुव्रीहि समास)
- **हिरण्यरेतसम्** = हिरण्यं रेतो यस्य तं हिरण्यरेतसम् (बहुव्रीहि समास)
- **प्रलीनभूपालम्** = प्रलीनाः भूपालाः यस्मिन् तत् प्रलीनभूपालम् (बहुव्रीहि समास)
- **स्थिरायति** = स्थिरा आयतिः यस्य तत् स्थिरायति। (बहुव्रीहि समास)

- **अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः** = आखण्डलस्य सूनुः आखण्डलसूनुः, अनुस्मृतः आखण्डलसूनोः विक्रमो येन सः (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **महोदयैः** = महान् उदयः येभ्यः तानि महोदयानि तैः (बहुव्रीहि समास)
- **तवाभिधानात्** = तश्च वश्च तवौ तयोः अभिधानं यस्मिन् तस्मात् (बहुव्रीहि समास)
- **उरगः** = उरसा गच्छति इति (तृतीया तत्पुरुषसमास)
- **परप्रणीतानि** = परैः प्रणीतानि (तृतीया तत्पुरुषसमास)
- **प्रवृत्तिसाराः** = प्रवृत्तिः एव सारो यासां ताः (बहुव्रीहि)
- **आत्तसत्क्रिये** = आत्ता सत्क्रिया येन स आत्तसत्क्रियः तस्मिन् (बहुव्रीहि समास)
- **मन्युव्यवसायदीपिनी** = मन्युश्च व्यवसायश्च मन्युव्यवसायौ तयोः दीपिनीः ताः
(इतरेतरद्वन्द्वसमासः) एवं (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **द्रुपदात्मजा** = आत्मनः जाता आत्मजा, द्रुपदस्य आत्मजा = (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **प्रमदाजनोदितम्** = प्रमदाजनेन उदितम् (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **निरस्तनारीसमयाः** = निरस्तः नारीणां समयः याभ्यः ताः (षष्ठी तत्पुरुषसमास एवं बहुव्रीहि समास)
- **आखण्डलतुल्यधामभिः** = आखण्डलतुल्यः धामानि येषां तैः (बहुव्रीहि समास)
- **मदच्युता** = मदं च्योतति इति मदच्युत् तेन। (उपपद तत्पुरुष समास)
- **असंवृताङ्गान्** = न संवृतानि असंवृतानि, असंवृतानि अङ्गानि येषां ते असंवृताङ्गाः तान् (नञ् तत्पु. समास, एवं बहुव्रीहि समास)
- **अनुरक्तसाधनः** = अनुरक्तं साधनं यस्य, सः (बहुव्रीहि समास)
- **नराधिपः** = नराणाम् अधिपः इति नराधिपः (षष्ठी तत्पुरुष)
- **मनस्विगर्हिते** = मनस्विभिः गर्हिते। (तृतीया तत्पु.)
- **शमीतरुम्** = शमी चासौ तरुश्च शमीतरुः तम् (कर्मधारय)
- **उच्छिखः** = उद्गता शिखा यस्य स उच्छिखः। (बहुव्रीहि)
- **अबन्ध्यकोपस्य** = अबन्ध्यः कोपो यस्य तस्य अबन्ध्यकोपस्य (बहुव्रीहि समास)
- **अन्तर्गिरि** = गिरिषु अन्तः (सप्तमी तत्पुरुष समास)
- **रेणुरूषितः** = रेणुभिः रूषितः (तृतीया तत्पुरुष)
- **सत्यधनस्य** = सत्यम् एव धनं यस्य तस्य (बहुव्रीहि समास)
- **वृकोदरः** = वृकस्य उदरम् इव उदरं यस्य सः (षष्ठी तत्पुरुष समास, एवं बहुव्रीहि समास)
- **वासवोपमः** = वासवः उपमा यस्य सः (बहुव्रीहि समास)
- **धनञ्जयः** = धनं जयतीति (द्वितीया तत्पुरुष)
- **वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती** = वनान्तः एव शय्या इति वनान्तशय्या तस्यां कठिनीकृते आकृती ययोः तौ, अथवा वनान्तशय्यया कठिनीकृते आकृती ययोः तौ। (कर्मधारयसमास, तृतीया तत्पुरुषसमास, बहुव्रीहि समास)
- **धृतिसंयमौ** = धृतिश्च संयमश्च (द्वन्द्वसमास)
- **विचित्ररूपाः** = विचित्राणि रूपाणि यासां ताः (बहुव्रीहिसमास)
- **चित्तवृत्तयः** = चित्तस्य वृत्तयः (षष्ठी तत्पुरुष)
- **स्तुतिगीतिमङ्गलैः** = स्तुतयश्च गीतयश्च ता एव मङ्गलानि तैः (द्वन्द्वसमास एवं कर्मधारयसमास)
- **अदभ्रदर्भाम्** = अदभ्राः दर्भाः यस्यां सा अदभ्रदर्भा ताम् (बहुव्रीहि समास)
- **द्विजातिशेषेण** = द्विजातिभिः भुक्तं तस्य शेषः तेन (तत्पुरुष समास)
- **राजशिरःस्रजाम्** = राज्ञां शिरः राजशिरः तेषां स्रजः तासाम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **मृगद्विजालूनशिखेषु** = मृगाश्च द्विजाश्च मृगद्विजाः तैः आलूनाः शिखाः येषां तेषु (द्वन्द्वसमास एवं तत्पुरुष समास)
- **द्विषन्निमित्ता** = द्विषन्तो निमित्तं यस्याः सा, (बहुव्रीहि समास)
- **अपर्य्यासितवीर्यसम्पदाम्** = अपर्य्यासिता वीर्यसम्पत् येषां तेषाम् (बहुव्रीहि समास)
- **निःस्पृहाः** = निर्गता स्पृहा येभ्यः ते, (बहुव्रीहि समास)
- **पुरःसराः** = पुरः सरन्ति इति
- **यशोधनाः** = यश एव धनं येषां ते, (बहुव्रीहि समास)
- **निराश्रया** = निर्गतः आश्रयः यस्याः सा (बहुव्रीहि समास)
- **निरस्तविक्रमः** = निरस्तः विक्रमः येन सः (बहुव्रीहि समास)
- **जटाधरः** = धरतीति धरो, जटानां धरः (षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **निकृतिपरेषु** = निकृतिः परं येषु तेषु, (बहुव्रीहि समास)
- **भूरिधाम्नः** = भूरि धाम यस्य तस्य (बहुव्रीहि समास)
- **दीप्तिसंहारजिह्मम्** = दीप्तेः संहारः तेन जिह्मः तम् दीप्तिसंहारजिह्मम्'' (षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **शिथिलवसुम्** = शिथिलं वसु यस्य सः तम्, ''शिथिलवसुम्'' (बहुव्रीहि समास)
- **आपत्पयोधौ** = आपत् एव पयोधिः तस्मिन् अथवा आपदः पयोधिः तस्मिन्, ''आपत्पयोधौ'' (उपमित समासः)
- **विधिसमयनियोगः** = विधिश्च समयश्च इति विधिसमयौ (द्वन्द्वसमासः) तयोः नियोगः इति विधिसमयनियोगः (षष्ठी तत्पुरुष)

किरातार्जुनीयम् में कारकप्रयोग

- ''**कुरूणामधिपस्य**'' में ''**षष्ठी शेषे**'' सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई।
- **महीभुजे** – यहाँ पर ''**महीभुजं निवेदयिष्यतः**'' ऐसा प्रयोग होना चाहिए था, किन्तु ऐसा हुआ नहीं, क्योंकि व्याकरण का एक नियम है कि जब तुमुन् प्रत्यय से युक्त धातु का प्रयोग परोक्ष हो तो उसके कर्म में चतुर्थी विभक्ति होती है, उपर्युक्त प्रयोग में ''महीभुजं बोधयितुं निवेदयिष्यतः'' कहने से ही पूरा अर्थ निकलता है, किन्तु ''बोधयितुम्'' का प्रयोग प्रत्यक्षतः नहीं हुआ, फलतः इस क्रिया के कर्म अर्थात् महीभुजम् में चतुर्थी हो गई। सूत्र है –
  ``**क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः**''
- **द्विषाम्** = यहाँ ''**द्विषां विघाताय**'' में विघातशब्द में आने वाला घञ् प्रत्यय चूँकि कृत् प्रत्ययों में से एक है, तथा 'द्विषः' शब्द मूलतः उसका कर्म है (इसका अर्थ है – द्विषः विहन्तुम्) अतएव ''**कर्तृकर्मणोः कृति**'' सूत्र से कर्मणि षष्ठी का बहुवचन हुआ।
- **विघाताय** = विघाताय = विहन्तुमित्यर्थः यहाँ ''तुमर्थाच्च भाववचनात्'' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति।
- **हितात्** – यहाँ पञ्चमी का विधान ''**आख्यातोपयोगे**'' सूत्र से हुआ है।
- **भवज्जिगीषया** = यहाँ पर ''**हेतौ**'' सूत्र से '**तृतीया**' विभक्ति का विधान होता है।
  ''गुणैर्भवन्तमाक्रमितुमिच्छतीत्यर्थः'' ''**हेतौ**'' इति **तृतीया**
- **महात्मभिः समम्** = यहाँ पर ''**सहयुक्तेऽप्रधाने**'' सूत्र से समम् के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **बन्धुभिः** = यहाँ सह के अर्थ में ''**सहयुक्तेऽप्रधाने**'' से तृतीया विभक्ति।
- **अनुजीविनः** = यहाँ ''**कर्तुरीप्सिततमं कर्म**'' सूत्र से कर्मसंज्ञा एवं ''**कर्मणि द्वितीया**'' से द्वितीया बहु. का प्रयोग।
- **गुणानुरागात्** = ''**विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्**'' इस नियम से यहाँ पञ्चमी विभक्ति हुई, सूत्रार्थ है, स्त्रीलिङ्ग से भिन्न लिङ्ग वाले गुणवाचक शब्दों में हेत्वर्थक पञ्चमी विभक्ति विकल्प से होती है।
- **गुणानुरोधेन विना** = यहाँ ''**पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्**'' इस सूत्र से विना के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **मन्युना** = ''**हेतौ**'' सूत्र से तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
- **दण्डेन** = यहाँ पर ''**हेतौ**'' से तृतीया विभक्ति।
- **क्रियापवर्गेषु** = कर्म समाप्तिषु अर्थात् कार्यों की समाप्ति होने पर ''**यस्य च भावेन भावलक्षणम्**'' सूत्र से सति सप्तमी का प्रयोग हुआ।
- **तस्मिन्** = ''दुर्योधने'', (उस दुर्योधन के द्वारा) इत्यर्थः , यहाँ पर ''**यस्य च भावेन भावलक्षणम्**'' से सति सप्तमी का प्रयोग।
- **सुखेन** = यहाँ ''प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानम् (वा)'' से तृतीया विभक्ति का प्रयोग।
- **तवाभिधानात्** = हेतु अर्थ में पञ्चमी विभक्ति
- **द्विषताम्** = यहाँ पर ''**षष्ठी शेषे**'' सूत्र से शेष अर्थ में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
- **भवादृशेषु** = यहाँ अधिकरणे सप्तमी, ''**सप्तम्यधिकरणे च**'' इससे सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **व्यवसाययन्ति माम्** – माम् की यहाँ कर्मसंज्ञा है, और ''**कर्मणि द्वितीया**'' से द्वितीयाविभक्ति का प्रयोग हुआ। (''**गति बुद्धि.......**'' **सूत्र से कर्मसंज्ञा**)
- **त्वदन्यः** = त्वत् + अन्यः = यहाँ पर ''अन्य'' शब्द के योग में ''अन्यारादितरर्ते.....'' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति का विधान होता है।
- **आपदाम्** = यहाँ पर कर्मणि षष्ठी हुई है, सूत्र है, ''**कर्तृकर्मणोः कृति**'' से **षष्ठी** विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **विचिन्तयन्त्याः मम चेतः रुजन्ति** = यहाँ पर ''**रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः**'' सूत्र से विचिन्तयन्त्याः में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग।
- **अधिरूढः शयनम्** = यहाँ पर ''**अधिशीङ्स्थासां कर्म**'' सूत्र से कर्म कारक एवं द्वितीया का प्रयोग।
- **अधिशय्य स्थलीम्** = यहाँ पर ''**अधिशीङ्स्थासां कर्म**'' सूत्र से कर्म कारक एवं द्वितीया का प्रयोग।
- **यशसा समम्** = ''**सहयुक्तेऽप्रधाने**'' सूत्र से समम् के योग में '**यशसा**' में तृतीयाविभक्ति का विधान किया गया।
- **वधाय** = ''**क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः**'' सूत्र से 'वधाय' में **चतुर्थी** विभक्ति हुई।
- **निकृतिपरेषु** = ''सति सप्तमी'' का प्रयोग ''**यस्य च भावेन भावलक्षणम्**'' सूत्र से।
- **अरिषु** = शत्रुषु, शत्रुविषयक, '**विषयाधिकरणे सप्तमी**'।

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) में छन्द एवं अलङ्कार

किरातार्जुनीयम् में छन्द

- किरातार्जुनीयमहाकाव्य के प्रथमसर्ग में प्रथमश्लोक **''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्''** से लेकर 44वें श्लोक **''अथ क्षमामेव निरस्तविक्रमः''** तक वंशस्थ छन्द है। जिसका लक्षण है– **''जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ''**
अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण जगण और रगण आता है, उसे 'वंशस्थ' छन्द कहते हैं। इसके प्रत्येकचरण में 12 वर्ण होते हैं और पादान्त में यति होती है।
- किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के 45वें श्लोक **''न समयपरिरक्षणं क्षमं ते''** में **पुष्पिताग्रा छन्द** है; जिसका लक्षण है–
''अयुजि नयुगरेफतो यकारो, युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा''
अर्थात् जब प्रथम एवं तृतीय चरण में क्रमशः नगण नगण रगण यगण (12 अक्षर) और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में नगण जगण जगण रगण और एक गुरु (13 अक्षर) वर्ण हों तो वहाँ **'पुष्पिताग्रा'** छन्द होता है।
- किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के अन्तिम 46वें **''विधिसमयनियोगाद् दीप्तिसंहारजिह्मम्''** इस श्लोक में ''मालिनीछन्द'' है; जिसका लक्षण है – **''ननमयययुतेयं मालिनीभोगिलोकैः''**
अर्थात् जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण नगण मगण यगण और यगण हों, और आठवें तथा सातवें वर्ण में यति (विराम) हो, उसे 'मालिनी छन्द' कहते हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं।
- इस प्रकार महाकवि भारवि ने सर्गान्त में छन्दपरिवर्तन करके महाकाव्य के लक्षण का पूर्णतया पालन किया है। **'श्री' शब्द से** इस महाकाव्य का **आरम्भ** तथा **'लक्ष्मी' शब्द से सर्ग का अन्त** करते हुए महाकवि भारवि ने एक नयी परम्परा का प्रारम्भ किया, जो परवर्ती माघ आदि कवियों द्वारा उसका अनुपालन किया गया।

किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ – **'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'**
किरातार्जुनीयम् का सर्गान्त **'दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः'**

किरातार्जुनीयम् में अलङ्कार

श्लोक-1 – श्रियः .... वनेचरः॥

प्रस्तुत श्लोक में वृत्यनुप्रास नामक अलङ्कार है, क्योंकि 'पालनीम्' एवं 'प्रजासु' में 'प्' की 'वृत्तिम्' 'वेदितुम्' 'वर्णिलिङ्गी' तथा 'विदितः' में 'व्' की और 'वने वनेचरः' में वने की आवृत्ति हो रही है। इसका लक्षणा है –

अनेकस्यैकधा साम्यमसकृद्वाप्यनेकधा । एकस्य सकृदप्येष वृत्यनुप्रास उच्चते'' (सा. द.)

श्लोक-2 – कृतप्रणामस्य .... हितैषिणः ॥

प्रस्तुत श्लोक में, प्रथम की तीन पंक्तियों में एक विशेष कथन का उपन्यास किया गया है, और चौथी पंक्ति में विद्यमान एक सामान्य बात से उसका समर्थन किया गया है, फलतः यहाँ **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार** है। लक्षण इस प्रकार है–

सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते,
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा

श्लोक-3 – द्विषां विघाताय .... वाचमाददे ॥

उपर्युक्त श्लोक में वृत्यनुप्रास नामक अलङ्कार है, क्योंकि 'विघाताय विधातुम् विनिश्चितार्थाम्, विशेषः और वाचम्' इत्यादि में 'व' की आवृति हो रही है। आचार्य मम्मट के अनुसार अनुप्रास का लक्षण है – 'वर्णसाम्यमनुप्रासः'।

श्लोक-4 – क्रियासु .... दुर्लभं वचः ।

प्रस्तुत श्लोक में प्रथम तीन चरण में कही गयी, एक विशेष बात का समर्थन चतुर्थ चरण में कही गयी सामान्य बात से होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है, काव्यप्रकाश के अनुसार इसका लक्षण श्लोक सं. 2 में देखें।

श्लोक-5 – स किंसखा .... सर्वसम्पदः।

प्रस्तुत श्लोक में राजाओं और अमात्यों को एक दूसरे के अनुकूल रहने रूप कारण का सम्पूर्ण सम्पत्तियों की प्राप्ति रूप कार्य से समर्थन हो रहा है। अतः **''अर्थान्तरन्यास''** अलङ्कार है।

श्लोक-6 – निसर्गदुर्बोध .... विद्विषाम्॥

इस पद्य में 'अज्ञान से युक्त प्राणी' और छिपे हुए रहस्यों वाले नीति मार्ग का प्रयोग करने वाले राजाओं का दुर्बोध चरित इन दोनों परस्पर अत्यन्त भिन्न स्थितियों वाले पदार्थों का एक साथ प्रयोग होने से **विषम अलङ्कार** है, इसका लक्षण है,

''क्वचिद्यदति वैधर्म्यान्नश्लेषो घटनामियात् .... इत्यादि (काव्यप्रकाशः)।

श्लोक-7 – विशङ्कमानो .... सुयोधनः।

इस श्लोक में ''दुरोदरच्छद्मजिताम्'' इस विशेषण पद का अर्थ - जुए के द्वारा छल से जीती गयी पृथ्वी को 'नयेनजेतुम्' के

अर्थ नीति से जीतने के लिए - का कारण होने से **काव्यलिङ्ग** नामक अलङ्कार है।

इसका लक्षण है - हेतोर्वाक्यपदार्थत्वे काव्यलिङ्गं निगद्यते (सा. द.)

श्लोक-8 – तथापि .... महात्मभिः।

इस श्लोक में कुटिल स्वभाव वाले दुर्योधन के द्वारा युधिष्ठिर को जीतने के लिये अपनी निर्मल कीर्ति का विस्तार करना - इस विशेष बात का समर्थन दुष्टों की सङ्गति की अपेक्षा ऐश्वर्य को बढ़ाने वाला महापुरुषों का विरोध श्रेयस्कर है –

इस सामान्य कथन से करने के कारण **''अर्थान्तरन्यास''** नामक अलङ्कार है। इसमें **काव्यलिङ्ग** नामक अलङ्कार भी है, क्योंकि ''भूतिं समुन्नयन् (ऐश्वर्य को बढ़ाने के लिए) इस कारण पद से ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः''

(महापुरुषों का विरोध दुष्ट सङ्गति की अपेक्षा कुछ अच्छा होता है)

श्लोक-9 – कृतारिषड् .... पौरुषम्।

उपर्युक्त पद्य में ''नयेन पौरुषं वितन्यते'' (नीति से पौरुष का विस्तार किया जा रहा है) इस अर्थ के ज्ञान का हेतु - 'कृतारिषड्वर्गजयेन अगम्यरूपाम् मानवीं पदवीं प्रपित्सुना' तथा ''नक्तन्दिवं विभज्य अस्ततन्द्रिणा'' आदि है, अतएव इसमें **काव्यलिङ्ग अलङ्कार** है। इसका लक्षण, श्लोक सं. 7 में देखें।

श्लोक-10 – सखीनिव .... बन्धुताम्।

उपर्युक्त पद्य में **''रशनोपमा''** नामक अलङ्कार है, क्योंकि क्रमशः पहले के वाक्यों में वर्णित उपमेय आगे के वाक्यों में उपमान हो जाते हैं, आचार्य विश्वनाथ के अनुसार इसका लक्षण है–

कथिता रशनोपमा यथोर्ध्वमुपमेयस्य यदि स्याद् उपमानता।।

श्लोक 11 – असक्त .... परस्परम्।

इस श्लोक में 'सख्यमीयिवान् इव' इत्यादि शब्दों से उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना होने के कारण **उत्प्रेक्षा** अलङ्कार है, जिसका लक्षण है –

''सम्भावनामथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्'' (काव्यप्रकाशः)

श्लोक-12 – निरत्ययं .... सत्क्रिया।

इस पद्य में पूर्व-पूर्व वाक्य के विशेषण के रूप में उत्तर-उत्तर वाक्य की स्थापना होने के कारण **एकावली** नामक अलङ्कार है, इसका लक्षण इस प्रकार है,

● स्थाप्यतेऽपोह्यते वापि यथापूर्व परं परम्। विशेषणतया वस्तु यत्र सैकावली द्विधा'' (काव्यप्रकाश)

श्लोक-13 – वसूनि वाञ्छन्न .... धर्मविप्लवम्।।

प्रस्तुत श्लोक में 'नकार' का अनेक बार उच्चारण होने से **''वृत्यनुप्रासालङ्कार''** है।

श्लोक-14 – विधाय रक्षान् .... सम्पदः।

इस श्लोक में 'न शङ्कि' तथा 'कृ' इत्यादि की आवृत्ति होने से **अनुप्रास** नामक शब्दालङ्कार है।

श्लोक-15 – अनारतं तेन .... सम्पदः।

यद्यपि साम, दान, दण्ड और भेद, ये परस्पर कभी स्पर्धा नहीं करते, फिर भी प्रस्तुत श्लोक में अर्थ की सुन्दरता को अभिव्यक्त करने के लिए उनमें प्रतिस्पर्धा की सम्भावना की गयी है। अतः इसमें **''उत्प्रेक्षा''** नामक अलङ्कार है, श्लोक का इव शब्द उत्प्रेक्षा को व्यञ्जित कर रहा है।

मन्ये शङ्के ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादयः, उत्प्रेक्षा व्यञ्जकाः शब्दा इव शब्दोऽपि तादृशः''

श्लोक-16 – अनेकराजन्य .... मदः।

इस श्लोक में 'उदात्त' नामक अलङ्कार है, क्योंकि इसमें दुर्योधन की लोकोत्तर समृद्धि का वर्णन किया गया है। 'अलङ्कारसूत्र' के अनुसार इसका लक्षण है –

''समृद्धिमद्वस्तुवर्णनमुदात्तः''

श्लोक-17 – सुखेन लभ्या .... चकासति।

उपर्युक्त श्लोक में **उत्प्रेक्षा** अलङ्कार है जिसका लक्षण है, ''सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत् (काव्यप्रकाशः)

श्लोक-18 – उदारकीर्ते .... मेदिनी।

उपर्युक्त पद्य में प्रस्तुत उपमेय ''पृथ्वी'' पर अप्रस्तुत उपमान ''गाय'' के दोहन रूप कार्य का आरोप होने के कारण **समासोक्ति अलङ्कार** है, लक्षण है –

''समासोक्तिः समैर्यत्र कार्यलिङ्गविशेषणैः, व्यवहारसमारोपः प्रस्तुतेऽन्यस्य वस्तुनः (सा. द.)

श्लोक-19 –महौजसो .... समीहितुम्।

इस पद्य में **काव्यलिङ्ग** और **'परिकर'** ये दो अलङ्कार हैं। साथ ही इन दो अलङ्कारों की 'संसृष्टि' भी है।

श्लोक-20 – महीभृतां .... फलैः।

इस पद्य में दुर्योधन के कार्यों की समानता विधाता के कार्यों से करने के कारण **'उपमा'** अलङ्कार है।

श्लोक-21 – न तेन .... शासनम्।।

प्रस्तुत श्लोक में ''माल्यम् इव'' यह अंश दुर्योधन की आज्ञा और माला में साधर्म्य है। अतः **उपमा अलङ्कार** है।

श्लोक-22 – स यौवराज्ये .... हिरण्यरेतसम्॥

प्रस्तुत श्लोक में ''उद्धतम्'' ''निधाय'' ''पुरोधसा'' ''धिनोति'' इत्यादि में ध् वर्ण की, ''दुःशासनः'' ''इद्धशासनः'' में 'श्' वर्ण की तथा ''हव्येन हिरण्यरेतसम्'' में ''ह'' वर्ण की आवृत्ति होने से **अनुप्रास** अलङ्कार है।

श्लोक-23 – प्रलीन .... बलवद्विरोधिता।

इस श्लोक में ''दुरन्ताबलवद्विरोधिता'' इस सामान्य कथन का ''स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः'' इस विशेष कथन से समर्थन होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है,

श्लोक-24 – कथाप्रसङ्गेन .... पदादिवोरगः

इस पद्य में श्लेषानुप्राणित पूर्णोपमा अलङ्कार है ''कथाप्रसङ्गेन'' ''अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः'' तवाभिधानात्'' इत्यादि श्लिष्टपद हैं। सः (दुर्योधनः) उपमेय, 'उरगः' उपमान। 'इव' वाचक शब्द तथा ''नताननः व्यथते'' साधारण धर्म सभी स्पष्टतया प्रतिपादित हैं अतः **पूर्णोपमा अलङ्कार** है।

श्लोक-25 – तदाशु कर्तुं .... मादृशां गिरः

उपर्युक्त पद्य में उत्तरार्द्ध के दूसरों के द्वारा कहे गये कथनों का संग्रह करने वाली मुझ जैसों की बातें केवल वृत्तान्त मात्र वाली होती है, इस सामान्य कथन का समर्थन पूर्वार्द्ध के तदाशु कर्तुं त्वयि जिह्ममुद्यते विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्'' इस विशेष कथन से होने के कारण **''अर्थान्तरन्यास''** नामक अलङ्कार है।

श्लोक-26 – इतीरयित्वा .... सन्निधौ वचः

प्रस्तुत श्लोक में ''अनुप्रास अलङ्कार है, क्योंकि इसके पूर्वार्द्ध में ''न'' वर्ण की तथा चतुर्थ चरण में ''च'' वर्ण की आवृत्ति हुई है।

श्लोक-27 – निशम्य सिद्धिं .... गिरः।

अलङ्कार – उपर्युक्त श्लोक के द्वितीय चरण ''ततस्ततस्त्याः'' में 'त' वर्ण की कई बार आवृत्ति होने से **'अनुप्रास अलङ्कार'** है।

श्लोक-28 – भवादृशेषु .... दुराधयः।

अलङ्कार – उपर्युक्त श्लोक के पूर्वार्द्ध में **''उपमा''** अलङ्कार है, और उत्तरार्द्ध में वाक्यार्थहेतुक ''काव्यलिङ्ग'' अलङ्कार है।

श्लोक-29 – अखण्ड .... वर्जिता।

अलङ्कार – इस श्लोक में उपमेय ''मही'' एवं उपमान ''स्रक्'' के सादृश्य को ''इव'' वाचक शब्द से कहा गया है। इसलिए इसमें **उपमा** अलङ्कार है।

श्लोक-30 – व्रजन्ति ते .... इवेषवः॥

अलङ्कार – इस श्लोक में **उपमा** एवं **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है, साथ ही दोनों अलङ्कारों की तिलतण्डुलवत् संसृष्टि भी है। ''ये मायाविषु मायिनः न भवन्ति ते पराभवं व्रजन्ति'' इस सामान्य कथन का ''शठा'' ''असंवृताङ्गान् तथाविधान्'' निशिता ''इषवः इव'' प्रविश्य घ्नन्ति हि'' इस विशेष कथन से समर्थन होने के कारण **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार** है।

श्लोक-31 – गुणानुरक्ता .... श्रियम्।

अलङ्कार – प्रस्तुत श्लोक में ''आत्मवधू'' उपमेय और ''श्री'' उपमान का 'गुणानुरक्ताम्' आदि समानधर्म से कथन है, ''इव'' उपमा वाचक शब्द है। इस प्रकार इसमें **पूर्णोपमा** अलङ्कार है। इसका लक्षण है, ''साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः'' (सा. द.)

श्लोक-32 – भवन्तमेतर्हि .... रुच्छिखः।

अलङ्कार – इस पद्य में ''सूखे हुए शमी के वृक्ष को प्रज्वलित कर देने वाले अग्नि की तरह आपका क्रोध क्यों नहीं उद्दीप्त होता या भड़क उठता? इस अंश में युधिष्ठिर के क्रोध की उपमा सूखे हुए शमी के वृक्ष के अन्तःस्थित अग्नि से दी गयी है, अतः इसमें **उपमा अलङ्कार** है। ''अग्नि और मन्यु'' में उपमानोपमेय भाव है।

श्लोक-33 – अबन्ध्यकोपस्य .... विद्विषादरः।

अलङ्कार – इस पद्य में व, ज, द और न् वर्णों की बार-बार आवृत्ति होने से **''अनुप्रास''** अलङ्कार है। इसके अतिरिक्त इसमें ''विद्विषादरः'' शब्द का ''विद्विषा + आदरः'' तथा ''विद्विषा + दरः'' इन दो प्रकारों से पदच्छेद होने के कारण **'सभङ्गश्लेष'** अलङ्कार भी है।

श्लोक-34 – परिभ्रमँल्लोहित .... वृकोदरः।

अलङ्कार – 'लोहितचन्दनोचितः' रेणुरूषितः' 'महारथः' 'पदातिः' इत्यादि विशेषण जो वृकोदर अर्थात् भीम के लिए प्रयुक्त हुए हैं, उनका एक विशेष अभिप्राय है। अतः इसमें परिकर नाम अलङ्कार है, जिसका लक्षण है,

''विशेषणैर्यत्साकूतैरुक्तिः परिकरस्तु सः'' इति (काव्यप्रकाश)

श्लोक-35 – ''विजित्य यः .... धनञ्जयः॥

अलङ्कार – प्रस्तुत श्लोक में ''अनुप्रास'' अलङ्कार है।

श्लोक-36 – 'वनान्तशय्या .... न बाधितुम्।

अलङ्कार – ''कृताकृती'' 'कचाचितौ' इत्यादि में **अनुप्रास** तथा ''अगजौ गजौ'' एवं ''धृतिसंयमौ यमौ'' में ''गजौ गजौ'' व ''यमौ यमौ'' अंश में **यमक** अलङ्कार है।

श्लोक-37 – इमामहं वेद .... ममाधयः

प्रस्तुत श्लोक पूर्वार्द्ध में ''विचित्ररूपाः खलुचित्तवृत्तयः'' - इस सामान्य कथन से 'अहं तावकीं धियं न वेद' इस विशेष कथन का समर्थन होने के कारण सामान्य से विशेष का समर्थन रूप ''**अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार'' है, श्लोक के उत्तरार्द्ध में वाक्यार्थ हेतुक **''काव्यलिङ्ग''** अलङ्कार भी है।

श्लोक-38 – पुराधिरूढः ....शिवारुतैः।

अलङ्कार – ''महाधनं शयनम्'' और अदभ्रदर्भां स्थलीम् अधिशय्य एवं ''स्तुतिगीतिमङ्गलैः विबोध्यसे और ''अशिवैः शिवारुतैः

निद्रां जहासि'' इन विरुद्ध पदार्थों का वर्णन होने से **'विषम' अलङ्कार** है।

श्लोक-39 – पुरोपनीतं .... समं वपुः॥

अलङ्कार – इस पद्य में **''सहोक्ति अलङ्कार''** है जिसका लक्षण है, ''सा सहोक्तिः सहार्थस्य बलादेकं द्विवाचकम्'' (का. प्र.)

श्लोक-40 – अनारतं यौ .... बर्हिषाम्।

अलङ्कार – मणिजटित पीठ पर रहने वाले और राजाओं के शिरोमाल्यों के पराग से रञ्जित होने वाले चरण तथा मृगों और तपस्वियों के द्वारा छिन्न कुशों के वनों में पड़ने वाले चरण इन दो विरुद्ध पदार्थों का प्रयोग होने से **'विषम' नामक अलङ्कार** है,

इसके अतिरिक्त ''मणिपीठशायिनौ'' 'मृगद्विजालूनशिखेषु' इत्यादि पदों के विशेष अभिप्राय से प्रयुक्त होने के कारण यहाँ **परिकर अलङ्कार** भी है।

श्लोक-41 – द्विषन्निमित्ता .... मानिनाम्॥

अलङ्कार – राजा युधिष्ठिर की यह ''दुर्दशा'' उनके दुर्भाग्यवशात् नहीं है, प्रत्युत शत्रुजन्य है, अतः वह असहनीय है, इसके समर्थन में वैधर्म्यपूर्वक सामान्य दिया गया है – ''परैरपर्यासितवीर्यसम्पदां पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' अतः यहाँ **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार** है। ''इव'' शब्द के द्वारा मन के उन्मूलन की सम्भावना होने से **उत्प्रेक्षा अलङ्कार** भी है। साथ ही पूर्वार्द्ध में 'म' वर्ण तथा उत्तरार्द्ध में र वर्ण की आवृत्ति होने से **अनुप्रास अलङ्कार** भी है।

श्लोक-42 – ''विहाय शान्तिं .... न भूभृतः''।

अलङ्कार – इस पद्य में **''अर्थान्तरन्यास''** और **''अनुप्रास''** अलङ्कार की संसृष्टि है। शत्रुओं को नष्ट करने के लिए शम को त्याग कर अपने विख्यात तेज को धारण कीजिए - इस विशेष कथन का समर्थन ''शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः'' रूपी सामान्य कथन से होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है। पूर्वार्द्ध में 'वकार' की एवं उत्तरार्द्ध में 'नकार' की आवृत्ति होने से **अनुप्रास** अलङ्कार भी है।

श्लोक-43 – पुरः सरा .... मनस्विता।

अलङ्कार– प्रस्तुत श्लोक में **''अर्थान्तरन्यास''** अलङ्कार है।

श्लोक-44 – अथ क्षमामेव .... पावकम्।

अलङ्कार – प्रस्तुत श्लोक में ''लक्ष्मीपतिलक्ष्म'' में 'ल', 'क्ष्' एवं 'म' की आवृत्ति होने के कारण **छेकानुप्रास** है।

श्लोक-45 – न समय .... सन्धिदूषणानि॥

अलङ्कार – 'ते समय परिरक्षणं न क्षमम्' इस विशेष कथन का 'विजयार्थिनः क्षितीशाः अरिषु सन्धिदूषणानि सोपधि विदधति' इस सामान्य कथन से समर्थन होने के कारण **''अर्थान्तरन्यास''** अलङ्कार है, इसके अतिरिक्त ''परेषु-परेषु'' में **यमक** तथा पूर्वार्द्ध में रकार एवं उत्तरार्द्ध में धकार इत्यादि वर्णों की आवृत्ति होने से **'अनुप्रास'** भी है।

श्लोक-46 – विधिसमय .... समभ्येतु भूयः।

अलङ्कार – इस श्लोक में उपमा के चारों अवयव विद्यमान हैं। अतः **पूर्णोपमा अलङ्कार** है। इसमें द्वितीयान्त पद ''त्वाम्'' (युधिष्ठिर) उपमेय ''दिनकृतम्'' (सूर्य) उपमान ''दीप्तिसंहार- जिह्मम्'' शिथिलवसुम् आपत्पयोधौ, मग्नम् एवम् उदीयमानम् इत्यादि साधारणधर्म तथा ''इव'' वाचक शब्द है।

च. सुभाषित/सूक्तियाँ एवं कथन

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के महत्त्वपूर्ण संवाद/कथन/सूक्तियाँ

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
01.	**आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तःपुर समागत इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।**	राजा अपने नगर में प्रवेश करके और अन्तःपुर की स्त्रियों से मिलकर यहाँ की बातों को याद करेगा अथवा नहीं।	**अनसूया**
02.	**न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।**	उसप्रकार की सुन्दर आकृतियाँ गुणों से रहित नहीं होती हैं।	**प्रियंवदा**
03.	**गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।**	गुणवान् व्यक्ति को कन्या देनी चाहिए, यह (माता-पिता का) प्रथम संकल्प होता है।	**अनसूया**
04.	**ननु सख्याः शकुन्तलायाः सौभाग्यदेवताऽर्चनीया**	सखि शकुन्तला के सौभाग्यदेवता (पति) की भी तो पूजा करनी है	**अनसूया**
05.	**सखि, अतिथीनामिव निवेदितम्**	सखी! किसी अतिथि की सी यह आवाज है।	**अनसूया**
06.	**ननूटजसन्निहिता शकुन्तला।**	शकुन्तला तो कुटी पर उपस्थित है ही।	**प्रियंवदा**
07.	**अद्य पुनर्हृदयेनासंनिहिता।**	किन्तु आज वह हृदय से अनुपस्थित है। अर्थात् आज उसका मन कहीं और है।	**अनसूया**
08.	**विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् (4.1)**	एकाग्रचित्त से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए मुझ तपस्वी को नही देख रही हो।	**दुर्वासा (नेपथ्ये)**
09.	**स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥ (4.1)**	वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण नहीं करेगा, जैसे उन्मत्त व्यक्ति पहले कही बात को स्मरण नही करता है।	**दुर्वासा (नेपथ्ये)**
10.	**हा धिक्, हा धिक्। अप्रियमेव संवृत्तं कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला।**	हाय हाय धिक्कार है। अनर्थ हो गया। किसी पूजनीय व्यक्ति के प्रति शून्य हृदयवाली शकुन्तला ने कुछ अपराध कर दिया है।	**प्रियंवदा**
11.	**न खलु यस्मिन् कस्मिन्नपि। एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः**	जिस किसी साधारण व्यक्ति के प्रति नही। ये तो शीघ्र कुपित हो जाने वाले महर्षि दुर्वासा हैं।	**प्रियंवदा**
12.	**कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।**	अग्नि के अतिरिक्त और कौन जला सकता है।	**अनसूया**
13.	**सखि, प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति**	सखी! स्वभाव से टेढ़े वे महर्षि दुर्वासा किसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं।	**प्रियंवदा**
14.	**भगवन्, प्रथम इति प्रेक्ष्याविज्ञाततपः-प्रभावस्य दुहितृजनस्य भगवतैकोऽपराधो मर्षयितव्य इति।**	भगवन्! आपके तप के प्रभाव को न जानने वाली आपकी पुत्रीजन शकुन्तला का यह पहला अपराध है– यह समझकर आपके द्वारा उसका यह एक अपराध क्षमा कर दिया जाना चाहिए।	**प्रियंवदा**

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
15.	**न मे वचनमन्यथा भवितुमर्हति।**	मेरा वचन असत्य नहीं हो सकता	**प्रियंवदा** (दुर्वासा)
16.	**अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति मन्त्रयमाण एवान्तर्हितः।**	'पहचान के आभूषण को दिखाने से मेरा शाप समाप्त हो जाएगा'–यह कहते कहते ही वे अदृश्य हो गए।	**प्रियंवदा** (दुर्वासा) कथन को बताती है।
17.	**अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम्**	उस राजर्षि के द्वारा अपने नाम से अङ्कित अँगूठी स्मृति-चिह्न के रूप में शकुन्तला की अंगुली में स्वयं पहनायी गयी थी	**अनसूया**
18.	**वामहस्तोपहितवदनाऽऽलिखितेव प्रियसखी**	बायें हाथ पर मुँह रखी हुई प्रियसखी शकुन्तला चित्रित सी बैठी हुई है।	**प्रियंवदा**
19.	**भर्तृगतया चिन्तयात्मानमपि नैषा विभावयति। किं पुनरागन्तुकम्।**	पति के ध्यान में मग्न होने के कारण उसे अपने आपकी सुध नही है, फिर अतिथि की बात ही क्या है।	**प्रियंवदा**
20.	**प्रियंवदे, द्वयोरेव नौ मुख एव वृत्तान्तस्तिष्ठतु**	प्रियंवदा, यह समाचार हम दोनों के मुख तक ही सीमित रहे।	**अनसूया**
21.	**रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।**	स्वभाव से ही कोमल प्रियसखी शकुन्तला की रक्षा करनी चाहिए। (अन्यथा यह समाचार सुनकर उसे बहुत आघात पहुँचेगा)	**अनसूया**
22.	**को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति**	भला कौन नवमालिका (चमेली) को गर्मजल से सींचेगा।	**प्रियंवदा**
23.	**तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।**	यह संसार दो तेजों चन्द्रमा और सूर्य के एक साथ अस्त एवं उदित होने से अपनी दशाओं के परिवर्तित होने के विषय में मानो नियंत्रित अर्थात् शिक्षित किया जा रहा है।	**कण्व का शिष्य**
24.	**इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्र दुःसहानि (4.3)**	निश्चय ही स्त्रियों को अपने इष्टजन (प्रियतमों) के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असह्य होते हैं।	**कण्व का शिष्य**
25.	**तेन राज्ञा शकुन्तलायामनार्यमाचरितम्।**	राजा ने शकुन्तला के साथ अशिष्ट व्यवहार किया है।	**अनसूया**
26.	**काम इदानीं सकामो भवतु येनासत्यसन्धे जने शुद्धहृदया सखी पदं कारिता।**	कामदेव की अब इच्छा पूर्ण हो, जिसने असत्यप्रतिज्ञ व्यक्ति (दुष्यन्त) के प्रति शुद्ध हृदयवाली सखी शकुन्तला का प्रेम कराया है।	**अनसूया**
27.	**दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्। ननु सखीगामी दोष इति।**	कष्ट सहन करने वाले तपस्वियों में से किससे प्रार्थना करें। हमारी सखी पर दोष आयेगा।	**अनसूया**

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
28.	कथं स राजर्षिस्तादृशानि मन्त्रयित्वैतावतः कालस्य लेखमात्रमपि न विसृजति।	कैसे वह राजर्षि उस प्रकार की प्रेमभरी मीठी-मीठी बातें करके इतने दिनों से एक पत्र भी नहीं भेज रहे हैं।	अनसूया
29.	न पारयामि प्रवासप्रतिनिवृत्तस्य तातकाश्यपस्य दुष्यन्तपरिणीतामापन्नसत्त्वां शकुन्तलां निवेदयितुम्	मैं प्रवास से लौटे हुए पिता कण्व को यह समाचार बताने में असमर्थ हूँ कि शकुन्तला का गान्धर्वविवाह दुष्यन्त से हो गया है, और वह गर्भिणी है।	अनसूया
30.	दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि पावक एवाहुतिः पतिता	सौभाग्य से धुएँ से व्याकुल दृष्टि वाले भी यजमान की आहुति अग्निकुण्ड में ही गिरी है।	प्रियंवदा (कण्व का कथन)
31.	वत्से, सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवा-शोचनीयासि संवृत्ता।	पुत्री! योग्य शिष्य को दी गयी विद्या की तरह तुम अशोचनीय हो गयी हो।	प्रियंवदा (कण्व का कथन)
32.	एते खलु हस्तिनापुरगामिन ऋषयः शब्दाय्यन्ते।	ये हस्तिनापुर को जाने वाले ऋषि लोग पुकारे जा रहे हैं।	प्रियंवदा
33.	जाते भर्तुर्बहुमानसूचकं महादेवीशब्दं लभस्व	पुत्री, पति के बहुत सम्मानसूचक 'महारानी' शब्द को प्राप्त करो।	एक तपस्विनी
34.	वत्से, वीरप्रसविनी भव!	पुत्री, वीर पुत्र को जन्म देने वाली हो	दूसरी तापसी
35.	वत्से भर्तुर्बहुमता भव।	बेटी! पति द्वारा बहुत सम्मानवाली हो।	तृतीया तापसी
36.	दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति।	अब मेरे लिए सखियों के द्वारा अलंकृत होना दुर्लभ हो जाएगा।	शकुन्तला
37.	अवेहि तनयां ब्रह्मन् अग्निगर्भां शमीमिव (4.4)	अपनी पुत्री को अपने अन्दर अग्नि को धारण करने वाले शमीवृक्ष के समान जानो	प्रियंवदा (आकाशवाणी)
38.	आभरणोचितं रूपमाश्रमसुलभैः प्रसाधनैर्विप्रकार्यते।	आभूषणों के योग्य यह सुन्दर रूप आश्रम में प्राप्य अलंकारों से विकृत किया जा रहा है।	प्रियंवदा
39.	सखि, उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्।	सखी, इस मङ्गलवेला पर तुम्हारा रोना उचित नही है।	दोनों सखियाँ
40.	क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम्	किसी वृक्ष ने चन्द्रमा के तुल्य श्वेत मांगलिक रेशमी वस्त्र दिया।	कण्व का शिष्य
41.	भर्तुर्गेहेऽनुभवितव्या राजलक्ष्मीः।	तुम पति के घर में राजलक्ष्मी का अनुभव करोगी।	प्रियंवदा
42.	यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्ट-मुत्कण्ठया	आज शकुन्तला विदा होगी, इसलिए मेरा हृदय दुःख से भर रहा है।	महर्षि कण्व
43.	पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः	गृहस्थ लोग पहली बार पुत्री के वियोग के दुःख से कितने अधिक दुःखित होते होंगे।	महर्षि कण्व
44.	ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।	शर्मिष्ठा जिस प्रकार ययाति को अत्यधिकप्रिय थी, उसी तरह तुम भी पति को प्रिय होओ।	काश्यप (कण्व)

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
45.	**वत्से, इतः सद्योहुताग्नीन् प्रदक्षिणीकुरुष्व**	पुत्री! अभी हवन की गयी अग्नि की इधर से प्रदक्षिणा करो।	**महर्षि कण्व**
46.	**भगवन्! वरः खल्वेषः नाशीः।**	भगवन्! यह तो वरदान है, केवल आशीर्वाद नही।	**गौतमी**
47.	**भो भोः संनिहितास्तपोवनतरवः! सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्**	हे समीपस्थ तपोवन के वृक्षों! वही यह शकुन्तला पति के घर जा रही है, आप सभी लोग अनुमति दें।	**महर्षि कण्व**
48.	**अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः। (4.10)**	वृक्षों ने इस शकुन्तला को पतिगृह जाने की अनुमति दे दी है।	**महर्षि कण्व**
49.	**शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः।**	इस शकुन्तला का मार्ग शान्त और अनुकूल वायु वाला एवं कल्याण करने वाला हो।	**आकाश में एक ध्वनि सुनायी पड़ती है।**
50.	**उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः। (4.12)**	मृगियों ने कुश के ग्रास को उगल दिया है, मोरों ने नाचना छोड़ दिया है	**प्रियंवदा**
51.	**अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः। (4.12)**	लतायें पीले पत्तों को गिराकर मानों आँसुओं को छोड़ रही हैं।	**प्रियंवदा**
52.	**तात, लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रयिष्ये।**	हे पिताजी! मैं अपनी लता-बहिन वनज्योत्स्ना से विदाई ले लूँ।	**शकुन्तला**
53.	**अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु भविष्यामि**	आज से मैं तुमसे दूर हो जाऊँगी।	**शकुन्तला**
54.	**अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः।**	अब मैं इस वनज्योत्स्ना और तुम्हारे विषय में निश्चिन्त हो गया हूँ।	**महर्षि कण्व**
55.	**हला एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते निक्षेपः**	सखियों, इस लता को तुम दोनों के ही हाथ में सौंप रही हूँ।	**शकुन्तला**
56.	**अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः।**	इस जन (हम दोनों) को किसके हाथ में सौंप रही हो।	**दोनों सखियाँ**
57.	**को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते**	यह कौन मेरे वस्त्र से लिपट रहा है।	**शकुन्तला**
58.	**सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते**	पुत्रवत् पाला गया यह मृग तेरा मार्ग नहीं छोड़ रहा है।	**महर्षि कण्व**
59.	**वत्स किं सहवासपरित्यागिनीं मामनुसरसि।**	पुत्र, साथ छोड़कर जाने वाली मुझ (शकुन्तला) के पीछे-पीछे क्यों आ रहे हो।	**शकुन्तला**
60.	**वाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम् (4.15)**	अश्रुप्रवाह को धैर्यपूर्वक रोको।	**महर्षि कण्व**
61.	**मार्गे पदानि खलु ते विषमी भवन्ति।**	इस ऊबड़-खाबड़ भूमि में तुम्हारे पैर लड़खड़ा रहे हैं।	**महर्षि कण्व**
62.	**भगवन्, ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते।**	भगवन्, यात्रा के समय प्रियव्यक्ति का जलाशय तक अनुगमन करना चाहिए–ऐसा सुना जाता है।	**शार्ङ्गरव**

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
63.	**गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति। (4.16)**	आशा का बन्धन असहय वियोग के दुःख को भी सहन करा देता है।	**अनसूया**
64.	**अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः।.... (4.17)**	संयम रूपी धन वाले हम लोगों को तथा अपने ऊँचे कुल को ध्यान में रखते हुए आप कोई व्यवहार करें।	**महर्षि कण्व**
65.	**भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः (4.17)**	इसके आगे तो भाग्य के अधीन है, वह हम वधू के सम्बन्धियों को नही कहना चाहिए।	**महर्षि कण्व**
66.	**वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्**	वनवासी होते हुए भी हम लोग लोक व्यवहार को जानने वाले हैं।	**महर्षि कण्व**
67.	**न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम**	वस्तुतः विद्वानों को कुछ भी अज्ञात नहीं है।	**शार्ङ्गरव**
68.	**शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने। (4.18)**	गुरुजनों = बडों की सेवा करना, सपत्नियों के साथ प्रियसखी जैसा व्यवहार करना।	**महर्षि कण्व**
69.	**यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः। (4.18)**	इस प्रकार आचरण करने वाली युवतियाँ गृहलक्ष्मी के पद को प्राप्त कर लेती हैं, और इसके प्रतिकूल आचरण करने वाली युवतियाँ कुल के लिए आधि बन जाती हैं।	**महर्षि कण्व**
70.	**वत्से, इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोः तत्र गन्तुम्।**	पुत्री इन दोनों का भी विवाह करना है, इनका वहाँ जाना उचित नहीं है।	**महर्षि कण्व**
71.	**मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि। (4.19)**	मेरे विरह से उत्पन्न शोक को शीघ्र ही भूल जाओगी।	**महर्षि कण्व**
72.	**तात, कदा नु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये?**	पिताजी मैं फिर कब तपोवन को देखूँगी? अर्थात् आप मुझे कब बुलायेंगे।	**शकुन्तला**
73.	**अतिस्नेहः पापशङ्की**	अत्यधिक प्रेम पाप (अनिष्ट) की आशङ्का करता है।	**दोनों सखियाँ**
74.	**भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी.... शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्। (4.20)**	बहुत दिनों तक चारों समुद्रों तक फैली हुई पृथ्वी की सपत्नी अर्थात् राजा की पटरानी होकर अपने पति दुष्यन्त के साथ आश्रम आओगी।	**महर्षि कण्व**
75.	**शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम् (4.21)**	नीवार को देखते हुए मेरा शोक अब कैसे शान्त हो सकेगा।	**महर्षि कण्व**
76.	**गच्छ! शिवास्ते पन्थानः सन्तु।**	जाओ। तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो।	**महर्षि कण्व**
77.	**तात! शकुन्तलाविरहितं शून्यमिव तपोवनं कथं प्रविशावः।**	पिताजी, शकुन्तला से रहित इस सूने तपोवन में हम कैसे प्रवेश करें।	**अनसूया एवं प्रियंवदा दोनों सखियाँ**
78.	**हन्त भोः! शकुन्तलां पतिकुलं विसृज्य लब्धमिदानीं स्वास्थ्यम्।**	अहा! शकुन्तला को ससुराल भेजकर अब मुझे मानसिक शान्ति प्राप्त हुई।	**महर्षि कण्व**
79.	**अर्थो हि कन्या परकीय एव। (4.22)**	कन्या वस्तुतः दूसरे का ही धन है।	**महर्षि कण्व**
80.	**जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा (4.22)**	मेरा यह ह्रदय उसी प्रकार अत्यन्त प्रसन्न हो रहा है, जिस प्रकार धरोहर को लौटाने पर धरोहर रखने वाले व्यक्ति का मन प्रसन्न होता है।	**महर्षि कण्व**

'उत्तररामचरितम्' की प्रमुख सूक्तियाँ एवं कथनों का विवरण

1. अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।
भावार्थ – निर्जन जनस्थान (दण्डकारण्य) में आपके चरितों से पत्थर भी रो पड़े थे और वज्र का भी हृदय फट गया था।
- **वक्ता** – लक्ष्मण, अङ्क - प्रथम (चित्रदर्शन)
श्रोता – राम एवं सीता।
छन्द – शिखरिणी। अतिशयोक्ति अलङ्कार

2. एते हि हृदयमर्मच्छिदः संसारभावाः।
ये सांसारिक भाव हृदय के मर्मस्थल को भेदन करने वाले हैं।
- **प्रथम अङ्क** – राम का सीता से कथन

3. इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयोः।
यह (सीता) घर में लक्ष्मी है, यह नेत्रों के लिए अमृत की शलाका है।
- प्रथम अङ्क में राम का कथन
शिखरिणी छन्द और रूपक अलङ्कार।

4. ''दुर्जनोऽसुखमुत्पादयति''
भाव – दुर्जन दुःख उत्पन्न करता है।
प्रथम अङ्क – सीता का कथन, राम और लक्ष्मण के समक्ष।

5. तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।
भाव – तीर्थ, जल और अग्नि, ये अन्य पदार्थों से शुद्धि के योग्य नहीं हैं।
- राम का कथन है। सीता के परिपेक्ष्य में। सीता और लक्ष्मण के सम्मुख प्रथम अङ्क। अनुष्टुप् छन्द। प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त अलंकार।

6. नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा
मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि॥
भावार्थ – सुगन्धित फूल का सिर पर रखा जाना स्वभावसिद्ध है, न कि पैरों से कुचला जाना।
- **प्रथम अङ्क** – राम का कथन। सीता को लक्ष्य करके। सीता और लक्ष्मण के सम्मुख।
दृष्टान्त अलङ्कार, वसन्ततिलका वृत्त।

7. सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम्।
भावार्थ – चाहे जो भी हो, जनता को प्रसन्न रखना सज्जनों का कर्त्तव्य है।
- राम का कथन। दुर्मुख के सम्मुख। अनुष्टुप् छन्द। प्रथम अङ्क

8. सन्तापकारिणो बन्धुजनविप्रयोगा भवन्ति।
भावार्थ – बन्धुजनों का वियोग दुःखदायी होता है।
- सीता का कथन (प्रथम अङ्क) राम, लक्ष्मण के सम्मुख।

9. ते हि नो दिवसा गताः।
भावार्थ – हमारे वे दिन बीत गये। अनुष्टुप् छन्द।
- राम का कथन, लक्ष्मण व सीता के सम्मुख (प्रथम अङ्क)

10. ''सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति।
भावार्थ– सज्जनों का सज्जनों से मिलन बड़े पुण्य से होता है।
- द्वितीय अङ्क (प्रथम श्लोक)
वन देवता का कथन, तापसी से। शिखरिणी वृत्त, अर्थान्तरन्यास अलङ्कार

11. वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हसि।
भावार्थ – वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल महापुरुषों के चित्त को कौन जान सकता है।
- द्वितीय अङ्क , वासन्ती का कथन आत्रेयी से।
अनुष्टुप् छन्द। विषम, अप्रस्तुतप्रशंसा अर्थापत्ति अलङ्कार।

12. अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥
भावार्थ– गम्भीरता के कारण अप्रकट एवं अन्दर छिपी हुई घोर वेदना से युक्त राम का करुण रस (शोक) पुटपाक के तुल्य है।
- तृतीय अङ्क (प्रथम श्लोक)।
मुरला का कथन तमसा से। लोपामुद्रा का सन्देश।
अनुष्टुप् छन्द, उपमा अलङ्कार

13. वीचीवातैः.............प्रेरितैस्तर्पयेति॥
भावार्थ – जल कणों से शीतल, पद्म-पराग की सुगन्ध को लाने वाली, धीरे-धीरे चलने वाली, तरङ्ग-वायुओं से रामचन्द्र की प्रत्येक मूर्च्छा के समय चेतना प्रदान करना।
मुरला द्वारा कहा गया लोपामुद्रा का संदेश 'गोदावरी' के लिए। तमसा के सम्मुख। शालिनी छन्द, समुच्चय अलङ्कार।

14. उचितमेव दाक्षिण्यं स्नेहस्य। संजीवनोपायस्तु मौलिक एव रामभद्रस्याद्य सन्निहितः।
भावार्थ – स्नेह की उदारता उचित ही है। किन्तु रामचन्द्र को होश में लाने का मौलिक उपाय (सीता) आज समीप ही विद्यमान है।
- तमसा का कथन मुरला से –

15. ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः।
यत्रोपकरणीभावमायात्येवंविधो जनः॥
भाव – ऐसे व्यक्तियों (सीता और राम जैसों) की दुरवस्था भी आश्चर्यजनक होती है, जिसमें ऐसे (पृथ्वी और गङ्गा जैसे) लोग सहायक होते हैं।

● **मुरला का कथन** – तमसा से।
अनुष्टुप् वृत्त, काव्यलिङ्ग अलंकार

16.अव्यग्रस्य पुनरस्य शोकमात्रद्वितीयस्य
पञ्चवटीप्रवेशो महाननर्थक इति।
भावार्थ – इस समय कार्यों में अव्यस्त और केवल शोकरूपी साथी से युक्त राम का पञ्चवटी में प्रवेश बहुत अनिष्टकारी है।
● मुरला का तमसा से कथन, राम के प्रति।

17.न त्वामवनिपृष्ठवर्तिनीमस्मत्प्रभावाद्
वनदेवता अपि द्रक्ष्यन्ति किमुतमर्त्याः?
भावार्थ – भूतल पर विद्यमान तुमको मेरे प्रभाव से वनदेवता भी नहीं देख सकेंगे, साधारण मनुष्यों की बात ही क्या।
● तमसा मुरला से भागीरथी द्वारा सीता से कही गयी बात को बताती है।

18.करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी।
भावार्थ – सीता करुण रस की साक्षात् मूर्ति अथवा शरीरधारिणी 'वियोगव्यथा' के तुल्य वन (पञ्चवटी) में आ रही हैं।
● गोदावरी से निकलती हुयी सीता को देखकर तमसा का मुरला से कथन।
मञ्जुभाषिणी वृत्त उत्प्रेक्षा अलङ्कार।

19. किसलयमिव..........केतकीगर्भपत्रम्।
भावार्थ – हृदयरूपी कमल को सुखाने वाला, कठोर और चिरस्थायी शोक सीता के शरीर को उसी प्रकार मलिन बना रहा है, जैसे शरत्कालीन धूप केतकी के फूल के अंदर के पत्ते को। मालिनी छन्द। उपमा, रूपक अलङ्कार।
● मुरला का तमसा से कथन, सीता के विषय में।

20. अपरिस्फुटनिक्वाणे कुतस्त्येऽपि त्वमीदृशी।
स्तनयित्नोर्मयूरीव चकितोत्कण्ठितं स्थिता॥
भावार्थ – मेघ की अस्पष्ट ध्वनि पर मोरनी के तुल्य तुम कहीं से आये हुए अस्पष्ट शब्द को सुनकर इस प्रकार आश्चर्ययुक्त और उत्कण्ठित हो गई हो।
● तमसा का सीता से कथन।
अनुष्टुप् वृत्त, उपमा अलङ्कार

21. यत्र द्रुमा अपि.........गिरेस्तटानि॥
भावार्थ – जहाँ वृक्ष इत्यादि मेरे बन्धु थे, जहाँ प्रिया के साथ बहुत समय रहा, यह वही आश्रमस्थान है। वसन्ततिलका छन्द। अर्थापत्ति अलंकार।
● राम का कथन नेपथ्य से।

22.अहमेवैतस्य हृदयं जानामि, ममैषः।
भावार्थ – मैं ही इनके हृदय को जानती हूँ और ये मेरे हृदय को।
● सीता का कथन तमसा से।

23.निष्कारणपरित्यागिनोऽप्येतस्य
दर्शनेनैवंविधेन कीदृशी मे हृदयावस्था।
भाव – अकारण परित्याग करने वाले भी इनके इस प्रकार के दर्शन से मेरे हृदय की कैसी अवस्था हो रही है।
● सीता का कथन तमसा से।

24. श्लोक–तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशात्
वियोगे दीर्घेऽस्मिञ्झटिति घटनात्स्तम्भितमिव
प्रसन्नं सौजन्याद्दयितकरुणैर्गाढकरुणं
द्रवीभूतं प्रेम्णा तव हृदयमस्मिन्क्षण इव।
भावार्थ – इस समय तुम्हारा हृदय निराशा से उदासीन-सा और अप्रिय कार्य के कारण खिन्न-सा, इस लम्बे विरहकाल में सहसा मिलन के कारण निश्चेष्ट-सा, सज्जनता से प्रसन्न-सा, प्रिय की करुणा से शोकातुर सा और प्रेम से द्रवीभूत सा हो रहा है।
शिखरिणी वृत्त, उत्प्रेक्षा अलंकार।
● तमसा का कथन सीता से।

25. प्रत्ययेन निष्कारणपरित्यागशल्यितोऽपि
बहुमतो मम जन्मलाभः।
भाव – अकारण परित्याग रूपी शल्य से विध कर भी मेरा संसार में जन्म लेना मेरे लिए श्लाघनीय है।
● सीता का कथन तमसा से।

26. अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्।
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते॥
भावार्थ – पति और पत्नी के हृदयरूपी तत्व के प्रेम का आश्रय होने के कारण 'सन्तान' यह अनुपम सुख की गाँठ कही जाती है। अनुष्टुप् छन्द।
● तमसा का कथन सीता से है।

27.ईदृशो जीवलोकस्य परिणामः संवृतः।
भाव – संसार का यही (दुःखद) परिणाम हुआ।
● सीता का कथन वासन्ती को सम्बोधित करके।

28.स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते धवलमधुरमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः।
भावार्थ – श्वेत, मधुर एवं मनोहर तुम्हारी दृष्टि दूध की नहर की तरह अपने हृदयेश्वर को स्नान कराती है।
उपमा, उत्प्रेक्षा अलंकार, मालिनी छन्द।
● तमसा का कथन सीता से।

29. पुनरिदमयं देवो रामः स्वयं वनमागतः।
भावार्थ – ये महाराज राम फिर स्वयं इस वन में आए हैं। – हरिणी छन्द
● वासन्ती का कथन राम के सम्मुख वन की वस्तुओं से।

30. पूजार्हः सर्वस्यार्यपुत्रो विशेषतो मम प्रियसख्याः।
भावार्थ – आर्यपुत्र सभी के पूजनीय हैं विशेष रूप से मेरी प्रियसखी (वासन्ती) के।
- **सीता का कथन** – वासन्ती को सम्बोधित करके।

31. त्वं जीवितं............किमतः परेण।
- वासन्ती का कथन राम से। राम द्वारा सीता से पहले कही बातें।
- वसन्ततिलका छन्द। आक्षेप अलंकार दशरूपक में यह श्लोक वाक्केलि के उदाहरणस्वरूप दिया गया है।

32.अयि कठोर! .... मन्यसे।
- वासन्ती का कथन राम से। द्रुतविलम्बित छन्द, उपमा अलङ्कार।

33.यैवं प्रलपन्तं प्रलापयसि।
भावार्थ – जो इस प्रकार विलाप करते हुए (राम) को और रूला रही है।
- सीता का कथन वासन्ती से।

34. पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते।
भावार्थ – तालाब में जल-प्रवाह की अधिकता होने पर जल को बाहर निकालना ही उसका एकमात्र प्रतीकार है। शोकजन्य क्षोभ में हृदय विलाप के द्वारा ही बचाया जाता है।
अनुष्टुप् छन्द, दृष्टान्त अलंकार।
- तमसा का कथन सीता से।

35. प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति।
भाव – जिस प्रकार धूप फूल को उसी प्रकार प्रिया का शोक जीवन को सुखाता है। शिखरिणी वृत्त। उपमा अलङ्कार।
- तमसा का कथन सीता से राम के प्रति।

36. ''किमिति किलैषा मंस्यत एष परित्याग एषोऽभिषङ्ग इति।''
भावार्थ – यह (तमसा) क्या सोचेंगी – यह परित्याग और यह आसक्ति?
- सीता का कथन।

37. एकोरसः करुण एव निमित्तभेदाद्।
भावार्थ – एक करुण रस ही है जो कारण-भेद से भिन्न होकर पृथक्-पृथक् परिणामों को प्राप्त कराता सा प्रतीत होता है।
वसन्ततिलका छन्द। उपमा (पूरे श्लोक में)
- तमसा का कथन सीता से।
- तृतीय अङ्क के अन्त में गङ्गा, पृथ्वी, वाल्मीकि और वशिष्ठ की प्रार्थना की गयी है।

38. गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।
भावार्थ – गुणवानों में गुण ही पूजा के स्थान होते हैं, न कोई चिह्न-विशेष और न आयु।
शिखरिणी वृत्त। अर्थान्तरन्यास अलंकार।
- **चतुर्थ अङ्क** – अरुन्धती का कथन कौशल्या से।

उत्तररामचरितम् की अन्य सूक्तियाँ

- लतायां पूर्वलूनायां प्रसवस्योद्भवः कुतः
- विना सीतादेव्यां किमिव हि न दुःखं रघुपते
- वीराणां समयो हि दारुणरसः स्नेहकमंबाधते।
- वृद्धास्ते न विचारणीयचरिताः
- प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य (तमसा का कथन, अङ्क-3)।
- सुलभसौख्यमिदानीं बालत्वं भवति।

शुकनासोपदेश की प्रमुख सूक्तियाँ

1. अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम् ।
भावार्थ – युवावस्था में उत्पन्न होने वाला (अज्ञानरूप) अन्धकार अत्यन्त दुर्दमनीय होता है।
- पूरे शुकनासोपदेश का वक्ता शुकनास है और श्रोता चन्द्रापीड है।

2. अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः ।
धन-मद अन्तिम अवस्था में भी शान्त नहीं होता।

3. चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः?
क्या चन्दन से उत्पन्न अग्नि जलाती नहीं?

4. तरलहृदयमप्रतिबुद्धं च मदयन्ति धनानि ।
चञ्चल मन वाले तथा अजागरूक बुद्धि वाले व्यक्ति को धन मतवाला बना देता है।

5. दुरन्तेयमुपभोगतृष्णिका ।
उपभोगरूपी मृगतृष्णिका अत्यधिक दुःखदायी अन्तवाली है।

6. प्रतिशब्द इव राजवचनमनुगच्छति जनो भयात् ।
भय से मनुष्य प्रतिध्वनि की तरह राजा के वचन का अनुसरण करते हैं।

7. इयमनार्या (लक्ष्मीः) लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते।
नीच स्वभाव वाली (लक्ष्मी) इसको पा लेने पर भी कष्ट से पालन होता है।

8. विह्वला हि राजप्रकृतिः ।
राज-स्वभाव निश्चय ही व्याकुल करने वाला है।

9. राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा राजलक्ष्मीः ।
राजलक्ष्मी राज्यरूपी विष से उत्पन्न आलस्य (तन्द्रा) को देने वाली है।

10. सरस्वतीपरिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति लक्ष्मीः ।
सरस्वती द्वारा स्वीकृत व्यक्ति को लक्ष्मी ईर्ष्या के कारण आलिङ्गन नहीं करती।

मेघदूत की प्रमुख सूक्तियाँ (पूर्वमेघ)

1. कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु । 5 ॥
भावार्थ – काम से व्याकुल (जन) चेतन एवं अचेतन के विषय में स्वभाव से ही दीन हो जाते हैं।

2. याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा ॥ 6 ॥
भावार्थ – अधिक गुण वाले व्यक्ति से की गई याचना फलवती न होने पर भी उत्तम है, नीच व्यक्ति से फलीभूत हुयी याचना भी अच्छी नहीं है।
● यहाँ अधिक गुण वाला 'मेघ' है।

3. आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम्
सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि ॥ 9 ॥
भावार्थ – आशा का बन्धन ही प्रेम से ओत-प्रोत, पुष्प सदृश कोमल तथा वियोग से शीघ्र टूटने वाले अबलाओं के हृदय को प्रायः रोके रहता है।

4. न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय,
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः ॥ 17 ॥
भावार्थ – नीच व्यक्ति भी पहले किये गये उपकार के कारण मित्र से विमुख नहीं होता फिर जो महान् है वह कैसे (विमुख होगा)?
● आम्रकूट के मित्र मेघ के आम्रकूट पर्वत पर अतिथि रूप में पहुँचने पर। यह सूक्ति कही गयी है।

5. रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय ॥ 20 ॥
भावार्थ – सभी रिक्त पदार्थ हल्के तथा पूर्णता गौरव के लिए होती है।

6. स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु ॥ 29 ॥
भावार्थ – स्त्रियों का प्रिय के प्रति विलास प्रारम्भिक प्रार्थना वाक्य होता है।
● मेघ के प्रति निर्विन्ध्या द्वारा दिखाये गये विभ्रम के संदर्भ में।

7. ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः ॥ 45 ॥
भावार्थ – रस का अनुभव किया हुआ कौन-सा पुरुष जंघा प्रदेश को प्रकट करने वाली स्त्री का परित्याग करने में समर्थ होगा।
● ज्ञातास्वाद से मेघ का और विवृतजघना से गम्भीरा का संकेत।

8. आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम् ॥ 57 ॥
भावार्थ – श्रेष्ठ जनों की सम्पत्तियाँ आर्त्तजनों के कष्टों को दूर कर देने वाली होती है।
● हिमालय की दावाग्नि को मेघ बुझाता है अतः उसे 'उत्तम' कहा गया है।

9. के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः ॥ 58 ॥
भावार्थ – निष्फल कर्म में प्रयत्न करने वाले कौन से व्यक्ति तिरस्कार के पात्र नहीं होते (अर्थात् अवश्य होते हैं)
● मेघ पर आक्रमणरूपी निष्फल प्रयास करने वाले 'शरभों' के संदर्भ में।

उत्तरमेघ की सूक्तियाँ

1. सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम् ॥ 20 ॥
भावार्थ – सूर्य के अस्त हो जाने पर कमल निश्चित रूप से अपनी शोभा को धारण नहीं करता।

2. प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा ॥ 35 ॥
भावार्थ – प्रायः सभी कोमल हृदय वाले व्यक्ति दयालु स्वभाव वाले होते हैं।

3. कान्तोदन्तः सुहृदुपगतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः ॥ 40 ॥
भावार्थ – मित्र से लिया गया प्रियतम का संदेश स्त्रियों के लिए मिलने से कुछ ही कम होता है।

4. नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण ॥ 49 ॥
भावार्थ – सुखः-दुःख की दशा पहिए की धार (तीलियों) के समान ऊपर-नीचे होती रहती है।

5. प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव॥ 54 ॥
भावार्थ – प्रेमी याचकों के अभीष्ट प्रयोजन को सिद्ध करना ही सज्जनों का उत्तर होता है।

नीतिशतकम् की महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ

1. विभूषणं मौनमपण्डितानाम् (1.7)
2. विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः। (1.10)
3. मूर्खस्य नास्त्यौषधम् (1.11)
4. साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः (1.12)
5. वाग्भूषणं भूषणम् (1.19)
6. विद्याविहीनः पशुः (1.20)
7. सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् (1.22)
8. प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति (1.27)
9. न खलु वयस्तेजसो हेतुः (1.38)
10. सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते (1.41)
11. वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा – (वसन्ततिलका) (38)
12. सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः (1.58)
13. स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् (1.71)
14. न निश्चितार्थाद् विरमन्ति धीराः (1.81)
15. मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम् (शिखरिणी) (1.82)
16. शीलं परं भूषणम् (1.83)
17. न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः (वसन्ततिलका) (1.84)

18. विधिरहो बलवानिति मे मतिः (1.92)
19. ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति (1.3)
20. न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् (4)
21. यदा किञ्चित् किञ्चित् बुधजनसकाशादवगतं
    तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः। (8)
22. न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् (9)
23. धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च।
24. सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुरूपं फलम्। (22)
25. तत्तेजस्वी पुरुषः परकृतनिकृतिं कथं सहते (29)
26. नानाफलं फलति कल्पलतेव भूमिः। (वसन्ततिलका) (37)
27. यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः। (शार्दूलविक्रीडित)
28. मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः (अनुष्टुप्) (42)
29. छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् (उपजाति) (41)
30. सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् (शिखरिणी) (57)
31. विभाति कायः करुणापराणां परोपकारेण न तु चन्दनेन। (उपजाति)
32. ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे (शार्दूलविक्रीडित)
33. निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः। (मालिनी) (70)
34. प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः।
    (शार्दूलविक्रीडित) 84)
35. यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः।
    (शार्दूलविक्रीडित)
36. भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि, काले फलन्ति पुरुषस्य
    यथैव वृक्षाः। (वसन्ततिलका) (97)
37. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः। (अनुष्टुप्)

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) की सूक्तियाँ

- हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः। 1/4
- न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः। 1/2
- सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः। 1/5
- स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्न यः संशृणुते स किं प्रभुः
- वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः। 1/8
- निरत्ययं साम न दानवर्जितम्। 1/12
- न भूरि दानं विरहय्य सत्क्रियाम्। 1/12
- गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया। 1/12
- अहो दुरन्ता बलवद् विरोधिता। 1/23
- तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारी समयादुराधयः।।
- व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।।
- अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्या स्वयमेव देहिनः।
- अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः।। 1/33
- विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः। 1/37
- परैरपर्यासितवीर्यसम्पदां पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्। 1/41
- व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहा शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।
- निराश्रया हन्त हता मनस्विता। 1/43
- अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशाः विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. कालिदास की 'नाट्यकृति' नही है –
(A) विक्रमोर्वशीयम् (B) ॠतुसंहारम्
(C) मालविकाग्निमित्रम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अङ्कों की संख्या है –
(A) 5 (B) 7
(C) 8 (D) 6

3. शकुन्तला का पालन-पोषण हुआ था –
(A) विश्वामित्र के आश्रम में (B) कण्व के आश्रम में
(C) दुर्वासा के आश्रम में (D) मारीच के आश्रम में

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रधान गुण है –
(A) माधुर्य (B) प्रसाद
(C) ओज (D) कोई नहीं

5. शकुन्तला को शाप दिया था –
(A) कण्व ने (B) मारीच ने
(C) विश्वामित्र ने (D) दुर्वासा ने

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक है –
(A) कण्व (B) माधव्य
(C) दुर्वासा (D) दुष्यन्त

7. शकुन्तला को विदाई के समय रेशमी वस्त्र दिये थे–
(A) सखियों ने (B) मारीच ॠषि ने
(C) वृक्षों ने (D) कण्व ने

8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक है –
(A) शार्ङ्गरव (B) मातलि
(C) माधव्य (D) वसन्तक

9. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका है –
(A) अनसूया (B) गौतमी
(C) प्रियंवदा (D) शकुन्तला

10. भ्रमर से शकुन्तला की रक्षा कौन करता है –
(A) अनसूया (B) दुष्यन्त
(C) गौतमी (D) कण्व

11. मृग का पीछा करते हुए राजा दुष्यन्त किसके आश्रम में पहुँचे –
(A) मारीच के आश्रम में (B) विश्वामित्र के आश्रम में
(C) कण्व के आश्रम में (D) वाल्मीकि के आश्रम में

12. शकुन्तला की विदाई का वर्णन किस अङ्क में है –
(A) द्वितीय अङ्क में (B) पञ्चम अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) चतुर्थ अङ्क में

13. शकुन्तला पति के चिन्तन में बैठी है –
(A) राजभवन में (B) उपवन में
(C) कुटिया के पास (D) नदी के किनारे

14. शकुन्तला की माता का नाम था –
(A) मेनका (B) गौतमी
(C) हंसपदिका (D) वसुमती

15. शकुन्तला के पुत्र का नाम था –
(A) सर्वदमन (भरत) (B) गौतम
(C) हारीत (D) नारद

16. शकुन्तला की अँगूठी गिरी थी –
(A) शचीतीर्थ में (B) मार्ग में
(C) सोमतीर्थ में (D) प्रभातीर्थ में

17. दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था –
(A) सानुमती को (B) भानुमती को
(C) रम्भा को (D) उर्वशी को

18. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अङ्गी रस है –
(A) शृङ्गार (B) वीर
(C) करुण (D) हास्य

19. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' किसने कहा –
(A) दुष्यन्त ने (B) गौतमी ने
(C) शार्ङ्गरव ने (D) कण्व ने

20. दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह था –
(A) गान्धर्व (B) प्राजापत्य
(C) ब्रह्म (D) दैव

1. (B)	**2. (B)**	**3. (B)**	**4. (B)**	**5. (D)**	**6. (D)**	**7. (C)**	**8. (C)**	**9. (D)**	**10. (B)**
11. (C)	**12. (D)**	**13. (C)**	**14. (A)**	**15. (A)**	**16. (A)**	**17. (A)**	**18. (A)**	**19. (D)**	**20. (A)**

21. 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' किसने कहा –
(A) दुष्यन्त (B) कण्व
(C) विदूषक (D) शारद्वत

22. नाटक में 'जो बात सुनने योग्य न हो' उसे कहते हैं –
(A) आत्मगतम् (B) प्रकाशम्
(C) नेपथ्य (D) नान्दी

23. नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है –
(A) मध्य में (B) अन्त में
(C) प्रारम्भ में (D) कहीं भी।

24. अभिनेता जहाँ वेशभूषा धारण करते हैं, उसे कहते हैं–
(A) नान्दी (B) पूर्वरङ्ग
(C) नेपथ्य (D) रङ्गमञ्च

25. नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' से अभिप्रेत है –
(A) शङ्कर का बैल (B) मङ्गलाचरण
(C) एक देवता (D) अष्टमूर्ति शिव

26. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया –
(A) गेटे (B) विलियम जोन्स
(C) मैक्समूलर (D) शेक्सपियर

27. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पुरुष पात्रों में नहीं है –
(A) वसन्तक (B) माधव्य
(C) भद्रसेन (D) सोमरात

28. महर्षि कण्व का आश्रम था –
(A) मालिनी नदी के तट पर
(B) गङ्गा नदी के तट पर
(C) यमुना नदी के तट पर
(D) गौतमी नदी के तट पर

29. दुष्यन्त ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब महर्षि कण्व कहाँ गये हुए थे –
(A) सोमतीर्थ (B) शचीतीर्थ
(C) माघमेला प्रयाग (D) हरिद्वार

30. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का उपजीव्यग्रन्थ है –
(A) भागवतपुराण (B) रामायण
(C) महाभारत (D) वेद

31. मारीच ऋषि का आश्रम है –
(A) हेमकूट पर्वत में (B) विन्ध्याचल में
(C) चित्रकूट रामगिरि में (D) पञ्चवटी में

32. शकुन्तला के जन्मदाता पिता थे –
(A) कण्व (B) विश्वामित्र
(C) दुर्वासा (D) मारीच

33. शकुन्तला की प्रियसखी है –
(A) प्रियंवदा (B) सानुमती
(C) गौतमी (D) मेनका

34. 'अहो रागपरिवाहिणी गीतिः' राजा दुष्यन्त का यह कथन किसकी प्रशंसा में है –
(A) शकुन्तला के गाने पर
(B) गौतमी के गाने पर
(C) हंसपदिका के गाने पर
(D) वसुमती के गाने पर

35. 'कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुं प्रभवति' सूक्ति उद्धृत है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) मेघदूतम् से

36. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का पात्र है –
(A) वसन्तक (B) अगस्त्य
(C) अत्रि (D) शारद्वत

37. दुष्यन्त की विशेष रुचि रही है –
(A) द्यूत में (B) मृगया में
(C) मदिरापान में (D) गजारोहण में

38. अनसूया किसकी सखी है –
(A) उर्मिला की (B) सीता की
(C) शकुन्तला की (D) गौतमी की

39. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द है–
(A) आर्या (B) वसन्ततिलका
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) अनुष्टुप्

40. कण्व थे –
(A) तपस्वी (B) भिक्षुक
(C) पर्यटक (D) गृहस्थ

21. (C)	**22. (A)**	**23. (B)**	**24. (C)**	**25. (B)**	**26. (B)**	**27. (A)**	**28. (A)**	**29. (A)**	**30. (C)**
31. (A)	**32. (B)**	**33. (A)**	**34. (C)**	**35. (A)**	**36. (D)**	**37. (B)**	**38. (C)**	**39. (A)**	**40. (A)**

41. अभिज्ञानशाकुन्तलम् विभक्त है –
(A) वर्गों में (B) अध्यायों में
(C) अङ्कों में (D) सर्गों में

42. कालिदास की रचना नही है –
(A) रघुवंशम् (B) विक्रमाङ्कदेवचरितम्
(C) मेघदूतम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

43. ''अतिस्नेहः पापशङ्की'' सूक्ति उद्धृत है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) उत्तररामचरितम् से
(C) विक्रमोर्वशीयम् से (D) स्वप्नवासवदत्तम् से

44. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की कथा उद्धृत है –
(A) महाभारत (आदिपर्व) (B) महाभारत (वनपर्व)
(C) महाभारत (सभापर्व) (D) महाभारत (शान्तिपर्व)

45. ''अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्'' यह पंक्ति किसने किससे कही –
(A) दुष्यन्त ने अँगूठी से (B) शकुन्तला ने प्रियंवदा से
(C) गौतमी ने अनसूया से (D) विदूषक ने दुष्यन्त से

46. कालिदास की नाट्यकृतियाँ हैं –
(A) 7 (B) 3
(C) 2 (D) 4

47. कालिदास के सभी नाटक हैं –
(A) दुःखान्त (B) सुखान्त
(C) कल्पनान्त (D) उत्तेजनान्त

48. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कुल पद्य/श्लोक हैं –
(A) 180 (B) 196
(C) 150 (D) 200

49. कालिदास ने सर्वाधिक किस रीति का प्रयोग किया है –
(A) वैदर्भी (B) लाटी
(C) गौणी (D) पाञ्चाली

50. कालिदास के नाटकों में किस छन्द की प्रमुखता है–
(A) शार्दूलविक्रीडितम् (B) आर्या
(C) वसन्ततिलका (D) मालिनी

51. 'उपमासम्राट्' किस कवि को कहा जाता है –
(A) भारवि को (B) भास को
(C) कालिदास को (D) भवभूति को

52. भ्रमर से शकुन्तला की रक्षा करने का वर्णन किस अङ्क में है –
(A) सप्तम अङ्क में (B) प्रथम अङ्क में
(C) चतुर्थ अङ्क में (D) द्वितीय अङ्क में

53. ''दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) गौतमी का

54. महर्षि मारीच का शिष्य है –
(A) गौतम (B) हारीत
(C) गालव (D) नारद

55. दुष्यन्त के सेनापति का नाम है –
(A) सोमरात (B) भद्रसेन
(C) रैवतक (D) माधव्य

56. ''ईषदीषद्चुम्बितानि भ्रमरैः....'' नटी का यह गायन किस ऋतु से सम्बन्धित है –
(A) ग्रीष्म (B) वर्षा
(C) शरद् (D) बसन्त

57. ''ग्रीवाभङ्गाभिरामं..........स्तोकमुर्व्यां प्रयाति'' यह श्लोक किस रस का उदाहरण है –
(A) वीररस का (B) भयानकरस का
(C) अद्भुतरस का (D) शृङ्गाररस का

58. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कञ्चुकी का नाम है –
(A) माधव्य (B) शारद्वत
(C) सर्वदमन (D) वातायन

59. 'अपीतेषु' पद में समास है –
(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु
(C) नञ् (D) द्वन्द्व

60. ''कामी स्वतां पश्यति'' के 'कामी' पद में प्रत्यय है–
(A) णिनि (B) ङीप्
(C) ङीष् (D) ङीन्

41. (C)	**42. (B)**	**43. (A)**	**44. (A)**	**45. (A)**	**46. (B)**	**47. (B)**	**48. (B)**	**49. (A)**	**50. (B)**
51. (C)	**52. (B)**	**53. (C)**	**54. (C)**	**55. (B)**	**56. (A)**	**57. (B)**	**58. (D)**	**59. (C)**	**60. (A)**

61. ''पश्यामीव पिनाकिनम्'' यह वाक्य किसने कहा–
(A) दुष्यन्त ने सूत से (B) कण्व ने शार्ङ्गरव से
(C) दुर्वासा ने प्रियंवदा से (D) सूत ने दुष्यन्त से

62. ''भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'' यह सूक्ति है –
(A) मेघदूतम् की (B) नीतिशतकम् की
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की (D) कादम्बरी की

63. ''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति'' किसने कहा –
(A) अनसूया ने (B) प्रियंवदा ने
(C) शकुन्तला ने (D) गौतमी ने

64. ''अस्तशिखरं'' मे समास है –
(A) द्वन्द्वसमास (B) तत्पुरुषसमास
(C) द्विगुसमास (D) बहुव्रीहिसमास

65. ''उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्'' किसने किससे कहा–
(A) गौतमी ने शकुन्तला से
(B) कण्व ने शकुन्तला से
(C) दोनों सखियों ने शकुन्तला से
(D) अनसूया ने प्रियंवदा से

66. ''पातुं न .... व्यवस्यति जलम्'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) सर्वप्रथमं (B) द्वितीयं
(C) प्रथमं (D) प्रथमा

67. ''सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का अनसूया से
(B) कण्व का शकुन्तला से
(C) राजा का शार्ङ्गरव से
(D) गौतमी का शकुन्तला से

68. ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'' काश्यप (कण्व) का यह कथन किसके लिए है –
(A) राजा के लिए (B) वृक्षों के लिए
(C) ऋषियों के लिए (D) सखियों के लिए

69. ''शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने'' में कण्व ने किसे उपदेश दिया –
(A) प्रियंवदा को (B) अनसूया को
(C) शकुन्तला को (D) राजा को

70. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क का नाम है –
(A) आश्रमप्रवेश अङ्क (B) प्रत्याख्यान अङ्क
(C) विदा अङ्क (D) पश्चात्ताप अङ्क

71. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' शब्द से संकेतित/सम्बन्धित है –
(A) नूपुर (B) कङ्कण
(C) अँगूठी (D) कङ्कतम्

72. राजा दुष्यन्त की प्रथमपत्नी है –
(A) हंसपदिका (B) वसुमती
(C) शकुन्तला (D) मेनका

73. राजा दुष्यन्त की द्वितीय पत्नी (प्रेमिका) थी –
(A) वसुमती (B) शकुन्तला
(C) हंसपदिका (D) प्रियंवदा

74. राजा दुष्यन्त की तृतीय पत्नी/प्रेमिका है –
(A) अनसूया (B) शकुन्तला
(C) वसुमती (D) हंसपदिका

75. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में कालिदास ने किसकी वन्दना की –
(A) विष्णु की (B) जल की
(C) अष्टमूर्ति शिव की (D) आकाश की

76. कण्व का शिष्य है –
(A) माधव्य (B) गालव
(C) शारद्वत (D) वसन्तक

77. शार्ङ्गरव किसका शिष्य है –
(A) विश्वामित्र का (B) दुर्वासा का
(C) मारीच का (D) कण्व का।

78. ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः'' इस सूक्ति का वक्ता कौन है –
(A) कण्व (B) दुष्यन्त
(C) शकुन्तला (D) मारीच

61. (D)	**62. (C)**	**63. (B)**	**64. (B)**	**65. (C)**	**66. (C)**	**67. (B)**	**68. (B)**	**69. (C)**	**70. (B)**
71. (C)	**72. (A)**	**73. (A)**	**74. (B)**	**75. (C)**	**76. (C)**	**77. (D)**	**78. (B)**		

79. शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर तक कौन जाती है –
(A) गौतमी (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) मेनका

80. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ''अग्निगर्भा शमीमिव'' कौन है –
(A) गौतमी (B) कण्व
(C) शकुन्तला (D) प्रियंवदा

81. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' किसने, किसके लिए कहा –
(A) दुष्यन्त ने शकुन्तला के लिए
(B) कण्व ने शकुन्तला के लिए
(C) दुष्यन्त ने प्रियंवदा के लिए
(D) शकुन्तला ने दुष्यन्त के लिए

82. ययाति की पत्नी थी –
(A) शर्मिष्ठा (B) गौतमी
(C) सानुमती (D) दाक्षायणी

83. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ''पुत्रकृतकः श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितकः'' कौन है –
(A) सर्वदमनः (B) मृगः (दीर्घापाङ्गः)
(C) वृक्षः (D) शारद्वतः

84. ''गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'' किसकी उक्ति है–
(A) अनसूया (B) प्रियंवदा
(C) शकुन्तला (D) गौतमी

85. दुष्यन्त द्वारा परित्यक्ता शकुन्तला किस आश्रम में निवास करती है –
(A) कण्वाश्रम में (B) मारीचाश्रम में
(C) विश्वामित्राश्रम में (D) वशिष्ठाश्रम में

86. शकुन्तलापरित्याग की घटना किस अङ्क में है –
(A) चतुर्थ अङ्क में (B) षष्ठ अङ्क में
(C) पञ्चम अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

87. ''अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः'' किसने कहा–
(A) शार्ङ्गरव ने (B) कण्व ने
(C) राजा ने (D) शारद्वत ने

88. ''संस्पृष्टमुत्कण्ठया'' के 'संस्पृष्टम्' पद में प्रकृति प्रत्यय है –
(A) सम्+पृच्छ्+क्त्वा (B) सम्+स्पृश्+क्त
(C) सम्+पा+ल्युट् (D) सम्+स्पृ+ष्टम्

89. ''समिद्वन्तः'' में प्रत्यय है –
(A) क्त (B) मतुप्
(C) क्तवतु (D) शतृ

90. ''शुश्रूषस्व'' में लकार है –
(A) लट् (B) लङ्
(C) लोट् (D) विधिलिङ्

91. ''भूयिष्ठम्'' पद में प्रत्यय है –
(A) इष्ठन् (B) क्त
(C) क्तिन् (D) ठ

92. ''प्रत्यर्पितन्यासः'' में समास है –
(A) अव्ययीभाव (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) तत्पुरुष

93. 'न्यषिच्यत' में सन्धि है –
(A) गुण (B) वृद्धि
(C) यण् (D) अयादि

94. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वाधिक सौन्दर्य वर्णित है –
(A) गौतमी का (B) प्रियंवदा का
(C) शकुन्तला का (D) मेनका का

95. तपस्वी होकर भी लौकिक व्यवहारों के ज्ञाता हैं –
(A) विश्वामित्र (B) दुर्वासा
(C) शार्ङ्गरव (D) कण्व

96. कण्वाश्रम की वरिष्ठतपस्विनी है –
(A) प्रियंवदा (B) दाक्षायणी
(C) गौतमी (D) सानुमती

97. द्वितीय अङ्क में राजा को मृगया न खेलने की सलाह कौन देता है –
(A) सेनापति (B) ऋषि कण्व
(C) दौवारिक (D) माधव्य

79. (A)	**80. (C)**	**81. (A)**	**82. (A)**	**83. (B)**	**84. (A)**	**85. (B)**	**86. (C)**	**87. (A)**	**88. (B)**
89. (B)	**90. (C)**	**91. (A)**	**92. (B)**	**93. (C)**	**94. (C)**	**95. (D)**	**96. (C)**	**97. (D)**	

98. शकुन्तला की क्षमायाचना के लिए दुर्वासा के पास जाती है –

(A) अनसूया (B) प्रियंवदा
(C) गौतमी (D) मेनका

99. वनज्योत्स्ना और आश्रमवृक्षों के साथ सहोदरों जैसा स्नेह किसका है –

(A) शकुन्तला का (B) प्रियंवदा का
(C) अनसूया का (D) गौतमी का

100. ''या सृष्टिः स्रष्टुराद्या'' के 'सृष्टिः' पद में प्रकृति-प्रत्यय है–

(A) सृज्+क्तिन् (B) सृ+ष्टिः
(C) सृ+क्त (D) सृजन्+ल्युट्

101. 'ओदकान्तम्' पद का क्या अर्थ है –

(A) जल के किनारे तक (B) चावल के पास
(C) चन्द्रमा (D) सूर्य का सारथि

102. ''परभृतविरुतं कलं यथा'' यहाँ 'परभृत'' पद का अर्थ है–

(A) कौआ (B) कोयल
(C) दूसरे की सखी (D) पशु

103. 'कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः' यहाँ 'कुशेशय' पद का अर्थ है –

(A) कमल (B) नवमालिका
(C) शकुन्तला (D) केसरवृक्ष

104. ''अरण्यौकसः'' पद का शब्दार्थ है –

(A) वनवासी (B) गृहस्थ
(C) ब्रह्मचारी (D) तपस्वी

105. ''ओषधीनां पतिः'' कौन है –

(A) सूर्य (B) चन्द्रमा
(C) अरुण (D) आश्विन वैद्य

106. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'प्रकृतिवक्रः सः' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है –

(A) कण्व के लिए (B) दुष्यन्त के लिए
(C) दुर्वासा के लिए (D) मारीच के लिए

107. 'अनन्यमानसा' किसका विशेषण है –

(A) प्रियंवदा का (B) शकुन्तला का
(C) गौतमी का (D) दुर्वासा का

108. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नायक दुष्यन्त की प्रकृति है –

(A) धीरललित (B) धीरप्रशान्त
(C) धीरोदात्त (D) धीरोद्धत

109. जर्मन विद्वान् गेटे द्वारा प्रशंसित नाटक है –

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) वेणीसंहारम्

110. दुष्यन्त को देवासुरसंग्राम की सूचना देने वाला है–

(A) विदूषक (B) मातलि
(C) मारीच (D) इन्द्र

111. वह स्थान जहाँ स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त रुकता है–

(A) कण्वाश्रम में (B) मारीच आश्रम में
(C) वशिष्ठ आश्रम में (D) विश्वामित्र आश्रम में

112. 'अपराजिता रक्षाकरण्डक' से सम्बद्ध है –

(A) दुष्यन्त (B) सर्वदमन (भरत)
(C) मारीच (D) कण्व

113. ''वामाः कुलस्याधयः'' यहाँ 'वामाः' का अर्थ है –

(A) प्रतिकूल आचरण वाली स्त्री (B) सुन्दर स्त्री
(C) बायें भाग में स्थित स्त्री (D) तरुणी स्त्री

114. ''भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने'' यहाँ 'परिजन' पद का अर्थ है –

(A) परिवार जन (B) सेवक जन
(C) पड़ोसी जन (D) आश्रमीय जन

115. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में विष्कम्भक है –

(A) अङ्क के अन्त में (B) अङ्क के प्रारम्भ में
(C) अङ्क के मध्य में (D) कहीं भी नहीं

116. दुष्यन्त के वंश का नाम था –

(A) सूर्यवंश (B) यदुवंश
(C) पुरुवंश (D) कुरुवंश

98. (B)	99. (A)	100. (A)	101. (A)	102. (B)	103. (A)	104. (A)	105. (B)	106. (C)	107. (B)
108. (C)	109. (A)	110. (B)	111. (B)	112. (B)	113. (A)	114. (B)	115. (B)	116. (C)	

117. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व ऋषि को किस अन्य नाम से वर्णित किया गया है –

(A) गौतम (B) काश्यप
(C) भारद्वाज (D) मारीच

118. 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है'– यह बात कण्व को किसने बतायी –

(A) अनसूया एवं प्रियंवदा ने (B) गौतमी ने
(C) अशरीरिणी आकाशवाणी ने (D) शिष्यों ने

119. शकुन्तला ने अपनी विदाई के समय जिस लता का आलिंगन किया, उसका नाम था –

(A) वनज्योत्स्ना (B) केसरलता
(C) सहकारलता (D) लतापत्रिका

120. विदाई के समय कण्व ने किस श्लोक से शकुन्तला को उपदेश दिया –

(A) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति....।
(B) पातुं न प्रथमम्.....।
(C) अस्मान् साधु विचिन्त्य.....।
(D) शुश्रूषस्व गुरून्......।

121. दुष्यन्त और शकुन्तला के विवाह की सूचना महर्षि कण्व को किसने दी –

(A) गौतमी ने
(B) अशरीरिणी छन्दोमयी आकाशवाणी ने
(C) सखियों ने
(D) शिष्यों ने

122. ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता'' – इस वाक्य में 'पावक' शब्द से किसको संकेतित किया गया है –

(A) कण्व को (B) दुष्यन्त को
(C) यज्ञदेवता को (D) यजमान को

123. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में वर्णित शार्ङ्गरव है–

(A) दुर्वासा का पुत्र (B) कण्व का भ्राता
(C) कण्व का शिष्य (D) दुष्यन्त का सेवक

124. ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'' यह कथन है –

(A) अनसूया का प्रियंवदा से
(B) अनसूया का गौतमी से
(C) प्रियंवदा का अनसूया से
(D) शकुन्तला का प्रियंवदा से

125. ''अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः'' यह कथन है –

(A) शकुन्तला का (B) अनसूया का
(C) प्रियंवदा का (D) अनसूया प्रियंवदा दोनों का

126. ''अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत'' यह उक्ति किसकी है –

(A) गौतमी की (B) कण्व की
(C) दुर्वासा की (D) मारीच की

127. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अशरीरिणी छन्दोमयीवाणी ने शकुन्तला विषयक वृत्तान्त किसे सुनाया –

(A) कण्व को (B) मेनका को
(C) मारीच को (D) दुष्यन्त को

128. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शापविषयक वृत्तान्त किस अङ्क में है –

(A) पञ्चम अङ्क में (B) चतुर्थ अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) षष्ठ अङ्क में

129. ''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं'' यह उक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किसकी है –

(A) शार्ङ्गरव की (B) शारद्वत की
(C) काश्यप (कण्व) की (D) दुर्वासा की

130. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में गौतमी है –

(A) शकुन्तला की सखी
(B) एक अप्सरा
(C) तपोवन की वरिष्ठ महिला
(D) मेनका की सखी

131. ''सुलभकोपो महर्षिः'' किसने किसको कहा –

(A) प्रियंवदा ने दुर्वासा को
(B) अनसूया ने दुर्वासा को
(C) गौतमी ने कण्व को
(D) मेनका ने मारीच को

117. (B) 118. (C) 119. (A) 120. (D) 121. (B) 122. (B) 123. (C) 124. (A) 125. (D) 126. (C) 127. (A) 128. (B) 129. (C) 130. (C) 131. (A)

132. मारीच ऋषि की पत्नी है –
(A) गौतमी (B) मेनका
(C) सानुमती (D) दाक्षायणी (अदिति)

133. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं –
(A) बयालीस (42) (B) बाइस (22)
(C) छियालीस (46) (D) पच्चीस (25)।

134. ''न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम'' सूक्ति है–
(A) किरातार्जुनीयम् की (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की
(C) शुकनासोपदेश की (B) शिवराजविजयम् की

135. निम्नलिखित में कौन सा कथन असत्य है –
(A) कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं।
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सात सर्ग हैं।
(C) शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व से ली गयी है।
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व, दुर्वासा, मारीच और विश्वामित्र आदि ऋषियों का नाम आया है।

136. कालिदास को किस राजा का आश्रयदाता राजकवि माना जाता है –
(A) पुष्यमित्र (B) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
(C) अशोक (D) स्कन्दगुप्त

137. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः'' यह कथन किसका है –
(A) दुर्वासा का (B) काश्यप/कण्व का
(C) मारीच का (D) विश्वामित्र का

138. दुष्यन्त की राजधानी थी –
(A) अयोध्या (B) इन्द्रप्रस्थ
(C) कण्वाश्रम (D) हस्तिनापुर

139. ''कविताकामिनी का विलास'' किस कवि को कहा गया है –
(A) कालिदास को (B) भारवि को
(C) माघ को (D) दण्डी को

140. शकुन्तला के चरित्र की विशेषता नही है –
(A) सुन्दरी (B) प्रकृतिप्रेमी
(C) कटुभाषिणी (D) लज्जाशीलता

141. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वप्रथम विदूषक का चित्रण किया गया है –
(A) प्रथम अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में
(C) चतुर्थ अङ्क में (D) इनमें से कोई भी नहीं

142. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में प्रवेशक का प्रयोग हुआ है–
(A) तृतीय अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में
(C) षष्ठ अङ्क में (D) पञ्चम अङ्क में

143. किस नाट्यकृति में कालिदास की कला मधुरतम फल के रूप में परिणत हुई है –
(A) विक्रमोर्वशीयम् में
(B) मालविकाग्निमित्रम् में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(D) इनमें से किसी में नहीं

144. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का 'भरतवाक्य' है –
(A) इमां सागरपर्यन्ताम्....।
(B) प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....।
(C) या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....।
(D) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्....।

145. ''लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' पद्यांश में अलङ्कार है–
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) अर्थान्तरन्यास (D) रूपक

146. ''अतिस्नेहः पापशङ्की'' यह सूक्ति किसने किससे कहा–
(A) सखियों ने शकुन्तला से
(B) गौतमी ने कण्व से
(C) दुष्यन्त ने सखियों से
(D) कण्व ने शकुन्तला से

147. ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'' यहाँ 'प्रकृतिपेलवा प्रियसखी' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है।
(A) शकुन्तला के लिए (B) प्रियंवदा के लिए
(C) सानुमती के लिए (D) अनसूया के लिए

132. (D) 133. (B) 134. (B) 135. (B) 136. (B) 137. (B) 138. (D) 139. (A) 140. (C)
141. (B) 142. (C) 143. (C) 144. (B) 145. (A) 146. (A) 147. (A)

148. पतिगृह जाती हुई शकुन्तला को काश्यप/कण्व ऋषि ने आशीर्वाद दिया था –
(A) चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का
(B) धन प्राप्त करने का
(C) महादेवी बनने का
(D) पूर्णस्वस्थ रहने का

149. ''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' यहाँ 'मम' पद से तात्पर्य है –
(A) कण्व का (B) विश्वामित्र का
(C) दुर्वासा का (D) दुष्यन्त का

150. दुष्यन्त के लिए सन्देश वचन किसने किससे कहा–
(A) कण्व ने शाङ्र्गरव से (B) कण्व ने गौतमी से
(C) कण्व ने प्रियंवदा से (D) कण्व ने शकुन्तला से

151. ''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्'' यह कथन है–
(A) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति
(B) प्रियंवदा का अनसूया के प्रति
(C) अनसूया का शकुन्तला के प्रति
(D) मेनका का सानुमती के प्रति

152. ''तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्'' यहाँ 'तपोधनं' शब्द प्रयुक्त हुआ है –
(A) कण्व के लिए (B) दुर्वासा के लिए
(C) मारीच के लिए (D) शार्ङ्गरव के लिए

153. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ययाति के किस पुत्र का उल्लेख किया गया है –
(A) यदु का (B) पुरु का
(C) तुर्वसु का (D) द्रुह्यु का

154. सानुमती पात्र है –
(A) उत्तररामचरितम् की (B) किरातार्जुनीयम् की
(C) कादम्बरी की (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की

155. राजशेखर ने कितने कालिदासों का उल्लेख किया है–
(A) 5 (B) 3
(C) 2 (D) 6

156. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की स्त्री-पात्र बोलती हैं –
(A) संस्कृत में (B) शौरसेनी प्राकृत में
(C) पालि में (D) खड़ी हिन्दी में

157. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सूत्रधार और नटी दोनों ने किस ऋतु का वर्णन किया है –
(A) ग्रीष्म ऋतु का (B) शिशिर ऋतु का
(C) वर्षा ऋतु का (D) हेमन्त ऋतु का

158. ''ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः'' इस श्लोक में छन्द है –
(A) शार्दूलविक्रीडितम् (B) स्रग्धरा
(C) हरिणी (D) शिखरिणी

159. ''असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा'' यहाँ 'क्षत्रपरिग्रहक्षमा' से किसका संकेत है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) क्षत्रियों की क्षमा का

160. ''वत्से, वीर प्रसविनी भव'' शकुन्तला के लिए यह आशीर्वाद किसने दिया –
(A) एक तापसी ने (B) गौतमी ने
(C) मारीच ने (D) कण्व ने

161. ''उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) गौतमी का

162. ''वामाः कुलस्याधयः'' में 'आधयः' पद का क्या अर्थ है–
(A) मानसिक व्याधि (B) बाधा
(C) मोक्ष (D) आधा

163. ''मा स्म प्रतीपं गमः'' में 'प्रतीपम्' पद का क्या अर्थ है–
(A) प्रतिकूल (विपरीत) (B) अनुकूल
(C) आचरण (D) चरित्र

164. ''तात! कदा नु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) गौतमी का

148. (A) 149. (A) 150. (A) 151. (A) 152. (B) 153. (B) 154. (D) 155. (B) 156. (B) 157. (A)
158. (B) 159. (C) 160. (A) 161. (A) 162. (A) 163. (A) 164. (C)

165. दुष्यन्त की कौन सी रानी पञ्चम अङ्क में सङ्गीत का अभ्यास कर रही है –
(A) हंसपदिका (B) वसुमती
(C) शकुन्तला (D) दाक्षायणी

166. रानी वसुमती के प्रेम में राजा दुष्यन्त किसे भूल गया है–
(A) हंसपदिका को (B) सानुमती को
(C) प्रियंवदा को (D) शकुन्तला को

167. हंसपदिका अपने गान के माध्यम से किसे उलाहना देती है –
(A) राजा दुष्यन्त को (B) माधव्य को
(C) शकुन्तला को (D) कण्व को

168. कण्व शिष्यों के आने की सूचना राजा दुष्यन्त को किसने दिया –
(A) प्रतीहारी ने (B) कञ्चुकी वातायन ने
(C) विदूषक माधव्य ने (D) पुरोहित सोमरात ने

169. हस्तिनापुर पहुँचकर शकुन्तला का कौन सा नेत्र फड़कने लगा –
(A) बायाँ नेत्र (B) दाहिना नेत्र
(C) दोनों नेत्र (D) कभी बायाँ कभी दायाँ

170. ''भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः'' यह कथन किसका है –
(A) शार्ङ्गरव का (B) शारद्वत का
(C) कण्व का (D) पुरोहित सोमरात का

171. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सेनापति का नाम है –
(A) आत्रेय (B) भद्रसेन
(C) मैत्रेय (D) वसन्तक

172. ''स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्'' यह कथन किसने किसके लिए कहा है –
(A) शार्ङ्गरव ने राजा दुष्यन्त के लिए
(B) कण्व ने शारद्वत के लिए
(C) दुष्यन्त ने सोमरात के लिए
(D) गौतमी ने दुष्यन्त के लिए

173. शकुन्तला द्वारा पुत्रवत्पालित मृग का क्या नाम है–
(A) दीर्घापाङ्ग (B) मृगानुसारी
(C) मृगाङ्क (D) पिनाकी

174. 'शकुन्तला सन्तानोत्पत्ति तक मेरे घर में ही रहे।' यह वाक्य किसने कहा –
(A) मारीच ने (B) पुरोहित सोमरात ने
(C) कण्व ने (D) दुष्यन्त ने

175. राजा दुष्यन्त की प्रतीहारी (द्वारपालिका) का क्या नाम है–
(A) सानुमती (B) बेतवारानी
(C) वेत्रवती (D) सोमवती

176. ''पाटच्चर, किमस्माभिर्जातिः पृष्टा'' यहाँ 'पाटच्चर' पद का क्या अर्थ है –
(A) चोर (B) श्याल
(C) राजा (D) कोतवाल

177. ''काव्येषु नाटकं रम्यम्'' में किस नाटक का निर्देश है –
(A) उत्तररामचरितम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) वेणीसंहारम्

178. ''इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी'' यहाँ 'तन्वी' पद से किसका सङ्केत किया गया है –
(A) प्रियंवदा का (B) चन्द्रमा का
(C) कमल का (D) शकुन्तला का

179. ''आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्'' यह वाक्य किसने किसके लिए कहा –
(A) राजा ने शकुन्तला के लिए
(B) कण्व ने शिष्य के लिए
(C) शकुन्तला ने राजा के लिए
(D) सखियों ने अग्नि के लिए

180. ''लब्धावकाशो मे मनोरथः'' यह वचन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) राजादुष्यन्त का
(C) शकुन्तला का (D) कण्व का

165. (A) 166. (A) 167. (A) 168. (B) 169. (B) 170. (A) 171. (B) 172. (A) 173. (A) 174. (B) 175. (C) 176. (A) 177. (C) 178. (D) 179. (A) 180. (B)

181. कौशिकगोत्रनामधेयः राजर्षिः कः अस्ति –
(A) कण्वः (B) मारीचः
(C) विश्वामित्रः (D) दुर्वासाः

182. मेनका के आगमन के समय विश्वामित्र किस नदी के तट पर उग्र तपस्या कर रहे थे –
(A) गौतमी नदी (B) यमुना नदी
(C) मालिनी नदी (D) गङ्गा नदी

183. राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला से क्या पूछा –
(A) अपि तपो वर्धते?
(B) कुशलिनी अस्ति वा?
(C) स्वास्थ्यं कथम् अस्ति?
(D) भवत्याः नाम किम्?

184. ''अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू'' राजा का यह कथन किसके लिए है –
(A) शकुन्तला के लिए – अङ्क 1
(B) प्रियंवदा के लिए – अङ्क 4
(C) अनसूया के लिए – अङ्क 4
(D) तपोवन कि लिए – अङ्क 1

185. ''दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभिः'' यहाँ 'वनलताभिः' से किसका सङ्केत किया गया है –
(A) रानियों का (B) तापसकुमारियों का
(C) जङ्गली पशुओं का (D) उद्यानसेविकाओं का

186. सोमतीर्थ जाते समय अतिथिसत्कार का दायित्व कण्व ने किसको दिया था –
(A) शिष्य शारद्वत को (B) गौतमी को
(C) शकुन्तला को (D) प्रियंवदा को

187. ''आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः'' यह कथन किसने किससे कहा है –
(A) वैखानस ने दुष्यन्त से
(B) कण्व ने शकुन्तला से
(C) राजा ने सूत से
(D) शिष्य ने गुरु से

188. ''सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि'' इस वाक्य से क्या निर्दिष्ट है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कथानक का प्रयोजन
(B) कालिदास को पुत्रप्राप्ति
(C) कुमार कार्तिकेय का जन्म
(D) दुष्यन्त का शकुन्तला से विवाह होना

189. दुष्यन्त तथा शकुन्तला का पुनर्मिलन किस अङ्क में होता है –
(A) चतुर्थ (B) तृतीय
(C) सप्तम (D) प्रथम

190. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के समालोचकों ने किसे ''निसर्गकन्या'' की उपाधि दी है –
(A) प्रियंवदा (B) शकुन्तला
(C) अनसूया (D) मेनका

191. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किन अङ्कों में अनसूया एवं प्रियंवदा नहीं दिखलायी पड़ती हैं –
(A) प्रथम एवं षष्ठ अङ्को में
(B) द्वितीय एवं सप्तम अङ्क में
(C) तृतीय एवं सप्तम अङ्क में
(D) पञ्चम, षष्ठ एवं सप्तम अङ्कों में

192. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किन अङ्कों में शकुन्तला की उपस्थिति नहीं है –
(A) द्वितीय एवं षष्ठ अङ्क में
(B) तृतीय एवं सप्तम अङ्क में
(C) पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में
(D) द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में

193. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में महर्षि कण्व दिखलाई पड़ते है–
(A) सभी अङ्कों में (B) केवल चतुर्थ अङ्क में
(C) प्रथम अङ्क छोड़कर सभी अङ्कों में
(D) केवल चतुर्थ एवं पञ्चम अङ्क में

194. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक (माधव्य) का वर्णन प्राप्त होता है –
(A) द्वितीय, पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में
(B) प्रथम एवं तृतीय अङ्क में
(C) द्वितीय एवं तृतीय अङ्क में
(D) द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में

181. (C) 182. (A) 183. (A) 184. (A) 185. (B) 186. (C) 187. (A) 188. (A) 189. (C) 190. (B)
191. (D) 192. (A) 193. (B) 194. (A)

195. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में राजा की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका की सखी सानुमती किस अङ्क में आती है –

(A) पञ्चम अङ्क में (B) षष्ठ अङ्क में
(C) सप्तम अङ्क में (D) इनमें से कोई नहीं

196. ''धर्मारण्यं प्रविशति.......स्यन्दनालोक भीतः'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –

(A) गजः (B) अश्वः
(C) ऋषिः (D) कण्वः

197. वह 'औषधिविशेष' जिसे मारीच ऋषि ने सर्वदमन के हाथ में बाँधी थी –

(A) सञ्जीवनी (B) अमृतवटी
(C) अपराजिता (D) विशल्यकरणी

198. ''वत्स, चिरञ्जीव पृथ्वीं पालय'' यह आशीर्वाद दुष्यन्त को किसने दिया –

(A) कण्व ने (B) महर्षि मारीच ने
(C) दुर्वासा ने (D) ऋषियों ने

199. मारीच आश्रम में दुष्यन्त और शकुन्तला के पुनर्मिलन की बात महर्षि कण्व को किसने सूचित किया –

(A) गालव ने (B) सर्वदमन ने
(C) शार्ङ्गरव ने (D) गौतम ने
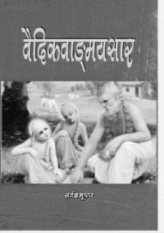
200. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के भरतवाक्य में छन्द है –

(A) मालिनी (B) रुचिरा
(C) वंशस्थ (D) आर्या

195. (B) 196. (A) 197. (C) 198. (B) 199. (A) 200. (B)

किरातार्जुनीयम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' यह किस कवि का प्रिय श्लोक है –
(A) भारवि (B) माघ
(C) कालिदास (D) भवभूति

2. भारवि किसके उपासक थे –
(A) ब्रह्मा (B) शिव
(C) विष्णु (D) सूर्य

3. बृहत्त्रयी में कौन सा महाकाव्य नहीं है –
(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशमहाकाव्यम् (D) नैषधीयचरितम्

4. किरातार्जुनीयम् में कितने सर्ग हैं –
(A) 17 (B) 18
(C) 19 (D) 20

5. अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं –
(A) कालिदास (B) दण्डी
(C) भारवि (D) माघ

6. ''न नो ननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु'' यह श्लोक किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है –
(A) भारवि के किरातार्जुनीयम् से
(B) माघ के शिशुपालवधम् से
(C) कालिदास के रघुवंशम् से
(D) वाल्मीकि के रामायण से

7. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' यह सूक्ति किसकी है –
(A) माघ (B) दण्डी
(C) भारवि (D) कालिदास

8. किस महाकाव्य के प्रथम तीन सर्गो को ''पाषाणत्रय'' कहा गया है –
(A) रघुवंशम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) कुमारसम्भवम्

9. भारवि का वास्तविक नाम था –
(A) रत्नाकर (B) श्रीधर
(C) दामोदर (D) नारायण स्वामी

10. किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में प्रमुख छन्द है –
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) वसन्ततिलका (D) पुष्पिताग्रा

11. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के अन्तिमश्लोक में छन्द है–
(A) वंशस्थ (B) पुष्पिताग्रा
(C) मालिनी (D) उपेन्द्रवज्रा

12. किरातार्जुनीयम् मङ्गलाचरण में छन्द प्रयुक्त है –
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) पुष्पिताग्रा (D) रुचिरा

13. पाण्डव वन में कितने वर्षो तक निवास किये –
(A) 14 वर्ष (B) 15 वर्ष
(C) 18 वर्ष (D) 13 वर्ष

14. किरातार्जुनीयम् का कथानक लिया गया है –
(A) महाभारत वनपर्व से (B) महाभारत आदिपर्व से
(C) महाभारत सभापर्व से (D) महाभारत भीष्मपर्व से

15. किरातार्जुनीयम् के प्रत्येक सर्ग के अन्त में कौन सा शब्द प्रयुक्त हुआ है –
(A) लक्ष्मीः (B) श्रीः
(C) सरस्वती (D) कुरूणाम्

16. ''आतपत्र'' किस कवि की उपाधि है –
(A) माघ (B) भारवि
(C) कालिदास (D) श्रीहर्ष

17. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में कुल कितने श्लोक हैं –
(A) 46 (B) 48
(C) 45 (D) 49

18. ''बृहत्त्रयी'' में कौन सा ग्रन्थ परिगणित है –
(A) रामायणम् (B) महाभारतम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) रघुवंशमहाकाव्यम्

19. भारवि का समय विद्वानों ने क्या माना है –
(A) 600 ई0 के आसपास (B) 800 ई0 के आसपास
(C) कालिदास के पहले (D) प्रथम शताब्दी के आसपास

1. (A)	**2. (B)**	**3. (C)**	**4. (B)**	**5. (C)**	**6. (A)**	**7. (C)**	**8. (B)**	**9. (C)**	**10. (B)**
11. (C)	**12. (B)**	**13. (D)**	**14. (A)**	**15. (A)**	**16. (B)**	**17. (A)**	**18. (C)**	**19. (A)**	

20. कवियों का उत्तरोत्तर सही कालक्रम माना जाता है–
(A) माघ-भारवि-श्रीहर्ष (B) भास-भारवि-अश्वघोष
(C) भास-माघ-कालिदास (D) वाल्मीकि-भास-भारवि

21. भारवि के बाद किसका समय माना जाता है –
(A) कालिदास का (B) माघ का
(C) व्यास का (D) भास का

22. भारवि, पूर्ववर्ती कवि माने जाते हैं –
(A) व्यास के (B) श्रीहर्ष के
(C) कालिदास के (D) अश्वघोष के

23. किरातार्जुनीयम् का मुख्य रस है –
(A) वीररस (B) शृंगाररस
(C) भयानक रस (D) इनमें से कोई नहीं

24. भारवि का प्रिय अलंकार है –
(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपक (D) अर्थान्तरन्यास

25. पाण्डवों को अज्ञातवास करना पड़ा –
(A) दो वर्ष (B) एक वर्ष
(C) तेरह वर्ष (D) चौदह वर्ष

26. पाण्डवों ने वनवासकाल में निवास किया –
(A) तुलसीवन में (B) विन्ध्यवन में
(C) द्वैतवन में (D) नन्दनवन में

27. द्रौपदी युधिष्ठिर को किसके प्रति उकसाती है –
(A) भीम के प्रति (B) दुर्योधन के प्रति
(C) वनेचर के प्रति (D) कर्ण के प्रति

28. भारवि के काव्य में किस अलङ्कार की प्रमुखता है–
(A) रूपक अलंकार (B) उत्प्रेक्षा अलङ्कार
(C) उपमा अलंकार (D) चित्रालङ्कार

29. भारवि के पिता का नाम था –
(A) श्रीधर (B) महीधर
(C) लक्ष्मीधर (D) कृष्णधर

30. भारवि की माता थी –
(A) रसिका (B) सुशीला
(C) सुनीता (D) सुगीता

31. किरातार्जुनीयम् का पात्र नही है –
(A) भीम (B) दुर्योधन
(C) वनेचर (D) रघु

32. किरातार्जुनीयम् का पात्र है –
(A) दुष्यन्त (B) चारुदत्त
(C) युधिष्ठिर (D) बाली

33. किरातार्जुनीयम् किस विधा का काव्य है –
(A) नाटक (B) चम्पू
(C) आख्यायिका (D) महाकाव्य

34. भारवि की कविता पर प्रभाव पड़ा है –
(A) कालिदास का (B) माघ का
(C) भवभूति का (D) इनमें से किसी का नहीं

35. किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में किस नारी का उदात्त चरित्र वर्णित है –
(A) कुन्ती का (B) द्रौपदी का
(C) गान्धारी का (D) तारा का

36. वनवासकाल में कठोर भूमि में कौन सोते हैं –
(A) अर्जुन-वनेचर (B) नकुल-सहदेव
(C) युधिष्ठिर-कृष्ण (D) दुर्योधन-दुःशासन

37. किरातार्जुनीयम् का नायक है –
(A) अर्जुन (B) वनेचर
(C) दुर्योधन (D) युधिष्ठिर

38. वर्णिलिङ्गी कौन था –
(A) अर्जुन (B) वनेचर
(C) दुर्योधन (D) युधिष्ठिर

39. वनेचर हस्तिनापुर से लौटकर युधिष्ठिर से कहाँ मिला –
(A) विन्ध्यवन में (B) नन्दनवन में
(C) विराटवन में (D) द्वैतवन में

40. वनेचर हस्तिनापुर किस वेष में गया –
(A) राजा के वेष में (B) ब्रह्मचारी के वेश में
(C) मन्त्री के वेष में (D) किसान के वेश में

41. वनेचर हस्तिनापुर का समाचार जानकर किसके पास आता है –
(A) श्रीकृष्ण के पास (B) युधिष्ठिर के पास
(C) दुर्योधन के पास (D) द्रौपदी के पास

20. (D)	**21. (B)**	**22. (B)**	**23. (A)**	**24. (D)**	**25. (B)**	**26. (C)**	**27. (B)**	**28. (D)**	**29. (A)**
30. (B)	**31. (D)**	**32. (C)**	**33. (D)**	**34. (A)**	**35. (B)**	**36. (B)**	**37. (A)**	**38. (B)**	**39. (D)**
40. (B)	**41. (B)**								

42. 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि रहने वाले थे –
(A) दक्षिणभारत के (B) उत्तरभारत के
(C) मध्यप्रदेश के (D) पूर्वीभारत के

43. भारवि की कुल कितनी रचनायें हैं –
(A) तीन (B) दो
(C) एक (D) सात

44. द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास कौन आता है –
(A) दुर्योधन (B) भीष्म
(C) वनेचर (D) द्रोणाचार्य

45. द्रौपदी की चारित्रिक विशेषता नही है –
(A) वीरक्षत्राणी (B) कुशलराजनीतिज्ञा
(C) तेजस्विनी (D) कुलटा

46. किरातार्जुनीयम् के दुर्योधन को कहते हैं –
(A) सुयोधन (B) दुःशासन
(C) ज्येष्ठभ्राता (D) धनञ्जय

47. वनेचर की चारित्रिक विशेषता नही है –
(A) सच्चा हितैषी (B) स्पष्टवक्ता
(C) गुणवान् (D) नीच अहङ्कारी

48. किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ किस पद से होता है –
(A) श्रियः (B) लक्ष्मीः
(C) वनेचरः (D) कुरूणाम्

49. ''न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है –
(A) शिशुपालवधम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) नैषधीयचरितम् से (D) रघुवंशम् से

50. ''विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे'' यह वाक्य किसके लिए प्रयुक्त है –
(A) युधिष्ठिर के लिए (B) वनेचर के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) द्रौपदी के लिए

51. ''वञ्चनीयाः'' पद में प्रत्यय है –
(A) तव्यत् (B) अनीयर्
(C) ल्यप् (D) तुमुन्।

52. 'शास्ति' में लकार, पुरुष और वचन है –
(A) लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन
(B) लृट्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन
(C) लिट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(D) लोट्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन

53. ''अतोर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा'' में कौन किससे क्षमायाचना कर रहा है –
(A) दुर्योधन युधिष्ठिर से (B) वनेचर युधिष्ठिर से
(C) अर्जुन किरात से (D) द्रौपदी युधिष्ठिर से

54. 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' यह कथन किसका है–
(A) वनेचर का युधिष्ठिर से
(B) द्रौपदी का युधिष्ठिर से
(C) युधिष्ठिर का वनेचर से
(D) सेवक का जनता से

55. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' यह सूक्ति कहाँ की है –
(A) किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग की
(B) शिशुपालवधम् प्रथमसर्ग की
(C) रघुवंशमहाकाव्यम् प्रथमसर्ग की
(D) नैषधीयचरितम् प्रथमसर्ग की

56. ''स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्'' इसे किसने कहा –
(A) युधिष्ठिर ने (B) दुर्योधन ने
(C) वनेचर ने (D) द्रौपदी ने

57. ''नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः'' यहाँ 'सुयोधन' पद प्रयुक्त है –
(A) भारवि के लिए (B) श्रीकृष्ण के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) युधिष्ठिर के लिए

58. ''वितन्यते तेन नयेन पौरुषम्'' में किसके द्वारा अपने पुरुषार्थो का विस्तार किया जा रहा है –
(A) युधिष्ठिर के द्वारा (B) दुर्योधन के द्वारा
(C) वनेचर के द्वारा (D) भीम के द्वारा

59. ''निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्'' किसके लिए कहा गया है –
(A) दुर्योधन (B) युधिष्ठिर
(C) वनेचर (D) द्रौपदी

42. (A)	**43. (C)**	**44. (C)**	**45. (D)**	**46. (A)**	**47. (D)**	**48. (A)**	**49. (B)**	**50. (B)**
51. (B)	**52. (A)**	**53. (B)**	**54. (A)**	**55. (A)**	**56. (C)**	**57. (C)**	**58. (B)**	**59. (A)**

60. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' कौन किससे कह रहा है।
(A) वनेचर-द्रौपदी से (B) वनेचर-युधिष्ठिर से
(C) द्रौपदी-युधिष्ठिर से (D) इनमें से कोई नहीं

61. ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्'' कौन किससे कहता है –
(A) वनेचर-युधिष्ठिर से (B) वनेचर-दुर्योधन से
(C) द्रौपदी-युधिष्ठिर से (D) दुर्वासा-शकुन्तला से

62. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' किसको सम्बोधित करके कहा गया है –
(A) युधिष्ठिर को (B) वनेचर को
(C) द्रौपदी को (D) दुर्योधन को

63. ''परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः'' इसमें द्रौपदी किसकी दुर्दशा का वर्णन करती है –
(A) युधिष्ठिर की (B) दुर्योधन की
(C) वनेचर की (D) भीम की

64. ''दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः'' यहाँ 'वृकोदरः' पद किसके लिए प्रयुक्त है –
(A) युधिष्ठिर के लिए (B) भीम के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) वनेचर के लिए

65. वनवासकाल में अर्जुन जङ्गल से क्या लाकर युधिष्ठिर को प्रदान करते हैं –
(A) स्वर्ण (B) चाँदी
(C) धन (D) वल्कलवस्त्र

66. किरातार्जुनीयम् में 'युगलभ्राता' के रूप में वर्णन है–
(A) भीम-अर्जुन (B) दुर्योधन-दुःशासन
(C) नकुल-सहदेव (D) वनेचर-युधिष्ठिर

67. ''क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो न..... प्रभवोऽनु-जीविभिः'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) रक्षणीयाः (B) वञ्चनीयाः
(C) प्रेषणीयाः (D) पालनीयाः

68. किरातार्जुनीयम् की सूक्ति नही है –
(A) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः
(B) प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः
(C) विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः
(D) भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः

69. ''प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्'' यहाँ 'घ्नन्ति' पद में धातु है –
(A) घन् (B) हन्
(C) नन् (D) नी

70. 'परिभ्रमन्' पद में प्रत्यय है –
(A) शतृ (B) शानच्
(C) ल्युट् (D) घञ्

71. ''भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः'' किसने किससे कहा –
(A) भीम ने धृतराष्ट्र से (B) वनेचर ने युधिष्ठिर से
(C) द्रौपदी ने युधिष्ठिर से (D) वनेचर ने दुर्योधन से

72. ''कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे'' यहाँ 'महीभुजे' पद में विभक्ति है –
(A) सप्तमी (B) चतुर्थी
(C) तृतीया (D) पञ्चमी

73. किरातार्जुनीयम् में 'किरात' शब्द किसका बोधक है –
(A) भीम का (B) शिव का
(C) अर्जुन का (D) दुर्योधन का

74. ''कुरूणामधिपः'' का तात्पर्य है –
(A) दुर्योधन (B) श्रीकृष्ण
(C) अर्जुन (D) वनेचर

75. वनेचर की बातें सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे–
(A) द्रौपदी के पास (B) व्यास के पास
(C) श्रीकृष्ण के पास (D) दुर्योधन के पास।

76. दुर्योधन की शासनव्यवस्था जानने के लिए हस्तिनापुर किसे भेजा गया था –
(A) वनेचर को (B) भीम को
(C) नकुल को (D) किसी को नहीं

77. किरातार्जुनीयम् में अर्जुन को शिव से कौन सा अस्त्र प्राप्त हुआ था –
(A) पाशुपतास्त्र (B) आग्नेयास्त्र
(C) वायव्यास्त्र (D) ब्रह्मास्त्र

78. ''निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्'' यह उक्ति किसकी है–
(A) वनवासी यक्ष की (B) वनेचर की
(C) युधिष्ठिर की (D) द्रौपदी की

60. (B)	**61. (C)**	**62. (A)**	**63. (D)**	**64. (B)**	**65. (D)**	**66. (C)**	**67. (B)**	**68. (D)**	**69. (B)**
70. (A)	**71. (C)**	**72. (B)**	**73. (B)**	**74. (A)**	**75. (A)**	**76. (A)**	**77. (A)**	**78. (B)**	

79. 'वनेचर' किस ग्रन्थ का पात्र है –
(A) उत्तररामचरितम् (B) कादम्बरी
(C) शिशुपालवधम् (D) किरातार्जुनीयम्

80. किरातार्जुनीयम् में संवाद नहीं है –
(A) युधिष्ठिर-व्यास का (B) वनेचर-युधिष्ठिर का
(C) इन्द्र और अर्जुन का (D) सिंह और दिलीप का

81. भारवि का जन्म स्थान है –
(A) दक्षिणभारत का ज्ञानपुर
(B) दक्षिणभारत का अचलपुर
(C) पूर्वीभारत का सीतापुर
(D) मध्यभारत का शिवपुर

82. किरातार्जुनीयम् में कुशलगुप्तचर के रूप में चित्रित है –
(A) दुर्योधन (B) युधिष्ठिर
(C) वनचेर (D) द्रौपदी

83. किरातार्जुनीयम् निबद्ध है –
(A) अध्यायों में (B) सर्गों में
(C) काण्डों में (D) अङ्कों में

84. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) में किस पात्र का नाम नही आता है–
(A) वनेचर (B) द्रौपदी
(C) सुयोधन (D) श्रीकृष्ण

85. वनेचर युधिष्ठिर से कहाँ का समाचार बताता है –
(A) हस्तिनापुर के कर्ण का
(B) इन्द्रप्रस्थ के राजा का
(C) हस्तिनापुर के दुर्योधन का
(D) वनाधिराज सिंह का

86. किरातार्जुनीयम् का पात्र नही है –
(A) द्रौपदी (B) युधिष्ठिर
(C) सुयोधन (D) मुरला

87. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग का आरम्भिक वक्ता है–
(A) वनेचर (B) श्रीकृष्ण
(C) भीम (D) दुर्योधन

88. वनेचर ने हस्तिनापुर का समाचार किससे कहा –
(A) भीम से (B) द्रौपदी से
(C) युधिष्ठिर से (D) अर्जुन से

89. भारवि किरातार्जुनीयम् का मङ्गलाचरण किस पद से करते हैं –
(A) 'श्री' से (B) 'लक्ष्मी' से
(C) 'ॐ' से (D) 'श्रीकृष्ण' से

90. भीम अपने शरीर पर लेपन करते थे –
(A) कमलरस का (B) लालचन्दन का
(C) पीले चन्दन का (D) सुगन्धित इत्र का

91. किरातार्जुनीयमहाकाव्य में कुल श्लोकों की संख्या हैं–
(A) 1050 (B) 1250
(C) 1030 (D) 1150

92. भारवि का आश्रयदाता राजा था –
(A) श्रीहर्ष (B) विक्रमादित्य
(C) पुलकेशिन का भाई विष्णुवर्धन (D) समुद्रगुप्त

93. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' सूक्ति किस कवि के लिए है–
(A) श्रीहर्ष (B) माघ
(C) भारवि (D) दण्डी

94. ''वनेचरः'' में कौन सा प्रत्यय है –
(A) घञ् प्रत्यय (B) ट प्रत्यय
(C) अण् प्रत्यय (D) णिनि प्रत्यय

95. ''शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः'' यह कथन किसका है –
(A) द्रौपदी का (B) युधिष्ठिर का
(C) वनेचर का (D) दुर्योधन का

96. ''द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतः'' के 'विघाताय' पद में धातु है –
(A) घ्रा (B) हन्
(C) विघ् (D) घात्

97. अर्जुन ने किस पर्वत पर तपस्या की –
(A) रैवतक (B) इन्द्रकील
(C) विन्ध्याचल (D) चित्रकूट

98. ''किरातश्च अर्जुनश्च'' यहाँ कौन सा समास है –
(A) द्विगु (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

99. किरातार्जुनीयम् में प्रत्यय है –
(A) ढक् (B) छ
(C) अच् (D) घ

100. शिशुपालवधम् का उपजीव्य है –
(A) महाभारत आदिपर्व (B) महाभारत सभापर्व
(C) महाभारत वनपर्व (D) महाभारत शान्तिपर्व

79. (D)	**80. (D)**	**81. (B)**	**82. (C)**	**83. (B)**	**84. (D)**	**85. (C)**	**86. (D)**	**87. (A)**	**88. (C)**
89. (A)	**90. (B)**	**91. (C)**	**92. (C)**	**93. (C)**	**94. (B)**	**95. (A)**	**96. (B)**	**97. (B)**	**98. (B)**
99. (B)	**100. (B)**								

नीतिशतकम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. विक्रमसंवत् के प्रवर्तक महाराज विक्रमादित्य का ज्येष्ठ भाई माना जाता है–
(A) भवभूति को (B) भर्तृमेण्ठ को
(C) भट्टि को (D) भर्तृहरि को

2. राजा भर्तृहरि की प्रेमिका (पत्नी) मानी जाती है–
(A) अञ्चला (B) पिङ्गला
(C) मङ्गला (D) चञ्चला

3. भर्तृहरि की रचना मानी जाती है–
(A) वैराग्यशतकम् (B) शृङ्गारशतकम्
(C) नीतिशतकम् (D) उपर्युक्त तीनों

4. 'शतकत्रय' में परिगणित हैं–
(A) शृंङ्गारशतकम्, वैराग्यशतकम्, नीतिसारम्
(B) वैराग्यशतकम्, नीतिसारशतकम्, शृङ्गारशतकम्
(C) शृङ्गारशतकम्, नीतिशतकम्, वैराग्यशतकम्
(D) उपर्युक्त तीनों।

5. भर्तृहरि के पिता माने जाते हैं–
(A) मित्रसेन (B) गन्धर्वसेन
(C) चित्रसेन (D) चित्रभानु

6. महाकवि भर्तृहरि की अन्तिम रचना मानी जाती है–
(A) शृङ्गारशतकम् (B) नीतिशतकम्
(C) वैराग्यसारम् (D) वैराग्यशतकम्

7. नीतिशतक की श्लोक संख्या मानी जाती है–
(A) लगभग 130 (B) लगभग 150
(C) लगभग 111 (D) लगभग 100 से कुछ कम

8. नीतिशतक किस काव्यपरम्परा का ग्रन्थ माना जाता है–
(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) मुक्तककाव्य (D) चम्पूकाव्य

9. भर्तृहरि वस्तुतः किस रीति के कवि माने जाते हैं–
(A) पाञ्चाली रीति (B) वैदर्भी रीति
(C) अलङ्कृतकाव्यशैली (D) इनमें कोई नहीं

10. ''नानाफलं फलति कल्पलतेवभूमिः'' इस काव्यांश में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) उत्प्रेक्षा
(C) उपमा (D) अर्थान्तरन्यास

11. ''राजन् दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनाम्'' यहाँ ''क्षितिधेनुम्'' पद में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) श्लेष
(C) रूपक (D) इनमें से कोई नहीं

12. ''धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च'' इस वाक्यांश में 'माम्' पद से किसका संकेत किया गया है–
(A) विक्रमादित्य का (B) महामन्त्री का
(C) मदन कामदेव का (D) कवि भर्तृहरि का

13. ''यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः'' इस पंक्ति के माध्यम से कवि किसको समझा रहा है–
(A) मेघों को (B) आकाश को
(C) चातकमित्र को (D) वसुधा को

14. भर्तृहरि का सबसे प्रिय छन्द है–
(A) वसन्ततिलका (B) शिखरिणी
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) द्रुतविलम्बितम्

15. ''विभूषणं मौनमपण्डितानाम्'' प्रस्तुत सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है–
(A) शृङ्गारशतकम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) वैराग्यशतकम् से (D) इनमें से कोई नहीं

16. भर्तृहरि के नीतिशतकम् के मङ्गलाचरण में किस देव की स्तुति है–
(A) विधाता ब्रह्मा की (B) शङ्कर की
(C) दिक्कालादि की (D) ब्रह्म की

1. (D)	**2.** (B)	**3.** (D)	**4.** (C)	**5.** (B)	**6.** (D)	**7.** (C)	**8.** (C)	**9.** (B)	**10.** (C)
11. (C)	**12.** (D)	**13.** (C)	**14.** (C)	**15.** (B)	**16.** (D)				

17. नीतिशतक के मङ्गलाचरण में छन्द है–
(A) आर्या (B) उपजाति
(C) शालिनी (D) अनुष्टुप्

18. ''लभेत सिकतासु तैलम्'' यहाँ 'सिकता' पद का अर्थ है–
(A) पत्थर (B) लोहा
(C) बालू (D) जल

19. ''व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ'' यहाँ 'व्यालम्' पद का अर्थ है–
(A) दुष्टगज (B) हिरन
(C) व्याघ्र (D) शिकारी

20. ''नहि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्'' यहाँ 'फल्गुता' पद का अर्थ है–
(A) असारता (B) तुच्छता
(C) निःसारता (D) उपर्युक्त तीनों

21. ''हुतभुक्'' पद का शब्दार्थ होगा–
(A) जल (B) अग्नि
(C) आहुति (D) हवनसामग्री

22. ''भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः' यह श्लोक प्राप्त होता है–
(A) नीतिशतकम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) दोनों में (D) किसी में नही

23. ''भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि, काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः'' इस पंक्ति का वक्ता है–
(A) भर्तृमेण्ठ (B) भट्टनारायण
(C) भवभूति (D) भर्तृहरि

24. ''नेता यस्य बृहस्पतिः'' यहाँ 'यस्य' पद से किसका संकेत किया गया है–
(A) इन्द्र का (B) कुबेर का
(C) रावण का (D) उपर्युक्त सभी का

25. 'न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः' यह सूक्ति उदधृत है–
(A) नीतिचरितम् से (B) नीतिसारसंग्रह से
(C) नीतिशतकम् से (D) नीतिवचनम् से

26. ''प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति'' किसका कथन है–
(A) रावण का (B) भर्तृमेण्ठ का
(C) भवभूति का (D) भर्तृहरि का

27. ''निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः'' यहाँ क्रियापद है–
(A) सन्तः (B) सन्ति
(C) कियन्तः (D) विकसन्तः

28. ''यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितम्'' यहाँ 'धात्रा' पद में विभक्ति एवं वचन है–
(A) प्रथमा एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) तृतीया एकवचन (D) षष्ठी एकवचन

29. ''गर्जन्ति केचित् वृथा'' यहाँ 'गर्जन्ति' पद का कर्ता है–
(A) सिंहाः (B) अम्भोदाः
(C) गजाः (D) चातकाः

30. 'मा ब्रूहि दीनं वचः' यहां 'ब्रूहि' पद में धातु एवं लकार है–
(A) बृ लोट् म0पु0 एक0
(B) ब्रू लट् म0प्र0 एक0
(C) ब्रू लोट् म0पु0 एक0
(D) ब्रूह् लोट् प्र0पु0 एक0

31. 'शुचौ कैतवम्' में 'कैतवम्' पद का शब्दार्थ है–
(A) कपट (B) निश्छल
(C) पवित्र (D) सज्जन

32. ''पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः'' इस वाक्यांश में 'पिशुनता' पद का अर्थ है–
(A) चुगुलखोरी (B) चोरी
(C) स्त्रीचरित्र (D) पाप की गठरी

33. 'भूभुजाम्' पद में विभक्ति/वचन है–
(A) द्वितीया एकवचन
(B) प्रथमा, एकवचन
(C) षष्ठी, बहुवचन
(D) सप्तमी, एकवचन

17. (D)	**18. (C)**	**19. (A)**	**20. (D)**	**21. (B)**	**22. (C)**	**23. (D)**	**24. (A)**	**25. (C)**	**26. (D)**
27. (B)	**28. (C)**	**29. (B)**	**30. (C)**	**31. (A)**	**32. (A)**	**33. (C)**			

34. ''छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्'' यहाँ अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उपमा
(C) यमक (D) उत्प्रेक्षा

35. ''सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम्'' इस श्लोकांश में छन्द है–
(A) शिखरिणी (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) हरिणी

36. ''एका नारी सुन्दरी वा दरी वा'' यहाँ 'दरी' पद का अर्थ है–
(A) कुरूप (B) गुफा
(C) बिछौना (D) निवासस्थान

37. भर्तृहरि के गुरू माने जाते हैं–
(A) गोवर्धन (B) गोरखनाथ
(C) गयानाथ (D) गन्धर्वसेन

38. 'सङ्गतिः' में प्रत्यय है–
(A) अण् (B) क्त
(C) क्तिन् (D) ङीष्

39. नीतिशतककार के अनुसार सभा में किस उपाय के द्वारा मूर्ख अपनी मूर्खता को छिपा सकता है
(A) विचार पूर्वक बोलकर (B) कम बोलकर
(C) चुप रहकर (D) हँस कर हँसा कर

40. ''मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य'' श्लोकांश में 'मूर्ध्नि' का अर्थ है–
(A) आगे (B) पीछे
(C) नीचे (D) ऊपर

41. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन कैः?
(A) जनैः (B) बालैः
(C) नीचैः (D) सज्जनैः

42. 'ये परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति' नीतिशतक के अनुसार वे लोग हैं–
(A) उत्तमाः (B) मानुषराक्षसाः
(C) सामान्याः (D) सत्पुरुषाः

43. पर्वत के पंख किसने काटे?
(A) इन्द्र ने (B) विष्णु ने
(C) शिव ने (D) ब्रह्मा ने

44. ''नास्त्युद्यमसमो....." रिक्तस्थान की पूर्ति करें–
(A) मित्रम् (B) रिपुः
(C) बन्धुः (D) कर्म

45. 'विद्याविहीनः' होते हैं–
(A) गौः (B) अश्वः
(C) पशुः (D) हस्ती

46. शतकत्रय के रचयिता हैं–
(A) भट्टि (B) भर्तृहरि
(C) अमरुक (D) भवभूति

47. भर्तृहरि किस देश के राजा थे–
(A) गोरखपुर के (B) मालवदेश के
(C) महाराष्ट्र के (D) प्रयाग के

48. 'शतकत्रय' के रचनाकार ने और किस प्रसिद्धग्रन्थ की रचना की थी–
(A) अष्टाध्यायी की (B) महाभाष्यम् की
(C) वाक्यपदीयम् की (D) वैयाकरणभूषणसार की

49. जहाँ अर्थ की दृष्टि से प्रत्येक श्लोक स्वतन्त्र होता है, वह है–
(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) चम्पूकाव्य (D) मुक्तककाव्य

50. व्यक्ति धन प्राप्त करता है–
(A) अपने भाग्य से (B) अपने दुष्कर्मों से
(C) वरदान से (D) गुरुकृपा से

51. किसके चित्त को बदला नहीं जा सकता–
(A) सज्जनों के (B) भक्तों के
(C) मूर्ख के (D) योगी के

52. सान (कसौटी) पर तराशी गई मणि–
(A) नष्ट होती है (B) शोभा को प्राप्त होती है
(C) मलिन हो जाती है (D) कुछ नही होती

53. मदक्षीण हाथी–
(A) बलवान् होता है
(B) मोटा हो जाता है
(C) रङ्ग परिवर्तित हो जाता है
(D) सुशोभित होता है

34. (B)	**35. (A)**	**36. (B)**	**37. (B)**	**38. (C)**	**39. (C)**	**40. (D)**	**41. (C)**	**42. (B)**	**43. (A)**
44. (C)	**45. (C)**	**46. (B)**	**47. (B)**	**48. (C)**	**49. (D)**	**50. (A)**	**51. (C)**	**52. (B)**	**53. (D)**

54. मनस्वियों की वृत्ति किसके समान होती है?
(A) सूर्य के समान (B) देवराज इन्द्र के समान
(C) फूलों के समान (D) पृथ्वी के समान

55. धन की गतियाँ होती है–
(A) तीन (B) दो
(C) चार (D) असंख्य

56. भर्तृहरि के अनुसार सभी गुण आश्रय लेते हैं–
(A) साहस का (B) धन का
(C) सज्जन का (D) कर्म का

57. कुल का नाश हो जाता है–
(A) सुपुत्र से (B) कर्म से
(C) कुपुत्र से (D) पुत्रियों से

58. सैकड़ों प्रकार की चाटुकारिता से खाता है–
(A) कुत्ता (B) मनुष्य
(C) निर्धन (D) हाथी

59. कुत्ता भोजन देने वाले के सामने क्या करता है–
(A) पूँछ हिलाता है (B) गुर्राता है
(C) भौंकने लगता है (D) काट लेता है

60. 'कठिन असिधाराव्रत' किसको कहा गया है?
(A) धन को (B) विद्या को
(C) तलवार की धार को (D) सेवा को

61. 'नीतिशतकम्' का मङ्गलाचरण है–
(A) आशीर्वादात्मक (B) नमस्कारात्मक
(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

62. सदा रहने वाला आभूषण है–
(A) बाजूबन्द
(B) चन्द्रमा जैसा स्वच्छ मोतियों का हार
(C) विधिवत् स्नान
(D) सुसंस्कृता वाणीरूपी आभूषण

63. परिवर्तनशील संसार में जीवन सार्थक होता है–
(A) जो अपने लिए कमाता है
(B) जो सभी के लिए कमाता है
(C) जो अपने वंश (राष्ट्र) की उन्नति करता है
(D) जो दूसरों की उन्नति को सहन नहीं करता है।

64. मनुष्य हाथी के समान मदान्ध कब हो जाता है–
(A) जब सुरापान कर लेता है।
(B) जब धनिकों के सम्पर्क में आता है।
(C) जब थोड़ा ज्ञान पा लेता है।
(D) जब कार्य में सफल हो जाता है।

65. मनुष्य का सर्वज्ञ होने का ज्वर कब उतरता है–
(A) जब कुछ विद्वानों के सम्पर्क में आता है
(B) जब उसे सभा में जाना पड़ता है
(C) जब असफलता मिलती है
(D) जब कार्य करता है

66. नीतिशतक में वर्णन है–
(A) धर्म का (B) नीति का
(C) राजा का (D) पशुओं का

67. 'चाणक्यनीति' के लेखक हैं–
(A) भवभूति (B) भारवि
(C) कौटिल्य (चाणक्य) (D) भर्तृमेण्ठ

68. 'शतकत्रय' में सम्मिलित नहीं है–
(A) नीतिशतक (B) वैराग्यशतक
(C) अमरुकशतक (D) शृङ्गारशतक

69. किस विद्वान् के अनुसार भर्तृहरि को बौद्ध कहा जाता है–
(A) डॉ कीथ (B) मैक्समूलर
(C) ब्रील (D) ईत्सिंग

70. भर्तृहरि लेखक नहीं माने जाते हैं–
(A) नीतिशतकम् के (B) वाक्यपदीयम् के
(C) वैराग्यशतकम् के (D) काव्यालङ्कार के

71. 'वाक्यपदीयम्' और 'नीतिशतकम्' के मङ्गलाचरण की तुलना से ज्ञात होता है कि भर्तृहरि–
(A) शिव के उपासक थे
(B) वेदान्तोक्त ब्रह्म के उपासक थे
(C) विष्णु के उपासक थे
(D) इनमें से कोई नहीं।

72. भर्तृहरि ने अपने शतकों में वर्णन नहीं किया–
(A) आचार शिक्षा का (B) सज्जन प्रशंसा का
(C) युद्ध वर्णन का (D) स्त्रियों की रमणीयता का

54. (C)	**55. (A)**	**56. (B)**	**57. (C)**	**58. (D)**	**59. (A)**	**60. (D)**	**61. (B)**	**62. (D)**	**63. (C)**
64. (C)	**65. (A)**	**66. (B)**	**67. (C)**	**68. (C)**	**69. (D)**	**70. (D)**	**71. (B)**	**72. (C)**	

73. ''निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः'' सूक्ति उद्धृत है–
(A) नीतिसारम् से (B) शृङ्गारशतकम् से
(C) वैराग्यशतकम् से (D) नीतिशतकम् से

74. ''बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः'' यह पंक्ति नीतिशतक की किस पद्धति से उदधृत है–
(A) दुर्जनपद्धति से (B) मूर्खपद्धति से
(C) मानशौर्यपद्धति से (D) परोपकारपद्धति से

75. ''अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः'' पंक्ति में 'अज्ञः' पद का अर्थ है–
(A) विद्वान् (B) अज्ञानी
(C) सज्जन (D) इनमें से कोई नहीं

76. ''न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्'' यहाँ 'आराधयेत्' पद में लकार है–
(A) लोट् (B) विधिलिङ्
(C) लृट् (D) लङ्

77. ''ब्रह्माऽपि नरं न रञ्जयति'' यह कैसे व्यक्ति के लिए कहा गया है–
(A) विद्वान् के लिए (B) मानी के लिए
(C) परोपकारी के लिए (D) मूर्ख के लिए

78. प्रयत्नपूर्वक पीसता हुआ कोई व्यक्ति बालू के कणों से भी कभी तेल प्राप्त कर सकता है लेकिन–
(A) धन प्राप्त नहीं कर सकता
(B) सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता
(C) यश प्राप्त नहीं कर सकता
(D) दुराग्रही मूर्खजन के चित्त को वश में नहीं कर सकता।

79. थोड़े से ज्ञान से स्वयं को पण्डित मानने वाले मनुष्य को नही समझा सकते–
(A) गणेश (B) ब्रह्मा
(C) विष्णु (D) महेश

80. अपनी अज्ञता को छिपाने के लिए मूढ़जनों का एकमात्र उपाय है–
(A) हास्यावलम्बन (B) क्रोधावलम्बन
(C) मौनावलम्बन (D) प्रगल्भावलम्बन

81. मेरी विद्वत्ता का मद–
(A) ज्वर की भाँति उतर गया
(B) ज्वार भाँटे की तरह उतर गया
(C) बाढ़ की भाँति उतर गया
(D) इनमें से कोई नहीं

82. विवेकभ्रष्ट व्यक्तियों का–
(A) अनेक प्रकार से पतन हो जाता है
(B) धन बढ़ जाता है
(C) मान बढ़ जाता है
(D) इनमें से कोई नहीं

83. राजा प्रशंसा प्राप्त करता है–
(A) विद्वानों को अपने राज्य से निर्वासित करके
(B) विद्वानों का सम्मान करके
(C) विद्वानों को माला पहना के
(D) विद्वानों से वार्तालाप करके

84. शत्रुओं के प्रति श्रेयस्कर है–
(A) उनका सहयोग करना
(B) उनका सम्मान करना
(C) उनके कल्याण की कामना करना
(D) वीरता प्रदर्शित करना।

85. ऐसे राजा का विश्वास नहीं करना चाहिए–
(A) जो सज्जन हो (B) जो विद्वान् हो
(C) जो क्रोधी हो (D) जो दयालु हो।

86. स्त्रीजनों के प्रति–
(A) प्रगल्भतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए
(B) क्रोधप्रदर्शन करना चाहिए
(C) अपमानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए
(C) असहिष्णुतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

87. गुरुजनों के विषय में–
(A) क्रुद्ध होना चाहिए
(B) अनादर भाव होना चाहिए
(C) क्षमाशीलता और सहिष्णुता होनी चाहिए
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

73. (D) 74. (B) 75. (B) 76. (B) 77. (D) 78. (D) 79. (B) 80. (C) 81. (A) 82. (A)
83. (B) 84. (D) 85. (C) 86. (A) 87. (C)

88. विद्याधन प्रदान करता है–
(A) सर्वत्र सम्मान समादर
(B) विद्यार्थियों को उत्कृष्ट अभ्युदय
(C) अनिर्वचनीय सुख
(D) उपर्युक्त सभी तत्व

89. परोपकारियों का स्वभाव–
(A) ईर्ष्यालु होता है
(B) अति नम्र होता है
(C) परसम्पत्ति की इच्छा करते हैं
(D) स्वार्थ में लगे रहते हैं।

90. सज्जन की चारित्रिक विशेषता है–
(A) अनुदारता (B) साभिमानिता
(C) स्वाभिमानिता (D) परोपकाराभावः

91. उत्तम व्यक्ति वही है जो–
(A) स्वार्थसिद्धि के साथ-साथ परहित साधन के लिए भी उद्योगशील होते हैं।
(B) जो दूसरे के कार्य में यदा-कदा व्यवधान पैदा नही करते हैं
(C) जो अपना भला चाहते हैं।
(D) इनमें से कोई नहीं।

92. ''वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेक......." रिक्तस्थान की पूर्ति करें–
(A) भूपा (B) रूपा
(C) रुपाम् (D) स्वरूपा

93. 'विरहितः' इस पद का अर्थ होगा–
(A) वीर हित (B) विरहाग्नि
(C) वीर रस (D) अभाव

94. ''यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः, स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः' इस श्लोक में छन्द है–
(A) अनुष्टुप् (B) उपजाति
(C) वंशस्थ (D) मन्दाक्रान्ता

95. नीतिशतक में विषय वर्णन के अनुसार पद्धतियाँ हैं–
(A) 12 (B) 16
(C) 18 (D) 11

96. 'शालिनी' छन्द के प्रत्येक चरण में वर्ण होते हैं–
(A) 9 (B) 17
(C) 11 (D) 12

97. ''रे रे चातक सावधानमनसा....." इस श्लोक का भावार्थ है–
(A) अपनी दीनता को प्रकट करना
(B) दीनता को बार बार कहना
(C) कभी कभी दीनता प्रगट करना
(D) हर किसी के सामने दीनता प्रगट न करना

98. ''एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः......ते के न जानीमहे'' नीतिशतकम् के इस श्लोक द्वारा मनुष्यों की श्रेणियाँ हैं–
(A) 3 (B) 2
(C) 4 (D) 5

99. 'सत्यानृता' में सन्धि है–
(A) यण् (B) अयादि
(C) दीर्घ (D) प्रकृतिभाव

100. ''अम्भोजिनीवनविहारविलासमेव'' में 'विहार' पद में धातु, प्रत्यय, एवं उपसर्ग है–
(A) वि + हृ + ढक् (B) वि + हृ + घञ्
(C) वि – ह्य + ठक् (D) वि + हृ + अण्

88. (D) **89.** (B) **90.** (C) **91.** (A) **92.** (B) **93.** (D) **94.** (B) **95.** (D) **96.** (C) **97.** (D) **98.** (C) **99.** (C) **100.** (B)

उत्तररामचरितम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. 'एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्'' यह कथन किसका है–
(A) भास का (B) भारवि का
(C) भवभूति का (D) भर्तृहरि का

2. ''स च कुलपतिराद्यश्छन्दसां यः प्रयोक्ता' में 'कुलपति' पद से किसका निर्देश किया गया है–
(A) भवभूति का (B) वशिष्ठ का
(C) अगस्त्य का (D) वाल्मीकि का

3. उत्तररामचरितम् में कुल श्लोक संख्या मानी जाती है–
(A) 244 (B) 266
(C) 256 (D) 334

4. अनुष्टुप् के बाद भवभूति का प्रिय छन्द है–
(A) शिखरिणी (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) मालिनी

5. वशिष्ठ की पत्नी है–
(A) लोपामुद्रा (B) सुनयना
(C) भागीरथी (D) अरुन्धती

6. 'अमरसिन्धुः' पद का क्या अर्थ है–
(A) अमृतसमुद्रः (B) भागीरथी
(C) यमुना (D) पृथिवी

7. उत्तररामचरितम् का छाया अङ्क है–
(A) प्रथम अङ्क (B) सप्तम अङ्क
(C) चतुर्थ अङ्क (D) तृतीय अङ्क

8. 'यथा कार्यहानिर्न भवति तथा कार्यम्' यह कथन किसका है–
(A) आत्रेयी (B) तमसा
(C) मुरला (D) वासन्ती

9. 'हरिणीदृशः' पद में विभक्ति/वचन है–
(A) प्रथमा एक. (B) द्वितीया द्विव.
(C) षष्ठी एक. (D) चतुर्थी एक.

10. ''अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'' में छन्द है–
(A) उपजाति (B) द्रुतविलम्बित
(C) इन्द्रवज्रा (D) वंशस्थ

11. पञ्चवटी के कदम्बवृक्ष को किसने रोपित किया था–
(A) वासन्ती ने (B) सीता ने
(C) राम ने (D) तमसा ने

12. अपनी प्रिया को मनाने के लिए नलिनीपत्ररूपी छाते को किसने लगाया–
(A) मयूर ने (B) राम ने
(C) गज ने (D) भवभूति ने

13. उत्तररामचरिते 'वारणानां विजेता' कः अस्ति–
(A) रामः (B) गजः
(C) जटायुः (D) रावणः

14. राम का 'करुणरस' है–
(A) पुटपाकवत् (B) हर्षशोकवत्
(C) स्नेहवत् (D) चञ्चलवत्

15. भवभूति के पिता का नाम है–
(A) भट्टगोपाल (B) श्रीकण्ठ
(C) नीलकण्ठ (D) ज्ञाननिधि

16. भवभूति के आश्रयदाता हैं–
(A) यशोवर्मा (B) राजवर्मा
(C) हर्षवर्धन (D) मित्रवर्मा

17. भवभूति के कितने नाटक उपलब्ध हैं–
(A) चार (B) तीन
(C) दो (D) तेरह

18. भवभूति का एक प्रसिद्ध दार्शनिक नाम है–
(A) उम्बेक (B) ज्ञाननिधि
(C) भट्टगोपाल (D) यशोवर्मा

19. भवभूति का गोत्र है–
(A) वत्स (B) काश्यप
(C) गौतम (D) भारद्वाज

1. (C)	**2.** (D)	**3.** (C)	**4.** (A)	**5.** (D)	**6.** (B)	**7.** (D)	**8.** (D)	**9.** (C)	**10.** (B)
11. (B)	**12.** (C)	**13.** (B)	**14.** (A)	**15.** (C)	**16.** (A)	**17.** (B)	**18.** (A)	**19.** (B)	

20. लोपामुद्रा पत्नी है–
(A) वशिष्ठ की (B) अगस्त्य की
(C) ऋष्यशृङ्ग की (D) वाल्मीकि की

21. उत्तररामचरितम् में नदी के रूप में वर्णन नही है–
(A) तमसा का (B) मुरला का
(C) वासन्ती का (D) भागीरथी का

22. ''पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' यह कथन है–
(A) तमसा का (B) मुरला का
(C) वासन्ती का (D) सीता का

23. लव और कुश किसके आश्रम में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं–
(A) वशिष्ठ के (B) अगस्त्य के
(C) विश्वामित्र के (D) वाल्मीकि के

24. सीता को अदृश्य रहने का वरदान किसने दिया–
(A) भागीरथी ने (B) तमसा ने
(C) लोपामुद्रा ने (D) इनमें से सभी ने

25. ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी'' किसने किसके लिए कहा–
(A) मुरला ने सीता के लिए
(B) तमसा ने जानकी के लिए
(C) वासन्ती ने वैदेही के लिए
(D) सीता ने तमसा के लिए

26. राम दण्डकारण्य में क्यों आए हैं–
(A) शम्बूक के वध हेतु
(B) सीता से मिलने हेतु
(C) अगस्त्य के दर्शन हेतु
(D) पञ्चवटी में घूमने हेतु

27. कुश और लव की कौन सी वर्षगाँठ मनायी जा रही है–
(A) दसवीं वर्षगाँठ (B) बारहवीं वर्षगाँठ
(C) छठवीं वर्षगाँठ (D) नौवीं वर्षगाँठ

28. ''स्पर्शः पुरा परिचितो नियतं स एव'' कथन है–
(A) राम का (B) सीता का
(C) वासन्ती का (D) तमसा का

29. ''तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशात्'' इसमें छन्द है–
(A) मन्दाक्रान्ता (B) शिखरिणी
(C) हरिणी (D) शार्दूलविक्रीडितम्

30. 'उल्लापाः' पद का अर्थ है–
(A) उल्लास (B) मदमस्त गज
(C) विलाप (D) मयूर

31. पञ्चवटी में राम के साथ साक्षात् वार्तालाप करती है–
(A) तमसा (B) वनदेवी वासन्ती
(C) प्रिया सीता (D) मुरला

32. लोपामुद्रा गोदावरी से अपना संदेश कहने को किसे भेजती है–
(A) मुरला को (B) तमसा को
(C) भागीरथी को (D) वासन्ती को

33. सीता के कर्णमूल से लवलीलता के पत्ते को कौन खींचता था–
(A) करिशावक (B) मयूर
(C) मृग (D) इनमें से कोई नहीं।

34. व्याकृष्टः में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) व्या+कृष्+क्त (B) वि+आङ्+कृष्+क्त
(C) वि+आङ्+कृ+क्त (D) वि+या+कृ+क्त

35. 'आतपत्र' पद का अर्थ है–
(A) नलिनी का पत्र (B) छाता
(C) केले का पत्ता (D) आधा पत्ता

36. 'अनराल' पद का शब्दार्थ है–
(A) सीधा (B) टेढ़ा
(C) कमल (D) नलिनीनाल

37. 'ईदृश्यस्मि' पद का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) ईदृश्+अस्मि (B) ईदृशी+अस्मि
(C) ईदृश+अस्मि (D) ईदृश्+यस्मि

38. 'तावपि' पद का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) तो+अपि (B) ताव+अपि
(C) तौ+अपि (D) ताव्+अपि

20. (B)	**21.** (C)	**22.** (B)	**23.** (D)	**24.** (A)	**25.** (B)	**26.** (A)	**27.** (B)	**28.** (A)	**29.** (B)
30. (C)	**31.** (B)	**32.** (A)	**33.** (A)	**34.** (B)	**35.** (B)	**36.** (A)	**37.** (B)	**38.** (C)	

39. 'पति-पत्नी' के अर्थ में अशुद्ध पद है–
(A) दम्पती (B) जम्पती
(C) जायापती (D) इनमें से कोई नहीं।

40. ''प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य'' किसने, किससे कहा–
(A) सीता ने तमसा से (B) तमसा ने सीता से
(C) वासन्ती ने राम से (D) तमसा ने मुरला से

41. सीता द्वारा पालित मोर अपनी पत्नी के साथ कहाँ बैठा है–
(A) कदम्ब में (B) पहाड़ में
(C) गोदावरी जल में (D) लताकुञ्ज में

42. 'नीरन्ध्र' पद का अर्थ है–
(A) काला (B) घना
(C) जल (D) बादल

43. 'अदात्' में धातु एवं लकार का सही विकल्प है–
(A) दा+लङ्0+प्र0पु0 एक.
(B) दा+लुङ्+प्र0पु0 बहु.
(C) अद्+लट्+प्र0पु0 एक.
(D) दा+लुङ्+प्र0पु0 एक.

44. ''स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते'' यहाँ 'हृदयेश' पद से निर्देश है–
(A) सीता का (B) राम का
(C) हृदय का (D) चित्त का

45. ''ददतु तरवः पुष्पैरर्घ्यं फलैश्च मधुश्च्युतः'' यहाँ कौन किसका स्वागत करना चाह रहा है–
(A) राम, वासन्ती का (B) तमसा, राम का
(C) वासन्ती, राम का (D) अगस्त्य, वाल्मीकि का

46. 'शकुनि' पद का अर्थ है–
(A) शगुन (शुभसमय) (B) पक्षी
(C) मृग (D) वृक्ष

47. 'समाश्वसिहि' पद की व्याकरणात्मक प्रकृति है–
(A) सम+आ+श्वास+लोट् मु0पु0एक.
(B) समा+श्वस्+लोट्+म0पु0 द्विव.
(C) सम्+आङ्+श्वस्+लोट् म0पु0 एक.
(D) सम+आ+श्वास+लट् म0पु0 एक.

48. सीता के परित्याग रूपी वनवास को कितने दिन बीत गए हैं–
(A) 12 माह (B) 14 वर्ष
(C) 12 वर्ष (D) 16 वर्ष

49. ''किमभवद् विपिने हरिणीदृशः'' यहाँ 'हरिणीदृशः' पद से किसका निर्देश है–
(A) सीता का (B) हरिणी का
(C) कमललता का (D) नेत्रों का

50. 'उपालम्भः' पद का अर्थ नही है–
(A) ताना मारना (B) शिकायत करना
(C) उलाहना देना (D) उधार देना

51. 'कुरङ्ग' पद का अर्थ है–
(A) मृग (B) पक्षी
(C) वनदेवी (D) वृक्ष

52. भवभूति की अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है–
(A) महावीरचरितम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मालतीमाधवम् (D) लवकुशचरितम्

53. उत्तररामचरितम् का प्रधान रस है–
(A) वीररस (B) हास्यरस
(C) करुणरस (D) रौद्ररस

54. ''भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी'' यह कथन किसका है–
(A) क्षेमेन्द्र का (B) कालिदास का
(C) बाण का (D) भवभूति का

55. सीता का ज्येष्ठ पुत्र है–
(A) लव (B) कुश
(C) जटायु (D) कुरङ्ग

56. उत्तररामचरितम् में राम की बहन के रुप में उल्लेख है–
(A) मुरला का (B) आत्रेयी का
(C) वासन्ती का (D) शान्ता का

39. (D)	**40.** (B)	**41.** (A)	**42.** (B)	**43.** (D)	**44.** (B)	**45.** (C)	**46.** (B)	**47.** (C)	**48.** (C)
49. (A)	**50.** (D)	**51.** (A)	**52.** (B)	**53.** (C)	**54.** (A)	**55.** (B)	**56.** (D)		

57. ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' इस पंक्ति में अलङ्कार है–

(A) रूपक (B) उपमा

(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

58. ''प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति'' में अलङ्कार है–

(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा

(C) रूपक (D) विभावना

59. 'सोढः' में प्रकृति/प्रत्यय है–

(A) सूङ्+णञ् (B) सह्+क्त

(C) श्रु+ऊढः (D) सृज+क्त

60. 'रयः' पद का अर्थ है–

(A) वेग (B) रेत

(C) भूमि (D) मोर

61. 'काकली' पद का अर्थ है–

(A) तोता (B) तोतली बोली

(C) मयूर (D) घुँघराले बाल

62. 'प्रवान्तु' में धातु एवं लकार है–

(A) प्र+√वा धातु+लोट्+प्र0पु0 एक.

(B) प्र+√वा धातु+लोट् प्र0पु0 बहु.

(C) √प्रवा धातु + लोट् म0पु0 एक.

(D) प्र+√वह् + लोट् + प्र0पु0 बहु.

63. 'पुष्' धातु का लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन में रूप बनेगा–

(A) अपोष्यत् (B) अपूष्यत्

(C) अपुष्यत् (D) अपोष्यति

64. ''शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते'' इसमें किस वाच्य का प्रयोग है–

(A) कर्मवाच्य (B) कर्तृवाच्य

(C) भाववाच्य (D) इनमें से कोई नहीं

65. 'वीक्ष्य' पद में प्रत्यय है–

(A) क्तवतु (B) ल्यप्

(C) यत् (D) ष्यञ्

66. 'कुड्मल' पद का शब्दार्थ है–

(A) कमल (B) कली

(C) समान (D) सुन्दर

67. ''विष्वङ्मोहः स्थगयति कथम्'' में 'विष्वक्' पद का अर्थ है–

(A) विशेष (B) विश्वास

(C) चारों ओर से (D) हृदय

68. ''आलिम्पन्नमृतमयैरिव प्रलेपैः'' में 'अमृतमय' पद में प्रत्यय है–

(A) मयट् (B) म्युट्

(C) यक् (D) मुक्

69. ''करान्मम स्विद्यतः स्विद्यन्'' के 'स्विद्यतः' पद में विभक्ति है–

(A) षष्ठी (B) द्वितीया

(C) प्रथमा (D) पञ्चमी

70. ''कदम्बयष्टिः स्फुटकोरकेव'' में अलङ्कार है–

(A) विभावना (B) विशेषोक्ति

(C) उपमा (D) उत्प्रेक्षा

71. ''द्यामभ्युदस्थादरिः'' यहाँ 'अभ्युदस्थात्' पद में लकार है–

(A) लुङ् (B) लङ्

(D) विधिलिङ् (D) लोट्

72. 'पत्रिणाम्' पद का अर्थ है–

(A) पत्राणाम् (B) खगानाम्

(C) शराणाम् (D) पिशाचानाम्

73. ''अहो ! उत्खातितमिदानी मे परित्यागशल्यम्'' यह कथन किसका है–

(A) सीता का (B) वासन्ती का

(C) तमसा का (D) भागीरथी का

74. 'वर्षर्द्धिः' पद में सन्धि है–

(A) दीर्घ (B) व्यञ्जन

(C) यण् (D) गुण

75. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कुल श्लोक हैं–

(A) 45 (B) 46

(C) 48 (D) 49

76. भवभूति का निवासस्थान माना जाता है–

(A) पद्मपुर (B) धारानगरी

(C) जतुकर्णीनगर (D) अचलपुर

57. (A)	58. (B)	59. (B)	60. (A)	61. (B)	62. (B)	63. (C)	64. (A)	65. (B)	66. (B)
67. (C)	68. (A)	69. (D)	70. (C)	71. (A)	72. (C)	73. (A)	74. (D)	75. (C)	76. (A)

77. ''पदवाक्यप्रमाणज्ञः'' कहा जाता है–
(A) भट्टि को (B) भारवि को
(C) भवभूति को (D) भर्तृहरि को

78. भवभूति के गुरु का नाम है–
(A) ध्याननिधि (B) ज्ञाननिधि
(C) भट्टगोपाल (D) नीलकण्ठ

79. 'जतुकर्णी' नाम है–
(A) श्रीकण्ठ की माता का (B) भवभूति की माँ का
(C) नीलकण्ठ की पत्नी का (D) उपर्युक्त सभी

80. कुमारिलभट्ट के शिष्य और मीमांसादर्शन के विद्वान् माने जाते हैं–
(A) भवभूति (B) भर्तृहरि
(C) भारवि (D) भास

81. उत्तररामचरितम् के टीकाकार घनश्याम, महाकवि भवभूति को मानते हैं–
(A) तमिल (B) द्राविड
(C) उत्तरभारतीय (D) महाराष्ट्रियन

82. उत्तररामचरितम् में प्रयुक्त 'कालप्रियानाथ' पद का अर्थ है–
(A) काल (यमराज) (B) समय के पाबंद
(C) शिव (D) महाकवि

83. भवभूति का अनुमानित समय माना जाता है–
(A) 650 ई० से 750 ई० तक
(B) 750 ई० से 850 ई० तक
(C) 650 ई० पू० से 750 ई० तक
(D) 850 ई० से 950 ई० तक

84. उत्तररामचरितम् में अङ्क हैं–
(A) 6 (B) 7
(C) 8 (D) 5

85. उत्तररामचरितम् का मूल आधार है–
(A) वाल्मीकीयरामायण (B) तुलसीरामायण
(C) भावार्थरामायण (D) महाभारतम्

86. भवभूति मूलतः किस रीति के कवि माने जाते हैं–
(A) वैदर्भीरीति (B) पाञ्चालीरीति
(C) गौडीरीति (D) उपर्युक्त सभी

87. उत्तररामचरितम् की सम्पूर्ण घटना कितने वर्षों की है–
(A) 14 वर्ष (B) 18 वर्ष
(C) 7 वर्ष (D) 12 वर्ष

88. उत्तररामचरितम् के किस अङ्क में राम-सीता का मिलन होता है–
(A) तृतीय अङ्क में (B) चतुर्थ अङ्क में
(C) षष्ठ अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

89. 'गर्भनाटक' की योजना उत्तररामचरितम् के किस अङ्क में है–
(A) सप्तम अङ्क में (B) प्रथम अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) चतुर्थ अङ्क में

90. विदूषक रहित रचना मानी जाती है–
(A) शाकुन्तलम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) इनमें से कोई नहीं

91. उत्तररामचरितम् का पात्र है–
(A) सौधातकि (B) दण्डायन
(C) दुर्मुख (D) उपर्युक्त सभी

92. करुणरस का सर्वोत्तम कवि माना जाता है–
(A) भास को (B) भवभूति को
(C) कालिदास को (D) माघ को

93. चन्द्रकेतु किसका पुत्र है–
(A) लक्ष्मण का (B) राम का
(C) वशिष्ठ का (D) ऋष्यश्रृङ्ग का

94. राम ने स्वर्णमयी सीता के साथ कौन सा यज्ञ किया–
(A) वाजपेय यज्ञ (B) अश्वमेध यज्ञ
(C) पञ्चमहायज्ञ (D) दशपौर्णमासयज्ञ

95. उत्तररामचरितम् के नायक और नायिका हैं–
(A) राम-वासन्ती (B) लव-आत्रेयी
(C) राम-सीता (D) चन्द्रकेतु-तमसा

77. (C)	**78. (B)**	**79. (D)**	**80. (A)**	**81. (B)**	**82. (C)**	**83. (A)**	**84. (B)**	**85. (A)**	**86. (C)**
87. (D)	**88. (D)**	**89. (A)**	**90. (C)**	**91. (D)**	**92. (B)**	**93. (A)**	**94. (B)**	**95. (C)**	

96. ''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' किसकी उक्ति है–
(A) राम की (B) सीता की
(C) तमसा की (D) वाल्मीकि की

97. सीताविषयक लोकापवाद राम से किसने बताया–
(A) वाल्मीकि ने (B) वशिष्ठ ने
(C) अष्टावक्र ने (D) दुर्मुख ने

98. ''गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः'' यह सूक्ति किस नाटक से सम्बन्धित है–
(A) उत्तरसीताचरितम् (B) जानकीजीवनम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) सीताचरितम्

99. उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क का नाम है–
(A) छाया अङ्क (B) चित्रदर्शन अङ्क
(C) गर्भाङ्क (D) पञ्चवटीप्रवेश अङ्क

100. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ होता है–
(A) तमसा और मुरला के वार्तालाप से
(B) तमसा और सीता के वार्तालाप से
(C) राम और वासन्ती के मिलने से
(D) गोदावरी और भागीरथी के वार्तालाप से

96. (A) **97.** (D) **98.** (C) **99.** (B) **100.** (A)

शिवराजविजय (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. अम्बिकादत्तव्यास जी ने अपना संक्षिप्त निज वृत्तान्त स्वयं लिखा है–
(A) बिहार बिहारिणी में (B) बिहारी शतकम् में
(C) बिहारी बिहार में (D) शिवराजविजयम् में

2. पण्डित अम्बिकादत्तव्यास के पिताजी का नाम था–
(A) देवीदत्त (B) दुर्गादत्त
(C) पं. राजाराम (D) रावत जी

3. पं. अम्बिकादत्त व्यास का विवाह हुआ–
(A) 18 वर्ष (B) 13 वर्ष
(C) 25 वर्ष (D) 20 वर्ष

4. अम्बिकादत्तव्यास जी का जन्म हुआ था–
(A) जयपुर में (B) काशी में
(C) बिहार में (D) महाराष्ट्र में

5. चैत्र शुक्ल अष्टमी संवत् 1915 में किस कवि का जन्म हुआ था–
(A) बाण का (B) पं. अम्बिकादत्तव्यास का
(C) दण्डी का (D) शिवाजी का

6. 'सुकवि' नाम से विख्यात थे–
(A) कालिदास (B) भारवि
(C) अम्बिकादत्तव्यास (D) बाणभट्ट

7. एक घड़ी (24 मिनट) में 100 श्लोक बना लेने के कारण अम्बिकादत्तव्यास को उपाधि मिली–
(A) घटिकाशतक (B) शतकघटी
(C) शतकमहारथी (D) घटशतकी

8. अम्बिकादत्तव्यास ने स्थापना की–
(A) सार्वभौम संस्कृतसमाज की
(B) बिहार-संस्कृत-सञ्जीवनी-समाज की
(C) संस्कृत-भारती-समाज की
(D) संस्कृत कथावाचन समाज की

9. काशी की महासभा ने व्यास जी को किस उपाधि से विभूषित किया–
(A) भारतरत्न (B) साहित्यरत्न
(C) संस्कृतरत्न (D) बिहाररत्न

10. अम्बिकादत्तव्यास की मृत्यु हुई–
(A) संवत् 1957 (B) संवत् 1915
(C) संवत् 1943 (D) संवत् 1944

11. शिवराजविजयम् का कथानक है–
(A) ऐतिहासिक (B) सामाजिक
(C) आर्थिक (D) दार्शनिक

12. 'महाराष्ट्रकेशरी' के रूप में वर्णन है–
(A) गौरसिंह का (B) श्यामबटु का
(C) ब्रह्मचारी गुरु का (D) शिवाजी का

13. संस्कृत साहित्य में बीसवीं शताब्दी का एक सफल 'ऐतिहासिक उपन्यास' है–
(A) शिवाजीविजयम् (B) धर्मश्रीः
(C) शिवराजभूषणम् (D) शिवराजविजयम्

14. संस्कृतवाङ्मय का प्रथम 'ऐतिहासिक उपन्यास' होने का गौरव प्राप्त है–
(A) शिवराजविजयम् को (B) सार्थः को
(C) धर्मश्रीः को (D) आवरणम् को

15. महाराष्ट्रशिरोमणि शिवाजी की दस वर्षों की जीवनी पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास है–
(A) शिवराजभूषणम् (B) शिवाजीयशोविजयम्
(C) शिवराजविजयम् (D) शिवाजीविजयम्

16. गौरसिंह की बहन है–
(A) सौवर्णी (B) देववती
(C) तारामती (D) लीलावती

17. शिवराजविजयम् के सन्दर्भ में असत्य कथन है–
(A) चार निःश्वास; प्रत्येक में तीन विराम
(B) तीन विराम; 12 निःश्वास
(C) तीन विराम; प्रत्येक में चार निःश्वास
(D) कुल 12 निश्वास और चार निःश्वासों में एक विराम

1. (C) 2. (B) 3. (B) 4. (A) 5. (B) 6. (C) 7. (A) 8. (B) 9. (A) 10. (A)
11. (A) 12. (D) 13. (D) 14. (A) 15. (C) 16. (A) 17. (A)

18. शिवराजविजयम् में किस रस की प्रधानता है–
(A) वीररस की (B) शृङ्गाररस की
(C) करुणरस की (D) अद्भुतरस की

19. उदयपुर के एक जागीरदार खड्गसिंह की सन्तानें हैं–
(A) श्यामसिंह (B) गौरसिंह
(C) सौवर्णी (D) उपर्युक्त तीनों

20. ''विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्'' श्रीमद्भागवत के दशमस्कन्ध का यह श्लोक मङ्गलाचरण के रूप में उल्लिखित है–
(A) मेघदूतम् में (B) कादम्बरी में
(C) वाल्मीकीयरामायणम् में (D) शिवराजविजयम् में

21. शिवाजी किस गद्यकाव्य के नायक हैं–
(A) शिवराजविजयम् के (B) कादम्बरी के
(C) तिलकमञ्जरी के (D) हर्षचरितम् के

22. बीजापुर का नवाब है–
(A) तानरङ्ग (B) शाइस्ता खाँ
(C) अफजल खाँ (D) औरङ्गजेब

23. ''ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामा समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति प्रणमन्ति स्तुवन्ति च'' यहाँ 'तम्' पद से किसका संकेत किया गया है–
(A) ब्रह्मचारीगुरु का (B) योगिराज का
(C) गौरबटु का (D) सूर्य का

24. ''सः ब्रह्मचारिबटुभ्याम् अदर्शि'' इस पद में वाच्य है–
(A) कर्मवाच्य (B) कर्तृवाच्य
(C) भाववाच्य (D) इनमें से कोई नही

25. 'त्रियामा' पद का अर्थ है–
(A) यामिनी (B) विभावरी
(C) रात्रि (D) उपर्युक्त सभी

26. 'जागृ' धातु का ''अजागरीः'' रूप बनेगा–
(A) लुङ् म.पु एक. (B) लङ् म.पु. द्विव.
(C) लोट् उ.पु. एक. (D) लृट् म.पु. बहु.

27. कन्या के अपहरणकर्ता यवनयुवक को किसने मारा–
(A) गौरसिंह ने (B) श्यामबटु ने
(C) रघुवीरसिंह ने (D) शिवाजी ने

28. 'समतिष्ठत्' में धातु है–
(A) तिष्ठ (B) स्था
(C) दृश् (D) तिस्

29. 'संवर्त्स्यथ' में धातूपसर्ग का सही विकल्प है–
(A) सम्+वृतु+लृट् (B) सम्+वृत्र+लङ्
(C) सम्+वृञ्+लुङ् (D) सम्+वृतृ+लट्

30. वयमपि तु स्वाङ्कागतसत्त्ववृत्तयः शिवस्यगणाः अत्रैव निवसामः' यह कथन किसका है–
(A) श्यामबटु का (B) यवनयुवक का
(C) ब्रह्मचारीगुरु का (D) गौरसिंह का

31. अफजलखान के तीनों अश्वों को मारकर पाँच ब्राह्मणपुत्रों को छुड़ाने वाला वीर है–
(A) गौरसिंह (B) रघुवीरसिंह
(C) श्यामसिंह (D) शिवाजी

32. ''विजयतां शिववीरः सिद्ध्यन्तु भवतां मनोरथाः'' इति कः उक्तवान्?
(A) ब्रह्मचारी गुरु ने (B) योगिराज ने
(C) रघुवीरसिंह ने (D) पुरोहित देवशर्मा ने

33. 'व्यहार्षीत्' में लकार है–
(A) लङ् (B) लुङ्
(C) लिङ् (D) लिट्

34. ''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्'' यह सारगर्भित महती प्रतिज्ञा किस वीर की है–
(A) शिवाजी की (B) गौरसिंह की
(C) ब्रह्मचारीगुरु की (D) औरङ्गजेब की

35. शाइस्ता खाँ को दक्षिण देश का शासक बनाकर किसने भेजा–
(A) अकबर ने (B) कुतुबुद्दीन ऐबक ने
(C) औरङ्गजेब ने (D) महमूद गजनवी ने

36. शहाबुद्दीन ने भारत का प्रथम सम्राट् बनाया–
(A) कुतुबुद्दीन को (B) बाबर को
(C) औरङ्गजेब को (D) महमूदगजनवी को

18. (A)	19. (D)	20. (D)	21. (A)	22. (B)	23. (B)	24. (A)	25. (D)	26. (A)	27. (A)
28. (B)	29. (A)	30. (D)	31. (A)	32. (B)	33. (B)	34. (A)	35. (C)	36. (A)	

37. ''मुने! विलक्षणोऽयं भगवान् सकलकलाकलापकलनः सकलकालनः करालः कालः'' यह कथन है–
(A) ब्रह्मचारीगुरु का (B) योगिराज का
(C) गौरसिंह का (D) पुरोहित का

38. ''सत्यं न लक्षितो मया समयवेगः। यौधिष्ठिरे समये कलितसमाधिरहं वैक्रमसमये उदस्थाम्'' यह कथन किसका है–
(A) योगिराज का (B) विक्रमादित्य का
(C) ब्रह्मचारी गुरु का (D) गौरसिंह का

39. ''अद्य न तानि स्रोतांसि नदीनाम्, न सा संस्था नगराणां, न सा आकृतिर्गिरीणाम्।'' यह कथन है–
(A) गौरसिंह का (B) ब्रह्मचारीगुरु का
(C) योगिराज का (D) शिवाजी का

40. विक्रमादित्य को भारतभूमि छोड़कर गए हुए कितना समय बीत गया–
(A) 17 वर्ष (B) 17000 वर्ष
(C) 1700 वर्ष (D) 7000 वर्ष

41. ''विक्रमराज्येऽपि कथमेष पातकमयो दुराचाराणामुपद्रवः'' कस्य कथनमिदम्–
(A) योगिराज का (B) ब्रह्मचारीगुरु का
(C) गौरसिंह का (D) विक्रमादित्य का

42. ''क्वाधुना मन्दिरे मन्दिरे जयजयध्वनिः, क्व सम्प्रति तीर्थे तीर्थे घण्टानादः, क्वाद्यापि मठे मठे वेदघोषः'' यह पंक्तियाँ किस ग्रन्थ से उद्धृत हैं–
(A) हर्षचरितम् से (B) शिवाजीशतकम् से
(C) शिवशतकम् से (D) शिवराजविजयम् से

43. ''अहो! प्रबुद्धो मुनिः! प्रबुद्धो मुनिः! इत एवाऽऽगच्छति इत एवाऽऽगच्छति सत्कार्योऽयं सत्कार्योऽयम्'' यह कथन किसका है–
(A) गौरसिंह का (B) श्यामबटु का
(C) दोनों का (D) इनमें से किसी का नहीं

44. 'पुण्डरीकपटल' पद का अर्थ है–
(A) श्वेतकमल (B) पीतकमल
(C) नीलकमल (D) सरोवर

45. 'अवादीत्' में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) वद्+लुङ्+तिप् (B) अव्+वद्+लङ्
(C) अव+दा+लुङ्+तिप् (D) अव्+दा+लट्+झि

46. ''बटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः'' इन पंक्तियों में वर्णन है–
(A) गौरबटु का (B) श्यामबटु का
(C) दोनों का (D) ब्रह्मचारीगुरु का

47. 'अलं भो अलम्! मयैव पूर्वमवचितानि कुसुमानि त्वं तु चिरं रात्रावजागरीरिति क्षिप्रं नोत्थापितः' यह कथन किसने किससे कहा–
(A) गौरबटु ने श्यामबटु से
(B) श्यामबटु ने ब्रह्मचारीगुरू से
(C) ब्रह्मचारीगुरू ने गौरबटु से
(D) श्यामबटु ने गौरबटु से

48. ''चर्कर्ति बर्भर्ति जर्हर्ति'' प्रयोग है–
(A) यङ्लुक् क्रिया (B) धातुपसर्ग क्रिया
(C) कर्मवाच्य क्रिया (D) सन्नत क्रिया

49. ''नेदीयसि'' पद का अर्थ है–
(A) समीप (B) दूर
(C) नदी के किनारे (D) इनमें से कोई नही

50. यवनयुवक ने नदी के किनारे से जिस कन्या का अपहरण किया था, वह थी–
(A) माँ की गोद में (B) अकेली रास्ते में
(C) अपने बूढे पिता के साथ (D) अपने भाई के साथ

51. योगिराज ने दूसरी बार समाधि कब लगायी थी–
(A) युधिष्ठिर के समय में (B) विक्रमादित्य के समय में
(C) शिवाजी के समय में (D) औरङ्गजेब के समय में

52. भारतवर्ष की वर्तमान दशा को कौन किससे जानना चाह रहा था–
(A) ब्रह्मचारीगुरु, योगिराज से
(B) योगिराज, ब्रह्मचारीगुरु से
(C) गौरबटु, शिवाजी से
(D) आश्रमवासी योगिराज से

37. (B) 38. (A) 39. (B) 40. (C) 41. (A) 42. (D) 43. (C) 44. (A) 45. (A) 46. (A) 47. (D) 48. (A) 49. (A) 50. (A) 51. (B) 52. (B)

53. 'जिग्लापयिषामि' का व्याकरणात्मक विवेचन होगा–
(A) ग्लै हर्षक्षये+पुक्+णिच्+यङ्+लट्+मिप्
(B) गै+पुक्+सन्+लट्+मिप्
(C) ग्लै हर्षक्षये+पुक्+णिच्+सन्+लट्+मिप्
(D) लप्+णिच्+सन्+लिट्+मिप्

54. सोमनाथ मन्दिर को धूलि धूसरित किसने किया–
(A) मोहम्मदगोरी ने (B) महमूद गजनवी ने
(C) कुतुबुद्दीन ऐबक ने (D) औरङ्गजेब ने

55. 'अध्वनीनम्' का अर्थ है–
(A) पथिक (B) रास्ता
(C) रास्ते का पत्थर (D) इनमें से कोई नहीं

56. 'अनीकिनी' पद का अर्थ होगा–
(A) अनेक नही (B) सेना
(C) जो एक न हो (D) एकाकिनी

57. योगिराज विक्रमादित्य के बाद जब समाधि से जगे तो दिल्ली का शासक कौन था–
(A) अकबर (B) औरङ्गजेब
(C) शिवाजी (D) कुतुबुद्दीन ऐबक

58. योगिराज के समाधि से जगने के समय शिवाजी कहाँ निवास कर रहे थे–
(A) सिंहदुर्ग में (B) राजदुर्ग में
(C) विजयपुर में (D) दिल्ली में

59. बीजापुर के शासक की आज्ञा से शिवाजी के साथ युद्ध करने कौन आ रहा था–
(A) अफजल खाँ (B) शाइस्ता खान
(C) औरङ्गजेब (D) कुतुबद्दीन ऐबक

60. 'उष्णीष' पद का अर्थ है–
(A) कटिबन्ध (B) पगड़ी
(C) कुर्ता (D) गर्म कपड़े

61. सोमनाथ मन्दिर कहाँ स्थित है–
(A) महाराष्ट्र में (B) दिल्ली में
(C) जयपुर में (D) गुजरात में

62. 'उदतूतुलत्' में लकार है–
(A) लुङ् (B) लङ्
(C) लृट् (D) लिट्

63. सोमनाथ मन्दिर में लटकने वाला विशाल घण्टा कितने मन के स्वर्ण शृंखलाओं में लटकता था–
(A) 200 मन (B) 150 किग्रा
(C) 200 किलो (D) 1000 मन

64. ''नाहं मूर्तीः विक्रीणामि, किन्तु भिनद्मि'' इति कस्य-वचनमिदम्
(A) महमूद गजनवी (B) पुजारी गणों
(C) औरङ्गजेब (D) अफजल खान

65. ब्रह्मचारी गुरु के कुटिया के चारों ओर है–
(A) परमपवित्र जल से पूर्ण सरोवर
(B) सुन्दर पुष्पवाटिका
(C) गुफाओं से युक्त पर्वतखण्ड
(D) पहाड़ी झरने एवं नदियाँ

66. ''कुटीरान्तः कन्यकाऽस्ति, सा च यवनवधव्यसनिनि मयि जीवति न शक्या द्रष्टुमपि, किं नाम स्प्रष्टुम्?'' यह वाक्य किसने किससे कहा–
(A) गौरसिंह ने यवन युवक से
(B) श्यामसिंह ने यवन युवक से
(C) गौरसिंह ने अफजल खान से
(D) यवनयुवक ने गौरसिंह से

67. 'रुद्+शतृ+ङीप्' से रूप सिद्ध होगा–
(A) रूदती (B) रुदन्ती
(C) रोदती (D) रुदती

68. ''आः! वयमपि कुत इति प्रष्टव्याः? भारतीय-कन्दरि-कन्दरेष्वपि वयं विचरामः'' यह कथन है–
(A) गौरसिंह का (B) श्यामबटु का
(C) योगिराज का (D) यवनयुवक का

69. शिवराजविजयम् के अनुसार कन्या के अपहरणकर्ता यवनयुवक की आयु लगभग कितनी रही होगी–
(A) 25 वर्ष (B) 16 वर्ष
(C) 20 वर्ष (D) 30 वर्ष

70. 'असावेव' पद का सन्धि-विच्छेद होगा–
(A) असाव+एव (B) असौ+एव
(C) असा+अव+एव (D) अस+अव+इव

53. (C)	**54. (B)**	**55. (A)**	**56. (B)**	**57. (B)**	**58. (A)**	**59. (A)**	**60. (B)**	**61. (D)**	**62. (A)**
63. (A)	**64. (A)**	**65. (B)**	**66. (A)**	**67. (D)**	**68. (D)**	**69. (C)**	**70. (B)**		

71. ''धिगस्मान्, येऽद्यापि जीवामः, श्वसिमः, विचरामः आत्मन आर्यवंश्यांश्चाऽभिमन्यामहे'' यह कथन किसका है–
(A) योगिराज का (B) ब्रह्मचारीगुरु का
(C) गौरसिंह का (D) श्यामबटु का

72. शिवराजविजयम् के अनुसार गौरसिंह की अवस्था है–
(A) 16 वर्ष (B) 18 वर्ष
(C) 20 वर्ष (D) 30 वर्ष

73. यवनयुवक द्वारा अपहृत कन्या की अवस्था है–
(A) लगभग 17 वर्ष (B) लगभग 7 वर्ष
(C) लगभग 18 वर्ष (D) लगभग 20 वर्ष

74. ''सुघटितं शरीरं सान्द्रां जटाम्, विशालानि अङ्गानि, अङ्गारप्रतिमे नयने, मधुरां गम्भीरां च वाचम्...... इन पंक्तियों में किसका वर्णन है–
(A) गौरसिंह का (B) श्यामबटु का
(C) योगिराज का (D) शिवाजी का

75. जङ्गल में अकस्मात् भालू के आ जाने से यवनयुवक कन्या को छोड़कर किस वृक्ष में चढ़ गया–
(A) शाल्मलीवृक्ष में (B) निम्बवृक्ष में
(C) आम्रवृक्ष में (D) वटवृक्ष में

76. 'अकूपारतलम्' पद का अर्थ है–
(A) नदीतलम् (B) कुआँ का तल
(C) सागरतल (D) तालाब की गहराई

77. 'हरिद्राद्रवक्षालितमिव' यहाँ अलङ्कार है–
(A) उपमा (B) रूपक
(C) निदर्शना (D) उत्प्रेक्षा

78. ''अस्मान् ताडय, मारय, छिन्धि, भिन्धि, पातय, मज्जय, खण्डय, कर्तय, ज्वलय, किन्तु त्यज इमाम् अकिञ्चित्करीं जडां महादेवप्रतिमाम्'' यह वाक्य किसने किससे कहा–
(A) महमूदगजनवी ने पुजारियों से
(B) औरङ्गजेब ने ब्रह्मचारी से
(C) पुजारियों ने महमूद गजनवी से
(D) गौरसिंह ने यवनयुवक से

79. उपर्युक्त गद्यांश की क्रियापदों में लकार, पुरुष एवं वचन का सही प्रयोग है–
(A) लोट् उ0पु0एक0 (B) लुङ् उ0पु0एक0
(C) लट् म0पु0द्वि0 (D) लोट् म0पु0एक0

80. ''अतुत्रुटत्'' में धातु है–
(A) त्रुट् छेदने, लुङ् (B) त्रुट् छेदने, लङ्
(C) त्रुटिई छेदने, लङ् (D) त्रुट्, लिट्

81. शिवराजविजयम् के अनुसार विक्रम संवत् 1087 में मृत्यु हो गयी–
(A) महमूद गजनवी की (B) अम्बिकादत्तव्यास की
(C) औरङ्गजेब की (B) पृथ्वीराजचौहान की

82. 'अकार्षुः' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी–
(A) कृ+लुङ्+झि (B) क्री+लङ्+तिप्
(C) कृ+लिङ्-झि (D) क्री+लुङ्+झि

83. वि+आङ्+हृ+लुङ् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप बनेगा–
(A) व्याहार्षीत् (B) व्यहर्षीत्
(C) व्याहार्यासीत् (D) व्याहर्षित्

84. ''पिपृच्छामि'' प्रयोग है–
(A) सन्नत (B) नामधातु
(C) यङ्लुगन्त (D) इनमें से कोई नहीं

85. ''न्यवेदीत्'' में सन्धि हैं–
(A) गुणसन्धि (B) यण्सन्धि
(C) अयादिसन्धि (D) पूर्वरूपसन्धि

86. 'इयेष' पद में लकार है–
(A) लिट् (B) लुङ्
(C) लङ् (D) लट्

87. ब्रह्मचारीगुरु की कुटिया के पूर्व दिशा की ओर स्थित है–
(A) पुष्पवाटिका (B) सरोवर
(C) झरना (D) पहाड़ी

88. गौरसिंह को फूल तोड़ने से कौन मना करता है–
(A) श्यामबटु (B) ब्रह्मचारीगुरु
(C) योगिराज (D) यवनयुवक

71. (B)	**72. (A)**	**73. (B)**	**74. (C)**	**75. (A)**	**76. (C)**	**77. (D)**	**78. (C)**	**79. (D)**	**80. (A)**
81. (A)	**82. (A)**	**83. (A)**	**84. (A)**	**85. (B)**	**86. (A)**	**87. (B)**	**88. (A)**		

89. ब्रह्मचारीबटु किस पत्ते के दोनों में फूल तोड़ता है–
(A) पलाश के पत्ते में (B) केले के पत्ते में
(C) शाल्मली के पत्ते में (D) पीपल के पत्ते में

90. 'जटाभिर्ब्रह्मचारी' इस प्रयोग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किस सूत्र से है–
(A) इत्थम्भूतलक्षणे (B) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्
(C) साधकतमं करणम् (D) अपवर्गे तृतीया

91. ''अहो! चिररात्राय सुप्तोऽहम् स्वप्नजालपरतन्त्रेणैव महान् पुण्यमयः समयोऽतिवाहितः'' यह कथन किसका है–
(A) श्यामबटु का (B) योगिराज का
(C) ब्रह्मचारीगुरु का (D) गौरबटु का

92. शिवराजविजयम् का प्रारम्भ होता है–
(A) योगिराज के वर्णन से
(B) सूर्य के वर्णन से
(C) ब्रह्मचारी गुरु के आश्रम वर्णन से
(D) गौरसिंह के फूल तोड़ने से

93. 'रोलम्बकदम्ब' पद का शब्दार्थ है–
(A) चक्रवाकसमूह (B) तारासमूह
(C) भ्रमरसमूह (D) श्वेतकमलसमूह

94. 'आखण्डलदिक्' पद से किस दिशा का संकेत किया गया है–
(A) पूर्व दिशा का (B) पश्चिम दिशा का
(C) उत्तर दिशा का (D) दक्षिण दिशा का

95. हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः'' इत्यादि शिवराजविजयम् का मङ्गलाचरण किस ग्रन्थ से उद्धृत है–
(A) महाभारत से (B) वाल्मीकीयरामायण से
(C) श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध से (D) गीता से

96. शिवाजी के माता-पिता हैं–
(A) जीजाबाई-शाहजी भोसले
(B) सौवर्णी-देवशर्मा
(C) शिवानी-रघुवीरसिंह
(D) रमाबाई-दुर्गादत्त

97. 'कम्बुकण्ठः' पद का अर्थ है–
(A) कौए की तरह गर्दन वाला
(B) शंख की तरह ग्रीवा वाला
(C) छोटी गर्दन वाला
(D) कम कण्ठ वाला

98. 'शाखी' पद का अर्थ है–
(A) तरु
(B) विटप
(C) वृक्ष
(D) उपर्युक्त सभी

99. 'निश्चक्राम कश्चित् गुरुसेवनपटुर्विप्रबटुः' यहाँ 'कश्चित्' पद से किसका सङ्केत है–
(A) श्यामबटु का
(B) गौरसिंह का
(C) ब्रह्मचारीगुरु का
(D) यवनयुवक का

100. निजपर्णकुटीर से निकलता हुआ विप्रवटु और स्वकुटीर में प्रवेश करते हुए ब्रह्मचारीगुरु का वर्णन किस ग्रन्थ में वर्णित है–
(A) शिवराजविजयम् में
(B) कादम्बरी शुकनासोपदेश में
(C) अवन्तिसुन्दरीकथा में
(D) हर्षचरितम् में

नमः संस्कृताय

89. (B) **90.** (A) **91.** (D) **92.** (B) **93.** (C) **94.** (A) **95.** (C) **96.** (A) **97.** (B) **98.** (D) **99.** (B) **100.** (A)

कादम्बरी-शुकनासोपदेशः (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. बाण की गद्यशैली है–
(A) गौड़ी (B) वैदर्भी
(C) कौशिकी (D) पाञ्चाली

2. बाणभट्ट के पिता का नाम है–
(A) कुबेर (B) चित्रभानु
(C) वत्स (D) अर्थपति

3. बाणभट्ट के पुत्र का नाम है–
(A) मुरारिभट्ट (B) मयूरभट्ट
(C) भूषणभट्ट (पुलिन्द) (D) नयनभट्ट

4. बाणभट्ट किस गोत्र में उत्पन्न हुए–
(A) वत्सगोत्र (B) भृगुगोत्र
(C) काश्यपगोत्र (D) गौतमगोत्र

5. बाणभट्ट का निवास स्थान है–
(A) उज्जयिनी
(B) गया बिहार
(C) अचलपुर
(D) शोणनदी के तट पर प्रीतिकूट ग्राम

6. शुकनास के अनुसार शास्त्रजलप्रक्षालित बुद्धि भी कब कालुष्य को प्राप्त होती है–
(A) वृद्धावस्थायाम् (B) यौवनारम्भे
(C) बाल्यावस्थायाम् (D) इनमें से कोई नहीं

7. तारापीड का पुत्र है–
(A) शुकनास (B) वैशम्पायन
(C) चन्द्रापीड (D) पुण्डरीक

8. वैशम्पायन किसका पुत्र है–
(A) तारापीड का (B) शुकनास का
(C) चन्द्रापीड का (D) पुण्डरीक का

9. तारापीड का मन्त्री है–
(A) शुकनास (B) इन्द्रायुध
(C) अर्थपति (D) चित्रभानु

10. चन्द्रापीड को किससे प्यार है–
(A) महाश्वेता से (B) चाण्डालकन्या से
(C) कादम्बरी से (D) पत्रलेखा से

11. चन्द्रापीड की माता है–
(A) रानी विलासवती (B) पत्रलेखा
(C) महाश्वेता (D) मनोरमा

12. पुण्डरीक के पिता हैं–
(A) चित्रभानु (B) अर्थकेतु
(C) शुकनास (D) श्वेतकेतु

13. महाश्वेता का आश्रम कहाँ स्थित है–
(A) अच्छोदसरोवर में (B) हेमकूट में
(C) मानसरोवर में (D) पम्पासरोवर में

14. कादम्बरी किसकी पुत्री है–
(A) शूद्रक की (B) श्वेतकेतु की
(C) गन्धर्वराज चित्ररथ की (D) शुकनास की

15. कादम्बरी की माता का नाम है–
(A) विलासवती (B) पत्रलेखा
(C) हंसपदिका (D) मदिरा

16. कादम्बरी कथा का उत्तरार्द्धभाग किसकी रचना है–
(A) बाणभट्ट (B) मयूरभट्ट
(C) पुलिन्दभट्ट या भूषणभट्ट (D) केयूरभट्ट

17. तारापीड की राजधानी है–
(A) उज्जयिनी (B) विदिशा
(C) काश्मीर (D) मालवा

18. कादम्बरी कथा का मुख्य रस है–
(A) अद्भुतरस (B) वीररस
(C) करुणरस (D) शृङ्गाररस

19. कादम्बरी कथा का प्रधान नायक है–
(A) चन्द्रापीड (B) वैशम्पायन
(C) जाबालि (D) कपिञ्जल

1. (D)	**2.** (B)	**3.** (C)	**4.** (A)	**5.** (D)	**6.** (B)	**7.** (C)	**8.** (B)	**9.** (A)	**10.** (C)
11. (A)	**12.** (D)	**13.** (A)	**14.** (C)	**15.** (D)	**16.** (C)	**17.** (A)	**18.** (D)	**19.** (A)	

20. बाणभट्टस्य मातुः नाम अस्ति–
(A) वसुमतीदेवी (B) राजदेवी
(C) महाश्वेती (D) महादेवी

21. शूद्रक पूर्वजन्म में क्या था–
(A) तारापीड (B) वैशम्पायन
(C) चन्द्रापीड (D) कपिञ्जल

22. बाणभट्ट की कादम्बरी क्या है–
(A) कथा (B) आख्यायिका
(C) मुक्तक (D) महाकाव्य

23. कादम्बरी के कथामुख के प्रारम्भ में किस राजा का वर्णन है–
(A) तारापीड का (B) चन्द्रापीड का
(C) शूद्रक का (D) पुण्डरीक का

24. युवा चन्द्रापीड को सारगर्भित उपदेश किसने दिया–
(A) वैशम्पायन (B) पुण्डरीक
(C) शूद्रक (D) शुकनास

25. ''न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। न रूपमालोकयते। न कुलक्रममनुवर्तते।'' ये पंक्तियाँ कादम्बरी में किस प्रसङ्ग में आयी हैं–
(A) कादम्बरी सौन्दर्यवर्णन
(B) चाण्डालकन्या वर्णन
(C) लक्ष्मी की निन्दा
(D) महाश्वेता गुणवर्णन

26. यह सारा काव्यजगत् किस कवि का उच्छिष्ट माना जाता है–
(A) बाणभट्ट का (B) कालिदास का
(C) श्रीहर्ष का (D) दण्डी का

27. ''भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्'' यहाँ 'भवादृशा' पद से किसका संकेत है–
(A) शूद्रक का (B) चन्द्रापीड का
(C) तारापीड का (D) बाणभट्ट का

28. 'करिणः' पद का अर्थ है–
(A) गजाः (B) अश्वाः
(C) किरणम् (D) हस्ताः

29. पुरुषों के लिए समग्र मलों को धोने में समर्थ बिना जल का स्नान है–
(A) सरस्वती कृपा (B) गुरू का उपदेश
(C) बल-पौरुष (D) देव-दर्शन

30. 'रजनिकरगभस्तयः' में 'गभस्तयः पद का अर्थ है–
(A) गर्भिणी (B) किरणें
(C) अन्धकार (D) प्रकाश

31. हारीत पुत्र था–
(A) महर्षि अगस्त्य का (B) महर्षि जाबालि का
(C) महर्षि श्वेतकेतु का (D) महर्षि विश्वामित्र का

32. शाल्मली वृक्ष का वर्णन किस ग्रन्थ में है–
(A) कादम्बरी शुकनासोपदेश में
(B) कादम्बरी कथामुख में
(C) कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त में
(D) कादम्बरी उत्तरार्द्ध में

33. ''अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्'' एषा सूक्तिः कुतः उद्धृता अस्ति–
(A) कादम्बरी–कथामुखात्
(B) कादम्बरी-शुकनासोपदेशात्
(C) कादम्बरी-उत्तरार्द्धभागात्
(D) कादम्बर्यां नास्ति

34. चन्द्रापीड के चरित्र की विशेषता नहीं है–
(A) सहृदयप्रेमी (B) विवेकी युवक
(C) अस्पष्टवक्ता (D) पराक्रमी राजपुत्र

35. ''वाणी बाणो बभूव'' इति कथनं कस्य अस्ति–
(A) गोवर्द्धनाचार्यस्य (B) जयदेवस्य
(C) राजशेखरस्य (D) श्रीचन्द्रदेवस्य

36. ''बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती'' यह किसका कथन है–
(A) सोड्ढल का (B) त्रिलोचन का
(C) धर्मदास का (D) मङ्खक का

37. ''बाणस्तु पञ्चाननः'' यह किसका कथन है–
(A) मंखक का (B) श्रीचन्द्रदेव का
(C) गोवर्द्धन का (D) राजशेखर का

20. (B)	**21.** (C)	**22.** (A)	**23.** (C)	**24.** (D)	**25.** (C)	**26.** (A)	**27.** (B)	**28.** (A)	**29.** (B)
30. (B)	**31.** (B)	**32.** (B)	**33.** (B)	**34.** (C)	**35.** (A)	**36.** (A)	**37.** (B)		

38. ''अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः'' यह सूक्ति कहाँ से उद्धृत है–
(A) कादम्बरी शुकनासोपदेश से
(B) कादम्बरी कथामुख से
(C) कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त से
(D) कादम्बरी उत्तरार्द्ध भाग से

39. ''गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति'' यह कथन किसके लिए कहा गया है–
(A) सरस्वती के लिए (B) लक्ष्मी के लिए
(C) दुष्टों के लिए (D) राजधानी के लिए

40. 'दुष्टा, पिशाची, अनार्या, दुराचारिणी' आदि पदों का प्रयोग बाण ने किसके लिए किया है–
(A) दुष्टमहिलाओं के लिए (B) चाण्डालकन्या के लिए
(C) लक्ष्मी के लिए (D) रानी विलासवती के लिए

41. ''यथा यथा चेयं चपला दीप्यते'' यहाँ 'चपला' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) भगवती सरस्वती का (B) लक्ष्मी का
(C) अनार्या स्त्रियों का (D) विलासवती का

42. ''कुमार! तथा प्रयतेथाः यथा नोपहस्यसे जनैः, न निन्द्यसे साधुभिः, न धिक्क्रियसे गुरुभिः'' यह कथन किसने किससे कहा–
(A) चन्द्रापीड ने शुकनास से
(B) शुकनास ने चन्द्रापीड से
(C) तारापीड ने शुकनाम से
(D) शुकनास ने तारापीड से

43. बड़े-बूढ़ों के उपदेश को बकवास समझकर उसकी उपेक्षा कर देते हैं–
(A) दुष्ट राजागण (B) सेवकगण
(C) सैनिकगण (D) चन्द्रापीड

44. ''न प्रणमन्ति देवताभ्यः, न पूजयन्ति द्विजातीन् न मानयन्ति मान्यान्, न अभ्युत्तिष्ठन्ति गुरून्'' इन पंक्तियों में किसका वर्णन है–
(A) राजाओं का (B) सेवकों का
(C) विद्वानों का (D) देवताओं का

45. 'इषवः' पद का अर्थ है–
(A) शर (B) बाण
(C) तीर (D) उपर्युक्त सभी

46. 'कुलीराः इव तिर्य्यक् परिभ्रमन्ति' यहाँ 'कुलीर' पद का अर्थ है–
(A) कुम्हार (B) कद्दू
(C) केकड़ा (D) सर्प

47. 'खद्योत' पद का अर्थ है–
(A) आकाश (B) खरगोश
(C) प्राणी (D) जुगनू

48. ''कदलिका कामकरिणः'' यहाँ 'कदलिका' पद का अर्थ है–
(A) एक पुष्प विशेष (B) सरस्वती
(C) केले का बगीचा (D) लक्ष्मी

49. ''राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य'' यहाँ 'राहुजिह्वा' पद प्रयुक्त है–
(A) राहुग्रस्त जीभ के लिए
(B) राहुग्रह के लिए
(C) लक्ष्मी के लिए
(D) राजाओं के जिह्वा के लिए

50. 'आशीविषाः' पद का अर्थ है–
(A) आशीर्वाद (B) सर्प
(C) विष (D) रोष

51. भीम किस राक्षसी पर मोहित हुए थे–
(A) शूर्पणखा (B) हिडिम्बा
(C) हेरम्बा (D) हाहाडम्बिका

52. लक्ष्मी कहाँ से पैदा होती है–
(A) विष्णु के पैरों से (B) ब्रह्मा की नाभि से
(C) क्षीरसागर से (D) शिव की जटाओं से

53. लक्ष्मी ने पारिजात के पल्लवों से क्या ग्रहण किया–
(A) कुटिलता (B) अस्थिरता
(C) सम्मोहन शक्ति (D) राग

54. लक्ष्मी 'कर्कशता' कहाँ से ग्रहण करती है–
(A) कौस्तुभमणि से (B) मदिरा से
(C) उच्चैःश्रवा से (D) हालाहल से

38. (A)	**39.** (B)	**40.** (C)	**41.** (B)	**42.** (B)	**43.** (A)	**44.** (A)	**45.** (D)	**46.** (C)	**47.** (D)
48. (C)	**49.** (C)	**50.** (B)	**51.** (B)	**52.** (C)	**53.** (D)	**54.** (A)			

55. पुरुषों में स्थित समस्त दोषों को गुणरूप में परिणत कर देते हैं–
(A) गुरूपदेश (B) लक्ष्मी की प्राप्ति
(C) राज्यप्राप्ति (D) बुद्धिवैभव

56. शुकनास, अनर्थ परम्परा की कड़ी में किसे नहीं मानते हैं–
(A) जन्मजातप्रभुता (B) युवावस्था
(C) अनुपमसौन्दर्य (D) शक्त्यसम्पन्नता

57. ''विदितवेदितव्यस्य अधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति'' यहाँ 'अधीतसर्वशास्त्रस्य' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) शुकनास (B) चन्द्रापीड
(C) वैशम्पायन शुक (D) तारापीड

58. 'निम्नगा' पद का अर्थ है–
(A) नदी (B) गङ्गोत्री
(C) सूची (D) समुद्र

59. 'अमृतसहोदरापि कटुविपाका' कौन है–
(A) लक्ष्मी (B) अमृत
(C) जलधि (D) चाण्डालकन्या

60. महाकवि मयूरभट्ट की बहन से विवाह हुआ था–
(A) बाणभट्ट का (B) वामनभट्ट का
(C) भूषणभट्ट का (D) महिमभट्ट का

61. ''परस्परं विरुद्धचेन्द्रजालमिव दर्शयन्ती प्रकटयति जगति निजं चरितम्'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है–
(A) शुकनास का (B) लक्ष्मी का
(C) तारापीड का (D) चाण्डालकन्या का

62. 'उपशशाम' में लकार है–
(A) लृट् (B) लुट्
(C) लिट् (D) लङ्

63. 'दातारम्' पद में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) दा+तृच्+ द्वितीया, बहु.
(B) दा+अम्+प्रथमा, एक.
(C) दा+तृच्+द्वितीया, एक.
(D) दाञ्+घञ्+प्रथमा, बहु.

64. 'वारि' शब्द का तृतीया एक. में रूप होगा–
(A) वारेण (B) वारिणा
(C) वारिया (D) वारिसा

65. ''अवधारयन्तः'' में प्रत्यय हैं–
(A) शानच् (B) तृच्
(C) शतृ (D) घञ्

66. ''ग्रहैरिव गृह्यन्ते मन्त्रैरिवावेश्यन्ते, पिशाचैरिव ग्रस्यन्ते'' इत्यादि स्थलों में अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उत्प्रेक्षा
(C) निदर्शना (D) उपमा

67. ''पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया, रेणुमयीव स्वच्छमपि कलुषीकरोति'' इन पंक्तियों में अलङ्कार है–
(A) विरोधाभास (B) दीपक
(C) निदर्शना (D) उत्प्रेक्षा

68. '''विग्रहवत्यप्यप्रत्यक्षदर्शना'' इस पद में सन्धि है–
(A) हल्सन्धि (B) गुणसन्धि
(C) वृद्धिसन्धि (D) यण्सन्धि

69. 'अपरिणामोपशमः' का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) अपरिणामा+ओपशम् (B) अपरिणाम+उपशमः
(C) अपरिणाम+औपशम (D) अपरीयाम+उपशमः

70. 'राजप्रकृतिः' में समास है–
(A) षष्ठी तत्पु. (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव

71. 'विटान् पान्ति इति' इस व्युत्पत्ति से होगा–
(A) विटपाः (B) विटकाः
(C) विटकान् (D) विटायाः

72. शुकनासोपदेश में मुख्य प्रतिपाद्य विषय है–
(A) द्यूतक्रीडा का
(B) राज्यसञ्चालन का
(C) लक्ष्मी को प्राप्त करने की विधियों का
(D) युवावस्था में लक्ष्मीजन्य मानसिक विकृतियों एवं उनसे होने वाली हानियों का

55. (A)	**56. (D)**	**57. (B)**	**58. (A)**	**59. (A)**	**60. (A)**	**61. (B)**	**62. (C)**	**63. (C)**	**64. (B)**
65. (C)	**66. (B)**	**67. (A)**	**68. (D)**	**69. (B)**	**70. (A)**	**71. (A)**	**72. (D)**		

73. कादम्बरी कथा का नामकरण हुआ है–
(A) नायक के नाम पर (B) नायिका के नाम पर
(C) दासी के नाम पर (D) शुकनास के नाम पर

74. चन्द्रापीड के एक जन्म का नाम था–
(A) वैशम्पायन (B) पुण्डरीक
(C) कपिञ्जल (D) शूद्रक

75. लक्ष्मी, पापी समझकर किसके पास तक नहीं जाती–
(A) विद्वानों के (B) धनहीनों के
(C) विनयशील के (D) राजाओं के

76. ''कुप्यन्ति हितवादिने'' यहाँ 'हितवादिने' में कौन सी विभक्ति किस सूत्र से हुई है–
(A) तृतीया–''हेतौ''
(B) षष्ठी–''षष्ठी शेषे''
(C) चतुर्थी–''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः''
(D) सप्तमी–''आधारोऽधिकरणम्''

77. ''अकालप्रावृड्गुणकलहंसकानाम्, प्रस्तावना कपटनाटकस्य, पुरः पताका सर्वाविनयानाम्'' इत्यादि पंक्तियों में अलङ्कार है–
(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

78. समुद्रमन्थन से लक्ष्मी सहित कितने रत्न निकले थे–
(A) 18 (B) 17
(C) 14 (D) 19

79. 'असिधारा' पद का अर्थ है–
(A) तलवार की धार (B) जलधारा
(C) लक्ष्मी की चञ्चलता (D) समुद्र-प्रवाह

80. सरस्वती द्वारा अपनाये गए व्यक्ति को ईर्ष्या के कारण कौन नही अपनाती–
(A) राजागण (B) लक्ष्मी
(C) शुकनास (D) कादम्बरी

81. ''अकाला चासौ प्रावृट् इति अकालप्रावृट्'' यहाँ समास है–
(A) नञ् तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

82. विदिशा, किस नदी के किनारे स्थित थी–
(A) वेत्रवती के (B) सरयू के
(C) गङ्गा के (D) महानदी के

83. चाण्डालकन्या किसके समीप आयी–
(A) महाश्वेता के (B) कादम्बरी के
(C) पुण्डरीक के (D) शूद्रक के

84. 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा'' विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) विन्ध्याटवी (D) हेमकूट

85. वैशम्पायन की प्रेमिका थी–
(A) कादम्बरी (B) महाश्वेता
(C) चाण्डालकन्या (D) विनता

86. कादम्बरी में वर्णन नहीं है–
(A) अच्छोदसरोवर का (B) पम्पासरोवर का
(C) शाल्मलीवृक्ष का (D) देवदारु का

87. वैशम्पायन पूर्व जन्म में था–
(A) शूद्रक (B) पुण्डरीक
(B) कुमारपालित (D) चन्द्रापीड

88. 'तुरङ्गबाण' किसकी उपाधि है–
(A) बाणभट्ट की
(B) अभिनवबाण की
(C) अम्बिकादत्तव्यास की
(D) भवभूति की

89. ''आधुनिक बाण'' के रूप में जाना जाता है–
(A) सुबन्धु को (B) बाण को
(C) अम्बिकादत्त व्यास को (D) दण्डी को

90. बाणभट्ट के भाई थे–
(A) 4 (B) 6
(C) 2 (D) 5

91. ''सम्पत्तिरूपी तिमिर में होने वाला अन्धापन कष्टकर होता है'' किसने कहा–
(A) चन्द्रापीड ने (B) तारापीड ने
(C) द्वारपाल ने (D) शुकनास ने

73. (B)	**74.** (D)	**75.** (C)	**76.** (C)	**77.** (B)	**78.** (C)	**79.** (A)	**80.** (B)	**81.** (B)	**82.** (A)
83. (D)	**84.** (A)	**85.** (B)	**86.** (D)	**87.** (B)	**88.** (A)	**89.** (C)	**90.** (C)	**91.** (D)	

92. ''अहङ्कार से उत्पन्न उष्णता, शीतल औषधियों से भी शान्त नही होती'' यह कथन किसने किससे कहा–
(A) शुकनास ने चन्द्रापीड से
(B) चन्द्रापीड ने शुकनास से
(C) शुकनास ने तारापीड से
(D) चन्द्रापीड ने तारापीड से

93. ''त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः'' इस सूक्ति वाक्य में 'नमः' के योग में किस विभक्ति का प्रयोग हुआ है–
(A) चतुर्थी (B) षष्ठी
(C) पञ्चमी (D)प्रथमा

94. राज्याभिषेक के समय किसकी आवश्यकता होती है–
(A) सेना की (B) विश्राम की
(C) धन की (D) उपदेश की

95. कादम्बरी में वर्णित 'इन्द्रायुध' था–
(A) मन्त्री (B) राजा
(C) घोड़ा (D) वज्र

96. कादम्बरी विभक्त है–
(A) एक भाग में (B) तीन भागों में
(C) दो भागों में (D) चार भागों में

97. कादम्बरी की कथा का अन्त होता है–
(A) तारापीड-पत्रलेखा के मिलन से
(B) चाण्डालकन्या-शूद्रक के मिलन से
(C) वैशम्पायन-जाबालि के मिलन से
(D) चन्द्रापीड-कादम्बरी के मिलन से

98. कामपीड़ा में दिवङ्गत हो गया था–
(A) तारापीड (B) वैशम्पायन
(C) पुण्डरीक (D) द्वैपायन

99. चन्द्रापीड पिता के बुलाने पर आता है–
(A) उज्जयिनी में (B) अच्छोदसरोवर में
(C) विदिशा में (D) हेमकूटपर्वत में

100. चन्द्रापीड का राज्याभिषेक करने की इच्छा किसे हुई–
(A) वैशम्पायन को (B) शुकनास को
(C) तारापीड को (D) कादम्बरी को

92. (A) 93. (A) 94. (D) 95. (C) 96. (C) 97. (D) 98. (C) 99. (A) 100. (C)

मेघदूतम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. मेघ की पत्नी है–
(A) अभिसारिका (B) विशालाक्षी
(C) विद्युत् (D) उज्जयिनी नगरी

2. ''ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्'' यह किसके कथन का अनुवाद है–
(A) मैक्समूलर (B) क्षेमेन्द्र
(C) गेटे (D) डॉ0 कीथ

3. कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की है–
(A) मल्लिनाथ ने (B) जयदेव ने
(C) दण्डी ने (D) क्षेमेन्द्र ने

4. 'भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः' इति कथनं कस्य अस्ति–
(A) जयदेवस्य (B) बाणस्य
(C) राजशेखरस्य (D) मल्लिनाथस्य

5. सुमेलित करें–

कथनम्	वक्ता
(1) ''पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः''	(क) मल्लिनाथ
(2) 'निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु''	(ख) उद्भट
(3) ''शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु''	(ग) बाणः
(4) ''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्''	(घ) राजशेखर

(A) (1) क (2) ग (3) ख (4) घ
(B) (1) घ (2) क (3) ख (4) ग
(C) (1) क (2) ग (3) घ (4) ख
(D) (1) क (2) ख (3) घ (4) ग

6. किस नदी समूह का वर्णन मेघदूतम् में नहीं मिलता है–
(A) वेत्रवती, क्षिप्रा, गम्भीरा
(B) रेवा, निर्विन्ध्या, गन्धवती
(C) गङ्गा, यमुना, सरस्वती
(D) चर्मण्वती, कावेरी, ब्रह्मपुत्र

7. पूर्वमेघ में कालिदास किस नगरी का सर्वोत्कृष्ट वर्णन करते हैं–
(A) अलका का (B) उज्जयिनी का
(C) दशपुर का (D) विदिशा का

8. किस पर्वत समूह का वर्णन कालिदास ने अपने मेघदूतम् में नहीं किया है–
(A) आम्रकूट और कैलास (B) हिमालय और विन्ध्य
(C) देवगिरि और रामगिरि (D) नीचैगिरि और उच्चैगिरि

9. सुमेलित करें–

कथनम्	वक्ता
(1) कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती	(क) श्रीकृष्णः
(2) कालिदासकविता नवं वयः	(ख) मम्मटः
(3) कालिदासादीनामिव यशः	(ग) मल्लिनाथः
(4) न कालिदासादपरस्य वाणी	(घ) उद्भटः

(A) (1) ग (2) घ (3) ख (4) क
(B) (1) ग (2) क (3) ख (4) घ
(C) (1) क (2) ख (3) ग (4) घ
(D) (1) घ (2) ग (3) ख (4) क

10. 'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' यह सूक्ति है–
(A) पूर्वमेघ में (B) उत्तरमेघ में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) शृङ्गारशतकम् में

11. 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' यह कथन है–
(A) पूर्वमेघ के 5वें श्लोक में
(B) पूर्वमेघ के 6वें श्लोक में
(C) पूर्वमेघ के 7वें श्लोक में
(D) पूर्वमेघ के चतुर्थ श्लोक में

1. (C) **2.** (C) **3.** (D) **4.** (A) **5.** (C) **6.** (D) **7.** (B) **8.** (D) **9.** (A) **10.** (A) **11.** (B)

12. 'नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण' कालिदास ने इन सुन्दर वचनों को कहा है–
(A) पूर्वमेघ के पूर्वार्द्ध में (B) उत्तरमेघ के उत्तरार्ध में
(C) उत्तरमेघ के पूर्वार्द्ध में (D) पूर्वमेघ के उत्तरार्ध में

13. मेघदूतम् में किस देव का वर्णन नहीं मिलता है–
(A) राम और सीता (B) शिव, पार्वती और कार्तिकेय
(C) विष्णु और बलराम (D) ब्रह्मा, नारद और सन्तोषी

14. यक्ष मेघ का प्रथम दर्शन कहाँ करता है–
(A) रामगिरि में (B) कैलाशपर्वत में
(C) अलकापुरी में (D) विन्ध्यपर्वत में

15. कालिदास का मेघ रूपी दूत की कल्पना प्रेरित है–
(A) महाभारत से (B) वाल्मीकिरामायण से
(C) भागवतपुराण से (D) वेदों से

16. किस ग्रन्थ में एकमात्र मन्दाक्रान्ता छन्द का ही प्रयोग मिलता है–
(A) गीतगोविन्दम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) मेघदूतम् में (D) रघुवंशम् में

17. सम्पूर्ण मेघदूतम् में किस रस का रसास्वादन होता है–
(A) सम्भोगशृङ्गार का (B) विप्रलम्भशृङ्गार का
(C) करुणरस का (D) शान्तरस का

18. पुराणों में प्राप्त विरही यक्ष के उपयुक्त नाम की कल्पना करें–
(A) विरहदेवः (B) विशालाक्षी
(C) कुमारगन्धर्व (D) हेममाली

19. महाकवि कालिदास ने मेघदूतम् के कथानक को कहाँ से लिया होगा–
(A) भागवतपुराण (B) वायुपुराण
(C) ब्रह्मवैवर्तपुराण (D) इनमें से कोई नहीं

20. रामगिरि पर्वत में यक्ष कितने महीने व्यतीत कर चुका है–
(A) नव माह (B) चार माह
(C) आठ माह (D) दश माह

21. गीतिकाव्य या खण्डकाव्य के रूप में सर्वप्रथम गणना होती है–
(A) गीतगोविन्दम् की (B) वाल्मीकिरामायणम् की
(C) गीता की (D) मेघदूतम् की

22. उदयन या वासवदत्ता की प्रेमकथायें कही जाती हैं–
(A) अलकापुरी में (B) उज्जयिनी में
(C) दशार्ण में (D) विदिशा में

23. मेघदूतम् में सर्वप्रथम किस नदी का वर्णन है–
(A) रेवा (नर्मदा) नदी का (B) वेत्रवती नदी का
(C) निर्विन्ध्या नदी का (D) शिप्रा नदी का

24. शिप्रा नदी के तट पर स्थित महाकाल का मन्दिर किस नगरी में अवस्थित है–
(A) अलकापुरी में (B) उज्जयिनी में
(C) दशार्ण में (D) चित्रकूट में

25. मल्लिनाथ के अनुसार सम्पूर्ण मेघदूतम् में प्रक्षिप्त श्लोकों सहित कुल पद्यों की संख्या है–
(A) लगभग 121 (B) लगभग 132
(C) लगभग 152 (D) लगभग 102

26. कालिदास किस देवता के उपासक माने जाते हैं–
(A) विष्णु के (B) शिव के
(C) शक्ति के (D) राम के

27. भौगोलिक स्थानों के वर्णन से परिपूर्ण ग्रन्थ है–
(A) आभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मेघदूतम्
(C) शिशुपालवधम् (D) किरातार्जुनीयम्

28. ''अनावृतकपाटं द्वारं देहि'' यह कथन है–
(A) कालिदास का (B) विद्योत्तमा का
(C) शारदातनय का (D) कालीदेवी का

29. महाकवि कालिदास के श्वसुर माने जाते हैं–
(A) शारदानन्द (B) ब्रह्मानन्द
(C) शिवानन्द (D) विद्यानन्द

30. ''अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः'' विद्योत्तमा का यह कथन किसके लिए कहा गया–
(A) अपने पिता के लिए
(B) शास्त्रार्थ में आए पण्डितों के लिए
(C) मूर्ख कालिदास के लिए
(D) माँ काली की कृपा प्राप्त कालिदास के लिए

12. (B)	**13. (D)**	**14. (A)**	**15. (B)**	**16. (C)**	**17. (B)**	**18. (D)**	**19. (C)**	**20. (C)**	**21. (D)**
22. (B)	**23. (A)**	**24. (B)**	**25. (A)**	**26. (B)**	**27. (B)**	**28. (A)**	**29. (A)**	**30. (D)**	

31. ''मा कौलीनादसितनयने मय्यविश्वासिनी भूः'' यहाँ 'कौलीनात्' पद का अर्थ है–
(A) यक्षिणी (B) कुलीन वर्ग
(C) लोकापवाद (D) कुलपरम्परा

32. ''अङ्गेनाङ्गं प्रतनु तनुना'' यहाँ 'प्रतनु' पद में विभक्ति एवं वचन है–
(A) प्रथमा एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) मूलप्रातिपदिक (D) अव्ययपदम्

33. 'अम्बुवाहम्' पद का अर्थ है–
(A) अभ्र (B) जलमुक्
(C) बादल (D) उपर्युक्त सभी

34. 'प्रक्रमेथाः' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी–
(A) प्र + क्रीम् + तिप् + विधिलिङ्
(B) प्र + क्रम् + सिप् + विधिलिङ्
(C) प्र + कृ + थ + लोट्
(D) प्र + की + सिप् + लट्

35. 'सहस्व' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) सह+सिप्+विधिलिङ् (B) सह+तिप्+लोट्
(C) सह+सिप्+लोट् (D) सह+सिप्+लृट्

36. ''तस्योत्सङ्गे निहितमसकृद् दुःखदुःखेन गात्रम्'' यहाँ 'असकृत्' पद का अर्थ है–
(A) एक बार (B) बार-बार
(C) कभी-कभी (D) सम्पूर्ण

37. 'पेशलम्' पद का शब्दार्थ है–
(A) सुन्दर अथवा कोमल (B) आँसू
(C) नवीन (D) कठोर

38. 'विगलितशुचा' में विभक्ति एवं वचन है–
(A) तृतीया एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) प्रथमा एकवचन (D) प्रथमा बहुवचन

39. 'या शिखा दाम हित्वा' यहाँ 'दाम' शब्द का अर्थ है–
(A) माला (B) मूल्य
(C) सर्प (D) वियोग

40. 'गत्वा सद्यः कलभतनुतां शीघ्रसम्पातहेतोः' यहाँ 'कलभ' शब्द प्रयुक्त है–
(A) सिंह के बच्चे के लिए
(B) गीदड़ के बच्चे के लिए
(C) हाथी के बच्चे के लिए
(D) कमल के फूल के लिए

41. यक्ष के घर में है–
(A) वापी (B) क्रीडाशैल
(C) मन्दारवृक्ष (D) सभी

42. अलकापुरी स्थित कुबेर के उद्यान का नाम है–
(A) नन्दनोद्यान (B) आनन्दोद्यान
(C) कुमुदोद्यान (D) वैभ्राजोद्यान

43. ''हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविद्धम्'' इस पंक्ति में वर्णन है–
(A) उज्जयिनी की वनिताओं का
(B) अलकापुरी की कामिनियों का
(C) विदिशा की सुन्दरियों का
(D) दशार्ण की कन्याओं का

44. ''प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा'' यह सूक्ति है–
(A) उत्तरमेघ की
(B) पूर्वमेघ की
(C) हंसदूत की
(D) पूर्वमेघ के अन्तिम श्लोक की

45. मेघदूतम् की अन्तिम पंक्ति है–
(A) मा भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः
(B) इष्टान् देशान् जलद विचर प्रावृषा संभृतश्रीः
(C) नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण
(D) सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्

46. मेघदूतम् का नायक है–
(A) कुबेर (B) मेघ
(C) यक्ष (D) शिव

47. यक्ष शाप की एक वर्ष की अवधि कहाँ व्यतीत करता है–
(A) देवगिरि में (B) रामगिरि पर्वत में
(C) उज्जयिनी में (D) अलकापुरी में

31. (C)	32. (B)	33. (D)	34. (B)	35. (C)	36. (B)	37. (A)	38. (A)	39. (A)	40. (C)
41. (D)	42. (D)	43. (B)	44. (A)	45. (A)	46. (C)	47. (B)			

48. कैलाशपर्वत तक मेघ के सहयात्री कौन होंगे–
(A) राजहंस (B) चातक
(C) यक्ष (D) बलाका

49. मेघदूतम् के अनुसार भगवान् कार्तिकेय का निवास स्थान कहाँ है–
(A) रामगिरि में (B) कैलाशपर्वत में
(C) देवगिरि में (D) विशाला में

50. यक्षिणी शापदिवसों की गिनती किससे करती है–
(A) फलों से (B) पत्तों से
(C) शङ्ख से (D) फूलों से

51. यक्ष के शाप की समाप्ति किस दिन होगी–
(A) कार्तिक देवोत्थान एकादशी को
(B) हरिशयनी एकादशी को
(C) माघशुक्ल सप्तमी को
(D) आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को

52. मेघदूतम् का मेघ किसका अनुचर था–
(A) कुबेर का (B) वरुण का
(C) यम का (D) इन्द्र का

53. 'धूमज्योतिस्सलिलमरुतां' के संयोग से पैदा होता है–
(A) यक्ष (B) मेघ
(C) जल (D) प्रकाश

54. ''स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु'' यह पंक्ति किस नदी से सम्बद्ध है–
(A) रेवा (B) निर्विन्ध्या
(C) शिप्रा (D) गम्भीरा

55. मेघदूतम् के अनुसार उज्जयिनी में किसका सुप्रसिद्ध मन्दिर है–
(A) श्रीकृष्ण का (B) यक्ष का
(C) उदयन का (D) महाकाल का

56. 'ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः' यह किस नदी से सम्बद्ध है–
(A) निर्विन्ध्या (B) शिप्रा
(C) रेवा (D) गम्भीरा

57. 'अन्तःशुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्णः' यहाँ 'त्वम्' पद से किसका सङ्केत है–
(A) यक्ष का (B) यक्षिणी का
(C) मेघ का (D) कुबेर का

58. 'सगरतनयस्वर्गसोपानपंक्तिम्' यह किस नदी का विशेषण है–
(A) रेवाम् (B) जह्नुकन्याम् (गङ्गाम्)
(C) गम्भीराम् (D) यमुनाम्

59. ''सोपानत्वं कुरु मणितटारोहणायाग्रयायी'' इसमें मेघ का सोपानत्व किसके आरोहण के लिए उद्दिष्ट है–
(A) रति-कामदेव (B) शिव-पार्वती
(C) लक्ष्मी-नारायण (D) यक्ष-यक्षिणी

60. कालिदास के अनुसार यक्षों की एकमात्र अवस्था क्या है–
(A) शैशव (B) जरा
(C) कौमार (D) यौवन

61. ''यत्रोन्मत्तभ्रमरमुखराःपादपा नित्यपुष्पाः'' यहाँ 'यत्र' पद से किस नगरी का सङ्केत है–
(A) उज्जयिनी का (B) विदिशा का
(C) अलका का (D) दशपुर का

62. अलका में कुबेर के भवन से किस दिशा में यक्ष का आवास है–
(A) पूर्व (B) पश्चिम
(C) उत्तर (D) दक्षिण

63. यक्ष के घर के सामने कौन सा वृक्ष है–
(A) अशोक का (B) कल्पवृक्ष का
(C) देवदारु का (D) मदार का

64. यक्ष के आवास के सामने का पहाड़ किससे बना है–
(A) मरकत मणि से (B) इन्द्रनील मणि से
(C) पद्मराग से (D) चन्द्रकान्त मणि से

65. यक्ष के द्वार पर किसका चित्र अङ्कित है–
(A) शङ्ख, चक्र का (B) गदा, पद्म का
(C) शङ्ख-पद्म का (D) चक्र-गदा का

48. (A) **49.** (C) **50.** (D) **51.** (A) **52.** (D) **53.** (B) **54.** (B) **55.** (D) **56.** (D) **57.** (C)
58. (B) **59.** (B) **60.** (D) **61.** (C) **62.** (C) **63.** (D) **64.** (B) **65.** (C)

66. ''कच्चिद् भर्तुः स्मरसि रसिके त्वं हि तस्य प्रियेति'' यहाँ 'रसिके' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) यक्षिणी (B) मयूरी
(C) सारिका (D) कोकिला

67. ''भूयो भूयःस्वयमपिकृतां मूर्च्छनां विस्मरन्ति'' यह पंक्ति किस वाद्ययन्त्र से सम्बद्ध है–
(A) वीणा (B) पखावत
(C) दुन्दुभि (D) बाँसुरी

68. यक्षों का निवास स्थान है–
(A) रामगिरि (B) हिमालय
(C) अलका (D) उज्जयिनी

69. मेघदूतम् में यक्ष का स्वामी कौन है–
(A) शङ्कर (B) इन्द्र
(C) कुबेर (D) यम

70. ''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुःपूर्णता गौरवाय'' यह पंक्ति यक्ष किसके लिए कहता है–
(A) यक्षिणी के लिए (B) मेघ के लिए
(C) कुबेर के लिए (D) अलकापुरी के लिए

71. तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्त्रस्तगङ्गादुकूलाम्'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है–
(A) गङ्गा का (B) यक्षिणी का
(C) उज्जयिनी का (D) अलका का

72. ''गर्जितैर्भाययेस्ताः'' यहाँ 'भाययेः' में लकार है–
(A) लिट् (B) लुङ्
(C) विधिलिङ् (D) लोट्

73. ''नेष्यन्ति त्वां सुरयुवतयोयन्त्रधारागृहत्वम्'' यहाँ त्वाम्' पद से किसका सङ्केत है–
(A) मेघ का (B) यक्ष का
(C) कुबेर का (D) इन्द्र का

74. कैलाश की चोटी पर जब मेघ पहुँचेगा, तो कैलाश पर्वत की शोभा किसकी तरह हो जायेगी–
(A) कृष्ण (B) बलराम
(C) नारद (D) काले मेघ

75. 'प्रालेयाद्रिः' पद का अर्थ है–
(A) कैलाश (B) हिमालय
(C) विन्ध्य (D) आम्रकूट

76. 'मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि यहाँ 'शफर' पद प्रयुक्त है–
(A) सफेदी के लिए (B) सुन्दरता के लिए
(C) यक्षिणी के लिए (D) मछली के लिए

77. 'मा स्म भूर्विक्लवास्ताः' यहाँ 'मा स्म' पद में लकार है–
(A) लट् (B) लुङ्
(C) लिट् (D) लङ्

78. ''पुण्यं यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य'' यहाँ 'यायाः' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) या + विधिलिङ् म0 पु0 एक0
(B) इण् + लोट् म0 पु0 बहु0
(C) या + लोट् म0 पु0 द्विवचन
(D) या+लृट् उ0 पु0 एकवचन

79. 'दर्शितावर्तनाभेः' पद में विभक्ति है–
(A) पञ्चमी (B) षष्ठी
(C) द्वितीया (D) चतुर्थी

80. रास्ता टेढा होने के बाद भी यक्ष मेघ को उत्तर की ओर ले जाकर किसका दर्शन कराना चाहता है–
(A) स्कन्द का (B) उज्जयिनी का
(C) गम्भीरा का (D) निर्विन्ध्या का

81. 'प्रकृतिकृपणाः' में समास है–
(A) तृतीया तत्पुरुष (B) षष्ठी तत्पुरुष
(D) बहुव्रीहि (D) सप्तमी तत्पुरुष

82. ''प्रत्यासन्ने नभसि दयिता................'' यहाँ 'नभसि' पद का अर्थ है–
(A) आषाढ मास (B) श्रावण मास
(C) आकाश (D) मेघ

83. ''अन्तर्वाष्पः चिरमनुचरो'' यहाँ 'अन्तर्वाष्पः' पद में समास है–
(A) षष्ठी तत्पुरुष (B) कर्मधराय
(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

66. (C)	**67.** (A)	**68.** (C)	**69.** (C)	**70.** (B)	**71.** (D)	**72.** (C)	**73.** (A)	**74.** (B)	**75.** (B)
76. (D)	**77.** (B)	**78.** (A)	**79.** (B)	**80.** (B)	**81.** (A)	**82.** (B)	**83.** (C)		

84. मल्लिनाथ 'रामगिरि' पर्वत को कहाँ मानते हैं–
(A) रामगढ़ (मध्यभारत) (B) रामटेक (नागपुर)
(C) चित्रकूट (D) हिमालय पर्वत के पास

85. 'अस्तङ्गमितमहिमा' यहाँ 'महिमा' शब्द में प्रत्यय है–
(A) महत्+इमनिच् (B) महान्+अण्
(C) महा+इतच् (D) महिम+आ

86. 'राजराज' पद में समास होगा–
(A) चतुर्थी तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) तृतीया तत्पुरुष (D) षष्ठी तत्पुरुष

87. 'कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः' यह पद किसका विशेषण है–
(A) सः यक्षः (B) कुबेरः
(C) मेघः (D) उपर्युक्त सभी का

88. ''जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः'' यहाँ 'मघोनः' पद किसके लिए और उसमें क्या विभक्ति है–
(A) कुबेर के लिए, पञ्चमी विभक्ति
(B) इन्द्र के लिए, षष्ठी विभक्ति
(C) यक्ष के लिए, द्वितीया विभक्ति
(D) मेघ के लिए, षष्ठी विभक्ति

89. मेघदूतम् के अनुसार सन्तप्त लोगों के लिए एक मात्र सहारा कौन है–
(A) यक्षिणी (B) मेघ
(C) कुबेर (D) यक्ष

90. 'त्वय्युपेक्षेत्' पद में सन्धि है–
(A) हल् सन्धि (B) विसर्ग सन्धि
(C) अयादिसन्धि (D) यण्सन्धि

91. 'द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्' के अनुसार कौन अपनी भाभी को देखेगा–
(A) यक्ष (B) कुबेर
(C) राजहंस (D) मेघ

92. 'विप्रयोगे रुणद्धि' यहाँ 'रुणद्धि' पद में धातु है–
(A) रुध् (B) रुण्
(C) रोध् (D) रुधृम्

93. ''नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां, मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः'' इस पद्यांश में अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) निदर्शना

94. 'तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी'' यहाँ अलङ्कार है–
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) दीपक

95. ''सृष्टिराद्येव धातुः'' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) मेघ का (B) यक्ष का
(C) यक्षिणी का (D) अलका का

96. मेघदूतम् में किस प्रकार का मङ्गलाचरण है–
(A) आशीर्वादात्मक (B) वस्तुनिर्देशात्मक
(C) नमस्क्रियात्मक (D) उपर्युक्त में कोई नहीं

97. मन्दाक्रान्ता छन्द में होते हैं–
(A) मगण भगण नगण तगण रगण दो गुरु–17
(B) भगण मगण नगण तगण तगण एक गुरु–16
(C) मगण भगण नगण तगण तगण दो गुरु–17
(D) भगण भगण मगण तगण नगण दो गुरु–17

98. मेघदूतम् की व्याख्या की जा सकती है–
(A) मेघः एव दूतः, मेघदूतमधिकृत्य कृतं काव्यं मेघदूतम्
(B) मेघः दूतः यस्मिन् काव्ये तत् मेघदूतम्
(C) केवल पहला सही है।
(D) दोनों सही है

99. संस्कृत साहित्य में 'सन्देशकाव्य' या 'दूतकाव्य' का प्रारम्भ माना जा सकता है–
(A) हंसदूतम् से (B) मेघदूतम् से
(C) नेमिदूतम् से (D) गीतगोविन्दम् से

100. ''सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः'' यहाँ 'बलाकाः' पद का अर्थ है–
(A) बालिकायें (B) यक्षिणियाँ
(C) बगुलियाँ (D) वेश्यायें

84. (C)	**85. (A)**	**86. (D)**	**87. (A)**	**88. (B)**	**89. (B)**	**90. (D)**	**91. (D)**	**92. (A)**	**93. (C)**
94. (B)	**95. (C)**	**96. (B)**	**97. (C)**	**98. (D)**	**99. (B)**	**100. (C)**			

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयनपरीक्षा (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र– 1

1. निम्न में कौन सा अशुद्ध है–
(A) त्रिंशत् (B) द्वात्रिंशत्
(C) द्विचत्वारिंशत् (D) अष्टत्रिंशत्

2. पाँच से लेकर दश तक की संख्याएँ–
(A) तीनों वचनों में होती हैं।
(B) तीनों लिङ्गों एवं तीनों वचनों में पृथक्-पृथक् होती हैं।
(C) तीनों लिङ्गों और एक वचन में होती हैं।
(D) तीनों लिङ्गों में समान और बहुवचन में होती है।

3. 'वारि' शब्द का मूल प्रातिपदिक रूप है–
(A) वारिन् (B) वारिण
(C) वारि (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

4. 'पति' शब्द सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप है–
(A) पतौ (B) पत्यौ
(C) पते (D) पत्याम्

5. 'दधि' षष्ठी विभक्ति बहुवचन का रूप है–
(A) दधिनाम् (B) दधीनाम्
(C) दधनाम् (D) दध्नाम्

6. 'रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः' में छन्द है–
(A) मालिनी (B) वसन्ततिलका
(C) हरिणी (D) वंशस्थ

7. 'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग होता है–
(A) कर्तृवाच्य में (B) कर्मवाच्य में
(C) भाववाच्य में (D) कर्मकर्तृवाच्य में

8. 'ज्ञानम्' पद में है–
(A) लिङ्गाधिक्य में प्रथमा (B) अनियत लिङ्ग में प्रथमा
(C) अलिङ्ग में प्रथमा (D) नियतलिङ्ग में प्रथमा

9. 'तमब्रहणम्' में सन्धि का कौन सा सूत्र प्रयुक्त है–
(A) झलां जशोऽन्ते (B) झलां जश् झशि
(C) खरि च (D) स्तोः श्चुना श्चुः

10. 'वृकभीतिः' में समास है–
(A) कर्मधारय (B) तृतीया तत्पुरुष
(C) पञ्चमी तत्पुरुष (D) षष्ठी तत्पुरुष

11. 'कार्ष्णः' पद बनता है–
(A) कृष्ण + अण् से (B) कृष्ण + अञ् से
(C) कृष्ण + अप् से (D) कृष्ण + आ से

12. 'सोलहवीं बालिका जाती है'–का अनुवाद होगा–
(A) षोडशी बालिका गच्छति।
(B) षोडशतमी बालिका गच्छति।
(C) षोडशतमा बालिका गच्छति।
(D) षोडशिनी बालिका गच्छति।

13. 'समाययौ' पद में कौन सा लकार है–
(A) लङ्लकार (B) लुङ्लकार
(C) लिट्लकार (D) लुट्लकार

14. 'विघाताय' में कौन सी धातु प्रयुक्त है–
(A) 'धा' धातु (B) 'हा' धातु
(C) 'हन्' धातु (D) घात् धातु

15. 'परेतरान्' का अर्थ है–
(A) दुष्टजन (B) शत्रुजन
(C) आत्मीयजन (D) परतन्त्रजन

16. अम्बिकादत्त व्यास का जन्म हुआ–
(A) चैत्र शुक्ल अष्टमी सं0 1915 (1858 ई.)
(B) बैशाख शुक्ल अष्टमी सं0 1915 (1858 ई.)
(C) चैत्र शुक्ल सप्तमी सं0 1914 (1857 ई.)
(D) बैशाख शुक्ल सप्तमी सं0 1914 (1857 ई.)

1. (D)	2. (D)	3. (C)	4. (B)	5. (D)	6. (B)	7. (A)	8. (D)
9. (A)	10. (C)	11. (A)	12. (A)	13. (C)	14. (C)	15. (C)	16. (A)

17. 'अतिथिपरिभाविनी' विशेषण प्रयुक्त है–
(A) सीता के लिए (B) तमसा के लिए
(C) आत्रेयी के लिए (D) शकुन्तला के लिए

18. 'विद्युत्' पद में प्रयुक्त प्रत्यय है–
(A) क्विप् (B) क्त
(C) क्तिन् (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

19. 'अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः' वाक्य के 'कश्चिद्' से निर्दिष्ट काव्य है–
(A) कुमारसम्भवम् (B) रघुवंशमहाकाव्यम्
(C) मेघदूतम् (D) नैषधीयचरितम्

20. 'भैषीः' पद में कौन सा लकार है–
(A) लङ्लकार (B) लुङ्लकार
(C) लिट्लकार (D) लोट्लकार

21. 'काम इदानीं सकामो भवतु' यह वाक्य अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में आया है–
(A) द्वितीय अङ्क में (B) तृतीय अङ्क में
(C) चतुर्थ अङ्क में (D) पञ्चम अङ्क में

22. 'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया' यह कथन किसका है–
(A) कण्व का (B) शार्ङ्गरव का
(C) प्रियंवदा का (D) अनसूया का

23. ''आत्मन आर्यवंश्यांश्चाऽभिमन्यामहे'' वाक्य कहा गया है–
(A) प्रशंसा के अर्थ में (B) क्रोध के अर्थ में
(C) गौरव के अर्थ में (D) धिक्कार के अर्थ में

24. अम्बिकादत्तव्यास के पितामह थे–
(A) श्री गोविन्दराम जी (B) पं० राजाराम जी
(C) दुर्गादत्त (D) दलेरसिंह व्यास

25. 'सः पुस्तकानि पठति' वाक्य का कर्मवाच्य रूप है–
(A) सः पुस्तकानि पठ्यते। (B) तेन पुस्तकानि पठ्यन्ते
(C) तेन पुस्तकानि पठ्यते (D) तेन पुस्तके पठयते

26. ''त्वं जीवितं, त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' यह वाक्य किसके लिए कहा गया है–
(A) राम के लिए (B) वासन्ती के लिए
(C) तमसा के लिए (D) सीता के लिए

27. 'अपि ग्रावारोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्' कथन है–
(A) तमसा का (B) राम का
(C) सीता का (D) लक्ष्मण का

28. 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' में प्रयुक्त 'वाक्य' से तात्पर्य है–
(A) व्याकरण (B) मीमांसा
(C) न्याय (D) प्रमाण

29. 'उत्तररामचरितम्' का वैशिष्ट्य नहीं है–
(A) यह रचना विदूषक रहित है।
(B) इसके प्रारम्भ एवं अन्त में वाणी की स्तुति की गयी है।
(C) सप्तम अङ्क में गर्भांक योजना है।
(D) तृतीय अङ्क में सङ्कीर्ण विष्कम्भक का प्रयोग है।

30. 'प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः' में 'हितैषिणः' पद से निर्दिष्ट है–
(A) किरात (B) युधिष्ठिर
(C) वनेचर (D) अर्जुन

31. 'भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः' सूक्ति उद्धृत है–
(A) किरातार्जुनीयम् से (B) उत्तररामचरितम् से
(C) नीतिशतकम् से (D) शिवराजविजयम् से

32. 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः' वाक्य सम्बद्ध है–
(A) माघ से (B) भारवि से
(C) दण्डी से (D) कालिदास से

33. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' यहाँ 'मादृशां' पद से किसका संकेत है–
(A) द्रौपदी का (B) वनेचर का
(C) युधिष्ठिर का (D) दुर्योधन का

17. (D)	18. (A)	19. (C)	20. (B)	21. (C)	22. (D)	23. (D)	24. (B)
25. (B)	26. (D)	27. (D)	28. (B)	29. (D)	30. (C)	31. (C)	32. (B)
33. (B)							

34. 'अमुष्याः' पद का प्रातिपदिक रूप है–
(A) अस्मद् (B) अदस्
(C) इदम् (D) एतद्

35. 'दुह्' धातु के लट्लकार उ0पु0 एकवचन का रूप है–
(A) दुहन्ति (B) धोक्षि
(C) दोग्धि (D) दोह्मि

36. 'क्री' धातु पढ़ी गयी है–
(A) स्वादिगण में (B) रुधादिगण में
(C) क्र्यादिगण में (D) चुरादिगण में

37. 'कृ' धातु पढ़ी गयी है–
(A) स्वादिगण में (B) तनादिगण में
(C) रुधादिगण में (D) दिवादिगण में

38. 'तैमिरिकाः' पद का क्या अर्थ है–
(A) नक्षत्र
(B) अँधेरा
(C) अन्धकार को दूर करने वाले
(D) रतौंधी से ग्रसित जन

39. 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य का सहनायक है–
(A) अर्जुन (B) युधिष्ठिर
(C) किरात (शिव) (D) दुर्योधन

40. नैषधीयचरितम् महाकाव्य में किस रस की प्रधानता है–
(A) वीररस (B) करुणरस
(C) शान्तरस (D) शृङ्गाररस

41. ''राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा राजलक्ष्मीः'' कथन उद्धृत है–
(A) शिवराजविजयम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) शुकनासोपदेश से (D) नैषधीयचरितम् से

42. 'विन्ध्याटवी' का वर्णन मिलता है–
(A) कादम्बरी में (B) किरातार्जुनीयम् में
(C) उत्तररामचरितम् में (D) मेघदूतम् में

43. 'कादम्बरी' शब्द का अर्थ है–
(A) सुरा मदिरा (B) औषधि
(C) सुन्दर स्त्री (D) नायिका

44. 'प्रसन्नराघवम्' के रचयिता है–
(A) भवभूति (B) भर्तृहरि
(C) भास (D) जयदेव

45. 'वनेचर' का शाब्दिक अर्थ होगा–
(A) गुप्तचर (B) दूत
(C) सेवक (D) वने चरति इति

46. 'घि' है–
(A) सर्वनाम शब्द (B) व्याकरण का पारिभाषिक शब्द
(C) विधि शब्द (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

47. 'भवभूतिर्विशिष्यते' इस सूक्ति के प्रसिद्धि का कारण है–
(A) उत्तररामचरितम् (B) मालतीमाधवम्
(C) महावीरचरितम् (D) उपर्युक्त तीनों

48. 'अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत' यह वास्तविक उक्ति है–
(A) अनसूया की (B) प्रियंवदा की
(C) दोनों की (D) दुर्वासा की

49. चेतन-अचेतन के भेद में सक्षम नहीं होता–
(A) विलासी (B) वैरागी
(C) तपस्वी (D) कामार्त

50. 'पत्रलेखा' नामक स्त्रीपात्र का उल्लेख प्राप्त होता है–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तल में (B) शिशुपालवध में
(C) कादम्बरी में (D) शिवराजविजय में

51. टेढी भौहों वाली नदी है–
(A) वेत्रवती (B) निर्विन्ध्या
(C) शिप्रा (D) नर्मदा

52. यक्ष के अनुसार मेघ सर्वप्रथम प्रस्थान करेगा–
(A) पूर्व दिशा की ओर (B) पश्चिम दिशा की ओर
(C) उत्तर दिशा की ओर (D) दक्षिण दिशा की ओर

34. (B)	35. (D)	36. (C)	37. (B)	38. (D)	39. (C)	40. (D)	41. (C)
42. (A)	43. (A)	44. (D)	45. (D)	46. (B)	47. (A)	48. (D)	49. (D)
50. (C)	51. (A)	52. (C)					

53. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में श्लोकों की संख्या है–
(A) 48 (B) 43
(C) 45 (D) 47

54. 'अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्' यह वाक्य है–
(A) आत्रेयी का (B) सीता का
(C) तमसा का (D) वासन्ती का

55. 'करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी' किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) राम के लिए (B) सीता के लिए
(C) आत्रेयी के लिए (D) वासन्ती के लिए

56. सुमेलित नहीं है–
(A) आनन्दवर्धन - विषमबाणलीला
(B) प्रवरसेन - बालचरितम्
(C) कात्यायन - स्वर्गारोहणम्
(D) पाणिनि - जाम्बवतीविजयम्

57. प्रत्येक चरण में 12 अक्षर नहीं होते हैं–
(A) भुजंगप्रयात छन्द में (B) वंशस्थ छन्द में
(C) द्रुतविलम्बित छन्द में (D) वसन्ततिलका छन्द में

58. 'भवतीः' किस विभक्ति का रूप है–
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) पञ्चमी

59. शुद्ध नहीं है–
(A) संगठनम् (B) संन्यासी
(C) पुंलिङ्गः (D) पुँल्लिङ्गः

60. शुद्ध है–
(A) पंपा (B) गंगा
(C) शांतः (D) चञ्चूः

61. 'मन्वन्तरः' का सन्धि विच्छेद रूप होगा–
(A) मनो + अन्तरः (B) मनस् + अन्तरः
(C) मनः + अन्तरः (D) मनु + अन्तरः

62. 'तत् + मात्रम्' का सन्धि रूप होगा–
(A) तद्मात्रम् (B) तत्मात्रम्
(C) उपर्युक्त दोनों (D) तन्मात्रम्

63. लोट्लकार का रूप नहीं है–
(A) छिन्धि (B) भिन्धि
(C) कर्तय (D) भुनक्षि

64. 'सुप्तः' पद का मूल प्रातिपदिक रूप है–
(A) सुप् (B) शीङ्
(C) स्वप् (D) सुप्त

65. 'शी + शानच्' से बनने वाला रूप है–
(A) शयमाना (B) शयानः
(C) शयमानः (D) उपर्युक्त सभी

66. सही वाक्य है–
(A) आवां पठाम।
(B) अध्ययनस्य हेतु काश्यां तिष्ठति।
(C) मातुः स्मरति।
(D) गुरुः शिष्यं क्रुध्यति।

67. नम् धातु, लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप है–
(A) नमिष्यामि (B) नमस्यामि
(C) नंस्यामि (D) नमेष्यामि

68. 'द्रक्ष्यति' किस धातु के लृट्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है–
(A) पश्य धातु (B) दृश् धातु
(C) दृश्य धातु (D) दृक्ष् धातु

69. स्वर सन्धि में 'अय्' होगा–
(A) ए + अ (B) ऐ + अ
(C) औ + ए (D) ओ + आ

70. 'शशिशेखरः' में समास है–
(A) कर्मधारय (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

53. (A)	**54. (D)**	**55. (B)**	**56. (B)**	**57. (D)**	**58. (B)**	**59. (A)**	**60. (D)**
61. (D)	**62. (D)**	**63. (D)**	**64. (C)**	**65. (B)**	**66. (C)**	**67. (C)**	**68. (B)**
69. (A)	**70. (C)**						

71. संस्कृत में धातुयें हैं–
(A) लगभग 4000 (B) लगभग 6000
(C) लगभग 10000 (D) लगभग 2000

72. लिट्लकार नहीं है–
(A) इयेष (B) दिदेश
(C) अनैषीः (D) बभूव

73. 'विषमो विषयविषास्वादमोहः' सूक्ति प्रयुक्त है–
(A) उत्तररामचरितम् में (B) नीतिशतकम् में
(C) शिवराजविजयम् में (D) शुकनासोपदेश में

74. ''नैषधं विद्वदौषधम्'' के अनुसार नैषधीयचरितम् विद्वानों के लिए है–
(A) प्रेरणास्रोत (B) उपजीव्य
(C) अनुकरणीय (D) औषधि

75. सही विकल्प नहीं है–
(A) किरातार्जुनीयम् 18 सर्ग (B) शिशुपालवधम् 20 सर्ग
(C) नैषधीयचरितम् 22 सर्ग (D) बुद्धचरितम् 25 सर्ग

76. 'अनर्घराघवम्' रचना है–
(A) मुरारि की (B) अश्वघोष की
(C) बाणभट्ट की (D) प्रवरसेन की

77. अम्बिकादत्त व्यास का जीवन काल रहा है–
(A) 42 वर्ष (B) 43 वर्ष
(C) 44 वर्ष (D) 57 वर्ष

78. 'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है–
(A) वेत्रवती नदी के वर्णन में
(B) निर्विन्ध्या नदी के वर्णन में
(C) नर्मदा नदी के वर्णन में
(D) गम्भीरा नदी के वर्णन में

79. 'चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य' में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) उपमा
(C) अनुप्रास (D) रूपक

80. सन्नन्त का रूप है–
(A) लिलेखिषति (B) पिपठिषति
(C) लिप्सति (D) उपर्युक्त तीनों

81. 'दिल्लीवल्लभतां कलङ्कयति कः'–
(A) औरङ्गजेब (B) शहाबुद्दीन
(C) कुतुबुद्दीन (D) अकबर

82. 'नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण' यह सूक्ति उद्धृत है–
(A) नीतिशतक से (B) मृच्छकटिक से
(C) कादम्बरी से (D) मेघदूत से

83. 'अस्' धातु लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है–
(A) एधि (B) स्ताम्
(C) उपर्युक्त दोनों (D) असि

84. 'यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता' यह वाक्य उद्धृत है–
(A) उत्तररामचरितम् से (B) मेघदूतम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (D) नीतिशतकम् से

85. 'विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मम्' में प्रयुक्त छन्द है–
(A) वंशस्थ (B) पुष्पिताग्रा
(C) मालिनी (D) मन्दाक्रान्ता

86. गुरू का उपदेश होता है–
(A) बिना जल का स्नान
(B) शीतल जल का स्नान
(C) अमृतमय जल का स्नान
(D) शीतल और निर्मल जल का स्नान

87. राजा सभी प्रकार के अशिष्ट आचरण के मूलाधार हो जाते हैं–
(A) अपनी सुन्दरता के कारण
(B) मद के कारण
(C) लक्ष्मी के कारण
(D) उपर्युक्त सबके कारण

71. (D)	**72. (C)**	**73. (D)**	**74. (D)**	**75. (D)**	**76. (A)**	**77. (A)**	**78. (B)**
79. (C)	**80. (D)**	**81. (A)**	**82. (D)**	**83. (A)**	**84. (D)**	**85. (C)**	**86. (A)**
87. (D)							

88. 'ऊरीकृत्य' में समास है–

(A) तत्पुरुषसमास (B) प्रादि तत्पुरुषसमास

(C) गति तत्पुरुषसमास (D) उपपद तत्पुरुषसमास

89. द्विकर्मक धातु नहीं है–

(A) नी (B) मुष्

(C) पच् (D) क्री

90. 'तेजस्वी पुरुषः परकृतनिकृतिं कथं सहते' यह कथन उद्धृत है–

(A) शुकनासोपदेश से (B) शिवराजविजय से

(C) उत्तररामचरित से (D) नीतिशतक से

91. मेघदूत के कथानक का उपजीव्य है–

(A) रामायण (B) ब्रह्मवैवर्तपुराण

(C) पद्मपुराण (D) उपर्युक्त सभी

92. मेघ के गरजने से डर जायेंगी–

(A) बगुलियाँ (B) सिद्धों की पत्नियाँ

(C) चातकें (D) दशार्ण प्रदेश की स्त्रियाँ

93. महाप्राण ध्वनियाँ हैं–

(A) 14 (B) 16

(C) 19 (D) 11

94. 'सायन्तनम्' पद में प्रयुक्त प्रत्यय है–

(A) ल्युट् (B) अन्

(C) ट्युल् (D) तनम्

95. रामायण से सम्बद्ध कृति नहीं है–

(A) प्रतिमानाटक (B) रघुवंशमहाकाव्य

(C) अभिषेकनाटक (D) वेणीसंहार

96. 'जग्ध्वा' में प्रकृति प्रत्यय है–

(A) अद् + क्त्वा (B) जग् + क्त्वा

(C) जगृ + ध्वा (D) जग् + ध्व + टाप्

97. शिव की स्तुति की गई है–

(A) अभिज्ञानशाकुन्तल के नान्दीपाठ में

(B) अभिज्ञानशाकुन्तल के भरतवाक्य में

(C) दोनों स्थलों में (D) कहीं नहीं

98. अश्वघोष द्वारा रचित महाकाव्यों की संख्या है–

(A) 3 (B) 2

(C) 4 (D) 5

99. मालविकाग्निमित्रम् में कितने अङ्क हैं–

(A) पाँच (B) छः

(C) सात (D) दश

100. मेघदूत के बारे में क्या असत्य है–

(A) यह संयोग शृङ्गार प्रधानकाव्य है

(B) यह खण्डकाव्य है

(C) यह दो भागों में विभक्त है

(D) यक्ष का वियोगकाल अभी चार महीना शेष है।

101. समास के सूत्रों का उल्लेख है, अष्टाध्यायी के–

(A) दूसरे अध्याय में

(B) तीसरे अध्याय में

(C) चौथे अध्याय में

(D) पाँचवें अध्याय में

102. लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार समास के भेद हैं–

(A) चार (B) पाँच

(C) छः (D) सात

103. 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' काव्य का यह लक्षण है–

(A) भामह का (B) उद्भट का

(C) रुद्रट का (D) मम्मट का

104. सबसे बड़ा महाकाव्य है–

(A) जानकीहरणम् (B) रावणवधम्

(C) सौन्दरनन्दम् (D) हरविजयम्

105. 'अभिनवबाण' किस कवि को कहते हैं–

(A) जयदेव को (B) बाणभट्ट को

(C) अम्बिकादत्तव्यास को (D) श्रीहर्ष को

106. पाणिनि के पिता थे–

(A) दाक्षी (B) पणिन्

(C) चित्रभानु (D) पृथु

88. (C)	89. (D)	90. (D)	91. (B)	92. (B)	93. (A)	94. (C)	95. (D)
96. (A)	97. (C)	98. (B)	99. (A)	100. (A)	101. (A)	102. (B)	103. (D)
104. (D)	105. (C)	106. (B)					

107. कालिदास की शैली है–
(A) गौडी (B) वैदर्भी
(C) पाञ्चाली (D) उपर्युक्त सभी

108. 'अजागरीः' की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी–
(A) आङ् + जागृ + लुङ् प्र०पु० एकवचन
(B) जागृ + लुङ् म०पु० एकवचन
(C) जागृ + लङ् प्र०पु० बहुवचन
(D) जाग्र + लुङ् म०पु० बहुवचन

109. भवभूति का गोत्र था–
(A) पराशर (B) कुशिक
(C) कश्यप (D) वत्स

110. शृङ्गाररस के देवता हैं–
(A) विष्णु (B) कामदेव
(C) गन्धर्व (D) प्रमथ

111. शिरीषपुष्प से सम्बन्धित ऋतु है–
(A) शिशिर (B) हेमन्त
(C) वसन्त (D) ग्रीष्म

112. अदादिगण में परिगणित धातुएँ हैं–
(A) 61 (B) 72
(C) 24 (D) 140

113. सूत्र के प्रकार हैं–
(A) चार (B) पाँच
(C) छः (D) सात

114. प्रकृत्यादिबोधक शब्दों के योग में होती है–
(A) तृतीया विभक्ति (B) पञ्चमी विभक्ति
(C) चतुर्थी विभक्ति (D) षष्ठी विभक्ति

115. हेतुमद् भूतकाल के लिए प्रयुक्त लकार है–
(A) लृङ् (B) लिङ्
(C) लुङ् (D) लुट्

116. शुकनास की पत्नी थी–
(A) मनोरमा (B) विलासवती
(C) वासवदत्ता (D) सुदक्षिणा

117. 'पुरु' की माता थी–
(A) देवहूति (B) शर्मिष्ठा
(C) अरुन्धती (D) देवयानी

118. 'भारवेरर्थगौरवम्' यह कथन है–
(A) भारवि का (B) भोज का
(C) मल्लिनाथ का (D) उद्भट का

119. पाणिनि का सम्बन्ध है–
(A) धारानगरी से (B) कश्मीर से
(C) शालातुर ग्राम से (D) विदर्भ से

120. प्रीतिकूट ग्राम से सम्बन्धित कवि हैं–
(A) श्रीहर्ष (B) बाणभट्ट
(C) माघ (D) भारवि

121. कौन सा पद नपुंसकलिङ्ग का नहीं है–
(A) नाम (B) वारि
(C) दधि (D) निधि

122. 'आपः' पद किस विभक्ति का है–
(A) प्रथमा एकवचन (B) प्रथमा बहुवचन
(C) द्वितीया एकवचन (D) द्वितीया बहुवचन

123. कश्मीर से सम्बन्धित नहीं है–
(A) भवभूति (B) भारवि
(C) दण्डी (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

124. 'एक' शब्द का रूप चलता है
(A) पुंलिङ्ग में (B) स्त्रीलिङ्ग में
(C) नपुंसकलिङ्ग में (D) सभी लिङ्गों में

125. सुमेलित करें–

कवि	गुरु
क. भवभूति	1. भर्वु
ख. भर्तृहरि	2. ज्ञाननिधि
ग. बाणभट्ट	3. भट्टोजिदीक्षित
घ. वरदराज	4. गोरखनाथ

(A) क 3 ख 2 ग 1 घ 4
(B) क 1 ख 2 ग 3 घ 4
(C) क 4 ख 3 ग 2 घ 1
(D) क 2 ख 4 ग 1 घ 3

107. (B)	108. (B)	109. (C)	110. (A)	111. (D)	112. (B)	113. (C)	114. (A)
115. (A)	116. (A)	117. (B)	118. (D)	119. (C)	120. (B)	121. (D)	122. (B)
123. (D)	124. (D)	125. (D)					

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र–2

1. भर्तृहरि के अनुसार गङ्गा के धरती पर आने का सही क्रम होगा–
(A) हिमालय, शिव, पृथ्वी, समुद्र
(B) शिव, हिमालय, पृथ्वी, समुद्र
(C) स्वर्ग, शिव, हिमालय, पृथ्वी
(D) स्वर्ग, हिमालय, शिव, पृथ्वी

2. तदर्थ का 'पयः' के साथ सामासिक पद होगा–
(A) द्विजार्थं इदमिति (B) द्विजार्थः अयमिति
(C) द्विजार्था इयमिति (D) द्विजार्थाय अयमिति

3. निम्नलिखित में किस ग्रन्थ के मङ्गलाचरण से भर्तृहरि को वेदान्तोक्त ब्रह्म का उपासक मानते हैं–
(A) नीतिशतकम्, वैराग्यशतकम्
(B) नीतिशतकम्, वाक्यपदीयम्
(C) वाक्यपदीयम्, वैराग्यशतकम्
(D) इनमें से कोई नहीं

4. ''मुक्ताजालमिव प्रयाति झटिति भ्रंश्यत् दिशो दृश्यताम्'' प्रस्तुत पंक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) नीतिशतकम् से (B) मेघदूतम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

5. 'ह्रीमति' शब्द का अर्थ है–
(A) लज्जा (B) बुद्धि
(C) द्विविधा (D) दो प्रकार की सलाह

6. ''तान् प्रत्येष विशेषविक्रमरुची राहुर्न वैरायते'' रेखांकित पद में सन्धि होगी–
(A) विसर्गसन्धि (B) स्वरसन्धि
(C) व्यञ्जनसन्धि (D) प्रकृतिभावसन्धि

7. 'मनस्विन्' में प्रकृति प्रत्यय होगा–
(A) मनस् + विनि (B) मनस् + णिनि
(C) मनस् + इनि (D) मनस् + क्तिन्

8. ''सन्त्यन्येपि बृहस्पतिप्रभृतयः सम्भाविताः पञ्चषाः'' यहाँ 'पञ्चषाः' पद में समास होगा–
(A) प्रादितत्पुरुषसमास (B) द्विगुसमास
(C) बहुव्रीहिसमास (D) द्वन्द्वसमास

9. भर्तृहरि के अनुसार यदि व्यक्ति में श्रेष्ठकाव्य करने का सामर्थ्य है तो किसकी आवश्यकता नही है–
(A) धन की (B) राज्य की
(C) सुख की (D) ख्याति की

10. 'कलत्र' (स्त्री) पद में कौन सा लिङ्ग है–
(A) स्त्रीलिङ्ग (B) पुंलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) इनमें से कोई नहीं

11. 'हस्तावृषिकुमारकौ' में किस सूत्र से सन्धि हुई है–
(A) अकः सवर्णे दीर्घः (B) हलोऽनन्तराः संयोगः
(C) एचोऽयवायावः (D) इको यणचि

12. 'उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्' यह कथन किसका है–
(A) गौतमी का (B) प्रियंवदा का
(C) अनसूया का (D) प्रियंवदा अनसूया दोनों का

13. 'अभवः' में लकार एवं वचन होगा–
(A) आशीर्लिङ् म0पु0 एकवचन
(B) लुङ्लकार म0पु0 एकवचन
(C) लोट्लकार म0पु0 एकवचन
(D) लङ्लकार म0पु0 एकवचन

1. (C) 2. (A) 3. (B) 4. (A) 5. (A) 6. (A) 7. (A) 8. (C)
9. (B) 10. (C) 11. (C) 12. (D) 13. (D)

14. 'अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः' यह पंक्ति शाकुन्तलम् के किस अङ्क की है–
(A) द्वितीय (B) चतुर्थ
(C) पञ्चम (D) षष्ठ

15. ''छायाप्रधानाः द्रुमाः तैः'' इस विग्रह से 'छायाद्रुमैः' में समास होगा–
(A) मध्यमपदलोपी समास (B) कर्मधारय समास
(C) तृतीया तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि समास

16. ''कः नु खल्वेष निवसने मे सज्जते'' यहाँ 'निवसने' पद का अर्थ है–
(A) निवास करना (B) वस्त्र
(C) स्थान (D) उपर्युक्त सभी

17. 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति' इस सूक्ति का वक्ता है–
(A) यक्ष (B) अनसूया
(C) तमसा (D) प्रियंवदा

18. सुमेलित करें–

पिता	पुत्र
क. गन्धर्वसेन	(1) भवभूति
ख. श्रीधर	(2) भारवि
ग. नीलकण्ठ	(3) दण्डी
घ. वीरदत्त	(4) भर्तृहरि

(A) क (3) ख (1) ग (4) घ (2)
(B) क (3) ख (2) ग (1) घ (4)
(C) क (1) ख (4) ग (3) घ (2)
(D) क (4) ख (2) ग (1) घ (3)

19. निम्न में कौन सा युग्म अशुद्ध है–
(A) सामवतम् - अम्बिकादत्तव्यास
(B) वासवदत्ता - भास
(C) जगन्नाथ - भामिनीविलास
(D) काव्यादर्श - दण्डी

20. 'ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्' गेटे द्वारा शाकुन्तलम् की प्रशंसा का यह संस्कृत अनुवाद किसने किया था–
(A) वासुदेव विष्णु मिराशी ने (B) मल्लिनाथ सूरि ने
(C) स्वयं गेटे ने (D) प्रो. कीथ ने

21. ''कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुं प्रभवति'' यहाँ 'हुतवहात्' में पञ्चमी किस सूत्र से हुई है–
(A) ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च
(B) अपादाने पञ्चमी
(C) अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति
(D) अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते

22. बाण की गद्यरीति है–
(A) पाञ्चाली (B) वैदर्भी
(C) गौडी (D) उपर्युक्त सभी

23. 'हु' धातु के लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा–
(A) जुहुधि (B) जुहवान
(C) जुहुत (D) जुहोतु

24. बाण ने कादम्बरी के मङ्गलाचरण में किस सूक्ति को उद्धृत किया है–
(A) जलधिरिव लक्ष्मीप्रसूतिः
(B) चक्रवर्तिलक्षणोपेतः
(C) त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः
(D) हर इव जितमन्मथः

25. भारवि का सम्बन्ध किससे नहीं है–
(A) अलङ्कृतकाव्यशैली से (B) बृहत्त्रयी से
(C) पाषाणत्रय से (D) लघुत्रयी से

26. 'शिवराजविजयम्' में प्रधान रस है–
(A) करुणरस (B) रौद्ररस
(C) वीररस (D) वीभत्सरस

14. (B)	15. (A)	16. (B)	17. (B)	18. (D)	19. (B)	20. (A)	21. (D)
22. (A)	23. (A)	24. (C)	25. (D)	26. (C)			

27. रघुवीर सिंह, शिवाजी का सन्देश लेकर गया था–

(A) तोरणदुर्ग से सिंहदुर्ग (B) सिंहदुर्ग से तोरणदुर्ग
(C) उदयपुर से बीजापुर (D) सतारा से बीजापुर

28. 'श्रीमानादित्यपदलाञ्छनः' कौन थे–

(A) युधिष्ठिर (B) विक्रमादित्य
(C) शिवाजी (D) औरङ्गजेब

29. ''बद्ध-सिद्धासनैर्निरुद्धनिःश्वासैः प्रबोधितकुण्डलिनीकै-र्विजितदशेन्द्रियैरनाहतनादः......'' इस कथन का वक्ता है–

(A) ब्रह्मचारी गुरु (B) योगिराज
(C) गौरसिंह (D) शिवाजी

30. 'विलक्षणोऽयं भगवान् सकल-कला कलाप-कलनः, सकल-कालनः करालः कालः' यह किसका विशेषण है–

(A) विष्णु (B) सूर्य
(C) शिव (D) विक्रमादित्य

31. 'यायजूकैः राजसूयादियज्ञा व्ययाजिषत्' इस वाक्य में वाच्य है–

(A) कर्मवाच्य (B) कर्तृवाच्य
(C) भाववाच्य (D) णिजन्तप्रयोग

32. 'आलमगीर' उपाधिधारी कौन था–

(A) मोहम्मद गौरी (B) महमूद गजनवी
(C) शाइस्ता खाँ (D) औरङ्गजेब

33. 'अस्यैव प्रपौत्रो मूर्तिमदिव कलियुगं, गृहीतविग्रह इव चाधर्मः' इस वाक्य में अलङ्कार है–

(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) अतिशयोक्ति (D) रूपक

34. 'अकार्षुः' पद में लकार होगा–

(A) लङ्लकार म0पु0 एक0
(B) लिट्लकार प्र0पु0 बहु0
(C) लुङ्लकार प्र0पु0 बहु0
(D) लोट्लकार प्र0पु0 बहु0

35. इनमें से 'महाप्राण' वर्ण नही है–

(A) ग (B) ख
(C) श (D) ह

36. 'नम्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा–

(A) नस्यति (B) नंस्यति
(C) नमिष्यति (D) नमेस्यति

37. सुमेलित करें–

क. सिंहविष्णु **(1) पुष्यभूतिवंश**
ख. हर्ष **(2) चालुक्यवंश**
ग. दुर्विनीत **(3) पल्लववंश**
घ. विष्णुवर्धन **(4) गङ्गवंश**

	क	ख	ग	घ
(A)	3	1	4	2
(B)	2	3	4	1
(C)	4	2	1	3
(D)	1	4	2	3

38. 'उवाच' रूप बनता है–

(A) प्र0पु0 एकवचन में
(B) उ0पु0 एकवचन में
(C) उपर्युक्त दोनों में
(D) केवल प्र0पु0 द्विव0 में

39. 'नाहं मूर्तीर्विक्रीणामि किन्तु भिनद्मि' इस कथन का वक्ता है–

(A) मुहम्मद गौरी (B) महमूद गजनवी
(C) औरङ्गजेब (D) यवनयुवक

40. भारत में यवनराज्य का बीजारोपण किसने किया–

(A) महमूद गजनवी ने (B) मुहम्मद गौरी (शहाबुद्दीन) ने
(C) कुतुबुद्दीन ने (D) औरङ्गजेब ने

41. 'भवती' में प्रत्यय होगा–

(A) ङीप् (B) ङीन्
(C) ङीष् (D) इनमें से कोई नहीं

27. (B)	**28. (B)**	**29. (A)**	**30. (C)**	**31. (A)**	**32. (D)**	**33. (A)**	**34. (C)**
35. (A)	**36. (B)**	**37. (A)**	**38. (C)**	**39. (B)**	**40. (B)**	**41. (A)**	

42. 'पुमान्' में प्रकृति प्रत्यय होगा–

(A) पूञ् + डवतु (B) पूञ् + मतुप्
(C) पूञ् + शानच् (D) पूञ् + डुम्सुन्

43. निम्न में प्रथमाविभक्ति एकवचन का रूप नही है–

(A) दिशः (B) सुमनाः
(C) जातवेदाः (D) वनौकाः

44. 'दाराः' शब्द किस लिङ्ग में होता है–

(A) नपुंसकलिङ्ग एक. (B) पुंलिङ्ग बहु.
(C) स्त्रीलिङ्ग बहु. (D) इनमें से कोई नहीं

45. 'देवाः समुद्रं सुधां ममन्थुः' इसका कर्मवाच्य होगा–

(A) देवैः समुद्रं सुधा ममन्थे
(B) देवैः समुद्रः सुधा ममन्थे
(C) देवाः समुद्रेन सुधां मन्मथुः
(D) देवः समुद्रेन सुधाः मन्मथ

46. सम् उपसर्गपूर्वक 'ज्ञा' धातु के कर्म में विकल्प से कौन सी विभक्ति होती है–

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) षष्ठी (D) चतुर्थी

47. 'पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्' इस सूत्र से किन विभक्तियों का विधान होता है–

(A) द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी
(B) तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी
(C) तृतीया, द्वितीया, चतुर्थी
(D) द्वितीया, तृतीया, षष्ठी

48. 'ऊकालोज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः' यहाँ किस सूत्र से सन्धि होगी–

(A) झलां जशोऽन्ते
(B) झयो होऽन्यतरस्याम्
(C) उपर्युक्त दोनों
(D) इनमें से कोई नहीं

49. सुमेलित करें–

क. दूरान्तिकार्थेभ्यो **(1) कर्मणि**
ख. दूरान्तिकार्थैः **(2) वर्तमाने**
ग. उभयप्राप्तौ **(3) द्वितीया च**
घ. क्तस्य च **(4) षष्ठ्यन्यतरस्याम्**

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	1	2
(B)	2	1	4	3
(C)	4	2	3	1
(D)	3	4	1	2

50. 'यजेः कर्मणः करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च कर्मसंज्ञा' इस वार्तिक से किसकी करण संज्ञा होती है–

(A) यज् धातु के करण की
(B) यज् धातु के सम्प्रदान की
(C) यज् धातु के कर्म की
(D) यज् धातु के कर्ता की

51. इनमें से भिन्न पद पहचानिए–

(A) एकोनाशीतिः (B) नवसप्ततिः
(C) एकोनसप्ततिः (D) ऊनाशीतिः

52. `74' का संस्कृत में शुद्ध रूप होगा–

(A) चतुष्सप्ततिः (B) चतुर्सप्ततिः
(C) चतुस्सप्ततिः (D) चतुश्सप्ततिः

53. 'सर्वमहान्' में समास होगा–

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि (D) केवलसमास

54. 'गङ्गा च यमुना च' इसका सामासिक पद होगा–

(A) गङ्गायमुनम् (B) गङ्गायमुनौ
(C) गङ्गायमुने (D) यमुनागङ्गम्

55. 'अकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः' इस पंक्ति में अलङ्कार है–

(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) विरोधाभास (D) अतिशयोक्ति

42. (D) 43. (A) 44. (B) 45. (A) 46. (B) 47. (A) 48. (C) 49. (D)
50. (C) 51. (C) 52. (C) 53. (A) 54. (C) 55. (B)

56. किस पाश्चात्त्य विद्वान् ने भारवि के किरातार्जुनीयम् की भूरि-भूरि प्रशंसा की है–

(A) मैक्समूलर (B) गेटे

(C) डा0 ए0वी0 कीथ (D) श्री याकोबी

57. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' यहाँ 'गिरः' पद में विभक्ति है–

(A) प्रथमा, बहु0 (B) षष्ठी, एक0

(C) प्रथमा, एक0 (D) द्वितीया, बहु0

58. 'वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी' यहाँ 'वसूपमानस्य' पद से किसका संकेत है–

(A) अर्जुन का (B) दुर्योधन का

(C) कृष्ण का (D) युधिष्ठिर का

59. ''महौजसो मानधनाः धनार्चिताः धनुर्भृतः संयति लब्धकीर्तयः'' ये किसके विशेषण हैं–

(A) योद्धागणों का (B) दुर्योधन का

(C) पाण्डवों का (D) युधिष्ठिर का

60. ''शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः'' यह सूक्ति किस कवि से सम्बन्धित है–

(A) कालिदास से (B) भवभूति से

(C) भारवि से (D) भर्तृहरि से

61. ''कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ'' यहाँ 'अगजौ' पद का अर्थ होगा–

(A) दो हाथी (B) नकुल सहदेव

(C) अश्विनीकुमार (D) दो पर्वत

62. ''मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम्'' यहाँ 'बर्हिषाम्' पद का अर्थ है–

(A) मयूर का पंख (B) कुश

(C) मृग (D) पशु

63. 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः' इस पंक्ति को कौन किससे कह रहा है–

(A) द्रौपदी, युधिष्ठिर से

(B) वनेचर, युधिष्ठिर से

(C) युधिष्ठिर, द्रौपदी सहित सभी भाइयों से

(D) युधिष्ठिर, द्रौपदी से

64. 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–

(A) उत्तररामचरितम् से

(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

(C) किरातार्जुनीयम् से

(D) मेघदूतम् से

65. अशुद्ध रूप अलग कीजिए–

(A) दोह्मि (B) रोदिमि

(C) दोहामि (D) वेद

66. अशुद्ध रूप पहचानिए–

(A) ब्रवति

(B) ब्रवीति

(C) ब्रूते

(D) आह

67. 'विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मम्' यह पंक्ति है–

(A) भर्तृहरि की

(B) भारवि की

(C) भवभूति की

(D) भर्तृमेण्ठ की

68. बेतवा नदी का सम्बन्ध किस देश से है–

(A) दशपुर से

(B) दशार्ण देश से

(C) उज्जयिनी से

(D) कुरुक्षेत्र से

56. (C)	57. (A)	58. (B)	59. (A)	60. (C)	61. (D)	62. (B)	63. (A)
64. (C)	65. (C)	66. (A)	67. (B)	68. (B)			

69. सुमेलित करें–

दूतप्रकार	दूत
क. निसृष्टार्थ	(1) मेघ
ख. मितार्त	(2) हनुमान्
ग. सन्देशहारक	(3) यक्षिणी
घ. प्रोषितभर्तृका	(4) वनेचर

	क	ख	ग	घ
(A)	2	4	1	3
(B)	4	2	1	3
(C)	3	1	2	4
(D)	1	2	4	3

70. नायिका प्रमुखतया कितने प्रकार की होती हैं–

(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

71. ''हारांस्तारांस्तरलगुटिकान्कोटिशः शङ्खशुक्तीः'' इस पंक्ति में कहाँ के वैभव का वर्णन है–

(A) अलकापुरी का
(B) दशार्ण देश का
(C) उज्जयिनी की कामिनियों का
(D) उज्जयिनी का

72. सुमेलित करें–

कवि	गुरु
क. बाणभट्ट	(1) गोरखनाथ
ख. भर्तृहरि	(2) भत्सु/भर्वु
ग. कृष्णा	(3) समर्थगुरु रामदास
घ. शिवाजी	(4) सान्दीपनि

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	4	3
(B)	2	1	4	3
(C)	4	3	2	1
(D)	3	4	2	1

73. सुमेलित करें

पुष्प	ऋतुयें
क. कुन्द	(1) वर्षा
ख. लोध्र	(2) हेमन्त
ग. कुरबक	(3) वसन्त
घ. शिरीष	(4) शिशिर
ङ. कदम्ब	(5) ग्रीष्म

	क	ख	ग	घ	ङ
(A)	2	3	5	4	1
(B)	5	1	4	2	3
(C)	3	2	1	5	4
(D)	2	4	3	5	1

74. सूर्य के घोड़ों का रंग होता है–

(A) हरा (B) सफेद
(C) पीला (D) लाल

75. अलकापुरी की स्त्रियाँ कुरबक के पुष्प को कहाँ धारण करती थीं–

(A) जूडे में (B) कान में
(C) माँग में (D) बालों में

76. ''साभ्रेऽह्नीव स्थलकमलिनीं न प्रबुद्धां न सुप्ताम्'' यहाँ 'कमलिनी' पद किसके लिए आया है

(A) सीता के लिए (B) यक्षिणी के लिए
(C) शकुन्तला के लिए (D) अलकापुरी के लिए

77. निम्न में से सूर्य का पर्यायवाची नहीं है

(A) तरणिः (B) हिमांशुः
(C) मरीचिमाली (D) अर्कः

78. 'भवान् प्रकृत्यैव धीरः' यहाँ किस सूत्र से तृतीया हुई है–

(A) इत्थम्भूतलक्षणे
(B) हेतौ
(C) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्
(D) कर्तृकरणयोस्तृतीया

69. (A) 70. (B) 71. (D) 72. (B) 73. (D) 74. (A) 75. (A) 76. (B) 77. (B) 78. (C)

79. कामदेव के पास कितने बाण हैं–
(A) 3 (B) 5
(C) 7 (D) 9

80. ''कच्चिद्भर्तुः स्मरसि रसिके! त्वं हि तस्य प्रियेति'' यहाँ 'त्वं' पद किसके लिए आया है–
(A) सारिका (B) मेघ
(C) यक्षिणी (D) यक्ष

81. 'केशेषु चमरीं हन्ति' यहाँ 'केशेषु' पद में किस सूत्र से सप्तमी हुई है–
(A) निमित्तात्कर्मयोगे
(B) क्तस्य च वर्तमाने
(C) सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये
(D) यतश्चनिर्धारणम्

82. अभानुभेद्यमरत्नालोकच्छेद्यमप्रदीपप्रभापनेय-मतिगहनं तमः......। उचित पद का चयन करें–
(A) लक्ष्मीमदः (B) राज्यमदः
(C) राज्यसुखसन्निपातनिद्रा (D) यौवनप्रभवम्

83. 'भवादृशा एव भवन्ति भाजनानि उपदेशानाम्' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) कादम्बरी से (B) मेघदूतम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

84. कादम्बरी शुकनासोपदेश के अनुसार दोषों को गुण में बदल देता है–
(A) गुरु का उपदेश (B) सज्जनों की सङ्गति
(C) सदाचार (D) दृढप्रतिज्ञा

85. शुकनास के अनुसार किनके हृदय में गुरु का उपदेश नही ठहरता है–
(A) युवकों के
(B) मूढव्यक्तियों के
(C) कामदेव के बाणों से घायलों के
(D) समृद्धशालियों के

86. कादम्बरी का प्रधान रस है–
(A) शृङ्गाररस (B) शान्तरस
(C) करुणरस (D) अद्भुतरस

87. संस्कृत गद्यबृहत्त्रयी के कवि हैं–
(A) भारवि, माघ, श्रीहर्ष (B) भास, भवभूति, दण्डी
(C) दण्डी, बाण, भवभूति (D) दण्डी, बाण, सुबन्धु

88. भवभूति का उत्तररामचरित नाटक किस अवसर पर खेला गया था–
(A) शिवरात्रि (B) पूर्णिमा
(C) दीपावली (D) कालप्रियानाथ-यात्रा

89. 'मालतीमाधवम्' की कथा है–
(A) काल्पनिक (B) पौराणिक
(C) महाभारतीय (D) बृहत्कथा से सम्बन्धित

90. अशुद्ध युग्म पहचानिए–
(A) बाणभट्ट - पाञ्चाली
(B) भवभूति - गौड़ी
(C) अम्बिकादत्तव्यास - लाटी
(D) कालिदास - वैदर्भी

91. भवभूति का प्रिय छन्द है–
(A) शार्दूलविक्रीडित (B) वंशस्थ
(C) वसन्ततिलका (D) शिखरिणी

92. 'यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धेऽपि तादृशः' यह कथन बाण के लिए किसने कहा–
(A) भोजराज ने (B) राजशेखर ने
(C) जयदेव ने (D) उद्भट ने

93. अष्टावक्र किसके पुत्र थे–
(A) शतानन्द (B) कहोड
(C) विभाण्डक (D) वशिष्ठ

94. 'शरदिज इव घर्मः केतकीगर्भपत्रम्' इस सूक्ति का वक्ता है–
(A) राम (B) तमसा
(C) मुरला (D) भागीरथी

79. (B)	80. (A)	81. (A)	82. (D)	83. (A)	84. (A)	85. (C)	86. (A)
87. (D)	88. (D)	89. (A)	90. (C)	91. (D)	92. (A)	93. (B)	94. (C)

95. 'उचितमेव दाक्षिण्यं स्नेहस्य' यह कथन किसका है–

(A) मुरला का (B) लोपामुद्रा का
(C) तमसा का (D) वासन्ती का

96. 'अग्रे लोलः करिकलभको यः पुरा वर्धितोऽभूत्' इस कथन का वक्ता है–

(A) वासन्ती (नेपथ्य) (B) मुरला
(C) तमसा (D) राम

97. 'यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे' इस पंक्ति का वक्ता है–

(A) राम (B) तमसा
(C) वासन्ती (D) सीता

98. 'अपसराव' में लकार और वचन है–

(A) विधिलिङ् म0पु0द्विव0 (B) लोट् म0पु0द्विव0
(C) लोट् उ0पु0द्विव0 (D) लट् उ0पु0द्विव0

99. 'चामरपवनैरिवापह्रियते ....।' रिक्तस्थान की पूर्ति करो–

(A) गुणाः (B) सत्यवादिता
(C) साधुवादाः (D) यशः

100. 'गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुद्चञ्चला' यह किसका विशेषण है–

(A) लक्ष्मी (B) गङ्गा
(C) मन (D) नेत्र

101. असङ्गत विकल्प छाँटिए–

(A) अन्तर्लीनस्य दुःखाग्नेरद्योद्दामं ज्वलिष्यतः।
(B) ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति
(C) सीता देव्याः स्वकरकलितैः सल्लकीपल्लवाग्रैः।
(D) छायाद्रुमैः नियमितार्कमयूखतापः

102. ''सर्वदेवताभ्यः प्रकृष्टतममैश्वर्यं मन्दाकिन्याः'' यहाँ 'मन्दाकिन्याः' पद में विभक्ति है–

(A) पञ्चमी (B) प्रथमा
(C) षष्ठी (D) तृतीया

103. 'सुतनु' का सामासिक विग्रह होगा–

(A) शोभनम् तनु यस्याः सा (B) शोभना तनो यस्याः सा
(C) शोभना तनूः यस्याः सा (D) शोभना चासौ तनुः

104. 'दम्पती' पद में समास होगा–

(A) कर्मधारय (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) सुप्सुपा

105. 'मर्मच्छेदी' पद में सन्धि किस सूत्र से हुई है–

(A) स्तोः श्चुना श्चुः (B) शश्छोऽटि
(C) छे च (D) इनमें से कोई नहीं

106. ''करपल्लवः स तस्याः सहसैव जडो जडात्परिभ्रष्टः'' यहाँ 'सः' पद किसके लिए आया है–

(A) सीता के हाथ के लिए (B) राम के हाथ के लिए
(C) पल्लव के लिए (D) जड़ के लिए

107. 'करान्मम स्विद्यतः स्विद्यन्' यहाँ 'स्विद्यतः' पद में विभक्ति है–

(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

108. ''कटुस्तूष्णीं सह्यो निरवधिरयं तु प्रविलयः'' यह पंक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–

(A) नीतिशतकम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

109. 'कियच्चिरं वा मेघान्तरेण पूर्णचन्द्रदर्शनम्' यहाँ 'चन्द्र' पद से किसका सङ्केत किया गया है–

(A) रावण का (B) राम का
(C) सीता की सुन्दरता का (D) निशाकर का

110. 'प्रणय एव व्याहरति शोकश्च' इसका वक्ता है–

(A) तमसा (B) सीता
(C) वासन्ती (D) राम

111. 'आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः' यह कथन है–

(A) वैखानस का (B) प्रियंवदा का
(C) सूत का (D) कण्व का

95. (C)	96. (A)	97. (A)	98. (C)	99. (B)	100. (A)	101. (D)	102. (C)
103. (C)	104. (B)	105. (C)	106. (A)	107. (C)	108. (C)	109. (B)	110. (A)
111. (A)							

112. 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि' यह अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क से सम्बन्धित है–
(A) प्रथम (B) तृतीय
(C) पञ्चम (D) षष्ठ

113. विश्वामित्र किस नदी के किनारे तप कर रहे थे–
(A) मालिनी (B) गोदावरी
(C) गौतमी (D) गङ्गानदी

114 ''अयं स बलभित्सखा दुष्यन्तः'' यहाँ 'बलभित्' पद का अर्थ है–
(A) इन्द्र (B) विदूषक
(C) सेवक (D) कञ्चुकी

115. कालिदास को 'कविकुलगुरुः' किसने कहा है–
(A) जयदेव ने (B) चन्द्रदेव ने
(C) राजशेखर ने (D) क्षेमेन्द्र ने

116. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का शचीतीर्थ किस नदी तट पर बताया जाता है–
(A) गङ्गा (B) मालिनी
(C) गोदावरी (D) गौतमी

117. 'असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा' यह पंक्ति अभिज्ञान-शाकुन्तलम् के किस अङ्क से है–
(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) प्रथम (D) चतुर्थ

118. 'श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्' यह किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) नीतिशतकम् से (B) मेघदूतम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

119. 'ईप्सितः' में प्रकृति प्रत्यय होगा–
(A) ईप् + सा + क्त (B) ईप् + सि + क्त
(C) आप् + सन् + क्त (D) ईप्स् + क्तिन

120. शकुन्तला दुष्यन्त को किस अङ्क में प्रेमपत्र लिखती है–
(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) प्रथम (D) चतुर्थ

121. 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' यहाँ 'नियम्यत इव' में सन्धि होगी–
(A) स्वरसन्धि (B) व्यञ्जनसन्धि
(C) विसर्गसन्धि (D) इनमें से कोई नहीं

122. 'यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता' यहाँ 'पावक' पद में किस विभक्ति का बोध हो रहा है–
(A) प्रथमा एकवचन (B) सम्बोधन
(C) षष्ठी एकवचन (D) सप्तमी एकवचन

123. 'मैं देव को नमस्कार करता हूँ' इसका सही अनुवाद होगा–
(A) अहं देवं नमस्करोमि
(B) अहं देवं नमः
(C) अहं देवाः नमः
(D) अहं देवाय नमस्करोमि

124. मुद्राराक्षस कैसा नाटक है–
(A) काल्पनिक (B) राजनीतिविषयक
(C) महाभारत कथाश्रित (D) धर्मपरकनाटक

125. 'अवोचत्' में लकार है–
(A) लङ् (B) लिट्
(C) लुङ् (D) लृङ्

112. (A) **113.** (C) **114.** (A) **115.** (A) **116.** (A) **117.** (C) **118.** (D) **119.** (C)
120. (B) **121.** (A) **122.** (D) **123.** (A) **124.** (B) **125.** (C)

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयनपरीक्षा (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र– 3

1. ''कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुं प्रभवति'' सूक्ति उद्धृत है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) मेघदूतम् से

2. 'नाटक में जो सुनने योग्य न हो' उसे कहते हैं?
(A) आत्मगतम् (B) प्रकाशम्
(C) नेपथ्य (D) नान्दी

3. 'प्रकृतिवक्रः' शब्द किसके लिए कहा गया है?
(A) कण्व के लिए (B) दुर्वासा के लिए
(C) विश्वामित्र के लिए (D) मारीच के लिए

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का उपजीव्य ग्रन्थ है?
(A) भागवत (B) रामायण
(C) महाभारत (D) वेद

5. ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता'' इस वाक्य में 'पावक' शब्द से किसको संकेतित किया गया है?
(A) कण्व को (B) दुष्यन्त को
(C) यज्ञदेवता को (D) यजमान को

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है?
(A) माढव्य से (B) विदूषक से
(C) विष्कम्भक से (D) शारद्वत से

7. ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी' यह कथन है?
(A) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति
(B) अनसूया का गौतमी के प्रति
(C) प्रियंवदा का अनसूया के प्रति
(D) शकुन्तला का प्रियंवदा के प्रति

8. ''अपराजिता रक्षाकरण्डक'' किसके हाथ में बँधा है?
(A) दुष्यन्त (B) सर्वदमन (भरत)
(C) मारीच (D) कण्व

9. ''एषापि प्रियेण बिना गमयति रजनीं विषाददीर्घत-राम्।'' यह किसके द्वारा कहा गया है?
(A) प्रियंवदा (B) गौतमी
(C) कण्व (D) अनसूया

10. हस्तिनापुर पहुँचकर शकुन्तला का कौन सा नेत्र फड़कने लगा?
(A) बायाँ नेत्र (B) दाहिना नेत्र
(C) दोनों नेत्र (D) कभी बायाँ कभी दायाँ

11. 'संस्पृष्टमुत्कण्ठया' के 'संस्पृष्टम्' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) सम् + पृच्छ् + कत्वा (B) सम् + स्पृश् + क्त
(C) सम् + पा + ल्युट् (D) सम् + स्पृ + ष्टम्

12. 'लिखितवान्' में प्रत्यय है?
(A) क्त (B) मतुप्
(C) क्तवतु (D) शतृ

13. 'व्याहृतम्' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी?
(A) वि + आह + क्त
(B) वि + आङ् + क्त
(C) वि + आङ् + हृ + क्त
(D) वि + आ + हृत् + क्त

14. सूर्यवंशी, रघुवंशी तथा इक्ष्वाकुवंशी राजा कौन हैं?
(A) राम (B) दुष्यन्त
(C) हर्ष (D) नल

15. विदेहराजपुत्री कौन है?
(A) सीता (B) शकुन्तला
(C) तमसा (D) वासन्ती

16. राम दण्डकारण्य में क्यों आए हैं–
(A) सीता से मिलने हेतु (B) अगस्त्य के दर्शन हेतु
(C) पञ्चवटी में घूमने हेतु (D) शम्बूक के वध हेतु

1. (A)	**2. (A)**	**3. (B)**	**4. (C)**	**5. (B)**	**6. (C)**	**7. (A)**	**8. (B)**
9. (D)	**10. (B)**	**11. (B)**	**12. (C)**	**13. (C)**	**14. (A)**	**15. (A)**	**16. (D)**

17. पञ्चवटी में कदम्बवृक्ष को किसने रोपित किया था–
(A) वासन्ती ने (B) राम ने
(C) सीता ने (D) तमसा ने

18. ''स्पर्शः पुरा परिचितो नियतं स एव'' कथन है–
(A) राम का (B) सीता का
(C) वासन्ती का (D) तमसा का

19. ''अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'' में छन्द है?
(A) उपजाति (B) द्रुतविलम्बित
(C) इन्द्रवज्रा (D) वंशस्थ

20. 'समाश्वसिहि' पद की व्याकरणात्मक प्रकृति है?
(A) सम + आ + श्वास + लोट् म0पु0 एक0
(B) समा + श्वस + लोट् + म0पु0 द्विव0
(C) सम् + आङ् + श्वस् + लोट् म0पु0 एक0
(D) सम + आ + श्वास + लट् म0पु0 एक0

21. ''प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति'' में अलङ्कार हैं?
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) विभावना

22. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कुल श्लोक हैं–
(A) 45 (B) 46
(C) 48 (D) 49

23. उत्तररामचरितम् के टीकाकार घनश्याम, महाकवि भवभूति को मानते है?
(A) तमिल (B) द्राविड
(C) उत्तरभारतीय (D) महाराष्ट्रियन

24. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ होता है?
(A) तमसा और मुरला के वार्तालाप से
(B) तमसा और सीता के वार्तालाप से
(C) राम और वासन्ती के मिलने से
(D) गोदावरी और भागीरथी के वार्तालाप से

25. भारवि का समय विद्वानों ने माना है?
(A) 600 ई0 के आस पास
(B) 800 ई0 के आसपास
(C) कालिदास के पहले
(D) प्रथम शताब्दी के आस पास

26. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' सूक्ति किसने कहा है?
(A) कीथ ने (B) मल्लिनाथ ने
(C) गेटे ने (D) क्षेमेन्द्र ने

27. ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' यह किस कवि का प्रिय श्लोक है?
(A) माघ का (B) कालिदास का
(C) भवभूति का (D) भारवि का

28. ''दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः'' यहाँ 'वृकोदरः' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) युधिष्ठिर (B) भीम
(C) दुर्योधन (D) वनेचर

29. वनवासकाल में अर्जुन जङ्गल से क्या लाकर युधिष्ठिर को प्रदान करते हैं?
(A) स्वर्ण
(B) चाँदी
(C) धन
(D) वल्कलवस्त्र

30. किरातार्जुनीयम् की सूक्ति नहीं हैं?
(A) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः
(B) प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः
(C) विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः
(D) भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः

31. ''वञ्चनीयाः'' पद में प्रत्यय है–
(A) तव्यत् (B) अनीयर्
(C) ल्यप् (D) तुमुन्

17. (C)	**18. (A)**	**19. (B)**	**20. (C)**	**21. (B)**	**22. (C)**	**23. (B)**	**24. (A)**
25. (A)	**26. (B)**	**27. (D)**	**28. (B)**	**29. (D)**	**30. (D)**	**31. (B)**	

32. 'शास्ति' में लकार, पुरुष और वचन है–
(A) लट्लकार, प्रथम पुरुष एकवचन
(B) लृट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(C) लिट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(D) लोट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन

33. ''द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतः'' के 'विघाताय' पद में धातु है?
(A) घ्रा (B) हन्
(C) विघ् (D) घात्

34. 'वनेचरः' में कौन सा प्रत्यय है?
(A) घञ् प्रत्यय (B) ट प्रत्यय
(C) अण् प्रत्यय (D) णिनि प्रत्यय

35. ''शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः'' इस सूक्ति में कौन सा अलङ्कार है?
(A) उत्प्रेक्षा (B) रूपक
(C) श्लेष (D) उपमा

36. कवियों का उत्तरोत्तर सही कालक्रम माना जाता है?
(A) माघ - भारवि - श्रीहर्ष
(B) भास - भारवि - अश्वघोष
(C) वाल्मीकि - भास - भारवि
(D) भास - माघ - कालिदास

37. 'पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) मेघदूतम् से (B) शिवराजविजयम् से
(C) नीतिशतकम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

38. ''निराश्रया हन्त! हता मनस्विता'' इसका वक्ता कौन है?
(A) द्रौपदी (B) मुरला
(C) अनसूया (D) वनेचर

39. भारवि थे?
(A) जैन (B) शैव
(C) वैष्णव (D) बौद्ध

40. महाकवि कालिदास ने मेघदूतम् के कथानक को कहाँ से लिया है?
(A) भागवतपुराण से (B) वायुपुराण से
(C) ब्रह्मवैवर्तपुराण से (D) इनमें से कोई नहीं

41. 'ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः' यह पंक्ति किस नदी से सम्बन्धित है?
(A) निर्विन्ध्या से (B) शिप्रा से
(C) रेवा से (D) गम्भीरा से

42. गीतिकाव्य या खण्डकाव्य के रूप में सर्वप्रथम गणना होती है?
(A) गीतगोविन्दम् की (B) मेघदूतम् की
(C) गीता की (D) वाल्मीकिरामायण की

43. 'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' यह पंक्ति किस नदी से सम्बद्ध है?
(A) रेवा से (B) निर्विन्ध्या से
(C) शिप्रा से (D) गम्भीरा से

44. यक्ष के शाप की समाप्ति किस दिन होगी?
(A) कार्तिक देवोत्थान एकादशी को
(B) हरिशयनी एकादशी को
(C) माघ शुक्लपक्ष सप्तमी को
(D) आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रतिपदा को

45. यक्षिणी शापदिवसों की गिनती किससे करती है?
(A) फलों से (B) पत्तों से
(C) शङ्ख से (D) फूलों से

46. ''यत्रोन्मत्तभ्रमरमुखराः पादपा नित्यपुष्पाः'' यहाँ 'यत्र' पद से किस नगरी का सङ्केत है?
(A) उज्जयिनी का (B) विदिशा का
(C) अलका का (D) दशपुर का

32. (A)	33. (B)	34. (B)	35. (D)	36. (C)	37. (D)	38. (A)	39. (B)
40. (C)	41. (D)	42. (B)	43. (B)	44. (A)	45. (D)	46. (C)	

47. 'या शिखा दाम हित्वा' यहाँ 'दाम' शब्द का अर्थ है?
(A) माला (B) मूल्य
(C) सर्प (D) वियोग

48. 'विगलितशुचा' में विभक्ति एवं वचन है?
(A) तृतीया एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) प्रथमा एकवचन (D) प्रथमा बहुवचन

49. 'पेशलम्' पद का शब्दार्थ है?
(A) सुन्दर (B) आँसू
(C) नवीन (D) कोमल

50. किस विद्वान् ने मेघदूत को 'शोकगीत' कहा है?
(A) डॉ0 कीथ ने (B) गेटे ने
(C) क्षेमेन्द्र ने (D) राजशेखर ने

51. 'पारावत' पद का शब्दार्थ है–
(A) कबूतर (B) कोयल
(C) कौआ (D) तोता

52. 'लाङ्गली' मेघदूतम् में किसको कहा गया है?
(A) कृष्ण को (B) शिव को
(C) बलराम को (D) कार्तिकिय को

53. चातक (पपीहा) मेघ के किस ओर शब्द कर रहा है?
(A) बाँयी ओर
(B) दाँयी ओर
(C) बाँयी और दाँयी दोनों ओर
(D) किसी ओर नहीं।

54. अलका के बाह्य उद्यान का क्या नाम है?
(A) विदिशा (B) शैलाज
(C) नन्दन (D) वैभ्राज

55. ''बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती'' यह किसका कथन है–
(A) सोड्ढल का (B) त्रिलोचन का
(C) धर्मदास का (D) मङ्खक का

56. पुण्डरीक के पिता हैं–
(A) चित्रभानु (B) अर्थकेतु
(C) शुकनास (D) श्वेतकेतु

57. ''रजनिकरगभस्तयः'' में 'गभस्तयः' पद का अर्थ है?
(A) गर्भिणी (B) किरणें
(C) अन्धकार (D) सूर्य

58. 'दातारम्' की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी?
(A) दा + तृच् + द्वितीया, बहुव0
(B) दा + अम् + प्रथमा, एकव0
(C) दा + तृच् + द्वितीया, एकव0
(D) दाञ् + घञ् + प्रथमा, बहुव0

59. लक्ष्मी कर्कशता कहाँ से ग्रहण करती है?
(A) कौस्तुभमणि से (B) मदिरा से
(C) उच्चैश्रवा से (D) हालाहल से

60. 'इषवः' पद का अर्थ है?
(A) शर (B) बाण
(C) तीर (D) उपर्युक्त सभी

61. ''पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया रेणुमयीव स्वच्छमपि कलुषीकरोति'' इन पंक्तियों में अलङ्कार है?
(A) विरोधाभास (B) दीपक
(C) निदर्शना (D) उत्प्रेक्षा

62. ''विग्रहवत्यप्यप्रत्यक्षदर्शना'' इस पद में सन्धि हैं–
(A) हल् सन्धि (B) गुणसन्धि
(C) वृद्धि सन्धि (D) यण् सन्धि

63. ''कुप्यन्ति हितवादिने'' यहाँ 'हितवादिने' में कौन सी विभक्ति किस सूत्र से हुई है–
(A) तृतीया–''हेतौ''
(B) षष्ठी–''षष्ठी शेषे''
(C) चतुर्थी–''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः''
(D) सप्तमी–''आधारोऽधिकरणम्''

47. (A)	48. (A)	49. (A)	50. (A)	51. (A)	52. (C)	53. (A)	54. (D)
55. (A)	56. (D)	57. (B)	58. (C)	59. (A)	60. (D)	61. (A)	62. (D)
63. (C)							

64. कादम्बरी में वर्णित 'इन्द्रायुध' था?
(A) मन्त्री (B) राजा
(C) घोड़ा (D) वज्र

65. कामपीड़ा में दिवङ्गत हो गया था–
(A) पुण्डरीक (B) द्वैपायन
(C) तारापीड (D) वैशम्पायन

66. ''त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा'' यह विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है?
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) विन्ध्याटवी (D) हेमकूट

67. 'गन्धर्वनगरलेखेव' पद में कौन सा अलङ्कार है?
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) यमक

68. ''गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुद्चञ्चला'' किसके विषय में कहा गया है?
(A) सरस्वती के लिए (B) सीता के लिए
(C) लक्ष्मी के लिए (D) पार्वती के लिए

69. निम्न में से कौन सा रूप धातु का नही है?
(A) भवति (B) भवतः
(C) भवन्तः (D) भवताम्

70. विक्रमसंवत् के प्रवर्तक महाराज विक्रमादित्य का ज्येष्ठ भाई माना जाता है?
(A) भवभूति (B) भर्तृमेण्ठ
(C) भट्टि (D) भर्तृहरि

71. नीतिशतकम् किस काव्यपरम्परा का ग्रन्थ माना जाता है–
(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) मुक्तककाव्य (D) चम्पूकाव्य

72. भर्तृहरि के नीतिशतकम् के मङ्गलाचरण में किस देव की स्तुति है–
(A) विधाता ब्रह्मा की (B) शङ्कर की
(C) दिक्कालादि की (D) ब्रह्म की

73. ''विभूषणं मौनमपण्डितानाम्'' प्रस्तुत सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है–
(A) शृङ्गारशतकम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) वैराग्यशतकम् से (D) इनमें से कोई नहीं

74. 'धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च' इस पद्यांश में 'माम्' पद से किसका संकेत किया गया है?
(A) विक्रमादित्य का (B) महामन्त्री का
(C) कामदेव का (D) भर्तृहरि का

75. ''राजन् दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनाम्'' यहाँ 'क्षितिधेनुम्' पद में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) श्लेष
(C) रूपक (D) इनमें से कोई नहीं

76. ''निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः'' यहाँ क्रियापद है–
(A) सन्तः (B) सन्ति
(C) कियन्तः (D) विकसन्तः

77. ''मा ब्रूहि दीनं वचः' यहाँ 'ब्रूहि' पद में धातु एवं लकार है?
(A) श्रु लोट् म० पु० एक०
(B) ब्रू लट् म० पु० एक०
(C) ब्रू लोट् म० पु० एक०
(D) ब्रूह् लोट् प्र० पु० एक०

78. ''पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः'' इस पद्यांश में 'पिशुनता' पद का अर्थ है?
(A) चुगुलखोरी (B) चोरी
(C) स्त्रीचरित्र (D) पाप की गठरी

79. भर्तृहरि के पिता माने जाते हैं?
(A) मित्रसेन (B) गन्धर्वसेन
(C) चित्रसेन (D) चित्रभानु

64. (C)	**65. (A)**	**66. (A)**	**67. (B)**	**68. (C)**	**69. (C)**	**70. (D)**	**71. (C)**
72. (D)	**73. (B)**	**74. (D)**	**75. (C)**	**76. (B)**	**77. (C)**	**78. (A)**	**79. (B)**

80. महाकवि भर्तृहरि की अन्तिम रचना मानी जाती है?
(A) शृङ्गारशतकम् (B) नीतिशतकम्
(C) वैराग्यसारम् (D) वैराग्यशतकम्

81. ''सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम्'' इस श्लोकांश में छन्द है?
(A) शिखरिणी (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) हरिणी

82. शतकत्रय के रचनाकार भर्तृहरि ने और किस प्रसिद्धग्रन्थ की रचना की थी?
(A) अष्टाध्यायी की (B) महाभाष्यम् की
(C) वाक्यपदीयम् की (D) वैयाकरणभूषणसार की

83. ''बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः'' यह पंक्ति नीतिशतक की किस पद्धति से उद्धृत है–
(A) दुर्जनपद्धति से (B) मूर्खपद्धति से
(C) मानशौर्यपद्धति से (D) परोपकारपद्धति से

84. काशी की महासभा ने व्यास जी को किस उपाधि से विभूषित किया–
(A) भारतरत्न (B) साहित्यरत्न
(C) संस्कृतरत्न (D) बिहाररत्न

85. अम्बिकादत्तव्यास ने स्थापना की?
(A) सार्वभौम-संस्कृतसमाज की
(B) बिहार-संस्कृत-सञ्जीवनी-समाज की
(C) संस्कृत-भारती-समाज की
(D) संस्कृत-कथावाचन-समाज की

86. अम्बिकादत्तव्यास जी ने अपना संक्षिप्त निज वृत्तान्त स्वयं लिखा हैं–
(A) बिहारी बिहारिणी में (B) बिहारी शतकम् में
(C) बिहारी बिहार में (D) शिवराजविजयम् में

87. 'महाराष्ट्रकेशरी' के रूप में वर्णन है?
(A) गौरसिंह का (B) श्यामबटु का
(C) ब्रह्मचारी गुरु का (D) शिवाजी का

88. संस्कृत-साहित्य में बीसवीं शताब्दी का एक सफल ऐतिहासिक उपन्यास है?
(A) शिवाजीविजयम् (B) धर्मश्रीः
(C) शिवराजभूषणम् (D) शिवराजविजयम्

89. ''ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामाः समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति स्तुवन्ति च'' यहाँ 'तम्' पद से किसका सङ्केत किया गया है?
(A) ब्रह्मचारीगुरु का (B) योगिराज का
(C) गौरबटु का (D) सूर्य का

90. 'त्रियामा' पद का अर्थ है?
(A) यामिनी (B) विभावरी
(C) रात्रि (D) उपर्युक्त सभी

91. 'समतिष्ठत्' में धातु है–
(A) तिष्ठ (B) स्था
(C) दृश् (D) तिस्

92. ''बटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्बह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः'' इन पंक्तियों में वर्णन है?
(A) गौरबटु का (B) श्यामबटु का
(C) दोनों का (D) ब्रह्मचारी गुरु का

93. ''चर्कर्ति बर्भर्ति जर्हर्ति'' प्रयोग है–
(A) यङ्लुक् क्रिया (B) धातुपसर्ग क्रिया
(C) कर्मवाच्य क्रिया (D) सनन्तक्रिया

94. सोमनाथ मन्दिर में लटकने वाला विशाल घण्टा कितने मन की स्वर्ण शृंखलाओं में लटकता था–
(A) 200 मन (B) 150 किग्रा
(C) 200 किलो (D) 1000 मन

95. शिवराजविजयम् के अनुसार कन्या के अपहरणकर्त्ता यवनयुवक की आयु लगभग कितनी रही होगी?
(A) 25 वर्ष (B) 16 वर्ष
(C) 20 वर्ष (D) 30 वर्ष

80. (D)	81. (A)	82. (C)	83. (B)	84. (A)	85. (B)	86. (C)	87. (D)
88. (D)	89. (B)	90. (D)	91. (B)	92. (A)	93. (A)	94. (A)	95. (C)

96. 'अतुत्रुटत्' में धातु है?
(A) त्रुट् छेदने, लुङ्   (B) त्रुट् छेदने, लङ्
(C) त्रुटि छेदने, लङ्   (D) त्रुट्, लिट्

97. 'आखण्डलदिक्' पद से किस दिशा का सङ्केत है?
(A) पूर्व दिशा   (B) पश्चिम दिशा
(C) उत्तर दिशा   (D) दक्षिण दिशा

98. इनमें कौन पदसंज्ञा विधायक सूत्र नहीं है–
(A) सुप्तिङन्तं पदम्
(B) "सिति च" और "नः क्ये"
(C) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने
(D) अनुदात्तं पदमेकवर्जम्

99. "अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम् अस्तोभमनवद्यं च"–यह किसका लक्षण है?
(A) वार्तिक का   (B) सूत्र का
(C) भाष्य का   (D) उपर्युक्त सभी का

100. 'स्वप् + क्त = सुप्तः' यहां 'स्वप्' धातु में कौन विधि हुई है?
(A) संयोग   (B) सम्प्रसारण
(C) संहिता   (D) लोप

101. 'उत्सर्ग' किसे कहते हैं?
(A) विशेष नियम को   (B) सामान्य नियम को
(C) वैकल्पिक नियम को   (D) इनमें से कोई नहीं को

102. 'इको यणचि' इस सूत्र में कुल कितने पद हैं–
(A) पञ्चपदम्   (B) त्रिपदम्
(C) द्विपदम्   (D) एकपदम्

103. 'नद्यत्र' में सन्धि है–
(A) गुण   (B) यण्
(C) अयादि   (D) प्रकृतिभाव

104. "विष्णो + इति"–इसका सन्धियुक्त पद होगा–
(A) विष्ण इति   (B) विष्णविति
(C) उपर्युक्त दोनों   (D) कोई नहीं

105. "चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे" यहाँ 'ढौकसे' पद का अर्थ है?
(A) जाना   (B) डाँटना
(C) डरना   (D) छुपना

106. "एतत् + मुरारिः = एतन्मुरारिः" यहाँ किस सूत्र से सन्धि हुई है?
(A) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा
(B) अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः
(C) अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा
(D) मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः

107. "तच्छ्लोकेन" इसका सन्धि विच्छेद होगा?
(A) तच् + श्लोकेन   (B) तत् + श्लोकेन
(C) तत् + छ्लोकेन   (D) तत्व + लोकेन

108. 'पुनारमते' का सन्धि विच्छेद होगा?
(A) पुनः (र्) + रमते   (B) पुनो + रमते
(C) पुन + आरमते   (D) पुनस् + रमते

109. 'रथिकाश्वारोहम्' में कौन सा समास है?
(A) कर्मधारय   (B) द्वन्द्व
(C) बहुव्रीहि   (D) षष्ठी तत्पुरुष

110. 'अहिनकुलम्' में समास है?
(A) इतरेतरद्वन्द्व   (B) समाहारद्वन्द्व
(C) एकशेषद्वन्द्व   (D) अलुकृतत्पुरुष

111. किसमें 'कृत्' से कर्म का अभिधान है?
(A) लक्ष्म्या सेवितः
(B) हरिः सेव्यते
(C) शतेन क्रीतः शत्यः
(D) प्राप्तः आनन्दः यं सः प्राप्तानन्दः

112. अकर्मक धातु के योग में 'अध्यवाचक' शब्द की क्या संज्ञा होती है?
(A) करण   (B) अधिकरण
(C) कर्म   (D) कर्त्ता

96. (A)	97. (A)	98. (D)	99. (B)	100. (B)	101. (B)	102. (B)	103. (B)
104. (C)	105. (A)	106. (A)	107. (B)	108. (A)	109. (B)	110. (B)	111. (A)
112. (C)							

113. ''कारयति भृत्येन कटम्'' में 'भृत्य' में तृतीया होने का कारण क्या है?

(A) अनुक्ते करणे (B) हेतौ

(C) अपवर्गे (D) अनुक्ते कर्तरि

114. ''अक्षान् दीव्यति'' में 'अक्ष' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है?

(A) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (B) दिवः कर्म च

(C) अकथितं च (D) तथायुक्तं चानीप्सितम्

115. अण्यन्त अवस्था के कर्त्ता की ण्यन्तावस्था में 'कर्मसंज्ञा' करने वाला सूत्र है?

(A) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

(B) अधिशीङ्स्थासां कर्म

(C) दिवः कर्म च

(D) गति-बुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्द–कर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ।

116. लिङ्गमात्राधिक्य का उदाहरण है?

(A) तटः, तटी, तटम् (B) शुक्लः, शुक्ला, शुक्लम्

(C) कृष्णः, कृष्णा, कृष्णम् (D) उपर्युक्त सभी

117. नाम के बाद जो प्रत्यय आते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?

(A) णिच् (B) तद्धित

(C) तिङ् (D) कृत्

118. कुर्वाणः में प्रकृति-प्रत्यय हैं–

(A) कृ + शतृ (B) कृ + ल्यप्

(C) कृ + क्त्वा (D) कृ + शानच्

119. 'मासिक' पद में कौन सा प्रत्यय है?

(A) मास + उक् (B) मास + त्व

(C) मास + ठक् (D) मास + ईक्

120. कौन सा अशुद्ध है?

(A) करिष्यमाणः (B) करिष्यमाणा

(C) करिष्यमाणम् (D) करिष्यतः

121. 'रामः वनम् अगच्छत्'-इसका कर्मवाच्य होगा?

(A) रामेण वनं गम्यते

(B) रामेण वनोऽगम्यत्

(C) रामेण वनः गम्यत

(D) रामेण वनम् अगम्यत

122. पञ्चन् से दशम् तक सभी शब्द किस वचन में होते हैं?

(A) एकवचन (B) द्विवचन

(C) बहुवचन (D) उपर्युक्त सभी

123. 'हु' धातु के लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा

(A) जुहुवान (B) हुहोतु

(C) जुह्वानि (D) जुहुत

124. 'युज्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन का रूप होगा?

(A) युनक्ति (B) युञ्जमः

(C) युञ्जवः (D) युञ्जन्ति

125. 'विद्वस्' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप होगा?

(A) विद्वषः (B) विद्वत्सु

(C) विद्वांसु (D) विद्यासु

113. (D) 114. (B) 115. (D) 116. (D) 117. (B) 118. (D) 119. (C) 120. (D)
121. (D) 122. (C) 123. (C) 124. (C) 125. (B)

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयनपरीक्षा (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र–4

1. शुद्ध रूप है–
(A) पाश्चात्यः (B) पास्चात्यः
(C) पाश्चात्यः (D) पश्चात्यः

2. शुद्ध रूप क्या है–
(A) शास्त्रीमहोदयः अद्य अस्माकं गृहम् आगच्छति
(B) शास्त्रिन्महोदयः अद्य अस्माकं गृहं आगच्छसि
(C) शास्त्रिमहोदयः अद्य अस्माकं गृहम् आगच्छति
(D) शास्त्रीमहोदयः अद्य अस्माकं गृहम् आगच्छन्ति

3. भाषाशिक्षण का उपयुक्त कौशलक्रम है–
(A) भाषणकौशलम्, श्रवणकौशलम्, पठनकौशलम्, लेखनकौशलम्
(B) श्रवणकौशलम्, भाषणकौशलम्, पठनकौशलम्, लेखनकौशलम्
(C) श्रवणकौशलम्, भाषणकौशलम्, लेखनकौशलम्, पठनकौशलम्
(D) भाषणकौशलम् पठनकौशलम्, श्रवणकौशलम्, लेखनकौशलम्

4. संस्कृत में अठारह (18) को कहेंगे–
(A) अष्टदश (B) अष्टौदश
(C) अष्टन्दश (D) अष्टादश

5. कौन सा रूप शुद्ध माना जाता है–
(A) शृणोति (B) श्रृणोति
(C) श्रणोति (D) श्रुणोति

6. 'षण्णवतिः' कहते हैं–
(A) 69 (B) 96
(C) छः और नव को (D) 66

7. 84 (चौरासी) का संस्कृत रूप होगा–
(A) चतुराशीतिः (B) चत्वारिशीतिः
(C) चतुर्थाशीतिः (D) चतुरशीतिः।

8. 'अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः' यहाँ 'मरीचिमाली' पद का क्या अर्थ है–
(A) फूलों की माला (B) सूर्य
(C) किरणों का सारथी (D) मारीचि ऋषि का माली

9. संस्कृतवाङ्मय का प्रथम 'ऐतिहासिक उपन्यास' है–
(A) कादम्बरी (B) वाल्मीकिरामायणम्
(C) हर्षचरितम् (D) शिवराजविजयम्

10. काशीकवितावर्द्धिनी सभा की ओर से भारतेन्दु जी ने ''सुकवि'' की उपाधि किसे प्रदान की
(A) प्रेमचन्द्र को (B) अम्बिकादत्तव्यास को
(C) बाणभट्ट को (D) रेवाप्रसाद द्विवेदी को

11. यवन गुप्तचर को किसने मारा–
(A) ब्रह्मचारी गुरु ने (B) खड्गसिंह ने
(C) गौरसिंह ने (D) शिवाजी ने

12. ''गायत्री अमुमेव गायति'' इस वाक्य में 'अमुम्' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) सूर्य का (B) चन्द्र का
(C) विश्वामित्र का (D) गायत्री का

13. ''प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः'' यह श्लोक नीतिशतकम् के अलावा और किस ग्रन्थ में प्राप्त होता है–
(A) पञ्चतन्त्रम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) किरातार्जुनीयम् में (D) मुद्राराक्षसम् में

14. 'विना' शब्द के योग में कौन सी विभक्तियाँ होती हैं–
(A) प्रथमा, द्वितीया, चतुर्थी
(B) तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी
(C) द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी
(D) द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठी

15. निम्नलिखित में से किस शब्द के योग में तृतीया विभक्ति होती है–
(A) परितः (B) नमः
(C) साकम् (D) अभितः

16. 'शतावधान' तथा 'घटिकाशतक' की उपाधि मिली थी–
(A) पं० अम्बिकादत्तव्यास एवं माघ को
(B) पं० दौर्बलप्रभाकरशर्मा एवं भारवि को
(C) बाणभट्ट एवं व्यास को
(D) केवल अम्बिकादत्तव्यास को

1. (C)	2. (C)	3. (B)	4. (D)	5. (A)	6. (B)	7. (D)	8. (B)	9. (D)	10. (B)
11. (C)	12. (A)	13. (D)	14. (C)	15. (C)	16. (D)				

17. ''मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्'' यह सूक्ति कहाँ प्राप्त होती है–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) नीतिशतकम् में
(C) विदुरनीति में (D) चाणक्यनीति में

18. ''पदवाक्यप्रमाणज्ञः'' कौन था–
(A) भारवि (B) भवभूति
(C) भास (D) भर्तृहरि

19. ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' यह पंक्ति कहाँ की है–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मेघदूतम्
(C) नीतिशतकम् (D) उत्तररामचरितम्

20. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में छन्द है–
(A) स्रग्धरा (B) हरिणी
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) शिखरिणी

21. ''शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से'' यह कथन किसका है–
(A) दुष्यन्त का (B) कण्व का
(C) राम का (D) यक्ष का

22. 'नायकः' शब्द का सन्धिविच्छेद क्या है–
(A) ने+अकः (B) नौ+अनः
(C) नै+अकः (D) नो+अकः

23. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का उपजीव्यग्रन्थ है–
(A) महाभारत वनपर्व (B) महाभारत आदिपर्व
(C) महाभारत सभापर्व (D) महाभारत भीष्मपर्व

24. ''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'' यह सूक्ति कहाँ से उद्धृत है–
(A) ऋतुसंहारम् से (B) रघुवंशम् से
(C) मेघदूतम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

25. 'मेघदूतम्' में कौन सा छन्द प्रयुक्त है–
(A) शिखरिणी (B) इन्द्रवज्रा
(C) उपेन्द्रवज्रा (D) मन्दाक्रान्ता

26. मेघदूतम् में ''जह्नुकन्या'' कौन है–
(A) कुबेर की पत्नी (B) यक्ष की पत्नी
(C) रामगिरि की निवासिनी (D) गङ्गानदी

27. ''श्रीकण्ठपदलाञ्छनः'' किस कवि को कहा जाता है–
(A) भारवि को (B) माघ को
(C) बाणभट्ट को (D) भवभूति को

28. महर्षि कण्व का आश्रम था–
(A) मालिनी नदी के तट पर
(B) गोदावरी नदी के तट पर
(C) गङ्गा नदी के तट पर
(D) गौतमी नदी के तट पर

29. 'ममायम्' पद का सन्धिविच्छेद है–
(A) मया+अयम् (B) मम्+अयम्
(C) मम्+आयम् (D) मम+अयम्

30. यक्ष शाप के दिनों में कहाँ निवास करता है–
(A) द्वैतवन में (B) विन्ध्यवन में
(C) रामगिरि में (D) अलकापुरी में

31. मेघदूतम् के यक्ष की पत्नी का नाम है–
(A) कामाक्षी (B) विशालाक्षी
(C) हेममालिनी (D) यशस्विनी

32. ''एकोरसः करुण एव निमित्तभेदात्'' यह किस कवि की उद्घोषणा है–
(A) कालिदास (B) भास
(C) भवभूति (D) भारवि

33. ''कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु'' इस पंक्ति में कौन सा छन्द है–
(A) शिखरिणी (B) शार्दूलविक्रीडितम्
(C) वसन्ततिलका (D) मन्दाक्रान्ता

34. 'तेष्वेव' शब्द का सन्धिविच्छेद क्या है–
(A) तेष+एव (B) तेषु+एव
(C) तेष्व+एव (D) तेष्+एव

35. 'वाक्यपदीयम्' के लेखक हैं–
(A) भवभूति (B) भर्तृहरि
(C) नागेशभट्ट (D) भट्टोजिदीक्षित

36. बाणभट्ट के पिता का नाम है–
(A) भूषणभट्ट (B) अर्थपति
(C) कुबेर (D) चित्रभानु

17. (B)	**18. (B)**	**19. (D)**	**20. (A)**	**21. (B)**	**22. (C)**	**23. (A)**	**24. (C)**	**25. (D)**	**26. (D)**
27. (D)	**28. (A)**	**29. (D)**	**30. (C)**	**31. (B)**	**32. (C)**	**33. (D)**	**34. (B)**	**35. (B)**	**36. (D)**

37. कादम्बरी में किस रीति का प्रयोग हुआ है–
(A) वैदर्भी रीति (B) गौडी रीति
(C) पाञ्चाली रीति (D) इनमें से कोई नहीं

38. राजा तारापीड कहाँ के राजा हैं–
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) कौशाम्बी (D) गन्धर्वनगर

39. ''भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्'' यह पंक्ति कहाँ से उद्धृत है–
(A) कादम्बरी शुकनासोपदेश से (B) कादम्बरी कथामुख से
(C) मेघदूतम् से (D) हर्षचरितम् से

40. भर्तृहरि की प्रेमिका का नाम है–
(A) पिङ्गला (B) महिषी
(C) विशालाक्षी (D) रसिकवती

41. मन्त्री शुकनास ने किसे उपदेश दिया–
(A) वैशम्पायन को (B) चन्द्रापीड को
(C) पुण्डरीक को (D) तारापीड को

42. 'अनीयर्' प्रत्यय है–
(A) कृत्प्रत्यय (B) तद्धितप्रत्यय
(C) स्त्रीप्रत्यय (D) उणादिप्रत्यय

43. ''स्थाल्यां पचति'' इस वाक्य में 'स्थाली' पद में है–
(A) अपादान (B) करण
(C) अधिकरण (D) कर्म

44. शुद्धं वाक्यं किम्?
(A) सः वस्त्रं प्रक्षाल्य पठितुम् उद्युक्तः
(B) सः वस्त्रं प्रक्षालयित्वा पठितुम् उद्युक्तः
(C) सः वस्त्रं प्रक्षायित्वा पठितुम् उद्युक्त
(D) सः वस्त्रं प्रक्षालय पठितुम् उद्युक्तः

45. ''अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः'' में प्रयुक्त छन्द है–
(A) वसन्ततिलका (B) इन्द्रवज्रा
(C) त्रिष्टुप् (D) वंशस्थ

46. दुष्यन्त और शकुन्तला के पुनर्मिलन के समय सर्वदमन (भरत) की आयु थी–
(A) 10-12 वर्ष (B) 15-18 वर्ष
(C) 2-3 वर्ष (D) 5-6 वर्ष

47. ''अभिज्ञानम्'' पद में प्रत्यय है?
(A) ल्युट् (B) घञ्
(C) अण् (D) ढक्

48. 'भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी' इस वाक्य का वक्ता है–
(A) दुष्यन्त (B) कण्व
(C) शार्ङ्गरव (D) गौतमी

49. ''प्रत्यर्पितन्यासः'' पद में समास है–
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

50. शुक्राचार्य की पुत्री थी–
(A) देवयानी (B) शर्मिष्ठा
(C) मेनका (D) सानुमती

51. ''वत्से, सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता'' यह कथन किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिवराजविजयम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

52. ''अहो चिररात्राय सुप्तोऽहम्'' यह वाक्य किस ग्रन्थ से उद्धृत है–
(A) कादम्बरी
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) शिवराजविजयम्
(D) उत्तररामचरितम्

53. 'शिवराजविजयम्' में है–
(A) 12 विराम और तीन निःश्वास
(B) तीन विराम और 12 निःश्वास
(C) तीन उच्छ्वास 16 विराम
(D) तीन निःश्वास हैं प्रत्येक में 4 विराम हैं।

54. किरातार्जुनीयम् का मङ्गलाचरण है–
(A) नमस्कारात्मक (B) आशीर्वादात्मक
(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) सकारात्मक

55. 'जिह्मः' इति शब्दस्य कः अर्थः?
(A) कुटिलः (B) सरलः
(C) शुभ्रम् (D) यशः

37. (C)	38. (B)	39. (A)	40. (A)	41. (B)	42. (A)	43. (C)	44. (A)	45. (C)	46. (D)
47. (A)	48. (B)	49. (C)	50. (A)	51. (D)	52. (C)	53. (B)	54. (C)	55. (A)	

56. 'दुह् धातु, लट्लकार म0पु0 एकवचन का रूप होगा–
(A) दोग्सि (B) धोक्षि
(C) दोग्धि (D) दुग्धोसि

57. 'लभेत' रूप है–
(A) लट् प्र0पु0 एक0 (B) विधिलिङ् प्र0पु0 एक0
(C) विधिलिङ् म0पु0 बहु0 (D) लङ्लकार प्र0पु0 एक0

58. 'गच्छेत्' में धातु है–
(A) गच्छ् धातु (B) गम् धातु
(C) गच् धातु (D) गच्छे धातु

59. 'तिष्ठति' में धातु है–
(A) तिष्ठ (B) तिष्ठ्
(C) स्था (D) अस्

60. 'दुह्' धातु लृट्लकार प्र0पु0 एकवचन का रूप होगा–
(A) दोक्ष्यति (B) धोक्ष्यति
(C) द्रुह्यति (D) दोहिष्यति

61. 'हन्' धातु लट्लकार प्र0पु0 बहुवचन का रूप होगा–
(A) हन्तु (B) हनन्तु
(C) घ्नन्ति (D) हन्यन्ताम्

62. 'ब्रू' धातु लट्लकार प्र0पु0 एकवचन का रूप होगा–
(A) ब्रवीति (B) ब्रवति
(C) ब्रुवति (D) ब्रुवीति

63. 'गुरु' शब्द का चतुर्थी एकवचन में रूप होगा–
(A) गुरवे (B) गुरये
(C) गुराय (D) गुरुवाय

64. 'पितरि' में विभक्ति है–
(A) षष्ठी (B) चतुर्थी
(C) सप्तमी (D) पञ्चमी

65. 'प्रियमण्डना' पद में समास है–
(A) द्वन्द्व (B) बहुव्रीहि
(C) तत्पुरुष (D) अव्ययीभाव

66. 'न्यषिच्यत' पद में सन्धि है–
(A) दीर्घ सन्धि (B) वृद्धि सन्धि
(C) गुण सन्धि (D) यण् सन्धि

67. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) शिवराजविजयम्

68. ''न विव्यथे तस्य मनः'' यहाँ 'विव्यथे' पद में धातु है–
(A) विव्य् धातु (B) व्यथा धातु
(C) व्यथ् धातु (D) विव्या धातु

69. 'ग्रीष्मर्तुः' में सन्धि है–
(A) यण्सन्धि (B) गुणसन्धि
(C) अयादिसन्धि (D) वृद्धिसन्धि

70. 'प्रौढः' रूप किस सूत्र से सिद्ध होता है
(A) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु
(B) अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्
(C) वृद्धिरेचि
(D) ओमाङोश्च

71. 'राजा सिंहासनम् अध्यास्ते' यहाँ 'सिंहासनम्' में द्वितीयाविभक्ति का विधान किस सूत्र से हुआ–
(A) अभिनिविशश्च (B) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(C) उपान्वध्याङ्वसः (D) अकथितं च

72. 'येनाङ्गविकारः' सूत्र का उदाहरण नहीं है–
(A) अक्ष्णा काणः (B) शिरसा खल्वाटः
(C) जटाभिस्तापसः (D) सः पादेन खञ्जः

73. 'नमः' पद के योग में किस विभक्ति का विधान होता है–
(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) द्वितीया (D) षष्ठी

74. 'इक्' प्रत्याहार का वर्ण नही है–
(A) इ (B) ऋ
(C) उ (D) अ

75. 'पुटपाकप्रतीकाशो.........करुणो रसः' रिक्तस्थान को पूर्ण करें–
(A) राघवस्य (B) रामस्य
(C) श्यामस्य (D) सीतायाः

56. (B)	57. (B)	58. (B)	59. (C)	60. (B)	61. (C)	62. (A)	63. (A)	64. (C)	65. (B)
66. (D)	67. (C)	68. (C)	69. (B)	70. (A)	71. (B)	72. (C)	73. (B)	74. (D)	75. (B)

76. 'जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्' यह पद्य किसने कहा–
(A) भास ने (B) भारवि ने
(C) भवभूति ने (D) भर्तृहरि ने

77. ''शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः'' यह पंक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) कादम्बरी कथामुख (B) कादम्बरी शुकनासोपदेश
(C) कादम्बरी उत्तरार्द्ध (D) शिवराजविजयम्

78. यक्ष का सन्देश लेकर मेघ कहाँ जाता है–
(A) अलकनन्दा (B) उज्जयिनी
(C) रामगिरि (D) अलकापुरी

79. 'अतिनिद्रम्' में समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) द्वन्द्व
(C) अव्ययीभाव (D) तत्पुरुष

80. 'स्वाहा' शब्द के योग में कौन सी विभक्ति का प्रयोग होता है–
(A) पञ्चमी (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) इनमें से कोई नहीं

81. 'ते गृहं गच्छन्ति' का कर्मणिप्रयोग होगा–
(A) तेन गृहं गम्यते (B) ते गृहं गम्यन्ते
(C) तैः गृहं गम्यते (D) तेन गृहं गम्यन्ते

82. 'भवनम्' शब्द का सन्धि विच्छेद है–
(A) भौ + अकम् (B) भो + अनम्
(C) भौ + अनम् (D) भव + अनम्

83. 'क' से लेकर 'म' तक के व्यञ्जनवर्ण किस नाम से जाने जाते हैं–
(A) ऊष्मवर्ण (B) अन्तःस्थवर्ण
(C) स्पर्शवर्ण (D) अनुस्वारवर्ण

84. 'हरी' शब्द में कौन सी विभक्ति है–
(A) तृतीया एकवचन (B) सप्तमी द्विवचन
(C) द्वितीया द्विवचन (D) चतुर्थी एकवचन

85. 'जगण तगण जगण रगण' किस छन्द का लक्षण है–
(A) उपजाति (B) वंशस्थ
(C) इन्द्रवज्रा (D) उपेन्द्रवज्रा

86. 'शार्दूलविक्रीडितम्' के प्रत्येक चरण में कितने वर्ण होते हैं–
(A) 18 (B) 17
(C) 19 (D) 21

87. 'नवपलाशपलाशवनं पुरः' में अलङ्कार है–
(A) उपमा (B) अतिशयोक्ति
(C) श्लेष (D) यमक

88. नाटक में अङ्कों की संख्या होनी चाहिए–
(A) 8-12 अङ्क (B) 10-15 अङ्क
(C) 5-10 अङ्क (D) 5 से कम अङ्क

89. द्रौपदी की चारित्रिक विशेषता नहीं है–
(A) वीरक्षत्राणी (B) वाक्पटुता
(C) राजनीतिज्ञा (D) चरित्रहीनता

90. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के त्रिकालज्ञ नैष्ठिक ब्रह्मचारी के रूप में चित्रित है–
(A) कण्व (B) शार्ङ्गरव
(C) विश्वामित्र (D) दुर्वासा

91. 'नदति स एष वधूसखः शिखण्डी' यहाँ 'शिखण्डी' पद का अर्थ है–
(A) मयूर (B) कोयल
(C) कौआ (D) वधू

92. ''जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम्'' इस पंक्ति में छन्द है–
(A) शार्दूलविक्रीडित (B) शिखरिणी
(C) वसन्ततिलका (D) मन्दाक्रान्ता

93. यक्ष और मेघ के बीच वार्तालाप कहाँ होता है–
(A) अलकापुरी में (B) उज्जयिनी में
(C) रामगिरि में (D) कैलाशपुरी में

94. ''जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः'' में 'मघोनः' पद का अर्थ है–
(A) कुबेर (B) मेघ
(C) यक्ष (D) इन्द्र

95. शिवराजविजयम् के मङ्गलाचरणम् में श्लोक उद्धृत है–
(A) विष्णुपुराण से (B) श्रीमद्भागवत से
(C) वाल्मीकिरामायण से (D) इनमें से कोई नहीं

76. (D)	77. (B)	78. (D)	79. (C)	80. (C)	81. (C)	82. (B)	83. (C)	84. (C)	85. (B)
86. (C)	87. (D)	88. (C)	89. (D)	90. (A)	91. (A)	92. (D)	93. (C)	94. (D)	95. (B)

96. 'मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' किसका कथन है–

(A) कण्व का (B) वनेचर का
(C) श्रीरामभद्र का (D) शिवाजी का

97. ''आविष्कृतोऽरुणपुरःसर एकतोऽर्कः'' यहाँ 'अर्कः' पद का क्या अर्थ है–

(A) दिन (B) चन्द्र
(C) कण्व (D) सूर्य

98. ''दुष्यन्तेनाहितं तेजः'' में 'आहितम्' पद में प्रकृति प्रत्यय है–

(A) आङ्+धा+क्त (B) आङ्+हि+क्त
(C) आङ्+हि+क्तवतु (D) आङ्+दा+क्त

99. ''निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्'' में 'निहन्ति' पद में है–

(A) नि+ हन् धातु लट् प्र0पु0 बहु
(B) नि+हन् धातु लट् प्र0पु0 एक0
(C) निह् धातु लट्, प्र0पु0 बहु0
(D) नि+हन् धातु शतृ प्रत्यय

100. ''चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति'' यहाँ 'चकासति' पद में लकार है–

(A) लट् प्र0पु0 बहु0 (B) लट् प्र0पु0 एक0
(C) लिट् प्र0पु0एक0 (D) लृट् प्र0पु0 एक0

101. ''मतङ्गजेन स्त्रगिवापवर्जिता'' में अलङ्कार है–

(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

102. ''अखण्डमाखण्डलतुल्यधामभिः'' यहाँ 'आखण्डल' पद का अर्थ है–

(A) वनेचर (B) इन्द्र
(C) दुर्योधन (D) धनुष

103. ''भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते'' यहाँ 'भवन्तम्' पद से किसका सङ्केत किया गया है–

(A) अर्जुन का (B) दुर्योधन का
(C) युधिष्ठिर का (D) वनेचर का

104. 'सः मां पश्यति' का कर्मवाच्य होगा–

(A) तेन अहं दृश्यते (B) तेन अहं दृश्ये
(C) तेन मां दृश्ये (D) तेन मया दृश्यते

105. ''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–

(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मेघदूतम् (D) नीतिशतकम्

106. ''नत्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहम्'' यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–

(A) सिद्धान्तकौमुदी (B) सरस्वतीकण्ठाभरण
(C) लघुसिद्धान्तकौमुदी (D) अष्टाध्यायी

107. 'चार चतुर बालकों को बुलाओ।' संस्कृत में अनुवाद होगा–

(A) चत्वारि चतुरान् बालकान् आह्वयतु
(B) चतुरः चतुरान् बालकान् आह्वयतु
(C) चतस्रः चतुराः बालकान् आह्वयतु
(D) चत्वारः चतुरान् बालकान् आह्वयतु

108. कवियों का सही कालक्रम है–

(A) भास-भारवि-भवभूति (B) भारवि-भवभूति-भास
(C) भवभूति-भास-भारवि (D) भर्तृहरि-भास-भारवि

109. महाकवि भवभूति के आश्रयदाता नरेश हैं–

(A) पुलकेशिन द्वितीय
(B) विक्रमादित्य
(C) कान्यकुब्जनरेश यशोवर्मा
(D) विष्णुवर्धन

110. शैक्षिक सफलता के तीन सोपान माने जाते हैं–

(A) अनुशासनम्-अध्ययनम्-अभ्यासः
(B) परिश्रमः-अनुत्साहः-चिन्तनम्
(C) विचार-कार्यम्-असन्तोषः
(D) अध्ययनम्-परिश्रमः-अनभ्यासः

111. 'गङ्गैषा' पद का सन्धि विच्छेद होगा–

(A) गङ्गा+एषा (B) गङ्गा+एषः
(C) गङ्ग+एषा (D) गङ्गा+ऐषा

96. (A) 97. (D) 98. (A) 99. (B) 100. (A) 101. (A) 102. (B) 103. (C) 104. (B) 105. (A) 106. (C) 107. (B) 108. (A) 109. (C) 110. (A) 111. (A)

112. 'भिक्षुकः राजानं वस्त्रं याचते' इस वाक्य में 'राजानम्' पद की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई–
(A) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्
(B) अकथितं च
(C) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (D) तथायुक्तं चानीप्सितम्

113. 'खलु+अयम्' में क्या सन्धि बनती है–
(A) खल्वयम् (B) खलुवयम्
(C) खल्ययम् (D) खलूयम्

114. 'हेतौ' सूत्र से किस विभक्ति का विधान होता है–
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

115. 'अध्यापकात् संस्कृतं पठति' इसमें पञ्चमी विभक्ति का विधान किस सूत्र से हुआ–
(A) पराजेरसोढः (B) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(C) आख्यातोपयोगे (D) भुवः प्रभवः

116. संस्कृतभारती की संवादशाला किसलिए विश्वप्रसिद्ध है–
(A) संस्कृत भवन के लिए
(B) संस्कृत फिल्मों के लिए
(C) संस्कृत नाटकों के लिए
(D) संस्कृत सम्भाषण के लिए

117. 'उत्तररामचरितम्' में कुल कितने अङ्क हैं–
(A) 6 (B) 7
(C) 8 (D) 10

118. यूजीसी द्वारा नेट परीक्षा का तृतीय प्रश्नपत्र होगा–
(A) विकल्पात्मक (B) विषयात्मकम्
(C) निबन्धात्मकम् (D) लघूत्तरीयम्

119. ''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति'' यह कथन किसका है–
(A) प्रियंवदा (B) अनसूया
(C) दुष्यन्त (D) शकुन्तला

120. ''वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्'' किसने कहा–
(A) शार्ङ्गरव (B) शारद्वत
(C) कण्व (D) मारीच

121. ''आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते'' यह किसका लक्षण है–
(A) नाटक (B) नान्दी
(C) कञ्चुकी (D) सूत्रधार

122. 'कादम्बरी कथा का प्रारम्भ होता है–
(A) चन्द्रापीड वर्णन से (B) शुकनास के उपदेश से
(C) शूद्रक के वर्णन से (D) वैशम्पायन के प्रवेश से

123. शुद्ध रूप का चयन करें–
(A) लिखिष्यति (B) लेखिष्यति
(C) लिखायिष्यति (D) लेखिस्यति

124. ''न नो ननुन्नो नुन्नोनो'' यह एकाक्षर श्लोक किस कवि से सम्बद्ध है–
(A) भास (B) भारवि
(C) कालिदास (D) माघ

125. 'विश्वसंस्कृतपुस्तकमेला' सर्वप्रथम किस स्थान पर सम्पन्न हुआ–
(A) नयीदिल्ली में (B) बंगलौर में
(C) इलाहाबाद में (D) काशी में

112. (B) 113. (A) 114. (B) 115. (C) 116. (D) 117. (B) 118. (A) 119. (A) 120. (C) 121. (B) 122. (C) 123. (B) 124. (B) 125. (B)

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयनपरीक्षा (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र– 5

1. ''कवीनां कविषु वा कालिदासो श्रेष्ठः'' यह उदाहरण किस सूत्र का है–
(A) यतश्च निर्धारणम् (B) आख्यातोपयोगे
(C) यस्य च भावेन भावलक्षणम् (D) षष्ठी शेषे

2. अष्टाध्यायी का अन्तिम सूत्र है–
(A) अ अ (B) चाऽर्थे द्वन्द्वः
(C) वृद्धिरेचि (D) अनश्च

3. 'रामेण बाणेन हतो बाली मे 'बाण' क्या है–
(A) कर्ता (B) कर्म
(C) करण (D) क्रिया

4. यह आधार का भेद नही है–
(A) औपश्लेषिक (B) अभिव्यापक
(C) यादृच्छिक (D) वैषयिक

5. उत्तररामचरितम् में 'छायाङ्क' कौन है–
(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) पञ्चम

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' शब्द से किसका बोध होता है–
(A) मुकुट (B) नूपुर
(C) अङ्गुलीयक (D) हार

7. ''अदेङ्गुणः'' में 'अत्' से ह्रस्व अकार का बोध किस सूत्र से होता है–
(A) अणुदित्सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः (B) तस्मादित्युत्तरस्य
(C) अचश्च (D) तपरस्तत्कालस्य

8. इनमें से कौन दो परस्पर सवर्ण हैं–
(A) थ् क् (B) आ इ
(C) उ झ (D) च् ज्

9. ''अचोऽन्त्यादि टि'' सूत्र अष्टाध्यायी के किस अध्याय में है–
(A) द्वितीय (B) प्रथम
(C) तृतीय (D) चतुर्थ

10. ''न वेति विभाषा'' सूत्र के 'वा' से किसका बोध होता है–
(A) विशेष (B) बाधा
(C) विकल्प (D) विषय

11. ''स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि'' यहाँ 'सः' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) कण्व का (B) दुर्वासा का
(C) दुष्यन्त का (D) मारीच का

12. कालिदास की पहली रचना मानी जाती है–
(A) कुमारसम्भवम् (B) रघुवंशम्
(C) ऋतुसंहारम् (D) मेघदूतम्

13. किरातार्जुनीयम् ग्रन्थ में युधिष्ठिर का दूत बनकर हस्तिनापुर कौन जाता है–
(A) नकुल (B) कृष्ण
(C) द्रुपद (D) वनेचर

14. विदूषक रहित रचना नहीं है–
(A) मुद्राराक्षसम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) महावीरचरितम्

15. संस्कृतदिवस कब मनाया जाता है–
(A) होलिकोत्सवे (B) कार्तिक एकादशी को
(C) वसन्तपञ्चमी को (D) श्रावणी पूर्णिमा को

16. शिक्षा का सर्वोत्कृष्ट उद्देश्य क्या है–
(A) धनोपार्जनम् (B) उपाधिलाभ
(C) सुनागरिकनिर्माणम् (D) व्यवसाय करना

17. इसमें से अव्यय पद क्या है–
(A) दिवसः (B) दिनम्
(C) दिवा (D) अहः

18. शुद्ध वाक्य है–
(A) सीतापतये नमः (B) सीतापत्यै नमः
(C) सीतापत्ये नमः (D) सीतापतिने नमः

1. (A)	**2. (A)**	**3. (C)**	**4. (C)**	**5. (B)**	**6. (C)**	**7. (D)**	**8. (D)**	**9. (B)**	**10. (C)**
11. (C)	**12. (C)**	**13. (D)**	**14. (B)**	**15. (D)**	**16. (C)**	**17. (C)**	**18. (A)**		

19. 'त्वं लिखसि' इसका कर्मवाच्य होगा–
(A) त्वया लिख्यसे (B) त्वं लिख्यसे
(C) त्वया लिख्यते (D) त्वां लिख्यते

20. 'तुम मेरे मित्र हो' इसका संस्कृत में अनुवाद होगा–
(A) त्वं मे मित्रोऽस्ति (B) त्वं मे मित्रमसि
(C) त्वं मे मित्रमस्ति (D) त्वं मे मित्रोऽसि

21. शुद्ध वाक्य है–
(A) पश्य देवस्य महिमाम् (B) पश्य देवस्य महिमानम्
(C) पश्य देवस्य महिम्नम् (D) पश्य देवस्य महिमम्

22. 'सौ रुपये' इसका संस्कृत में अनुवाद होगा
(A) शतं रुप्यकम् (B) शतं रुप्यकाणि
(C) शतानि रुप्यकम् (D) शताः रुप्यकाणि

23. शुद्ध वाक्य होगा–
(A) त्रयाणां बालिकानां परिचयं वद
(B) तिसृणां बालकानां परिचयं वद
(C) त्रिसृणां बालिकानां परिचयः वद
(D) तिसृणां बालिकानां परिचयं वद

24. I love you इसका संस्कृत में सही अनुवाद होगा–
(A) अहं प्रेम करोमि (B) अहं स्नेहं करोमि
(C) अहं त्वां कामये (D) अहं स्निहामि

25. All is well इसका संस्कृत में अनुवाद होगा
(A) सम्यक् सर्वं सर्वत्र (B) सर्वं सुष्ठु वर्तते
(C) सर्वं सम्यक् अस्ति (D) सर्वं शोभनम् अस्ति।

26. 'भुवः प्रभवः' सूत्र का उदाहरण होगा–
(A) संस्कृतगङ्गा प्रयागात् प्रभवति (B) चोरात् बिभेति
(C) बालकः गृहात् विद्यालयं गच्छति (D) गङ्गा प्रवहति

27. 'भवत्' शब्द का पञ्चमी बहुवचन में रूप होगा–
(A) भवन्तम् (B) भवद्भ्यः
(C) भवत्सु (D) भवताम्

28. बहुवचन का रूप नही है–
(A) ददति (B) अदन्ति
(C) हन्ति (D) शासति

29. लट्लकार एकवचन का रूप है–
(A) बिभ्यति (B) जहति
(C) दधति (D) बिभेति

30. 'अहश्च रात्रिश्च' समस्तपद होगा–
(A) अहरात्रम् (B) अहोरात्रम्
(C) अहारात्रम् (D) अहरात्रिः

31. 'सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति' यहाँ कैसा आधार है–
(A) वैषयिक (B) अभिव्यापक
(C) औपश्लेषिक (D) इनमें से कोई नहीं

32. इस समूह में असङ्गत कवि है–
(A) भास (B) मुरारि
(C) कालिदास (D) भवभूति

33. सुमेलित करें

(अ) माधव्य	1. मृच्छकटिकम्
(ब) विदूषकाभाव	2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(स) मैत्रेय	3. स्वप्नवासवदत्तम्
(द) वसन्तक	4. उत्तररामचरितम्

	अ	ब	स	द
(A)	1	4	3	2
(B)	4	2	1	3
(C)	2	4	1	3
(D)	2	4	3	1

34. पञ्चमीतत्पुरुष समास होगा–
(A) भूतबलिः (B) रोगमुक्तः
(C) पञ्चपात्रम् (D) अक्षशौण्डः

35. 'द्वित्राः' में समास होगा–
(A) द्वन्द्व (B) द्विगु
(C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहि

36. 'पठितुमिच्छति पिपठिषति' यह कैसी धातु है–
(A) सन्नन्तधातु (B) नामधातु
(C) यङन्तधातु (D) इनमें से कोई नहीं

37. 'दा धातु' लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप होगा–
(A) ददामः (B) दाद्मः
(C) दद्मः (D) दादमः

38. 'क्रेतुम्' में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) क्रि+तुमुन् (B) कृ+तुमुन्
(C) क्री+तुमुन् (D) कृञ्+तुमुन्

19. (C)	20. (B)	21. (B)	22. (B)	23. (D)	24. (C)	25. (A)	26. (A)	27. (B)	28. (C)
29. (D)	30. (B)	31. (B)	32. (C)	33. (C)	34. (B)	35. (D)	36. (A)	37. (C)	38. (C)

39. 'व्याकरणम् अधीते वेद वा' क्या होगा–
(A) व्याकरणकः (B) वेय्याकरणः
(C) व्याकरणिकः (D) वैयाकरणः

40. 'दा+शानच्' क्या रूप होगा
(A) ददानः (B) दानीनः
(C) दानमानः (D) ददन्

41. शुद्ध वाक्य है–
(A) गुरुः छात्राः बिभेति
(B) गुरोः छात्राः बिभेति
(C) गुरुभ्यः छात्राः बिभ्यति
(D) गुरुभ्यः छात्राः बिभेति

42. 'नमस्ते' का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) नम् + अस्ते (B) नमः + ते
(C) नम् + ते (D) नम् + स्ते

43. 'भू + ऊर्ध्वम्' होगा–
(A) भूरूर्ध्वम् (B) भूर्ध्वम्
(C) भुर्ध्वम् (D) भूऊर्ध्वम्

44. अन्तर् + राष्ट्रियः = ?
(A) अन्तर्राष्ट्रियः (B) अन्ताराष्ट्रियः
(C) अन्ताराष्ट्रीयः (D) अन्तरराष्ट्रीयः

45. अयादिसन्धि का उदाहरण है–
(A) तावपि (B) विष्णोऽव
(C) भानुरुदेति (D) हृदयौदार्यम्

46. कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की है–
(A) मल्लिनाथ ने (B) जयदेव ने
(C) राजशेखर ने (D) क्षेमेन्द्र ने

47. सुमेलित करें–

कथनम्	**वक्ता**
(1) पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः	(क) मल्लिनाथ
(2) निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु	(ख) उद्भट
(3) शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु	(ग) बाणः
(4) उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्	(घ) राजशेखर

(A) 1 क, 2 ग, 3 ख, 4 घ
(B) 1 घ, 2 क, 3 ख, 4 ग
(C) 1 क, 2 ग, 3 घ, 4 ख
(D) 1 क, 2 ख, 3 घ, 4 ग

48. किस नदी समूह का वर्णन मेघदूतम् में नहीं मिलता है–
(A) वेत्रवती, शिप्रा, गम्भीरा
(B) रेवा, निर्विन्ध्या, गन्धवती
(C) गङ्गा, यमुना, सरस्वती
(D) झेलम, कावेरी, ब्रह्मपुत्र

49. किस पर्वत युग्म का वर्णन कालिदास ने अपने मेघदूतम् में नही किया है–
(A) आम्रकूट और कैलास (B) हिमालय और विन्ध्य
(C) देवगिरि और रामगिरि (D) नीचैगिरि और उच्चैगिरि

50. मेघदूतम् में किस देव का वर्णन नहीं मिलता है
(A) राम और सीता (B) शिव, पार्वती और कार्तिकेय
(C) विष्णु और बलराम (D) ब्रह्मा, नारद और संतोषी

51. पुराणों में मेघदूतम् के विरही यक्ष का नाम मिलता है
(A) विरहदेव (B) विशालाक्षी
(C) कुमारगन्धर्व (D) हेममाली

52. महाकवि कालिदास के श्वसुर माने जाते हैं–
(A) शारदानन्द (B) ब्रह्मानन्द
(C) शिवानन्द (D) विद्यानन्द

53. 'अम्बुवाहम्' पद का अर्थ है
(A) अभ्र (B) जलमुचः
(C) बादल (D) उपर्युक्त सभी

54. 'प्रक्रमेथाः' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी–
(A) प्र+कमि+तिप्+विधिलिङ्
(B) प्र+क्रम+सिप्+विधिलिङ्
(C) प्र+कृ+थ+लोट्
(D) प्र+क्री+सिप्+लृट्

39. (D)	40. (A)	41. (C)	42. (B)	43. (B)	44. (B)	45. (A)	46. (D)	47. (C)	48. (D)
49. (D)	50. (D)	51. (D)	52. (A)	53. (D)	54. (B)				

55. मन्दाक्रान्ता छन्द में होते हैं–
(A) मगण भगण नगण रगण तगण दो गुरू 17
(B) भगण मगण नगण तगण तगण एक गुरू 16
(C) मगण भगण नगण तगण तगण दो गुरू 17
(D) भगण भगण मगण मगण तगण दो गुरू 17

56. संस्कृतगङ्गा प्रथम बार कहाँ से प्रादुर्भूत हुई–
(A) काशी से (B) दिल्ली से
(C) हरिद्वार से (D) प्रयाग से

57. भाषाशिक्षण का कौशल (skill) नहीं माना जाता है–
(A) पठनकौशलम् (B) स्मरणकौशलम्
(C) लेखनकौशलम् (D) श्रवणकौशलम्

58. उन्नीस (19) को संस्कृत में कहते हैं–
(A) नवदश (B) ऊनविंशतिः
(C) एकोनविंशतिः (D) उपर्युक्त सभी

59. ''किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या''–इसका तात्पर्य होगा–
(A) विद्या नौकरी देती है
(B) विद्या ज्ञान देती है
(C) विद्या क्या क्या नहीं देती अर्थात् सबकुछ देती है।
(D) विद्या सामाजिक बनाती है

60. 'तदनन्तरम्' शब्द का सन्धि विच्छेद होगा–
(A) तत्+अन्तरम् (B) तत्+अनन्तरम्
(C) तद+अन्तरम् (D) तदु+अनन्तरम्

61. 'ऊ' वर्ण का उच्चारणस्थान है–
(A) ओष्ठ (B) कण्ठ
(C) तालु (D) मूर्धा

62. एकवचन का रूप है–
(A) अस्मत् (B) त्वत्
(C) युष्मत् (D) अमी

63. पतञ्जलि के अनुसार व्याकरण का प्रयोजन नहीं है–
(A) ऊह (B) आगम
(C) लघु (D) दीर्घ

64. 'उदतीतरत्'–यहाँ लकार है–
(A) लुङ् (B) लृङ्
(C) लृट् (D) लिट्

65. 'कस्तूरिका-रेणु-रूषितः इव श्यामः, चन्दन–चर्चित–भालः' इन पंक्तियों में वर्णन है–
(A) गौरबटु का (B) श्यामबटु का
(C) योगिराज का (D) ब्रह्मचारीगुरु का

66. 'शिवराजविजयम्' का प्रारम्भ किसके वर्णन से होता है–
(A) योगिराजवर्णन से (B) सूर्यवर्णन से
(C) ब्रह्मचारीगुरुवर्णन से (D) शिवाजी के वर्णन से

67. 'न समयपरिरक्षणं क्षमं ते'–यहाँ छन्द है–
(A) पुष्पिताग्रा (B) इन्द्रवजा
(C) उपजाति (D) वंशस्थ

68. 'किरातार्जुनीयम्' इस पद में कौन सा प्रत्यय है–
(A) छ (B) घ
(C) फ (D) ढ

69. संस्कृत साहित्य में 'अलङ्कृतकाव्यशैली' तथा 'विचित्रमार्ग के जनक' के रूप में किस कवि का नाम उल्लेखनीय है–
(A) भवभूति (B) भास
(C) भर्तृहरि (D) भारवि

70. ''युधिष्ठिर भीम का संवाद'' तथा ''व्यास का आगमन'' किरातार्जुनीयम् के किस सर्ग में वर्णित है–
(A) सर्ग-2 (B) सर्ग-3
(C) सर्ग-5 (D) सर्ग-1

71. ''संजीवनौषधिरसो हृदि नु प्रसक्तः'' यह कथन किसका है–
(A) राम का (B) सीता का
(C) वासन्ती का (D) तमसा का

72. ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है–
(A) सीता का (B) वासन्ती का
(C) तमसा का (D) शरीर का

55. (C)	56. (D)	57. (B)	58. (D)	59. (C)	60. (B)	61. (A)	62. (B)	63. (D)	64. (A)
65. (B)	66. (B)	67. (A)	68. (A)	69. (D)	70. (A)	71. (A)	72. (A)		

73. शुद्ध शब्द है–
(A) श्रृतवान् (B) श्रृण्वन्
(C) श्रृत्वा (D) श्रृणोति

74. शुद्ध शब्द है–
(A) गृह्णन् (B) ग्रहीत्वा
(C) ग्रहीतवान् (D) उपर्युक्त सभी

75. 'रुद्' धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होगा–
(A) रुदति (B) रोदिति
(C) रोदति (D) रोदाति

76. शुद्ध रूप है–
(A) रोदन्ति (B) रोदामि
(C) रुदिमः (D) उपर्युक्त सभी

77. अशुद्ध रूप है–
(A) दोहति (B) दुहति
(C) दोहिष्यति (D) उपर्युक्त सभी

78. 'अच्' प्रत्याहार में आते हैं–
(A) सभी वर्ण (B) सभी व्यञ्जन
(C) सभी स्वर (D) इनमें से कोई नहीं

79. कालिदास किस रीति के कवि माने जाते हैं–
(A) वैदर्भीरीति (B) पाञ्चालीरीति
(C) गौडी रीति (D) इनमें से कोई नहीं

80. 'पुनर्वस्वृक्षः' में सन्धि है–
(A) वृद्धिसन्धि (B) अयादिसन्धि
(C) यण् सन्धि (D) गुणसन्धि

81. ''सुलभकोपो महर्षिः'' किसने किसको कहा–
(A) प्रियंवदा ने दुर्वासा को
(B) अनुसूया ने दुर्वासा को
(C) गौतमी ने कण्व को
(D) मेनका ने मारीच को

82. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वप्रथम कण्व का चित्रण किया गया है–
(A) प्रथम अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में
(C) चतुर्थ अङ्क में (D) इनमें से कोई भी नहीं

83. 'मा स्म प्रतीपं गमः' में 'प्रतीपम्' पद का क्या अर्थ है–
(A) प्रतिकूल (विपरीत) (B) अनुकूल
(C) आचरण (D) चरित्र

84. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक (माधव्य) का वर्णन प्राप्त होता है–
(A) द्वितीय पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में
(B) प्रथम एवं तृतीय अङ्क में
(C) द्वितीय एवं तृतीय अङ्क में
(D) द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में

85. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के भरतवाक्य में छन्द है–
(A) मालिनी (B) रुचिरा
(C) वंशस्थ (D) आर्या

86. ''अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्'' एषा सूक्तिः कुतः उद्धृता अस्ति–
(A) कादम्बरीकथामुखात्
(B) कादम्बरीशुकनासोपदेशात्
(C) कादम्बरी–उत्तरार्द्धभागात्
(D) कादम्बर्याः नास्ति

87. 'बाणस्तु पञ्चाननः' यह किसका कथन है–
(A) मंखक (B) श्रीचन्द्रदेव
(C) गोवर्द्धन (D) राजशेखर

88. 'आशीविषाः' पद का अर्थ है–
(A) आशीर्वाद (B) सर्प
(C) विष (D) रोष

89. 'धिगस्मान्, येऽद्यापि जीवामः, श्वसिमः, विचरामः आत्मन आर्यवंश्यांश्चाऽभिमन्यामहे' यह कथन किसका है–
(A) योगिराज का (B) ब्रह्मचारीगुरु का
(C) गौरसिंह का (D) श्यामबटु का

90. उत्तररामचरितम् में नदी के रूप में वर्णन नहीं है–
(A) तमसा का (B) मुरला का
(C) वासन्ती का (D) भागीरथी का

73. (D)	74. (A)	75. (B)	76. (C)	77. (D)	78. (C)	79. (A)	80. (C)	81. (A)	82. (C)
83. (A)	84. (A)	85. (B)	86. (B)	87. (B)	88. (B)	89. (B)	90. (C)		

91. उत्तररामचरितम् के अनुसार लव और कुश की कौन सी वर्षगाँठ मनायी जा रही है–
(A) दसवीं (B) बारहवीं
(C) छठवीं (D) नवमी

92. 'कुरङ्गः' पद का अर्थ है–
(A) मृग (B) पक्षी
(C) वनदेवी (D) वृक्ष

93. 'जतुकर्णी' नाम है–
(A) श्रीकण्ठ की माता का
(B) भवभूति की माँ का
(C) नीलकण्ठ की पत्नी का
(D) उपर्युक्त सभी

94. 'परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः' इसमें द्रौपदी किसकी दुर्दशा का वर्णन करती है–
(A) युधिष्ठिर की (B) दुर्योधन की
(C) वनेचर की (D) भीम की

95. ''आतपत्र'' किसकी उपाधि है–
(A) माघ की (B) श्रीहर्ष की
(C) भारवि की (D) सूर्य की

96. भर्तृहरि का सबसे प्रिय छन्द है–
(A) वसन्ततिलका (B) शिखरिणी
(C) शार्दूलविक्रीडित (D) द्रुतविलम्बित

97. नीतिशतक के मङ्गलाचरण में छन्द है–
(A) आर्या (B) उपजाति
(C) शालिनी (D) अनुष्टुप्

98. 'प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति' किसका कथन है–
(A) भर्तृहरि का (B) भर्तृमेण्ठ का
(C) भवभूति का (D) भारवि का

99. ''शुश्रूषस्व'' में लकार है–
(A) लट् (B) लङ्
(C) लोट् (D) विधिलिङ्

100. अन्तःस्थ वर्ण हैं–
(A) क् च् ट् त् प् (B) ञ् म् ङ् ण् न्
(C) श् ष् स् ह् (D) य् व् र् ल्

101. माहेश्वर सूत्रों में अन्तिमवर्ण की संज्ञा होती है–
(A) संयोगसंज्ञा (B) सहितासंज्ञा
(C) प्रगृह्यसंज्ञा (D) इत्संज्ञा

102. 'वयम्.......अधितिष्ठामः'–रिक्त स्थान की पूर्ति करें–
(A) आसने (B) आसनात्
(C) आसनम् (D) आसनेन

103. 'पिता............क्रुध्यति' रिक्तस्थान में समुचित विकल्प होगा–
(A) त्वाम् (B) तुभ्यम्
(C) तव (D) त्वया

104. शुद्ध पद है–
(A) उपरोक्तः (B) उपरुक्तः
(C) उपर्युक्तः (D) उपरियुक्तः

105. लेखनदृष्ट्या शुद्धं पदं किम्–
(A) परीच्छोपयोगी (B) परीक्षापयोगी
(C) परीक्षो उपयोगी (D) परीक्षोपयोगी

106. 'चन्द्रमस्' शब्द का प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप होगा–
(A) चन्द्रमसः (B) चन्द्रमा
(C) चन्द्रमाः (D) चन्द्रः

107. 'सिंहः+गर्जति'–इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(A) सिंहः गर्जति (B) सिंहो गर्जति
(C) सिंह गर्जति (D) सिंहर्गर्जति

108. किसमें सप्तमी विभक्ति नहीं है–
(A) ग्रामे (B) नगरे
(C) कवे (D) वने

109. ''भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) मेघदूतम् से (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) पञ्चतन्त्रम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

110. ''बुभुक्षितः किं न करोति पापम्'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) हितोपदेश से (B) नीतिशतकम् से
(C) पञ्चतन्त्रम् से (D) भगवद्गीता से

91. (B)	92. (A)	93. (D)	94. (D)	95. (C)	96. (C)	97. (D)	98. (A)	99. (C)	100. (D)
101. (D)	102. (C)	103. (B)	104. (C)	105. (D)	106. (C)	107. (B)	108. (C)	109. (B)	110. (C)

111. कौन सा समूह अन्य तीनों से पृथक् है–
(A) चत्वारो वेदाः, चत्वारो पुरुषार्थाः, चतुराश्रमाः
(B) पञ्चभूतानि, पञ्चवायवः, पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि
(C) षड्रिपवः, षड्-ऋतवः, षड्-कर्मेन्द्रियाणि
(D) नवग्रहाः, नवधा–भक्तिः, नवरसाः

112. 'अलकापुरी' किसकी राजधानी है–
(A) शिव की (B) यक्ष की
(C) मेघ की (D) कुबेर की

113. 'शर्मिष्ठा' किसकी पुत्री है–
(A) वृषपर्वा की (B) शुक्राचार्य की
(C) पुरूरवा की (D) ययाति की

114. दसों लकारों में भूतकाल के अर्थ में कितने लकार प्रयुक्त होते हैं–
(A) लिट्, लङ्, लुङ्-तीन (B) लिट्, लुट्, लृट्-तीन
(C) लङ्, लुङ्-दो (D) लृट्, लृङ्-दो

115. 'रामं विना, रामेण विना, रामात् विना'–इनमें से कौन सा प्रयोग शुद्ध है–
(A) रामं विना (B) रामात् विना
(C) सभी प्रयोग (D) रामेण विना

116. कालिदास किस राजा के सभाकवि (राजकवि) माने जाते हैं–
(A) अशोक (B) हर्षवर्धन
(C) समुद्रगुप्त (D) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

117. पहली संस्कृतफिल्म का नाम है–
(A) आदिशङ्कराचार्य (B) विवेकानन्द
(C) रामायण (D) महाभारत

118. संस्कृत सहित सभी भारतीय भाषाओं का निन्दक और अंग्रेजी शिक्षा का प्रचारक कौन था–
(A) लार्ड विलियम बैंटिक (B) लार्ड मैकाले
(C) लार्ड डलहौजी (D) कुतुबुद्दीन ऐबक

119. संस्कृत नाटकों में सर्वाधिक सुप्रसिद्ध नाटक है–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) मुद्राराक्षसम्

120. नाटक से सम्बन्धित नहीं है–
(A) पञ्चसन्धियाँ (B) पञ्च-अर्थप्रकृतियाँ
(C) पञ्चकार्यावस्थायें (D) पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ

121. रूपक का भेद नहीं है–
(A) ओज (B) वीथी
(C) भाण (D) नाटक

122. ''रसनिष्पत्तिवाद'' के आचार्यों में गणना नहीं होती है–
(A) भट्टलोल्लट की (B) भट्टनायक की
(C) भामह की (D) शङ्कुक की

123. '96' (छियानवे) को संस्कृत में क्या कहेंगे–
(A) षड्नवतिः (B) षण्णवतिः
(C) षोढानवति (D) षष्ठनवतिः

124. काव्य की त्रिविध शब्दशक्तियों में गणना नहीं होती है–
(A) प्रसाद (B) अभिधा
(C) व्यञ्जना (D) लक्षणा

125. 'पञ्चाङ्गव्याकरण' के अन्तर्गत नहीं गिना जाता है–
(A) सूत्रपाठ (B) गणपाठ
(C) धातुपाठ (D) संज्ञापाठ

111. (C) **112.** (D) **113.** (A) **114.** (A) **115.** (C) **116.** (D) **117.** (A) **118.** (B) **119.** (A) **120.** (D)
121. (A) **122.** (C) **123.** (B) **124.** (A) **125.** (D)

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयनपरीक्षा (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र– 6

1. द्विगुसमास किस वचन में होता है–
(A) एकवचन में (B) द्विवचन में
(C) बहुवचन में (D) सभी वचनों में

2. प्राणी के अङ्गवाची शब्दों के साथ समास होने पर किस वचन का प्रयोग होता है–
(A) एकवचन (B) द्विवचन
(C) बहुवचन (D) कभी द्विवचन कभी बहुवचन

3. कौन सा समास नित्य नपुंसकलिङ्ग में होता है–
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव

4. शुद्ध पद है–
(A) द्विरात्रम् (B) त्रिरात्रम्
(C) सर्वरात्रः (D) उपर्युक्त सभी

5. देवतावाचक 'सूर्या' पद में कौन सा स्त्रीप्रत्यय है–
(A) चाप् (B) टाप्
(C) डाप् (D) उपर्युक्त सभी

6. 'आचार्यस्य पत्नी' इस अर्थ में शुद्ध रूप होगा–
(A) आचार्या (B) आचार्यानी
(C) आचार्यी (D) आचार्ययानी

7. ''गोपी-नारी-कुमारी'' में क्रमशः किन स्त्रीप्रत्ययों का विधान किया गया है–
(A) ङीन्-ङीष्-ङीप् (B) ङीप्-ङीष्-ङीन्
(C) ङीन्-ङीप्-ङीष् (D) ङीष्-ङीन्-ङीप्

8. 'इत्संज्ञा' का निषेध करने वाला सूत्र है–
(A) नाऽज्झलौ (B) न विभक्तौ तुस्माः
(C) नेयङुवङ्स्थानावस्त्री (D) नः क्ये

9. ''आहुः'' किस धातु और किस वचन का रूप है–
(A) ब्रू धातु एकवचन में
(B) ब्रू धातु बहुवचन में
(C) 'आह' धातु एकवचन
(D) आ+हु धातु एकवचन

10. 'धोक्ष्यति' रूप किस धातु एवं किस लकार का है–
(A) धुक्ष् धातु लट् लकार
(B) धुक्ष् धातु लृट् लकार
(C) दुह् धातु लृट्लकार
(D) धोक्षृ धातु लट् लकार

11. 'हन्' धातु का लोट्लकार, प्र०पु०, बहुवचन में रूप होगा–
(A) हनन्तु (B) घनन्तु
(C) हनयन्तु (D) घ्नन्तु

12. 'दा' धातु विधिलिङ् लकार का रूप नहीं है–
(A) दद्यात् (B) दद्यात
(C) ददाम (D) दद्याम

13. एकवचनान्त रूप है–
(A) युष्मत् (B) त्वत्
(C) अस्मत् (D) उपर्युक्त सभी

14. एकवचनान्त रूप नहीं है–
(A) लक्ष्मीः (B) चन्द्रमाः
(C) कति (D) श्रीः

15. 'भूपति' का चतुर्थी एकवचन में रूप होगा–
(A) भूपत्ये (B) भूपतये
(C) भूपत्यै (D) भूपतयै

16. 'चौदहवाँ' शब्द का क्रमवाची रूप क्या होगा–
(A) चतुर्दश (B) चतुर्दशः
(C) चतुर्दशतमः (D) चतुर्दशतमम्

17. 'चार चतुर चञ्चल चालकों को बुलाओ' इसका संस्कृत में शुद्ध अनुवाद होगा–
(A) चत्वारः चतुरं चञ्चलं चालकं आह्वय
(B) चतुरः चतुरान् चञ्चलान् चालकान् आह्वयतु
(C) चत्वारः चतूरान् चञ्चलान् चालकान् आह्वय
(D) चत्वारि चतुर-चञ्चल-चालकान् आह्वयतु

18. 'वक्रोक्ति' को आचार्य विश्वनाथ ने माना है–
(A) गुण (B) रीति
(C) छन्द (D) अलङ्कार

1. (A)	**2. (A)**	**3. (D)**	**4. (D)**	**5. (A)**	**6. (B)**	**7. (D)**	**8. (B)**	**9. (B)**	**10. (C)**
11. (D)	**12. (C)**	**13. (B)**	**14. (C)**	**15. (B)**	**16. (B)**	**17. (B)**	**18. (D)**		

19. `66' को संस्कृत की संख्या में क्या कहेंगे–
(A) षटषष्टिः (B) षडषष्टिः
(C) षट्षष्टिः (D) षष्ठषष्टिः

20. 'सः त्वां पश्यति'–इसका कर्मवाच्य होगा–
(A) तेन अहं दृश्यते (B) तेन मां दृश्ये
(C) तेन अहं दृश्यसे (D) तेन त्वं दृश्यसे

21. उपध्मानीय वर्णों का उच्चारणस्थान है–
(A) तालु (B) जिह्वामूल
(C) ओष्ठ (D) नासिका

22. वार्तिककार कात्यायन किन वर्णों की परस्पर 'सवर्णसंज्ञा' का विधान करते हैं–
(A) ए-ऐ (B) ओ-औ
(C) ऋ-ॠ (D) ऋ-ऌ

23. 'घ' संज्ञक प्रत्यय हैं–
(A) तरप्-तमप् (B) शतृ-शानच्
(C) क्त-क्तवतु (D) तव्यत्-अनीयर्

24. 'अपादान' संज्ञा विधायक सूत्र कितने हैं–
(A) 10 (B) 08
(C) 06 (D) 05

25. 'प्राक्'-इस उपपद के योग में किस विभक्ति का प्रयोग होगा–
(A) पञ्चमी (B) षष्ठी
(C) सप्तमी (D) तृतीया

26. किस सूत्र द्वारा विकल्प से षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियों का प्रयोग होता है–
(A) यतश्च निर्धारणम् (B) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(C) उभयप्राप्तौ कर्मणि (D) नक्षत्रे च लुपि

27. 'मुक्तये हरिं भजति' यहाँ 'मुक्तये' में किस वार्तिक से चतुर्थी का विधान किया गया है–
(A) हितयोगे च (B) उत्पातेन ज्ञापिते च
(C) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या (D) क्लृपि सम्पद्यमाने च

28. 'शी' धातु का शुद्ध तुमुनन्तरूप का चयन करें–
(A) शयितुम् (B) शेतुम्
(C) शयतुम् (D) शीतुम्

29. अल्पप्राण और महाप्राण वर्णों की क्रमशः संख्या है–
(A) 14-19 (B) 18-20
(C) 19-14 (D) 20-13

30. महाकाव्यकार, नाटककार, खण्डकाव्यकार के रूप में संस्कृत साहित्य का प्रसिद्ध महाकवि कौन है–
(A) भवभूति (B) भारवि
(C) वाल्मीकि (D) कालिदास

31. महाकविकालिदास के विषय में असत्य कथन है–
(A) कालिदास सिंहलनरेश कवि कुमारदास के मित्र थे।
(B) विक्रमादित्य के नवरत्नों में एक थे
(C) जन्म से ब्राह्मण तथा धार्मिक दृष्टि से शैव थे
(D) बाल्यकाल में विद्वान् बाद में मूर्ख हो गये

32. षष्ठ अङ्क में राजा दुष्यन्त के शकुन्तलाजन्य वियोग को छिपकर कौन सुनती है–
(A) मेनका (B) सानुमती
(C) अदिति (D) वेत्रवती

33. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के केवल एक अङ्क में किस पात्र का चित्रण है–
(A) गौतमी (B) विदूषक
(C) कण्व (D) शार्ङ्गरव

34. ''भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः'' यह कथन किसका है–
(A) कण्व का (B) दुष्यन्त का
(C) प्रियंवदा का (D) शार्ङ्गरव का

35. 'परिहासविजल्पितं सखे! परमार्थेन न गृह्यतां वचः' यह कथन किसने किससे कहा–
(A) राजा दुष्यन्त-शकुन्तला से
(B) विदूषक-राजा दुष्यन्त से
(C) कण्व-शार्ङ्गरव से
(D) राजा दुष्यन्त-विदूषक से

36. 'पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः' इस पंक्ति में रस है–
(A) भयानकरस (B) शृङ्गाररस
(C) करुणरस (D) रौद्ररस

19. (C)	**20. (D)**	**21. (C)**	**22. (D)**	**23. (A)**	**24. (B)**	**25. (A)**	**26. (A)**	**27. (C)**	**28. (A)**
29. (C)	**30. (D)**	**31. (D)**	**32. (B)**	**33. (C)**	**34. (A)**	**35. (D)**	**36. (C)**		

37. किस कवि को 'भारत का शेक्सपियर' कहा जाता है–
(A) वाल्मीकि को (B) कालिदास को
(C) व्यास को (D) बाणभट्ट को

38. 'यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्' इसमें छन्द है–
(A) वसन्ततिलका (B) इन्द्रवज्रा
(C) वंशस्थ (D) मालिनी

39. 'सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते'–यहाँ 'पुत्रकृतकः' में कौन सा प्रत्यय है–
(A) कन् प्रत्यय (B) क्वसु प्रत्यय
(C) क्यङ् प्रत्यय (D) क्यच् प्रत्यय

40. 'भवत्युत्सवः' पद का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) भवतु+उत्सवः (B) भवति+उत्सवः
(C) भवत+उत्सवः (D) भवती+ऊत्सवः

41. 'सर्वैरनुज्ञायताम्' में वाच्य है–
(A) कर्मवाच्य (B) कर्तृवाच्य
(C) भाववाच्य (D) उपर्युक्त सभी

42. 'चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति' यहाँ 'चकासति' क्रियापद में कौन सी धातु है–
(A) चक् (B) चकासृ धातु
(C) कास् धातु (D) चकस् धातु

43. 'प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः'-यह पद्यांश किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) नीतिशतकम् से (B) उत्तररामचरितम् से
(C) किरातार्जुनीयम् से (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

44. शुकनासोपदेश के अनुसार लक्ष्मी में चञ्चलता का गुण कहाँ से आया–
(A) पारिजातपल्लवों से (B) चन्द्रमा से
(C) उच्चैःश्रवा घोड़े से (D) कौस्तुभमणि से

45. 'न शीलं पश्यति, न वैदग्ध्यं गणयति, न श्रुतमाकर्णयति, न त्यागमाद्रियते'' यहाँ किसका वर्णन है–
(A) गौरसिंह का (B) यवनयुवक का
(C) लक्ष्मी का (D) ब्रह्मचारिगुरु का

46. 'दुष्टपिशाचीव दर्शितानेकपुरुषोच्छाया' यहाँ 'दुष्टपिशाची' पद से किसका सङ्केत है–
(A) लक्ष्मी का (B) चाण्डालकन्या का
(C) वसन्तसेना का (D) पिशाचिनी का

47. 'यथा यथा चेयं चपला दीप्यते, तथा तथा दीपशिखेव कज्जलमलिनमेव कर्म केवलमुद्वमति' यहाँ अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उत्प्रेक्षा
(C) उपमा (D) दीपक

48. ''ग्रहैरिव गृह्यन्ते, भूतैरिवाभिभूयन्ते मन्त्रैरिवावेश्यन्ते''– इन पंक्तियों में कौन सा अलङ्कार है–
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) अनन्वय (D) रूपक

''कामं भवान् प्रकृत्यैव धीरः, पित्रा च महता प्रयत्नेन समारोपितसंस्कारः, तरलहृदयमप्रतिबुद्धिञ्च मदयन्ति धनानि, तथापि भवद्गुणसन्तोषो मामेवं मुखरीकृतवान्।''
उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उतर देवें–

49. 'भवान्' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) तारापीड का (B) योगिराज का
(C) गौरसिंह का (D) चन्द्रापीड का

50. 'पित्रा' पद से किसका बोध होता है–
(A) ब्रह्मचारीगुरु का (B) योगिराज का
(C) शिवाजी का (D) तारापीड का

51. यहाँ 'माम्' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) शुकनास के लिए (B) योगिराज के लिए
(C) ब्रह्मचारीगुरु के लिए (D) चन्द्रापीड के लिए

52. प्रस्तुत गद्यांश किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है–
(A) कादम्बरी कथामुख से
(B) शिवराजविजयम् से
(C) कादम्बरी शुकनासोपदेश से
(D) शुकनास-विजयम् से

37. (B)	38. (A)	39. (A)	40. (B)	41. (C)	42. (B)	43. (C)	44. (C)	45. (C)	46. (A)
47. (C)	48. (A)	49. (D)	50. (D)	51. (A)	52. (C)				

53. 'अरे रे वाचाल! ह्यः रात्रौ युष्मत्कुटीरे रुदतीं समायातां ब्राह्मणतनयां सपदि प्रयच्छथ' यह कथन किसका है–
(A) गौरसिंह का (B) श्यामसिंह का
(C) ब्रह्मचारिगुरु का (D) यवनयुवक का

54. 'कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है–
(A) शुकनासोपदेश से (B) शिवराजविजयम् से
(C) कादम्बरी कथामुख से (D) शिवाजीचरितम् से

55. दक्षिण प्रदेश के शासक के रूप में औरङ्गजेब द्वारा कौन भेजा गया था–
(A) शाइस्ता खाँ (B) बीजापुर का नवाब
(C) यवनयुवक (D) मानसिंह

56. 'तपांसि अतापिषत'' यहाँ 'अतापिषत' में कौन सा लकार है–
(A) लङ् (B) लुङ्
(C) लृङ् (D) लिङ्

57. ''भगवन्! धैर्येण, प्रसादेन, प्रतापेन, तेजसा, वीर्येण, विक्रमेण, शान्त्या, श्रिया, विद्यया च सममेव परलोकं सनाथितवति....." इन पंक्तियों में किसके गुणों का वर्णन किया गया है–
(A) योगिराज के (B) चन्द्रापीड के
(C) विक्रमादित्य के (D) शिवाजी के

58. ''किमधिकं कथयामो भारतवर्षमधुना अन्यादृशमेव सम्पन्नमस्ति'' यह कथन किसका है–
(A) योगिराज का (B) ब्रह्मचारिगुरु का
(C) गौरसिंह का (D) यवनयुवक का

59. ''भवादृशैः न ज्ञायते कालवेगः'' यहाँ 'भवादृशैः' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) ब्रह्मचारीगुरु का (B) गौरसिंह का
(C) योगिराज का (D) शिवाजी का

60. 'नेदीयसि' पद का क्या अर्थ है–
(A) अतिसमीप (B) अतिदूर
(C) नदी किनारे (D) इसे न दो

61. 'अपससार' की व्याकरणात्मक टिप्पणी बताओ–
(A) अप + सृज् + लङ् (B) अप + सृ + लिट्
(C) अप + सृज् + लुङ् (D) अप + सृ + लृङ्

62. ''मन्दिराणि मन्दुरीक्रियन्ते'' यहाँ 'मन्दुरी' पद का क्या अर्थ है–
(A) सुन्दरी (B) घुड़साल
(C) नष्ट करना (D) ऊँचा करना

63. भवभूति मूलतः किस रीति के कवि माने जाते हैं–
(A) पाञ्चाली (B) वैदर्भी
(C) गौडी (D) उपर्युक्त सभी

64. किस नाटक में 12 वर्ष की घटनाओं का वर्णन है–
(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) मृच्छकटिकम्

65. उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क का नाम है–
(A) छाया अङ्क (B) गर्भाङ्क
(C) चित्रदर्शन अङ्क (D) पञ्चवटीप्रवेश अङ्क

66. ''अस्मिन्नेव लतागृहे त्वमभवस्तन्मार्गदत्तेक्षणः'' इसका वक्ता कौन है–
(A) दुष्यन्त (B) कण्व
(C) शार्ङ्गरव (D) वासन्ती

67. 'पौलस्त्यः' पद किसका वाचक है–
(A) रावण का (B) वाल्मीकि का
(C) अगस्त्य का (D) राम का

68. ''संजीवनौषधिरसो हृदि नु प्रसक्तः'' यह पंक्ति किस कवि से सम्बद्ध है–
(A) कालिदास से (B) भवभूति से
(C) बाणभट्ट से (D) अम्बिकादत्तव्यास से

69. ''यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे''–इस पंक्ति में छन्द है–
(A) वसन्ततिलका (B) इन्द्रवज्रा
(C) उपेन्द्रवज्रा (D) वंशस्थ

70. 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि के पिता का नाम है–
(A) दामोदर (B) नारायणस्वामी
(C) आतपत्र (D) विष्णुवर्धन

53. (D)	54. (B)	55. (A)	56. (B)	57. (C)	58. (B)	59. (C)	60. (A)	61. (B)	62. (B)
63. (C)	64. (A)	65. (C)	66. (D)	67. (A)	68. (B)	69. (A)	70. (B)		

71. किस महाकवि के साथ भारवि का पारिवारिक सम्बन्ध माना जाता है–
(A) बाणभट्ट (B) दण्डी
(C) सुबन्धु (D) मम्मट

72. ''विशङ्कमानो भवतः पराभवम्'' यहाँ 'विशङ्कमानः' पदमें प्रत्यय है–
(A) शतृ (B) शानच्
(C) मतुप् (D) वतुप्

73. 'इमामहं वेद न तावकीं धियम्' यहाँ 'अहम्' पदसे किसका सङ्केत है–
(A) वनेचर (B) द्रौपदी
(C) दुर्योधन (D) युधिष्ठिर

74. 'लक्ष्मी' पदाङ्क महाकाव्य कहा जाता है–
(A) किरातार्जुनीयम् को (B) शिशुपालवधम् को
(C) नैषधीयचरितम् को (D) रघुवंशमहाकाव्यम् को

75. ''श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्''–यह मङ्गलाचरणात्मक पद्यांश किस ग्रन्थ का है–
(A) किरातार्जुनीयम् का (B) नैषधीयचरितम् का
(C) शिशुपालवधम् का (D) रघुवंशम् का

76. कवि कुमारदास की रचना है–
(A) जानकीजीवनम् (B) सीताचरितम्
(C) जानकीहरणम् (D) जाम्बवतीविजयम्

77. ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितम्'' यहाँ 'प्रमदाजन' से किसका बोध हो रहा है–
(A) वनेचर का (B) द्रौपदी का
(C) क्षुद्रजनों का (D) कौरवों का

78. ''तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया'' यहाँ 'जिह्मः' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) दुर्योधन के लिए (B) दुःशासन के लिए
(C) धृतराष्ट्र के लिए (D) वनेचर के लिए

79. ''शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः'' इसका वक्ता कौन है–
(A) वनेचर (B) द्रौपदी
(C) युधिष्ठिर (D) दुर्योधन

80. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में किस छन्द का प्रयोग नही है–
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) इन्द्रवज्रा (D) पुष्पिताग्रा

81. सर्वाधिक प्राचीन कवि है–
(A) माघ (B) भारवि
(C) भवभूति (D) श्रीहर्ष (नैषधकार)

82. किस कवि ने अपने जीवन के विषय में अपने ग्रन्थ में स्वयं लिखा है–
(A) भारवि (B) माघ
(C) कालिदास (D) बाणभट्ट

83. गन्धर्वराज चित्ररथ की पुत्री है–
(A) विलासवती (B) महाश्वेता
(C) कादम्बरी (D) चाण्डालकन्या

84. किस ग्रन्थ की रचना पिता-पुत्र दोनों ने की–
(A) दशकुमारचरितम् की (B) काव्यप्रकाश की
(C) कादम्बरीकथा की (D) वासवदत्ता की

85. 'प्रावृट्' पद का क्या अर्थ है–
(A) शरदृऋतु (B) वर्षा ऋतु
(C) शिशिरऋतु (D) ग्रीष्म ऋतु

86. ''मनोरमाकुचमर्दनम्'' इस ग्रन्थ के रचयिता हैं–
(A) भट्टोजिदीक्षित (B) नागेशभट्ट
(C) पण्डितराज जगन्नाथ (D) वरदराज

87. 'पितेव' में सन्धि है–
(A) यण् (B) पूर्वरूप
(C) गुण (D) पररूप

88. शुद्ध क्रियापद का चयन करें–
(A) रोदन्ति (B) रोदामि
(C) रोदामः (D) रोदिमि

89. अशुद्ध पद का चयन करें–
(A) दधि (B) श्मश्रु
(C) जानु (D) तालुः

90. अशुद्ध पद का चयन करें–
(A) गृह्णन् (B) ग्रहीतुम्
(C) गृहीतवान् (D) गृहीतुम्

71. (B)	72. (B)	73. (B)	74. (A)	75. (C)	76. (C)	77. (B)	78. (A)	79. (B)	80. (C)
81. (B)	82. (D)	83. (C)	84. (C)	85. (B)	86. (C)	87. (C)	88. (D)	89. (D)	90. (D)

91. शुद्ध पद का चयन करें–
(A) सहोदरी (B) सहोदरा
(C) भयङ्करी (D) उपर्युक्त सभी

92. महाभाष्य में पतञ्जलि का प्रथम वाक्य है–
(A) अथ शब्दानुशासनम् (B) अथातो ब्रह्मजिज्ञासा
(C) वृद्धिरादैच् (D) अथातो धर्मजिज्ञासा

93. चीनी यात्री इत्सिंग भर्तृहरि को क्या मानता है–
(A) बौद्ध (B) जैन
(C) शैव (D) वैष्णव

94. एक अन्य मतानुसार भर्तृहरि के गुरु का नाम माना जाता है–
(A) दिङ्नाग (B) वसुराज
(C) पाणिनि (D) हेमचन्द्र

95. भर्तृहरि के 'वाक्यपदीयम्' में कितने काण्ड है–
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 6

96. 'संरक्ताभिस्त्रिपुरविजयो गीयते किन्नरीभिः' में कौन सा वाच्य है–
(A) कर्मवाच्य (B) भाववाच्य
(C) कर्तृवाच्य (D) इनमें से कोई नहीं

97. 'अपाम्' में कौन सी विभक्ति है–
(A) द्वितीया (B) षष्ठी
(C) पञ्चमी (D) प्रथमा

98. ''गच्छन्तीनां रमणवसतिं योषितां तत्र नक्तम्''– यहाँ किस नगरी की रमणियों का वर्णन है–
(A) अलकापुरी की (B) दशार्णदेश की
(C) उज्जयिनी की (D) मालवादेश की

99. ''सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः''–यहाँ 'भवन्तम्' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) यक्ष के लिए (B) कुबेर के लिए
(C) शिव के लिए (D) मेघ के लिए

100. 'सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य' यह किसका किससे निवेदन है–
(A) यक्ष का कुबेर से (B) यक्षिणी का यक्ष से
(C) यक्ष का मेघ से (D) मेघ का यक्ष से

101. भर्तृहरि के अनुसार जो न दान देता है और न उपभोग करता है, उस धन की क्या गति होती है–
(A) नाश (B) भोग
(C) दुगुना (D) बचत

102. भर्तृहरि के अनुसार शास्त्रविहित औषधि किसकी नहीं होती है–
(A) राजा की (B) विद्वानों की
(C) मूर्ख की (D) संस्कृतज्ञों की

103. काश्मीरी लेखकों में सर्वश्रेष्ठ कौन माने जाते हैं–
(A) कल्हण (B) बिल्हण
(C) जल्हण (D) अभिनवगुप्त

104. निम्न में से किसकी ''सार्वधातुक संज्ञा'' होती है–
(A) तिङ्-शित् (B) तिङ्-कृत्
(C) तिङ्-सुप् (D) तिङ्-तद्धित

105. राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला के विरह में किस उत्सव के मनाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था–
(A) वसन्तोत्सव (B) शरदोत्सव
(C) वनोत्सव (D) ग्रीष्मोत्सव

106. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में राजा दुष्यन्त की दाहिनी भुजा फड़कने का प्रसङ्ग कितनी बार आया है–
(A) एक बार (B) दो बार
(C) तीन बार (D) चार बार

107. कौन सा युग्म अशुद्ध है–
(A) एभ्यः-एनाम् (B) इमौ-एनौ
(C) अनेन-एनेन (D) इमम्-एनम्

108. दाराशिकोह ने उपनिषदों का अनुवाद किस भाषा में करवाया–
(A) हिन्दी में (B) संस्कृत में
(C) फारसी में (D) उर्दू में

109. कौन सा वाक्य शुद्ध है–
(A) यज्ञस्य अनु देवः वर्षति (B) यज्ञमनु देवः वर्षति
(C) यज्ञम् मनु देवः वर्षति (D) यज्ञेण अनु देवः वर्षति

110. जो देश वर्षा पर निर्भर नहीं रहते हैं, उसे कहा जाता है–
(A) देवमातृक (B) अदेवमातृक
(C) वर्षामातृक (D) देशमातृक

91. (B)	92. (A)	93. (A)	94. (B)	95. (A)	96. (A)	97. (B)	98. (C)	99. (D)	100. (C)
101. (A)	102. (C)	103. (D)	104. (A)	105. (A)	106. (B)	107. (A)	108. (C)	109. (B)	110. (B)

111. वनवासकाल में कठोर भूमि में कौन सोते हैं–
(A) भीम-अर्जुन (B) युधिष्ठिर-द्रौपदी
(C) वनेचर-युधिष्ठिर (D) नकुल-सहदेव

112. निम्नलिखित में से सर्वाधिक प्राचीन माने जाते हैं–
(A) बाणभट्ट (B) त्रिविक्रमभट्ट
(C) नागेशभट्ट (D) अन्नंभट्ट

113. सर्वाधिक अर्वाचीन कवि माने जाते हैं–
(A) भारवि (B) भर्तृहरि
(C) भवभूति (D) भोज

114. 'वाग्देवतावतार' किसकी उपाधि है–
(A) मयूरभट्ट (B) मम्मट
(C) बाणभट्ट (D) माघ

115. संस्कृत कवयित्रियों में सर्वाधिक अर्वाचीन कवयित्री हैं–
(A) गङ्गादेवी
(B) तिरुमलाम्बा
(C) रामभद्राम्बा
(D) पण्डिता क्षमाराव

116. 'अनीकिनी' पद का क्या अर्थ है–
(A) स्वर्ग (B) सेना
(C) वाटिका (D) आश्रम

117. 'प्रक्ष्यति' रूप किस धातु का है–
(A) प्रच्छ् (B) पृच्छ्
(C) पृक्ष्य (D) प्रछ

118. द्वौ वा त्रयो वा = 'द्वित्राः' पद में समास है–
(A) द्वन्द्व (B) बहुव्रीहि
(C) तत्पुरुष (D) द्विगु

119. अव्ययपद नहीं है–
(A) गत्वा (B) द्रष्टुम्
(C) उपकृष्णम् (D) मित्रम्

120. माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य हैं–
(A) नागरिकता की भावना का विकास
(B) जीविकोपार्जन की क्षमता का विकास
(C) व्यक्तित्व एवं नेतृत्वक्षमता का विकास
(D) उपर्युक्त सभी

121. चतुर्दश विद्याओं के अन्तर्गत नहीं गिना जाता है–
(A) चारों वेद
(B) छः वेदाङ्ग
(C) पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र
(D) इनमें से कोई नहीं

122. किस महान् भारतीय शिक्षाशास्त्री का सम्बन्ध इलाहाबाद एवं काशी दोनों स्थानों से रहा है–
(A) स्वामी दयानन्द
(B) स्वामी विवेकानन्द
(C) महामना मदनमोहन मालवीय
(D) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

123. भाषा शिक्षण के कितने कौशल (skill) माने गये है–
(A) 5 (B) 4
(C) 3 (D) 6

**124. अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति सः पण्डितः।
इस प्रहेलिका का उपयुक्त उत्तर होगा–**
(A) नारियल (B) पत्रम्
(C) यात्री (D) विद्वान्

125. कौन सा स्त्रीवाचक पद नित्य पुंलिङ्ग एवं बहुवचन है–
(A) आपः (B) वर्षाः
(C) दाराः (D) प्राणाः

अतिरिक्त प्रश्न

126. 'संस्कृतगङ्गा' का उद्देश्य नहीं है–
(A) संस्कृत के सुयोग्य शिक्षक तैयार करना।
(B) संस्कृत के भाषिक स्वरूप का जनजन में प्रचार करना।
(C) संस्कृतज्ञों एवं संस्कृतप्रेमियों के संघटन द्वारा संस्कृत, संस्कृति एवं भारतीय संस्कारों का वैश्विक प्रचार प्रसार करना
(D) कोचिंग के द्वारा अपना प्रचार प्रसार करना।

**111. (D) 112. (A) 113. (D) 114. (B) 115. (D) 116. (B) 117. (A) 118. (B) 119. (D) 120. (D)
121. (D) 122. (C) 123. (B) 124. (B) 125. (C) 126. (D)**

127. यदि आपको भारत का प्रधानमन्त्री बना दिया जाए तो आप संस्कृत के लिए क्या करना चाहेंगे।
(A) सम्पूर्ण भारत में संस्कृत शिक्षा को अनिवार्य करना
(B) संस्कृत की दिशा में नये रोजगार के अवसर उत्पन्न करना
(C) संस्कृत बालीवुड का निर्माण करना
(D) उपर्युक्त सभी

128. संस्कृतगङ्गा में कक्षारम्भ के समय कौन सी प्रार्थना होती है–
(A) वह शक्ति हमें दो दयानिधे! कर्त्तव्यमार्ग पर डट जावें।
(B) ऐसी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो न।
(C) प्रभोऽहं सदा सत्यवादी भवेयम्
(D) या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....।

129. संस्कृत भाषा के सुयोग्य शिक्षक बनने हेतु अनिवार्य योग्यता होनी चाहिए–
(A) धाराप्रवाह संस्कृत-सम्भाषण
(B) शुद्ध एवं सुस्पष्ट संस्कृत लेखन एवं संस्कृतोच्चारण
(C) संस्कृतशास्त्रों की जानकारी
(D) उपर्युक्त सभी

130. 'संस्कृतगङ्गा' का प्रधान कार्यालय कहाँ स्थित है–
(A) काशी के राजघाट में
(B) नयी दिल्ली के करोलबाग में
(C) प्रयागराज के सङ्गम तट में
(D) अयोध्या के सरयू तट में

127. (D) 128. (C) 129. (D) 130. (C)

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयनपरीक्षा (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र– 7

1. ''अनार्यः परदारव्यवहारः'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है-
   (A) मालविकाग्निमित्रम् से (B) विक्रमोर्वशीयम् से
   (C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (D) उत्तररामचरितम् से
2. ''आशीरन्या न ते योग्या पौलोमी सदृशी भव'' यहाँ 'पौलोमी' पद का अर्थ है-
   (A) शकुन्तला (B) इन्द्राणी
   (C) सीता (D) वसन्तसेना
3. ''अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः'' इस पंक्ति में अलङ्कार है-
   (A) उपमा (B) रूपक
   (C) उत्प्रेक्षा (D) विभावना
4. शकुन्तला की लताबहिन वनज्योत्स्ना का विवाह किसके साथ हुआ-
   (A) पीपल वृक्ष के साथ (B) आम्रवृक्ष के साथ
   (C) बरगद वृक्ष के साथ (D) वनदेवता के साथ
5. शकुन्तला 'गर्भमन्थरा' एवं 'अनघप्रसवा' आदि शब्दों का प्रयोग किसके लिए करती है-
   (A) प्रियंवदा के लिए (B) अनसूया के लिए
   (C) वनज्योत्स्ना के लिए (D) मृगी के लिए
6. चोटिल मृग के मुख में शकुन्तला किसका तेल लगाती है-
   (A) ऑवले का (B) नारियल का
   (C) इङ्गुदी का (D) बादाम का
7. ''मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति'' यहाँ 'ते' पद में विभक्ति एवं वचन है-
   (A) प्रथमा बहुवचन (B) प्रथमा द्विवचन
   (C) षष्ठी एकवचन (D) उपर्युक्त सभी
8. ''शुश्रूषष्व गुरून्'' यहाँ 'शुश्रूषष्व' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी-
   (A) शुश्रू+लोट्+प्र.पु.एक. (B) श्रु+सन्+लोट् म.पु.एक.
   (C) श्रू+लोट्+म.पु.द्विव. (D) सेव्+लोट्+म.पु.बहु.
9. 'बुद्धि' का पर्यायवाची पद नही है-
   (A) मनीषा (B) शेमुषी
   (C) धिषणा (D) सुकृतिः
10. 'धीमताम्' में प्रत्यय है-
    (A) मतुप् (B) वतुप्
    (C) तल् (D) टाप्
11. ''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' इस पंक्ति में छन्द है-
    (A) हरिणी (B) शार्दूलविक्रीडितम्
    (C) मन्दाक्रान्ता (D) शिखरिणी
12. 'कविताकाननकेसरी' इस उपाधि से आलोचकों ने किस कवि को सम्बोधित किया-
    (A) माघ को (B) भारवि को
    (C) बाण को (D) दण्डी को
13. 'प्रसन्नगम्भीरपदासरस्वती' यह किस कवि की भाषा शैली की विशेषता रही है-
    (A) भारवि की (B) माघ की
    (C) कालिदास की (D) अम्बिकादत्तव्यास की
14. ''सुदुर्लभा सर्वमनोरमा गिरः'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है-
    (A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) उत्तररामचरितम् से
    (C) किरातार्जुनीयम् से (D) शिशुपालवधम् से
15. 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्' यहाँ 'श्रियः' पद में प्रकृति-प्रत्यय है-
    (A) श्रिञ् + क्विप् + षष्ठी (B) श्रिञ् + क्विप् + द्वितीया
    (C) श्रिय् + कि + प्रथमा (D) श्री + क्तिन् + द्वितीया
16. 'निवेदयिष्यतः' पद में प्रत्यय है-
    (A) शतृ (B) शानच्
    (C) ष्यञ् (D) ष्वुन्
17. ''तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया'' यहाँ 'अवेदि' पद में लकार है-
    (A) कर्मणि लुङ् (B) कर्तरि लङ्
    (C) भावे लङ् (D) इनमें से कोई नहीं

1. (C)	2. (B)	3. (C)	4. (B)	5. (D)	6. (C)	7. (C)	8. (B)	9. (D)	10. (A)
11. (A)	12. (C)	13. (A)	14. (C)	15. (A)	16. (A)	17. (A)			

18. ''नक्तं च दिवा च'' इस समासविग्रह से सामासिक पद होगा-
(A) नक्तन्दिवौ (B) नक्तन्दिवम्
(C) नक्तन्दिवे (D) नक्तन्दिवः

19. 'भृशम्' पद का क्या अर्थ है-
(A) अत्यधिक (B) अत्यल्प
(C) सुन्दर (D) शान्ति

20. राजा यशोवर्मा के आश्रित कवि माने जाते हैं-
(A) भारवि (B) भवभूति
(C) भास (D) भर्तृमेण्ठ

21. महाकवि भवभूति की प्रथम नाट्यकृति मानी जाती है-
(A) मालतीमाधवम् (B) महावीरचरितम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) इनमें से कोई नहीं

22. शृङ्गाररस, वीररस तथा करुणरस-तीनों रसों में किस कवि ने तीन नाटक लिखे-
(A) भास ने (B) कालिदास ने
(C) भवभूति ने (D) अश्वघोष ने

23. उत्तररामचरितम् के मङ्गलाचरण में किस छन्द का प्रयोग है-
(A) आर्या का (B) अनुष्टुप् का
(C) इन्द्रवज्रा का (D) वंशस्थ का

24. 'पदवाक्यप्रमाणज्ञः' भवभूति की इस उपाधि से क्रमशः किन तीन शास्त्रों का संकेत मिलता है-
(A) न्याय-मीमांसा-व्याकरण (B) मीमांसा-व्याकरण-न्याय
(C) व्याकरण-मीमांसा-न्याय (D) व्याकरण-सांख्य-वेदान्त

25. भवभूति के प्रिय छन्द माने जाते हैं-
(A) अनुष्टुप् एवं शिखरिणी (B) वंशस्थ एवं इन्द्रवज्रा
(C) वसन्ततिलका एवं आर्या (D) शिखरिणी एवं उपेन्द्रवज्रा

26. उत्तररामचरितम् में कुल श्लोक हैं-
(A) लगभग 275 (B) लगभग 286
(C) लगभग 256 (D) लगभग 247

27. ''भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी'' यहाँ भवभूति के शिखरिणी छन्द की प्रसंशा किसने की है-
(A) गोवर्धन ने (B) क्षेमेन्द्र ने
(C) स्वयं भवभूति ने (D) राजशेखर ने

28. किस पात्र को भवभूति ने अपनी रचनाओं में कोई स्थान नही दिया-
(A) नटी को (B) सूत्रधार को
(C) विदूषक को (D) प्रतीहारी को

29. ''तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवाऽपि रात्रावपि'' यह पंक्ति कहाँ की है-
(A) दुष्यन्त के प्रेमपत्र की
(B) शकुन्तला के प्रेमपत्र की
(C) प्रियंवदा के विरहावस्था की
(D) यक्ष के विरहपत्र की

30. 'अमरकोष' के लेखक हैं-
(A) अमरसिंह (B) पाणिनि
(C) तारानाथ वाचस्पति (D) क्षेमेन्द्र

31. निम्नलिखित में भिन्न युग्म का चयन करें-
(A) दुष्यन्त-सर्वदमन (भरत) (B) तारापीड-चन्द्रापीड
(C) शुकनाश-वैशम्पायन (D) कण्व-शार्ङ्गरव

32. भिन्न युग्म का चयन करें-
(A) भवभूति-जतुकर्णी (B) बाणभट्ट-राजदेवी
(C) कालिदास-विद्योत्तमा (D) भारवि-सुशीला

33. सुमेलित करें -

	सूक्ति	ग्रन्थ
क.	गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः	(1) रघुवंशम्
ख.	तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते	(2) कुमारसम्भवम्
ग.	न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते	(3) उत्तररामचरितम्
घ.	बुभुक्षितः किं न करोति पापम्	(4) नीतिशतकम्
ङ.	न खलु वयः तेजसो हेतुः	(5) पञ्चतन्त्रम्

(A) क. (3) ख. (1) ग. (2) घ. (5) ङ. (4)
(B) क. (4) ख. (5) ग. (1) घ. (2) ङ. (3)
(C) क. (1) ख. (2) ग. (3) घ. (5) ङ. (4)
(D) क. (3) ख. (4) ग. (2) घ. (5) ङ. (3)

34. सुमेलित करें - किस ग्रन्थ में किस पर्वत का वर्णन है-

क. हिमालय पर्वत	(1) किरातार्जुनीयम्
ख. इन्द्रकील पर्वत	(2) कुमारसम्भवम्
ग. रैवतक पर्वत	(3) मेघदूतम्
घ. आम्रकूट पर्वत	(4) शिशुपालवधम्

(A) क. (4) ख. (1) ग. (2) घ. (3)
(B) क. (3) ख. (4) ग. (1) घ. (2)
(C) क. (2) ख. (1) ग. (4) घ. (3)
(D) क. (1) ख. (2) ग. (4) घ. (3)

18. (B)	19. (A)	20. (B)	21. (A)	22. (C)	23. (B)	24. (C)	25. (A)	26. (C)	27. (B)
28. (C)	29. (B)	30. (A)	31. (D)	32. (C)	33. (A)	34. (C)			

35. कौन सा पद अन्य तीनों से भिन्न है-
(A) पयः (B) मनः
(C) आपः (D) यशः

36. निम्न में से किसकी 'घि' संज्ञा नही होगी -
(A) पतिः (B) भूपतिः
(C) हरिः (D) वारि

37.'सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति' यहाँ कैसा आधार है-
(A) अभिव्यापक आधार (B) वैषयिक आधार
(C) औपश्लेषिक आधार (D) इनमें से कोई नहीं

38.'वृक्षम् अवचिनोति फलानि' यहाँ 'वृक्ष' की कर्मसंज्ञा करने वाला सूत्र है-
(A) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (B) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(C) क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म (D) अकथितञ्च

39.'घन इव श्यामः = घनश्यामः' में किस सूत्र से कर्मधारय समास का विधान किया गया है
(A) उपमानानि सामान्यवचनैः
(B) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(C) तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च
(D) सह सुपा

40. निम्न में भिन्न पद है-
(A) पञ्चगङ्गम् (B) पञ्चगवम्
(C) पञ्चपात्रम् (D) पञ्चवटी

41. 'सा अस्मान् पश्यति' इसका कर्मवाच्य होगा-
(A) तेन वयं दृश्यते । (B) तया अहं दृश्ये।
(C) तया वयं दृश्यामहे । (D) तया वयं दृश्यावहे।

42. अकर्मक क्रियापद नही है-
(A) क्रीडति (B) शेते
(C) भवति (D) गच्छति

43. 'किसी एक बालक को पुस्तक दो' इसका अनुवाद होगा-
(A) केनचित् एकस्मै बालकाय पुस्तक देहि।
(B) कश्चित् एकाय बालकाय पुस्तकं ददातु।
(C) कस्मैचित् एकस्मै बालकाय पुस्तकं देहि।
(D) कश्चित् एकाय बालकाय पुस्तकं ददातु।

44. किस छन्दसमूह में वर्णो की संख्या समान होती है-
(A) द्रुतविलम्बित-वसन्ततिलका-मालिनी
(B) वंशस्थ-उपजाति-इन्द्रवज्रा
(C) मन्दाक्रान्ता-शिखरिणी-हरिणी
(D) इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रा-द्रुतविलम्बित

45. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' यह कथन किसका है-
(A) द्रौपदी का (B) वनेचर का
(C) दुर्योधन का (D) युधिष्ठिर का

46. कौन सा शब्दालङ्कार माना जाता है-
(A) यमक (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) उपमा

47. अधोलिखित में सबसे बडी संख्या है-
(A) अशीतिः (B) नवाशीतिः
(C) एकाशीतिः (D) ऊनाशीतिः

48. 'यह मेरी तीसरी कन्या है' इसका अनुवाद होगा-
(A) सा मम तृतीया कन्या अस्ति
(B) एषा मम तिस्रः कन्या अस्ति
(C) एषा मम त्रीणि कन्या अस्ति
(D) एषा मम तृतीया कन्या अस्ति

49. अधोलिखित मे सबसे छोटी संख्या है-
(A) एकोनचत्वारिंशत् (B) चत्वारिंशत्
(C) एकचत्वारिंशत् (D) नवचत्वारिंशत्

50. सप्तमी विभक्ति का रूप नही है-
(A) भवति (B) विदुषि
(C) जगति (D) चन्द्रमसौ

51. लृट्लकार का शुद्ध रूप नही है-
(A) शक्ष्यति (B) स्पर्क्ष्यति
(C) नंस्यति (D) शयिष्यति

52. ''कथ्यतां का दशा भारतवर्षस्य'' यह कथन किसका है-
(A) ब्रह्मचारिगुरु का (B) योगिराज का
(C) गौरसिंह का (D) यवनयुवक का

53. गौरसिंह द्वारा जिस कन्या की रक्षा की गई थी ,वह उसकी कौन थी-
(A) बुआ (B) बहिन
(C) पत्नी (D) कोई नहीं

54. शिवराजविजयम् में कुल कितने विराम और निःश्वास हैं-
(A) 12 विराम तीन निःश्वास
(B) तीन विराम 12 निःश्वास
(C) 4 निःश्वास तीन विराम
(D) तीन विराम चार निःश्वास

35. (C)	36. (A)	37. (A)	38. (D)	39. (A)	40. (A)	41. (C)	42. (D)	43. (C)	44. (C)
45. (B)	46. (A)	47. (B)	48. (D)	49. (A)	50. (D)	51. (D)	52. (B)	53. (B)	54. (B)

55. गौरसिंह के पिता का नाम है-
(A) उदयवीर (B) खड्गसिंह
(C) रघुवीर सिंह (D) देवशर्मा

56. गौरसिंह ने जिस कन्या की रक्षा यवनयुवक से की थी, उसका नाम है-
(A) सौवर्णी (B) सरस्वती
(C) जीजाबाई (D) इनमें से कोई नहीं

57. 'सतारा नगरी' को किसने अपनी राजधानी बनाया-
(A) रघुवीर सिंह ने (B) शाइस्ता खाँ ने
(C) अफजल खाँ ने (D) शिवाजी ने

58. सुमेलित करें

कवि	उपाधि
क. कालिदास	(1) आतपत्र
ख. अम्बिकादत्तव्यास	(2) श्रीकण्ठ
ग. भारवि	(3) दीपशिखा
घ. भवभूति	(4) घटिकाशतक
ङ. माघ	(5) घण्टा

(A) क. (3) ख. (2) ग. (1) घ. (4) ङ्. (5)
(B) क. (3) ख. (4) ग. (1) घ. (2) ङ्. (5)
(C) क. (1) ख. (2) ग. (3) घ. (4) ङ्. (5)
(D) क. (5) ख. (4) ग. (3) घ. (2) ङ्. (1)

59. अम्बिकादत्तव्यास का 'शिवराजविजयम्' सर्वप्रथम कब प्रकाशित हुआ-
(A) 1870 ई० (B) 1898 ई०
(C) 1901 ई० (D) 1940 ई०

60. सुमेलित करें-

पात्र	अवस्था
क. गौरसिंह	(1) लगभग 20 वर्ष
ख. यवनयुवक	(2) लगभग 15-16 वर्ष
ग. ब्राह्मणकन्या	(3) लगभग 16 वर्ष
घ. श्यामसिंह	(4) लगभग 7 वर्ष

(A) क. (3) ख. (2) ग. (4) घ. (1)
(B) क. (1) ख. (2) ग. (3) घ. (4)
(C) क. (3) ख. (1) ग. (4) घ. (2)
(D) क. (2) ख. (3) ग. (4) घ. (1)

61. 'व्ययाजिषत्' में लकार है-
(A) लङ् (B) लुङ्
(C) लृङ् (D) लिङ्

62. 'उत्सङ्ग' पद का अर्थ-
(A) वस्त्र (B) चोटी
(C) बादल (D) गोद

63. 'कुलिश' पद का अर्थ है-
(A) कङ्कण (B) कुश
(C) वज्र (D) नोंक

64. "प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्रे" यहाँ 'वत्सराज' से किसका बोध होता है-
(A) कुबेर का (B) यक्ष का
(C) उदयन का (D) मेघ का

65. "प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्री कषाय:"-यहाँ 'प्रत्यूष' पद का अर्थ है-
(A) प्रभातकाल (B) सन्ध्याकाल
(C) दोपहर का समय (D) रात्रिकाल

66. विन्ध्यपर्वत की तलहटी में बिखरी हुई किस नदी का मेघ सर्वप्रथम दर्शन करता है-
(A) गम्भीरा का (B) नर्मदा का
(C) शिप्रा का (D) निर्विन्ध्या का

67. यक्ष के घर के बाहर क्रीडाशैल पर कौन सा वृक्ष है-
(A) लाल अशोक का (B) मौलश्री का
(C) दोनों (D) इनमें से कोई नही

68. यक्ष भवन के दरवाजे के दोनों ओर कौन सी दो निधियाँ अङ्कित है-
(A) शङ्ख एवं पद्म (B) मुकुन्द एवं कुन्दनील
(C) मकर एवं कच्छप (D) पद्म एवं महापद्म

69. "प्राय: सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा" यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है-
(A) उत्तररामचरितम् से (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) मेघदूतम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

70. 'नयेथा:' की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी-
(A) नी + विधिलिङ् + म०पु० + बहुवचन
(B) नी + लोट् + म० पु० + एकवचन
(C) नी + विधिलिङ् + म०पु० + एकवचन
(D) नी + लोट् + प्र०पु० + बहुवचन

55. (B)	56. (A)	57. (D)	58. (B)	59. (C)	60. (C)	61. (B)	62. (D)	63. (C)	64. (C)
65. (A)	66. (B)	67. (C)	68. (A)	69. (C)	70. (C)				

71. नपुंसकलिङ्ग पद है-
(A) अक्षि (B) अस्थि
(C) यशः (D) उपर्युक्त सभी

72. 'यह तो मेरी वस्तु है' इसका अनुवाद होगा-
(A) एतत् तु मम वस्तुः अस्ति
(B) एषः तु मम वस्तु अस्ति
(C) अयं तु मम एव वस्तु अस्ति
(D) एतत् तु मम वस्तु अस्ति

73. चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप नही है-
(A) अमुष्यै (B) शुने
(C) गुणिने (D) इनमें से कोई नही

74. स्त्रीलिङ्ग का रूप नही है-
(A) अस्यै (B) आपः
(C) अमुष्यै (D) जगता

75. एकवचनान्त रूप है-
(A) दृशः (B) अप्सराः
(C) अमूः (D) दिशः

76. कौन सा पद तीनों से लिङ्गभेद के कारण अलग है-
(A) कर्म (B) नाम
(C) शर्म (D) धर्म

77. 'अपृच्छः' रूप किस लकार का है-
(A) लोट् (B) विधिलिङ्
(C) लङ् (D) लृङ्

78. एकवचनान्त रूप है-
(A) शक्नुयाम (B) अशक्नुत
(C) शक्नुयाः (D) शक्नुत

79. कौन सा धातुरूप पुरुष की दृष्टि से अन्य तीनों से पृथक् है-
(A) जानीहि (B) अजानाः
(C) जानीयाः (D) जानीयाम्

80. विधिलिङ् लकार का रूप नही है-
(A) हरेम (B) नयेयम्
(C) लभेत (D) शृणवाम

81. निम्नलिखित में से लोट् लकार का रूप है-
(A) गच्छथ (B) गच्छत
(C) गच्छेत (D) अगच्छत

82. 'संस्कृतम्' इस पद में प्रत्यय है-
(A) अस् (B) घञ्
(C) क्त (D) ल्युट्

83. शुद्ध पद है-
(A) छित्वा (B) भित्वा
(C) कृत्वा (D) दत्वा

84. शुद्ध पद है-
(A) नोदितवान् (B) सिञ्चितवान्
(C) चितवान् (D) उपर्युक्त सभी

85 'मिल् + तुमुन्' के योग से पद निष्पन्न होगा-
(A) मिलितुम् (B) मिलेतुम्
(C) मिलतुम् (D) मेलितुम्

86. शुद्ध वाक्य का चयन करें-
(A) अष्टानि पुस्तकानि आनय (B) अष्टौ पुस्तकानि आनय
(C) अष्टाः पुस्तकानि आनयतु (D) अष्टनि पुस्तकानि आनय

87. 'ढक्' प्रत्यय के स्थान पर आदेश होगा-
(A) आयन् (B) एय्
(C) इय् (D) ईय्

88. 'राष्ट्रियः' में प्रत्यय है-
(A) घ (B) ढ
(C) ख (D) छ

89. 'वटवृक्षः' में सन्धि है-
(A) पूर्वरूप सन्धि (B) पररूप सन्धि
(C) अयादि सन्धि (D) इनमें से कोई नहीं

90. अर्थ की दृष्टि से प्रत्येक श्लोक जहाँ स्वतन्त्र होता है,वह काव्य की कौन सी विधा होती है-
(A) नाटक (B) महाकाव्य
(C) मुक्तककाव्य (D) चम्पूकाव्य

91. भर्तृहरि के विषय में असत्य कथन है-
(A) मालवदेश के राजा भर्तृहरि महाराज गन्धर्वसेन के पुत्र थे।
(B) राजा विक्रमादित्य इनके छोटे भाई थे।
(C) गोरखनाथ की शिष्यता प्राप्त कर योगी हो गये।
(D) 'शतकत्रय' एवं 'वाक्यपदीयम्' के लेखक नहीं हैं।

92. 'येषां न विद्या न तपो ......' रिक्त स्थान की पूर्ति करें-
(A) न ज्ञानम् (B) न दानम्
(C) न गुणो (D) उपर्युक्त सभी

71. (D)	72. (D)	73. (D)	74. (D)	75. (B)	76. (D)	77. (C)	78. (C)	79. (D)	80. (D)
81. (B)	82. (C)	83. (C)	84. (C)	85. (D)	86. (B)	87. (B)	88. (A)	89. (C)	90. (C)
91. (D)	92. (B)								

93. ''वाग्भूषणं भूषणम्'' यह सूक्ति किस कवि से सम्बद्ध है-
(A) भवभूति से (B) भर्तृहरि से
(C) भास से (D) कालिदास से

94. 'वाण्येका' में सन्धि है-
(A) व्यञ्जनसन्धि (B) विसर्गसन्धि
(C) अयादिसन्धि (D) यण्सन्धि

95. ''सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्'' यहाँ 'पुंसाम्' पद में विभक्ति एवं वचन है-
(A) द्वितीया एक० (B) द्वितीया बहु०
(C) षष्ठी एक० (D) षष्ठी बहु०

96. 'सत्सङ्गतिः' पद में कौन सा समास है-
(A) बहुव्रीहि (B) षष्ठी तत्पु०
(C) पञ्चमी तत्पु० (D) कर्मधारय

97. नीतिशतकम् के अनुसार भगवान् विष्णु के प्रसन्न होने पर मानव को क्या मिलता है-
(A) सदाचारी पुत्र (B) पतिव्रता स्त्री
(C) स्नेही मित्र (D) उपर्युक्त सभी

98. 'प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः' यह वाक्य है-
(A) कर्तृवाच्य में (B) कर्मवाच्य में
(C) भाववाच्य में (D) इनमें से कोई नही

99. भर्तृहरि के अनुसार सभी गुण किसमें आश्रित होते हैं-
(A) विद्वानों में (B) गुणी में
(C) वक्ता में (D) धन में

100. 'वश्यवाणीचक्रवर्ती' यह उपाधि किस कवि की है-
(A) कालिदास (B) भारवि
(C) अम्बिकादत्तव्यास (D) बाणभट्ट

101. ''महानयं भुजङ्गः'' बाणभट्ट के लिए यह कथन किसने कहा-
(A) हर्षवर्धन ने (B) कृष्णदेव ने
(C) तेनालीराम ने (D) जयचन्द्र ने

102. बाणभट्ट की क्रमिक वंशपरम्परा का सही क्रम है
(A) पाशुपत-अर्थपति-चित्रभानु-बाणभट्ट-भूषणभट्ट
(B) अर्थपति-पाशुपत-कुबेर-बाणभट्ट-भूषणभट्ट
(C) कुबेर-अर्थपति-चित्रभानु-बाणभट्ट-भूषणभट्ट
(D) वत्स-अर्थपति-कुबेर-बाणभट्ट-भूषणभट्ट

103. बाण के भाई माने जाते हैं-
(A) चित्रसेन (B) मित्रसेन
(C) दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

104. गद्यकाव्य है-
(A) उदयसुन्दरीकथा (B) वेमभूपालचरितम्
(C) तिलकमञ्जरी (D) उपर्युक्त सभी

105. जब बाणभट्ट के पिता की मृत्यु हुई, उस समय बाण की अवस्था थी-
(A) 12 वर्ष (B) 18 वर्ष
(C) 14 वर्ष (D) 16 वर्ष

106. ''चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतः रिपुस्त्रीणाम्'' यहाँ 'भवतः' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) शुक का (B) शुकनास का
(C) चन्द्रापीड का (D) शूद्रक का

107. एक किंवदन्ती के अनुसार बाणभट्ट का विवाह किसकी बहन से हुआ था-
(A) राजशेखर की (B) मयूरभट्ट की
(C) महिमभट्ट की (D) मम्मट की

108. 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा' यहाँ 'कथा' पद से किसका सङ्केत है-
(A) दशकुमारचरितम् (B) अवन्तिसुन्दरीकथा
(C) वासवदत्ता (D) कादम्बरीकथा

109. ''अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः'' यह कथन किसका है-
(A) चन्द्रापीड का (B) शुकनास का
(C) तारापीड का (D) गौरसिंह का

110. ''अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः'' यहाँ 'यूनाम्' पद में विभक्ति है-
(A) द्वितीया (B) षष्ठी
(C) प्रथमा (D) सप्तमी

111. शुकनास के अनुसार अनर्थ की परम्परा में परिगणित है-
(A) जन्मजातप्रभुता (B) युवावस्था
(C) अनुपमसौन्दर्य (D) उपर्युक्त सभी

112. समुद्र में लगने वाली आग को कहते हैं-
(A) दावानलः (B) वडवानलः
(C) जठरानलः (D) मुखानलः

93. (B)	94. (D)	95. (D)	96. (B)	97. (D)	98. (C)	99. (D)	100. (D)	101. (A)	102. (A)
103. (C)	104. (D)	105. (C)	106. (D)	107. (B)	108. (D)	109. (B)	110. (B)	111. (D)	112. (B)

113. ''शूरं कण्टकमिव परिहरति, दातारं दुःस्वप्नमिव न स्मरति'' इस वाक्य का कर्तृपद होगा-
(A) लक्ष्मीः
(B) चन्द्रापीडः
(C) राजनीतिः
(D) इनमें से कोई नहीं

114. ''विनीतं पातकिनमिव नोपसर्पति'' इस पंक्ति में अलङ्कार है-
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) यमक

115. 'निम्नगा' पद का अर्थ है-
(A) सर्प (B) नीचे
(C) नदी (D) लक्ष्मी

116. सुमेलित करें-

पति	पत्नी
क. कालिदास	**(1) अरुन्धती**
ख. भारवि	**(2) रसिका**
ग. वशिष्ठ	**(3) विद्योत्तमा**
घ. अगस्त्य	**(4) लोपामुद्रा**

(A) क. (3) ख. (2) ग. (4) घ. (1)
(B) क. (2) ख. (3) ग. (1) घ. (4)
(C) क. (3) ख. (2) ग. (1) घ. (4)
(D) क. (1) ख. (2) ग. (3) घ. (4)

117. अम्बिकादत्तव्यास की लगभग कितनी रचनायें मानी जाती हैं-
(A) लगभग-70 (B) लगभग-80
(C) लगभग-100 (D) लगभग-50

118. 'अच्छोदसरोवर' का वर्णन किस ग्रन्थ में है-
(A) कादम्बरी में
(B) किरातार्जुनीयम् में
(C) शिशुपालवधम् में
(D) मेघदूतम् में

119. सुमेलित करें -

राजा	राजधानी
क. शूद्रक	**(1) हस्तिनापुर**
ख. राम	**(2) विदिशा**
ग. दुष्यन्त	**(3) उज्जयिनी**
घ. कुबेर	**(4) अयोध्या**
ङ. तारापीड	**(5) अलकापुरी**

(A) क. (1) ख. (2) ग. (3) घ. (4) ङ.(5)
(B) क. (3) ख. (2) ग. (5) घ. (4) ङ.(1)
(C) क. (2) ख. (4) ग. (1) घ. (5) ङ.(3)
(D) क. (5) ख. (4) ग. (3) घ. (2) ङ.(1)

120.भर्तृहरि की प्रसिद्धि का कारण है-
(A) एक महान् वैयाकरण
(B) एक नीतिज्ञ राजा
(C) एक शृङ्गारिक और वैरागी कवि
(D) उपर्युक्त सभी

121.''पयः'' यह कैसा पद है-
(A) सकारान्त नपुं0 (B) नकारान्त पु0
(C) अकारान्त पु0 (D) अकारान्त नपु.

122. 'व्याकरणम्' पद में कौन सा प्रत्यय है-
(A) अक् (B) ल्युट्
(C) णिनि (D) ष्वुन्

123. संस्कृत शिक्षक से समाज क्या अपेक्षा करता है-
(A) संस्कार की (B) ज्ञान की
(C) उत्तम चरित्र व व्यवहार की (D) उपर्युक्त सभी की

124. शिवराजविजयम् का पात्र नही है–
(A) गौरसिंह (B) शिवाजी
(C) गोकर्ण (D) ब्रह्मचारिगुरु

125. ''नगरे नगरे ग्रामे ग्रामे विलसतु संस्कृतवाणी'' किस संस्था का ध्येयवाक्य है-
(A) संस्कृतगङ्गा का (B) संस्कृतभारती का
(C) राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान का (D) सम्पूर्णानन्द वि.वि.का

113. (A) 114. (B) 115. (C) 116. (C) 117. (B) 118. (A) 119. (C) 120. (D) 121. (A) 122. (B) 123. (D) 124. (C) 125. (A)

प्रवक्ता चयनपरीक्षा (PGT) आदर्शप्रश्नपत्र–1

01. 'दाशरथिः' में प्रत्यय है-
(A) अण् (B) इञ्
(C) ढक् (D) यञ्

02. 'कन्यायाः अपत्यम्' इस विग्रह वाक्य से सिद्ध होगा-
(A) कन्यकीयः (B) कान्यीयः
(C) कानीनः (D) उपर्युक्त सभी

03. ''राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः'' यहाँ 'राधीक्ष्योः' पद का अर्थ है-
(A) राधा का ईक्षण
(B) कृष्ण का समाचार
(C) राधा कृष्ण का प्रेमव्यापार
(D) प्रश्नविषयार्थपर्यालोचन

04. 'संख्यापूर्वो द्विगुः' यह सूत्र किस सूत्र के अधिकार में पढा गया है-
(A) कर्मप्रवचनीयाः (B) कारके
(C) तत्पुरुषः (D) अनभिहिते

05. 'ग्रामजनबन्धुभ्यः' इन पदों से किस प्रत्यय का विधान होगा-
(A) तल् (B) तमप्
(C) तरप् (D) तव्यत्

06. अष्टाध्यायी के त्रिपादी का प्रथम सूत्र है-
(A) अ अ (B) वृद्धिरादैच्
(C) पूर्वत्रासिद्धम् (D) संस्कृतम्

07. अनुस्वार के बाद यय् वर्णों के परे होने पर क्या आदेश होगा-
(A) परसवर्ण (B) पूर्वसवर्ण
(C) अनुस्वार (D) उपर्युक्त सभी

08. अष्टाध्यायी में 'आर्धधातुक संज्ञा' का विधान करने वाले सूत्र कितने हैं-
(A) 4 (B) 5
(C) 3 (D) 9

09. ''सूर्यस्य मानुषी स्त्री = सूरी'' इससे किसका बोध होता है-
(A) उषा का (B) सन्ध्या का
(C) वाग्देवी का (D) कुन्ती का

10. ''यू स्त्र्याख्यौ नदी'' इस सूत्र में 'यू' पद किसका बोधक है-
(A) ई,उ (B) ई,ऊ
(C) इ,उ (D) य,ऊ

11. नटराजराज (शिवजी) ने कितनी बार डमरू बजाया-
(A) नवदशवारम् (B) पञ्चदशवारम्
(C) नवपञ्चवारम् (D) इनमें से कोई नही

12. 'श्वो भविता' यहाँ कौन सा लकार है-
(A) लुट् (B) लृट्
(C) लङ् (D) लुङ्

13. आगम, आदेश आदि विधायक सूत्र कहलाते हैं
(A) संज्ञासूत्र (B) नियमसूत्र
(C) विधिसूत्र (D) परिभाषासूत्र

14. सवर्णग्राहकता का बोध कराने वाला सूत्र है-
(A) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्
(B) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः
(C) मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः
(D) आदिरन्त्येन सहेता

15. सांख्य के मत में निष्क्रिय,निर्गुण एवं निर्लिप्त कौन है-
(A) पुरुष (B) प्रकृति
(C) अहङ्कार (D) इनमें से कोई नही

16. महत्तत्व (बुद्धि) मानी जाती है-
(A) प्रकृति (B) विकृति
(C) प्रकृति-विकृति (D) इनमें से कोई नही

17. कर्मेन्द्रिय नही है-
(A) पाणि (B) वाक्
(C) त्वक् (D) पाद

18. 'रसना' ज्ञानेन्द्रिय का विषय माना जाता है-
(A) रस (B) गन्ध
(C) रूप (D) स्पर्श

19. 'रूप' तन्मात्रा से अभिव्यक्त होता है-
(A) वायु (B) तेजस् (अग्नि)
(C) जल (D) पृथिवी

1. (B)	2. (C)	3. (D)	4. (C)	5. (A)	6. (C)	7. (A)	8. (A)	9. (D)	10. (B)
11. (C)	12. (A)	13. (C)	14. (B)	15. (A)	16. (C)	17. (C)	18. (A)	19. (B)	

20. 'ज्ञ' (पुरुष) के अस्तित्व की सिद्धि सांख्य के अनुसार किस प्रमाण से होती है-
(A) आगमप्रमाण से (B) दृष्टप्रमाण से
(C) अनुमानप्रमाण से (D) उपमानप्रमाण से

21. सांख्य मूलप्रकृति को किस प्रमाण से सिद्ध करता है-
(A) आगमप्रमाण से (B) दृष्टप्रमाण से
(C) अनुमानप्रमाण से (D) उपमानप्रमाण से

22. सांख्यमत में अन्तःकरण है-
(A) बुद्धि (B) अहङ्कार
(C) मन (D) उपर्युक्त सभी

23. सांख्य के अनुसार 'न प्रकृतिः न विकृतिः' कौन है-
(A) पुरुष (B) मन
(C) मूलप्रकृति (D) बुद्धि

24. सांख्य मत में प्रकृति विकृति तत्त्व कितने हैं-
(A) 16 (B) 7
(C) 25 (D) केवल एक

25. चार्वाकदर्शन का प्रमाण है-
(A) प्रत्यक्ष (B) अनुमान
(C) शब्द (D) उपर्युक्त सभी

26. ''लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम् ....'' यह किस प्रमाण का लक्षण है-
(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमानम्
(C) उपमानम् (D) आगमम्

27. सांख्य के अनुसार जगत् का मूल कारण है-
(A) पुरुष (B) प्रकृति
(C) पञ्चमहाभूत (D) पञ्चवायु

28. ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः'' यह पंक्ति किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है-
(A) गीता से (B) सांख्यकारिका से
(C) वेदान्तसार से (D) तर्कभाषा से

29. सांख्यदर्शन के अनुसार सूक्ष्मशरीर (लिङ्गशरीर) में कितने अवयव होते हैं-
(A) 18 (B) 17
(C) 16 (D) 25

30. वेदान्तदर्शन के अनुसार लिङ्गशरीर (सूक्ष्मशरीर) में कितने अवयव होते हैं-
(A) 18 (B) 17
(C) 16 (D) केवल एक

31. सप्त अधःलोकों में प्रथम लोक माना जाता है-
(A) अतल (B) वितल
(C) सुतल (D) पाताल

32. ''सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म'' यह वाक्य किस उपनिषद् से उद्धृत है-
(A) बृहदारण्यकोपनिषद् (B) तैत्तिरीयोपनिषद्
(C) ईशावास्योपनिषद् (D) माण्डूक्योपनिषद्

33. ''तत्त्वमसि'' यह महावाक्य किस उपनिषद् का है-
(A) बृहदारण्यकोपनिषद् (B) छान्दोग्योपनिषद्
(C) तैत्तिरीयोपनिषद् (D) ऐतरेयोपनिषद्

34. वेदान्तसार के अनुसार अनुबन्धचतुष्टय में परिगणित नही है-
(A) प्रयोजन (B) उद्देश्य
(C) अधिकारी (D) सम्बन्ध

35. 'रस्सी में भ्रान्तिवश प्रतीत होने वाले सर्प की पुनः रस्सी मात्र के रूप में प्रतीति होना' वेदान्त के अनुसार क्या कहा जायेगा-
(A) अपवाद (B) अज्ञान
(C) अध्यारोप (D) जीवन्मुक्त

36. अद्वैतवाद के प्रवर्तक आचार्य माने जाते हैं-
(A) आदि शङ्कराचार्य (B) गौडपादाचार्य
(C) अद्वैतानन्द (D) अद्वयानन्द

37. वेदान्तानुसार 'मनोमयकोष' का निर्माण होता है-
(A) मन + पञ्चकर्मेन्द्रियाँ (B) मन + पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ
(C) बुद्धि + ज्ञानेन्द्रियाँ (D) पञ्चवायु +पञ्चकर्मेन्द्रियाँ

38. वेदान्त के अनुसार 'ब्रह्म' का ज्ञान किस प्रमाण से होगा-
(A) अनुमान प्रमाण से (B) प्रत्यक्ष प्रमाण से
(C) अर्थापत्ति प्रमाण से (D) आगम प्रमाण से

39. निम्न में से प्रकरणग्रन्थ है-
(A) मुद्राराक्षसम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) वेणीसंहारम् (D) उपर्युक्त सभी

40. 'शारिपुत्रप्रकरण' के लेखक है-
(A) भट्टनारायण (B) हर्षवर्धन
(C) विशाखदत्त (D) अश्वघोष

20. (A)	**21. (C)**	**22. (D)**	**23. (A)**	**24. (B)**	**25. (A)**	**26. (B)**	**27. (B)**	**28. (A)**	**29. (A)**
30. (B)	**31. (A)**	**32. (B)**	**33. (B)**	**34. (B)**	**35. (A)**	**36. (A)**	**37. (B)**	**38. (D)**	**39. (B)**
40. (D)									

41. सुमलित करें-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार
क. रसगङ्गाधर	(1) दण्डी
ख. कव्यादर्श	(2) आनन्दवर्धन
ग. चन्द्रालोक	(3) जगन्नाथ
घ. ध्वन्यालोक	(4) राजशेखर
ङ. काव्यमीमांसा	(5) जयदेव

(A) क. (3) ख. (1) ग. (4) घ. (2) ङ. (5)
(B) क. (1) ख. (3) ग. (5) घ. (2) ङ. (4)
(C) क. (3) ख. (1) ग. (5) घ. (2) ङ. (4)
(D) क. (1) ख. (3) ग. (5) घ. (4) ङ. (2)

42. उक्त कर्म में किस विभक्ति का प्रयोग होगा-
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

43. 'रामेण बाणेन हतो बाली' में करणकारक है-
(A) राम (B) बाण
(C) बाली (D) उपर्युक्त सभी

44. 'पत्ये शेते' यहाँ 'पत्ये' में प्रयुक्त विभक्ति है-
(A) सप्तमी (B) द्वितीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

45. 'गोषु दुह्यमानासु गतः' यहाँ सप्तमी विभक्ति किस सूत्र से हुई है-
(A) निमित्तात् कर्मयोगे (B) साध्वसाधुप्रयोगे
(C) यस्य च भावेन भावलक्षणम् (D) यतश्च निर्धारणम्

46. 'हेतौ' इस सूत्र से किस विभक्ति का विधान होगा-
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

47. 'यवेभ्यो गां वारयति' यहाँ 'यवेभ्यो' पद में विभक्ति है-
(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

48. 'अन्नस्य हेतोर्वसति' में षष्ठी किस सूत्र से हुई है-
(A) षष्ठी शेषे (B) कर्तृकर्मणोः कृति
(C) षष्ठी हेतुप्रयोगे (D) षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन

49. 'अतसर्थप्रत्यय' के प्रयोग में किस विभक्ति का प्रयोग होगा-
(A) पञ्चमी (B) षष्ठी
(C) चतुर्थी (D) सप्तमी

50. 'अपाय' अर्थ में ध्रुव की क्या संज्ञा होगी-
(A) कर्म (B) सम्प्रदान
(C) अधिकरण (D) अपादान

51. 'ऋते' एवं 'आरात्' के योग में किस विभक्ति का प्रयोग होगा-
(A) सप्तमी (B) षष्ठी
(C) पञ्चमी (D) चतुर्थी

52. 'छन्दःशास्त्र' के प्रवक्ता माने जाते हैं-
(A) पिङ्गल (B) वामन
(C) कुन्तक (D) भरत

53. उपेन्द्रवज्रा तथा इन्द्रवज्रा के मेल से कौन सा छन्द बनेगा-
(A) वंशस्थ (B) उपजाति
(C) मालिनी (D) शालिनी

54. चार यगण वाला छन्द है-
(A) द्रुतविलम्बित (B) भुजङ्गप्रयात
(C) इन्द्रवज्रा (D) उपेन्द्रवज्रा

55. 'भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः' में छन्द है-
(A) वंशस्थ (B) इन्द्रवज्रा
(C) शालिनी (D) वसन्ततिलका

56. ''अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः'' यह किस अलङ्कार का लक्षण है-
(A) अनुप्रास (B) वक्रोक्ति
(C) यमक (D) श्लेष

57. उपमान तथा उपमेय का अभेदारोप होता है-
(A) उत्प्रेक्षा (B) रूपक
(C) यमक (D) उपमा

58. अर्थ के आधार पर काव्य की शोभा बढाते हैं-
(A) छन्द (B) शब्दालङ्कार
(C) अर्थालङ्कार (D) गुण

59. ''लिम्पतीव तमोङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः'' इसमें कौन सा अलङ्कार है-
(A) सन्देह (B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपक (D) भ्रान्तिमान्

41. (C)	42. (A)	43. (B)	44. (C)	45. (C)	46. (B)	47. (B)	48. (C)	49. (B)	50. (D)
51. (C)	52. (A)	53. (B)	54. (B)	55. (A)	56. (C)	57. (B)	58. (C)	59. (B)	

60. ''नवपलाश-पलाशवनं पुरः''-इसमें कौन सा अलङ्कार है-
(A) रूपक (B) यमक
(C) उत्प्रेक्षा (D) श्लेष

61. गीता महाभारत के किस पर्व में वर्णित है-
(A) आदिपर्व में (B) अनुशासनपर्व
(C) भीष्मपर्व में (D) शान्तिपर्व में

62. गीता में कुल अध्याय एवं श्लोक संख्या है -
(A) 18/650 (B) 18/700
(C) 17/800 (D) 16/750

63. 'पृथापुत्र' कौन है-
(A) कृष्ण (B) द्रोण
(C) दुर्योधन (D) अर्जुन

64. 'काम' से क्या उत्पन्न होता है-
(A) क्रोध (B) लोभ
(C) मोह (D) ध्यान

65. गीता को कर्मप्रधान मानते हैं-
(A) श्रीरामानुजाचार्य (B) शङ्कराचार्य
(C) बालगंगाधरतिलक (D) वल्लभाचार्य

66. गीता का कौन सा अध्याय 'सांख्ययोग' के नाम से प्रसिद्ध है
(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) पञ्चम

67. अर्जुन के धनुष का क्या नाम है -
(A) पाञ्चजन्य (B) गाण्डीव
(C) पाशुपत (D) पुष्पधन्वा

68. गीता के किस अध्याय में सबसे कम श्लोक हैं-
(A) 12वें (B) 18वें
(C) 10वें (D) 13वें

69. पाण्डवों का सेनापति कौन था-
(A) भीष्म (B) धृष्टद्युम्न
(C) अभिमन्यु (D) युधिष्ठिर

70. ''ऋते .... न मुक्तिः''-रिक्तस्थान की पूर्ति करें-
(A) ज्ञानात् (B) ज्ञानम्
(C) ज्ञानेन (D) ज्ञानस्य

71. 'प्रेमविवाह' का दूसरा नाम है-
(A) आर्ष (B) दैव
(C) ब्राह्म (D) गान्धर्व

72. पाणिनि शिक्षा में कितने वर्ण बताये गये हैं-
(A) 62 (B) 63/64
(C) 61 (D) 60

73. व्याकरण को 'शब्दानुशासन' सर्वप्रथम किसने कहा-
(A) पाणिनि (B) कात्यायन
(C) पतञ्जलि (D) भर्तृहरि

74. पण्डितराज जगन्नाथ ने काव्य की परिभाषा क्या दी है-
(A) वक्रोक्ति काव्यजीवितम्
(B) काव्यस्यात्मा ध्वनिः
(C) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(D) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्

75. अष्टाध्यायी के अनुसार धातुओं की संख्या कितनी है-
(A) 4000 (B) 1550
(C) 5020 (D) 1944

76. 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्' नाटक की यह परिभाषा किसने दी-
(A) भरत ने (B) विश्वनाथ ने
(C) धनञ्जय ने (D) भामह ने

77. शुद्ध प्रयोग है-
(A) अलं विवादः (B) अलं विवादस्य
(C) अलं विवादेन (D) अलं विवादाय

78. भाषा-शिक्षण की विधि है-
(A) अनुकरणविधि (B) अभ्यासविधि
(C) संरचनात्मकविधि (D) उपर्युक्त सभी

79. दूरदर्शन का शिक्षण में उपयोग करते हैं-
(A) शुद्ध उच्चारण में (B) शुद्ध लेखन में
(C) शुद्ध श्रवण में (D) उपर्युक्त सभी

80. वह ऋषिकुमार जो शुक को जाबालि-आश्रम ले जाता है-
(A) कपिञ्जल (B) नारद
(C) हारीत (D) वैशम्पायन

81. शूद्रक की राजधानी विदिशा किस नदी के किनारे स्थित है-
(A) सरयू (B) वेत्रवती
(C) गङ्गा (D) कावेरी

60. (B)	**61. (C)**	**62. (B)**	**63. (D)**	**64. (A)**	**65. (C)**	**66. (A)**	**67. (B)**	**68. (A)**	**69. (B)**
70. (A)	**71. (D)**	**72. (B)**	**73. (C)**	**74. (D)**	**75. (D)**	**76. (C)**	**77. (C)**	**78. (D)**	**79. (D)**
80. (C)	**81. (B)**								

82. वैशम्पायन पूर्वजन्म में था-
(A) कपिञ्जल (B) पुण्डरीक
(C) शूद्रक (D) इन्द्रायुध

83. वह स्थान जहाँ महाश्वेता ने पुण्डरीक को देखा-
(A) हेमकूट (B) आच्छोदसरोवर
(C) विदिशा (D) उज्जयिनी

84. शूद्रक पूर्वजन्म में था-
(A) वैशम्पायन (B) पुण्डरीक
(C) चन्द्रापीड (D) तारापीड

85. 'हर इव जितमन्मथः' में राजा शूद्रक किसकी तरह जितेन्द्रिय है-
(A) विष्णु के समान (B) शिव के समान
(C) इन्द्र के समान (D) ब्रह्मा के समान

86. 'अहो विधातुरस्थाने सौन्दर्यनिष्पादनप्रयत्नः' इस सूक्ति के वक्ता हैं-
(A) शूद्रक (B) चाण्डालकन्या
(C) शुकनास (D) वैशम्पायन

87. 'काव्यं यशसे अर्थकृते' यह कथन किसका है-
(A) मम्मट का (B) विश्वनाथ का
(C) जगन्नाथ का (D) भरत का

88. 'बाणस्तु पञ्चाननः' बाण के लिए यह उपाधि किसने दी-
(A) श्री चन्द्रदेव (B) गोवर्धनाचार्य
(C) जयदेव (D) गङ्गादेवी

89. 'ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः' इस सूक्ति से सम्बद्ध रचना है-
(A) शिशुपालवधम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) नलचम्पू (D) किरातार्जुनीयम्

90. किस कवि ने केवल एक रचना की है-
(A) वाल्मीकि ने (B) भारवि ने
(C) माघ ने (D) उपर्युक्त सभी ने

91. शिशुपालवध का उपजीव्यग्रन्थ है-
(A) रामायण (B) महाभारत
(C) शिवपुराण (D) इनमें से कोई नही

92. शिशुपाल पूर्वजन्म में क्या था-
(A) यक्ष (B) गन्धर्व
(C) वृत्रासुर (D) रावण

93. शिशुपालवधम् के अनुसार कृष्ण के पास इन्द्र का संदेश पहुँचाने वाले हैं-
(A) नारद (B) मातलि
(C) जयन्त (D) अर्जुन

94. 'रघुवंशम्' में वर्णित अन्तिम रघुवंशी राजा है-
(A) दिलीप (B) भगीरथ
(C) अग्निवर्ण (D) अग्निमित्र

95. 'दुह्' धातु लोट्लकार प्र0पु0एकवचन का रूप होगा-
(A) दोग्धु (B) दुहतु
(C) दोहतु (D) दोन्धु

96. 'ज्ञा' धातु लोट्लकार उ0पु0 बहुवचन में रूप होगा-
(A) जानामः (B) जानाम
(C) ज्ञाताम (D) जानीमः

97. 'हन्' धातु लङ्लकार प्र0पु0एकवचन का रूप होगा-
(A) अवधीत् (B) अहन्
(C) अहनत् (D) अहनताम्

98. 'बभूव' इसमें कौन सी धातु है-
(A) भू (B) भी
(C) ब्रूम् (D) भृञ्

99. 'शिशु' शब्द का तृतीया एकवचन रूप होगा-
(A) शिशुनेन (B) शिशवेन
(C) शिशुना (D) शिश्वना

100. 'भगवत्' शब्द का 'भगवतः' रूप कहाँ नहीं बनेगा-
(A) द्वितीया बहु0 (B) पञ्चमी एक0
(C) षष्ठी एक0 (D) प्रथमा बहु0

101. 'तेन सह ......भाषितवान्' उपयुक्त पद का चयन करें-
(A) बालिका (B) माता
(C) पिता (D) वयम्

102. '........राजा प्रतिवसति स्म' रिक्तस्थान में उपयुक्त पद का चयन करें-
(A) केनचित् (B) कश्चित्
(C) कतिचित् (D) केचित्

103. 'दधि' शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप होगा-
(A) दध्नः (B) दध्याः
(C) दध्न्यः (D) दध्नोः

104. 'मति' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा-
(A) मतीनाम् (B) मतीणाम्
(C) मतिनाम् (D) मत्यानाम्

82. (B)	83. (B)	84. (C)	85. (B)	86. (A)	87. (A)	88. (A)	89. (A)	90. (D)	91. (B)
92. (D)	93. (A)	94. (C)	95. (A)	96. (B)	97. (B)	98. (A)	99. (C)	100. (D)	101. (C)
102. (B)	103. (A)	104. (A)							

105. 'मातृ' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा-
(A) मातॄन् (B) मातॄः
(C) मातरः (D) माताः

106. 'न खलु धीमतां कश्चिद् अविषयो नाम' यह किसकी उक्ति है-
(A) शकुन्तला (B) अनसूया
(C) काश्यप (D) शार्ङ्गरव

107. दुष्यन्त शकुन्तला की वैवाहिक विधि है-
(A) दैवविवाह (B) आसुरविवाह
(C) ब्राह्मविवाह (D) गान्धर्वविवाह

108. शकुन्तला के शापनिवृत्ति हेतु दुर्वासा से अनुनय विनय करने वाली सखी है-
(A) गौतमी (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) सानुमती

109. 'अतिस्नेहः पापशङ्की'-यह सूक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में है-
(A) पञ्चम (B) षष्ठ
(C) चतुर्थ (D) प्रथम

110. 'डिम' का उदाहरण है-
(A) समुद्रमन्थन (B) त्रिपुरदाह
(C) दूतवाक्यम् (D) अविमारकम्

111. कालिदास द्वारा रचित 'त्रोटक' है-
(A) विक्रमोर्वशीयम्
(B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(D) ऋतुसंहारम्

112. चारुदत्त की विवाहिता पत्नी है-
(A) धूता (B) वसन्तसेना
(C) मदनिका (D) रदनिका

113. पालक की हत्या करके राजा कौन बनता है-
(A) चारुदत्त (B) शकार
(C) आर्यक (D) मैत्रेय

114. विदूषक युक्त रचना है-
(A) उत्तररामचरितम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) मालतीमाधवम् (D) महावीरचरितम्

115. 'बहुदोषा हि सर्वरी' यह सूक्ति किस ग्रन्थ की है-
(A) मृच्छकटिकम् (B) मुद्राराक्षसम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) नलचम्पू

116. चारुदत्त के घर से बसन्तसेना के आभूषणों की चोरी करने वाला है-
(A) आर्यक (B) पालक
(C) शर्विलक (D) शकार

117. 'प्र' उपसर्ग से बना शब्द नही है-
(A) प्रकारः (B) प्रभेदः
(C) प्रथमः (D) प्रयासः

118. 'स्वागतम्' पद में प्रयुक्त उपसर्ग है-
(A) स्व (B) सु
(C) स्वा (D) इनमें से कोई नही

119. 'यथा गौः तथा गवयः' यह वाक्य किस प्रमाण से सम्बद्ध है-
(A) अनुमान (B) आगम
(C) उपमान (D) प्रत्यक्ष

120. तर्कभाषा किस दर्शन का प्रकरण ग्रन्थ है-
(A) वैशेषिकदर्शन (B) न्यायदर्शन
(C) वेदान्तदर्शन (D) सांख्यदर्शन

121. न्याय के षोडश पदार्थों में परिगणित नही है-
(A) आत्मा (B) प्रमाण
(C) तर्क (D) वितण्डा

122. दमयन्ती कथा के लेखक हैं-
(A) विशाखदत्त (B) शूद्रक
(C) त्रिविक्रमभट्ट (D) श्रीहर्ष

123. दमयन्ती किस राज्य की राजकुमारी थी-
(A) निषधदेश की (B) कुण्डिनपुर की
(C) उज्जयिनी की (D) अलकापुरी की

124. भाषा उत्पत्ति के 'रणन सिद्धान्त' को कहते हैं-
(A) डिंग डांग थ्योरी (B) संकेत सिद्धान्त
(C) आवेग सिद्धान्त (D) सङ्गति सिद्धान्त

125. 'स्थाली-थाली' यहाँ कैसा ध्वनिपरिवर्तन है-
(A) आदि व्यञ्जनलोप (B) आदि स्वरलोप
(C) समाक्षरलोप (D) इनमें से कोई नही

105. (B)	106. (D)	107. (D)	108. (C)	109. (C)	110. (B)	111. (A)	112. (A)	113. (C)	114. (B)
115. (A)	116. (C)	117. (C)	118. (B)	119. (C)	120. (B)	121. (A)	122. (C)	123. (B)	124. (A)
125. (A)									

प्रवक्ता चयनपरीक्षा (PGT) आदर्शप्रश्नपत्र– 2

1. 'निष्ठा' प्रत्ययान्त शब्दों का किस समास में पूर्वनिपात होता है-
(A) बहुव्रीहि में (B) द्वन्द्व में
(C) तत्पुरुष में (D) अव्ययीभाव में

2. आनन्दवर्धन के ध्वन्यालोक में कुल कितने उद्योत हैं-
(A) 4 (B) 3
(C) 6 (D) 5

3. राजशेखर की रचना नही है-
(A) बालरामायण (B) काव्यालङ्कार
(C) काव्यमीमांसा (D) कर्पूरमञ्जरी

4. सुमेलित कीजिए-

ग्रन्थकार	ग्रन्थ
(क) मुकुलभट्ट	(i) ध्वन्यालोकलोचन
(ख) अभिनवगुप्त	(ii) औचित्यविचारचर्चा
(ग) जयदेव	(iii) अभिधावृत्तमात्रिका
(घ) क्षेमेन्द्र	(iv) चन्द्रालोक

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(D)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

5. मम्मट के पिता का नाम माना जाता है-
(A) जैयट (B) कैयट
(C) उव्वट (D) वज्रट

6. 'ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः' इस पंक्ति में किसका लक्षण बताया गया है-
(A) रस का (B) गुण का
(C) दोष का (D) आत्मा का

7. 'निःशेषच्युतचन्दनं स्तनतटं निर्मृष्टरागोऽधरो' यह किस काव्य का उदाहरण है-
(A) गुणीभूतकाव्य का (B) अधमकाव्य का
(C) ध्वनिकाव्य/उत्तमकाव्य का (D) चित्रकाव्य का

8. 'अभिहितान्वयवाद' के समर्थक माने जाते हैं-
(A) कुमारिलभट्ट (B) प्रभाकर गुरू
(C) शालिकनाथ मिश्र (D) क्षेमेन्द्र

9. 'अयं मार्तण्डः किं? स खलु तुरगैः सप्तभिरितः' इस पंक्ति में अलङ्कार है-
(A) स्वाभावोक्ति (B) भ्रान्तिमान्
(C) विरोध (D) ससन्देह

10. गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा बजाये गये शङ्ख का क्या नाम है-
(A) पाञ्चजन्य (B) देवदत्त
(C) पौण्ड्र (D) अनन्तविजय

11. गीता के बारहवें अध्याय का नाम है-
(A) विभूतियोग (B) सांख्ययोग
(C) कर्मयोग (D) भक्तियोग

12. पाण्डवों की सेना कितनी थी-
(A) ग्यारह अक्षौहिणी (B) सात अक्षौहिणी
(C) दश अक्षौहिणी (D) बारह अक्षौहिणी

13. पाण्डवपक्षीय योद्धा नही है-
(A) चेकितान (B) काशिराज
(C) विकर्ण (D) पुरुजित्

14. महाभारत युद्ध में सर्वप्रथम शंख किसने बजाया था-
(A) भीष्मपितामह ने (B) श्रीकृष्ण ने
(C) अर्जुन ने (D) दुर्योधन ने

15. गीता में 'गुडाकेश' किसे कहा गया है-
(A) श्रीकृष्ण को (B) भीष्म को
(C) द्रोणाचार्य को (D) अर्जुन को

16. भगवान् श्रीकृष्ण गीता के दशवें अध्याय में स्वयं को समासों में कौन सा समास बताते हैं-
(A) बहुव्रीहि (B) तत्पुरुष
(C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव

17. 'श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानम्' यह सूक्ति गीता के किस अध्याय में है-
(A) द्वितीय अध्याय (B) तृतीय अध्याय
(C) चतुर्थ अध्याय (D) पञ्चम अध्याय

18. 'निपात एकाजनाङ्' इस सूत्र से किस संज्ञा का विधान किया गया है-
(A) प्रगृह्य (B) निपात
(C) अपृक्त (D) उपसर्ग

1. (A)	2. (A)	3. (B)	4. (D)	5. (A)	6. (B)	7. (C)	8. (A)	9. (D)	10. (A)
11. (D)	12. (B)	13. (C)	14. (A)	15. (D)	16. (C)	17. (C)	18. (A)		

19. 'पति' शब्द की समास में कौन सी संज्ञा होगी-
(A) घि (B) नदी
(C) भ (D) अङ्ग

20. 'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से किस स्त्रीप्रत्यय का विधान किया गया है-
(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) ङीन् (D) ऊङ्

21. 'ङीप्' प्रत्ययान्त पद है-
(A) त्रिपादी (B) किशोरी
(C) तरुणी (D) उपर्युक्त सभी

22. 'तरप् और तमप्' प्रत्ययों की क्या संज्ञा होगी-
(A) घि संज्ञा (B) निष्ठा संज्ञा
(C) घ संज्ञा (D) घु संज्ञा

23. कौन सा पद द्विवचनान्त नही है-
(A) उभ (B) उभय
(C) द्वि (D) इनमें से कोई नही

24. 'श्रेयसि केन तृप्यते' यह सूक्ति किस महाकवि से सम्बद्ध है-
(A) माघ (B) कालिदास
(C) भारवि (D) श्रीहर्ष

25. ''धराधरेन्द्रं व्रततीततीरिव' यहाँ 'व्रततीततीः' पद का क्या अर्थ है-
(A) व्रतवीर (B) नारदमुनि
(C) हिमालयपर्वत (D) लताओं का समूह

26. ''नवानधोऽधो बृहतः पयोधरान्'' यहाँ 'बृहतः' में विभक्ति एवं वचन है-
(A) द्वितीया एकवचन (B) प्रथमा बहुवचन
(C) पञ्चमी एकवचन (D) द्वितीया बहुवचन

27. 'अनूरुसारथिः' पद का अर्थ है-
(A) श्रीकृष्ण (B) नारद
(C) सूर्य (D) विष्णुः

28. ''पतत्यधो धाम विसारि सर्वतः'' यहाँ 'धाम' और 'विसारि' पद किस लिङ्ग में प्रयुक्त है-
(A) स्त्रीलिङ्ग (B) पुंलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) अव्ययपदम्

29. 'शिशुपालवधम्' के प्रथम और अन्तिम श्लोक में क्रमशः छन्दों का प्रयोग है-
(A) वंशस्थ-मालिनी (B) वंशस्थ-शिखरिणी
(C) इन्द्रवज्रा-शार्दूलविक्रीडित (D) वंशस्थ-शार्दूलविक्रीडित

30. शिशुपालवधम् के प्रथम सर्ग में कुल श्लोक हैं-
(A) 72 (B) 46
(C) 78 (D) 75

31. ''क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः'' यह पंक्ति किस कवि से सम्बद्ध है-
(A) कालिदास से (B) त्रिविक्रमभट्ट से
(C) माघ से (D) भारवि से

32. न्यायदर्शन के अनुसार पदार्थो की संख्या कितनी है?
(A) 13 (B) 14
(C) 15 (D) 16

33. न्यायदर्शन के अनुसार हेत्वाभास कितने हैं?
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 6

34. नैयायिकों के उपमान प्रमाण का अन्तर्भाव सांख्यदर्शन के किस प्रमाण में होता है-
(A) अनुमानप्रमाण में (B) आप्त प्रमाण में
(C) दृष्ट (प्रत्यक्ष) प्रमाण में (D) इनमें से कोई नही

35. ''रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये'' यह किस ग्रन्थ का मङ्गलाचरण है-
(A) कादम्बरी का (B) शिशुपालवधम् का
(C) शिवराजविजयम् का (D) हर्षचरितम् का

36. न्यायदर्शन के अनुसार इन्द्रिय और अर्थ का सन्निकर्ष कितने प्रकार का होता है
(A) 6 (B) 7
(C) 9 (D) 8

37. न्याय के अनुसार कारण को कैसा होना चाहिए-
(A) कार्य का सहायक (B) कार्य का उत्तरवर्ती
(C) कार्य का नियतपूर्ववर्ती (D) कार्य का पूर्ववर्ती

38. अन्यथासिद्ध कितने प्रकार का है?
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

39. नैयायिक अभाव प्रमाण को किसका विषय मानते हैं?
(A) अनुमान का (B) उपमान का
(C) शब्द का (D) प्रत्यक्ष का

40. 'हर इव जितमन्मथः,कमलयोनिरिव विमानीकृतराज-हंसमण्डलः' यह विशेषण किसका है
(A) चन्द्रापीड का (B) शुकनास का
(C) शूद्रक का (D) तारापीड का

19. (A)	20. (B)	21. (D)	22. (C)	23. (B)	24. (A)	25. (D)	26. (D)	27. (C)	28. (C)
29. (D)	30. (D)	31. (C)	32. (D)	33. (C)	34. (A)	35. (A)	36. (A)	37. (C)	38. (D)
39. (D)	40. (C)								

41. 'कुशल' शब्द का अर्थपरिवर्तन क्या कहा जायेगा-
(A) अर्थविस्तार (B) अर्थसंकोच
(C) अर्थादेश (D) इनमें से कोई नही

42. प्रमाण्य को 'स्वत:' और अप्रमाण्य को 'परत:' कौन मानता है?
(A) नैयायिक (B) वेदान्ती
(C) मीमांसक (D) सांख्यवादी

43. 'अ' कौन सा स्वर है-
(A) पश्च स्वर (B) केन्द्रीय स्वर
(C) अग्रस्वर (D) वर्तल स्वर

44. किसके योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग नही होगा-
(A) ऋते (B) पृथक्
(C) अन्तरा (D) नाना

45. वेदान्तदर्शनानुसार कौन सी शक्ति परब्रह्म पर जगत् का भ्रम उत्पन्न करती है
(A) अज्ञान (B) आवरण
(C) विक्षेप (D) माया

46. वेदान्तदर्शन किसकी सत्ता स्वीकार करता है?
(A) एकमात्र ब्रह्म की (B) एकमात्र आत्मा की
(C) एकमात्र ईश्वर की (D) एकमात्र परमात्मा की

47. वेदान्त मुख्यतया किस पर आधारित है?
(A) वेदों पर (B) उपनिषदों पर
(C) ब्राह्मण ग्रन्थों पर (D) पुराणों पर

48. जगद्गुरुशङ्कराचार्य के अनुसार जगत् क्या है?
(A) जीव का वैवर्त (B) प्रकृति का वैवर्त
(C) माया का वैवर्त (D) ब्रह्म का वैवर्त

49. वेदान्तदर्शन के अनुसार प्रमाण हैं
(A) 6 (B) 5
(C) 4 (D) 3

50. जगद्गुरुशङ्कराचार्य का मत कौन सा है?
(A) शुद्धवेदान्त (B) द्वैताद्वैतवेदान्त
(C) अद्वैतवेदान्त (D) द्वैतवेदान्त

51. संस्कृत किस परिवार की भाषा है-
(A) द्रविडपरिवार (B) अमेरिकी परिवार
(C) भारोपीय परिवार (D) अफ्रीकी परिवार

52. नलचम्पू की नायिका दमयन्ती की माता का नाम है
(A) प्रियङ्गुमञ्जरी (B) हंसवाहिनी
(C) सारसिका (D) रूपवती

53. गद्यपद्यमय मिश्रशैली में लिखा गया प्रबन्धकाव्य कहलाता है-
(A) महाकाव्य (B) नाटक
(C) चम्पू (D) कथा

54. त्रिविक्रमभट्ट के पिता का नाम था-
(A) नेमादित्य (B) श्रीधर
(C) शाण्डिल्यभट्ट (D) गुणाढ्य

55. राजा नल का महामन्त्री है-
(A) सालङ्कायन (B) श्रुतशील
(C) बाहुक (D) भद्रभूति

56. ''नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा'' यहाँ 'तस्मै' शब्द से किसका बोध हो रहा है
(A) त्रिविक्रमभट्ट का (B) भवभूति का
(C) वाल्मीकि का (D) राजा नल का

57. 'किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मत:'- यह कथन किस कवि का है-
(A) शूद्रक का (B) कालिदास का
(C) माघ का (D) त्रिविक्रमभट्ट का

58. 'रम्या रामायणी कथा' यह कथन किस ग्रन्थ का है-
(A) वाल्मीकिरामायणम् (B) आनन्दरामायणम्
(C) नलचम्पू (D) भारतचम्पू

59. अर्थोपक्षेपक कितने होते हैं-
(A) 7 (B) 5
(C) 8 (D) 6

60. 'गर्भाङ्क' की योजना किस नाटक में है-
(A) मुद्राराक्षसम् में (B) मृच्छकटिकम् में
(C) उत्तररामचरितम् में (D)अभिज्ञानशाकुन्तलम् में

61. नाटकों की पञ्च कार्यावस्था के अन्तर्गत नही परिगणित है-
(A) यत्न (B) प्राप्त्याशा
(C) नियताप्ति (D) बीज

62. धूर्तो के चरित्र से युक्त एक अङ्कात्मक रचना है-
(A) भाण (B) व्यायोग
(C) समवकार (D) डिम

63. रूपक अलङ्कार का भेद नही है-
(A) साङ्गरूपक (B) परम्परितरूपक
(C) निरङ्गरूपक (D) इनमें से कोई नही

64. कथाकार के रूप में प्रसिद्ध कवि कौन हैं-
(A) भास (B) बाणभट्ट
(C) भामह (D) मयूरभट्ट

65. 'हर्षचरितम्' के कितने उच्छ्वासों में बाण की आत्मकथा वर्णित हैं-
(A) तीन में (B) पाँच में
(C) आठ में (D) चार में

66. हेतु के बिना यदि कार्य की उत्पत्ति का वर्णन हो तो अलङ्कार होगा-
(A) विभावना (B) विशेषोक्ति
(C) कारण (D) परिकर

41. (A)	42. (C)	43. (B)	44. (C)	45. (C)	46. (A)	47. (B)	48. (D)	49. (A)	50. (C)
51. (C)	52. (A)	53. (C)	54. (A)	55. (B)	56. (C)	57. (D)	58. (C)	59. (B)	60. (C)
61. (D)	62. (A)	63. (D)	64. (B)	65. (A)	66. (A)				

67. 'धनिनोऽपि निरुन्मादा युवानोऽपि न चञ्चलाः' यहाँ अलङ्कार है-
(A) विभावना (B) निदर्शना
(C) विशेषोक्ति (D) अप्रस्तुतप्रशंसा

68. 'देवी' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है-
(A) देवीन् (B) देवीम्
(C) दैवीः (D) देवीः

69. ''मुख्यार्थहतिः......'' क्या है-
(A) रसः (B) गुणः
(C) दोषः (D) वृत्तिः

70. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' यह कथन किसका है-
(A) क्षेमेन्द्र (B) कुन्तक
(C) वामन (D) भामह

71. सुमेलित करें
1. अलङ्कार सम्प्रदाय (क) क्षेमेन्द्र
2. वक्रोक्ति सम्प्रदाय (ख) भरतमुनि
3. औचित्य सम्प्रदाय (ग) आनन्दवर्धन
4. रस सम्प्रदाय (घ) भामह
5. ध्वनि सम्प्रदाय (ङ) कुन्तक
(A) 1.ङ 2.क 3.ग 4.घ 5.ख
(B) 1.क 2.ख 3.ग 4.ङ 5.घ
(C) 1.घ 2.ङ 3.क 4.ख 5.ग
(D) 1.घ 2.ग 3.ख 4.क 5.ङ

72. लक्षणलक्षणा का उदाहरण है-
(A) गङ्गायां घोषः (B) कुन्ताः प्रविशन्ति
(C) आयुर्घृतम् (D) गौर्वाहीकः

73 'गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः' यह किस अलङ्कार का उदाहरण है-
(A) उपमा (B) अनन्वय
(C) अर्थान्तरन्यास (D) समासोक्ति

74. ''महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः'' यह किस नायक का लक्षण है-
(A) धीरललित (B) धीरोदात्त
(C) धीरप्रशान्त (D) धीरोद्धत

75. दशरूपक के अनुसार नायिका के प्रमुख भेद हैं-
(A) 4 (B) 3
(C) 2 (D) 5

76. सात्त्विक भावों की संख्या है-
(A) 8 (B) 7
(C) 6 (D) 33

77. रौद्ररस का 'स्थायीभाव' है-
(A) उत्साह (B) जुगुप्सा
(C) क्रोध (D) विस्मय

78. साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ लक्षणा के कितने भेद मानते हैं-
(A) 8 (B) 6
(C) 33 (D) 80

79. संचारी भावों (व्यभिचारीभावों) की कुल संख्या है-
(A) 36 (B) 35
(C) 33 (D) 42

80. 'मृच्छकटिकम्' का नायक चारुदत्त किस कोटि का है-
(A) धीरोदात्त (B) धीरप्रशान्त
(C) धीरललित (D) धीरोद्धत

81. चारुदत्त के पुत्र रोहसेन का मिट्टी की गाडी से खेलना किस अङ्क में वर्णित है-
(A) षष्ठ अङ्क में (B) पञ्चम अङ्क में
(C) दशम अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

82. 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः' यह पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है-
(A) नलचम्पू (B) मुद्राराक्षस
(C) मृच्छकटिकम् (D) नीतिशतकम्

83. मृच्छकटिकम् के पञ्चम अङ्क का नाम है-
(A) दुर्दिन (B) प्रवहण-विपर्यय
(C) अलङ्कारन्यास (D) मदनिकाशर्विलक

84. ''अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्'' यह कथन किसका है-
(A) वसन्तसेना का (B) धूता का
(C) चारुदत्त का (D) मैत्रेय का

85. 'भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति'-यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है-
(A) नीतिशतकम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) नलचम्पू (D) गीतगोविन्दम्

86. 'व्यक्तिः' पद किस लिङ्ग में है-
(A) स्त्रीलिङ्ग (B) पुंलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) तीनों लिङ्गों में

87. शुद्ध शब्द का चयन करें -
(A) खातवान् (B) जागृतवान्
(C) गिलितवान् (D) उपर्युक्त सभी

88. 'हितवान्' में कौन सी धातु है-
(A) हा धातु (B) ह्वे धातु
(C) धा धातु (D) हृञ् धातु

67. (C)	68. (D)	69. (C)	70. (C)	71. (C)	72. (A)	73. (B)	74. (B)	75. (B)	76. (A)
77. (C)	78. (D)	79. (C)	80. (B)	81. (A)	82. (C)	83. (A)	84. (C)	85. (B)	86. (A)
87. (A)	88. (C)								

89. 'गुरुः त्वाम् आह्वयति' इसका कर्मवाच्य रूप होगा-
(A) गुरुणा त्वाम् आह्वसे (B) गुरुवेण त्वम् आह्वयसे
(C) गुरुणा त्वम् आहूयसे (D) गुरुणा त्वम् आहुयसे

90. कर्मवाच्य की क्रिया नही है-
(A) पठ्येत (B) अपठ्यत
(C) अपाठीत् (D) अपाठि

91. कर्मवाच्य की शुद्ध क्रियापद है-
(A) इच्छ्यते (B) तिष्ठ्यते
(C) यच्छ्यते (D) पीयते

92. 'अध्यापकः छात्रं प्रश्नं पृच्छति' इसका कर्मवाच्य होगा-
(A) अध्यापकेन छात्रं प्रश्नं पृच्छ्यते
(B) अध्यापकेन छात्रः प्रश्नं पृच्छ्यते
(C) अध्यापकेन छात्रं प्रश्नः पृच्छ्यते
(D) अध्यापकेन छात्रः प्रश्नः पृच्छ्यते

93. 'विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा' यहाँ 'विचिन्तयन्ती' पद में कौन सा स्त्रीप्रत्यय है-
(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) ङीन् (D) ति

94. 'वैनतेयः' में प्रत्यय है-
(A) अण् (B) यञ्
(C) ढक् (D) छ

95. 'देयम्' में 'यत्' प्रत्यय किस सूत्र से है-
(A) गर्गादिभ्यो यञ् (B) अचो यत्
(C) कृत्याः (D) ऋहलोर्ण्यत्

96. 'कार्यम्-कारकम् -कर्त्ता ' में क्रमशः प्रत्यय है-
(A) यत् -ण्वुल् -तिप् (B) ण्यत् -अक -ति
(C) ण्वुल् -तृच् ण्यत् (D) ण्यत् -ण्वुल्-तृच्

97. 'वाक् +ईशः =वागीशः' में सन्धि किस सूत्र से हुई है-
(A) झलां जशोऽन्ते (B) स्तोः श्चुना श्चुः
(C) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (D) खरि च

98. 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इस सूत्र का उदाहरण है-
(A) शान्तः (B) अङ्कितः
(C) कुण्ठितः (D) उपर्युक्त सभी

99. व्याकरण की पञ्चसन्धियों के अलावा और किस काव्यविधा में पञ्चसन्धि की चर्चा है-
(A) नाटक में (B) महाकाव्य में
(C) चम्पूकाव्य में (D) नीतिकथाओं में

100. 'दुष्टः' का सन्धि विच्छेद होगा-
(A) दुष् +टः (B) दुस् +तः
(C) दुष् +तः (D) दुश् +तः

101. 'र्' के बाद 'र्' हो तो पहले 'र्'का लोप किस सूत्र से हो जाता है-
(A) ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः (B) संयोगान्तस्य लोपः
(C) तस्य लोपः (D) रो रि

102. एकोनसप्ततिः को अङ्कों में क्या कहेंगे-
(A) 69 (B) 79
(C) 71 (D) 70

103. 'त्रि' से लेकर 'अष्टादशन्' तक सारे रूप किस वचन में चलेंगे-
(A) एकवचन में (B) द्विवचन में
(C) बहुवचन में (D) तीनों वचनों में

104. 'इदम्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप होगा-
(A) अमूः (B) इमान्
(C) इमाः (D) अमी

105. तृतीया विभक्ति का रूप नही है-
(A) सरिता (B) वाचा
(C) जगता (D) जनता

106. लोट्लकार का रूप नहीं है-
(A) दोहाम (B) रोदाव
(C) हरत (D) दद्याम

107. बहुवचनान्त रूप है-
(A) कुरुते (B) कुर्वते
(C) कुर्यात् (D) इनमें से कोई नहीं

108. 'गङ्गा के समीप संस्कृतगङ्गा है' इसका अनुवाद होगा-
(A) गङ्गायाः समीपे संस्कृतगङ्गाः अस्ति।
(B) गङ्गा अभितः संस्कृतगङ्गा अस्ति।
(C) गङ्गां निकषा संस्कृतगङ्गा अस्ति।
(D) गङ्गाम् अन्तरा संस्कृतगङ्गा वर्तते।

109. 'संस्कृत के बिना संस्कृति नही है' इसका पद्यात्मक अनुवाद होगा-
(A) विना संस्कृतं नैव संस्कृतिः।
(B) ऋते संस्कृतात् नास्ति संस्कृतिः।
(C) पृथक् संस्कृतं नास्ति संस्कृतिः।
(D) उपर्युक्त सभी

89. (C) 90. (C) 91. (D) 92. (B) 93. (A) 94. (C) 95. (B) 96. (D) 97. (A) 98. (D)
99. (A) 100. (C) 101. (D) 102. (A) 103. (C) 104. (C) 105. (D) 106. (D) 107. (B) 108. (C)
109. (D)

110. 'आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते'' यह लक्षण है-
(A) विषकम्भक का (B) प्रवेशक का
(C) नान्दी का (D) मङ्गलाचरण का

111. दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है-
(A) षष्ठ अङ्क में (B) तृतीय अङ्क में
(C) सप्तम अङ्क में (D) द्वितीय अङ्क में

112. 'पश्चात्ताप अङ्क' के नाम से अभिज्ञानशाकुन्तलम् का कौन सा अङ्क प्रसिद्ध है-
(A) षष्ठ (B) पञ्चम
(C) सप्तम (D) तृतीय

113. दुर्वासा के शाप का प्रभाव अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में दिखलाई पडता है-
(A) चतुर्थ अङ्क में (B) पञ्चम अङ्क में
(C) षष्ठ अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

114.'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः, सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्' यह किस ग्रन्थ का भरतवाक्य है-
(A) मृच्छकटिकम् का (B) उत्तररामचरितम् का
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् का (D) स्वप्नवासवदत्तम् का

115. 'गालव'किसका शिष्य है-
(A) कण्व का (B) विश्वामित्र का
(C) मारीच का (D) वशिष्ठ का

116. सांख्य के अनुसार करण कितने होते हैं-
(A) 11 (B) 13
(C) 25 (D)16

117. सांख्य के अनुसार त्रिगुणों की साम्यावस्था है-
(A) प्रकृति (B) पुरुष
(C) सृष्टि (D) इनमें से कोई नही

118. वेदान्त के 'शमादिषट्कसम्पत्ति' में नही गिना जाता है-
(A) समाधान (B) उपरति
(C) श्रद्धा (D) विश्वास

119. 'ज्योतिष्टोम' आदि कैसा कर्म है-
(A) काम्य कर्म (B) प्रायश्चित्त कर्म
(C) निषिद्ध कर्म (D) उपासना कर्म

120. 'क्षिप्रभाषण' के द्वारा भाषा में होने वाला परिवर्तन है-
(A) इसने-इन्ने (B) स्कूल-इस्कूल
(C) सामाजवादी पार्टी-सपा (D) उपर्युक्त सभी

121. 'राजदन्ताः' यहाँ समास है-
(A) षष्ठी तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) केवल समास

122. 'अध्यात्मम्' में समासान्त प्रत्यय है-
(A) टच् (B) अच्
(C) षच् (D) कप्

123. 'अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उदधृत है-
(A) किरातार्जुनीयम् से (B) शिशुपालवधम् से
(C) वाल्मीकिरामायणम् से (D) महाभारतम् से

124. 'ध्वनिनियम' के सन्दर्भ में प्रसिद्ध भाषाशास्त्री नही है-
(A) ग्रिम (B) ग्रासमान
(C) वर्नर (D) रूसो

125. भाषा के उद्भव के विकास में 'संकेत सिद्धान्त' के प्रतिपादक हैं-
(A) रूसो (B) जॉन हॉग
(C) क्रोचे (D) गार्डिनर

110. (C)	111. (C)	112. (A)	113. (B)	114. (C)	115. (C)	116. (B)	117. (A)	118. (D)	119. (A)
120. (A)	121. (A)	122. (A)	123. (C)	124. (D)	125. (A)				

प्रवक्ता चयनपरीक्षा (PGT) आदर्शप्रश्नपत्र–3

1. त्रिविक्रमभट्ट का स्थितिकाल माना जाता है-
(A) दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध (B) दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध (C) ग्यारहवीं शताब्दी (D) बारहवीं शताब्दी

2. नलचम्पू काव्य का नायक है-
(A) धीरोदात्त (B) धीरललित
(C) धीरोद्धत (D) धीरप्रशान्त

3. नलचम्पू के मङ्गलाचरण में देव-स्तुति का सही क्रम है-
(A) ब्रह्मा-विष्णु-महेश (B) सरस्वती-शिव-इन्द्र
(C) शिव-पार्वती-सरस्वती (D) शिव-कामदेव-सरस्वती

4. 'पञ्चपात्रम्' पद में समास है-
(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व
(C) द्विगु (D) कर्मधारय

5. समास में उपसर्जन का प्रयोग होता है-
(A) पूर्व में (B) मध्य में
(C) अन्त में (D) कहीं भी

6. 'अनुरूपम्' में समास है-
(A) योग्यता अर्थ में (B) वीप्सा अर्थ में
(C) पदार्थाऽनतिवृत्ति अर्थ में (D) सादृश्य अर्थ में

7. 'अपुत्रः' में समास है-
(A) केवल समास (B) नञ् समास
(C) अव्ययीभाव समास (D) बहुव्रीहि समास

8. निम्न में से कौन सा कथन गलत है-
(A) द्वन्द्वसमास में 'च' के चार अर्थ बताये गये हैं।
(B) समुच्चय और अन्वाचय में द्वन्द्वसमास नही होता है।
(C) इतरेतरयोग और समाहार में द्वन्द्वसमास होता है।
(D) द्वन्द्वसमास केवल द्विवचन में होता है।

9. 'आमुक्तेः संसारः' उदाहरण है-
(A) चतुर्थी विभक्ति का (B) द्वितीया विभक्ति का
(C) मर्यादा अर्थ का (D) अभिविधि अर्थ का

10. 'षष्ठी चानादरे' सूत्र का उदाहरण है-
(A) चर्मणि द्वीपिनं हन्ति।
(B) गोषु दुह्यमानासु गतः।
(C) सत्सु तरत्सु असन्त आसते।
(D) रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत्

11. 'प्रातिपदिक' में कौन सी विभक्ति आती है-
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

12. कर्म का अभिधान प्रायः कितने प्रकार से होता है-
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) छः

13. 'गां दोग्धि पयः' में अकथित कर्म है-
(A) गाम् (B) पयः
(C) दोनों (D) कोई नहीं

14. 'ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते' में किस सूत्र से 'ब्रह्मणः' की अपादान संज्ञा हुई है-
(A) भुवः प्रभवः (B) ध्रुवमपायेऽपादानम्
(C) जनिकर्तुः प्रकृतिः (D) पराजेरसोढः

15. 'असूया' का अर्थ है-
(A) अमर्ष (B) अपकार
(C) द्रोह (D) गुणों में दोष निकालना

16. निम्न में से कौन सा भिन्न प्रकार का है-
(A) मृच्छकटिकम् -शूद्रक
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् -कालिदास
(C) शिशुपालवधम् -माघ
(D) उत्तररामचरितम् - भवभूति

17. 'ध्यानयोग' (आत्मसंयमयोग) गीता का कौन सा अध्याय है-
(A) छठवाँ (B) बारहवाँ
(C) सत्रहवाँ (D) पन्द्रहवाँ

18. राजा दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को दी गयी अँगूठी उसे पुनः किस अङ्क में प्राप्त होती है-
(A) पञ्चम अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) षष्ठ अङ्क में

19. 'शकुन्तला को दुर्वासा ने श्राप दिया' यह जानकारी सबसे पहले किसे होती है-
(A) प्रियंवदा को (B) अनसूया को
(C) कण्व को (D) गौतमी को

1. (A)	**2. (B)**	**3. (D)**	**4. (C)**	**5. (A)**	**6. (A)**	**7. (D)**	**8. (D)**	**9. (C)**	**10. (D)**
11. (A)	**12. (C)**	**13. (A)**	**14. (C)**	**15. (D)**	**16. (C)**	**17. (A)**	**18. (D)**	**19. (A)**	

20. 'यदि राजा पहचानने से इंकार करे तो उसे उसकी अँगूठी दिखाना' शकुन्तला को ऐसी सलाह कौन देती है-
(A) गौतमी (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) अनसूया और प्रियंवदा

21. 'न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम' यह वाक्य किसके बारे में है-
(A) विश्वामित्र के (B) कण्व के
(C) शकुन्तला के (D) शार्ङ्गरव के

22. 'प्रियङ्गुमञ्जरी' किस ग्रन्थ का स्त्रीपात्र है-
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की
(B) उत्तररामचरितम् की
(C) मृच्छकटिकम् की
(D) नलचम्पू की

23. 'उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः' किस ग्रन्थ की उक्ति है-
(A) मृच्छकटिकम् की (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की
(C) नलचम्पू की (D) शिशुपालवधम् की

24. 'दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को दी गई अँगूठी शचीतीर्थ में गिरी' यह जानकारी प्राप्त होती है-
(A) शकुन्तला के कथन से (B) दुष्यन्त के कथन से
(C)शार्ङ्गरव के कथन से (D) गौतमी के कथन से

25. सांख्य के अनुसार किस प्रमाण की स्वतन्त्र सत्ता नहीं है-
(A) प्रत्यक्ष (B) अनुमान
(C) उपमान (D) शब्द

26. सांख्य के अनुसार 'विकृति' तत्त्व कितने हैं-
(A) पाँच (B) सात
(C) ग्यारह (D) सोलह

27. 'सत्कार्यवाद' की पुष्टि हेतु ईश्वरकृष्ण कितने हेतुओं का उल्लेख करते हैं-
(A) पाँच (B) आठ
(C) तीन (D) छः

28. सांख्यदर्शन का पुरुष नहीं है-
(A) चेतन (B) गुणरहित
(C) प्रसवधर्मी (D) अप्रसवधर्मी

29. ज्ञानेन्द्रियों में गणना नही होती-
(A) बुद्धि की (B) चक्षु की
(C) श्रोत्र की (D) त्वक् की

30. 'मुमुक्षुत्व' की गणना की गयी है-
(A) अनुबन्धचतुष्टय में (B) साधनचतुष्टय में
(C) षट्कसम्पत्ति में (D) पुरुषार्थचतुष्टय में

31. अज्ञान का स्वरूप नहीं है-
(A) अनिर्वचनीय (B) त्रिगुणात्मक
(C) ज्ञानविरोधी (D) अभावरूप

32. सही क्रम में है-
(A) आकाश-वायु-अग्नि-जल-पृथ्वी
(B) आकाश-अग्नि-वायु-जल-पृथ्वी
(C) आकाश-अग्नि-जल-वायु-पृथ्वी
(D) आकाश-जल-अग्नि-वायु-पृथ्वी

33. निम्न में से कौन सा सुमेलित नही है-
(A) प्रज्ञानं ब्रह्म-तैत्तिरीयोपनिषद्
(B) तत्त्वमसि-छान्दोग्योपनिषद्
(C) अहं ब्रह्मास्मि-बृहदारण्यकोपनिषद्
(D) अयमात्मा ब्रह्म-माण्डूक्योपनिषद्

34. भगवद्गीता का प्रारम्भ हुआ है-
(A) धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे .... श्लोक से
(B) क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ .... श्लोक से
(C) तं तथा कृपयाविष्टम् .... श्लोक से
(D) अत्र शूरा महेष्वासा .... श्लोक से

35. भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में श्लोकों की संख्या है-
(A) 72 (B) 73
(C) 74 (D) 75

36. 'भगवद्गीता' महाभारत के किस पर्व का हिस्सा है-
(A) उद्योगपर्व का (B) द्रोणपर्व का
(C) भीष्मपर्व का (D) कर्णपर्व का

37. महाभारत का मुख्य रस है-
(A) शान्तरस (B) वीररस
(C) रौद्ररस (D) करुणरस

38. चारुदत्त की सेविका है-
(A) रदनिका (B) मदनिका
(C) धूता (D) वसन्तसेना

39. 'संवाहक' निवासी है-
(A) अवन्तिका का (B) उज्जयिनी का
(C) काशी का (D) पाटलिपुत्र का

20. (D)	21. (B)	22. (D)	23. (B)	24. (D)	25. (C)	26. (D)	27. (A)	28. (C)	29. (A)
30. (B)	31. (D)	32. (A)	33. (A)	34. (A)	35. (A)	36. (C)	37. (A)	38. (A)	39. (D)

40. मृच्छकटिक है-
(A) शुद्धप्रकरण (B) सङ्कीर्णप्रकरण
(C) नाटक (D) सट्टक

41. शब्दों के एकार्थ नियन्त्रण हेतु भर्तृहरि ने कितने कारण बतायें हैं-
(A) आठ (B) ग्यारह
(C) बारह (D) चौदह

42. 'श्रीपरिचयाज्जडाऽपि भवन्त्यभिज्ञा' उदाहरण है-
(A) गूढव्यङ्ग्य का (B) अगूढव्यङ्ग्य का
(C) रुढिलक्षणा का (D) उपर्युक्त में से किसी का नहीं

43.'न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति' यह सूक्ति है-
(A) नीतिशतकम् की (B) मृच्छकटिकम् की
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की (D) शुकनासोपदेश की

44. 'अभिधावृत्तिमात्रिका' यह ग्रन्थ है-
(A) मम्मट का (B) आनन्दवर्धन का
(C) अभिनवगुप्त का (D) मुकुलभट्ट का

45. 'अनुप्रासः पञ्चधा ततः' यह कथन है-
(A) आचार्य विश्वनाथ का (B) आचार्य मम्मट का
(C) आचार्य दण्डी का (D) पण्डितराजजगन्नाथ का

46. 'शब्दपरिवृत्ति असहत्त्व' धर्म है-
(A) गुणों का (B) अर्थालङ्कारों का
(C) शब्दालङ्कारों का (D) रीतियों का

47. न्यायदर्शन के षोडश पदार्थों में प्रथम परिगणित है–
(A) संशय (B) प्रमेय
(C) तर्क (D) प्रमाण

48. तर्कभाषा के अनुसार हेतु हैं-
(A) त्रिविध (B) द्विविध
(C) पञ्चविध (D) षड्विध

49. 'सूर्या' में प्रत्यय है-
(A) टाप् (B) डाप्
(C) आप् (D) चाप्

50. दस हजार (10000) को कहते हैं-
(A) सहस्रम् (B) नियुतम्
(C) प्रयुतम् (D) अयुतम्

51. नारी में प्रत्यय है-
(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) ङीन् (D) ईन

52. 'शब्दोऽभिधेयः प्रमेयत्वात्' उदाहरण है-
(A) केवलान्वयी हेतु का (B) केवल व्यतिरेकी हेतु का
(C) अन्वय व्यतिरेकी हेतु का (D) असत्प्रतिपक्ष का

53. 'भवन्ति नापुण्यकृतौ मनीषिणः' सूक्ति का प्रयोग है-
(A) किरातार्जुनीयम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) शिशुपालवधम् में (D) नीतिशतकम् में

54. महाकवि माघ जाने जाते है-
(A) उपमा के लिए (B) अर्थगौरव के लिए
(C) पदलालित्य के लिए (D) उपर्युक्त सभी के लिए

55. प्रगृह्यसंज्ञा किसकी होती है-
(A) एकवचन की (B) द्विवचन की
(C) स्वर की (D) किसी की नहीं

56. ''न वेति विभाषा'' से 'वा' द्वारा क्या प्रदर्शित होता है-
(A) गुण (B) वृद्धि
(C) बाधा (D) विकल्प

57. 'इदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्' सूत्र किससे सम्बन्धित है-
(A) पररूपसन्धि से (B) पूर्वरूपसन्धि से
(C) अयादिसन्धि से (D) प्रकृतिभावसन्धि से

58. 'साध्वागच्छ' इसमें कौनसी सन्धि हुई है-
(A) दीर्घ सन्धि (B) यण् सन्धि
(C) गुण सन्धि (D) अयादि सन्धि

59. 'सभैषा' का सन्धिविच्छेद होगा-
(A) सभा + एषा (B) सभै + षाः
(C) सभ + एषाः (D) सभै + एषा

60. कः + गच्छति = होगा-
(A) का गच्छति (B) को गच्छति
(C) कर्गच्छति (D) क गच्छति

61. कर्त्रेषणा का सन्धिविच्छेद होगा-
(A) कर्त्रा + इषणा (B) कर्त्रे + इषणा
(C) कर्तृ + इषणा (D) कर्त्रे + ईषणा

62. चतुर्थी तत्पुरुष समास किसमें होगा -
(A) गोरक्षितम् (B) रामाश्रितः
(C) राजर्षिः (D) राजपुरुषः

63. 'मातृपुत्रौ' यहाँ कौन सा समास होगा-
(A) केवलसमास (B) द्विगुसमास
(C) द्वन्द्वसमास (D) बहुव्रीहिसमास

40. (B)	**41. (D)**	**42. (B)**	**43. (B)**	**44. (D)**	**45. (A)**	**46. (C)**	**47. (D)**	**48. (A)**	**49. (D)**
50. (D)	**51. (C)**	**52. (A)**	**53. (B)**	**54. (D)**	**55. (B)**	**56. (D)**	**57. (D)**	**58. (B)**	**59. (A)**
60. (B)	**61. (A)**	**62. (A)**	**63. (C)**						

64. 'द्वादश' पद में कौन सा समास होगा-
(A) द्वन्द्व (B) अव्ययीभाव
(C) कर्मधारय (D) द्विगु

65. यहाँ 'तद्धितप्रत्यय' का उदाहरण है-
(A) गोमान् (B) शयानः
(C) गतिः (D) पचन्

66. 'पच् + घञ्' क्या होगा-
(A) पाकः (B) पाचः
(C) पचनम् (D) पक्वम्

67. 'सा पत्रं लेखितुम् इच्छति'-इसको कहेंगे-
(A) सा पत्रं लिखिषति (B) सा पत्रं लिखिक्षति
(C) सा पत्रं लेलिखति (D) सा पत्रं लिलिखिषति

68. 'दा + शतृ'- इसका रूप क्या होगा-
(A) ददानः (B) ददन्
(C) ददत् (D) दद्यन्

69. 'लक्ष्मी: अस्य/अस्मिन् वा अस्तीति'-इसका रूप होगा-
(A) लक्ष्मीवान् (B) लक्ष्मीमान्
(C) लक्ष्मीपः (D) लक्ष्मीशः

70. 'ग्रह्' धातोः 'ण्यत्' प्रत्यय युक्त रूप होगा-
(A) ग्राह्यति (B) ग्रह्यम्
(C) ग्राह्यम् (D) ग्रह्यः

71. आचार्य विश्वनाथ शब्दालङ्कारों का वर्णन करते है-
(A) नवें उल्लास में (B) नवें परिच्छेद में
(C) दसवें परिच्छेद में (D) नवें और दसवें परिच्छेद में

72. गुणः अस्य अस्ति इति-
(A) गुणज्ञः (B) गुणीः
(C) गुणवान् (D) गुणिः

73. 'तपस्' शब्द का तृतीया बहुवचन होगा-
(A) तपोभिः (B) तपसाभिः
(C) तपसैः (D) तपसाभ्यां

74. 'वाक्' शब्द का तृतीया एकवचन का रूप होगा-
(A) वाचेन (B) वागेन
(C) वाचा (D) वाच्या

75. 'अप्' शब्द का द्वितीया बहुवचन रूप होगा-
(A) अपाः (B) आपः
(C) अपः (D) अपान्

76. 'वारि' शब्द का द्वितीया बहुवचन रूप होगा-
(A) वारिम् (B) वारीः
(C) वारीन् (D) वारीणि

77. 'महिमन्' शब्द का प्रथमा एकवचन का रूप होगा-
(A) महिमा (B) महिमान्
(C) महिमन् (D) महिमानः

78. 'शिशु' शब्द का सप्तमी एकवचन होगा-
(A) शिशवे (B) शिशुनि
(C) शिशौ (D) शिश्वायाम्

79. चारुदत्त के घर से बसन्तसेना के आभूषणों की चोरी करने वाला है-
(A) आर्यक (B) शर्विलक
(C) पालक (D) चन्दनक

80. यहाँ शुद्ध वाक्य कौन सा होगा-
(A) तौ पठताम् (B) ते पठति
(C) सः पठथः (D) ते पठित

81. 'ज्ञा' धातु लोट् लकार उ.पु. बहुवचन होगा-
(A) जानीत् (B) जानाव
(C) जानाम (D) ज्ञाताम

82. 'दा' धातु लोट्लकार, मध्यमपुरुष एकवचन होगा-
(A) ददातु (B) ददा
(C) देहि (D) दद

83. 'भी' धातु लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन होगा-
(A) बीभ्यन्ति (B) बिभेति
(C) बिभ्यन्ति (D) बिभ्यति

84. यदि अयं पूर्वमेव जानाति तर्हि सर्वान् ......
(A) ज्ञापयेत्
(B) ज्ञानीयं
(C) ज्ञापितवान्
(D) ज्ञापयिष्यमि

85. 'जुहोमि' हु-धातु का यह किस लकार का रूप है-
(A) लुट् (B) लिट्
(C) लट् (D) लिङ्

86. 'हन्' धातु लोट्लकार म. पु. एकवचन होगा-
(A) हन्तु (B) हतन्तु
(C) जहि (D) हनन्तु

64. (A)	**65. (A)**	**66. (A)**	**67. (D)**	**68. (C)**	**69. (A)**	**70. (C)**	**71. (C)**	**72. (C)**	**73. (A)**
74. (C)	**75. (C)**	**76. (D)**	**77. (A)**	**78. (C)**	**79. (B)**	**80. (A)**	**81. (C)**	**82. (C)**	**83. (D)**
84. (A)	**85. (C)**	**86. (C)**							

87. शुद्ध वाक्य क्या है-
(A) भूपत्यै स्वस्ति (B) भूपत्ये स्वस्ति
(C) भूपतिं स्वस्ति (D) भूपतये स्वस्ति

88. शुद्ध वाक्य क्या है-
(A) सिंहेन बालः बिभ्यति (B) सिंहाय बालः बिभ्यति
(C) सिंहात् बालः बिभ्यति (D) सिंहात् बालः बिभेति

89. शुद्ध वाक्य क्या है-
(A) सीतया गीतां पठ्यते (B) सीतया गीता पठति
(C) सीतया गीता पठयते (D) सीतया गीता पठ्यते

90. शुद्ध वाक्य क्या है-
(A) गुरवे प्रश्नं पृच्छति (B) गुरोः प्रश्नं पृच्छति
(C) गुरुं प्रश्नं पृच्छति (D) गुरुणा प्रश्नं पृच्छति

91. शुद्ध कर्मवाच्य होगा-
(A) सर्वे विद्वासं पूजयन्ति (B) सर्वैः विद्वान् पूज्यते
(C) सर्वैः विद्वान् पूज्यन्ते (D) सर्वेण विद्वान् पूज्यन्ते

92. 'अस्माभिः स्मर्यते' कर्तृवाच्य क्या होगा-
(A) अस्माभिः स्मर्यन्ते (B) वयं स्मरामः
(C) अहं भवनं गच्छथ (D) त्वं भवनं गच्छसि

93. सभी लिङ्गों में किसका रूप एकसमान ही रहता है-
(A) प्रातिपादिक (B) पद
(C) धातु (D) अव्यय

94. 'ससखि' में कौन सा अव्यय है-
(A) सह (B) साकम्
(C) समम् (D) सार्धम्

95. 'नीरसम्' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है-
(A) निर् (B) नि
(C) नीर् (D) निस्

96. 'सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः' इस महाकाव्य लक्षण के प्रस्तोता आचार्य हैं-
(A) आचार्य दण्डी
(B) विश्वनाथकविराज
(C) आचार्य मम्मट
(D) पण्डितराज जगन्नाथ

97. मेघदूतम् की नायिका है-
(A) साधारण (B) परकीया
(C) अभिसारिका (D) स्वकीया

98. पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति हेतु इन्द्रकील पर तपस्या करने वाला है-
(A) अर्जुन (B) युधिष्ठिर
(C) भीम (D) किरात

99. भारवि की कविता पर प्रभाव पड़ा है-
(A) कालिदास की कविता का (B) माघ की कविता का
(C) बाण की कादम्बरी का (D) श्रीहर्ष के नैषध का

100. भारवि की काव्यप्रतिभा को बाहर से कठोर और अन्दर से रसपेशल किसने कहा है-
(A) मल्लिनाथ (B) धनिक
(C) लक्ष्मीधर (D) विश्वनाथ

101. कठोर भूमि पर कौन सोते हैं-
(A) नकुल-सहदेव (B) भीम-नकुल
(C) दुष्यन्त-शकुन्तला (D) दुर्योधन-दुःशासन

102. बृहत्त्रयी से संकेतित महाकाव्य है-
(A) रामायण, महाभारत, गीता
(B) किरातार्जुनीयम् , शिशुपालवधम् , नैषधम्
(C) रघुवंशम् , मेघदूतम् , कुमारसम्भवम्
(D) नैषधम् , रघुवंशम् , जाम्बवतीविजयम्

103. शिशुपालवधम् की सर्ग/श्लोक संख्या है-
(A) 20/1650 (B) 18/2000
(C) 22/2828 (D) 18/1040

104. शिशुपाल के वधकर्ता हैं-
(A) अर्जुन (B) भीम
(C) श्रीकृष्ण (D) बलराम

105. द्वारकाधीश के पास इन्द्र का सन्देश पहुँचाने वाले हैं-
(A) नारद (B) मातलि
(C) जयन्त (D) अग्नि

106. दमयन्ती के पिता हैं-
(A) कुण्डिननरेश भीम (B) अर्जुन
(C) युधिष्ठिर (D) नल

107. कादम्बरी का उपजीव्य है-
(A) कथासरित्सागर (B) वासवदत्ता
(C) बृहत्कथा (D) शूद्रककथा

108. श्लेष का सर्वोत्कृष्ट गद्यकाव्य है-
(A) कादम्बरी (B) बृहत्कथा
(C) वासवदत्ता (D) इनमें से कोई नहीं

**87. (D) 88. (D) 89. (D) 90. (C) 91. (B) 92. (B) 93. (D) 94. (A) 95. (A) 96. (B)
97. (D) 98. (A) 99. (A) 100. (A) 101. (A) 102. (B) 103. (A) 104. (C) 105. (A) 106. (A)
107. (C) 108. (C)**

109. कादम्बरी में वर्णन नहीं हैं-
(A) अच्छोद सरोवर का (B) पम्पा सरोवर का
(C) शाल्मली वृक्ष का (D) मारीचि आश्रम का

110. 'कादम्बरी' का पर्याय है-
(A) देवी (B) भगवती
(C) मदिरा (D) सुन्दरी

111. पुण्डरीक की माता है-
(A) लक्ष्मी (B) महालक्ष्मी
(C) गौरी (D) मदिरा

112. बाण की मृत्यु के बाद शेष कादम्बरी की रचना करने वाले कौन हैं-
(A) पुलिन्द (भूषण) (B) चित्रभानु
(C) गणपति (D) पाशुपत

113. उज्जयिनी का वह राजा जिसे चन्द्रापीड का पिता होने का गौरव प्राप्त है-
(A) तारापीड (B) शुकनास
(C) चित्ररथ (D) विक्रमादित्य

114. जरद्द्रविण धार्मिक से सम्बद्ध ग्रन्थ है-
(A) स्वप्नवासवदत्तम् (B) कादम्बरी
(C) दशकुमारचरितम् (D) मृच्छकटिकम्

115. 'नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात् पञ्चसन्धिसमन्वितम्' इस नाटक लक्षण के प्रस्तुतकर्ता आचार्य हैं-
(A) मम्मट (B) जगन्नाथ
(C) दण्डी (D) विश्वनाथ

116. किसी नाटक के मध्य अन्य नाटक की योजना है-
(A) महानाटक (B) भरतनाट्यम्
(C) गर्भनाटक (D) नाटकाभास

117. नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' से अभिप्रेत है-
(A) बैल (B) नन्दपुत्री
(C) नवनन्द की दासी (D) मङ्गलाचरण

118. अन्तःपुर की रक्षा के लिए नियुक्त सत्यवादी, वृद्ध एवं विवेकशील व्यक्ति है-
(A) प्रतीहारी (B) कञ्चुकी
(C) सदाचारी (D) ब्रह्मचारी

119. 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः' इस भरतवाक्य से युक्त रचना है-
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) इनमें से कोई नहीं

120. 'अग्निगर्भा शमी' के समान है-
(A) शकुन्तला (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) हंसपदिका

121. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का विदूषक है-
(A) मैत्रेय (B) माढव्य
(C) वसन्तक (D) इनमें से कोई नहीं

122. 'भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र' इस सूक्ति से सम्बद्ध ग्रन्थ है-
(A) मृच्छकटिकम् (B) नैषधम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) रघुवंशम्

123. दुष्यन्त को देवासुर संग्राम की सूचना देने वाला है-
(A) मातलि (B) इन्द्र
(C) नारद (D) दुर्मुख

124. शर्विलक की पत्नी है-
(A) वसन्तसेना (B) मदनिका
(C) धूता (D) रदनिका

125. 'वेश्या श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः' से युक्त है-
(A) नैषधम् (B) शिशुपालवधम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) रघुवंशम्

109. (D) 110. (C) 111. (A) 112. (A) 113. (A) 114. (B) 115. (D) 116. (C) 117. (D) 118. (B)
119. (A) 120. (A) 121. (B) 122. (C) 123. (A) 124. (B) 125. (C)

संस्कृत-सामान्यज्ञान-प्रश्नाः

1. सुमेलितं क्रियताम्–
ध्येयवाक्यम्-(Motto) संस्था (Institute)

(1) बहुजनहिताय बहुजनसुखाय — (क) सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः
(2) कृण्वन्तो विश्वमार्यम् — (ख) दूरदर्शनम्
(3) विद्ययाऽमृतमश्नुते — (ग) आर्यसमाजः
(4) श्रुतं मे गोपाय — (घ) काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालयः
(5) सत्यं शिवं सुन्दरम् — (ङ) ऑल इण्डिया रेडियो

(A) 1 (ङ) 2 (क) 3 (ग) 4 (ख) 5 (घ)
(B) 1 (क) 2 (ग) 3 (ख) 4 (घ) 5 (ङ)
(C) 1 (ङ) 2 (ग) 3 (घ) 4 (क) 5 (ख)
(D) 1 (ख) 2 (ग) 3 (घ) 4 (क) 5 (ङ)

2. ''नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्'' कस्य ग्रन्थस्य मङ्गलपद्यम् एतत्?
(A) अष्टाध्याय्याः (B) महाभारतस्य
(C) वाल्मीकिरामायणस्य (D) श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य

3. श्रीमद्भगवद्गीता महाभारते कुत्र वर्णितम्–
(A) भीष्मपर्वणि (25-42 अध्यायेषु)
(B) भीष्मपर्वणि (23-40 अध्यायेषु)
(C) भीष्मपर्वणि (20-37 अध्यायेषु)
(D) भीष्मपर्वणि (40-57 अध्यायेषु)

4. किशोरावस्थायामेव 'पुनरपि जननं पुनरपि मरणं ....' इति संस्कृतगीतस्य रचयिता कः?
(A) आदिशङ्कराचार्यः (B) महर्षि-दयानन्दः
(C) विवेकानन्दः (D) बालगङ्गाधरतिलकः

5. भारतसर्वकारेण ''संस्कृतवर्षम्'' कदा उद्घोषितम्?
(A) सन् 1999-2000 (B) सन् 2002-2003
(C) सन् 2001-2002 (D) सन् 2003-2004

6. 'विश्वसंस्कृतपुस्तकमेला' सर्वप्रथमं कुत्र आयोजितम्?
(A) नवदेहल्याम् (B) बेङ्गलूरुनगरे
(C) काश्याम् (D) कलकत्तानगरे

7. षोडश्यां लोकसभायां कति संसद्सदस्याः संस्कृतेन शपथग्रहणं कृतवन्तः?
(A) 30 (B) 34
(C) 36 (D) 38

8. लोकसभायां कः संस्कृतेन शपथग्रहणं न कृतवान्?
(A) डॉ. हर्षवर्धनः (B) राजनाथसिंहः
(C) सुश्री उमाभारती (D) श्रीमती सुषमास्वराज

9. प्रधानमन्त्री नरेन्द्रमोदी कस्मिन् दिनाङ्के शपथग्रहणं कृतवान्?
(A) 16 मई 2014 (B) 18 मई 2014
(C) 06 मई 2014 (D) 26 मई 2014

10. सुमेलितं करोतु–

देवः	**उपनाम**
(1) श्रीरामः	(क) चक्रपाणिः
(2) बलभद्रः	(ख) कोदण्डपाणिः
(3) यमः	(ग) त्रिशूलपाणिः
(4) शिवः	(घ) पाशपाणिः
(5) विष्णुः	(ङ) मुसलपाणिः

(A) (1) ग (2) घ (3) ङ (4) क (5) ख
(B) (1) ख (2) ङ (3) घ (4) ग (5) क
(C) (1) ङ (2) ख (3) ग (4) क (5) घ
(D) (1) ख (2) ङ (3) घ (4) क (5) ग

11. ''वेदे विज्ञानम् अस्ति'' इति कः वेदभाष्यकरः सर्वप्रथम् उद्घोषितवान्?
(A) महर्षि-दयानन्दः (B) महर्षिः अरविन्दः
(C) विनोबाभावे (D) रविन्द्रनाथटैगोरः

12. सचित्रा बालानां मासिकी पत्रिका का?
(A) लोकसंस्कृतम् (B) संस्कृतमञ्जरी
(C) संस्कृतचन्दमामा (D) सम्भाषणसन्देशः

13. सम्भाषणसन्देशपत्रिका कुतः प्रकाशिता भवति?
(A) नवदेहलीतः (B) बेङ्गलूरुतः
(C) हरिद्वारतः (D) काशीतः

1. (C) 2. (B) 3. (A) 4. (A) 5. (A) 6. (B) 7. (B) 8. (B) 9. (D) 10. (B) 11. (A) 12. (C) 13. (B)

14. संस्कृतसम्भाषणाय संस्कृतविकासाय च 35 वर्षेभ्यः या समाजे कार्यं करोति सा संस्था का?

(A) संस्कृतभारती (B) राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(C) संस्कृतविकाशपरिषद् (D) सार्वभौमसंस्कृतप्रचारसंस्थानम्

15. प्राचीनभारतस्य नालन्दाविश्वविद्यालयः कस्मिन् राज्ये स्थितः आसीत्?

(A) बिहारप्रान्ते (B) गुजरातप्रान्ते
(C) उत्तरप्रदेशे (D) बङ्गालप्रान्ते

16. आद्यशङ्कराचार्येण उत्तरदिशि कः मठः स्थापितः?

(A) बदरीमठः (B) द्वारकामठः
(C) शृङ्गेरीमठः (D) पुरीमठः

17. तत् पवित्रं स्थानं किं यत् इदानीं भारते अस्ति?

(A) मानसरोवरम् (B) कैलाशपर्वतः
(C) केदारनाथः (D) उपर्युक्तं सर्वम्

18. गणितक्षेत्रे विज्ञानक्षेत्रे संस्कृतज्ञानां योगदानं किम्?

(A) शून्यस्य (0) अन्वेषणम्
(B) आयुर्वेदवैद्यपद्धतिः
(C) अणुसिद्धान्तः, योगपद्धतिः च
(D) उपर्युक्तं सर्वम्

19. संस्कृतविश्वविद्यालयेन सह स्थानं योजयतु?

संस्कृतविश्वविद्यालयाः	**स्थानम्**
(1) सम्पूर्णानन्दसंस्कृत-विश्वविद्यालयः	(क) गान्धिनगरम्, गुजरातम्
(2) कालिदाससंस्कृत-विश्वविद्यालयः	(ख) जयपुरम्, राजस्थानम्
(3) जगद्गुरुरामानन्दसंस्कृत-विश्वविद्यालयः	(ग) वाराणसी, उत्तरप्रदेशः
(4) राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्-(मानितविश्वविद्यालयः)	(घ) रामटेक, महाराष्ट्रम्
(5) सोमनाथसंस्कृत-विश्वविद्यालयः	(ङ) नयीदिल्ली

(A) (1) ग (2) घ (3) क (4) ख (5) ङ
(B) (1) ग (2) क (3) ख (4) घ (5) ङ
(C) (1) क (2) ङ (3) ख (4) ग (5) घ
(D) (1) ग (2) घ (3) ख (4) ङ (5) क

20. भगवद्गीतायाः अनुवादः प्रथमतया आंग्लभाषया कः कृतवान्?

(A) सर् चार्ल्स विल्कन्स (B) कीथः
(C) ब्लूमफील्ड् (D) मैक्डानेल

21. अमरकोषस्य प्रथमतया अनुवादः कया भाषया कृतः?

(A) रसियनभाषया (B) जर्मनभाषया
(C) चीनीभाषया (D) अंग्रेजीभाषया

22. कस्यां तिथौ भारतं स्वतन्त्रम् अभवत्?

(A) आषाढ-अमावस्यायाम्
(B) श्रावणीपूर्णिमायाम्
(C) देवप्रबोधिनी-एकादश्याम्
(D) चैत्रप्रतिपदायाम्

23. 'पञ्चाङ्गम्' इत्यत्र पञ्च अङ्गानि कानि?

(A) तिथिः, वासरः, नक्षत्रम्, करणम्, योगः
(B) तिथिः, दिनम्, वर्षम्, नक्षत्रम्, योगः
(C) दिनम्, योगः, वासरः, नक्षत्रम्, ताराः
(D) वर्षम्, मासः, दिनम्, तिथिः, समयः

24. पातञ्जलयोगसूत्रस्य प्रथमं सूत्रं किम्?

(A) अथातो ब्रह्मजिज्ञासा (B) योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः
(C) अथ योगानुशासनम् (D) अथातो धर्मजिज्ञासा

25. 'पाइथागोरस्-सिद्धान्तः' इति प्रसिद्धसिद्धान्तः भारतीयग्रन्थे बहुपूर्वम् एव कुत्र प्रतिपादितः आसीत्?

(A) उपनिषद्ग्रन्थेषु (B) शुल्बसूत्रेषु
(C) व्याकरणग्रन्थेषु (D) निरुक्तग्रन्थेषु

26. सप्तर्षयेषु कः न गण्यते?

(A) भरद्वाजः (B) वशिष्ठः
(C) अगस्त्यः (D) जमदग्निः

27. महाभारतयुद्धं कति दिनानि प्राचलत्?

(A) 18 दिनानि (B) 8 दिनानि
(C) 10 दिनानि (D) 21 दिनानि

28. महाभारतयुद्धे कौरवपाण्डवयोः द्वयोः पक्षयोः सैन्यप्रमाणं किम्?

(A) एकादश अक्षौहिणी
(B) सप्त अक्षौहिणी
(C) अष्टादश अक्षौहिणी
(D) एकविंशतिः अक्षौहिणी

14. (A)	**15. (A)**	**16. (A)**	**17. (C)**	**18. (D)**	**19. (D)**	**20. (A)**	**21. (C)**	**22. (A)**	**23. (A)**
24. (C)	**25. (B)**	**26. (C)**	**27. (A)**	**28. (C)**					

29. सुमेलितं करोतु–

पतिः	पत्नी
(1) याज्ञवल्क्यः	(क) लोपामुद्रा
(2) वशिष्ठः	(ख) मेनका
(3) अगस्त्यः	(ग) अरुन्धती
(4) विश्वामित्रः	(घ) अहल्या
(5) गौतमः	(ङ) मैत्रेयी

(A) (1) ग (2) घ (3) ङ (4) क (5) ख
(B) (1) ङ (2) ग (3) क (4) घ (5) ख
(C) (1) ङ (2) ग (3) क (4) ख (5) घ
(D) (1) ङ (2) ग (3) घ (4) क (5) ख

30. संस्कृतस्य दैनिकसमाचारपत्रं किम्?
(A) सुधर्मा (B) नवप्रभातम्
(C) उपर्युक्तं द्वयमपि (D) किमपि नास्ति

31. भाषाविज्ञानस्य आद्याचार्यः कः स्वीक्रियते?
(A) महर्षियास्कः (B) आचार्यपाणिनिः
(C) पतञ्जलिः (D) कात्यायनः

32. 'संस्कृतदिवसः' कदा आचर्यते?
(A) कार्तिकपूर्णिमायाम्
(B) आषाढप्रतिपदायाम्
(C) देवप्रबोधिनी-एकादश्याम्
(D) श्रावणीपूर्णिमायाम्

33. आधुनिक-संस्कृत-कवयित्री का?
(A) विज्जिका (B) तिरुमलाम्बा
(C) पण्डिता क्षमाराव (D) सुभद्रा

34. इलाहाबाद-विश्वविद्यालयस्य संस्कृतविभागस्य प्राध्यापकः कः, यः सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य कुलपतिः अपि आसीत्?
(A) बाबूराम-सक्सेना (B) आद्याप्रसादमिश्रः
(C) जगन्नाथः (D) अभिराजराजेन्द्रमिश्रः

35. वर्तमानसम्वत्सरस्य नाम किम्?
(A) वैवस्वतः (B) प्लवङ्गः
(C) दुर्मुखः (D) कीलकः

36. भारतस्य सर्वप्रथमं संस्कृतचलचित्रस्य (film) नाम किम्?
(A) विवेकानन्दः (B) आदिशङ्कराचार्यः
(C) रामलीला (D) कृष्णलीला

37. 2001 जनगणनानुसारं संस्कृतमातृभाषिणां जनानां संख्या का?
(A) प्रायेण 14,000 (B) प्रायेण 16,000
(C) प्रायेण 20,000 (D) प्रायेण 25,000

38. भारतस्य प्रथमसंस्कृतविश्वविद्यालयः कः?
(A) राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नवदेहली
(B) कामेश्वरसिंह-दरभंगा-संस्कृतविश्वविद्यालयः, बिहारम्
(C) सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी
(D) कर्णाटक-संस्कृतविश्वविद्यालयः

39. लिङ्गभेदेन पृथक्रूपं अन्विषतु?
(A) घर्मः (B) मर्मः
(C) धर्मः (D) कूर्मः

40. सुमेलितं करोतु

ग्रन्थः	ग्रन्थकारः
(1) लीलावती	(क) महर्षि-भरद्वाजः
(2) वैमानिकशास्त्रम्	(ख) नागार्जुनः
(3) रसरत्नाकरः	(ग) वाग्भटः
(4) अष्टाङ्गसंग्रहः	(घ) महर्षि-पराशरः
(5) वृक्षायुर्वेदः	(ङ) भास्कराचार्यः

(A) (1) ङ (2) क (3) ख (4) ग (5) घ
(B) (1) क (2) ख (3) ग (4) ङ (5) घ
(C) (1) घ (2) ग (3) ख (4) क (5) ङ
(D) (1) ङ (2) घ (3) क (4) ख (5) ग

41. भगवता विष्णुना सह सम्बन्धं सुमेलयतु–

सारणी 1	सारणी 2
(1) मणिः	(क) पाञ्चजन्यः
(2) शङ्खः	(ख) दारुकः
(3) सारथिः	(ग) कौस्तुभम्
(4) वाहनम्	(घ) लक्ष्मीः
(5) भार्या	(ङ) गरुणः

(A) (1) ग (2) क (3) घ (4) ङ (5) ख
(B) (1) क (2) ग (3) घ (4) ङ (5) ख
(C) (1) ग (2) क (3) ख (4) ङ (5) घ
(D) (1) ग (2) ख (3) क (4) ङ (5) घ

29. (C) 30. (C) 31. (A) 32. (D) 33. (C) 34. (D) 35. (D) 36. (B) 37. (A) 38. (C) 39. (C) 40. (A) 41. (C)

42. संविधानस्य कः अनुच्छेदः यः संस्कृतस्य विशिष्टं महत्त्वं द्योतयति?
(A) अनुच्छेद-343 (B) अनुच्छेद-351
(C) अनुच्छेद–355 (D) अनुच्छेद-361

43. ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' इति ध्येयवाक्यं (Motto) कस्य देशस्य अस्ति?
(A) चीनदेशस्य (B) नेपालदेशस्य
(C) रसियनदेशस्य (D) भारतदेशस्य

44. आकाशवाण्यां संस्कृतसमाचार-वाचकः कः?
(A) बलदेवोपाध्यायः (B) चिन्मयानन्दसागरः
(C) बलदेवानन्दसागरः (D) बालेन्द्रशेखरः

45. आकाशवाण्यां प्रातः संस्कृतसमाचारः कदा प्रसारितं भवति?
(A) 6.30 am (B) 6.50 am
(C) 6.45 am (D) 6.55 am

46. कति संस्कृतविश्वविद्यालयाः सन्ति?
(A) 16 (B) 17
(C) 25 (D) 20

47. कति संस्कृतपाठशालाः सन्ति?
(A) प्रायेण 5000 (B) प्रायेण 10,000
(C) प्रायेण 9000 (D) प्रायेण 11,000

48. कति छात्राः संस्कृतं पठन्ति?
(A) प्रायेण 2 कोटिः (दो करोड)
(B) प्रायेण 3 कोटिः (तीन करोड)
(C) प्रायेण 5 कोटिः (पाँच करोड)
(D) प्रायेण 6 कोटिः (छः करोड)

49. संस्कृतशोधच्छात्राः कति सन्ति?
(A) प्रायेण 10,000 छात्राः
(B) प्रायेण 5000 छात्राः
(C) प्रायेण 4000 छात्राः
(D) प्रायेण 11,000 छात्राः

50. कस्य राज्यस्य द्वितीयराजभाषा संस्कृतम् अस्ति?
(A) केरलस्य (B) तमिलनाडुराज्यस्य
(C) उत्तराखण्डस्य (D) मध्यप्रदेशस्य

51. संस्कृतसम्भाषणसमर्थाः कति जनाः स्युः?
(A) प्रायेण एककोटिः (एक करोड)
(B) प्रायेण पञ्चकोटिः (पाँच करोड)
(C) प्रायेण द्विकोटिः (दो करोड)
(D) प्रायेण दशकोटिः (दश करोड)

52. चतुर्दशदेशेषु प्रायेण एकलक्षजनाः प्रतिमासं कां संस्कृतपत्रिकां पठन्ति?
(A) संस्कृतमञ्जरी (B) संस्कृतमञ्जूषा
(C) सम्भाषणसन्देशः (D) जयतु संस्कृतम्

53. कति संस्कृतगृहाणि सन्ति?
(A) प्रायेण 10,000 गृहाणि
(B) प्रायेण 5000 गृहाणि
(C) प्रायेण 1000 गृहाणि
(D) प्रायेण 11,000 गृहाणि

54. 'संस्कृतग्रामः' नास्ति–
(A) कर्नाटके-मत्तूरुः (B) मध्यप्रदेशे-झीरी
(C) उत्तराखण्डे-धनतोला (D) उत्तरप्रदेशे-शिवपुरम्

55. 'संस्कृतसाहित्योत्सवः–2013' कुत्र आयोजितम् आसीत्?
(A) उज्जयिन्याम् (म० प्र०) (B) काश्याम् (उ० प्र०)
(C) नवदेहल्याम् (दिल्ली) (D) अयोध्यायाम् (उ० प्र०)

56. ''षोडशं विश्वसंस्कृतसम्मेलनम्-2015'' कुत्र भविष्यति?
(A) थायलैण्डदेशे (B) भारते
(C) नेपालदेशे (D) अमेरिकायाम्

57. कस्मिन् राज्ये प्रथमकक्षातः पञ्चमकक्षापर्यन्तं संस्कृतम् अनिवार्यम् अस्ति?
(A) छत्तीसगढे (B) केरले
(C) राज्यद्वये अपि (D) एतेषु किमपि न

58. भगद्गीतायाः प्रथमम् आंग्लसंस्करणं कदा प्रकाशितम्?
(A) 1785 ई० (B) 1885 ई०
(C) 1740 ई० (D) 1845 ई०

59. संस्कृतलेखकः यः ''ज्ञानपीठपुरस्कार-2009'' इत्यस्य विजेता आसीत्?
(A) डॉ० अभिराजराजेन्द्रमिश्रः
(B) डॉ० सत्यव्रतशास्त्री
(C) डॉ० रेवाप्रसादद्विवेदी
(D) डॉ० पी० वी० काणे

60. भारते कति संस्कृतग्रामाः सन्ति, यत्र सर्वे संस्कृतेन वदन्ति?
(A) एकादश (B) दश
(C) नव (D) अष्टौ

42. (B)	**43. (B)**	**44. (C)**	**45. (D)**	**46. (A)**	**47. (A)**	**48. (C)**	**49. (C)**	**50. (C)**	**51. (A)**
52. (C)	**53. (B)**	**54. (D)**	**55. (A)**	**56. (A)**	**57. (C)**	**58. (A)**	**59. (B)**	**60. (D)**	

परिशिष्ट-1 –''ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार''

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	अनुमानित समय
1. नाट्यशास्त्र	आचार्य भरत	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
2. काव्यालङ्कार	भामह	500 ई.
3. काव्यादर्श	दण्डी	सातवीं शताब्दी
4. काव्यालङ्कारसारसंग्रह	उद्भट	अष्टमशताब्दी का उत्तरार्द्ध
5. काव्यालङ्कार सूत्र	वामन	800-850 ई. लगभग
6. काव्यालङ्कार	रुद्रट	नवम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	नवम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
8. काव्यमीमांसा	राजशेखर	दशम शताब्दी
9. अभिधावृत्तमात्रिका	मुकुलभट्ट	दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
10. काव्यकौतुक	भट्टतौत	दशम शताब्दी का मध्य
11. दशरूपक	धनञ्जय और धनिक	दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
12. (i) अभिनवभारती ('नाट्यशास्त्र' की टीका)	अभिनवगुप्त	एकादश शताब्दी
(ii) ध्वन्यालोकलोचन ('ध्वन्यालोक' की टीका)	अभिनवगुप्त	
(ii) 'काव्यकौतुकविवरण ('काव्यकौतुक' का विवरण)	अभिनवगुप्त	
13. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध
14. व्यक्तिविवेक	महिमभट्ट	एकादश शताब्दी का मध्य
15. (i) सरस्वतीकण्ठाभरण	भोजराज	एकादशशताब्दी 1050 ई. लगभग
(ii) शृङ्गारप्रकाश	भोजराज	
16. (i) औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	एकादशशताब्दी का उत्तरार्द्ध
(ii) कविकण्ठाभरण	क्षेमेन्द्र	
17. नाटकलक्षणरत्नकोष	सागरनन्दी	एकादश शताब्दी
18. काव्यप्रकाश	मम्मट	1050 ई. (एकादश शताब्दी का उत्तरार्द्ध)
19. अलङ्कारसर्वस्व	रुय्यक	द्वादशशताब्दी
20. वाग्भटालङ्कार	वाग्भट्ट	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
21. काव्यानुशासन	हेमचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
22. नाट्यदर्पण	रामचन्द्र गुणचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
23. भावप्रकाशन	शारदातनय	तेरहवीं शताब्दी
24. चन्द्रालोक	पीयूषवर्ष जयदेव	तेरहवीं शताब्दी का मध्यभाग
25. साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज	14वीं शताब्दी
26. एकावली	विद्याधर	1285 ई. से 1325 ई. के मध्य
27. (i) कुवलयानन्द	अप्पयदीक्षित	षोडशशताब्दी
(ii) चित्रमीमांसा	अप्पयदीक्षित	
(iii) वृत्तवार्तिक	अप्पयदीक्षित	
28. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी का मध्यभाग

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख महाकाव्य

महाकाव्य	सर्ग	लेखक
1. कुमारसम्भवम्	17 (अन्यमत 8)	कालिदास
2. रघुवंशम्	19	कालिदास
3. बुद्धचरितम्	28	अश्वघोष
4. सौन्दरनन्द	18	अश्वघोष
5. किरातार्जुनीयम्	18	भारवि
6. शिशुपालवधम्	20	माघ
7. नैषधीयचरितम्	22	श्रीहर्ष
8. भट्टिकाव्य (रावणवधम्)	22	भट्टि
9. जानकीहरणम्	20 से 25 सर्ग (प्राप्त 10-15 सर्ग)	कुमारदास
10. हरविजयम्	50 सर्ग	रत्नाकर (सबसे बड़ा महाकाव्य)
11. धर्मशर्माभ्युदय	21 सर्ग	हरिश्चन्द्र
12. राघवपाण्डवीयम्	13 सर्ग	कविराज (माधवभट्ट)

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

रचना	लेखक
1. जाम्बवतीविजयम् (पातालविजयम्)	पाणिनि
2. स्वर्गारोहणम्	कात्यायन (वररुचि)
3. महानन्दकाव्य	पतञ्जलि
4. प्रयागप्रशस्ति	हरिषेण
5. सेतुबन्ध	प्रवरसेन
6. हयग्रीववध	भर्तृमेण्ठ
7. गउडवहो	वाक्पति
8. रामचरित	अभिनन्द
9. नवसाहसाङ्कचरित	पद्मगुप्त
10. पारिजातहरणम्	कविकर्णपूर
11. नरनारायणानन्द	वस्तुपाल
12. रघुनाथचरित	वामनभट्टबाण
13. सेतुकाव्य	मातृगुप्त
14. कादम्बरीसार	अभिनन्द (काश्मीरी कवि)
15. रामायणमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी)
16. भारतमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी कवि)
17. विक्रमाङ्कदेवचरित	बिल्हण (काश्मीरी)
18. श्रीकण्ठचरितम्	मंखक (काश्मीरी)
19. राजतरङ्गिणी	कल्हण (काश्मीरी)
20. जातकमाला	आर्यशूर (बौद्ध कवि)
21. गुरुगोविन्दसिंह महाकाव्यम्	डॉ. सत्यव्रतशास्त्री
22. सीताचरितम्	डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी
23. जानकीजीवनम्	डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ

ग्रन्थ	अङ्क	लेखक
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	4	भास
2. स्वप्नवासवदत्तम्	6	भास
3. ऊरुभङ्गम्	एकाङ्की	भास
4. दूतवाक्यम्	एकाङ्की	भास
5. पञ्चरात्रम्	3	भास
6. बालचरितम्	5	भास
7. दूतघटोत्कचम्	एकाङ्की	भास
8. कर्णभारम्	एकाङ्की	भास
9. मध्यमव्यायोगः	एकाङ्की	भास
10. प्रतिमानाटकम्	7	भास
11. अभिषेकनाटकम्	6	भास
12. अविमारकम्	6	भास
13. चारुदत्तम्	4	भास
14. मृच्छकटिकम् (प्रकरण)	10	शूद्रक (शिमुक)
15. मालविकाग्निमित्रम्	5	कालिदास
16. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	5	कालिदास
17. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7	कालिदास
18. मुद्राराक्षसम्	7	विशाखदत्त
19. प्रियदर्शिका (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
20. रत्नावली (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
21. नागानन्द	5	हर्ष (हर्षवर्धन)
22. वेणीसंहारम्	6	भट्टनारायण
23. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	10	भवभूति
24. महावीरचरितम्	7	भवभूति
25. उत्तररामचरितम्	7	भवभूति
26. शारिपुत्रप्रकरण् (प्रकरण)	9	अश्वघोष
27. अनर्घराघवम्	7	मुरारि
28. बालरामायणम् (महानाटक)	10	राजशेखर
29. बालभारत (प्रचण्डपाण्डव)	2	राजशेखर
30. विद्धशालभञ्जिका (नाटिका)	4	राजशेखर
31. कर्पूरमञ्जरी (सट्टक)	4	राजशेखर
32. कुन्दमाला	6	दिङ्नाग
33. प्रबोधचन्द्रोदय	6	कृष्ण मिश्र
34. प्रसन्नराघवम्	7	जयदेव

कुछ अन्य नाट्यग्रन्थ

नाट्यग्रन्थ	लेखक
1. आश्चर्यचूडामणि	शक्तिभद्र
2. रामाभ्युदय	यशोवर्मा
3. महानाटक	हनुमान्
4. हनुमन्नाटक	दामोदर मिश्र
5. रुक्मिणीहरणम्	वत्सराज
6. त्रिपुरदाह	वत्सराज
7. समुद्रमन्थन	वत्सराज
8. सौगन्धिकाहरणम्	विश्वनाथ
9. सामवतम्	अम्बिकादत्तव्यास
10. दूताङ्गद (छायानाटक)	सुभट
11. सुभद्रापरिणय (छायानाटक)	व्यासरामदेव
12. पार्वतीपरिणय	बाणभट्ट
13. मुकुटताडितक	बाणभट्ट

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गद्यकाव्य

गद्यरचना	लेखक
1. दशकुमारचरितम्	दण्डी
2. अवन्तिसुन्दरी कथा	दण्डी
3. वासवदत्ता (कथा)	सुबन्धु
4. कादम्बरी (कथा)	बाणभट्ट
5. हर्षचरितम् (आख्यायिका)	बाणभट्ट
6. मन्दारमञ्जरी	विश्वेश्वर पाण्डेय
7. शिवराजविजय (ऐतिहासिक उपन्यास)	अम्बिकादत्तव्यास
8. प्रबन्धमञ्जरी	हृषीकेश भट्टाचार्य
9. कथापञ्चकम्	पण्डिता क्षमाराव
10. ग्रामज्योतिः	पण्डिता क्षमाराव
11. कथामुक्तावलिः	पण्डिता क्षमाराव
12. कौमुदीकथाकल्लोलिनी	डॉ. रामशरणत्रिपाठी
13. तिलकमञ्जरी	धनपाल
14. गद्यचिन्तामणि	वादीभसिंह
15. वेमभूपालचरितम्	वामनभट्ट बाण
16. द्वासुपर्णा	डॉ. रामजी उपाध्याय
17. गद्यरामायणम्	वरददेशिक
18. गाँधीचरितम्	चारुदेवशास्त्री
19. रामचरितम्	देवविजयगणी

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गीतिकाव्य

गीतिकाव्यम्	लेखक
1. ऋतुसंहारम्	कालिदास
2. मेघदूतम्	कालिदास
3. नीतिशतकम्	भर्तृहरि
4. शृङ्गारशतकम्	भर्तृहरि
5. वैराग्यशतकम्	भर्तृहरि
6. अमरुशतकम्	अमरुक
7. गीतगोविन्दम्	जयदेव
8. गङ्गालहरी/पीयूषलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
9. अमृतलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
10. सुधालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
11. लक्ष्मीलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
12. करुणालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
13. आसफविलास	पण्डितराज जगन्नाथ
14. जगदाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
15. प्राणाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
16. यमुनावर्णनम्	पण्डितराज जगन्नाथ
17. भामिनीविलास (गीतिकाव्य)	पण्डितराज जगन्नाथ
18. गाथासप्तशती	हाल
19. चौरपञ्चाशिका	बिल्हण
20. आर्यासप्तशती	गोवर्धनाचार्य
21. चाणक्यशतकम्	चाणक्य
22. घटकर्परकाव्यम्	घटकर्पर
23. नीतिसार	घटकर्पर
24. चण्डीशतकम्	बाणभट्ट
25. सूर्यशतकम्	मयूरभट्ट
26. भल्लटशतकम्	भल्लट
27. वक्रोक्तिपञ्चाशिका	रत्नाकर
28. देवीशतकम्	आनन्दवर्धन
29. कुट्टिनीमतम्	दामोदरगुप्त
30. बल्लालशतकम्	बल्लाल
31. चारुचर्या	क्षेमेन्द्र
32. सेव्यसेवकोपदेश	क्षेमेन्द्र
33. समयमातृका	क्षेमेन्द्र
34. कथाविलास	क्षेमेन्द्र
35. दर्पदलन	क्षेमेन्द्र
36. पवनदूत	धोयी
37. नेमिदूतम्	विक्रमकवि
38. शुकसन्देश	लक्ष्मीदास
39. भृङ्गसन्देश	वासुदेव
40. हंसदूतम्	रूपगोस्वामी
41. चन्द्रदूतम्	विमलकीर्ति

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख स्तोत्रकाव्यम्

1. शिवताण्डवस्तोत्रम्	रावण
2. सौन्दर्यलहरी	शङ्कराचार्य
3. चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्	शङ्कराचार्य
4. श्रीकृष्णाष्टकम्	शङ्कराचार्य
5. आनन्दलहरी	शङ्कराचार्य
6. शिवमहिम्नस्तोत्रम्	पुष्पदन्त
7. आलबन्दारस्तोत्रम्	यामुनाचार्य (आलबन्दार)
8. गङ्गास्तव	जयदेव
9. कृष्णकर्णामृतम्	बिल्वमङ्गल (कृष्णलीलाशुक)
10. वरदराजस्तव	अप्पयदीक्षित
11. नारायणीयम्	नारायणभट्ट
12. आनन्दमन्दाकिनी	मधुसूदन सरस्वती
13. गन्धर्वप्रार्थनाष्टकम्	रूपगोस्वामी

सुभाषितग्रन्थाः

सुभाषितग्रन्थाः	ग्रन्थकारः
1. कवीन्द्रवचनसमुच्चयः	विद्याकरपण्डितः
2. सदुक्तिकर्णामृतम् (सूक्तिकर्णामृतम्)	श्रीधरदास
3. सूक्तिमुक्तावली (सुभाषितमुक्तावली)	सिद्धचन्द्रमणि
4. सूक्तिरत्नाकरः	सिद्धचन्द्रमणि
5. सुभाषित सुधानिधि	सायण
6. शार्ङ्गधरपद्धति	शार्ङ्गधर
7. सुभाषितरत्नभाण्डागार	शिवदत्त एवं नारायणराम आचार्य
8. सूक्तिमुक्तावली	डॉ. नरेन्द्रदेव शास्त्री
9. संस्कृतसूक्तिरत्नाकर	डॉ. रामजी उपाध्याय

ऐतिहासिक काव्य

ऐतिहासिक काव्य	लेखक
1. बुद्धचरितम्	अश्वघोष
2. हर्षचरितम्	बाणभट्ट
3. गउडवहो (गौडवधः)	वाक्पतिराज
4. नवसाहसाङ्कचरितम्	पद्मगुप्त (परिमल)
5. विक्रमाङ्कदेवचरितम्	बिल्हण
6. राजतरङ्गिणी	महाकवि कल्हण
7. सोमपालविजयम्	जल्हण
8. प्रबन्धकोष	राजशेखर
9. वेमभूपालचरितम्	वामनभट्ट बाण

कथासाहित्यम्

कथाग्रन्थः	लेखकः
1. पञ्चतन्त्रम्	विष्णुशर्मा
2. हितोपदेश	नारायणपण्डित
3. बृहत्कथा	गुणाढ्य
4. बृहत्कथाश्लोकसंग्रह	बुधस्वामी
5. बृहत्कथामञ्जरी	क्षेमेन्द्र
6. कथासरित्सागर	सोमदेव
7. वेतालपञ्चविंशतिका	शिवदास एवं जम्भलदत्त
8. सिंहासनद्वात्रिंशिका द्वात्रिंशत्पुत्तलिका विक्रमचरित विक्रमार्कचरित	लेखक का नाम अज्ञात
9. शुकसप्ततिः	अज्ञात
10. पुरुषपरीक्षा	विद्यापति
11. भोजप्रबन्ध	बल्लाल सेन
12. जातकमाला	आर्यशूर
13. प्रबन्धकोष	राजशेखर
14. उदयसुन्दरीकथा	सोड्ढल

चम्पूकाव्य

चम्पूकाव्य	लेखक
1. नलचम्पू (दमयन्तीकथा)	त्रिविक्रमभट्ट
2. मदालसाचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट
3. जीवन्धरचम्पू	हरिश्चन्द्र
4. यशस्तिलकचम्पू	सोमदेवसूरि
5. रामायणचम्पू	राजाभोज (भोजराज)
6. भागवतचम्पू	अभिनवकालिदास
7. भारतचम्पू	अनन्तभट्ट
8. वरदाम्बिकापरिणयचम्पू	रानी तिरुमलाम्बा
9. भरतेश्वराभ्युदयचम्पू	पं. आशाधरसूरि
10. रुक्मिणीपरिणयचम्पू	अमलाचार्य (अम्मल)
11. आनन्दवृन्दावनचम्पू	कवि कर्णपूर

संस्कृत पत्र-पत्रिकायें

1. साप्ताहिक-पत्रिका

- भवितव्यम् (नागपुर)
- संस्कृतम् (अयोध्या)
- गाण्डीवम् (वाराणसी)
- पण्डितपत्रिका (काशी)

2. पाक्षिक-पत्रिका

- भारतवाणी (पूना)
- शारदा (पूना)
- संस्कृतसाकेत (अयोध्या)

3. मासिक-पत्रिका

- संस्कृतमञ्जूषा (कलकत्ता)
- सूर्योदय (काशी)
- आनन्दकल्पतरु (कोयम्बटूर)
- गुरुकुलपत्रिका (गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)
- जयतु संस्कृतम् (काठमाण्डू)
- दिव्यज्योतिः (शिमला)
- बालसंस्कृतम् (मुम्बई)
- भारती (जयपुर)
- भारतीयविद्या (मुम्बई)
- मालवमयूर (मन्दसौर)
- संस्कृतरत्नाकर (दिल्ली)
- सरस्वतीसौरभम् (बड़ौदा)
- संस्कृतसञ्जीवनम् (पटना)
- साहित्यवाटिका (दिल्ली)
- भारतोदयः (हरिद्वार)
- सम्भाषणसन्देशः (बङ्गलोर)
- चन्दमामा (बङ्गलोर)

4. त्रैमासिक-पत्रिका

- सङ्गमनी (प्रयाग)
- सरस्वतीसुषमा (सम्पूर्णानन्द सं. वि. वि. वाराणसी)
- सागरिका (सागर वि. वि. सागर म.प्र.)
- विश्वसंस्कृतम् (होशियारपुर)
- उशती (गङ्गानाथ झा, प्रयाग)
- महाराजसंस्कृतपत्रिका (मैसूर)

5. षाणमासिक-पत्रिका

- पुराणम् (वाराणसी)
- संस्कृत प्रतिभा (नई दिल्ली)
- विद्वत्कला (ज्वालापुर, हरिद्वार)

6. वार्षिक-पत्रिका

- अमृतवाणी (बङ्गलोर)
- संस्कृतगङ्गा (प्रयाग)
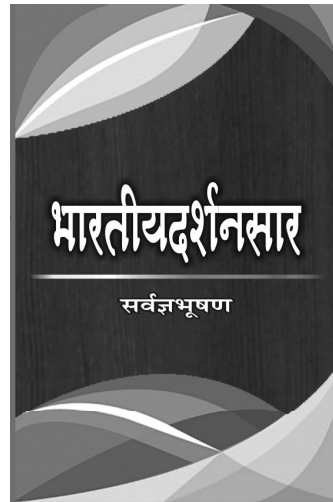
परिशिष्ट-2 ''संस्कृतकविः''

संस्कृतकवियों के माता-पिता

कवि	पिता माता	अन्य
1. बाणभट्ट	चित्रभानु–राजदेवी	पितामह-**अर्थपति**
2. भवभूति	नीलकण्ठ–जतुकर्णी (जातुकर्णी)	(पितामह–**भट्टगोपाल**)
3. भारवि	श्रीधर (नारायणस्वामी)-सुशीला	
4. माघ	दत्तक (सर्वाश्रय)-ब्राह्मी	(पितामह–**सुप्रभदेव**)
5. श्रीहर्ष	श्रीहीर–मामल्लदेवी	
6. विशाखदत्त	पृथु (भास्करदत्त)	पितामह–**वटेश्वरदत्त**)
7. हर्षवर्धन	प्रभाकरवर्धन–यशोवती	(बड़े भाई–**राज्यवर्धन**, बहन – **राज्यश्री**)
8. राजशेखर	दर्दुक (दुहिक) शीलवती	**अकालजलद** (पितामह)
9. अम्बिकादत्तव्यास	दुर्गादत्त	पितामह - श्रीराजाराम
10. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	भोजदेव–रामादेवी (राधादेवी)	
11. पण्डितराजजगन्नाथ	पेरुभट्ट–लक्ष्मीदेवी	
12. कल्हण	चम्पक	
13. त्रिविक्रमभट्ट	देवादित्य (नेमादित्य)	पितामह-**श्रीधर**
14. पाणिनि	पणिन्–दाक्षी	
15. कात्यायन (वररुचि)	–	पितामह-**याज्ञवल्क्य**
16. मम्मट	जैयट	भाई-**कैय्यट (उव्वट)**
17. विश्वनाथ	चन्द्रशेखर	
18. भर्तृहरि	गन्धर्वसेन	
19. अश्वघोष	सुवर्णाक्षी (माता)	
20. पतञ्जलि	गोणिका (माता)	
21. कालिदास	शारदानन्द (श्वसुर, विद्योत्तमा के पिता)	
22. मुरारि	श्रीवर्धमानभट्ट/तन्तुमती	
23. भट्टोजिदीक्षित	लक्ष्मीधर	
24. वरदराज	दुर्गातनय	
25. रत्नाकर	अमृतभानु	
26. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	महादेव–सुमित्रा	
27. विश्वेश्वर पाण्डेय	लक्ष्मीधर पाण्डेय	
28. पण्डिता क्षमाराव	श्री शङ्करपाण्डुरङ्ग	
29. दण्डी (भारवि के प्रपौत्र)	वीरदत्त–गौरी	प्रपितामह–**भारवि**
30. वेदव्यास	सत्यवती	

कवियों की उपाधियाँ/उपनाम

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
1.	वाल्मीकि	आदिकवि/आर्षकवि
2.	कृष्णद्वैपायन	व्यास या वेदव्यास
3.	कालिदास	(i) दीपशिखा (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनी विलास (v) उपमासम्राट्
4.	अम्बिकादत्तव्यास	(i) घटिकाशतक (ii) सुकवि (iii) शतावधान (iv) अभिनवबाण (v) भारतरत्न
5.	बाणभट्ट	(i) पञ्चबाणस्तु बाणः (ii) बाणस्तु पञ्चाननः (iii) कविताकानन केसरी (iv) वश्यवाणीचक्रवर्ती (v) गद्यसम्राट् (vi) वाणी बाणो बभूव (vii) कविताकामिनीकौतुक (viii) तुरङ्गबाण (ix) गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति (x) बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् (xi) बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती (xii) महानयं भुजङ्गः (xiii) सर्वेश्वर
6.	जयदेव (प्रसन्नराघव एवं 'चन्द्रालोक' के लेखक)	(i) पीयूषवर्ष (ii) कवीन्द्र (iii) वाणी का विलास (iv) असमरसनिष्यन्दमधुर
7.	मल्लिनाथ	(i) कोलाचल (ii) महामहोपाध्याय
8.	त्रिविक्रमभट्ट	यमुनात्रिविक्रम
9.	विश्वनाथ	(i) सन्धिविग्राहक, (ii) अष्टादशभाषा वारविलासिनी (iii) कविराज (iv) कवि सूक्ति रत्नाकर
10.	जगन्नाथ	पण्डितराज
11.	भारवि	(i) आतपत्र (ii) दामोदर (उपनाम) (iii) चक्रकवि
12.	माघ	(i) घण्टामाघ (ii) सर्वाश्रय
13.	भवभूति	(i) श्रीकण्ठ (भट्टश्रीकण्ठ) (ii) पदवाक्यप्रमाणज्ञ (iii) श्रीकण्ठपदलाञ्छनः (iv) उम्बेक/उदम्बर (v) वश्यवाक् (vi) शिखरिणीकवि (vii) परिणतप्रज्ञ
14.	भट्टनारायण	(i) भट्ट (ii) मृगराज (iii) कवि मृगेन्द्र/कवीन्द्र
15.	मम्मट	(i) वाग्देवतावतार (ii) राजानक (iii) ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य
16.	आनन्दवर्धन	(i) राजानक (ii) ध्वनिप्रतिष्ठापकाचार्य (iii) सहृदय शिरोमणि
17.	कुन्तक	'राजानक' (यह उपाधि काश्मीरी विद्वानों को सम्मानार्थ मिलती थी)
18.	महिमभट्ट	'राजानक'
19.	रुय्यक	'राजानक'
20.	क्षेमेन्द्र	(i) जनकवि (ii) सकलमनीषिशिष्य
21.	भास	(i) कविताकामिनी हास (ii) भासो हासः (iii) अग्निमित्र (ज्वलनमित्र)
22.	अश्वघोष	(i) आर्यभदन्त (ii) बौद्धभिक्षु
23.	मुरारि	(i) बालवाल्मीकि (ii) महाकवि (iii) इन्दु
24.	बिल्हण	विद्यापति
25.	हेमचन्द्र	कलिकालसर्वज्ञ
26.	अभिनवगुप्त	(i) लोचनकार (ii) परम- माहेश्वराचार्य
27.	कणाद	(i) उलूक (ii) कणभुक्
28.	कात्यायन	वररुचि
29.	गौतम	अक्षपाद
30.	दयानन्द सरस्वती	स्वामी
31.	भट्टि	महाकवि
32.	मातृचेट	बौद्धकवि
33.	यामुनाचार्य	आलवन्दार
34.	राजशेखर	(i) यायावर (ii) कविराज (iii) बालकवि
35.	वाचस्पतिमिश्र	(i) सर्वतन्त्रस्वतन्त्र, (ii) तात्पर्याचार्य (iii) द्वादशदर्शनकाननपञ्चानन
36.	वात्स्यायन	मल्लनाग
37.	विद्यापति	(i) षट्तर्कषण्मुख (ii) वादिराज सूरि (iii) मैथिलकोकिल
38.	विद्यारण्यमुनि	माधवाचार्य

39.	क्षमाराव	पण्डिता
40.	पतञ्जलि	शेषनाग, फणिभृत, नागनाथ, भगवान्, तीर्थदर्शी
41.	प्रभाकर मिश्र	(i) गौडमीमांसक (ii) गुरु
42.	माधवभट्ट	(i) कविराज (ii) सूरि (iii) पण्डित
43.	हर्षवर्धन	(i) राजा (ii) कवीन्द्र (iii) गीर्हर्ष (iv) कविता का हर्ष (v) अनङ्ग
44.	जयदेव (गीतगोविन्दकार)	कविराजराज
45.	श्रीहर्ष	कविताकामिनी का हर्ष
46.	आनन्दराय मखी	वेदकवि
47.	रत्नाकर	(i) कांस्यताल, (ii) वागीश्वर
48.	शेषाचलपति	आन्ध्रपाणिनि
49.	आर्यभट्ट	अश्मकाचार्य
50.	मङ्खु	कर्णिकार
51.	शाकटायन	आदिशाब्दिक
52.	पद्मगुप्त	परिमल कालिदास
53.	द्वादशविद्यापति	वदिराज सूरि
54.	दिंगनागाचार्य	तर्कपुंगव
55.	मुकुलभट्ट	(i) साहित्यमुरारि (ii) पदवाक्य-प्रमाण-पारावारपारीण
56.	ब्रह्मगुप्त	गणकचक्रचूडामणि
57.	श्रीनिवासदीक्षित	(i) रत्नखेट (ii) षड्भाषाचतुर
58.	सोमदेव सूरि	(i) कविकुलराजकुञ्जर (ii) तार्किक चक्रवर्ती
59.	धनपाल	सरस्वती
60.	वस्तुपाल	लघुभोजराज
61.	शान्तिसूरि	वादिवेताल
62.	हृषिकेशभट्टाचार्य	अभिनवबाण

कवियों का निवासस्थान (जन्मस्थान)

कवि	निवासस्थान (जन्मस्थान)
1. कालिदास	उज्जयिनी (काश्मीर/बंगाल)
2. बाणभट्ट	'प्रीतिकूट' (शोणनदी के पश्चिमी तट पर आधुनिक–'शाहाबाद')
3. भारवि	अचलपुर (दाक्षिणात्य/धारानगरी)
4. अम्बिकादत्त व्यास	जयपुर राजस्थान, ग्राम-रावतजी का धुला (अध्ययन–काशी में)
5. कल्हण	काश्मीर
6. पाणिनि	शालातुर ग्राम (अटक)
7. पतञ्जलि	गोनर्द (गोण्डा)
8. दण्डी	दक्षिण में विदर्भ (महाराष्ट्र)
9. भवभूति	पद्मपुर (दक्षिणभारत)
10. अश्वघोष	साकेत (अयोध्या)
11. माघ	श्री भिन्नमाल 'भीनमाल' राजस्थान (आबूपर्वत तथा लूनानदी के बीच स्थित)
12. श्रीहर्ष	कन्नौज
13. भट्टि	बल्लभी
14. कुमारदास	श्रीलङ्का
15. शूद्रक	दाक्षिणात्य
16. हर्ष	स्थाणीश्वर (थानेश्वर)
17. भट्टनारायण	कान्यकुब्ज (कन्नौज)
18. राजशेखर	महाराष्ट्र (विदर्भ)
19. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	विदर्भप्रान्त-कुण्डिननगर

20. सुबन्धु	काश्मीर
21. पण्डितराज जगन्नाथ	आन्ध्रप्रदेश (तैलंग)
22. कात्यायन	दाक्षिणात्य
23. आनन्दवर्धन	काश्मीर
24. मम्मट	काश्मीर
25. अभिनवगुप्त	काश्मीर
26. भर्तृहरि	मालवा
27. क्षेमेन्द्र	काश्मीर
28. महिमभट्ट	काश्मीर
29. वाचस्पतिमिश्र	मिथिला (बिहार)
30. विश्वनाथ कविराज	उत्कल (उड़ीसा)
31. त्रिविक्रमभट्ट	मान्यखेट ग्राम (हैदराबाद)
32. रत्नाकर	काश्मीर
33. विश्वेश्वर पाण्डेय	अल्मोडा जिला ग्राम–पटिया
34. अमरुक	काश्मीर
35. गीतगोविन्दकार जयदेव	बंगाल के केन्दुबिल्व नामक ग्राम।
36. सोमदेव (कथासरित्सागर)	काश्मीर

संस्कृत के प्रमुख कवियों, नायकों, तथा ऋषियों का गोत्र एवं वंश

कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति	कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति
1. बाणभट्ट	वत्स/वात्स्यायन	**12. दुष्यन्त**	पुरुवंशी (चन्द्रवंशी)
2. भवभूति	काश्यप	**13. राम**	सूर्यवंश/इक्ष्वाकुवंश/रघुवंश
3. भारवि	कुशिक	**14. दुर्योधन**	कुरुवंशी/चन्द्रवंशी
4. कालिदास	ब्राह्मण जाति	**15. शिवाजी**	मराठा वंश
5. अम्बिकादत्त व्यास	पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी ब्राह्मण त्रिप्रवर 'भीडा' वंश	**16. कुतुबुद्दीन**	गुलामवंश
6. विश्वेश्वर पाण्डेय	भारद्वाजगोत्र	**17. औरङ्गजेब**	मुगलवंश
7. मुरारि	मौद्गल्यगोत्र	**18. सिंहविष्णु**	पल्लववंश
8. भट्टनारायण	सारस्वत ब्राह्मण	**19. नरसिंहवर्मन्**	पल्लववंश
9. राजशेखर	यायावर क्षत्रियवंश	**20. विष्णुवर्धन**	चालुक्यवंश
10. पण्डितराजजगन्नाथ	तैलङ्गब्राह्मण	**21. दुर्विनीत**	गङ्गवंश
11. विश्वामित्र	कौशिक	**22. यशोवर्मा**	चन्देलवंश

कवियों का सम्प्रदाय

कवि	सम्प्रदाय	कवि	सम्प्रदाय
1. कालिदास	शैव	**8. कल्हण**	शैव
2. भवभूति	शैव	**9. अभिनवगुप्त**	शैव
3. भारवि	शैव	**10. भट्टनारायण**	वैष्णव (साथ में शिवभक्त भी)
4. माघ	वैष्णव	**11. रूपगोस्वामी**	वैष्णव
5. भर्तृहरि	शैव, ब्रह्म के उपासक	**12. विश्वनाथकविराज**	वैष्णव
6. बाणभट्ट	शैव	**13. राजशेखर**	शैव
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैष्णव (शैव)	**14. जयदेव (गीतगोविन्दकार)**	वैष्णव

संस्कृत कवियों का राज्याश्रय

राजकवि	राजा
1. कालिदास	विक्रमादित्य
2. बाणभट्ट	सम्राट् हर्षवर्धन
3. भारवि	पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन
4. भवभूति	यशोवर्मा
5. दण्डी	नरसिंह वर्मन प्रथम, पल्लवनरेश सिंहविष्णु
6. 'परिमलकालिदास' या पद्मगुप्त	राजा मुञ्ज और सिन्धुराज (नवसाहसाङ्क)
7. रविकीर्ति	पुलकेशिन द्वितीय
8. उद्भट	काश्मीरनरेश जयादित्य
9. वामन	काश्मीर नरेश जयादित्य के मन्त्री
10. आनन्दवर्धन	काश्मीर नरेश अवन्तिवर्मा
11. राजशेखर	कन्नौज के शासक महेन्द्रपाल और महीपाल
12. धनञ्जय	मालव के परमारवंशी राजा मुञ्ज (वाक्पतिराज)
13. क्षेमेन्द्र	कश्मीर नरेश अनन्तराज
14. नारायण पण्डित	धवलचन्द्र (बंगाल के कोई राजा)
15. श्रीहर्ष (नैषधकार)	कन्नौज नरेश जयचन्द्र
16. अश्वघोष	कनिष्क
17. वाक्पतिराज	यशोवर्मा
18. भट्टि	वल्लभी के राजा श्रीधरसेन
19. रत्नाकर	राजा चिप्पट जयापीड
20. कविराज (माधवभट्ट)	जयन्तपुरी के कदम्बराजा कामदेव
21. कृष्णमिश्र	चन्देलराजा कीर्तिवर्मा
22. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन
23. पण्डितराजजगन्नाथ	शाहजहाँ
24. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	महिलारोप्य के राजा अमरसिंह
25. नारायण पण्डित (हितोपदेश)	बंगाल के राजा धवलचन्द्र
26. सोमदेव (कथा सरित्सागर)	काश्मीरी राजा अनन्त
27. हरिषेण	समुद्रगुप्त
28. भर्तृमेण्ठ	मातृगुप्त
29. मंख	राजा जयसिंह
30. गुणाढ्य	सातवाहन राजा हाल
31. गोवर्धनाचार्य	लक्ष्मणसेन

कवियों के प्रिय रस

कवि	प्रिय रस	कवि	प्रिय रस
1. कालिदास	शृङ्गार रस	**5. बाणभट्ट**	शृङ्गाररस
2. भवभूति	करुण रस	**6. श्रीहर्ष**	शृङ्गाररस
3. भारवि	वीररस, शृङ्गाररस	**7. भास**	शृङ्गार और वीररस
4. माघ	वीररस	**8. अमरुक**	शृङ्गाररस
		9. जयदेव	शृङ्गाररस

कवियों के प्रिय छन्द

कवि	प्रिय छन्द	अतिप्रिय छन्दों की संख्या
1. वाल्मीकि	अनुष्टुप् (श्लोक)	–
2. व्यास	अनुष्टुप्	–
3. कालिदास	आर्या, अनुष्टुप्, उपजाति, मन्दाक्रान्ता	06
4. अश्वघोष	अनुष्टुप्, उपजाति	–
5. भारवि	वंशस्थ, उपजाति	12
6. माघ	वंशस्थ, अनुष्टुप्	16
7. श्रीहर्ष	उपजाति छन्द	19
8. भट्टि	अनुष्टुप्, उपजाति	–
9. भास	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका	कुल 24 छन्दों का प्रयोग
10. विशाखदत्त	शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, स्रग्धरा	–
11. हर्षवर्धन	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, अनुष्टुप्, आर्या	–
12. भट्टनारायण	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित	–
13. भवभूति	अनुष्टुप्, शिखरिणी	–
14. राजशेखर	शार्दूलविक्रीडितम्	–
15. कृष्णमिश्र	वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडितम्	–
16. जयदेव	वसन्ततिलका	–
17. अमरुक	शार्दूलविक्रीडितम्	–
18. भर्तृहरि	शार्दूलविक्रीडितम्	

कवियों के प्रिय अलङ्कार

1. कालिदास	उपमा
2. भारवि	चित्रालङ्कार, अर्थालङ्कार
3. माघ	उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, चित्रालङ्कार
4. श्रीहर्ष	उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, श्लेष, अनुप्रास, यमक
5. अश्वघोष	उपमा, रूपक, अनुप्रास
6. भवभूति	उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक
7. रत्नाकर	उत्प्रेक्षा अलङ्कार
8. विशाखदत्त	उपमा, रूपक, श्लेष
9. हर्षवर्धन	उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक
10. भट्टनारायण	उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा
11. सुबन्धु	श्लेष, विरोधाभास, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा।
12. बाणभट्ट	विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक
13. अम्बिकादत्तव्यास	विरोधाभास

कवियों की प्रिय शैली रीति एवं गुण

कवि	रीति एवं गुण
1. भारवि	रीतिवादी या अलङ्कृत काव्यशैली के जन्मदाता
2. माघ	प्रसाद, माधुर्य एवं ओजगुणों का समन्वय
3. श्रीहर्ष	वैदर्भी एवं गौडीरीति, प्रसाद एवं ओजगुण
4. कालिदास	वैदर्भी, प्रसादगुण
5. बाणभट्ट	पाञ्चाली, ओज, माधुर्य, प्रसाद
6. दण्डी	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैदर्भी और गौडी रीति का समन्वय।
8. सुबन्धु	गौडीरीति, ओजगुण (श्लेष अलंकार का प्रयोग)
9. भवभूति	गौडी एवं वैदर्भी रीति (i) मालतीमाधवम् और महावीरचरितम् में–गौडी रीति, ओजगुण (ii) उत्तररामचरितम् में–गौडी एवं वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण
10. शूद्रक	वैदर्भीरीति एवं प्रसादगुण (कहीं कहीं 'गौडी रीति' भी)
11. अश्वघोष	वैदर्भीरीति, प्रसादगुण
12. भास	वैदर्भी रीति, प्रसाद, माधुर्य
13. मुरारि	गौडीरीति–ओजगुण
14. भट्टि	व्याकरणमूलक काव्यशैली की एक नवीन विधा के जन्मदाता।
15. कुमारदास	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
16. रत्नाकर	रीतिवादी कवि
17. विशाखदत्त	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
18. हर्षवर्धन	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्य गुण
19. भट्टनारायण	गौडीरीति एवं ओजगुण
20. राजशेखर	गौडीरीति (यत्र तत्र पाञ्चाली भी)
21. दिङ्नाग (धीरनाग, वीरनाग)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
22. पण्डिता क्षमाराव	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
23. भर्तृहरि	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
24. अमरुक	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
25. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण

संस्कृतकवियों की प्रसिद्धि का कारण

कवि	कविप्रसिद्धि
1. कालिदास	(i) उपमा (ii) वैदर्भीरीति
2. भारवि	(i) अर्थगौरव, (ii) अलङ्कृतकाव्यशैली के जनक
3. दण्डी	पदलालित्य
4. माघ	उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य तीनों के लिए
5. भवभूति	करुणरस के प्रयोक्ता
6. अम्बिकादत्तव्यास	ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता
7. बाणभट्ट	(i) अलङ्कार एवं समास बहुल रचना (ii) कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा (ii) पाञ्चाली रीति,
8. त्रिविक्रमभट्ट	(i) श्लेष अलङ्कार के प्रचुर प्रयोक्ता (ii) चम्पूकाव्य के आद्यप्रणेता
9. सुबन्धु	श्लेष प्रधानशैली के प्रयोक्ता

संस्कृत-कवयित्री

कवयित्री	ग्रन्थ	कालक्रम
1. विज्जिका	स्फुटपद्य	850 ई.
2. गङ्गादेवी	मथुराविजयम्	14वीं शताब्दी
3. अवन्ति सुन्दरी (राजशेखर की पत्नी)	देशीशब्दकोष	10वीं शताब्दी
4. तिरुमलाम्बा (राजा अच्युतराय की रानी)	वरदम्बिकापरिणयचम्पू	16वीं शताब्दी
5. रामभद्राम्बा	रघुनाथाभ्युदय	17वीं शताब्दी
6. पण्डिता क्षमाराव	कथामुक्तावली	1890-1954
7. पुष्पा दीक्षित	अष्टाध्यायी सहजबोध (व्याकरणग्रन्थ)	इक्कीसवीं शताब्दी
8. मधुरवाणी	रामकथा	1590 ई.
9. सुभद्रा	स्फुटपद्य	–
10. विकटनितम्बा	स्फुटपद्य	–
11. शीला भट्टारिका	स्फुटपद्य	–
12. देवकुमारिका	स्फुटपद्य	–
अन्य स्त्री लेखिकायें राजम्मा, सुन्दरावली, ज्ञानसुन्दरी आदि।		

परिशिष्ट-3 ''संस्कृतवाङ्मयम्''

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख लेखकों का अनुमानित कालक्रम

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
1. आचार्य लगध	वेदाङ्गज्योतिष	1400 ई.पू. से 800 ई.पू.
2. यास्क	निरुक्त	800 ई. पू.
3. आचार्य पिङ्गल	छन्दःसूत्रम्	800 ई.पू. से 700 ई.पू.
4. कपिल	सांख्यसूत्र	700 ई.पू.
5. जैमिनि	मीमांसासूत्र	600 ई.पू.
6. कणाद	वैशेषिकसूत्र	500 ई.पू.
7. चरक	चरकसंहिता	500 ई.पू.–200 ई.पू.
8. सुश्रुत	सुश्रुतसंहिता	500 ई.पू.
9. वाल्मीकि	वाल्मीकीयरामायणम्	500 ई.पू.
10. पाणिनि	अष्टाध्यायी	500 ई.पू.
11. महर्षिव्यास (कृष्णद्वैपायन)	महाभारत एवं 18 पुराण	400 ई.पू.
12. कौटिल्य (चाणक्य)	अर्थशास्त्र	400 ई.पू.
13. बादरायण	ब्रह्मसूत्र	300 ई.पू.
14. कात्यायन (वररुचि)	अष्टाध्यायी पर वार्तिक	300 ई.पू.
15. पतञ्जलि	महाभाष्य, योगसूत्र	185 ई.पू.
16. भरतमुनि	नाट्यशास्त्रम्	100 ई.पू. से 300 ई.
17. भास	स्वप्नवासवदत्तम् आदि 13 नाटक	100 ई. पू. से 200 ई. के मध्य
18. मनु	मनुस्मृति	200 ई.पू. से 200 ई. के बीच
19. कालिदास	रघुवंशम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् आदि	ई.पू. प्रथम शताब्दी
20. अश्वघोष	बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्द	प्रथम शताब्दी ई.
21. गुणाढ्य	बृहत्कथा	प्रथमशताब्दी ई.
22. शालिवाहन (हाल)	गाहा सतसई (गाथासप्तशती)	प्रथम या द्वितीय शताब्दी ई.
23. वात्स्यायन	न्यायसूत्रभाष्य	द्वितीयशताब्दी ई.
24. शर्ववर्मा	कातन्त्रव्याकरण	द्वितीयशताब्दी ई.
25. शबरस्वामी	शाबरभाष्य	द्वितीयशताब्दी ई.
26. विष्णुशर्मा	पञ्चतन्त्र	दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी के बीच
27. अमरसिंह	नामलिङ्गानुशासनम् (अमरकोष)	तीसरी शताब्दी का पूर्वार्द्ध
28. वात्स्यायन	कामसूत्रम्	तीसरी शताब्दी ई.
29. आर्यशूर	जातकमाला	तीसरी–चौथी शताब्दी ई.
30. शूद्रक	मृच्छकटिकम्	तीसरी–चौथी शताब्दी ई.
31. ईश्वरकृष्ण	सांख्यकारिका	चौथी शताब्दी ई.
32. विशाखदत्त	मुद्राराक्षसम्	पाँचवीं छठी शताब्दी ई.
33. कुमारदास	जानकीहरणम्	छठी शताब्दी ई.

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
34. भारवि	किरातार्जुनीयम्	छठी शताब्दी ई. (560 ई.–615 ई. के बीच)
35. दण्डी	दशकुमारचरितम्	छठी शताब्दी ई.
36. भर्तृहरि	वाक्यपदीयम्	छठी शताब्दी ई.
37. भट्टि	रावणवध/भट्टिकाव्य	500 ई. से 650 ई. के बीच
38. भामह	काव्यालङ्कार	छठी शताब्दी
39. माघ	शिशुपालवधम्	सातवीं शताब्दी ई. (675 ई.)
40. आदि शङ्कराचार्य	शाङ्करभाष्य, सौन्दर्यलहरी	सातवीं शताब्दी ई.
41. बाणभट्ट	कादम्बरी, हर्षचरितम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
42. मयूरभट्ट	सूर्यशतकम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
43. सुबन्धु	वासवदत्ता	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
44. हर्ष	प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्द	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
45. भवभूति	महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्	सातवीं शताब्दी के आसपास
46. अमरुकवि (अमरुक)	अमरुकशतकम्	सातवीं शताब्दी
47. वाक्पतिराज	गौडवहो	750 ई. के आसपास
48. भट्टनारायण	वेणीसंहारम्	सातवीं आठवीं शताब्दी
49. दामोदरभट्ट	कुट्टनीमतम्	आठवीं शताब्दी ई.
50. मुरारि	अनर्घराघवम्	आठवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
51. वामन	काव्यालङ्कारसूत्र	आठवीं शताब्दी
52. आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	850 ई.
53. वाचस्पतिमिश्र	भामतीटीका, तत्त्वकौमुदी (सांख्य)	नवीं शताब्दी
54. दामोदरमिश्र	हनुमन्नाटक	नवी शताब्दी ई.
55. रत्नाकर	हरविजयम्	नवीं शताब्दी
56. राजशेखर	काव्यमीमांसा	नवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
57. जयन्तभट्ट	न्यायमञ्जरी	दसवीं शताब्दी ई.
58. धनपाल	तिलकमञ्जरी	दसवीं शताब्दी
59. त्रिविक्रमभट्ट	नलचम्पू, मदालसाचम्पू	दसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
60. कुन्तक	वक्रोक्तिजीवितम्	ग्यारहवीं शताब्दी
61. महिमभट्ट	व्यक्तिविवेक	ग्यारहवीं शताब्दी
62. क्षेमेन्द्र	औचित्यविचारचर्चा, रामायणमञ्जरी	ग्यारहवीं शताब्दी
63. कृष्णमिश्र	प्रबोधचन्द्रोदय	ग्यारहवीं शताब्दी
64. सोमदेव	कथासरित्सागर	ग्यारहवीं शताब्दी
65. रामानुज	श्रीभाष्य	ग्यारहवीं शताब्दी
66. बिल्हण	विक्रमाङ्कदेवचरितम्	ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
67. भोज	रामायणचम्पू	ग्यारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
68. केशवमिश्र	तर्कभाषा	बारहवीं शताब्दी ई.
69. भास्कराचार्य	लीलावती, बीजगणित	बारहवीं शताब्दी
70. मम्मट	काव्यप्रकाश	बारहवीं शताब्दी (ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
71. कल्हण	राजतरङ्गिणी	बारहवीं शताब्दी
72. मंखक	श्रीकण्ठचरितम्	बारहवीं शताब्दी
73. श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
74. गोवर्धनाचार्य	आर्यासप्तशती	बारहवीं शताब्दी
75. जयदेव	गीतगोविन्दम्	बारहवीं शताब्दी
76. विज्ञानभिक्षु	सांख्यप्रवचनभाष्यम्	तेरहवीं शताब्दी
77. गङ्गेशोपाध्याय	तत्त्वचिन्तामणि	तेरहवीं शताब्दी
78. मध्वाचार्य	पूर्णप्रज्ञभाष्यम्	तेरहवीं शताब्दी
79. शार्ङ्गधर	शार्ङ्गधरसंहिता	तेरहवीं शताब्दी
80. गङ्गादास	छन्दोमञ्जरी	तेरहवीं शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य
81. विद्यापति	पुरुषपरीक्षा	चौदहवीं शताब्दी ई.
82. नारायणपण्डित	हितोपदेश	चौदहवीं शताब्दी
83. विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	चौदहवीं शताब्दी
84. अनन्तभट्ट	भारतचम्पू	पन्द्रहवीं शताब्दी
85. वल्लभाचार्य	अणुभाष्यम्	1479 ई. 1544 ई.
86. बल्लालसेन	भोजप्रबन्धम्	सोलहवीं शताब्दी
87. तिरुमलाम्बा	वरदम्बिकापरिणयचम्पू	सोलहवीं शताब्दी
88. भट्टोजिदीक्षित	सिद्धान्तकौमुदी	सोलहवीं शताब्दी
89. अन्नंभट्ट	तर्कसंग्रह	सत्रहवीं शताब्दी
90. कौण्डभट्ट	वैयाकरणभूषणसार	सत्रहवीं शताब्दी
91. नागेशभट्ट	वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा	सत्रहवीं शताब्दी
92. सदानन्द	वेदान्तसार	सत्रहवीं शताब्दी
93. पण्डितराज जगन्नाथ	रसगङ्गाधर, गङ्गालहरी	सत्रहवीं शताब्दी (1600–1660 ई.)
94. अम्बिकादत्तव्यास	शिवराजविजयम्	1858–1900 ई.
95. पण्डिता क्षमाराव	कथामुक्तावली	1890–1954 ई.
96. पुष्पादीक्षिता	अग्निशिखा	इक्कीसवीं शताब्दी
97. रेवाप्रसाद द्विवेदी	सीताचरितम्	इक्कीसवीं शताब्दी
98. अभिराजराजेन्द्र मिश्र	जानकीजीवनम्	इक्कीसवीं शताब्दी
99. राधावल्लभ त्रिपाठी	लहरीदशकम्, गीतवीवरम्	इक्कीसवीं शताब्दी
100. ललितकुमार त्रिपाठी	गङ्गालहरी (सम्पादनम्)	इक्कीसवीं शताब्दी

संस्कृतसाहित्य के प्रमुख दम्पती, प्रेमी-प्रेमिका एवं उनकी सन्तानें

पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री	पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री
1. अगस्त्य	लोपामुद्रा		**28. कृष्ण**	रुक्मिणी/सत्यभामा	प्रद्युम्न
2. वशिष्ठ	अरुन्धती		**29. शर्विलक**	मदनिका	
3. विश्वामित्र	मेनका	शकुन्तला	**30. अग्निमित्र**	मालविका	
4. मारीच	अदिति (दाक्षायणी)	इन्द्र	**31. उदयन**	रत्नावली (सागरिका)	
5. ययाति	शर्मिष्ठा, देवयानी	पुरु	**32. उदयन**	वासवदत्ता	
6. अत्रि	अनसूया	दुर्वासा	**33. माधव**	मालती	
7. इन्द्र	इन्द्राणी/शची/पौलोमी	जयन्त	**34. मकरन्द**	मदयन्तिका	
8. ऋष्यशृङ्ग	शान्ता		**35. तारापीड**	विलासवती	चन्द्रापीड
9. दुष्यन्त	शकुन्तला, हंसपदिका, वसुमती	भरत (सर्वदमन)	**36. चन्द्रापीड**	कादम्बरी	
			37. पुण्डरीक	महाश्वेता	
10. कालिदास	विद्योत्तमा	–	**38. हंस**	गौरी	महाश्वेता
11. भर्तृहरि	पिङ्गला	–	**39. चित्ररथ**	मदिरा	कादम्बरी
12. भारवि	रसिकवती/रसिका	मनोरथ	**40. श्वेतकेतु**	लक्ष्मी	पुण्डरीक
13. पण्डितराजजगन्नाथ	(i) लवङ्गी (यवनी प्रेमिका) (ii) भामिनी (पत्नी)		**41. हेममाली** (यक्ष)	विशालाक्षी (यक्षिणी)	
14. राम	सीता	कुश-लव	**42. कवि जयदेव** (गीतगोविन्दकार)	पद्मावती	
15. लक्ष्मण	उर्मिला	चन्द्रकेतु			
16. भरत	माण्डवी	पुष्कल	**43. राजा दिलीप**	सुदक्षिणा	रघु
17. शत्रुघ्न	श्रुतिकीर्ति		**44. अज**	इन्दुमती	दशरथ
18. नल	दमयन्ती		**45. कामदेव**	रति	
19. पुरूरवा	उर्वशी		**46. शिव**	पार्वती	गणेश, कार्तिकेय
20. चारुदत्त	धूता/वसन्तसेना	रोहसेन	**47. विष्णु**	लक्ष्मी	
21. नन्द	सुन्दरी		**48. अभिमन्यु**	उत्तरा	परीक्षित
22. अविमारक	कुरङ्गी		**49. हिमालय**	मैना	पार्वती
23. भीम	हिडिम्बा	घटोत्कच	**50. शुकनास**	मनोरमा	वैशम्पायन
24. पञ्चपाण्डव	द्रौपदी		**51. राजशेखर**	अवन्तिसुन्दरी	
25. अर्जुन	सुभद्रा	अभिमन्यु	**52. दुर्योधन**	भानुमती	
26. धृतराष्ट्र	गान्धारी	दुर्योधन	**53. गौतम**	अहल्या	शतानन्द
27. पाण्डु	कुन्ती/माद्री	पञ्चपाण्डव	**54. याज्ञवल्क्य**	मैत्रेयी	

संस्कृतवाङ्मय में गुरु-शिष्य-परम्परा

शिष्य	गुरु	शिष्य	गुरु
1. जनक	याज्ञवल्क्य, शतानन्द (पुरोहित)	**9. चन्द्रगुप्त**	चाणक्य
2. भर्तृहरि	गोरखनाथ/वसुरात (बौद्धमत में)	**10. देवताओं के**	बृहस्पति
3. भवभूति	ज्ञाननिधि	**11. असुरों के**	शुक्राचार्य
4. वरदराज	भट्टोजिदीक्षित	**12. लव, कुश, सैधातकि, दण्डायन**	वाल्मीकि
5. भट्टोजिदीक्षित	शेषकृष्ण		
6. तुलसीदास	नरहर्यानन्द	**13. दुष्यन्त**	सोमरात (पुरोहित)
7. राम	वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य	**14. पाणिनि**	वर्ष (उपवर्ष)
8. श्रीकृष्ण	सान्दीपनी	**15. मंखक**	रुय्यक

शिष्य	गुरु	शिष्य	गुरु
16. दाराशिकोह	पण्डितराज जगन्नाथ (संस्कृतशिक्षक)	**32. दुर्योधनादि (कौरवों के)**	द्रोणाचार्य
17. बाणभट्ट	भर्वु	**33. चन्द्रापीड**	शुकनाश (उपदेष्टा)
18. शिवाजी	समर्थगुरुरामदास, कोण्डदेव	**34. जैमिनि**	पराशर
19. कनिष्क	अश्वघोष	**35. पराशर**	व्यास
20. अम्बिकादत्तव्यास	विश्वक्सेन	**36. मण्डनमिश्र**	कुमारिलभट्ट
21. अर्जुन (पञ्चपाण्डव)	द्रोणाचार्य	**37. उम्बेक (भवभूति)**	कुमारिलभट्ट
22. शङ्कराचार्य	आचार्य गोविन्दपाद	**38. प्रभाकरमिश्र**	कुमारिलभट्ट
23. गोविन्दपाद	आचार्य गौडपाद	**39. शालिकनाथ**	प्रभाकरमिश्र
24. महेन्द्रपाल	राजशेखर	**40. आसुरि**	कपिलमुनि
25. अभिनवगुप्त	भट्टतौत	**41. पञ्चशिख**	आसुरि
26. प्रतिहारेन्दुराज	मुकुलभट्ट	**42. हस्तामलक**	शङ्कराचार्य
27. एकलव्य	द्रोणाचार्य	**43. योगीन्द्र सदानन्द**	अद्वयानन्द
28. शार्ङ्गरव, शारद्वत	कण्व	**44. अरस्तू**	प्लेटो
29. गालव	मारीच	**45. प्लेटो**	सुकरात
30. कर्ण	परशुराम	**46. सिकन्दर**	अरस्तू
31. भीष्मपितामह	परशुराम	**47. नागेशभट्ट**	हरिदीक्षित

संस्कृतवाङ्मय में वर्णित राजा और राजधानी

राजा	राजधानी	राजा	राजधानी
1. शूद्रक	विदिशा ('वेत्रवती' नदी के किनारे)	**14. उदयन**	कौशाम्बी/उज्जयिनी
2. तारापीड	उज्जयिनी	**15. भर्तृहरि**	धारानगरी
3. दुष्यन्त	हस्तिनापुर	**16. विक्रमादित्य**	उज्जयिनी
4. राम	अयोध्या (सरयूनदी के किनारे)	**17. दुर्विनीत**	कोंकण
5. रावण	लङ्का ('समुद्र' तट पर)	**18. राजाभोज**	धारानगरी
6. नल	निषधदेश	**19. हर्षवर्धन**	थाणेश्वर
7. कृष्ण	द्वारिका (समुद्र के किनारे)	**20. जयचन्द्र**	कन्नौज
8. शिवाजी	सतारा/रायगढ़	**21. पृथ्वीराज**	दिल्ली
9. दुर्योधन (सुयोधन)	हस्तिनापुर	**22. महमूदगजनवी**	गजनी
10. युधिष्ठिर	इन्द्रप्रस्थ/हस्तिनापुर	**23. मुहम्मद गोरी**	गोरदेश
11. पुरु	हस्तिनापुर	**24. औरङ्गजेब**	दिल्ली
12. प्रद्योत	उज्जयिनी	**25. रन्तिदेव**	दशपुर
13. कुबेर	अलकापुरी		

संस्कृत में वर्णित कुछ प्रसिद्ध आश्रम एवं नगर

आश्रम/नगर	नदी/पर्वत	आश्रम/नगर	नदी/पर्वत
1. कण्व आश्रम	मालिनी नदी	**8. जाबालि आश्रम**	पम्पासरोवर
2. विश्वामित्र आश्रम	गौतमी नदी	**9. महाश्वेता आश्रम**	अच्छोदसरोवर
3. वाल्मीकि आश्रम	गङ्गानदी/तमसानदी	**10. विदिशा**	वेत्रवती (बेतवा)
4. भारद्वाज आश्रम	प्रयाग का सङ्गमतट	**11. उज्जयिनी**	क्षिप्रा नदी
5. अगस्त्य आश्रम	गोदावरी/दण्डकवन	**12. शचीतीर्थ (अप्सरातीर्थ)**	गङ्गा नदी
6. मारीच आश्रम	हेमकूटपर्वत	**13. अयोध्या**	सरयू नदी
7. यक्ष का निवास	रामगिरिपर्वत (चित्रकूट)	**14. हरिद्वार (कनखल)**	गङ्गा नदी

संस्कृत ग्रन्थों का मङ्गलाचरण

रचना	मङ्गलाचरण/(छन्द)	देवता	प्रकार
1. रघुवंशम्	वागर्थाविव सम्पृक्तौ......। (अनुष्टुप्)	शिव-पार्वती	नमस्कारात्मक
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या.....। (स्रग्धरा)	अष्टमूर्तिशिव	आशीर्वादात्मक
3. किरातार्जुनीयम्	श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीम् (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
4. शिशुपालवधम्	श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्...। (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
5. नैषधीयचरितम्	निपीय यस्य (वंशस्थ)	–	वस्तुनिर्देशात्मक
6. मेघदूतम्	कश्चित् कान्ता विरह गुरुणा....(मन्दाक्रान्ता)	–	वस्तुनिर्देशात्मक
7. उत्तररामचरितम्	इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमो वाकं प्रशास्महे (अनुष्टुप्)	पूर्ववर्ती वाल्मीकि आदिकवि वाल्मीकि	नमस्कारात्मक
8. शिवराजविजय	विष्णोर्माया भगवती..... (भा.)	विष्णु	नमस्कारात्मक तथा वस्तुनिर्देशात्मक
9. कादम्बरी कथा	रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये....। (वंशस्थ)	ब्रह्म, विष्णु, शिव रूपी परब्रह्म की	नमस्कारात्मक
10. नीतिशतकम्	दिक्कालाद्यनवच्छिन्ना.....। (अनुष्टुप्)	परब्रह्म की	नमस्कारात्मक

संस्कृतग्रन्थों की श्लोकसंख्या

रचना	कुल श्लोक संख्या
1. मेघदूतम्	पूर्वमेघ 67 उत्तरमेघ 54 = 121 इसमें 6 श्लोक प्रक्षिप्त। कुल = 63 + 52 = 115 श्लोक (मल्लिनाथ के अनुसार)
2. उत्तररामचरितम्	लगभग 256 (तृतीय अङ्क में – 48)
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	लगभग 196 (चतुर्थ अङ्क में– 22)
4. किरातार्जुनीयम्	लगभग 1030 (कुछ विद्वानों के अनुसार– 1040) (प्रथमसर्ग में–46
5. नीतिशतकम्	लगभग 111 (11 पद्धतियाँ)
6. शृङ्गारशतकम्	लगभग 103
7. वैराग्यशतकम्	लगभग–111
8. रघुवंशम्	लगभग 1569
9. वाल्मीकीयरामायणम् (चतुर्विंशतिसाहस्त्रीसंहिता)	लगभग–24000, (7 काण्ड, 500 सर्ग)
10. महाभारतम् (शतसाहस्त्रीसंहिता)	लगभग – एक लाख श्लोक, 18 पर्व
11. शिशुपालवधम्	लगभग 1650 (प्रथम सर्ग में – 75)
12. नैषधीयचरितम्	लगभग 2830 (प्रथम सर्ग में–145)
13. मृच्छकटिकम्	लगभग–380 (दश अङ्क)
14. गीता	लगभग–700, 18 अध्याय
15. भट्टिकाव्यम् (रावणवध)–भट्टि	लगभग–1624 श्लोक, 22 सर्ग
16. हरविजयम् (रत्नाकर)	4321 श्लोक, 50 सर्ग
17. राघवपाण्डवीय-कविराज	668 श्लोक, 13 सर्ग
18. भास के तेरह नाटक	1092 श्लोक
19. मालविकाग्निमित्रम्	96 श्लोक, 5 अङ्क
20. अनर्घराघवम्	567 श्लोक, 7 अङ्क
21. बालरामायणम्	741 पद्य, 10 अङ्क
22. ऋतुसंहारम्	144 श्लोक, 6 सर्ग

संस्कृतग्रन्थों के उपजीव्यग्रन्थ

रचना	उपजीव्यग्रन्थ
1. रघुवंशम् (कालिदास)	वाल्मीकीयरामायण एवं पद्मपुराण
2. मेघदूतम् (कालिदास)	ब्रह्मवैवर्तपुराण से कथानक तथा वाल्मीकि रामायण से दूत की कल्पना
3. किरातार्जुनीयम् (भारवि)	महाभारत का वनपर्व
4. **शिशुपालवधम्** (माघ)	(i) महाभारत का सभापर्व (सर्ग 33 से 45 तक) (ii) श्रीमद्भागवतपुराण (10 वाँ स्कन्ध, 74वाँ अध्याय)
5. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष)	महाभारत के वनपर्व का नलोपाख्यान
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	(i) महाभारत आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (अध्याय 67 से 74 तक) (ii) पद्मपुराण
7. उत्तररामचरितम् (भवभूति)	वाल्मीकीयरामायण का उत्तरकाण्ड (सर्ग 42 से 97 तक)
8. वेणीसंहारम् (भट्टनारायण)	महाभारत का सभापर्व
9. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	भासकृत 'चारुदत्तम्' नाटक
10. कादम्बरी (बाणभट्ट)	गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' (सुमनस् वृत्तान्त)
11. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्त व्यास)	इतिहासप्रसिद्ध कथानक
12. बुद्धचरितम् (अश्वघोष)	'ललितविस्तर' बौद्धग्रन्थ, इतिहासप्रसिद्ध
13. कुमारसम्भवम् (कालिदास)	श्रीमद्भागवतमहापुराण
14. सौन्दरानन्द (अश्वघोष)	इतिहासप्रसिद्ध
15. स्वप्नवासवदत्तम् (भास)	इतिहासप्रसिद्ध उदयनविषयक लोककथायें
16. प्रतिमानाटकम् (भास)	वाल्मीकीयरामायण (अयोध्याकाण्ड से रावणवध तक)
17. अभिषेकनाटकम् (भास)	वाल्मीकीयरामायणम्
18. पञ्चरात्रम् (भास)	महाभारतम्
19. मध्यमव्यायोग (भास)	महाभारतम्
20. कर्णभारम् (भास)	महाभारतम्
21. दूतघटोत्कचम् (भास)	महाभारतम्
22. बालचरितम् (भास)	महाभारतम्
23. ऊरुभङ्ग (भास)	महाभारतम्
24. प्रतिज्ञायौगन्धरायण (भास)	उदयनकथाश्रित
25. मालविकाग्निमित्रम् (कालिदास)	इतिहासप्रसिद्ध
26. विक्रमोर्वशीयम् (कालिदास)	ऋग्वेद एवं महाभारतम्
27. रत्नावली (हर्ष)	उदयनकथाश्रित/कविकल्पित इतिहासप्रसिद्ध
28. महावीरचरितम् (भवभूति)	वाल्मीकिरामायण
29. प्रसन्नराघवम् (जयदेव)	वाल्मीकिरामायण
30. नलचम्पू (त्रिविक्रमभट्ट)	महाभारत
31. मुद्राराक्षस (विशाखदत्त)	इतिहासप्रसिद्ध, विष्णुपुराण
32. प्रियदर्शिका (हर्ष)	कविकल्पनाप्रसूत
33. मालतीमाधवम् (भवभूति)	कविकल्पनाप्रसूत
34. अनर्घराघवम् (मुरारि)	वाल्मीकिरामायणम्
35. प्रबोधचन्द्रोदय (कृष्णमिश्र)	कविकल्पनाप्रसूत
36. हर्षचरितम् (बाण)	इतिहास प्रसिद्ध
37. ऋतुसंहारम् (कालिदास)	कविकल्पित
38. भट्टिकाव्य/रावणवध (भट्टि)	वाल्मीकिरामायण
39. जानकीहरणम् (कुमारदास)	वाल्मीकि रामायण
40. हरविजयम् (रत्नाकर)	शिशुपालवध का प्रभाव
41. शारिपुत्रप्रकरणम् (अश्वघोष)	इतिहासप्रसिद्ध

संस्कृतग्रन्थों में नायक-नायिका

रचना	नायक	नायिका
1. स्वप्नवासवदत्तम्	उदयन (धीरललित)	वासवदत्ता/पद्मावती
2. मृच्छकटिकम्	चारुदत्त (धीरप्रशान्त)	वसन्तसेना/धूता
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	दुष्यन्त (धीरोदात्त)	शकुन्तला
4. कुमारसम्भवम्	शिव	पार्वती
5. उत्तररामचरितम्	राम (धीरोदात्त)	सीता
6. किरातार्जुनीयम्	अर्जुन (नायक, धीरोदात्त) किरात (शिव, सहनायक) दुर्योधन (प्रतिनायक)	द्रौपदी
7. मेघदूतम्	यक्ष (हेममाली)	यक्षिणी (विशालाक्षी)
8. शिशुपालवधम्	श्रीकृष्ण (धीरोदात्त)	सत्यभामा/रुक्मिणी
9. नैषधीयचरितम्	नल (धीरोदात्त)	दमयन्ती
10. रत्नावली (नाटिका)	उदयन (धीरललित)	रत्नावली (सागरिका)
11. कादम्बरी कथा	चन्द्रापीड (नायक, धीरोदात्त) वैशम्पायन (सहनायक)	कादम्बरी महाश्वेता (सहनायिका)
12. दशकुमारचरितम्	राजहंस (दस राजकुमार) राजवाहन	विलासवती अवन्तिसुन्दरी
13. वेणीसंहारम्	भीम (धीरोद्धत)	द्रौपदी
14. मालविकाग्निमित्रम्	अग्निमित्र (धीरोदात्त, कुछ विद्वानों के मत में धीरललित)	मालविका
15. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	पुरूरवा (विक्रम)	उर्वशी
16. मुद्राराक्षसम्	चाणक्य और चन्द्रगुप्त	नायिका का अभाव
17. प्रियदर्शिका	राजा उदयन (धीरललित)	आरण्यिका (प्रियदर्शिका)
18. नागानन्द	जीमूतवाहन	मलयवती
19. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	(i) माधव (ii) मकरन्द	(i) मालती (ii) मदयन्तिका
20. महावीरचरितम्	राम (धीरोदात्त)	सीता
21. बुद्धचरितम्	भगवान् बुद्ध	–
22. हर्षचरितम्	हर्षवर्धन	–
23. रघुवंशम्	श्रीराम (रघु)	सीता
24. कर्पूरमञ्जरी	चन्द्रपाल	कर्पूरमञ्जरी
25. प्रसन्नराघवम्	श्रीराम	सीता
26. प्रबोधचन्द्रोदय	प्रबोधचन्द्र	
27. ऊरुभङ्गम्	दुर्योधन/भीम	–

संस्कृत-ग्रन्थों में अङ्गी रस

रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस	रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	शृङ्गार	17. मुद्राराक्षसम्	वीररस
2. मेघदूतम्	विप्रलम्भशृङ्गार	18. प्रियदर्शिका	शृङ्गाररस
3. उत्तररामचरितम्	करुणरस	19. रत्नावली	शृङ्गाररस
4. किरातार्जुनीयम्	वीररस	20. नागानन्द	शान्तरस/वीररस
5. नैषधीयचरितम्	शृङ्गार	21. वेणीसंहारम्	वीररस
6. शिशुपालवधम्	वीर रस	22. कुन्दमाला	करुणरस
7. रघुवंशम्	वीररस	23. प्रबोधचन्द्रोदय	करुणरस/वीररस
8. बुद्धचरितम्	शान्तरस	24. शृङ्गारशतकम्	शृङ्गाररस
9. मृच्छकटिकम्	शृङ्गाररस	25. गीतगोविन्दम्	शृङ्गाररस
10. कुमारसम्भवम्	शृङ्गाररस	26. रावणवध (भट्टिकाव्यम्)	वीररस
11. शिवराजविजयम्	वीररस	27. जानकीहरणम्	शृङ्गाररस
12. स्वप्नवासवदत्तम्	शृङ्गाररस	28. कर्पूरमञ्जरी	शृङ्गाररस
13. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	शृङ्गाररस	29. शारिपुत्रप्रकरणम्	शान्तरस
14. महावीरचरितम् (नाटक)	वीररस	30. अनर्घराघवम्	शृङ्गाररस
15. मालविकाग्निमित्रम्	शृङ्गाररस	31. रामायणम्	करुणरस
16. विक्रमोर्वशीयम्	शृङ्गाररस	32. महाभारतम्	शान्तरस

संस्कृत-ग्रन्थों में प्रयुक्त छन्द

ग्रन्थ	ग्रन्थों में प्रयुक्त प्रमुख छन्द
1. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)	वंशस्थ, 45वें में पुष्पिताग्रा, अन्तिम 46वें में–मालिनी (कुल प्रयुक्त छन्द–22)
2. शिशुपालवधम्	वंशस्थ, अनुष्टुप्, उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द – 25)
3. नैषधीयचरितम्	उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द–19)
4. मेघदूतम्	मन्दाक्रान्ता (सम्पूर्ण ग्रन्थ में)
5. रघुवंशम्	उपजाति, अनुष्टुप्
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	आर्या, वसन्ततिलका, अनुष्टुप् (कुल प्रयुक्त छन्द–24)
7. मृच्छकटिकम्	अनुष्टुप् (कुलप्रयुक्त छन्द–21)
8. उत्तररामचरितम्	अनुष्टुप्, शिखरिणी (कुल प्रयुक्त छन्द 19)
9. बुद्धचरितम्	अनुष्टुप्, उपजाति
10. भट्टिकाव्यम् (रावणवधम्)	अनुष्टुप्, उपजाति, आर्या, और पुष्पिताग्रा आदि अनेकछन्द
11. मुद्राराक्षसम्	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, शिखरिणी
12. वेणीसंहारम्	अनुष्टुप् (62), वसन्ततिलका (38), शार्दूलविक्रीडित (34) (कुलप्रयुक्त छन्द–18)
13. बालरामायणम्	शार्दूलविक्रीडित और स्रग्धरा।
14. प्रसन्नराघवम्	वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी।
15. अमरुकशतकम्	शार्दूलविक्रीडितम्
16. कुमारसम्भवम्	अनुष्टुप्
17. सौन्दरानन्द	अनुष्टुप्
18. जानकीहरणम्	अनुष्टुप्
19. हरविजय	शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता

संस्कृत ग्रन्थों का विभाजन

ग्रन्थ-ग्रन्थकार	विभाजन
1. काव्यप्रकाश (मम्मट)	दश उल्लास, 142 कारिकायें, 604 उदाहरण।
2. साहित्य दर्पण (विश्वनाथ)	दश परिच्छेद
3. रसगङ्गाधर (जगन्नाथ)	चार आनन
4. दशरूपक (धनञ्जय)	चार प्रकाश
5. काव्यादर्श (दण्डी)	तीन परिच्छेद, 660 पद्य
6. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्तव्यास)	तीन विराम, 12 निःश्वास
7. महाकाव्य	सर्गों में विभक्त (8 से अधिक सर्ग)
8. नाटक	अङ्को में विभक्त (5 अङ्क या इससे अधिक)
9. मेघदूतम् (कालिदास)	दो खण्डों में–पूर्वमेघ, उत्तरमेघ
10. कादम्बरी कथा (बाणभट्ट)	दो भागों में–पूर्वभाग, उत्तरभाग
11. आख्यायिका	उच्छ्वासों में (हर्षचरितम् में 8 उच्छ्वास)
12. वक्रोक्तिजीवितम् (कुन्तक)	चार उन्मेष
13. वाल्मीकीयरामायणम् (वाल्मीकिः)	**7 काण्ड, 500 सर्ग, 24,000 श्लोक**
14. महाभारतम् (वेदव्यासः)	**18 पर्व, 1 लाख श्लोक**
15. श्रीमद्भागवतपुराण (वेदव्यासः)	**12 स्कन्ध, 18000 श्लोक**
16. गीता (वेदव्यासः)	18 अध्याय, 700 श्लोक
17. व्यक्तिविवेक (महिमभट्ट)	तीन **विमर्श**
18. सरस्वतीकण्ठाभरण (भोजराज)	पाँच परिच्छेद
19. शृङ्गारप्रकाश (भोजराज)	36 प्रकाश
20. कविकण्ठाभरण (क्षेमेन्द्र)	पाँच अध्याय 55 कारिकायें।
21. अभिधावृत्तिमात्रिका (मुकुलभट्ट)	15 कारिकायें
22. ध्वन्यालोक (आनन्दवर्धन)	4 उद्योत
23. काव्यालङ्कारसारसंग्रह (उद्भट)	6 वर्गों में
24. काव्यालङ्कार (रुद्रट)	16 अध्याय, 714 आर्यायें
25. काव्यालङ्कारसूत्र (वामन)	5 अधिकरण
26. काव्यालङ्कार (भामह)	6 परिच्छेद
27. काव्यमीमांसा (राजशेखर)	18 अध्याय
28. चन्द्रालोक (जयदेव)	10 मयूख
29. राजतरङ्गिणी (कल्हण)	8 तरङ्ग
30. ऋतुसंहार (कालिदास)	6 सर्ग, 144 श्लोक
31. नाट्यशास्त्र (भरत)	36 अध्याय
32. कथासरित्सागर (सोमदेव)	18 लम्बक, 124 तरङ्ग, 22000 पद्य।
33. हितोपदेश (नारायणपण्डित)	चार परिच्छेद, 43 कहानियाँ
34. पञ्चतन्त्र (विष्णुशर्मा)	पाँच तन्त्र, पाँच मुख्य कथायें, 1003 श्लोक, 75 उपकथायें।
35. कर्पूरमञ्जरी (राजशेखर)	4 जवनिका

संस्कृत ग्रन्थों में प्रमुख वर्णन

वर्णन	ग्रन्थ	वर्णन	ग्रन्थ
1. अच्छोदसरोवर	कादम्बरी	**5. इन्द्रकीलपर्वत**	किरातार्जुनीयम् सर्ग-5
2. पम्पासरोवर	कादम्बरी	**6. शरद्वर्णन**	किरातार्जुनीयम् सर्ग 4
3. शाल्मलीवृक्ष	कादम्बरी	**7. षड्ऋतु वर्णन**	(i) शिशुपालवधम् सर्ग-6
4. रैवतकपर्वत	शिशुपालवधम्-सर्ग 4		(ii) ऋतुसंहारम्

संस्कृतग्रन्थों के अपरनाम

मुख्यग्रन्थ	अपरनाम	मुख्यग्रन्थ	अपरनाम
1. किरातार्जुनीयम्	लक्ष्मीपदाङ्कमहाकाव्यम्	4. नलचम्पू	दमयन्तीकथा
2. शिशुपालवधम्	श्र्यङ्कमहाकाव्यम् ('श्री' पदाङ्कमहाकाव्य)	5. अष्टाध्यायी	अष्टक
3. नैषधीयचरितम्	आनन्दपदाङ्कमहाकाव्यम्		

संस्कृतवाङ्मय की दशत्रयी

1. बृहत्त्रयी		2. लघुत्रयी	
ग्रन्थ	**कवि**	**ग्रन्थ**	**कवि**
1. किरातार्जुनीयम्	भारवि	1. रघुवंशम्	कालिदासः
2. शिशुपालवधम्	माघ	2. कुमारसम्भवम्	कालिदासः
3. नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष	3. मेघदूतम्	कालिदासः

3. गद्यबृहत्त्रयी		4. उपजीव्यग्रन्थत्रयी	
कवि	**ग्रन्थ**	**ग्रन्थः**	**कविः**
1. सुबन्धु	वासवदत्ता	1. रामायणम्	वाल्मीकिः
2. बाणभट्ट	कादम्बरी	2 महाभारतम्	वेदव्यासः
3. दण्डी	दशकुमारचरितम्	3. भागवतपुराणम्	वेदव्यासः

5. पुरुषार्थत्रयी	6. पाषाणत्रयी	7. गुणत्रयी
1. धर्म	1. किरातार्जुनीयम् का प्रथम सर्ग	1. सत्त्वगुणः
2. अर्थ	2. किरातार्जुनीयम् का द्वितीय सर्ग	2. रजोगुणः
3. काम	3 किरातार्जुनीयम् का तृतीय सर्ग	3. तमोगुणः

8. मुनित्रयी			9. प्रस्थानत्रयी	10. वेदत्रयी
मुनिः	**व्याकरणग्रन्थः**	**साहित्यिकग्रन्थः**		
1. पाणिनिः	अष्टाध्यायी	जाम्बवतीजयम्/पातालविजयम्	1. ब्रह्मसूत्र	1. ऋग्वेद
2. कात्यायनः	वार्तिकम्	स्वर्गारोहणम्	2. उपनिषद्	2. यजुर्वेद
3. पतञ्जलिः	महाभाष्यम्	महानन्दकाव्यम्	3. गीता	3. सामवेद

यज्ञ	यज्ञकर्ता	वीणा	स्वामी	ग्रन्थ
वाजपेय	महाकवि (भवभूति के पूर्वज)	महती	नारद	शिशुपालवधम्
राजसूय	युधिष्ठिर	कच्छपी	सरस्वती	–
पुत्रेष्टि	दशरथ	घोषवती	उदयन	स्वप्नवासवदत्तम्
अश्वमेध	राम			
गवालम्भ	राजा रन्तिदेव			

परिशिष्ट-4 ''काव्यशास्त्रम्''

काव्यशास्त्रीय छः सम्प्रदाय

सम्प्रदाय	प्रवर्तक और प्रमुख आचार्य
1. रससम्प्रदाय	**भरत (प्रवर्तक)** भोजराज, भट्टनायक, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमिश्र, शारदातनय
2. अलङ्कारसम्प्रदाय	**भामह** (प्रवर्तक), दण्डी, उद्भट, प्रतिहारेन्दुराज रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित।
3. रीतिसम्प्रदाय	**वामन** (प्रवर्तक)
4. ध्वनिसम्प्रदाय	**आनन्दवर्धन** (प्रवर्तक), रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त, जगन्नाथ
5. वक्रोक्तिसम्प्रदाय	**कुन्तक** (प्रवर्तक)
6. औचित्यसम्प्रदाय	**क्षेमेन्द्र** (प्रवर्तक)
चमत्कार सम्प्रदाय	कुछ आधुनिक काव्यशास्त्री

काव्यलक्षण–तालिका

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काव्यलक्षण
1. काव्यप्रकाश	**आचार्य मम्मट**	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि–(का.प्र. प्रथमोल्लास)
2. साहित्यदर्पण	**आचार्य विश्वनाथ**	वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
3. रसगङ्गाधर	**पण्डितराज जगन्नाथ**	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
4. काव्यालङ्कार	**भामह**	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
5. वक्रोक्तिजीवितम्	**कुन्तक**	वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
6. काव्यालङ्कार सूत्र	**वामन**	रीतिरात्मा काव्यस्य
7. ध्वन्यालोक	**आनन्दवर्धन**	काव्यस्यात्मा ध्वनिः
8. काव्यादर्श	**दण्डी**	शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली
9. औचित्यविचारचर्चा	**क्षेमेन्द्र**	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्
10. अग्निपुराण	**व्यास**	संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली/काव्यं स्फुरदलङ्कारं गुणवद् दोषवर्जितम्।।
11. श‍ृङ्गारप्रकाश	**भोज**	अदोषं गुणवद्काव्यमलङ्कारैरलङ्कृतम् रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।।

काव्यशास्त्र में अलङ्कारों की संख्या

ग्रन्थ–ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या
1. नाट्यशास्त्र–भरत	उपमा, रूपक, दीपक और यमक कुल चार अलङ्कार
2. अग्निपुराण	09 शब्दालङ्कार + 08 अर्थालङ्कार + 06 उभयालङ्कार =23 अलङ्कार
3. विष्णुधर्मोत्तर पुराण	18 अलङ्कार
4. काव्यालङ्कार–भामह	38 अलङ्कार
5. काव्यादर्श–दण्डी	38 अलङ्कार
6. काव्यालङ्कारसारसंग्रह–उद्भट	41 अलङ्कार
7. काव्यालङ्कार–रुद्रट	51 अलङ्कार
8. सरस्वतीकण्ठाभरण–भोजराज	24 शब्दालङ्कार + 24 अर्थालङ्कार + 24 उभयालङ्कार =72 अलङ्कार
9. काव्यप्रकाश – मम्मट	06 शब्दालङ्कार + 61 अर्थालङ्कार =67 अलङ्कार
10. अलङ्कारसर्वस्व – रुय्यक	78 अलङ्कार
11. साहित्यदर्पण–विश्वनाथ	78 अलङ्कार
12. चन्द्रालोक–जयदेव	100 अलङ्कार
13. कुवलयानन्द–अप्पयदीक्षित	120 अलङ्कार

साहित्यशास्त्र में रसों की संख्या

रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
1. शृङ्गार	रति	श्याम	विष्णु
2. वीररस	उत्साह	सुवर्णवत्	महेन्द्र
3. बीभत्सरस	जुगुप्सा	नील	महाकाल
4. रौद्ररस	क्रोध	रक्त	रुद्र
5. हास्यरस	हास	शुक्ल	प्रमथ
6. अद्भुतरस	विस्मय	पीत	ब्रह्मा
7. भयानक रस	भय	कृष्ण	काल
8. करुणरस	शोक	कपोत	यम
9. शान्तरस	निर्वेद/शम	कुन्दपुष्पवत्	श्रीनारायण

- आचार्य भरत और धनञ्जय के अनुसार नाटक में आठरस माने गये हैं–''**अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः**''–(नाट्यशास्त्र)
- अभिनव गुप्त एवं आचार्य मम्मट आदि ने 'शान्तरस' को नवम रस के रूप में स्वीकार किया है। ''**शान्तोऽपि नवमो रसः**''
- **रुद्रट** ने '**प्रेयान्**' नामक दसवें रस की उद्भावना की है।
- **रूपगोस्वामी** ने '**भक्तिरस**' को प्रधानरस माना है।
- **विश्वनाथ** नवरस के अतिरिक्त '**वात्सल्य**' नामक रस को भी स्वीकार करते हैं।
- **भवभूति** ने '**करुणरस**' को ही एकमात्र मूलरस मानते हैं– ''**एको रसः करुण एव**''

आचार्य भरत प्रतिपादित रससूत्र

- आचार्य भरत द्वारा 'नाट्यशास्त्र' में प्रतिपादित रससूत्र– ''**विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः**'' अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारिभाव के संयोग से 'रस' की निष्पत्ति होती है।

आचार्य भरत प्रतिपादित 'रससूत्र' के व्याख्याकार

व्याख्याकार	समय	मत	दर्शन
1. भट्टलोल्लट	नवमशताब्दी	उत्पत्तिवाद (उत्पाद्य-उत्पादक)	मीमांसा
2. शङ्कुक	नवमशताब्दी	अनुमितिवाद (अनुमाप्य-अनुमापक)	न्याय
3. भट्टनायक	11वीं शताब्दी	भुक्तिवाद (भोज्य-भोजक)	सांख्य
4. अभिनवगुप्त	11वीं शताब्दी	अभिव्यक्तिवाद (व्यङ्ग्य-व्यञ्जक)	शैव/वेदान्त

शंखों के नाम

देव	शंख
1. श्रीकृष्ण	पाञ्चजन्य
2. युधिष्ठिर	अनन्तविजय
3. भीम	पौण्ड्र
4. अर्जुन	देवदत्त
5. नकुल	सुघोष
6. सहदेव	मणिपुष्पक

नायकों की कोटियाँ

धीरोदात्त – राम, कृष्ण, अर्जुन, चन्द्रापीड, दुष्यन्त, शिवाजी।
धीरोद्धत – भीम, परशुराम, दुर्योधन आदि।
धीरललित – यक्ष, उदयन आदि।
धीरप्रशान्त – चारुदत्त आदि।

नायिकाओं की कोटियाँ

स्वकीया प्रौढा – सीता, द्रौपदी
स्वकीया मध्या – यक्षिणी
स्वकीया मुग्धा – शकुन्तला, कादम्बरी, महाश्वेता

परिशिष्ट-5 ''संस्कृतनाटकम्''

संस्कृत-रूपकों के दशभेद

रूपक	अङ्क-संख्या	उदाहरणम्
1. नाटक	5 से 10 अङ्क	अभिज्ञानशाकुन्तलम्, स्वप्नवासवदत्तम्, उत्तररामचरितम्
2. प्रकरण	10 अङ्क	मृच्छकटिकम्, मालतीमाधवम्, शारिपुत्रप्रकरण पुष्पभूषित
3. भाण	1 अङ्क	लीलामधुकरम्, शृङ्गारशेखर, मर्कटमदलिका, धूर्तसमागम
4. व्यायोग	1 अङ्क	सौगन्धिकाहरणम्, जामदग्न्यजय
5. समवकार	3 अङ्क	समुद्रमन्थनम् (12 नायक), नवग्रहचरितम्
6. डिम	4 अङ्क	त्रिपुरदाह (16 नायक)
7. ईहामृग	4 अङ्क /1 अङ्क	कुसुमशेखरविजयम्
8. अङ्क (उत्सृष्टिकाङ्क)	1 अङ्क	शर्मिष्ठा-ययातिः
9. वीथी	1 अङ्क	मालविका
10. प्रहसन	1 अङ्क	कन्दर्पकेलिः/धूर्तचरितम्
● नाटिका	4 अङ्क	रत्नावली, प्रियदर्शिका
● सट्टक	4 जवनिका	कर्पूरमञ्जरी

संस्कृतनाटकों में विदूषक

नाटक	विदूषक	नाटक	विदूषक
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	माढव्य/माधव्य	**6. स्वप्नवासवदत्तम् (भास)**	वसन्तक
2. विक्रमोर्वशीयम् (कालिदास)	माणवक	**7. मालतीमाधवम् (भवभूति)**	विदूषक का अभाव
3. मालविकाग्निमित्रम् (कालिदास)	गौतम	**8. महावीरचरितम् (भवभूति)**	विदूषक का अभाव
4. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	मैत्रेय	**9. उत्तररामचरितम् (भवभूति)**	विदूषक का अभाव
5. रत्नावली (श्रीहर्ष)	वसन्तक	**10. मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त)**	विदूषक का अभाव

संस्कृत नाटकों में कञ्चुकी

नाटक	कञ्चुकी का नाम	नाटक	कञ्चुकी का नाम
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	बादरायण	**5. उत्तररामचरितम्**	गृष्टि
2. दूतवाक्यम्	बादरायण	**6. रत्नावली**	बाभ्रव्य
3. स्वप्नवासवदत्तम्	बादरायण	**7. वेणीसंहारम्**	जयन्धर (युधिष्ठिर का)
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	वातायन		विनयन्धर (दुर्योधन का)

नाटकीय पञ्चीकरण

पञ्च अर्थप्रकृतियाँ	पञ्च कार्यावस्थायें	पञ्च सन्धियाँ	पञ्च अर्थोपक्षेपक	पञ्चनाटककार
1. बीज	1. आरम्भ	1. मुखसन्धि	1. विष्कम्भक	1. भास
2. बिन्दु	2. यत्न	2. प्रतिमुखसन्धि	2. चूलिका	2. कालिदास
3. पताका	3. प्राप्त्याशा	3. गर्भसन्धि	3. अङ्कास्य	3. शूद्रक
4. प्रकरी	4. नियताप्ति	4. अवमर्श/विमर्शसन्धि	4. अङ्कावतार	4. विशाखदत्त
5. कार्य	5. फलागम	5. उपसंहृति/निर्वहणसन्धि	5. प्रवेशक	5. भवभूति

प्रमुख नाटकों के अङ्कों के नाम

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम	**आश्रम प्रवेश**	34
द्वितीय	**आश्रमनिवेश**	18
तृतीय	**मिलन**	24
चतुर्थ	**विदा**	22
पञ्चम	**प्रत्याख्यान**	31
षष्ठ	**पश्चात्ताप**	32
सप्तम	**पुनर्मिलन**	35
	योग =	**196**

उत्तररामचरितम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम	**चित्रदर्शन**	51
द्वितीय	**पञ्चवटीप्रवेश**	30
तृतीय	**छाया**	48
चतुर्थ	**कौशल्याजनकयोग**	29
पञ्चम	**कुमारविक्रम**	35
षष्ठ	**कुमारप्रत्यभिज्ञान**	42
सप्तम	**सम्मेलन**	21
	योग =	**256**

मृच्छकटिकम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	**अलङ्कारन्यास**	58
द्वितीय	**द्यूतकरसंवाहक**	20
तृतीय	**सन्धिच्छेद**	30
चतुर्थ	**मदनिकाशर्विलक**	33
पञ्चम	**दुर्दिन**	52
षष्ठ	**प्रवहणविपर्यय**	27
सप्तम	**आर्यकापहरण**	09
अष्टम	**वसन्तसेनामोटन**	47
नवम	**व्यवहार** (न्यायालय)	43
दशम	**संहार** (उपसंहार)	61
	योग =	**380**

रत्नावली के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम अङ्क	**मदनमहोत्सव**	26
द्वितीय अङ्क	**कदलीगृहम्**	21
तृतीय अङ्क	**सङ्केतक**	19
चतुर्थ अङ्क	**ऐन्द्रजालिक**	20
		86

छन्दों में वर्णों की संख्या

छन्द	वर्णों की संख्या
अनुष्टुप्	$08 \times 4 = 32$
इन्द्रवज्रा	$11 \times 4 = 44$
उपेन्द्रवज्रा	$11 \times 4 = 44$
उपजाति	$11 \times 4 = 44$
रथोद्धता	$11 \times 4 = 44$
शालिनी	$11 \times 4 = 44$
स्वागता	$11 \times 4 = 44$
वंशस्थ	$12 \times 4 = 48$
द्रुतविलम्बित	$12 \times 4 = 48$
तोटक (त्रोटक)	$12 \times 4 = 48$
भुजङ्गप्रयात	$12 \times 4 = 48$
प्रहर्षिणी, अतिरुचिरा	$13 \times 4 = 52$
वसन्ततिलका	$14 \times 4 = 56$
मालिनी	$15 \times 4 = 60$
पञ्चचामर	$16 \times 4 = 64$
शिखरिणी, हरिणी, पृथ्वी, मन्दाक्रान्ता	$17 \times 4 = 68$
शार्दूलविक्रीडित	$19 \times 4 = 76$
स्रग्धरा	$21 \times 4 = 84$

परिशिष्ट-6 ''संस्कृतवाङ्मय का संख्यात्मक महत्त्व''

- **एकम्**
  ईश्वरः, ब्रह्म, सूर्यः, चन्द्रः, पृथ्वी, शुक्राचार्यस्य नेत्रम्, गणेशस्य दन्तः।
- **द्वयम्**
- सुखम-दुःखम् सृष्टिः-लयः
- शुभम्-अशुभम् लाभः-अलाभः
- कारणं-कार्यम् पुण्यम्-पापम्
- सत्यम्-असत्यम् जयः-पराजयः
- **अयनद्वयम्**
  1. उत्तरायणम् 2. दक्षिणायनम्
- **पक्षद्वयम्**
  1. कृष्णपक्षः 2. शुक्लपक्षः
- **विद्याद्वयम्**
  1. परा 2. अपरा
- **त्रयः अग्नयः**
  1. वडवाग्निः 2. जठराग्निः 3. दावाग्निः
- **त्रयः कालाः**
  1. भूतकालः 2. वर्तमानकालः 3. भविष्यकालः
- **त्रयः जीवाः**
  1. जलचरः 2. थलचरः 3. नभचरः
- **त्रीणि दुःखानि**
  1. आध्यात्मिकदुःखम् 2. आधिभौतिकदुःखम्, 3. आधिदैविकदुःखम्
- **त्रयः देवाः**
  1. ब्रह्मा 2. विष्णुः 3. महेशः।
- **त्रयः दोषाः**
  1. वात 2. पित्त 3. कफ
- **त्रयः रामाः**
  1. परशुरामः 2. श्रीरामः 3. बलरामः
- **त्रीणि ऋणानि**
  1. पितृऋणम् 2. ऋषिऋणम् 3. देवऋणम्
- **भुवनत्रयम्**
  1. सुरभुवनम् 2. नरभुवनम् 3. नागभुवनम्
- **मूर्तित्रयम्**
  1. ब्रह्मा 2. विष्णुः 3. महेश्वरः
- **त्रिवर्गः**
  1. धर्मः 2. अर्थः 3. कामः
- **तिस्रः शब्दशक्तयः**
  1. अभिधा 2. लक्षणा 3. व्यञ्जना
- **त्रिवेणी**
  1. गङ्गा 2. यमुना 3. सरस्वती
- **त्रिविधाः पुरुषाः**
  1. उत्तमाः 2. मध्यमाः 3. अधमाः
- **त्रयो गुणाः**
  1. सत्त्वगुणः 2. रजोगुणः 3. तमोगुणः
- **त्रिकरणानि**
  1. मनः 2. वाक् 3. कायः
- **तिस्रो धनगतयः**
  1. दानम् 2. भोगः 3. नाशः
- **पिटकत्रयम्**
  1. सूत्रपिटकम् 2. विनयपिटकम् 3. अभिधम्मपिटकम्
- **चत्वारि धामानि**
  1. जगन्नाथधाम 2. रामेश्वरधाम
  3. द्वारिकाधाम 4. बद्रीनाथधाम
- **चतुर्विधः भक्तः**
  1. दुःखी 2. जिज्ञासुः
  3. अर्थार्थी 4. ज्ञानी
- **चत्वारि युगानि**
  1. सत्ययुगम् 2. त्रेतायुगम्
  3. द्वापरयुगम् 4. कलियुगम्
- **चत्वारः वर्णाः**
  1. ब्राह्मणः 2. क्षत्रियः
  3. वैश्यः 4. शूद्रः।
- **चत्वारो वेदाः**
  1. ऋग्वेदः 2. यजुर्वेदः
  3. सामवेदः 4. अथर्ववेदः
- **चत्वारो वेदभागाः**
  1. संहिता 2. ब्राह्मणम्
  3. आरण्यकम् 4. उपनिषद्
- **चत्वारः पुरुषार्थाः**
  1. धर्मः 2. अर्थः
  3. कामः 4. मोक्षः
- **चतस्रः अवस्थाः**
  1. जाग्रदवस्था 2. स्वप्नावस्था
  3. सुषुप्त्यवस्था 4. समाध्यवस्था (तुरीयावस्था)
- **चत्वारः आश्रमाः**
  1. ब्रह्मचर्याश्रमः 2. गृहस्थाश्रमः
  3. वानप्रस्थाश्रमः 4. संन्यासाश्रमः

- **चतस्रो वयोऽवस्थाः**
  1. बाल्यम् 2. कौमारम्
  3. यौवनम् 4. वार्धक्यम्
- **चत्वारोपायाः**
  1. साम 2. दाम
  3. दण्डः 4. भेदः
- **चतुरङ्गिणी सेना**
  1. रथः 2. गजः
  3. अश्वः 4. पदातिः
- **पञ्चामृतम्**
  1. दुग्धम् 2. दधि 3. घृतम्
  4. मधु 5. शर्करा।
- **पञ्च विद्यार्थिलक्षणानि**
  1. काकचेष्टा 2. वकोध्यानम् 3. श्वाननिद्रा
  4. अल्पाहारी 5. गृहत्यागी
- **पञ्च यमाः (योगसूत्र के अनुसार)**
  1. अहिंसा 2. सत्यम् 3. अस्तेयः
  4. ब्रह्मचर्यः 5. अपरिग्रहः
- **पञ्च नियमाः (योगसूत्र के अनुसार)**
  1. शौच 2. सन्तोष 3. तप,
  4. स्वाध्याय 5. ईश्वरप्रणिधान
- **पञ्च कर्माणि (तर्कसंग्रह के अनुसार)**
  1. उत्क्षेपण 2. अपक्षेपण 3. आकुञ्चन
  4. प्रसारण 5. गमन।
- **पञ्च क्लेशाः (योगसूत्र के अनुसार)**
  1. अविद्या 2. अस्मिता 3. राग
  4. द्वेष 5. अभिनिवेश
- **पञ्चभूतानि**
  1. पृथ्वी 2. जलम् 3. तेजः
  4. वायुः 5. आकाशम्
- **पञ्च तन्मात्राणि**
  1. गन्धः 2. रसः 3. रूपम्
  4. स्पर्शः 5. शब्दः
- **पञ्च वायवः**
  1. प्राणवायुः 2. अपानवायुः
  3. व्यानवायुः 4. उदानवायुः 5. समानवायुः
- **पञ्च कोषाः**
  1. अन्नमयः 2. प्राणमयः
  3. मनोमयः 4. विज्ञानमयः 5. आनन्दमयः
- **पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि**
  1. श्रोत्रम् 2. त्वक्
  3. चक्षुः 4. जिह्वा 5. घ्राणम् (नासिका)
- **पञ्च कर्मेन्द्रियाणि**
  1. वाक् 2. पाणि
  3. पाद 4. पायु 5. उपस्थ
- **पञ्च सत्यः (सती)**
  1. अनसूया 2. सुलोचना 3. सावित्री
  4. सीता 5. उर्मिला
- **पञ्च कन्याः**
  1. अहल्या 2. द्रौपदी
  3. कुन्ती 4. तारा 5. मन्दोदरी
- **पञ्चाङ्गम्**
  1. तिथिः 2. वासरः
  3. नक्षत्रम् 4. योगः 5. करणम्
- **पञ्चावयववाक्यम्**
  1. प्रतिज्ञा 2. हेतुः
  3. उदाहरणम् 4. उपनयः 5. निगमनम्
- **पञ्चगव्यम्**
  1. दुग्धम् 2. दधि
  3. घृतम् 4. गोमूत्रम् 5. गोमयम्
- **पञ्च यज्ञाः**
  1. देवयज्ञः 2. पितृयज्ञः
  3. भूतयज्ञः 4. मनुष्ययज्ञः 5. ब्रह्मयज्ञः
- **पञ्च पाण्डवाः**
  1. युधिष्ठिरः 2. भीमसेनः
  3. अर्जुनः 4. नकुलः 5. सहदेवः
- **पञ्च महाकाव्यानि**
  1. रघुवंशम् 2. कुमारसम्भवम्
  3. किरातार्जुनीयम् 4. शिशुपालवधम् 5. नैषधीयचरितम्
- **कामदेवस्य पञ्चबाणाः**
  1. अरविन्दम् 2. अशोकः
  3. चूतम् 4. नवमल्लिका 5. नीलोत्पलम्
- **षड् रसाः**
  1. मधुरः 2. अम्लः 3. लवणः
  4. कटुः 5. कषायः 6. तिक्तः
- **ब्राह्मणस्य षट् कर्माणि**
  1. अध्ययनम् 2. अध्यापनम् 3. यजनम्
  4. याजनम् 5. दानम् 6. प्रतिग्रहः

- **षट् रिपवः**
  1. कामः 2. क्रोधः 3. लोभः
  4. मोहः 5. मदः 6. मात्सर्यम्
- **षट् ऋतवः**
  1. ग्रीष्मः 2. वर्षा 3. शरद्
  4. हेमन्तः 5. शिशिरः 6. वसन्तः
- **वेदस्य षट् अङ्गानि (वेदाङ्ग)**
  1. शिक्षा 2. कल्पः 3. निरुक्तम्
  4. छन्दः 5. व्याकरणम् 6. ज्योतिषम्
- **षट्चक्रम्**
  1. मूलाधारचक्रम् 2. अधिष्ठानचक्रम् 3. मणिपूरचक्रम्
  4. अनाहतचक्रम् 5. विशुद्धचक्रम् 6. आज्ञाचक्रम्
- **षड्दर्शनम्**
  1. सांख्यदर्शनम् 2. योगदर्शनम् 3. न्यायदर्शनम्
  4. वैशेषिकदर्शनम् 5. मीमांसादर्शनम् 6. वेदान्तदर्शनम्
- **सप्त स्वराः**
  1. षड्ज 2. ऋषभ 3. गान्धार
  4. मध्यम 5. पञ्चम 6. धैवत
  7. निषाद (सा, रे, ग, म, प, ध, नि)
- **सप्त वासरः**
  1. सोमवासरः 2. मङ्गलवासरः 3. बुधवासरः
  4. गुरुवासरः 5. शुक्रवासरः 6. शनिवासरः
  7.रविवासरः
- **सप्त ऊर्ध्वलोकाः**
  1. भूलोकः 2. भुवर्लोकः
  3. स्वर्लोकः 4. महर्लोकः
  4. जनलोकः 5. तपोलोकः 7. सत्यलोकः
- **सप्त अधोलोकाः**
  1. अतललोकः 2. वितललोकः 3. सुतललोकः
  4. रसातललोकः 5. तलातललोकः 6. महातललोकः
  7. पाताललोकः
- **सप्त पर्वताः**
  1. महेन्द्रपर्वतः 2. मलयपर्वतः 3. सह्यपर्वतः
  4. हिमालयपर्वतः 5. रैवतकपर्वतः 6. विन्ध्यपर्वतः
  7. अरावलिपर्वतः
- **सप्त समुद्राः**
  1. क्षारसमुद्र 2. क्षीरसमुद्रः 3. दधिसमुद्रः
  4. मधुसमुद्रः 5. सुरासमुद्रः 6. इक्षुसमुद्रः
  7. शुद्धोदकसमुद्रः
- **सप्त प्रकृतयः**
  1. राजा 2. अमात्य 3. सुहृत्
  4. कोष 5. राष्ट्र 6. दुर्ग
  7. बल (सेना)
- **सप्त धातवः**
  1. रस 2. रक्त 3. मांस
  4. वसा 5. मज्जा 6. अस्थि
  7. वीर्य
- **सप्तर्षयः**
  1. कश्यपः 2.अत्रिः 3. भारद्वाजः
  4. गौतमः 5. विश्वामित्रः 6. जमदग्निः
  7. वसिष्ठः
- **सप्तकल्पाः**
  1. पार्थिकल्पः 2. कौर्मकल्पः 3. अनन्तकल्पः
  4. नृसिंहकल्पः 5. प्रियाकल्पः 6. श्वेतवराहकल्पः
  7. अमरकल्पः
- **रामायणे सप्तकाण्डानि**
  1. बालकाण्डम् 2. अयोध्याकाण्डम्
  3. अरण्यकाण्डम् 4. किष्किन्धाकाण्डम्
  5. सुन्दरकाण्डम् 6. युद्धकाण्डम् 7. उत्तरकाण्डम्
- **अष्टौ विवाहाः**
  1. ब्राह्मविवाहः 2. दैवविवाहः 3. आर्षविवाहः
  4. प्राजापत्यविवाहः 5. आसुरविवाहः 6.गान्धर्वविवाहः
  7. राक्षसविवाहः 8. पैशाचविवाहः
- **योगाभ्यासे अष्टाङ्गम्**
  1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम
  5. प्रत्याहार 6. धारणा 7. ध्यान 8. समाधि
- **अष्टान्नानि**
  1. भोज्यम् 2. पेयम् 3. चोष्यम् 4. लेह्यम्
  5. खाद्यम् 6. चर्व्यम् 7. निपेयम् 8. भक्ष्यम्
- **अष्टौ देहाः**
  1. स्थूलम् 2. सूक्ष्मम्
  3. कारणम् 4. महाकारणम्
  5. विराट् 6. हिरण्यम्
  7. अव्याकृतम् 8. मूलप्रकृतिः
- **अष्टौ नागाः**
  1. अनन्तः 2. वासुकिः 3. तक्षकः
  4. कर्कोटकः 5. शंखः 6. कुलिकः
  7. पद्मः 8. महापद्मः
- **अष्ट दिग्गजाः**
  1. ऐरावतः 2. पुण्डरीकः 3. वामनः
  4. कुमुदः 5. अञ्जनः 6. पुष्पदन्तः
  7. सार्वभौमः 8. सुप्रतीकः
- **अष्ट महासिद्धयः**
  1. अणिमा 2. महिमा 3. लघिमा
  4. गरिमा 5. प्राप्ति 6. प्राकाम्य
  7. ईशिता 8. वशिता

- **अष्टमैथुनम्**

1. स्मरण 2. कीर्तन 3. केलि 4. प्रेक्षण
5. गुह्यभाषण 6. संकल्प 7. अध्यवसाय
8. क्रियानिष्पत्तिः

- **अष्ट दिक्पालाः**

1. इन्द्रः 2. वह्निः 3. यमः 4. नैर्ऋतः
5. वरुणः 6. वायुः 7. कुबेरः 8. ईशः

- **साष्टाङ्गनमस्कारः**

1. पद्भ्याम् 5. जानुभ्याम्
2. पाणिभ्याम् 6. उरसा
3. धिया 7. शिरसा
4. वचसा 8. दृष्ट्या

- **अष्ट मातृकाः**

1. ब्राह्मी 2. माहेश्वरी
3. कौमारी 4. वैष्णवी
5. वाराही 6. इन्द्राणी
7. कौवेरी 8. चामुण्डा

- **नवद्रव्याणि (तर्कसंग्रह के अनुसार)**

1. पृथ्वी 2. जल 3. तेज
4. वायु 5. आकाश 6. काल
7. दिक् 8. आत्मा 9. मन

- **नव दुर्गा (दुर्गासप्तशती के अनुसार)**

1. शैलपुत्री 2. ब्रह्मचारिणी 3. चन्द्रघण्टा
4. कूष्माण्डा 5. स्कन्दमाता 6. कात्यायनी
7. कालरात्रि 8. महागौरी 9. सिद्धिदात्री

- **नवग्रहाः**

1. सूर्यः 2. चन्द्रः 3. मंगलः
4. बुधः 5. बृहस्पतिः 6. शुक्रः
7. शनैश्चरः 8. राहुः 9. केतुः

- **कुबेरस्य 'नव' निधयः**

1. महापद्मम् 2. पद्मम् 3. शंखः
4. मकरः 5. कच्छपः 6. मुकुन्दः
7. कुन्दः 8. नीलः 9. खर्वः

- **नवरत्नानि**

1. मुक्ता 2. माणिक्यम् 3. वैदूर्यम्
4. गोमेदा 5. वज्रः 6. विद्रुमम्
7. पद्मरागः 8. मरकतम् 9. नीलम्

- **विक्रमस्य नव सभारत्नानि**

1. धन्वन्तरिः 2. क्षपणकः 3. अमरसिंहः
4. शङ्कुः 5. वेतालभट्टः 6. घटकर्परः
7. कालिदासः 8. वराहमिहिरः 9. वररुचिः

- **नवविधा भक्तिः**

1. श्रवणम् 2. कीर्तनम् 3. स्मरणम्
4. पादसेवनम् 5. अर्चनम् 6. वन्दनम्
7. दास्यम् 8. सख्यम् 9. आत्मनिवेदनम्

- **नव योगेश्वर**

1. कविः 2. हरिः 3. अन्तरिक्षः 4. प्रबुद्धः
5. पिप्पलायनः 6. अग्निहोत्रिः 7. द्रुमिलः 8. चमसः
9. करभाजनः

- **नवरसाः**

1. शृङ्गारः 2. हास्यः 3. करुणः
4. रौद्रः 5. वीरः 6. भयानकः
7. बीभत्सः 8. अद्भुतः 9. शान्तः

- **दश धर्मलक्षणानि (मनुस्मृति के अनुसार)**

1. धृति (धैर्य) 2. क्षमा 3. दम
4. अस्तेय 5. शौच 6. इन्द्रियनिग्रह
7. धी (बुद्धि) 8. विद्या 9. सत्य
10. अक्रोध

- **दशनामी संन्यासी**

1. तीर्थ 2. आश्रम 3. वन
4. अरण्य 5. गिरि 6. पर्वत
7. सागर 8. सरस्वती 9. भारती
10.पुरी

- **दश महाविद्याः**

1. काली 2. तारा 3. षोडशी
4. भुवनेश्वर 5. घूमावती 6. छिन्नमस्ता
7. त्रिपुरभैरवी 8. बगला 9. मातङ्गी
10. कमला

- **दशावताराः**

1. मत्स्यावतारः 2. कूर्मावतारः 3. वराहावतारः
4. नरसिंहावतारः 5. वामनावतारः 6. परशुरामावतारः
7. रामावतारः 8. कृष्णावतारः 9. बुद्धावतारः
10. कल्क्यवतारः

- **दश दिशः**

1. पूर्वादिक् 2. पश्चिमदिक्
3. उत्तरदिक् 4. दक्षिणदिक्
5. आग्नेयदिक् 6. नैर्ऋतिदिक्
7. वायव्यदिक् 8. ईशानदिक्
9. ऊर्ध्वम् 10. अधः

- **दश कामावस्थाः**

1. अभिलाषावस्था
2. चिन्तावस्था
3. मृत्युरवस्था
4. गुणकीर्तनावस्था
5. उद्वेगावस्था
6. प्रलापावस्था
7. उन्मादावस्था
8. व्याध्यवस्था
9. जडतावस्था
10. मरणावस्था

- **एकादशोपनिषदः**

1. ईशोपनिषद्
2. केनोपनिषद्
3. कठोपनिषद्
4. प्रश्नोपनिषद्
5. मुण्डकोपनिषद्
6. माण्डूक्योपनिषद्
7. तैत्तिरीयोपनिषद्
8. बृहदारण्यकोपनिषद्
9. ऐतरेयोपनिषद्
10. छान्दोग्योपनिषद्
11. श्वेताश्वतरोपनिषद्

- **एकादश रुद्राः**

1. महादेवः
2. शिवः
3. रुद्रः
4. शङ्करः
5. नीललोहितः
6. ईशानः
7. विजयः
8. भीमः
9. देवदेवः
10. भवोद्भवः
11. आदित्यः

- **द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि**

1. सोमनाथः
2. मल्लिकार्जुनः
3. महाकालः
4. ओंकारेश्वरः
5. केदारनाथः
6. भीमशङ्करः
7. विश्वनाथः
8. त्र्यम्बकेश्वरः
9. वैद्यनाथः
10. नागेश्वरः
11. रामेश्वरः
12. घुश्मेश्वरः

- **द्वादश आदित्याः**

1. मित्रः
2. रविः
3. सूर्यः
4. भानुः
5. खगः
6. पूषा
7. हिरण्यगर्भः
8. मरीचिः
9. आदित्यः
10. सविता
11. अर्कः
12. भास्करः

- **द्वादश मासाः**

1. चैत्रमासः
2. वैशाखमासः
3. ज्येष्ठमासः
4. आषाढमासः
5. श्रावणमासः
6. भाद्रमासः
7. आश्वयुजमासः
8. कार्तिकमासः
9. मार्गशीर्षमासः
10. पुष्यमासः
11. माघमासः
12. फाल्गुनमासः

- **द्वादश राशयः**

राशि	स्वामी	राशि	स्वामी
1. मेष	मंगल	7. तुला	शुक्र
2. वृषभ	शुक्र	8. वृश्चिक	मंगल
3. मिथुन	बुध	9. धनु	गुरु
4. कर्क	चन्द्र	10. मकर	शनि
5. सिंह	सूर्य	11. कुम्भ	शनि
6. कन्या	बुध	12. मीन	गुरु

- **त्रयोदश रत्नानि-**

1. वज्र
2. मुक्ता
3. पद्मराग
4. मरकत
5. इन्द्रनील
6. वैदूर्य
7. पुष्पराग
8. कर्केतन
9. पुलक
10. रुधिराक्षस
11. भीष्म
12. स्फटिक
13. प्रवाल

- **त्रयोदश धर्मपत्नयः**

1. श्रद्धा
2. मैत्री
3. दया
4. शान्ति
5. तुष्टि
6. पुष्टि
7. क्रिया
8. उन्नतिबुद्धि
9. मेधा
10. तितिक्षा
11. ह्री
12. लज्जा
13. मूर्ति

- **त्रयोदश धर्मस्य पुत्राः**

1. शुभ
2. प्रसाद
3. अभय
4. सुख
5. मोह
6. अहंकार
7. योग
8. दर्प
9. अर्थ
10. स्मृति
11. क्षेय
12. प्रश्रय
13. विनय

- **चतुर्दश रत्नानि**

1. लक्ष्मीः
2. कौस्तुभमणिः
3. पारिजातकः
4. सुरा
5. धन्वन्तरिः
8. ऐरावतः
9. अप्सराः
10. सप्तमुखः
11. हलाहलः
12. हरिधनुः

6. चन्द्रमाः
7. कामधेनुः
13. शंखः
14. अमृतम्

- **चतुर्दश विद्याः**

1. ऋग्वेदः
2. यजुर्वेदः
3. सामवेदः
4. अथर्ववेदः
5. शिक्षा
6. व्याकरणम्
7. छन्दः
8. निरुक्तम्
9. ज्योतिषम्
10. कल्पः
11. मीमांसाशास्त्रम्
12. न्यायशास्त्रम्
13. पुराणम्
14. धर्मशास्त्रम्

- **चतुर्दश मनवः**

1. स्वयंभुवः
2. सावर्णिः
3. स्वारोचिषः
4. दक्षसावर्णिः
5. औत्तमिः
6. ब्रह्मसावर्णिः
7. तामसः
8. धर्मसावर्णिः
9. रैवतः
10. रुद्रसावर्णिः
11. चाक्षुषः
12. रौच्यदेवसावर्णिः
13. वैवस्वतः
14. इन्द्रसावर्णिः

- **चतुर्दश विष्णुपार्षदाः**

1. सुनन्द
2. नन्द
3. जय
4. विजय
5. प्रबल
6. बल
7. कुमुद
8. कुमुदाक्ष
9. विष्वकसेन
10. गरुण
11. जयन्त
12. श्रुतदेव
13. पुष्पदन्त
14. सात्वत

- **षोडश संस्काराः**

1. गर्भाधानसंस्कारः
2. पुंसवनसंस्कारः
3. सीमन्तोन्नयनसंस्कारः
4. जातकर्मसंस्कारः
5. नामकरणसंस्कारः
6. निष्क्रमणसंस्कारः
7. अन्नप्राशनसंस्कारः
8. चूडाकर्मसंस्कारः
9. कर्णवेधसंस्कारः
10. उपनयनसंस्कारः
11. वेदारम्भसंस्कारः
12. केशान्तसंस्कारः
13. समावर्तनसंस्कारः
14. उद्वाहसंस्कारः
15. विवाहसंस्कारः
16. त्रेताग्निसंस्कारः (दाहसंस्कार)

- **षोडश मातृकाः**

1. गौरी
2. पद्मा
3. शची
4. मेधा
5. सावित्री
6. विजया
7. जया
8. देवसेना
9. स्वधा
10. स्वाहा
11. लोकमातृका
12. शान्ति
13. पुष्टि
14. धृति
15. कुलदेवता
16. तुष्टि

- **षोडशोपचार - पूजनम्**

1. पाद्यम्
2. अर्घ्यम्
3. आचमनीयम्
4. स्नानम्
5. वस्त्रम्
6. आभूषणम्
7. गन्धः
8. पुष्पम्
9. धूपः
10. दीपः
11. नैवेद्यम्
12. आसनम्
13. ताम्बूलम्
14. स्तवनम्
15. तर्पणम्
16. नमस्कारः

- **षोडशचन्द्रकलाः**

1. क्षमता
2. चन्द्रिका
3. मानदा
4. कान्तिः
5. पृषा
6. ज्योत्स्ना
7. तुष्टिः
8. श्रीः
9. पुष्टी
10. प्रीतिः
11. रतिः
12. अङ्गदा
13. द्युतिः
14. पूर्णा
15. शशिनी
16. अमृता

- **षोडशचन्द्रकलाः**

1. क्षमता
2. चन्द्रिका
3. मानदा
4. कान्तिः
5. पृषा
6. ज्योत्स्ना
7. तुष्टिः
8. श्रीः
9. पुष्टी
10. प्रीतिः
11. रतिः
12. अङ्गदा
13. द्युतिः
14. पूर्णा
15. शशिनी
16. अमृता

- **सूक्ष्मशरीरस्य सप्तदश अवयवानि (वेदान्तसारे)**

1. पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ- श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण
2. बुद्धि
3. मन
4. पञ्चकर्मेन्द्रियाँ - वाक्,पाणि, पाद, पायु, उपस्थ
5. पञ्चवायु- प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान

- **महाभारतस्य अष्टादश पर्वाणि**

1. आदिपर्व	10. सौप्तिकपर्व
2. सभापर्व	11. स्त्रीपर्व
3. वनपर्व	12. शान्तिपर्व
4. विराटपर्व	13. अनुशासनपर्व
5. उद्योगपर्व	14. आश्वमेधिकपर्व
6. भीष्मपर्व	15. आश्रमवासिकपर्व
7. द्रोणपर्व	16. मौसलपर्व
8. कर्णपर्व	17. महाप्रस्थानपर्व
9. शल्यपर्व	18. स्वर्गारोहणपर्व

- **भगवद्गीतायाम् अष्टादश अध्यायाः**

1. अर्जुनविषादयोगः	10. विभूतियोगः
2. सांख्ययोगः	11. विश्वरूपदर्शनयोगः
3. कर्मयोगः	12. भक्तियोगः
4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोगः	13. क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगः
5. कर्मसंन्यासयोगः	14. गुणत्रयविभागयोगः
6. आत्मसंयमयोगः (ध्यानयोगः)	15. पुरुषोत्तमयोगः
7. ज्ञानविज्ञानयोगः	16. दैवासुरसम्पद्विभागयोगः
8. अक्षरब्रह्मयोगः	17. श्रद्धात्रयविभागयोगः
9. राजविद्याराजगुह्ययोगः	18. मोक्षसंन्यासयोगः
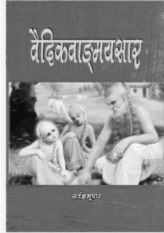
- **चतुर्विंशतिः अवताराः**

1. सनतकुमारादि	2. वाराह	3. नारद
4. नरनारायण	5. कपिल	6. दत्तात्रेय
7. यज्ञपुरुष	8. ऋषभदेव	9. पृथु
10. मत्स्य	11. कूर्म (कच्छप)	12. धन्वन्तरि
13. मोहिनी	14. नृसिंह	15. वामन
16.परशुराम	17. व्यास	18. राम
19. कृष्ण	20 बुद्ध	21 कल्कि
22 हंस	23. हयग्रीव	24. हरि।

- **सप्तविंशतिः नक्षत्राणि**
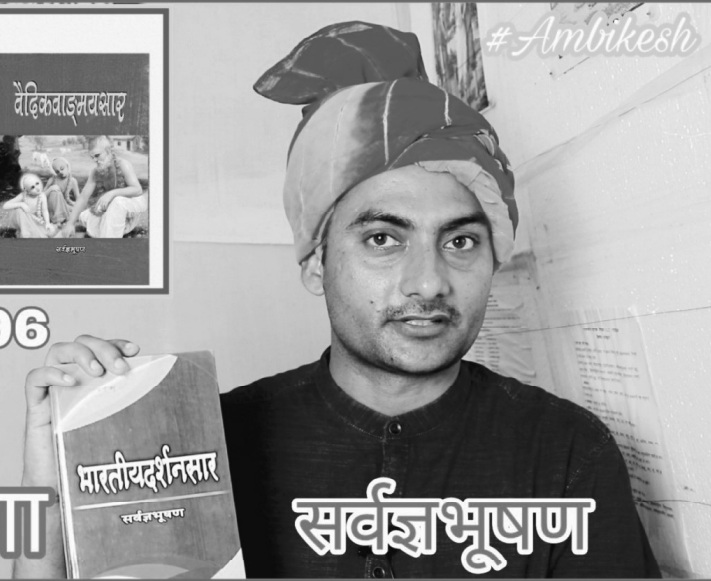
1. अश्विनी	2. भरणी	3. कृत्तिका
4. रोहिणी	5. मृगशिरा	6. आर्द्रा
7. पुनर्वसु	8. पुष्य	9. आश्लेषा
10. मघा	11. पूर्वाफाल्गुनी	12. उत्तराफाल्गुनी
13. हस्त	14. चित्रा	15. स्वाती
16. विशाखा	17.अनुराधा	18. ज्येष्ठा
19. मूल	20. पूर्वाषाढ	21. उत्तराषाढ
22. श्रवण	23. धनिष्ठा	24. शतभिषा
25.पूर्वाभाद्रपद	26. उत्तराभाद्रपद	27. रेवती

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थों के विषय में विशेष कथन

1. रामायण - रम्या रामायणी कथा

2. श्रीमद्भागवत - विद्यावतां भागवते परीक्षा

3. काव्यप्रकाश - काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे-गृहे,
टीकास्तथाप्येषः तथैव दुर्गमः

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(i) कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम् ।

(ii) काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।

5. उत्तररामचरितम् - उत्तररामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते

6. मेघदूत - मेघे माघे गतं वयः

7. किरातार्जुनीयम् -

वृत्तछत्रस्य सा काऽपि वंशस्थास्य विचित्रता।
प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता।

8. नैषधीयचरितम् -

(i) ''नैषधं विद्वदौषधम्''

(ii) तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।।

(iii) ''नैषधे पदलालित्यम् ''

9. रावणवध (भट्टिकाव्य) -

(i) 'अष्टाध्यायी जगन्माताऽमरकोशो जगत्पिता।
भट्टिकाव्यं गणेशश्च त्रयीयं सुखदास्तु वः।।'

(ii) व्याकृत्या कोश- छन्दोभ्यालङ्कृत्या रसेन च।
पञ्चकेनान्वितं काव्यं भट्टिकाव्यं विराजते।।

10. जानकीहरणम् -

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति।
कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः।।

11. हरविजयम् -

हरविजय-महाकवेः प्रतिज्ञां, शृणुत कृत्तप्रणयो मम प्रबन्धे।
अपि शिशुरकविः कविः प्रभावाद् भवित कविश्च महाकविः क्रमेण।।

12. सेतुबन्धमहाकाव्यम् -

''महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्राकृष्टं प्रकृतं विदुः।
सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयम् ।।''

13. गाथासप्तशती -

अविनाशिनमग्राम्यमकरोत्सातवाहनः।
विशुद्धजातिभिः कोषं रत्नैरिव सुभाषितैः।।

14. अमरुकशतक -

''अमरुककवेरेकः श्लोकः प्रबन्धशतायते।''

15. वासवदत्ता -

कवीनामगलद् दर्पो नूनं वासवदत्तया।
शक्त्येव पाण्डुपुत्राणां गतया कर्णगोचरम् ।।

16. कादम्बरी -

(i) 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते।'

(ii) कादम्बरी रसभरेण समस्त एव। मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम् ।।

(iii) 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा'।

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थों के अपरनाम

ग्रन्थ का नाम	अपरनाम
1. ऋग्वेद	दशतयी
2. शुक्ल यजुर्वेद	माध्यन्दिन संहिता, वाजसनेयी संहिता
3. सामवेद	उद्गातृ-वेद
4. अथर्ववेद	ब्रह्मवेद
5. ताण्ड्य ब्राह्मण	महाब्राह्मण, पंचविंश, प्रौढ़
6. छान्दोग्य ब्राह्मण	उपनिषद् ब्राह्मण
7. छान्दोग्योपनिषद्	तण्डिनाम् उपनिषद्
8. केनोपनिषद्	तवल्कारोपनिषद्
9. शांखायन आरण्यक	कौषीतकि आरण्यक
10. आरण्यक	रहस्यग्रन्थ
11. ऋक् प्रातिशाख्य	पार्षद् (परिषद् सूत्र)
12. निरुक्त	शब्दव्युत्पत्तिशास्त्र, निर्वचन शास्त्र
13. ज्योतिष	प्रत्यक्षशास्त्र, कालविधानशास्त्र
14. हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र	सत्याषाढ़ गृह्यसूत्र
15. कातन्त्रसूत्र	कालापव्याकरण
16. व्याकरण	शब्दशास्त्र
17. लघुपाराशरी	उडुदायप्रदीप
18. काठक गृह्यसूत्र	लौगाक्षि गृह्यसूत्र
19. बृहत्संहिता	वाराही संहिता
20. वेदान्तसूत्र	चतुर्लक्षणी
21. मीमांसासूत्र	द्वादशलक्षणी
22. ब्रह्मसूत्र	शारीरकसूत्र
23. ब्रह्मपुराण	आदिपुराण
24. अग्निपुराण	विश्वकोष
25. नारद पुराण	बृहन्नारदीय पुराण
26. श्रीमद्भागवत पुराण	दशलक्षणी पुराण
27. वायुपुराण	शिवपुराण
28. रामायण	चतुर्विंशतिसाहस्त्रीसंहिता, आदिमहाकाव्य, आर्षकाव्य
29. भुशुण्डिरामायण	महारामायण
30. योगवाशिष्ठ	आर्षरामायण
31. महाभारत	शतसाहस्त्रीसंहिता
32. सेतुबन्धमहाकाव्य	सूक्तिरत्नाकर
33. जाम्बवतीजय	पातालविजय
34. रावणवध	भट्टिकाव्य
35. काव्यशास्त्र	साहित्यविद्या
36. नाट्यशास्त्र	षट्साहस्त्री संहिता
37. कुमारपालितचरित	द्वयाश्रयमहाकाव्य
38. नैषधीयचरितम्	शास्त्रकाव्य, श्र्यङ्कमहाकाव्य
39. प्रबन्धकोश	चतुर्विंशतिप्रबन्ध
40. नलचम्पू	हरचरणसरोजाङ्क
41. हनुमन्नाटक	महानाटक
42. गीतगोविन्द	शृंगारमहाकाव्य, संगीतरूपक,
43. संस्कृतमहाकोश	पीटर्सबर्ग कोश

संस्कृत में सर्वप्रथम/सर्वप्राचीन/सर्वश्रेष्ठ

1. प्राचीनतम वेद	ऋग्वेद
2. प्राचीनतम पुराण	ब्रह्मपुराण
3. स्मृतिग्रन्थों में प्राचीनतम	मनुस्मृति
4. प्राकृत काव्यों में प्राचीनतम	सेतुबन्ध
5. आर्य भाषाओं में प्राचीनतम	वैदिक संस्कृत
6. लोककथा प्राचीनतम संग्रह	बृहत्कथा
7. शिक्षा के प्राचीनतम ग्रन्थ	प्रातिशाख्य
8. भाषाशास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ	निरुक्त
9. मनुस्मृति के प्राचीनतम टीकाकार	मेधातिथि
10. वेदाङ्ग के प्राचीनतम ग्रन्थ	कल्पसूत्र
11. अमरुकशतक के प्राचीनतम टीकाकार	अर्जुनवर्मदेव
12. सर्वश्रेष्ठ वेदभाष्यकर्ता	आचार्य सायण
13. सर्वश्रेष्ठ गद्यकार	बाणभट्ट
14. सर्वश्रेष्ठ वैयाकरण	महर्षि पाणिनि
15. सर्वश्रेष्ठ नाटककार	कालिदास
16. सर्वश्रेष्ठ प्रतीकात्मक नाटक	प्रबोधचन्द्रोदय
17. सर्वश्रेष्ठ तान्त्रिक ग्रन्थ	तन्त्रालोक
18. संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
19. कश्मीरी लेखकों में सर्वश्रेष्ठ	अभिनवगुप्त
20. शाकुन्तल का सर्वश्रेष्ठ अङ्क	चतुर्थ
21. रससूत्र के सर्वश्रेष्ठ भाष्यकार	अभिनवगुप्त
22. शङ्करभट्ट के अनुसार सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार	विज्ञानेश्वर
23. संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
24. राजशेखर के मत में सर्वश्रेष्ठ नाटक	स्वप्नवासवदत्तम्

25. शृङ्गाररस के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
26. करुणरस के सर्वश्रेष्ठ कवि	भवभूति
27. संस्कृत गद्यसाहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचना	कादम्बरी
28. ब्राह्मण ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ देवता	प्रजापति
29. केरलीय राजाओं में सर्वश्रेष्ठ	रामवर्मा
30. सर्वप्रथम नाटककार	भास
31. मीमांसा के सर्वप्रथम भाष्यकार	शबर
32. चम्पूग्रन्थों में सर्वप्रथम	नलचम्पू
33. कालिदास की प्रथम कृति	ऋतुसंहार
34. प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास (संस्कृत)	शिवराजविजय
35. सुभाषित संग्रह का प्रथमग्रन्थ	गाथासप्तशती
36. प्रथम ऐतिहासिक काव्य	नवसाहसाङ्कचरितम्
37. समुपलब्ध प्रथम गद्यकार	दण्डी
38. प्रथम लौकिक खण्डकाव्य	मेघदूतम्
39. प्रथम बौद्ध नाटककार	अश्वघोष
40. संस्कृत का प्रथम महाकाव्य	जाम्बवतीविजय
41. अद्वैत के प्रथम आचार्य	गौडपादाचार्य
42. प्रस्थानत्रयी के प्रथम भाष्यकार	शङ्कराचार्य
43. बाणभट्ट की प्रथम रचना	हर्षचरितम्
44. काव्यप्रकाश की प्रथम टीका	संकेत (माणिक्यचन्द्र कृत)
45. जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर	ऋषभदेव
46. प्राकृत का प्रथम गीतिकाव्य	गाथासप्तशती
47. संस्कृत की प्रथम नाटिका	रत्नावली
48. कलापक्ष (अलङ्कृतशैली) के प्रथम आचार्य	भारवि
49. उपलब्ध प्रथम प्रतीक नाटक	प्रबोधचन्द्रोदय
50. पुराणों में प्रथम	ब्रह्मपुराण
51. महाभारत के प्राचीन टीकाकार	देवबोध
52. भाषाविज्ञान के प्राचीन पण्डित	यास्क
53. सबसे प्राचीन धर्मसूत्र	गौतमधर्मसूत्र
54. सबसे प्राचीन शुल्बसूत्र	बोधायनशुल्बसूत्र
55. अथर्ववेद का प्राचीन नाम	अथर्वाङ्गिरस वेद
56. काव्यशास्त्र का उपलब्ध सबसे प्राचीन ग्रन्थ	नाट्यशास्त्र
57. ज्योतिष का उपलब्ध प्राचीन ग्रन्थ	वेदाङ्गज्योतिष
58. उपजीव्यों में प्रमुख	रामायण, महाभारत
59. पाञ्चरात्र संहिताओं में प्रमुख	अर्हिबुध्न्यसंहिता
60. नास्तिक दर्शनों में सर्वप्राचीन	चार्वाक दर्शन
61. नीतिकथा साहित्य का सर्वप्राचीन ग्रन्थ	पञ्चतन्त्र
62. व्याकरण दर्शन का सर्वोत्तम ग्रन्थ	वाक्यपदीय
63. स्मृति ग्रन्थों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	मनुस्मृति
64. वैष्णवपुराणों में सर्वप्रसिद्ध	श्रीमद्भागवतपुराण
65. काव्यों में सर्वाधिक रमणीय	नाटक
66. जैन पुराणों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	आदिपुराण
67. सामवेद की लोकप्रिय शाखा	कौथुम शाखा
68. अथर्ववेद की लोकप्रिय शाखा	शौनक शाखा
69. दक्षिण भारत का लोकप्रिय स्तोत्र	नारायणीय स्तोत्र
70. संस्कृत का बृहत्तम महाकाव्य	हरविजय (50 सर्ग)
71. चम्पूकाव्यों में बृहत्तम	वृन्दावनचम्पू
72. विश्वसाहित्य का बृहत्तम ग्रन्थ	महाभारत
73. अष्टविकृति पाठों में सबसे कठिन	घनपाठ
74. सबसे बड़ा शुल्बसूत्र	बोधायन
75. वेद व्याख्याकारों में अग्रगण्य	सायणाचार्य
76. ऐतिहासिक काव्यों में अग्रणी	राजतरंगिणी
77. सर्वाधिक विशाल पुराण	स्कन्दपुराण
78. सर्वाधिक बृहद् उपनिषद्	बृहदारण्यकोपनिषद्
79. ब्राह्मणग्रन्थों में सबसे छोटा	दैवत ब्राह्मण
80. सबसे छोटा उपनिषद्	माण्डूक्योपनिषद्
81. सबसे छोटा पुराण	मार्कण्डेय पुराण
82. अर्वाचीनतम ब्राह्मणग्रन्थ	गोपथ ब्राह्मण
83. अर्वाचीन वेद	अथर्ववेद
84. आदिकाव्य	रामायण
85. ललित कलाओं के आदि आचार्य	भरतमुनि
86. ज्यामिति के आदि ग्रन्थ	शुल्बसूत्र

संस्कृत वाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थांश

1. **श्रीमद्भगवद्गीता**	-	**महाभारत** (भीष्मपर्व -अध्याय - 25-42)
2. **हरिवंशपुराण**	-	**महाभारत** (महाभारत का खिलपर्व / हरिवंशपर्व)
3. **रासपञ्चाध्यायी**	-	**भागवतमहापुराण** (दशमस्कन्ध)
4. **दुर्गासप्तशती**	-	**मार्कण्डेयपुराण** (अध्याय-81-93)
5. **हंसगीता**	-	**विष्णुधर्मोत्तरपुराण** (तृतीयखण्ड- अध्याय 227-342)
6. **अध्यात्म-रामायण**	-	**ब्रह्माण्ड पुराण** (उत्तरखण्ड का एक भाग)
7. **पराशर-गीता**	-	**महाभारत** (शान्तिपर्व-अध्याय-290-98)
8. **विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्र**	-	**महाभारत** (अनुशासन पर्व- अध्याय-149)
9. **शिवसहस्त्रनामस्तोत्र**	-	**महाभारत** (अनुशासनपर्व- अध्याय-17)
10. **हंस-गीता**	-	**महाभारत** (शान्तिपर्व -अध्याय-299)
11. **शकुन्तलोपाख्यान**	-	**महाभारत** (आदिपर्व - अध्याय-68-74)
12. **नलोपाख्यान**	-	**महाभारत** (वनपर्व-अध्याय-53-79)
13. **रामोपाख्यान**	-	**महाभारत** (वनपर्व- अध्याय-274-91)
14. **सावित्र्युपाख्यान**	-	**महाभारत** (वनपर्व-अध्याय -292-99)
15. **शङ्करगीता**	-	**विष्णुधर्मोत्तरपुराण** (प्रथमखण्ड, अध्याय-52-65)

संस्कृत के प्रमुख ग्रन्थों की विशेष संज्ञा

1. ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद	-	**वेदत्रयी**
2. किरातार्जुनीयम् , शिशुपालवधम् , नैषधीयचरितम्	-	**संस्कृत साहित्य की बृहत्त्रयी**
3. ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश, रसगङ्गाधर	-	**काव्यशास्त्र की बृहत्त्रयी**
4. चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, अष्टांगहृदय	-	**आयुर्वेद की बृहत्त्रयी**
5. कुमारसम्भवम् , रघुवंशम् ,मेघदूतम्	-	**संस्कृत साहित्य की लघुत्रयी**
6. उपनिषद् , गीता, ब्रह्मसूत्र	-	**प्रस्थानत्रयी**
7. पाणिनि, पतञ्जलि, कात्यायन	-	**व्याकरण के मुनित्रय**
8. वेदव्यास, पराशर, शुकदेव	-	**पुराणों के मुनित्रय**
9. श्रृंगारशतक, नीतिशतक, वैराग्यशतक	-	**शतकत्रय**
10. किरातार्जुनीय महाकाव्य के प्रथम तीन सर्ग	-	**पाषाणत्रय**
11. पञ्चास्तिकायसार, समयसार, प्रवचनसार	-	**जैन सम्प्रदाय के नाटकत्रयी**
12. विनयपिटक, सुत्तपिटक, अभिधम्मपिटक	-	**बौद्धदर्शन के त्रिपिटक**
13. खण्डनखण्डखाद्य, तत्त्वदीपिका, अद्वैतसिद्धि	-	**वेदान्तदर्शन के कठिनत्रयी**
14. उपनिषद् , गीता, ब्रह्मसूत्र, भागवत	-	**प्रस्थान चतुष्टयी**
15. गीता, विष्णुसहस्रनाम, अनुगीता, भीष्मस्तवराज, गजेन्द्रमोक्ष	-	**महाभारत के पञ्चरत्न**
16. शुक्लयजुर्वेद का 40वाँ अध्याय	-	**ईशावास्योपनिषद्**
17. तैत्तिरीयारण्यक का दशम प्रपाठक	-	**महानारायणोपनिषद्**
18. शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्याय	-	**बृहदारण्यकोपनिषद्**
19. आपस्तम्बधर्मसूत्र का 8वाँ पटल	-	**अध्यात्मपटल**
20. गीता का 18वाँ अध्याय	-	**एकाध्यायीगीता**
21. किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग	-	**चित्रकाव्य**

कवियों की स्वकाव्य विषयक गर्वोक्तियाँ

1. प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्ध	-	सुबन्धु अपने काव्य वासवदत्ता के विषय में
2. लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनमात्रचारु	-	माघ अपने शिशुपालवध के विषय में
3. (i) शृङ्गारामृतशीतगुः	-	श्रीहर्ष ने नैषधीयचरितम् के विषय में
(ii) शृङ्गारभङ्ग्या		
(iii) रसैः कथायस्य सुधावधीरणी, नलः स भूजानिरभूद् गुणाद्भुतः		
4. चन्द्रार्धचूडचरिताश्रयचारु	-	रत्नाकर स्वयं के काव्य को
5. सन्दर्भशुद्धिं गिरां जानीते जयदेव एव	-	जयदेव ने गीतगोविन्द के विषय में।